स्वतंत्रता संग्राम में जैन

(प्रथम खण्ड)

अमर जैन शहीदों तथा प्रमुखतः मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश व
राजस्थान के जैन स्वतंत्रता सेनानियों का परिचय

डॉ. कपूरचंद जैन
डॉ. (श्रीमती) ज्योति जैन

प्रकाशक
प्राच्य श्रमण भारती, मुजफ्फरनगर

स्वतंत्रता संग्राम में जैन

प्रेरणा : सराकोद्धारक परम पूज्य उपाध्याय 108 मुनि श्री ज्ञानसागर जी महाराज

लेखक : डॉ० कपूरचंद जैन, डॉ० (श्रीमती) ज्योति जैन
स्टाफ क्वार्टर 6, कुन्द-कुन्द जैन (पी०जी०) कालेज
खतौली - 251201 (उ०प्र०)

पुण्यार्जक : स्व० श्रीमती बुगली देवी जैन
धर्मपत्नि स्व० रतनचन्द जैन (गोटे वाले), सहारनपुर
द्वारा श्रीमती शिरोमणी जैन
धर्मपत्नि बिजेन्द्र कुमार जैन, दिल्ली

द्वितीय संस्करण : 2200 प्रतियाँ, 2006 ई०

मूल्य : 250/- (पुन: प्रकाशन हेतु)

प्राप्ति स्थान –

1. **प्राच्य श्रमण भारती**
12/ए, निकट जैन मन्दिर,
प्रेमपुरी, मुजफ्फरनगर-251001 (उ०प्र०)
फोन : 0131-2450228, 2408901

2. **श्रुत संवर्द्धन संस्थान**
प्रथम तल, 247, दिल्ली रोड़
मेरठ-250002, फोन : 0121-2528704

3. **आचार्य शांतिसागर 'छाणी' स्मृति ग्रंथमाला**
बुढ़ाना, मुजफ्फरनगर

4. **संस्कृति संरक्षण संस्थान**
X/3349ए गली नं० 1, रघुवरपुर नं० 2
शान्ति मौहल्ला, गाँधी नगर, दिल्ली-110 031
फोन : 9811350254, 9312243845

समर्पण

प्रज्ञापुंज, परम तपस्वी,

प्रकृष्ट ध्यानी,

महाज्ञानी,

शुचिता-सरलता-साधना के संगम,

उदार हृदय,

जीवन्ततीर्थ त्याग करूणा एवं वात्सल्य की साक्षात् मूर्ति,

सराकोद्धारक, परिषहजयी,

उपसर्ग विजेता, पटु प्रवचनकार,

आगम के तल स्पर्शीज्ञाता, भेदविज्ञानी, आत्मानुरागी, निस्पृही,

सबके शरण्य मंगल धाम,

विद्वानों के धर्मपिता,

ज्ञान-ध्यान-तपोरक्ता,

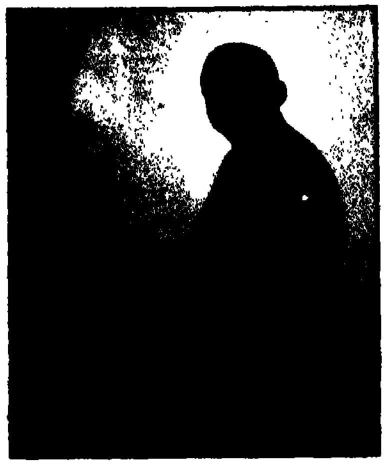
राष्ट्रसंत परम पूज्य उपाध्यायरत्न श्री 108 ज्ञानसागर जी महाराज

के कर कमलों में

'स्वतंत्रता संग्राम में जैन'

सादर समर्पित।

आशीर्वचन



तीर्थंकर भगवान् ऋषभदेव ने इस कर्मभूमि रूप युग का प्रारम्भ करते हुए असि, मषि, कृषि, वाणिज्य, विद्या और शिल्प इन छः कर्मों का उपदेश दिया था। उन्होंने ही काशी, कोसल, कलिंग, वंग, करहाटक, कर्नाटक, चोल, केरल, मालव, महाराष्ट्र, सौराष्ट्र वनवास, द्रविड़, आन्ध्र काम्बोज, केकय, शूरसेन, विदर्भ मगध, दशार्ण आदि जनपदों की व्यवस्था कर हा ! मा ! और धिक् ! इन तीन दण्डों का विधान किया था। ब्राह्मी को सर्वप्रथम लिपि का ज्ञान देने के कारण आज भी 'विश्व की मूल लिपि ब्राह्मी है' ऐसा भाषा वैज्ञानिक भी स्वीकार करते हैं। भगवान् ऋषभदेव का मार्कण्डेय, कूर्म, वाराह, ब्रह्माण्ड, विष्णु, स्कन्ध आदि पुराणों के साथ श्रीमद् भागवत के पंचम स्कन्ध में विस्तार से वर्णन हुआ है। कहा गया है कि 'नाभिराय और मरुदेवी के पुत्र महायोगी ऋषभदेव हुए। उनके सौ पुत्र थे, जिनमें भरत सबसे ज्येष्ठ थे, उन्हीं भरत के नाम पर यह देश भारतवर्ष कहलाता है।'

बाहुबली द्वारा अपने राज्य की स्वतंत्रता के लिए भरत से लड़ा गया युद्ध इस युग का प्रथम युद्ध कहा जाता है परन्तु यह युद्ध अहिंसक था। अहिंसक युद्ध, जिसकी अवधारणा अनेकान्तवादी जैनधर्म की देन है उसकी आज भी महती आवश्यकता है। आज हमारे देश में जो गणतंत्र/लोकतंत्र-व्यवस्था है, वह भगवान् महावीर के काल में भी थी। अनेक जैन राजा, मंत्री, दीवान, सेनापति, कोषाध्यक्ष आदि हुए, जिन्होंने भारत के राजनैतिक विकास में अपना महान् योगदान दिया था।

हमारा देश प्राचीन काल से ही सोने की चिड़िया कहा जाता रहा है, जो हमारी समृद्धि और विपुल प्राकृतिक सम्पदा का सूचक है। इसी समृद्धि के कारण विदेशी आक्रान्ता यहाँ आये और उन्होंने हमारे देश को खूब लूटा-खसोटा। 'ईस्ट इण्डिया कम्पनी' ने तो अपना ऐसा विस्तार किया कि अधिकांश भारत को अपने अधीन कर लिया। आजादी के लिए अनेक छोटे-मोटे प्रयास होते रहे किन्तु 1857 में एक संगठित क्रान्ति हुई, जिसकी अगुआ झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई बनी। 'खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।' के रूप में उनकी यशोगाथा आज भी जन-जन में गाई जाती है।

महारानी लक्ष्मीबाई को तो आज सभी जानते हैं, किन्तु आर्थिक संघर्ष से भी जूझ रही लक्ष्मीबाई को खजाना खोलकर सहायता करने वाले ग्वालियर नरेश के खजांची अमर शहीद अमर चंद बांठिया को शायद ही कोई जानता हो। इतिहास के पन्ने गवाह हैं कि किस प्रकार फाँसी देने के बाद तीन दिन तक उनका शव ग्वालियर के सर्राफा बाजार के नीम पर लटकाये रखा गया था। 1857 की ही क्रान्ति में बहादुर

शाह जफर के मित्र लाला हुकुमचंद जैन, हांसी व उनके भतीजे फकीरचंद जैन को उन्हीं की कोठी के आगे फाँसी पर लटका दिया गया था।

जैन धर्म अहिंसा प्रधान धर्म है। किन्तु राष्ट्र के सम्मान पर जब भी आँच आई जैन-धर्मावलम्बी कभी पीछे नहीं रहे। भारत की आजादी के आन्दोलन में लगभग 20 जैन शहीदों ने अपना बलिदान देकर आजादी के मार्ग को प्रशस्त किया था। प्रस्तुत पुस्तक में इनका परिचय दिया गया है। इनके अतिरिक्त भी और शहीद हो सकते हैं, जिनकी खोज जारी रहनी चाहिए।

महात्मा गाँधी ने अपनी आत्मकथा 'सत्य के प्रयोग' में लिखा है कि- 'जब मैं विदेश जाने लगा तो मेरी माता मुझे भेजने को तैयार नहीं हुईं क्योंकि उन्हें डर था कि विदेश में जाकर यह (मैं) मांसभक्षण, मदिरापान, परस्त्री सेवन करने लगेगा। सभी माँ को समझाकर हार गये। बड़ी विकट समस्या थी। तब एक जैन मुनि आये और उन्होंने मुझे इन तीनों चीजों के त्याग की प्रतिज्ञा दिलवाई, तब माँ ने मुझे जाने की आज्ञा दी।' इतना प्रभाव था जैन मुनियों का। गाँधी जी के अनुसार उनके जीवन पर जिन तीन व्यक्तियों का प्रभाव पड़ा उनमें श्रीमद् राजचन्द्र प्रमुख हैं। श्रीमद् राजचन्द्र जैन थे, वे शतावधानी थे तथा बम्बई में हीरे-जवाहरात का व्यापार करते थे। जब गाँधी जी का झुकाव ईसाई धर्म की ओर हुआ तब श्रीमद् राजचन्द्र से उन्होंने 33 प्रश्न पूंछे। श्रीमद् राजचन्द्र के उत्तरों से सन्तुष्ट होकर गाँधीजी अपने स्वधर्म में दृढ़ हो गये।

भारत वर्ष की आज़ादी में अमर शहीद भगतसिंह, चन्द्रशेखर, ऊधम सिंह आदि शहीदों तथा गणेश शंकर विद्यार्थी, विनायक दामोदर जैसे क्रान्तिकारियों को तो सभी जानते हैं किन्तु मोती चन्द्र शाह, उदयचंद जैन, साबूलाल जैन जैसे शहीदों और अर्जुन लाल सेठी जैसे सहस्रों क्रान्तिकारियों को कम ही लोग जानते हैं। इनका सुसम्बद्ध इतिहास लिखा जाना आज भी बाकी है। पंजाब केसरी लाला लाजपतराय की दादी जैन थीं और वे किसी साधु को भोजन कराये बिना भोजन नहीं करती थीं। गाँधी जी की दाण्डी यात्रा के समय महिलाओं का नेतृत्व सरला देवी साराभाई ने किया था।

जैन पत्रकारिता के पितामह बाबू ज्योति प्रसाद जैन, देवबन्द ने 1930 में जब 'भगवान् महावीर और महात्मा गाँधी' लेख उर्दू भाषा में 'जैन प्रदीप' में छापा तो उनकी जमानत जब्त हो गई, जैन प्रदीप की प्रतियाँ जब्त कर ली गईं और पत्र का प्रकाशन बन्द कर दिया गया। इसी प्रकार श्री श्याम लाल पाण्डवीय की पत्रिका और श्री कल्याण कुमार 'शशि' की पुस्तक भी अंग्रेजों द्वारा जब्त कर ली गई थी। अनेक जैन पत्र-पत्रिकाओं ने आजादी के विषय में निर्भीक होकर समाचार दिये तथा कुछ ने तो स्वदेशी के विषय में विज्ञापन तक निकाले थे। जैन सन्देश, मथुरा ने जनवरी 1947 में स्वतंत्रता विषयक लगभग 100 पृष्ठीय एक विशेषांक निकाला था जो आज महत्त्वपूर्ण दस्तावेज है।

पं. वंशीधर जी व्याकरणाचार्य, पं. फूलचंद जी सिद्धान्त शास्त्री, पं. खुशालचंद जी गोरावाला जैसे जैन विद्वानों ने जेल की दारुण यातनाएँ सही थीं। कहा जाता है कि 1942 में वाराणसी के स्याद्वाद महाविद्यालय के सभी छात्र बागी हो गये थे। भारतवर्ष का संविधान बनाने वाली संविधान निर्मातृ सभा में श्री रतनलाल मालवीय (जैन), श्री अजित प्रसाद जैन, श्री भवानी अर्जुन खीमजी, श्री बलवन्त सिंह मेहता

और श्री कुसुमकान्त जैन ये पाँच जैन सदस्य थे। हमारे संविधान में 'जीव मात्र के प्रति दया भाव' को भारतीय नागरिकों का मूल कर्त्तव्य बताया गया है।

जैन महिलाओं ने भी आजादी के आन्दोलन में महती भूमिका निभाई थी। इस विषय में डॉ० ज्योति जैन की 'स्वराज्य और जैन महिलायें' पुस्तक काफी पहले प्रकाशित हो चुकी है। लेखक दम्पति के अनुसार लगभग पाँच हजार जैन जेल गये। सहस्राधिक पुरुष ऐसे भी हैं, जो जेल नहीं जा सके किन्तु उन्होंने आर्थिक आदि सहायता कर स्वतंत्रता आन्दोलन को गतिमान् बनाया था। जैन समाज का इतना योगदान होने पर भी इन सबकी कोई प्रामाणिक जानकारी उपलब्ध नहीं थी। हमारी बहुत इच्छा थी कि ऐसा कोई काम हो, जिससे देश की आजादी के आन्दोलन तथा राजनैतिक क्षेत्र में जैन समाज के योगदान को रेखांकित किया जा सके।

डॉ० कपूरचंद जैन और डॉ० ज्योति जैन हमारे पास दिल्ली आये और बताया कि हम 'स्वतंत्रता संग्राम में जैन' विषय पर काम कर रहे हैं तथा उसका एक खण्ड तैयार है, जिसमें उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश और राजस्थान के जैन स्वतंत्रता सेनानियों के परिचय हैं। ऐसे दो खण्ड और तैयार करने हैं।

लेखक दम्पति ने जैन स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों की स्मृति सम्पूर्ण राजनैतिक आध्यात्मिक, धार्मिक एवं सामाजिक परिप्रेक्ष्य में आयोजित कर एक अभूतपूर्व कार्य किया है। इस दुरुह कार्य में इनका विगत दस वर्षीय अथक श्रम प्रशंसनीय है। इस प्रकार के शोधकार्य से जैन समाज का इतिहास सुदृढ़ होता है अतः इस कार्य को करने वाले इस दम्पति को मेरा आशीर्वाद है, यह संस्कृति और समाज के अभ्युत्थान में सतत् समर्पित रहकर साहित्य सपर्या करते हुए अपना कल्याण करें।

उपाध्याय ज्ञानसागर

18.11.2002
छीपीटोला, आगरा

प्रकाशकीय

परमपूज्य उपाध्याय श्री ज्ञानसागर जी महाराज की प्रेरणा से प्राचीन जैन ग्रन्थों की पांडुलिपियों के संकलन, संरक्षण, नवीन साहित्य के प्रकाशन तथा लोकोपयोगी सत्साहित्य को सर्वसुलभ कराने एवं आगम प्रणीत ग्रन्थों के प्रकाश की क्षीण होती परम्परा को पुनर्जीवित करने के उद्देश्य से सन् 1991 में स्थापित प्राच्य श्रमण भारती एवं सहयोगी संस्था आचार्य शान्तिसागर 'छाणी' स्मृति ग्रन्थमाला द्वारा अभी तक चारों अनुयोगों के बहुमूल्य ग्रन्थ प्रकाशित किये जा चुके हैं जिसमें 'तीर्थंकर महावीर और उनकी आचार्य परम्परा' 'जैन धर्म' 'जैन शासन' 'षट्खण्डागम की शास्त्रीय भूमिका' जैसे ग्रन्थ लेखकों की कालजयी कृतिया हैं एवं षट्खण्डागम, तिलोयपण्णति, प्रमेय कमल मार्तण्ड परिशील, न्याय कुमुद चन्द परिशीलन जैसे दार्शनिक एवं करणानुयोग के दुर्लभ ग्रन्थों का प्रकाशन तथा तीर्थंकर पाश्र्वनाथ, जैन न्याय को आचार्य अकलंक देव का अवदान, आचार्य कुन्दकुन्द संगोष्ठी, आचार्य समन्तभद्र संगोष्ठी आदि शोधपूर्ण ग्रन्थों के प्रकाशन के अतिरिक्त मानवता की धुरी, प्रवचन पढ़ो तनाव भगाओ, लुढ़कन रपटन कम्पन का साथी, ज्वलन्त प्रश्न शीतल समाधान, बैठो-बैठो सुनो कहानी जैसी जनोपयोगी कृतियों का प्रकाशन उपाध्यायश्री की प्रेरणा एवं आशीर्वाद का ही प्रतिफल है। इसी क्रम में डॉ० कपूर चन्द जैन और डॉ० ज्योति जैन की श्रम-समय और बहु अर्थ साध्य पुसतक "स्वतन्त्रता संग्राम में जैन" का प्रकाशन सन् 2003 में हो चुका है।

भारतीय साहित्य और संस्कृति के विकास में जैन समाज ने अपना अनल्प योगदान दिया है। देश की समृद्धि में हमारा समाज सदैव अग्रिम पांक्तेय रहा है। यह बात अलग है कि उसका जितना मूल्यांकन होना चाहिए था, उतना हुआ नहीं। राष्ट्रीय चेतना में यह समाज सदैव अग्रणी रहा है। स्वतन्त्रता आन्दोलन में भी हमारे समाज ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया था। कुछ फाँसी के फंदे पर झूले तो कुछ को गोलियों का शिकार होना पड़ा। कुछ ने जेल की कठोर यातनायें सहीं तो कुछ परिवार-विहीन हो गये। अनेक लोगों ने बाहर से आन्दोलन को गतिमान बनाये रखा। स्वतन्त्रता आन्दोलन में जैन समाज के योगदान को प्रमाण सहित प्रस्तुत करती यह पुस्तक अत्यन्त लोकप्रिय हुयी। इसीलिए इतने अल्प समय में इस पुस्तक का द्वितीय संस्करण प्रस्तुत करते हुये हमें अपार हर्ष हो रहा है।

लेखक दम्पति व प्रस्तुत पुस्तक के द्वितीय संस्करण के प्रकाशन में सहयोगी सभी संस्थाओं एवं महानुभावों के हम आभारी है। हम आशा करते हैं कि इनका ऐसा ही सहयोग प्राच्य श्रमण भारती को सदैव मिलता रहेगा।

मंत्री

प्राच्य श्रमण भारती

उपक्रम

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का प्रारम्भ 1857 ई० की जनक्रान्ति से माना जाता है। 1857 से 1947 ई० के मध्य के 90 वर्षों में न जाने कितने शहीदों ने अपनी शहादत देकर आजादी के वृक्ष को सींचा, न जाने कितने क्रान्तिकारियों ने अपने रक्त से क्रान्तिज्वाला को प्रज्वलित रखा और न जाने कितने स्वातंत्र्य-प्रेमियां ने जेलों की सीखचों में बन्द रहकर दारुण यातनायें सहीं। ऐसे व्यक्तियों के अवदान को भी कम करके नहीं आँका जाना चाहिए जिन्होंने जेल से बाहर रहकर भी स्वतंत्रता के वृक्ष की जड़ों को मजबूती प्रदान की। आजादी के बाद कुछ का ही इतिहास लिखा जा सका। बहुसंख्य देशप्रेमी ऐसे हैं, जिनके सन्दर्भ में कहीं कोई चर्चा तक नहीं है।

आजादी के आन्दोलन में भाग लेने वाले प्रत्येक देशप्रेमी की अपनी अलग कहानी है, अलग गाथा है। पुरानी स्मृतियाँ हैं, दु:खद अनुभव हैं। परिवार की बर्बादी है और शरीर पर आजादी की इबारतें हैं। किन्हीं के चेहरे पर, किन्हीं की पीठ पर, किन्हीं के पेट पर तो किन्हीं के पैरों पर इन इबारतों के निशान हैं। कोई परिवार से छूटा तो कोई शिक्षा से। कितने ही देशप्रेमी कितने ही दिन भूखे पेट रहे, जेल में कंकर-पत्थर मिली रोटियाँ खाईं वह भी अशुद्ध। किसी ने खाईं तो बीमार पड़ गया, कोई बिना खाये ही दो-दो दिन भूखा रहा। किसी ने प्रतिवाद किया तो कोड़े खाये, किसी को गुनहखाने में डाल दिया गया। पर आजादी के ये दीवाने झुके नहीं।

आजादी के आन्दोलन में न जाति-पाँति का भेद था न छोटे बड़े का। न गरीब-अमीर की भावना थी, न ऊँच-नीच का भाव था। सभी का एक ही लक्ष्य था– 'हमें देश को आजाद कराना है, हमें आजादी चाहिए, मर जायेंगे, मिट जायेंगे पर आजादी लेकर ही रहेंगे।' फाँसी के फन्दे और गोलियों की बौछार उन्हें भयभीत नहीं कर सकी, जेल की दीवारें उन्हें रोक नहीं सकीं, जंजीरें बांध नहीं सकीं, डंडे कुचल नहीं सके और परिवार की बर्बादी उन्हें अपने गन्तव्य से विचलित नहीं कर सकी।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद स्वतंत्रता आन्दोलन तथा शहीदों/सेनानियों पर बहुत कुछ लिखा गया। स्वतंत्रता संग्राम में विभिन्न जातियों के योगदान पर पृथक्-पृथक् पुस्तकें भी लिखी गईं, परन्तु जैन समाज के योगदान पर कोई पुस्तक नहीं लिखी गई।

स्वतंत्रता संग्राम में जैन धर्मावलम्बियों ने बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया था। अनेक जैन शहीदों ने अपना बलिदान देकर आजादी के मार्ग को प्रशस्त किया तो अनेकों ने जेल की दारुण यातनायें सहीं। अनेक माताओं की गोदें सूनी हो गईं तो अनेक बहनों के माथे का सिन्दूर पुंछ गया। ऐसे लोगों का भी बहुत योगदान रहा जिन्होंने बाहर से आन्दोलन को सशक्त बनाया, जेल गये व्यक्तियों के परिवारों के भरण-पोषण की व्यवस्था की। जैन समाज धनिक समाज रहा है, अत: जितना आर्थिक अवदान इस समाज ने दिया, शायद ही किसी समाज ने दिया हो।

भारत के संविधान-निर्माण और आजाद हिन्द फौज में भी जैनों ने महती भूमिका निभाई थी। जैन पत्र-पत्रिकाओं ने भी इस आन्दोलन में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया था। कुछ पत्रों ने अपने आजादी सम्बन्धी

विशेषांक निकाले तो कुछ ने स्वदेशी भावना सम्बन्धी विज्ञापन भी प्रकाशित किये थे। अनेक पत्रों में प्रकाशित लेखों के कारण उनकी जमानतें जब्त हो गई थीं। स्वदेशी का प्रचार करने के लिये जैन बन्धुओं ने अपने मंदिरों में स्वदेशी, हाथ से कती धोती/साड़ी पहनकर ही पूजा-अर्चना करने का प्रचार किया था और मंदिरों में धोती/साड़ी की व्यवस्था भी की थी।

जैन समाज में इतिहास-लेखन के प्रति उदासीनता ही रही है। जैन आचार्यों, सम्राटों, सेनानायकों, कोषाध्यक्षों, मंत्रियों, साहित्यकारों और कवियों तक का प्रामाणिक इतिहास हमारे पास नहीं है। यहाँ तक कि जो हमारे सामने हाल ही में घटा है उसके लेखन की ओर भी हम गम्भीर नहीं हैं। जो वर्तमान में हो रहा है उसका तक इतिहास हम नहीं लिख रहे हैं। यह अत्यन्त चिन्ता का विषय है। कौन जानता है कि आजादी के बाद के पचास वर्षों में लगभग 35 सांसद, 4 राज्यपाल, 8 मुख्यमंत्री, 4 राजदूत, अनेक वैज्ञानिक और उच्च पदों पर जैन समाज के व्यक्ति आसीन हो चुके हैं। मध्य प्रदेश विधानसभा में लगभग 50 जैन विधायक अब तक निर्वाचित हुए हैं।

स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने वाले जैन वीरों का इतिहास आजादी के तत्काल बाद लिखा जाना चाहिए था। पर हमारे अन्वेषकों, विद्वानों, पंडितों, श्रीमानों का ध्यान इस ओर क्यों नहीं गया? यह विचारणीय विषय है। यद्यपि जैन समाज की शीर्ष संस्थाओं में लगभग 10 बार ऐसे प्रस्ताव पास हुए कि ऐसा काम होना चाहिए पर वे प्रस्ताव, प्रस्ताव ही रहे। जब कि जबलपुर, सागर, दमोह, ललितपुर, टीकमगढ़, जयपुर आदि ऐसे जिले हैं जहाँ के जैन सेनानियों पर स्वतंत्र ग्रन्थ लिखे जा सकते हैं।

लगभग दस वर्ष पूर्व हम दम्पती ने 'स्वतंत्रता संग्राम में जैन' जैसे अछूते विषय पर लिखने का विचार कर सामग्री का संकलन प्रारम्भ किया था। विचार था कि 100-125 पृष्ठ की एक पुस्तक इस विषय पर तैयार कर प्रकाशित की जाये। पूज्य आचार्य विद्यासागर जी महाराज की प्रेरणा और आशीर्वाद का ही प्रतिफल है कि ग्रन्थ को तीन खण्डों में प्रकाशित करने की योजना बनानी पड़ी।

प्रथम खण्ड में अमर जैन शहीदों के परिचय के साथ ही विशेषत: मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश व राजस्थान के जैन स्वतंत्रता सेनानियों का परिचय दिया जा रहा है। दूसरे खण्ड में अन्य प्रदेशों के सेनानियों के साथ ही उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश व राजस्थान के अवशिष्ट सेनानियों के परिचय देने की तथा तीसरे खण्ड में स्वतंत्र चिन्तन के साथ ही जेलयात्रा न कर अन्य प्रकार से सहयोग देने वाले जैन देशप्रेमियों का परिचय देने की योजना है।

प्रस्तुत खण्ड में 'बोलते शब्द चित्र' नाम से एक विस्तृत भूमिका दी जा रही है जिसमें भगवान् ऋषभदेव से लेकर 1857 ई० तक के जैन राजाओं, मंत्रियों, सेनापतियों, कोषाध्यक्षों, दीवानों, दुर्गपालों आदि का परिचय दिया गया है साथ ही कुछ विशिष्ट जैन राजनैतिक व्यक्तियों का भी इसमें परिचय दिया गया है। विस्तार भय से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों का ही उल्लेख इस उपक्रम में किया गया है। 'स्वतंत्रता आन्दोलन : एक सिंहावलोकन' में 1857 से 1947 तक की प्रमुख घटनाओं को दर्शाया गया है साथ ही स्वतंत्रता आन्दोलन की प्रमुख घटनाओं को वर्षवार एक अलग उपक्रम में भी दिखाया गया है।

'अमर जैन शहीद' उपक्रम में लगभग 20 जैन शहीदों का सप्रमाण परिचय दिया गया है। जितने उपलब्ध हो सके हैं उतने चित्र भी दिये गये हैं। कुछ और जैन शहीदों के परिचय और चित्र हेतु प्रयास जारी है।

'जैन स्वतंत्रता सेनानी' उपक्रम में उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश व राजस्थान के जैन स्वतंत्रता सेनानियों का परिचय दिया गया है। उत्तरांचल व छत्तीसगढ़ क्रमश: उत्तर प्रदेश व मध्य प्रदेश में समाहित हैं। इनमें अधिकांश जेलयात्री हैं। मध्य प्रदेश सरकार ने भूमिगत रहने वालों को भी स्वतंत्रता सेनानी का दर्जा दिया है, अंत: उनका परिचय भी इसी अध्याय में समाविष्ट है।

परिशिष्टों में कुछ लेख हमने यथावत् दिये हैं। स्याद्वाद महाविद्यालय, वाराणसी एक ऐसा महाविद्यालय है, जहाँ के लगभग सभी छात्र 1942 के आन्दोलन में क्रान्तिकारी हो गये थे। इन छात्रों का लेखा-जोखा वहीं के छात्र रहे श्री देवेन्द्र जैन ने 'जैन सन्देश', राष्ट्रीय अंक (जनवरी, 1947) में प्रस्तुत किया था, जिसे हमने यथावत् दिया है। 'राष्ट्रीयता क्या है?' शीर्षक लेख पं० चैनसुखदास न्यायतीर्थ ने लिखा था जो 'जैन सन्देश' के उक्त अंक में छपा था, उसे भी यथावत् दे दिया गया है। एक जब्तशुदा लेख के अन्तर्गत देवबन्द के बाबू ज्योति प्रसाद जैन का 'भगवान् महावीर और महात्मा गाँधी' लेख दिया गया है जो देवबन्द से प्रकाशित 'जैन प्रदीप' (उर्दू) में अप्रैल एवं मई-जून 1930 के अंकों में छपा था। इस लेख के कारण पत्र की जमानत जब्त हो गई थी और पत्र भी बन्द हो गया था। 'स्त्रियाँ राजनैतिक क्रान्ति में भाग लें या नहीं?' शीर्षक लेख 'जैन महिलादर्श' के अगस्त 1946 के अंक में छपा था, जिसे भी यथावत् दिया जा रहा है।

भारत के संविधान निर्माण में जैनों ने भी महत्त्वपूर्ण योगदान दिया था। संविधान सभा के पाँच जैन सदस्यों की प्रामाणिक जानकारी हमें मिली है जिनमें श्री कुसुमकान्त जैन सभा के सम्भवत: सबसे कम उम्र के सदस्य थे। श्री कुसुमकान्त जैन और श्री बलवन्त सिंह मेहता अभी हमारे बीच हैं, यह जैन समाज के लिए परम सौभाग्य की बात है। श्री मेहता 8 फरवरी 2000 को शतायु होकर एक सौ एक वें वर्ष में प्रवेश कर चुके हैं। राजस्थान के डॉ० राजमल कासलीवाल, नेताजी सुभाषचन्द्र बोस के निजी चिकित्सक रहे थे। श्रीमती रमाबेन आदि महिलायें आजाद हिन्द फौज की सदस्यायें रही थीं। 'आजाद हिन्द फौज में जैन' शीर्षक लेख में हमने उनके इसी अवदान को रेखांकित करने का प्रयास किया है 'राष्ट्रीय आन्दोलन में जैन पत्र-पत्रिकाओं का योगदान' लेख में जैन पत्र-पत्रिकाओं के अवदान को रेखांकित किया गया है, कि किस प्रकार जैन पत्रकार बिना किसी भय के आन्दोलन के सन्दर्भ में समाचार/लेख आदि देते रहे। इस विषय में अन्य भी बहुत सामग्री हमारे पास उपलब्ध है, जिसे विस्तार भय से नहीं दिया गया है।

अन्त में आधारभूत ग्रन्थों की सूची दी गई है। इसमें अधिकांशत: वे ही ग्रन्थ उल्लिखित हैं जिनका उपयोग हुआ है। ऐसे अनेक ग्रन्थ हैं जिनका अध्ययन तो किया गया पर जिनमें कोई सामग्री नहीं मिली। सामान्यत: ऐसे ग्रन्थों का उल्लेख नहीं किया गया है। अनेक ग्रन्थ कई दशकों पूर्व प्रकाशित हुए थे जिनकी प्रतियाँ नहीं मिल सकीं, ऐसी दशा में पूरे के पूरे ग्रन्थ की फोटोस्टेट करानी पड़ी, जो हमारे पास सुरक्षित हैं। जिन ग्रन्थों का अनेक बार उल्लेख किया गया है उनके लिए कुछ संक्षिप्त संकेत बनाये हैं, जिन्हें ग्रन्थारम्भ में दे दिया गया है।

सामग्री का लेखन करते समय इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि जो कुछ संकलित हुआ है उसे यथासम्भव सुरक्षित रखा जाये और उतनी ही काट-छाँट की जाये जो स्पष्टता और सुबोधता के लिए आवश्यक हो। अपनी तरफ से कुछ भी नया हमने नहीं जोड़ा है क्योंकि यह हमारे कार्यक्षेत्र से बाहर है। किसी इतिहास लेखक को यह करना भी नहीं चाहिए। हम उन घटनाओं के प्रत्यक्षदर्शी नहीं हैं। हमें तो जो लिखित और व्यक्तियों के श्रीमुख से मिला उसे ही प्रस्तुत किया है।

यह समस्या थी कि किसकी स्मृतियों को छोड़ा जाये, किसके अनुभवों को न लिखें। एक-एक परिचय को अन्तिम रूप देते समय घंटों का समय इसी बहस में निकला है। सामग्री बढ़ने की चिन्ता थी पर अन्दर एक लोभ बैठा था कि आजादी की आधी शताब्दी बीत जाने पर यह कार्य हो रहा है बाद में कोई करेगा? यह निश्चित नहीं। स्वतंत्रता की इन साक्षात् मूर्तियों की परम्परा भी समाप्तप्राय: है, फिर शायद ये स्मृतियाँ, ये अनुभव, ये घटनायें, यह इतिहास न मिले, अत: सरल भाषा में जितना जरूरी और आवश्यक था, वह हमने लिखा है।

स्वतंत्रता सेनानियों के ये परिचय अलग-अलग समय, अलग-अलग तिथि तथा अलग-अलग आधार पर लिखे गये हैं अत: इनकी भाषा-शैली में अन्तर होना स्वाभाविक है। निवेदन है कि प्रत्येक परिचय को एक स्वतंत्र इकाई मानकर पढ़ा जाये।

प्रामाणिकता

प्रस्तुत ग्रन्थ में जो भी सामग्री दी है, उसकी प्रामाणिकता का विशेष ध्यान रखा है। स्वाधीनता आन्दोलन में जैन ही नहीं प्रत्येक सेनानी ने किसी लाभ के वशीभूत होकर नहीं, अपितु भारत माता को आजाद कराने की कर्तव्य भावना से भाग लिया था। आजादी के बाद इसको भुनाने का जैन समाज के लोगों ने कभी प्रयत्न नहीं किया, न ही अपने नाम स्वधीनता सेनानियों की सूची में जुड़वाने के प्रयत्न किये, अनेक ने तो सरकार द्वारा दी गई जमीन आदि को लेने से भी इन्कार कर दिया, फलत: अनेक जैन सेनानियों के नाम सरकारी पेंशन या अन्य सुविधा प्राप्त सूचियों में नहीं आ पाये। ऐसी दशा में उनकी पहचान करना और कठिन हो गया।

इस कार्य को करने के लिए हमने जैन समाज तथा उसके उपसम्प्रदायों के इतिहास ग्रन्थ देखे हैं, साथ ही विभिन्न सरकारी सूचियों, पुस्तकों, सन्दर्भों का आश्रय लिया है। विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं से भी प्रचुर सामग्री प्राप्त हुई है। मध्य प्रदेश शासन द्वारा पाँच खण्डों में प्रकाशित 'मध्य प्रदेश के स्वतंत्रता संग्राम सैनिक' महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ है। मध्य प्रदेश के विभिन्न जिलों की अनेक सूचियाँ भी हमें मिली हैं।

23 जनवरी 1947 को प्रकाशित 'जैन सन्देश' का लगभग 100 पृष्ठीय राष्ट्रीय अंक इस विषय का एक महत्त्वपूर्ण दस्तावेज है। इस अंक में उस समय वर्तमान और दिवंगत हो चुके लगभग पूरे भारत, विशेषत: हिन्दी भाषी क्षेत्रों के अनेक जैन स्वतंत्रता सेनानियों के परिचय हैं। जब देश आजाद भी नहीं हुआ था तब इस प्रकार के अंक का प्रकाशन सचमुच साहसपूर्ण कार्य था। उस समय आज की तरह पेंशनादि के लिए झूठे नामों को जुड़वाना भी सम्भव नहीं था। इस अंक से हमें प्रचुर सामग्री प्राप्त हुई है।

'उत्तर प्रदेश और जैनधर्म' में उत्तर प्रदेश के जैन सेनानियों की एक प्रामाणिक सूची डॉ० ज्योति प्रसाद जैन ने 1974 में प्रकाशित की थी। सूची के अन्त में लिखा है-'जो विशेष रूप से उल्लेखनीय थे और जिनके विषय में निश्चित रूप से ज्ञात हो सका उन्हीं का उल्लेख ऊपर किया गया है।'

श्री सुमनेश जोशी का 'राजस्थान में स्वतंत्रता संग्राम के सेनानी' ग्रन्थ राजस्थान के सन्दर्भ में महत्त्वपूर्ण दस्तावेज है। 850 पृष्ठीय इस ग्रन्थ में अनेक जैन सेनानियों का भी परिचय है। अनेक जैन शहीदों/सेनानियों पर स्वतंत्र पुस्तकें/अभिनन्दनग्रन्थ/स्मृतिग्रन्थ/स्मारिकायें आदि प्रकाशित हुई हैं। दैनिक-पाक्षिक-मासिक

पत्र-पत्रिकाओं में भी सेनानियों पर काफी कुछ लिखा गया है। उनका संकलन कर उपयोग किया है।

जितने सेनानियों के पते प्राप्त हो सके उन्हें पत्र दिये, जिनमें अधिकांश वापिस आ गये। लगभग तीन हजार पत्रों का आदान-प्रदान हमें इस कार्य के लिए करना पड़ा है।

सामग्री की प्रामाणिकता बनाये रखने के लिए जिस पुस्तक/लेख/पत्र-पत्रिका आदि से आधारभूत सामग्री ग्रहण की गई है, उसका उल्लेख कर दिया गया है एवं उन्हीं का उल्लेख सन्दर्भ ग्रन्थ सूची में किया गया है। जहाँ एक निश्चित पृष्ठ से सामग्री का संचयन किया गया है, वहाँ पृष्ठ संख्या दे दी गई है। जहाँ एक ही पुस्तक/पत्र-पत्रिका आदि के अनेक स्थानों से सामग्री का संचयन किया गया है वहाँ पृष्ठ संख्या न देकर उसका नामोल्लेख किया गया है।

परम्परानुसार अनेक आलोचक बन्धु कह सकते हैं कि इस विषय में अमुक-अमुक सामग्री और होनी चाहिए थी तथा अमुक नहीं होनी चाहिए थी। उनका कहना सच भी है। वस्तुतः इतिहास अपना अवगुण्ठन एक साथ नहीं खोलता। परत-दर-परत इतिहास की तहें निकलती रहती हैं। अन्वेषक नये तथ्यों का अन्वेषण कर नई-नई स्थापनायें करते रहते हैं। हम आशा करते हैं कि अन्य बन्धु भी अपने अन्वेषणों से इस कार्य को आगे बढ़ाकर जैन समाज के गौरव में अभिवृद्धि करेंगे।

जिन सेनानियों का परिचय कम है उन्हें लग सकता है कि अधिक होना चाहिए था। पर हम उन्हें विश्वास दिलाना चाहते हैं कि हमने राग-द्वेष से परे रहकर, जो कुछ हमारे सामने था उसी के आधार पर प्रस्तुत सामग्री प्रस्तुत की है। हाँ यहाँ सेनानियों के राजनैतिक और धार्मिक क्रियाकलापों को ही मुख्य आधार बनाया है।

हम उन सेनानियों से क्षमाप्रार्थी हैं जिनसे यहाँ प्रमाण हेतु प्रमाणपत्र मंगाने पड़े। क्योंकि यहाँ जो लिखा है, साधार ही लिखा है। इस हेतु लाखों पृष्ठों की सामग्री का अध्ययन करना पड़ा है। लगभग दस हजार पृष्ठों की फोटोकापी भी करानी पड़ी है।

मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश और राजस्थान के ही अनेक जैन सेनानियों के परिचय हमारे पास हैं परन्तु कोई प्रमाण नहीं है अतः उनके परिचय इस खण्ड में नहीं दिये गये हैं। प्रमाण मिलते ही अगले खण्ड में उन्हें दिया जायेगा। साथ ही ऐसे अनेक नाम भी हैं, जिनके प्रमाण तो हैं पर परिचय प्राप्त नहीं हो सके हैं, उनका परिचय भी अगले खंड में देने की योजना है। हमारे पास ऐसे अनेक लेख संगृहीत हैं, जो स्वतंत्रता संग्राम में जैनों के अवदान को रेखांकित करने वाले हैं, इनका प्रकाशन भी आगामी खण्डों में करने की योजना है।

पाठकों से

पुस्तक के सन्दर्भ में कुछ निवेदन आपसे करना है। यदि किसी जैन शहीद या स्वतंत्रता सेनानी के सन्दर्भ में कोई जानकारी आपके पास है तो सप्रमाण हमें भेजकर अनुग्रहीत कीजियेगा। साथ ही इस पुस्तक में उल्लिखित शहीदों/सेनानियों के सन्दर्भ में कोई जानकारी हो तो उसे भी भेजकर अनुग्रहीत करें।

उपनाम के कारण लेखन कार्य में बड़ी समस्या हुई है। अनेक जैन बन्धु अपने नाम के आगे जैन न लिखकर उपनाम-सिंघई, सेठी, कासलीवाल, वैद, मालवीय, मलैया, पाटनी, चौधरी, पोरवाल, शाह, मेहता, पटवा, लबेंचू आदि लिखते हैं। कुछ बन्धु नाम के आगे कुछ लिखते ही नहीं। ऐसी दशा में सेनानी का

परिचय तभी दिया गया है जब उनके जैन होने का पूर्ण पता कर लिया गया।

विदेशी एवं हिन्दीतर व्यक्तियों के नामों के हिन्दी रूपान्तरण सभी स्थानों पर एक से उपलब्ध नहीं होते, अत: ऐसे रूपान्तरणों में लिपि सम्बन्धी अन्तर हो सकते हैं। इसी प्रकार सेनानियों के नामों तथा उनके जन्मस्थान आदि के नामों में भी लिपि सम्बन्धी अन्तर हो सकते हैं।

हमें शहीदों/सेनानियों/प्रमुख व्यक्तियों के जन्म-मृत्यु, जेल-यात्रा आदि की जो तिथियाँ मिलीं, वे ईस्वी सन्/विक्रम संवत्/वीर निर्वाण संवत् आदि में मिलीं हैं। एकरूपता लाने के लिए यहाँ यथासम्भव ईस्वी सन् का प्रयोग किया है अत: गणना में महीनों का अन्तर हो सकता है। कुछ घटनाओं की तिथियाँ अलग-अलग पुस्तकों में अलग-अलग हैं, यद्यपि एकरूपता का पूरा प्रयास किया गया है, फिर भी कहीं-कहीं अन्तर हो सकता है।

सेनानियों का परिचय देते समय हमने दो बातों का विशेषत: उल्लेख किया है। प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में उनकी भागीदारी तथा द्वितीय जैन धर्म/दर्शन/साहित्य/संस्कृति के प्रति उनकी आस्था और उसके विकास के लिए कृत कार्य। बाकी परिचय संक्षेप में दिया है।

अनेक स्वतंत्रता सेनानियों के दर्शन और उनसे साक्षात्कार का सौभाग्य हमें मिला है। अपनी जेल यात्राओं की दर्दभरी कहानियाँ तथा तात्कालिक परिस्थितियों के सन्दर्भ में उन्होंने जानकारी प्रदान की थी। ऐसे स्थानों पर आधार हेतु साक्षात्कार (सा०) का प्रयोग किया है। अनेक सेनानियों ने हमारे आग्रह करने पर अपना परिचय व चित्र भेजे हैं उनके लिए आधार में यहाँ स्वप्रेषित परिचय (स्व०प०) का प्रयोग किया है।

पहले सेनानियों का परिचय प्रदेशवार दे रहे थे, पर एक सेनानी बाद में दूसरे प्रदेश में चला गया या दो बार अलग-अलग प्रदेशों की जेलों में रहा तो उसे किस प्रदेश का माना जाये? ऐसी अनेक समस्यायें हमारे सामने थीं, अत: आकारादि क्रम से सेनानियों का परिचय दिया जा रहा है।

स्वर्गीय (स्व०) शब्द उन्हीं सेनानियों के लिए प्रयुक्त किया है जिनके निधन की निश्चित जानकारी हमें प्राप्त हो गई है। यद्यपि इनमें अनेक ऐसे हैं जिनका निधन हो गया है पर निश्चित सूचना के अभाव में उन्हें स्वर्गीय नहीं लिखा है।

मध्य प्रदेश में 1949 में 'भोपाल राज्य विलीनीकरण आन्दोलन' चला। शासन ने उसमें भाग लेने वालों को स्वतंत्रता सेनानी माना है अत: उनका उल्लेख हमने भी इस ग्रन्थ में किया है। साथ ही 'गोवा मुक्ति आन्दोलन' में जेल जाने वालों का उल्लेख भी इस ग्रन्थ में किया गया है।

कुछ सेनानियों के निवास स्थान का स्पष्ट उल्लेख न मिल पाने के कारण उनके जिले के नाम से उनका उल्लेख किया गया है।

यात्रायें

इस कार्य को करने के लिए हमें जबलपुर, दमोह, सागर, छिन्दवाड़ा, रामटेक, कुण्डलपुर, झाँसी, ललितपुर, वाराणसी, जयपुर, उदयपुर, ब्यावर, अलवर, सहारनपुर, रुड़की, मेरठ, आगरा, भोपाल, सतना, मुम्बई, देवबन्द, नेमावर, कानपुर, कोटा, टीकमगढ़, सिवनी, नैनपुर, केवलारी, डिण्डोरी, दिल्ली आदि अर्धशताधिक स्थानों की यात्रायें करनी पड़ीं हैं। दिल्ली तो अनेक बार जाना हुआ। इन यात्राओं में बड़े

खट्टे-मीठे अनुभव हुए। कुछ स्थानों पर तो हमें लोगों ने 'चंदा उगाहने वाला पंडित' समझा और सौ-दो सौ रुपये देने की पेशकश कर टालना चाहा। अपना प्रयोजन बताने पर उन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ कि क्या कोई व्यक्ति ऐसी खोज करने में भी परिश्रम कर सकता है। अस्तु, अधिकांश स्थानों पर लोगों ने भरपूर सहयोग दिया। सभी की चर्चा विस्तार से करना सम्भव नहीं है, फिर भी कुछ के नाम देने का लोभ-संवरण नहीं कर पा रहे हैं।

11-12 दिसम्बर 1994 को सहारनपुर में प्रसिद्ध साहित्यकार श्री कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' के जब दर्शन किये तो वे जिस आत्मीयता से मिले वह शब्दातीत है। उनके ये शब्द आज भी कानों में गूँज रहे हैं,- 'आप जो श्राद्ध जैन सेनानियों का कर रहे हैं वह अनूठा है।' सहारनपुर में प्राचार्य डॉ० रूपचंद जैन, बाबू विशाल चंद जैन, डॉ० रामशब्द सिंह, श्री अखिलेख मिश्र आदि का विशेष सहयोग रहा। लौटते हुए रुड़की में डॉ० अशोक जैन का आतिथ्य भी हमने स्वीकार किया। 6 मई 1995 को पुन: श्री अयोध्याप्रसाद गोयलीय की पुस्तकों के अन्वेषण हेतु गये। पुस्तकें तो मिलीं पर जमानत के बाद।

देवबन्द के श्री कुलभूषण जैन ने अपने दादा स्व० ज्योति प्रसाद के जब्तशुदा लेख की मूल उर्दू कापी की फोटोस्टेट सरलता से हमें प्रदान कर दी। छिन्दवाड़ा और डिण्डोरी प्रवास के दौरान श्री प्रबोधचंद, एडवोकेट और श्री राजू भैय्या के पारिवारिक जनों ने जो आवभगत की वह हमारी स्मृति-मंजूषा के अमूल्य रत्न बन गये हैं।

जबलपुर में 'मध्य प्रदेश स्वतंत्रता संग्राम सेनानी संघ' के संस्थापक-मंत्री श्री रतनचंद जैन ने अपनी संचित सामग्री का अवलोकन जिस सरलता से कराया। उससे लगा कि दुनिया में आज भी सरल और सहृदय लोग हैं। फिर तो पत्रों का सिलसिला निरन्तर चलता रहा। वे कार्य के प्रति उत्साहित करते रहे। खेद है कि इस ग्रन्थ को देखे बिना ही वे स्वर्ग सिधार गये। उन्हें हमारी विनम्र श्रद्धांजलि।

राष्ट्रीय अभिलेखागार तथा राष्ट्रीय संग्रहालय, दिल्ली भी अनेक बार जाना हुआ, वहाँ के अधिकारियों व कर्मचारियों ने जो सहृदयता दिखाई उसके लिए आभारी हैं। उदयपुर में श्री नाथूराम जैन, एडवोकेट ने संविधान की मूल प्रति से भगवान महावीर के चित्र का फोटोग्राफ करवाने में अनुपम सहयोग दिया। दमोह के श्री सिंघई संतोष कुमार ने कुण्डलपुर प्रवास में अवासादि की उत्तम व्यवस्था की। दिल्ली प्रवास में प्रसिद्ध गाँधीवादी श्री फूलचंद जैन ने दिल्ली जेल के स्वतंत्रता सेनानियों की जानकारी दी। प्रसन्नता का विषय है कि श्री फूलचंद जैन की पुस्तक 'बन्दीनामा' के तीन खण्ड प्रकाशित हो गये हैं।

आभार

सन्तशिरोमणि परमपूज्य दिगम्बर जैनाचार्य आचार्य विद्यासागर जी महाराज की प्रेरणा और आशीर्वाद न मिला होता तो यह कार्य इतने विशाल और प्रामाणिक रूप में न हो पाता। हमने तो लगभग 100-125 पृष्ठों में सेनानियों की एक सूची मात्र छापने का विचार किया था, किन्तु 1993 में श्रवणबेलगोल से लौटते हुए हम अचानक आचार्यश्री के दर्शनार्थ रामटेक उतर गये। चर्चा के दौरान हमने अपनी योजना बताई और कहा कि 'हम कुछ समय से सामग्री का संकलन कर रहे हैं।' तब आचार्यश्री ने आशीर्वाद देते हुए कहा कि 'ग्रन्थ की विशालता की चिन्ता मत करो, दो या तीन खण्ड भी निकालना पड़ें तो कोई बात नहीं, पर

सभी सामग्री प्रामाणिक होना चाहिए' सच है, लौकिक सत्पुरुषों की वाणी अर्थ के पीछे चलती है परन्तु आद्य अर्थात् महाऋषियों की वाणी के पीछे-पीछे अर्थ स्वयं चलता है-

लौकिकानां हि साधूनामर्थं वागनुवर्तते।
ऋषीणां पुनराद्यानां वाचमर्थोऽनुधावति॥

सचमुच ऐसा ही हुआ। इतनी सामग्री संकलित हो गई है कि इसे तीन खण्डों में प्रकाशित करने की योजना है। पूज्य आचार्यश्री के चरणों में बारम्बार कोटिशः नमोऽस्तु।

आचार्य विद्यासागर जी महाराज के संघस्थ पूज्य ऐलक अभयसागर जी महाराज (सम्प्रति-मुनि श्री अभयसागर जी महाराज) के हमने दर्शन भी नहीं किये थे, तब उन्होंने विभिन्न लोगों को प्रेरणा देकर एतद्विषयक सामग्री भिजवाना प्रारम्भ कर दिया था। इतनी अधिक सामग्री का संकलन होना उन्हीं की प्रेरणा का प्रतिफल है। पूज्य मुनिश्री के चरणों में कोटिशः नमोऽस्तु।

पूज्य आचार्य विद्यानन्द जी महाराज ने जब हमारी पुस्तक 'अमर जैन शहीद' का दिल्ली के परेड ग्राउण्ड में लोकार्पण किया था, तब असीम प्रसन्नता व्यक्त की थी और कार्य की त्वरा के प्रति प्रेरित किया था। उनके श्रीचरणों में पुनः-पुनः नमोऽस्तु।

ग्रन्थ की पाण्डुलिपि लगभग 3-4 वर्ष पूर्व तैयार हो गई थी और किसी प्रकाशक की राह देख रही थी। परमपूज्य सराकोद्धारक उपाध्यायरत्न श्री ज्ञानसागर जी महाराज की दृष्टि इस ओर पड़ी। उन्हीं के आशीर्वाद से इसका प्रकाशन सम्भव हुआ है। पूज्य उपाध्यायश्री जैन विद्या और विद्वानों के संरक्षण का जो कार्य कर रहे हैं, वह युगों-युगों तक स्मरण किया जायेगा, उनके श्रीचरणों में अनन्तशः नमोऽस्तु।

पूज्य मुनि श्री क्षमासागर जी महाराज, मुनि श्री सुधासागर जी महाराज, मुनि श्री प्रमाणसागर जी महाराज, मुनि श्री विनीतसागर जी महाराज, मुनि श्री चन्द्रसागर जी महाराज, पूज्य क्षुल्लक श्री धैर्यसागर जी महाराज, क्षुल्लक श्री गम्भीरसागर जी महाराज का आशीर्वाद हमें सदैव मिलता रहा है, उनके श्रीचरणों में अनेकशः नमोऽस्तु-इच्छामि।

जिन पुस्तकों/पत्र-पत्रिकाओं/आलेखों से यह पुस्तक तैयार हुई है, उनके लेखकों के हम आभारी हैं। वस्तुतः तो यह कार्य उन्हीं का है। उन रिश्तेदारों/मित्रों/परिचितों/अपरिचितों का आभार न मानें तो कृतघ्नता होगी, जिन्होंने अपने व्यस्त समय में से समय निकालकर हमारे पत्रों के उत्तर दिये हैं। जिस स्थान के सेनानी का पता चला वहीं के अपने रिश्तेदार/परिचित/मित्र को तत्काल पत्र लिख डाला। कुछ ने जबाब दिया, कुछ ने झुँझलाकर लिखा कि-'आपको क्या जरूरत आन पड़ी है, यह काम करने की। आज स्वतंत्रता सेनानी अपनी देशसेवा का नगदीकरण करा रहे हैं, उनके पुत्र तक देशसेवा के बदले सुख-सुविधायें भोग रहे हैं क्या यह उचित है?' आदि-आदि। कुछ ने लिखा कि 'उस समय जो भी जेल गये थे, वह आज सेनानी बने हुए हैं।' कुछ ने हमारे पत्र बिना अपनी कोई टिप्पणी किये वापिस भेज दिये और कुछ ने तो कुछ लिखना ही उचित नहीं समझा। शताधिक पत्र ऐसे भी हैं जो पता गलत होने/परिवर्तित होने से वापिस आ गये। हमारे अनुरोध पर या स्वयं अपने आप ही पत्रादि देकर सहयोग करने वालों तथा सेनानियों के पुत्र-पुत्रियों/रिश्तेदारों आदि का उल्लेख यथा स्थान कर दिया गया है। अंग्रेजी, उर्दू, मराठी आदि भाषाओं से हिन्दी में अनुवाद कर सहयोग करने वाले महानुभावों के भी यथास्थान उल्लेख कर दिये हैं। हम उनसे

उपकृत हुए हैं। हमारे सामने समस्या यह है कि किसका नाम पहले दें, किसका बाद में? अतः हम अकारादि क्रम से सभी बन्धुओं के प्रति हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करते हैं।

श्री अरुण कुमार शास्त्री, ब्यावर, श्री अभय कुमार जैन, अकोना, श्री अभिनन्दन सांधेलीय, पाटन, श्री आनन्द गोयल, भिण्ड, श्री आलोक कुमार जैन, नरसिंहपुर, श्री मौ० उमर, खतौली, डॉ० कमलेश कुमार जैन, वाराणसी, श्री कमलेश बी० गाँधी, सूरत, श्री कुबेर चंद जैन, मण्डला, श्री कुसुमकान्त जैन, सदस्य संविधान सभा, इन्दौर, डॉ० कैलाश नारद, जबलपुर, श्री खेमचंद स्वदेशी, तेंदूखेड़ा सगौनी, श्री गोर्धनदास जैन, आगरा, श्री जमनालाल जैन, सारनाथ, डॉ० जयकुमार जैन, मुजफ्फरनगर, ब्र० जयनिशान्त जैन, टीकमगढ़, श्री डालचंद जैन, पूर्व सांसद, सागर, श्री दलीचंद जैन, रतलाम, श्री दिनेश कुमार जैन, मेरठ, श्री दिलीप कुमार जैन, श्री दीपचंद जैन, भोपाल, डॉ० (श्रीमती) दुर्गा जैन, जबलपुर, श्री दुलीचंद जैन, देवरी, श्री देशदीपक जैन, कुरावली, श्री धन्यकुमार जैन, वाराणसी, डॉ० नन्दलाल जैन, रीवां, प्राचार्य नरेन्द्र प्रकाश, फिरोजाबाद, एड० नरेन्द्र भण्डारी, सागर, श्री नरेश दिवाकर, विधायक, सिवनी, श्री नरेश कुमार जैन, पटना, श्री निर्मल कुमार पाइया, श्री पदम कुमार जैन, सागर, एड० पदम कुमार जैन, अजमेर, डॉ० पद्मजा पाटील, कोल्हापुर, वैद्य पन्नालाल 'सरल' फिरोजाबाद, श्री पी० जी० उमाठे, रायपुर, एड० पी० सी० चौधरी, गरोठ, डॉ० प्रकाशचंद जैन, सागर, डॉ० प्रमोद शंकर झा, खतौली, श्री प्रवीण जैन 'विद्या' मेरठ, श्री प्रेम कुमार जैन, विदिशा, श्री फूलचंद भदौरा, टीकमगढ़, श्री फूलचंद 'मधुर' सागर, पं० बच्चू लाल शास्त्री, कानपुर, श्री बागमल बांठिया, कोटा, डॉ० बाहुबली जैन, ललितपुर, श्री भीकमचंद सिंघवी, गोटेगाँव, श्री मनोज कुमार 'निर्लिप्त' अलीगढ़, श्री महावीर प्रसाद जैन, अलवर, श्री महेन्द्र कुमार कठरया, ललितपुर, इ० महेन्द्र कुमार जैन, मेरठ, श्री महेन्द्र कुमार जैन, हरदा, श्री महेश कुमार 'बरमुण्डा', ब्र० माणिक चन्द्र चंवरे, कारंजा, श्री मुकेश कुमार जैन, नरसिंहपुर, श्री मुलायम चंद जैन, टडा, श्री यशवन्त कुमार शास्त्री, दमोह, डॉ० रतनचंद जैन, भोपाल, डॉ० रत्नलाल जैन, हांसी, श्री रवीन्द्र मालव, ग्वालियर, श्री राकेश बजाज, खतौली, श्री राकेश कुमार जैन, शहपुरा, एड० रामजीत जैन, ग्वालियर, श्री रामस्वरूप जैन, खैरगढ़, मा० रिखव चंद जैन, आगरा, श्री रूपकिशोर जैन, इन्दौर, श्री आर० एस० कोठारी, कारंजा, स्व० पं० वंशीधर शास्त्री, बीना, श्री विजयकुमार जैन, खुरई, श्री विपिन जैन, नरसिंहपुर, श्री विनोद जैन, सहारनपुर, श्री विनोद जैन, सी० ए०, गोंदिया, श्री विनोद सौगानी, जयपुर, श्री विभव कुमार जैन, बीना, श्री विमल चोरड़िया, पूर्व सांसद, मन्दसौर, सौ० विमला जैन, नागपुर, श्री वीरेन्द्र कुमार जैन, ग्वालियर, डॉ० वृषभ प्रसाद जैन, लखनऊ, श्री शिखर चंद जैन, आगरा, श्री शरत जैन, भोपाल, डॉ० शशिकान्त जैन, लखनऊ, डॉ० श्रीरंजन सूरिदेव, पटना, डॉ० श्रीमोहन कंसल, खतौली, श्री शैलेन्द्र जैन, छतरपुर, स्व० श्री एस० के० जैन, साहू जैन ट्रस्ट, दिल्ली, श्री संजय जैन, लोधीखेड़ा, श्री संजय जैन 'मैक्स', इन्दौर, डॉ० सत्यप्रकाश जैन, दिल्ली, सौ० सरयू दफ्तरी, मुम्बई, श्री सुगन चंद जैन, गोटेगाँव, श्री सुनील कुमार जैन, छिन्दवाड़ा, श्री सुभाष जैन, सुमत मेडीकल, सागर, श्री सुमत कुमार जैन, सी० ए०, झाँसी, श्री सुरेन्द्र कुमार जैन, जैना वाच, खतौली, श्री सुरेन्द्र कुमार जैन, नरसिंहपुर, स्व० श्री सुरेन्द्र कुमार जैन, छतरपुर, डॉ० सुरेश चंद जैन, वाराणसी, श्री सुरेश जैन, आई० ए० एस०, भोपाल, इ० सुरेश चंद जैन, छिन्दवाड़ा, एड० श्रीमती स्नेहलता जैन, जोधपुर, श्री हजारीमल बांठिया, कानपुर, श्री ज्ञानचंद खिन्दूका, जयपुर, श्री ज्ञानसिंह लोढा, इन्दौर।

श्री मनोज कुमार गुप्ता, कु० वैशाली जैन, कु० पूनम जैन, कु० मोनिका कंसल आदि ने पुनः-पुनः पाण्डुलिपि तैयार करने में सहयोग दिया है। हमारे पुत्र चि० कार्तिक और अनिकेत ने इधर-उधर बिखरे कार्डों को क्रम से लगाते हुए समय-असमय लेखन कार्य में सहायता की है। इन सभी के मंगलमय भविष्य के प्रति शुभाषी:।

प्रस्तुत ग्रन्थ की सामग्री का संकलन 'श्री कैलाशचंद जैन स्मृति न्यास' द्वारा किया गया और प्रकाशन प्राच्य श्रमण भारती द्वारा किया गया है। प्राच्य श्रमण भारती जैन विद्याओं के प्रकाशन- क्षेत्र में उभरती हुई संस्था है, जिसने अनेक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों का प्रकाशन किया है।

अन्त में आपसे यही अनुरोध करना है कि इस पुस्तक में जो कुछ वरेण्य फूल हैं वे सब अपने पूज्य आचार्यों, गुरुजनों, महानुभावों, मित्रों और सहयोगियों के आशीर्वाद और शुभकामनाओं के फल हैं और जो कुछ अवरेण्य शूल हैं वे सब हमारे अपने हैं। आशा है हमारी वस्तु हमें लौटाने की सदाशयता आप दिखायेंगे।

गच्छन्तः स्खलनं क्वापि भवत्येव प्रमादतः।
हसन्ति दुर्जनाः तत्र समादधति सज्जनाः।।

कपूर चंद जैन
श्रीमती ज्योति जैन

राष्ट्रीयता

प्रत्येक देश को स्वाधीन रहने का जन्मसिद्ध अधिकार है। उस अधिकार को जो छीनना चाहे, उसका सम्पूर्ण शक्ति लगाकर सामना करना ही राष्ट्रीयता है।

– पं० चैनसुखदास न्यायतीर्थ

अनुक्रमणिका

5 उपक्रम : पाँच
जैन स्वतंत्रता सेनानी

संकेत-सूची

आ०	आधार (वे ग्रन्थ, पुस्तकें, पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित आलेख, समाचार, साक्षात्कार, सम्मानपत्र, ताम्रपत्र, प्रमाणपत्र, व्यक्तिगत पत्र आदि, जिनके आधार पर वह इतिवृत्त लिखा गया है।)
ई०	ईस्वी सन्
उ० प्र०	उत्तर प्रदेश
ती०	तीर्थंकर
दि०	दिगम्बर (विशेषत: भूमिका में प्रयुक्त)
पृ०	पृष्ठ
भ०	भगवान्
म० प्र०	मध्य प्रदेश
राज०	राजस्थान
रा० आ०	राष्ट्रीय आन्दोलन
वि० सं०	विक्रम संवत्
वी० नि० सं०	वीर निर्वाण संवत्
सा०	साक्षात्कार
स्व०	स्वर्गीय
स्व० प०	स्वप्रेषित परिचय (हमारे विशेष अनुरोध पर स्वयं माननीय स्वतंत्रता सेनानी अथवा उनके सम्बन्धी/मित्रों/हितैषियों द्वारा प्रेषित परिचय)
स्व० सं० से०	स्वतंत्रता संग्राम सेनानी

पुस्तकों के लिए प्रयुक्त संकेत-सूची

अ० वा०	अजमेर वार्षिकी एवं व्यक्ति परिचय, 1976-77
आ० दी०	आजादी के दीवाने, सागर के स्वतंत्रता सेनानी
इ० अ० ओ०	इतिहास की अमरबेल ओसवाल, भाग/पृष्ठ
उ० प्र० जै० ध०	उत्तर प्रदेश और जैन धर्म
ख० इ०	श्री दि० जैन खरौआ समाज का इतिहास
ख० जै० इ०	खण्डेलवाल जैन समाज का वृहद् इतिहास
गो० अ० ग्र०	गोर्धनदास अभिनन्दन ग्रन्थ
गो० जै० इ०	गोलालारे जैन जाति का इतिहास

जै० इ०	जैसवाल जैन इतिहास
जै० ग०	जैन गजट
जै० जा० अ०	जैन जागरण के अग्रदूत
जै० जै० यु०	जैसवाल जैन : एक युग एक प्रतीक
जै० स० रा० अं०	जैन सन्देश, राष्ट्रीय अंक (23 जनवरी, 1947)
जै० स० वृ० इ०	जैन समाज का वृहद् इतिहास
जै० से० ना० अ०	जैन सेनानियों का नागरिक अभिनन्दन (पुस्तिका), फिरोजाबाद (उ०प्र०)
प० इ०	पल्लीवाल जैन जाति का इतिहास
प० जै० इ०	परवार जैन समाज का इतिहास
भ० म० स्मृ०	भगवान् महावीर स्मृति ग्रन्थ
म० प्र० स्व० सै०	मध्य प्रदेश के स्वतंत्रता संग्राम सैनिक, भाग/पृष्ठ
म० स०	मध्य प्रदेश सन्देश (स्वाधीनता आन्दोलन विशेषांक), 15 अगस्त 1987
र० नी०	रजत-नीराजना
रा० स्व० से०	राजस्थान में स्वतंत्रता संग्राम के सेनानी
रु० कु० डा०	रुहेलखण्ड कुमाऊँ जैन डायरेक्टरी
ल० स०	लबेंचू समाज का इतिहास
व० स० इ०	वरैया जैन समाज इतिहास
वि० अ०	विद्वत् अभिनन्दन ग्रन्थ
वि० स्व० स० इ०	विन्ध्य प्रदेश के राज्यों का स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास
स० स०	सहारनपुर सन्दर्भ, भाग/पृष्ठ
स्व० आ० श०	स्वाधीनता आन्दोलन में शहडोल का योगदान
स्व० स० ज०	स्वतंत्रता संग्राम और जबलपुर नगर
स्व० स० पा०	स्वाधीनता संग्राम और हमारे सेनानी, पाटन तहसील
स्व० स० म०	मन्दसौर जिले में स्वतंत्रता संग्राम
स्व० स० हो०	होशंगाबाद जिले का स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास

नोट : प्रस्तुत संकेत सूची में उन्हीं पुस्तकों के नाम दिये हैं, जिनका अनेक बार उल्लेख हुआ है। अन्य पुस्तकों के नाम तत्-तत् स्थानों पर दिये गये हैं। पुस्तकों के लेखक, प्रकाशक, संस्करण आदि की जानकारी हेतु कृपया 'सन्दर्भ ग्रन्थ सूची' देखें।

उपक्रम : एक

बोलते शब्द-चित्र

सृष्टि अनादि और अनन्त है। इस दृश्यमान् जगत् में काल का चक्र सदा घूमता रहता है उसके छह भाग हैं-1- अति सुखरूप, 2- सुखरूप, 3-सुख-दु:खरूप, 4- दु:ख-सुखरूप, 5- दु:खरूप और 6- अति दु:खरूप। जिस प्रकार चलती हुई गाड़ी के पहिये का प्रत्येक भाग नीचे से ऊपर और ऊपर से नीचे आता-जाता रहता है, वैसे ही ये छह भाग भी क्रमवार सदा घूमते रहते हैं, अर्थात् एक बार जगत् सुख से दु:ख की ओर जाता है तो दूसरी बार दु:ख से सुख की ओर बढ़ता है। सुख से दु:ख की ओर जाने को अवसर्पिणी काल या अवनति (ह्रास) का काल कहते हैं और दु:ख से सुख की ओर जाने को उत्सर्पिणी काल या उत्थान (विकास) का काल कहते हैं। इन दोनों कालों की अवधि लाखों-करोड़ों वर्षों से भी अधिक है। वर्तमान में अवसर्पिणी काल चल रहा है, जिसके प्रारम्भ के चार भाग बीत गये हैं। अब हम उसके पाँचवें भाग 'दु:खरूप' (दुषमा) से गुजर रहे हैं। प्रथम तीन भागों में भोगभूमि थी। मनुष्य जीवन की वह प्रकृत्याश्रित आदिम अवस्था थी। सारी इच्छायें कल्पवृक्षों से पूर्ण हो जाती थीं। तीसरे भाग के अन्त में भोगभूमि का अवसान होने लगा। कालचक्र के इन परिवर्तनों को देखकर लोग शंकित और भयभीत होने लगे। अतएव उन्होंने स्वयं जनसमूहों में रहना प्रारम्भ किया। मानव जीवन में सामाजिक वैधानिकता का अंकुरण हुआ। सामाजिक जीवन की नींव यहीं से पड़ी माननी चाहिए। ऐसे समय में अपनी बुद्धि एवं बल के माध्यम से जिन्होंने समाज का नेतृत्व किया, वे 'कुलकर' कहलाये। ऐसे चौदह कुलकर हुए जिनमें प्रथम प्रतिश्रुति और अन्तिम नाभिराय थे।

भगवान् ऋषभदेव

नाभिराय और मरुदेवी के पुत्र ऋषभदेव हुए, जो इस युग में जैनधर्म के प्रवर्तक थे। वैदिक परम्परानुसार ऋषभदेव भगवान् विष्णु के एक अवतार हैं। जैनेतर साहित्य में श्रीमद्भागवत् का नाम उल्लेखनीय है, इसके पाँचवे स्कन्ध में ऋषभदेव का चरित्र विस्तार से चित्रित है। यह वर्णन जैन साहित्य के वर्णन से कुछ-कुछ मिलता हुआ है। उसमें लिखा है कि 'जब ब्रह्मा ने देखा कि मनुष्य संख्या नहीं बढ़ी तो उन्होंने मनु और सत्यरूपा को उत्पन्न किया। उनके प्रियव्रत नाम का लड़का हुआ। प्रियव्रत का पुत्र आग्नीध्र हुआ। आग्नीध्र के घर नाभि ने जन्म लिया। नाभि ने मरुदेवी से विवाह किया और उनसे ऋषभदेव उत्पन्न हुए। ऋषभेव ने जयन्ती नाम की भार्या से सौ पुत्र उत्पन्न किये और बड़े पुत्र भरत का राज्याभिषेक करके संन्यास ले लिया। वे दिगम्बर वेष में नग्न विचरण करते थे। उनका कामदेव के समान सुन्दर शरीर मलिन हो गया था। उन्होंने आजगर व्रत ले लिया था' आदि।

---

* इस अध्याय का मूल आधार 'प्रमुख ऐतिहासिक जैन पुरुष और महिलायें', 'पुरुदेव चम्पू का आलोचनात्मक परिशीलन', 'जैन साहित्य और इतिहास : पूर्व पीठिका', 'जैन धर्म', 'राजपूताने के जैन वीर', 'मौर्य साम्राज्य के जैन वीर', 'संक्षिप्त जैन इतिहास', 'भारतीय इतिहास : एक दृष्टि', 'जैन संस्कृति और राजस्थान', 'History of Jainism', आदि पुस्तकें हैं। परन्तु समय का निर्धारण 'प्रमुख ऐतिहासिक जैन पुरुष और महिलायें' के आधार पर किया गया है। विशेष अध्ययन और सन्दर्भ के इच्छुक पाठकों को उक्त पुस्तकें देखना चाहिए।

वेदों मे भी ऋषभदेव की उपासना की गई है, उन्हें अग्नि, केशी, वातरशना आदि के रूप में स्तुत किया गया है। 'ऋग्वेद' के एक मंत्र में कहा गया है- 'मिष्टभाषी, ज्ञानी, स्तुति-योग्य वृषभ को साधक मन्त्रों द्वारा वर्धित करो। वे स्तोता को नहीं छोड़ते।' दिगम्बर जैन परम्परा से सम्बन्धित ऋग्वेद का महत्त्वपूर्ण सूक्त केशी (10/136) सूक्त है, जिसमें वातरशना मुनियों का उल्लेख है। वातरशना का अर्थ है, 'वायु जिनकी मेखला है।' दिगम्बर का अर्थ है 'दिशायें जिनका अम्बर=वस्त्र हैं।' इस प्रकार दोनों शब्द एक ही भाव के सूचक हैं। वातरशना मुनियों को 'मलधारी' सूचित किया गया है-

'मुनयो वातरशना पिशांगा: वसते मला:।'

जैन परम्परा में मुनियों का स्नान वर्जित है। ज्ञात होता है कि स्नान न करने के कारण तथा केशों के बढ़ जाने के कारण उन्हें मलधारी कहा गया है। डॉ0 मंगलदेव शास्त्री ने 'भारतीय संस्कृति का विकास' (औपनिषद् धारा) पृष्ठ 180 पर लिखा है- ''ऋग्वेद के सूक्त 10/136 में मुनियों का अनोखा वर्णन मिलता है, उनको मृत्तिका को धारण करते हुए पिंगल वर्ण और केशी='प्रकीर्ण-केश' इत्यादि कहा गया है। यह वर्णन श्रीमद्भागवत् (पंचम स्कन्ध) में दिये हुए जैनियों के आदि तीर्थङ्कर ऋषभदेव के वर्णन से अत्यन्त समानता रखता है। वहाँ स्पष्ट शब्दों में कहा गया है कि 'ऋषभदेव ने वातरशना मुनियों के धर्मों को प्रकट करने की इच्छा से अवतार लिया था।''

भरत से भारत

पुराणों में भी ऋषभदेव का वर्णन हुआ है। पुराणों के अनुसार स्वायंभुव मनु के पुत्र प्रियव्रत या आग्नीध्र हुए उनके पुत्र नाभि हुए और उनके पुत्र ऋषभदेव हुए। ऋषभदेव के पुत्र भरत हुए, जिनके नाम पर इसे भारतवर्ष कहते हैं। लिंगपुराण (अध्याय 47) में कहा गया है-

'नाभेर्निसर्गं वक्ष्यामि हिमांकोऽस्मिन्निबोधत।
नाभिस्त्वजनयत् पुत्रं मरुदेव्यां महामति:।।
ऋषभं पार्थिवं श्रेष्ठं सर्वक्षत्रस्य पूजितम्।
ऋषभाद् भरतो जज्ञे वीर: पुत्र: शताग्रज:।।
सोऽभिषिच्याथ ऋषभो भरतं पुत्रवत्सल:।'

★ ★ ★ ★

हिमाद्रेर्दक्षिणं वर्षं भरताय न्यवेदयत्।
तस्मात्तु भारतं वर्षं तस्य नाम्ना विदुर्बुधा:।।'

ऐसा ही वर्णन कुछ शब्दों के हेर-फेर के साथ मार्कण्डेय पुराण, कूर्म पुराण, ब्रह्माण्ड पुराण, वाराह पुराण, विष्णु पुराण, स्कन्द पुराण, श्रीमद्भागवत् आदि में आया है। इस प्रकार स्पष्ट है कि ऋषभदेव के पुत्र भरत के नाम पर ही हमारे देश का नाम भारतवर्ष पड़ा।

सिन्धु घाटी से प्राप्त देवी-देवताओं की मूर्तियों के आधार पर यह कहने के पर्याप्त आधार हैं कि उन दिनों ऋषभदेव की पूजा होती थी। हड़प्पा और मोहन-जोदड़ों में कुछ मूर्तियाँ 'योगी', 'वृषभ' और 'नग्न'

मिली हैं। प्रसिद्ध इतिहासविद् श्री रामप्रसाद चन्दा ने माडर्नरिव्यू, जून 1932 में प्रकाशित लेख में कहा है- 'सिन्धु घाटी से प्राप्त मोहरों पर बैठी अवस्था में अंकित देवताओं की मूर्तियां ही योग की मुद्रा में नहीं हैं किन्तु खड़ी अवस्था में अंकित मूर्तियां भी योग की कायोत्सर्ग मुद्रा को बतलाती हैं। मथुरा म्यूजियम में दूसरी शती की कायोत्सर्ग में स्थित एक ऋषभदेव जिन की मूर्ति है। इस मूर्ति की शैली से सिन्धु से प्राप्त मोहरों पर अंकित खड़ी हुई देवमूर्तियों की शैली बिल्कुल मिलती है। ...ऋषभ या वृषभ का अर्थ होता है बैल और ऋषभदेव तीर्थंकर का चिह्न बैल है। मोहर नं0 3 से 5 तक के ऊपर अंकित देवमूर्तियों के साथ बैल भी अंकित है जो ऋषभ का पूर्ण रूप हो सकता है।' इतिहासकार डॉ0 राधा कुमुद मुखर्जी ने भी श्री रामप्रसाद चन्दा के उक्त मत को मान्य किया है।

ऋग्वेद में 'शिश्नदेवा:' पद आया है। इन्द्रदेव से प्रार्थना की गई है कि 'शिश्नदेव' हमारे यज्ञ में विघ्न न डालें, आदि। प्राय: विद्वानों ने 'शिश्नदेवा:' का अर्थ शिश्न को देवता मानने वाले अर्थात् लिंगपूजक किया है। किन्तु स्व0 पं0 कैलाशचंद्र शास्त्री ने 'जैनधर्म', पृष्ठ 21 पर इसका दूसरा अर्थ-'शिश्नयुक्त देवता को मानने वाले अर्थात् नग्न देवताओं को पूजने वाले' भी किया है। यह अर्थ समीचीन जान पड़ता है। इन सभी तथ्यों से स्पष्ट है कि वैदिक व सिन्धु घाटी युग में ऋषभदेव की पूजा होती थी।

यह सब लिखने का आशय यह है कि ऋषभदेव वेदोल्लिखित होने के साथ ही वेद पूर्व भी हैं और वे ही भारतीय साहित्य-विद्या-कला-राजनीति के प्रथम उपदेष्टा हैं, उन्होंने ही राज्य-व्यवस्था का बड़ा सफल सूत्रपात किया था। उन्होंने विभिन्न जनपद, ग्राम, खेट, कर्वट तथा साम, दान, दण्ड, भेद आदि नीतियों की स्थापना की थी। धर्म के अनुसार मनुष्य जाति एक है, अत: किसी प्रकार की उच्चता-नीचता का प्रश्न ही नहीं, मात्र वृत्ति या आजीविका को व्यवस्थित रूप देने के लिए ऋषभदेव ने क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र इन तीन वर्णों की व्यवस्था की थी। ब्राह्मण वर्ण की स्थापना आगे चलकर चक्रवर्ती भरत ने की। यह सारी व्यवस्था कर्म से ही थी। ऋषभदेव ने असि (तलवार), मसि (लेखनकला), कृषि (खेती), वाणिज्य (व्यापार) विद्या (लिपि व अंक ज्ञान) और शिल्प (विभिन्न कलायें) इन छह कर्मों का उपदेश देकर मनुष्य को कर्म करने की प्रेरणा दी थी। यहीं से मानव जीवन में राज्य, समाज, धर्म और अर्थ संस्थाओं का वैधानिक विकास तीव्रता से हुआ। इन सबका ध्येय समाज को सुसंस्कृत और सुख-सम्पन्न बनाना था।

विश्व की मूल लिपि ब्राह्मी

ऋषभदेव का मानव समाज को जो अवदान है उसमें लिपि और अंक का ज्ञान प्रमुख है। 'तिलोयपण्णत्ति', 'महापुराण' आदि महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों में उल्लेख है कि ऋषभदेव के सौ पुत्र तथा ब्राह्मी और सुन्दरी दो कन्यायें थीं। एक समय ब्राह्मी उनकी दाहिनी ओर और सुन्दरी बायीं ओर बैठी थी। ऋषभदेव ने ब्राह्मी को वर्णमाला का बोध कराया, अत: लिपि बायीं से दायीं ओर लिखी जाती है। सुन्दरी को उन्होंने अंक विद्या सिखायी, अत: अंक दायीं से बायीं ओर इकाई, दहाई... के रूप में लिखे जाते हैं। ब्राह्मी को सर्वप्रथम लिपि का ज्ञान देने के कारण विश्व की मूल लिपि ब्राह्मी कहलाती है। भरतादि पुत्रों को उन्होंने नाट्यशास्त्र आदि विषयों की शिक्षा दी थी। (विस्तृत अध्ययन के लिए महापुराण देखें)

एक अहिंसक युद्ध

युद्ध और अहिंसक, बड़ी विरोधी बात है यह, पर इतिहास में एक ऐसा युद्ध भी हुआ जो पूर्णतः अहिंसक था। ऋषभदेव जब वैराग्य धारण कर तपस्यार्थ वन चले गये, तब उनके दो पुत्रों भरत और बाहुबली के मध्य शक्तिपरीक्षण हुआ। भरत चक्रवर्ती होने के कारण दिग्विजय कर लौटे तो उनका चक्र अयोध्या के बाहर ही रुक गया। पुरोहितों ने बताया कि अभी आपने अपने भाइयों को नहीं जीता है। तब भरत ने भाइयों के पास सन्देश भेजा। भाइयों ने भाई के शासन में रहना स्वीकार नहीं किया और वैराग्य धारण कर लिया। भरत के एक भाई बाहुबली उस समय पोदनपुर के राजा थे। वे युद्ध के लिए तैयार हो गये। दोनों ओर की सेनायें युद्धभूमि में पहुंच गईं। रणभेरी बज उठी। भयानक युद्ध की विभीषिका सामने खड़ी थी, पर एक क्षण में दृश्य बदल गया।

दोनों पक्षों के मंत्रियों ने विचार-विमर्श कर प्रस्ताव रखा कि आप दोनों चरमशरीरी (इसी भव से मोक्ष जाने वाले) हैं, अतः आपका कुछ नहीं बिगड़ेगा, व्यर्थ ही इस युद्ध में सेना मारी जायेगी। अच्छा यह होगा कि आप दोनों भाई जलयुद्ध, दृष्टियुद्ध और बाहुयुद्ध करके हार-जीत का निर्णय कर लें। अन्त में दोनों पक्षों की सहमति से भरत और बाहुबली के बीच में युद्ध हुए। चूंकि बाहुबली बलिष्ठ और ऊँचे थे, अतः तीनों में उनकी ही विजय हुई। इस पर भरत ने अपना चक्र बाहुबली पर चला दिया, किन्तु चक्र बाहुबली की प्रदक्षिणा कर लौट आया। भाई के इस व्यवहार को देखकर बाहुबली को वैराग्य हो गया। वे समस्त राज-पाट त्यागकर तपस्या करने वन चले गये। उन्होंने खड़े-खड़े एक वर्ष तक कठोर तपस्या की। उनके पैरों व हाथों पर लतायें लिपट गईं और पैरों में दीमकों ने वामियाँ बना लीं। इस प्रकार बिना किसी हिंसा के इस युद्ध में हार-जीत का निर्णय हो गया।

बाहुबली द्वारा जीतकर भी राज्य का त्याग कर तपस्यार्थ चले जाना अपने आप में त्याग और स्वातन्त्र्य-प्रियता का अनुपम उदाहरण है।

अन्य तीर्थंकर

ऋषभदेव के बाद इस परम्परा में तेईस तीर्थङ्कर और हुए। रामायण या भगवान् राम की घटनायें बीसवें तीर्थङ्कर मुनिसुव्रतनाथ के काल में हुईं। जैन परम्परा में राम के स्थान पर उनके दूसरे नाम पद्म का अधिक प्रयोग हुआ है। पद्म (राम)को आधार बनाकर पद्मपुराण, पद्मचरित आदि अनेक पुराणों/काव्यों की रचनायें हुईं।

महाभारत में वर्णित प्रसिद्ध कौरव-पाण्डव युद्ध बाइसवें तीर्थंकर नेमिनाथ के समय हुआ। श्रीकृष्ण इन्हीं नेमिनाथ के चचेरे भाई थे। नेमिनाथ के दूसरे नाम 'अरिष्टनेमि' का प्रयोग वैदिक साहित्य में बहुधा हुआ है। कौरव-पाण्डवों को भी आधार बनाकर जैन परम्परा में प्रचुर साहित्य का निर्माण हुआ। तेइसवें तीर्थङ्कर पार्श्वनाथ का समय 877-777 ईसा पूर्व लगभग निश्चित है। पार्श्वनाथ ऐतिहासिक महापुरुष हैं। पार्श्वनाथ के निर्वाण के 250 वर्ष बाद महावीर का निर्वाण हुआ था।

भगवान् महावीर और भारत के गणतन्त्र

भारतवर्ष में आज जो गणतन्त्र परम्परा है वह भगवान् महावीर के काल में भी थी। महावीर का जन्म

कुण्डलपुर (कुण्डपुर, कुण्डनगर, कुण्डग्राम, वसुकुण्ड या क्षत्रियकुण्ड) में लगभग 600 ई0पू0 में हुआ था। कुण्डलपुर या कुण्डग्राम वैशाली के समीप था। उस समय वैशाली अत्यन्त जन-धन सम्पन्न नगरी थी और तत्कालीन सर्वाधिक शक्तिसम्पन्न वज्जिगण-संघ (जिसमें लिच्छवि, ज्ञातृक, विदेह, मल्ल आदि अनेक स्वाधीनता प्रेमी गण सम्मिलित थे) की राजधानी थी। ज्ञातृकवंशी व्रात्य क्षत्रियों के गण का केन्द्र कुण्डग्राम था, जिसके स्वामी और गणपति राजा सर्वार्थ थे, उनकी पत्नी का नाम श्रीमती था। यह दम्पति श्रमणों का उपासक और तीर्थङ्कर पार्श्वनाथ की परम्परा का अनुयायी था। इनके पुत्र और उत्तराधिकारी राजा सिद्धार्थ थे। इनका ज्ञातृक वंश एवं गण उस समय इतना प्रतिष्ठित एवं शक्तिसम्पन्न था कि बज्जिगण संघ के प्रधान, वैशाली के अधिपति लिच्छवि शिरोमणि महाराज चेटक ने अपनी पुत्री प्रियकारिणी त्रिशला का पाणिग्रहण राजा सिद्धार्थ के साथ कर दिया था जिनसे वर्द्धमान का जन्म हुआ, वीर, अतिवीर, सन्मति एवं महावीर उनके अपरनाम हैं। लोक प्रचलन में आजकल वर्द्धमान के लिए महावीर ही अधिक प्रचलित है।

12 वर्ष की कठोर साधना के बाद भ0 महावीर को केवलज्ञान की प्राप्ति हुई। अपने अमृतमयी उपदेशों से उन्होंने जन-जन को कल्याण का मार्ग दिखाया। उन्होंने चन्दनबाला के हाथ से आहार (भोजन) ग्रहण कर स्त्रियों को गौरवान्वित किया था। महावीर के स्वजन-परिजन महाराज चेटक, सेनापति सिंहभद्र आदि किसी न किसी रूप में तत्कालीन गणतन्त्रों से सम्बद्ध थे। महावीर का निर्वाण 527 ई0 पू0 में हुआ।

भगवान् महावीर के अनन्य भक्तों में मगध नरेश श्रेणिक बिम्बसार का स्थान सर्वोपरि है। महावीर की तपस्या और साधना का स्थान अधिकांश समय में मगध ही रहा। श्रेणिक बिम्बसार के सुशासन और उत्तम राज्य व्यवस्था का श्रेय मंत्रीश्वर अभय कुमार को है।

नन्द–मौर्य युग (लगभग 500–200 ई० पू०)

नन्दमौर्य युग (लगभग 500-200 ई0 पू0) में जैनधर्म को पूरा राज्याश्रय प्राप्त रहा। इस युग के अनेक राजा जैन थे। इस वंश में नन्दिवर्धन (लगभग 449-407 ई0 पू0) बड़ा प्रतापी राजा हुआ। महावीर निर्वाण संवत् 103 (ई0पू0 424) में उसने कलिंग देश पर विजय प्राप्त की थी और उस राष्ट्र के इष्टदेवता 'कलिंग जिन' (या अग्रजिन अर्थात् आदि तीर्थङ्कर ऋषभदेव) की प्रतिमा को वहां से ले आया था तथा उसे अपनी राजधानी पाटलिपुत्र (वर्तमान पटना) में स्थापित किया था। नन्दिवर्धन का पुत्र एवं उत्तराधिकारी 'महानन्दिन' भी बड़ा प्रतापी एवं शक्तिशाली राजा था, उसने लगभग 44 वर्ष राज्य किया, कुल परम्परानुसार वह स्वयं जैनधर्म का अनुयायी था तथा उसके अनेक मंत्री और कर्मचारी भी जैन थे।

महानन्दिन के उपरान्त मगध में घटित घरेलू राज्य क्रान्ति का लाभ उठाकर एक साहसी एवं चतुर युवक महापद्म ने राज्य सिंहासन पर अपना अधिकार कर लिया। महापद्म एवं उसके पुत्र/परिजन भी जैनधर्म के अनुयायी थे। इस काल की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण घटना यूनानी सम्राट् सिकन्दर महान् का पश्चिमोत्तर भारत पर आक्रमण था, जिसके अनेक अच्छे-बुरे परिणाम हुए। इन यूनानियों को सीमान्त के गान्धार, तक्षशिला आदि नगरों के निकटवर्ती अन्य प्रदेशों में ही नहीं अपितु सम्पूर्ण पंजाब और सिन्ध में यत्र-तत्र अनेक नग्न (दिगम्बर) निर्ग्रन्थ साधु मिले थे, जिनका उन्होंने 'जिम्नोसोफिस्ट', 'जिम्नेटाइजेनोइ' आदि नामों से उल्लेख किया है। ये शब्द तत्कालीन एवं तत् प्रदेशीय दिगम्बर जैन मुनियों के लिए प्रयुक्त होते थे। कहा जाता है कि सम्राट् सिकन्दर 'कल्याण मुनि' को अपने साथ ले गये थे, वहीं उनका समाधिमरण हुआ था।

ई० पू० चौथी शताब्दी के अन्तिम पाद के प्रारम्भ में एक महान् राज्यक्रान्ति हुई, जिसमें नन्दवंश का नाश कर मौर्यवंश की स्थापना हुई। इसका श्रेय चाणक्य को दिया जाता है, जिसने वीर चन्द्रगुप्त के सहयोग से युद्धनीति का आश्रय लेकर सबल और सुदृढ़ राज्य स्थापित किया था। कहा जाता है कि सम्राट् चन्द्रगुप्त मौर्य का अपना कुल 'मोरिय' आचार्य भद्रबाहु श्रुतकेवली का भक्त था। जैन ग्रन्थों में चन्द्रगुप्त को उन मुकुटबद्ध माण्डलिक सम्राटों में अन्तिम कहा गया है, जिन्होंने दीक्षा लेकर जीवन का अन्तिम भाग जैन मुनि के रूप में व्यतीत किया था। श्रवणबेलगोल में चन्द्रगुप्त वसदि में उनका अन्तिम समय व्यतीत हुआ था।

चन्द्रगुप्त के बाद राज्य का उत्तराधिकारी उसका पुत्र बिन्दुसार हुआ। बिन्दुसार के बाद उसका पुत्र अशोक राज्य का उत्तराधिकारी बना। 'प्रियदर्शी', 'देवानां प्रिय' आदि उसकी उपाधियाँ थीं। पिता के शासन काल में वह उज्जयिनी का शासक रहा था, उस समय उसने समीपवर्ती विदिशा के एक जैन श्रेष्ठी की रूपगुण सम्पन्न 'असन्ध्यमित्रा' नाम्नी कन्या से विवाह कर लिया था, जिससे कुणाल नाम का पुत्र उत्पन्न हुआ था। ई० पू० 262 के लगभग अपने राज्य के आठवें वर्ष में एक विशाल सेना लेकर अशोक ने कलिंग राज्य पर आक्रमण कर दिया। भीषण युद्ध हुआ। लाखों सैनिक मृत्यु के घाट उतार दिये गये। कलिंग राज्य पराजित हुआ। अशोक की विजय कीर्ति सर्वत्र फैल गई। परन्तु इस भयंकर नरसंहार को देखकर अहिंसामूलक जैनधर्म के संस्कारों में पले अशोक की आत्मा तिलमिला उठी, उसने प्रतिज्ञा की कि 'भविष्य में वह रक्तपातपूर्ण युद्धों से सर्वथा विरत रहेगा।'

सामान्यत: यह माना जाता है कि अशोक बौद्धधर्म का अनुयायी था और उसने बौद्धधर्म के प्रचार/प्रसार एवं उन्नति के लिए अनेक कार्य किये। इसका आधार अशोक के वे शिलालेख हैं, जो उसके नाम से प्रसिद्ध हैं। परन्तु ऐसे भी कई विद्वान् हैं, जो इन सब शिलालेखों को केवल अशोक द्वारा लिखाया गया नहीं मानते अपितु उनमें से कुछ का श्रेय उसके पौत्र सम्प्रति को देते हैं। कुछ विद्वानों का मत है कि इन शिलालेखों का भाव और तद्गत विचार बौद्धधर्म की अपेक्षा जैनधर्म के अधिक निकट हैं। अशोक यदि पूरे जीवन भर नहीं तो कम से कम अपने जीवन के पूर्वार्द्ध में अवश्य जैन था। उसके धर्मचक्र में 24 आरे 24 तीर्थङ्करों के प्रतीक हैं। इसी तरह अशोक चक्र में बना सिंह भगवान् महावीर के चिह्न का द्योतक है।

अशोक का पुत्र कुणाल हुआ। कुणाल की महारानी कंचनमाला से सम्राट् सम्प्रति का जन्म हुआ, जो ई०पू० 230 के लगभग सिंहासनारूढ़ हुआ था। विसेन्ट स्मिथ के अनुसार सम्प्रति ने अरब, ईरान आदि यवन देशों में भी जैन संस्कृति के केन्द्र या संस्थान स्थापित किये थे। उसने अनेक देशों में जैन साधुओं को धर्म प्रचार के लिए भी भेजा था।

खारवेल विक्रम युग (लगभग ई० पू० 200 से सन् 200 तक)

सम्राट् ऐल खारवेल के समय जैनधर्म फला-फूला। दूसरी शती ई० पू० का यह सर्वाधिक प्रतापी और शक्तिशाली राजा था। कलिंग देश (वर्तमान उड़ीसा) के साथ जैन धर्म का सम्बन्ध अत्यन्त प्राचीन रहा है। भगवान् ऋषभदेव का समवसरण यहाँ आया था, तीर्थंकर अरहनाथ की प्रथम पारणा यहाँ हुई। भगवान् महावीर का पदार्पण भी यहां हुआ था। खारवेल का प्रसिद्ध शिलालेख खण्डगिरि-उदयगिरि पर्वत पर कृत्रिम गुहामन्दिर के मुख एवं छत पर सत्रह पंक्तियों में लगभग चौरासी वर्गफीट के विस्तार में उत्कीर्ण है। लेख की लिपि

ब्राह्मी और भाषा जैन प्राकृत है। इसमें सर्वप्रथम अरहन्तों और सिद्धों को नमस्कार किया गया है, जो प्रथम और द्वितीय परमेष्ठी हैं। इस शिलालेख में महावीर निर्वाण संवत् के साथ उल्लेख है कि खारखेल ने बारहवें वर्ष में मगध पर आक्रमण किया और नन्दराज द्वारा कलिंग से ले जायी गई कलिंग जिन प्रतिमा एंवं बहुमूल्य रत्नों को लेकर अपनी राजधानी में प्रवेश किया।

यथा- 'नमो अरहंतानं (1) नमो सवसिद्धानं...................वारसमे च वसे...............

नन्दराजनीतं च कलिंगजिनं संनिवेसं......................... गहरतनान पडिहारेहिं

अंगमागध वसुं च नेयाति' (पंक्ति 12)।

तेरहवें वर्ष में खारवेल ने अनेक अर्हन्मन्दिर बनवाये और श्रमणों के लिए एक विशाल सभा मण्डप बनवाया। इसमें कोई सन्देह नहीं कि इस लेख को अंकित कराने वाला खारवेल जैनधर्म का अनुयायी और परम जिनभक्त था। इसका पूरा परिवार, अनेक राजपुरुष तथा प्रतिष्ठित प्रजाजन भी जैन भक्त थे।

गंग–कदम्ब–पल्लव–चालुक्य

वर्तमान कर्नाटक (मैसूर) पर लगभग एक हजार वर्ष पर्यन्त अविच्छिन्न शासन करने वाला वंश गंगवंश था। इस वंश का जैनधर्म से घनिष्ठ सम्बन्ध रहा। इस वंश में अनेक प्रतापी जैन राजा भी हुए। यह उनकी नीति परायणता और धार्मिकता का ही परिणाम था कि यह राजवंश इतना दीर्घजीवी रहा। अनुश्रुतियों के अनुसार भ0 ऋषभदेव के इक्ष्वाकु वंश में अयोध्या के एक राजा हरिश्चन्द्र थे, जिनके पुत्र भरत की पत्नी विजय महादेवी से गंगदत्त का जन्म हुआ, उसी के नाम पर यह वंश गंगवंश, गांगेय या जाह्नवेय कहलाया। गंग का एक वंशज विष्णुगुप्त अहिच्छत्रा का राजा हुआ। उसका वंशज श्रीदत्त, श्रीदत्त का वंशज कम्प और कम्प का पुत्र पद्मनाभ हुआ। उसके राज्य पर जब उज्जयिनी के राजा ने आक्रमण किया तो पद्मनाभ ने अपने दो पुत्रों दद्दिग और माधव को कुछ राजचिह्नों सहित विदेश भेज दिया। ये बालक घूमते-घामते कर्नाटक के पेरूर नामक स्थान पर पहुँचे जहाँ एक जिनालय में मुनिराज सिंहनन्दि के दर्शन किये। सिंहनन्दि के आशीर्वाद से दद्दिग और माधव ने लगभग 188 ई0 में बाणमण्डल में उक्त राजवंश की नींव डालीं। एक शिलालेख में सिंहनन्दि को -'दक्षिणदेशवासीगंगमहीमण्डलीककुलसमुद्धरणः श्रीमूलसंघनाथो' कहा गया है। एक दूसरी अनुश्रुति के अनुसार गंगराजकुमारों ने नन्दगिरि को अपना दुर्ग बनाया था।

माधव का पुत्र और उत्तराधिकारी किरियमाधव द्वितीय हुआ। उसका उत्तराधिकारी हरिवर्मन→पृथ्वीगंग→ तंदगल माधव→अविनीत गंग हुआ। यह राजा बड़ा पराक्रमी और धर्मात्मा था, कहा जाता है कि किशोर वय में ही एक बार उसने जिनेन्द्र की प्रतिमा को शिर पर धारण करके भयंकर बाढ़ से बिफरती काबेरी नदी को अकेले पार किया था। सुप्रसिद्ध दिगम्बराचार्य देवनन्दि पूज्यपाद को इस राजा ने अपने पुत्र युवराज दुर्विनीत का शिक्षक नियुक्त किया था। अभिलेखों में अविनीत को विद्वज्जनों में प्रमुख कहा गया है। लिखा गया है 'इस नरेश के हृदय में महान् जिनेन्द्र के चरण अचल मेरु के समान स्थिर थे।' दुर्विनीत अपने गुरु पूज्यपाद का पदानुसरण करने में अपने आपको धन्य मानता था।

दुर्विनीत के उपरान्त उसका प्रथम पुत्र पोलवीर तदुपरान्त द्वितीय पुत्र मुष्कर राजा हुआ, जिसके समय में जैनधर्म गंगवाडी का राजधर्म था। उसका पुत्र श्रीविक्रम→भूविक्रम के पश्चात् शिवकुमार प्रथम राजा बना, जिसने 670 ई0 में अनेक जैन मन्दिरों का निर्माण कराया था। इसके बाद उसका पुत्र राचमल्ल

एरेगंग→श्रीपुरुष राजसिंहासन पर बैठा। लगभग 50 वर्ष शासन करने के बाद उसने अपने पुत्र शिवमार द्वितीय सैगोत को राज्य का उत्तराधिकारी बनाया। यह बड़ा वीर, पराक्रमी, और जैनधर्म का महान् संरक्षक और भक्त राजा था। शिवमार के पुत्र युवराज मारसिंह की मृत्यु शिवमार के जीवनकाल में ही हो गई। अत: शिवमार का भाई विजयादित्य और विजयादित्य की मृत्यु के बाद उसका पुत्र सत्यवाक्य राजगद्दी पर बैठा। इधर शिवमार के छोटे पुत्र पृथ्वीपति प्रथम ने भी राज्य के एक भाग पर अपना अधिकार कर लिया था। अत: गंगराज्य दो शाखाओं में विभक्त हो गया । गंगवंश के राचमल्ल सत्यवाक्य प्रथम (815-853 ई0), राचमल्ल सत्यवाक्य द्वितीय (870-890 ई0), राचमल्ल सत्यवाक्य तृतीय (लगभग 920 ई0) आदि प्रतापी राजा हुए। इसी वंश के एक राजा गंगराज मरुलदेव (953-961 ई0) को शिलालेखों में 'जिनचरणकमल चञ्चरीक' कहा गया है। मरुलदेव का सौतेला भाई मारसिंह (961-974 ई0) भी बड़ा प्रतापी राजा था। एक अभिलेख में उसे 'भुवनैकमंगल-जिनेन्द्र-नित्याभिषेक-रत्नकलश' बताया गया है।

गंगवंश के सन्ध्याकाल में सत्यवाक्य चतुर्थ का अद्वितीय मंत्री एवं महासेनापति चामुण्डराय (चावुण्डराय) अपनी वीरता, सत्यनिष्ठा एवं जिनेन्द्र भक्ति के कारण अमर हो गया है। चामुण्डराय महान् राजनीतिज्ञ, कवि, ग्रन्थकार, सिद्धान्तज्ञ एवं संस्कृत-प्राकृत भाषाओं का अशेष ज्ञाता था, इन्हीं की प्रेरणा से आचार्य नेमिचन्द्र सिद्धान्तचक्रवर्ती ने गोम्मटसार जैसे महान् सिद्धान्त ग्रन्थ की रचना की थी। चामुण्डराय ने अनेक मूर्तियों एवं मन्दिरों के निर्माण के साथ ही श्रवणबेलगोल में चन्द्रगिरि पर्वत पर चामुण्डराय वसति में इन्द्रनीलमणि की तीर्थंकर नेमिनाथ की प्रतिमा प्रतिष्ठित की थी। चामुण्डराय ने अपनी माता काललदेवी की इच्छा पूरी करने के लिए श्रवणबेलगोल में भगवान् बाहुबली की विश्व प्रसिद्ध लगभग 57 फीट ऊँची प्रतिमा की स्थापना की थी।

दक्षिण भारत के कदम्ब और पल्लव वंश के राजाओं के राज्यकाल में भी जैनधर्म को प्रश्रय प्राप्त रहा। पल्लवों का राज्यचिह्न वृषभ था, इसी कारण वे वृषभध्वज कहलाते थे। इससे इस अनुमान को पर्याप्त आधार मिलता है कि पल्लववंशी राजा ऋषभदेव के उपासक रहे होंगे। इस वंश में बाद के अनेक राजा शैव हो गये थे, जिन्होंने अनेक जैन मन्दिरों को शैव मन्दिरों में परिवर्तित करा दिया था।

सम्राट् पुलकेशिन् द्वितीय सत्याश्रय पृथ्वीवल्लभ (608-642 ई0) चालुक्य वंश का सबसे महान् सम्राट् था। प्राय: पूरे दक्षिण भारत पर उसका अधिकार था। यह राजा जैनधर्म का प्रबल पोषक था। अपनी दिग्विजय के उपरान्त राजधानी वातापी में प्रवेश करने पर उसने अपने गुरु पण्डित रविकीर्ति को उदार दान देकर सम्मानित किया था, जिसके उपलक्ष्य में रविकीर्ति ने ऐहोल की 'मेगुती' पहाड़ी पर स्थित जैन मन्दिर की दीवार पर उत्कीर्ण कलापूर्ण संस्कृत प्रशस्ति रची थी, इस प्रशस्ति में कालिदास, भारवि का नाम आया है। यथा–

> येनायोजि नवेऽश्म स्थिरमर्थ विधौ विवेकिना जिनवेश्म।
> स: विजयतां रविकीर्ति: कविताश्रित कालिदासभारविकीर्ति:।।

राष्ट्रकूट–चोल– उत्तरवर्ती चालुक्य–कलचुरि

राष्ट्रकूटवंशीय राजाओं में सम्राट् अमोघवर्ष प्रथम महान् राजा हुआ। 821 ई0 में मान्यखेट में इनका

राज्याभिषेक हुआ था। इतिहासकारों का मत है कि राष्ट्रकूट नरेशों में अमोघवर्ष जैनधर्म का महान् संरक्षक था और सम्भवतः उसने स्वयं जैनधर्म धारण किया था। आचार्य जिनसेन स्वामी सम्राट् के धर्मगुरु और राजगुरु थे। प्रसिद्ध जैनाचार्य गुणभद्र ने लिखा है कि-'स्वगुरु भगवज्जिनसेनाचार्य के चरणकमलों में प्रणाम करके अमोघवर्ष नृपति स्वयं को पवित्र और धन्य मानता था।' यथा--

'संस्मर्ता स्वममोघवर्षनृपतिः पूतोऽहमद्येत्यलम्।'

इसके शासनकाल में अनेक जैन ग्रन्थों का प्रणयन हुआ। कहा तो यहाँ तक जाता है कि इसके राज्य में जैनधर्म ही राष्ट्रधर्म था।

अमोघवर्ष का सेनापति वीर बंकेयरस जैन था और उसने कोन्नूर में एक भव्य जिनालय बनवाया था, जिसकी व्यवस्था के लिए राजा ने तलेपूर नाम का पूरा ग्राम व अन्य ग्रामों की भूमि प्रदान की थी। राष्ट्रकूट वंश के ही इन्द्र तृतीय (914-922 ई0) के सेनापति नरसिंह और श्रीविजय दोनों जैन थे। श्रीविजय तो जीवन के अन्तिम भाग में संसार का परित्याग करके जैन मुनि बन गये थे।

राष्ट्रकूटवंशीय कृष्ण तृतीय के महामात्य भरत जैन धर्मावलम्बी ब्राह्मण थे। भरत के पुत्र नन्न इसी सम्राट् के गृहमंत्री थे। 'नागकुमार चरित' नामक ग्रन्थ की रचना महाकवि पुष्पदन्त ने नन्न के मन्दिर (महल) में रहते हुए ही की। राष्ट्रकूट वंश के अन्तिम राजा कृष्ण तृतीय का पौत्र इन्द्रचतुर्थ था हेमावती तथा श्रवणबेलगोल की चन्द्रगिरि की गन्धवारण बसदि के शिलालेखों से ज्ञात होता है कि यह राजा बड़ा वीर और युद्ध-विजेता था। 982 ई0 में चैत्र शुक्ल अष्टमी, सोमवार के दिन इसने समाधिमरण किया था। इस प्रकार राष्ट्रकूट युग में जैनधर्म, विशेषतः दिगम्बर जैनधर्म सम्पूर्ण दक्षिणापथ में प्रधान धर्म था।

9 वीं शताब्दी ई0 में विजयालम चोल ने तंजौर को राजधानी बनाकर अपने वंश की स्थापना की और चोल राज्य का पुनरुत्थान किया। इस वंश के कोलुत्तुंग चोल (1074-1123 ई0) के प्रश्रय में अनेक जैन धार्मिक और साहित्यिक कार्य हुए थे। उत्तरवर्ती चालुक्य नरेश तैलपदेव आहवमल्ल के महादण्डनायक वीर नागदेव की धर्मपत्नी महासती अत्तिमब्बे का नाम आज भी दक्षिण भारत में सम्मान के साथ लिया जाता है। महासती ने अपने सतीत्व के प्रभाव से कुछ समय के लिए उफनती गोदावरी को स्थिर कर दिया था। अत्तिमब्बे ने स्वर्ण एवं रत्नों की पन्द्रह सौ जिनप्रतिमायें बनवाकर विभिन्न मंदिरों में प्रतिष्ठापित की थीं और शान्तिपुराण (कन्नडी) की एक हजार प्रतियां लिखाकर विभिन्न शास्त्रभंडारों में वितरित की थीं। इस वंश के जयसिंह द्वितीय आचार्य वादिराजसूरि के परम भक्त थे। जयसिंह के पुत्र सोमेश्वर प्रथम को एक शिलालेख में स्याद्वाद मत का अनुयायी कहा गया है। इसके उत्तराधिकारी सोमेश्वर द्वितीय भुवनैकमल्ल ने शान्तिनाथ जिनालय का निर्माण कराया था। भुवनैकमल्ल के दण्डाधिप शान्तिनाथ को परम जिनभक्त कहा गया है। इसी प्रकार कुन्तल देश के राजा कीर्तिदेव की महारानी माललदेवी पुरुजिनपति ऋषभदेव की परम भक्त थीं।

कलचुरि राजाओं के समय में भी जैनधर्म को काफी प्रश्रय प्राप्त रहा। कहा जाता है कि इस वंश का आदि पुरुष कीर्तिवीर्य था, जिसने जैनमुनि के रूप में तपस्या करके कर्मों को नष्ट किया था। 'कल' शब्द का अर्थ 'कर्म' भी है और 'देह' भी, अतएव देह-दमन द्वारा कर्मों को चूर करने वाले व्यक्ति के वंशज कलचुरि कहलाये। इस वंश का महाशक्तिशाली सम्राट् बिज्जल (1167 ई0) हुआ। कुलप्रवृत्ति के अनुसार

वह जैन धर्मानुयायी था। इस राजा के एक साले बासव ने 'लिगांयत' अपरनाम 'वीर शैव मत' की स्थापना की थी। बासव की बहिन पद्मावती राजा को जैनधर्म से च्युत तो न कर सकी पर राजकार्य से उसे असावधान बना दिया। अन्तत: बासव द्वारा राजा की हत्या हो गई। एक मत के अनुसार बिज्जल ने विरक्त होकर अपने पुत्र सोमेश्वर को राज्य सौंप दिया और शेष जीवन धर्मसाधना में बिताया। बिज्जल का सेनापति रेचिमय्य भी जैन था। उसका ध्वजचिह्न वृषभ था। अत: यह 'वृषभध्वज' भी कहलाता था। इसने अरसियकेरे नगर में एक सहस्रकूट चैत्यालय का निर्माण कराया था।

होयसल राजवंश

दक्षिण भारत के ही एक प्रसिद्ध और शक्तिशाली होयसल वंश की स्थापना जैनाचार्य सुदत्त वर्धमान के आशीर्वाद से हुई थी। इस वंश का संस्थापक 'सल' कर्णाटक की पर्वतीय जाति का एक आभिजात्य किन्तु विपन्न कुल में उत्पन्न वीर युवक था। सौभाग्यवश सल सुदत्त वर्धमान के पास पहुँच गया और शिष्य बन गया। एक दिन एक 'शार्दूल' गुरु के ऊपर झपटा। वीर सल ने सिंह को मार गिराया, प्रसन्न हो गुरु ने उसे स्वतन्त्र राज्य की स्थापना का आशीर्वाद दिया। यह घटना 1006 ई0 के लगभग की है, तभी से सल 'पोयसल' कहलाने लगा, जो कालान्तर में परिवर्तित होकर 'होयसल' हो गया। इस प्रकार सल द्वारा स्थापित राज्य/देश होयसल कहलाया। इस वंश में विष्णुवर्धन 'होयसल' नाम का प्रतापी राजा परम वैष्णव था किन्तु उसकी पट्टमहिषी महारानी शान्तला देवी अपनी सुन्दरता एवं संगीत, वाद्य, नृत्य आदि कलाओं के लिए प्रख्यात थीं साथ ही परम जिनभक्त और धर्मपरायण थीं। इनकी माता माचिकब्बे भी परम जिनभक्त और धर्मपरायण थीं। उन्होंने शान्तला देवी के निधन से विरक्त होकर श्रवणबेलगोल में जाकर अपने गुरुओं प्रभाचंद्र आदि की उपस्थिति में एक माह के अनशन पूर्वक समाधिमरण किया था।

विष्णुवर्धन होयसल के सेनापति गंगराज युद्धविजेता, परम स्वामिभक्त और जिनभक्त थे। अनेक उपाधियों के साथ 'श्रीजैनधर्मामृताम्बुधि-प्रवर्धन-सुधाकर' और 'सम्यक्त्व-रत्नाकर' जैसी उनकी उपाधियाँ थीं। शिलालेखों में गंगराज की तुलना गोम्मट प्रतिष्ठापक महाराज चामुण्डराय से की गई है। गंगराज ने गोम्मटेश्वर का परकोटा और श्रवणबेलगोल के निकट 'जिननाथपुर' नामक जैन नगर बसाया था। उन्हें विष्णुवर्धन होयसल महाराज का 'राज्योत्कर्षकर्ता' कहा गया है। विष्णुवर्धन के दान-दण्डाधीश पुणिसमय्य दण्डनायक एवं मंत्री मरियाने और भरत, दण्डाधिनाथ इम्मडि बिट्टिमय्य आदि भी धर्मात्मा जैन वीर थे।

उत्तर भारत (लगभग 200 ई० से 1250 ई०)

उत्तर भारत के मथुरा, अहिच्छत्रा, हस्तिनापुर आदि जैन संस्कृति के केन्द्र रहे हैं। चौथीं शताब्दी ई0 से छठी शताब्दी के मध्य तक उत्तर भारत में गुप्त साम्राज्य सर्वोपरि राज्य शक्ति था। गुप्त नरेश वैष्णव धर्मानुयायी थे पर जैन धर्म के प्रति भी वे असहिष्णु नहीं थे, उस समय जैन धर्म को राज्याश्रय प्राप्त नहीं था। चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य के नवरत्नों में क्षपणक का नाम आया है जो सम्भवत: दिगम्बर जैन मुनि थे। यथा–

धन्वन्तरि-क्षपणकामरसिंहशंकुवेतालभट्टघटकर्परकालिदासा:।
ख्यातो वराहमिहिरो नृपते: सभायां रत्नानि वै वररुचिर्नव विक्रमस्य।।

-ज्योतिर्विदाभरण, 22/10

जैन परम्परानुसार आचार्य सिद्धसेन (प्रथम) ही गुप्तकालीन क्षपणक थे। कहा जाता है कि अमरकोषकार अमरसिंह भी जैन थे और ज्योतिषाचार्य वराहमिहिरि निर्युक्तियों के रचयिता जैनाचार्य भद्रबाहु के बड़े भाई थे।

दिल्ली के तोमर वंश में अनंगपाल तृतीय (1132 ई0) का राज्यमंत्री नट्टलसाहु बड़ा धर्मात्मा था, जिसने दिल्ली में भ0 आदिनाथ का कलापूर्ण मन्दिर बनवाया था। इसी मन्दिर और उसके आसपास के जैन व हिन्दू मन्दिरों को ध्वस्त करके कुतुबुद्दीन ऐबक ने कुब्बतुल इस्लाम मस्जिद, वर्तमान कुतुबमीनार के पास बनवाई थी। नट्टलसाहु के आश्रय में श्रीधर ने पार्श्वनाथचरित्र (अपभ्रंश) की रचना की थी।

उपेन्द्र अपरनाम कृष्णराज या गजराज ने 9वीं शती के उत्तरार्ध में मालवा देश की धारानगरी में परमार राज्य की स्थापना की थी। उसका उत्तराधिकारी सीयक द्वितीय उपनाम हर्ष, प्रतापी नरेश और स्वतन्त्र राज्य का स्वामी था। अपने पोषित पुत्र मुंज को राज्य देकर 974 ई0 के लगभग सीयक परमार ने एक जैनाचार्य से मुनिदीक्षा लेकर शेष जीवन एक जैन साधु के रूप में व्यतीत किया था। प्रबन्धचिन्तामणि आदि ग्रन्थों में मुंज के सम्बन्ध में अनेक कथायें मिलतीं हैं। अनेक संस्कृत कवियों का वह प्रश्रय दाता था, जिनमें जैन कवि धनपाल भी थे। इससे यह स्पष्ट है कि मुंज जैन नहीं तो जैनधर्म का पोषक अवश्य था। मुंज के पुत्र एवं उत्तराधिकारी भोजदेव परमार (1010-1053 ई0) के समय धारानगरी दि0 जैनधर्म का प्रमुख केन्द्र थी। अमितगति, माणिक्यनन्दी, नयनन्दि, प्रभाचन्द्र आदि दिग्गज जैनाचार्यों ने भोज से आश्रय और सम्मान प्राप्त किया था। इसी समय धारा के पास नलकच्छपुर (नालछा) में प्रसिद्ध विद्वान् पण्डित प्रवर आशाधर ने एक विशाल विद्यापीठ की स्थापना की थी और 1225 से 1245 के बीच अनेक जैन ग्रन्थों की रचना की थी।

ग्वालियर के कच्छपघात या कच्छपघटवंशी राजाओं में सम्राट महिचन्द्र ने 956 ई0 में सुहोनिया में एक जिनमन्दिर बनवाया था। 12वीं शताब्दी के मध्य के लगभग तक कच्छपघात राजाओं का शासन ग्वालियर प्रदेश में चलता रहा। स्वयं ग्वालियर दुर्ग (गोपाचल) में उनके द्वारा प्रतिष्ठित उस काल की तीर्थङ्कर पार्श्वनाथ की विशाल प्रतिमा आज भी विद्यमान है जो विश्व की एक पत्थर से निर्मित सबसे विशाल पद्मासन मूर्ति है।

राजस्थान के मेवाड़ की राजधानी चित्रकूटपुर (वर्तमान चित्तौड़) के राजाओं का कुलधर्म शैव था किन्तु जैन धर्म के प्रति वे बड़े सहिष्णु थे। उनके अनेक मंत्री, दीवान, भण्डारी, सामन्त, सरदार आदि जैन थे। कहा जाता है कि मेवाड़ राज्य में दुर्ग की वृद्धि के लिए जब-जब उसकी नींव रखी जाती थी तो साथ ही एक जैन मन्दिर बनवाने की प्रथा थी। दशवीं शताब्दी में राजा शक्ति कुमार के समय में चित्तौड़ का प्रसिद्ध जैन जयस्तम्भ सम्भवतः मूल रूप में बना था। मेवाड़ के प्रसिद्ध जैन तीर्थ केसरियानाथ (ऋषभदेव) को जैन ही नहीं शैव, वैष्णव और भील लोग आज भी पूजते हैं।

बंगाल और कलिंग (उड़ीसा) भी प्राचीन काल से जैनधर्म के गढ़ रहे हैं। बंगाल, बिहार, उड़ीसा के अनेक भागों में प्राचीन जैन श्रावकों के वंशज आज भी हैं, इन्हें आजकल 'सराक' कहा जाता है और

ये अब पुन: जैनधर्म में लौट आये हैं। ये लोग पार्श्वनाथ के पूजक हैं। इनके गोत्रों के नाम तीर्थङ्करों के नाम पर हैं। ये मांस मदिरा का सेवन नहीं करते व कुछ-कुछ रात्रि भोजन के भी त्यागी हैं।

उड़ीसा में ऐल खारवेल के बाद दो तीन शताब्दियों तक उसके वंशजों का राज्य चलता रहा। कलिंग जिन की प्रतिमा को लेकर उड़ीसा और मगध का द्वन्द्व प्रसिद्ध ही है।

जैनाचार्य अकलंकदेव के समय (7वीं शती लगभग) कलिंगनरेश हिमशीतल महायानी बौद्ध था पर उसकी राजमहिषी मदनावती परम जिनभक्त थीं। कार्तिकी अष्टाह्निका के समय प्रथम रथ निकालने को लेकर जब विवाद हुआ तो भट्टाकलंकदेव सौभाग्य से वहाँ पहुँच गये। जैनों व बौद्धों का शास्त्रार्थ हुआ, जिसमें जैनों की विजय हुई।

कलचुरियों के शासनकाल में महाकौशल प्रदेश में जैन शिल्प और स्थापत्य कला का अभूतपूर्व विकास हुआ था। चन्देल काल में खजुराहो में 84 विशाल मन्दिर बने थे, जिनमें अब लगभग आधे शेष हैं। इनमें 32 जैन मन्दिर भी बने थे। चन्देल राजा यद्यपि शिवभक्त थे तथापि वे सर्वधर्म सहिष्णु थे। इनके शासन काल में देवगढ़, खजुराहो, अहार, बानपुर, पपौरा, चन्देरी आदि नगरों में समृद्ध जैन बस्तियाँ थीं, और अनेक तीर्थों, मन्दिरों, शास्त्रों का निर्माण भी हुआ था।

12-13वीं शताब्दी में बुन्देलखण्ड में एक दानी धर्मात्मा हुआ, जिसने सैकड़ों जिनमन्दिर बनवाये थे। अनेक कुओं, तालाबों एवं बावडियों का भी उसने निर्माण कराया था। तत्कालीन राजाओं का पूरा-पूरा आश्रय उसे प्राप्त था। इसका सही नाम क्या था ? कोई नहीं जानता, पर किंवदन्तियों के अनुसार वह भैंसे पर तेल के कुप्पे लादकर व्यापार करता था। एक दिन वह जंगल में बैठा था। उसने देखा कि उसके भैंसे के खुर की लोहे की नाल सोने की हो गयी है। आश्चर्यचकित होकर उसने इधर-उधर खोज की तो उसे पारस-पथरी मिल गई, जिससे वह शीघ्र धनकुबेर हो गया। अपने भाग्य विधाता भैंसा या पाड़ा के कारण वह भैंसाशाह या पाड़ाशाह नाम से ही विख्यात हो गया। उसने विपुल दान दिया। कहा जाता है कि अन्त में अपने समाप्त न होने वाले धन से वह इतना ऊब गया कि पारस-पथरी को गहरे तालाब में फेंककर सन्तोष की साँस ली।

पश्चिम भारत (वर्तमान गुजरात) का गिरनार महाभारतकालीन बाइसवें तीर्थङ्कर अरिष्टनेमि या नेमिनाथ, जिनका वेदों में अनेक बार उल्लेख है, की निर्वाण स्थली है। शैव, वैष्णव, जैन, बौद्ध सभी धर्म यहाँ फले-फूले। 8वीं शती के आरम्भ से लेकर 10वीं शती के प्रथम पाद तक राष्ट्रकूट गोविन्द तृतीय के वंशज मान्यखेट के सम्राटों के प्रतिनिधियों के रूप में गुजरात के बहुभाग के स्वतन्त्र शासक रहे। गुजरात के जैन सम्राट् अमोघवर्ष का चचेराभाई लाटाधिप कर्कराज सुवर्णवर्ष जैन धर्म का भक्त था। अपने एक ताम्रशासन द्वारा उसने 821 ई० में नवसारी की जैन विद्यापीठ को भूमि आदि का प्रभूत दान दिया था। अन्य भी अनेक जैन राजा यहां हुए। सौराष्ट्र, भड़ौंच, आदि शहर आज भी जैनियों के गढ़ हैं। गुजरात में तत्कालीन जो स्थानीय राज्यवंश उदय में आये उनमें जैनधर्म की दृष्टि से चावड़ा, चापोत्कट आदि वंश महत्त्वपूर्ण हैं। चावड़ा वंश के संस्थापक वनराज ने अपने गुरु जैनाचार्य शीलगुण सूरि के आशीर्वाद से मैत्रकों का उच्छेद करके 745 ई० में अपने राज्य की स्थापना की थी। गुरुदक्षिणा में जब उसने पूरा राज्य देना चाहा तो गुरु ने एक सुन्दर जिन मन्दिर मात्र बनवाने के लिए कहा। तब वनराज ने 'पंचासार पार्श्वनाथ जिनालय' का निर्माण कराया था।

गुजरात के प्रतापी सोलंकी राजा भीमदेव प्रथम (1010-1062 ई0) का कृपापात्र एवं स्वामिभक्त अमात्य पोरवाड़वंशी जैन श्रेष्ठि विमलशाह था, जिसने अपने राजा के लिए अनेक युद्ध किये थे। इसने ही आबू पर्वत पर विश्वविख्यात भगवान् आदिनाथ का मन्दिर बनवाया था।

उक्त भीम प्रथम का पौत्र चौलुक्य-नरेश जयसिंह सिद्धराज (1094-1143 ई0) बड़ा उदार राजा था। वह महादेव का उपासक था तो महावीर का भी भक्त था। जैन तीर्थ शत्रुञ्जय की यात्रा कर उसने आदिनाथ जिनालय को बारह ग्राम समर्पित किये थे। हेमचन्द्राचार्य ने इस राजा के लिए ही 'सिद्धहेमशब्दानुशासन' नामक प्रसिद्ध व्याकरण ग्रन्थ रचा था। इसी राजा ने उन्हें 'कलिकालसर्वज्ञ' की उपाधि प्रदान की थी।

जयसिंह के बाद कुमारपाल सोलंकी 1143 ई0 में गुजरात के सिंहासन पर बैठा उसके गुरु आचार्य हेमचन्द्र थे। कुमारपाल की 1150 ई0 की चित्तौड़ प्रशस्ति के रचयिता दिगम्बराचार्य जयकीर्ति के शिष्य रामकीर्ति मुनि थे। कुमारपाल पहले शैव था। किन्तु हेमचन्द्र के उपदेश से उसने 1154 ई0 में जैनधर्म स्वीकार कर लिया गया था। उसने शत्रुञ्जय और गिरनार की यात्रा की थी। इतिहासकारों ने इसकी बड़ी प्रशंसा की है और अशोक महान् से इसकी तुलना की है। आचार्य हेमचन्द्र के अकस्मात् स्वर्गवास होने पर वियोग में 6 माह बाद ही कुमारपाल की मृत्यु हो गई थी। एक मत के अनुसार आचार्य की मृत्यु के 32 दिन बाद स्वयं उसके भतीजे अजयपाल ने विष देकर उसकी हत्या कर दी। अजयपाल जैनधर्म का बड़ा विद्वेषी था। उसके एक जैन मंत्री यशपाल ने 'मोहपराजय नाटक' लिखा है।

गुजरात के धोलका (धवलपुरी) के सामन्त वीरधवल एवं उसके उत्तराधिकारी बीसलदेव बघेले के मंत्री भ्रातृद्वय वस्तुपाल और तेजपाल का नाम अपनी धार्मिक प्रवृत्ति के कारण अमर हो गया है। मंत्रीश्वर वस्तुपाल ने गुजरात के स्वराज्य को नष्ट होने से बचाने के लिए अपने जीवन में त्रेसठ बार युद्धभूमि में गुर्जर-सैन्य का संचालन किया था। आबू (देलवाड़ा) के विश्वविख्यात कलाधाम नेमिनाथ का अद्वितीय मन्दिर उसने 1232 ई0 में करोड़ों रुपये व्यय करके बनवाया था। उसने अनेक मन्दिरों और मस्जिदों को भी दान दिया था। 'पुरातनप्रबन्धसंग्रह' से विदित होता है कि बीसलदेव बघेले के शासनकाल 1257 ई0 में भीषण दुर्भिक्ष पड़ने पर जगडूशाह ने दुष्काल की सहायतार्थ लाखों मूड़ (रुपया) तत्कालीन शासकों को दिये थे।

मध्यकाल पूर्वार्ध (लगभग 1200–1550 ई०)

अलाउद्दीन खिलजी के शासन काल (1296-1316 ई0) में राजधानी दिल्ली के सेठ पूरणचन्द का सुल्तान के दरबार में प्रतिष्ठित स्थान था। 'सुकृतसागर' ग्रन्थ में उनके लिए 'अलाउद्दीनशाखनिमान्यः' पद का प्रयोग किया गया है। पूरणचन्द के निवेदन पर भट्टारक माधवसेन ने दिल्ली दरबार में शास्त्रार्थ भी किया था। दिल्ली में इसी समय में सेठ दिवाराय, रत्नपरीक्षक ठक्कर फेरु, पाटन के सेठ समराशाह आदि हुए, जो राजमान्य थे।

मालवा की राजधानी इन दिनों (1387-1564 ई0) माण्डू थी। मालवा के राजमन्त्रियों के प्रसिद्धवंश में उत्पन्न मंत्रीश्वर मण्डन, सुल्तान होशंगशाह गोरी (1405-32) का महाप्रधान था। वह सर्वविद्याविशारद था और उसने 'शृंगार मण्डन' आदि कई ग्रन्थों की रचना की थी। मण्डन तथा उसके चचेरे

भाई धनदराज, भतीजे पुंजराज आदि का तत्कालीन जैन धार्मिक व्यक्तियों में उल्लेख आचार्य श्रुतकीर्ति ने अपने 'धर्मपरीक्षा' नामक ग्रन्थ में किया है।

आगरा के निकट चन्द्रवाड़ (चन्द्रपाठ) को चन्द्रपाल चौहान ने अपनी राजधानी बनाया था। इसके राज्य में रायबद्धिय, रपरी, हथिकन्त, शौरीपुर, आगरा आदि कई अन्य नगर या दुर्ग थे। चन्द्रपाल स्वयं जैनी था और उसका दीवान रामसिंह हारुल भी जैन था। चन्द्रपाल के उत्तराधिकारी भरतपाल→अभयपाल→जाहड़ का प्रधानमंत्री अमृतपाल था, जो जिनभक्त, सप्त व्यसन विरक्त, दयालु और परोपकारी था। अमृतपाल का पुत्र साहु सोड, उसका पुत्र रत्नपाल (रल्हण) राज्य के नगरसेठ थे। रत्नपाल का अनुज कृष्णादित्य (कण्ह) प्रधानमंत्री एवं सेनापति था। दिल्ली के गुलाम सुल्तानों के विरुद्ध इस जैन वीर ने कई सफल युद्ध किये थे, अनेक जिन मन्दिरों का निर्माण कराया था व कवि लक्ष्मण (लाखू) से अपभ्रंश भाषा में 'अणुव्रत रत्नप्रदीप' नामक धर्मग्रन्थ की रचना 1256 ई0 में करायी थी। यह वंश अनेक वर्षों तक राज्यमान्य और राजमन्त्रियों का वंश रहा। कहा जाता है कि चन्द्रवाड़ में 51 जैन प्रतिष्ठायें हुई थीं।

इटावा (वर्तमान मैनपुरी) जिले के करहल नगर में भी चौहान सामन्त राजा भोजराज का राज्य था, जिसके मंत्री यदुवंशी अमरसिंह जैनधर्म के पालक थे। उन्होंने 1414 ई0 में वहाँ रत्नमयी जिनबिम्ब का निर्माण कराकर विशाल प्रतिष्ठा महोत्सव कराया था।

फीरोज तुगलक के शासन के अन्तिम वर्षों में उद्धरणदेव तोमर ने ग्वालियर पर अधिकार करके अपना राज्य स्थापित किया था। उसके प्रतापी पुत्र वीरमदेव या वीरसिंह तोमर (1395-1422) ने राज्य को सुसंगठित करके स्वतंत्र और शक्तिशाली बनाया। बाद में गणपति देव, डूंगरसिंह, कीर्तिसिंह या करणसिंह, मानसिंह (1479-1518 ई0) और विक्रमादित्य क्रमश: राजा हुए।

वीरमदेव के महामात्य जैसवाल कुलभूषण जैनधर्मानुयायी कुशराज थे, जिन्होंने ग्वालियर में चन्द्रप्रभु जिनेन्द्र का भव्य मन्दिर बनवाया था। इन्हीं ने पद्मनाभ कायस्थ से 'यशोधरचरित्र' अपरनाम 'दयासुन्दर विधान' नामक सुन्दर काव्य की रचना करवायी थी।

ग्वालियर में विद्यमान विशालकाय जिन प्रतिमाओं के निर्माण का श्रेय डूंगरसिंह व कीर्तिसिंह तोमर राजाओं को जाता है। आदिनाथ की प्रतिमा बावनगजा कहलाती है, जो लगभग 50 फीट ऊँची है। लगभग 33 वर्ष इनके निर्माण में लगे। संघपति काला ने डूंगरसिंह के राज्य (1440 ई0) में स्वगुरु भट्टारक यश:कीर्तिदेव के उपदेश से भ0 आदिनाथ की प्रतिष्ठा प्रतिष्ठाचार्य पं0 रइधू से करायी थी। रइधू महान् साहित्यकार और अपभ्रंश के लगभग 30 ग्रंथों के रचयिता थे।

राजस्थान में मेवाड़ के प्रसिद्ध नगर चित्तौड़ के शासक तेजसिंह (1206 ई0) की रानी जयतल्लदेवी परम जिनभक्त थीं। उन्होंने चित्तौड़ दुर्ग के भीतर 1265 ई0 के लगभग पार्श्वनाथ का सुन्दर जिनालय बनवाया था। रानी के धर्मात्मा पुत्र वीरकेसरी रावल समरसिंह ने मुनि अमितसिंह के उपदेश से अपने राज्य में जीवहिंसा बंद करा दी थी।

रणथम्भौर का राणा हम्मीरदेव, जैन विद्वानों द्वारा रचित 'हमीर महाकाव्य', 'हम्मीर रासो' जैसे जैन काव्यों का नायक है। 14वीं सदी के उत्तरार्ध में साहजीजा बघेरवाल ने चित्तौड़ के अद्वितीय कीर्ति स्तम्भ (जैन जयस्तम्भ) का जीर्णोद्धार कराया था। कुछ विद्वानों का मत है कि यह स्तम्भ साहजीजा ने ही बनवाया था। यह स्तम्भ पत्थर से निर्मित है और इसमें सात खाने (मंजिलें) हैं। कहा जाता है कि इसी से प्रेरणा लेकर लगभग 100 वर्ष पश्चात् राणाकुम्भा ने अपना जयस्तम्भ बनवाया था। राणा के अनेक राजपुरुष जैन थे।

महाराणा कुम्भा के समय की सर्वश्रेष्ठ कला उपलब्धि रणकपुर में आदिनाथ का मन्दिर है, जिसमें 1444 स्तम्भ, 44 मोड़, 24 मण्डप और 54 देवकुलिकायें हैं। इसके बनाने में 65 वर्ष लगे। इसके निर्माता राणा कुम्भा के कृपापात्र सेठ धन्नाशाह पोरवाल थे, जिन्होंने 1433 में महाराणा से ही इसका शिलान्यास कराया था। राणा ने तब 22 लाख रुपये दान में दिये थे। लगभग इसी समय मुण्डासा (राजस्थान) के राव शिवसिंह के राज्यश्रेष्ठी शाह जीवराज पापड़ीवाल ने अनेक प्रतिष्ठायें कराकर लाखों की संख्या में जैन प्रतिमाएं सर्वत्र भेजीं थीं। राणासांगा के पुत्र रत्न सिंह के मंत्री कर्माशाह ने, जिन्हें एक शिलालेख में-'श्रीरत्नसिंहराज्ये राज्यव्यापारभार-धौरेय' कहा गया है, शत्रुञ्जय का जीर्णोद्धार कराया था।

मेवाड़ के इतिहास में आशाशाह और उसकी वीर माता का नाम अमर हो गया है। महाराणा रत्नसिंह की मृत्यु के बाद उसका छोटा भाई विक्रमाजीत गद्दी पर बैठा, किन्तु वह अयोग्य था और उसका छोटा भाई उदयसिंह नन्हा बालक था। अत: सरदारों ने विक्रमाजीत को गद्दी से उतारकर दासीपुत्र बनवीर को राणा बना दिया। बनवीर ने विक्रमाजीत की हत्या कर जब उदयसिंह की हत्या करनी चाही तो पन्ना धाय अपने पुत्र का बलिदान देकर उदयसिंह को बाहर ले आयी। पन्ना आश्रय की खोज में अनेक सामन्त-सरदारों के पास भटकी पर अत्याचारी बनवीर के भय से कोई तैयार नहीं हुआ। अन्तत: वह कुम्भलमेर पहुंची, जहाँ का दुर्गपाल आशाशाह (जैन) था। आशाशाह भी जब अपनी असमर्थता जाहिर करने लगा तो उसकी वीर माता कुपित होकर भूखी सिंहनी की भाँति आशाशाह का प्राणान्त करने उस पर झपटी और कहा -'तू कैसा पुत्र है जो विपत्ति में किसी के काम नहीं आता, तुझे जीने का अधिकार नहीं।' आशाशाह गद्‌गद होकर वीर जननी के चरणों में गिर पड़ा। आशाशाह ने कुमार को अपना भतीजा कहकर प्रसिद्ध किया। कुछ समय बाद अन्य सामन्तों की सहायता से उदयसिंह ने चित्तौड़ का सिंहासन प्राप्त कर लिया।

मण्डौर के राव रिधमल तथा राव जोधा का दीवान बच्छराज बड़ा चतुर, साहसी और महत्त्वाकांक्षी था। 1488 ई0 में बीकानेर के संस्थापक राव बीका का भी यह दीवान रहा। बच्छराज ने जैनधर्म की प्रभावना के अनेक कार्य किये थे। बच्छराज के वंशज ही बच्छावत कहलाये। बच्छराज के पुत्र करमसिंह, वरसिंह, पौत्र नगराज, प्रपौत्र संग्राम आदि बीका के उत्तराधिकारियों के दीवान रहे। मारवाड़ के मोहनोत भण्डारी आदि कई प्रसिद्ध जैन वंशों का उदय इसी समय हुआ और उन्होंने राज्य के प्रतिष्ठित पदों पर कार्य करके उसके उत्कर्ष में भारी योगदान दिया।

मध्यकाल में ही विजयपुर राज्य के राजाओं का कुलधर्म हिन्दू था पर प्रजा का बहुभाग जैन था। बुक्काराय प्रथम (1365-1377 ई0) के समक्ष जब भव्यों (जैनों) व भक्तों (वैष्णवों) में हुए संघर्ष को लाया गया तो उन्होंने सभी प्रमुखों को एकत्र करके जैनियों का हाथ वैष्णवों के हाथ में दिया और घोषणा की-

'हमारे राज्य में जैनदर्शन और वैष्णवदर्शन के बीच किसी प्रकार का भेद नहीं है। जैन दर्शन पूर्ववत् पंचमहाशब्द और कलश का अधिकारी है और रहेगा। ऐसे बुक्काराय का प्रधानमंत्री और सेनापति जैन वीर बैचप था। वह और उसके तीन वीर पुत्र ही राज्य के प्रमुख सैन्य संचालक थे।

हरिहर द्वितीय (1377-1404) का राज्यकाल बैचप व उसके पुत्रों/पौत्रों के लौकिक तथा जैन धार्मिक क्रिया-कलापों से भरा है। सम्राट् की महारानी बुक्कवे जिनभक्त थीं। देवराय द्वितीय (1419-1446 ई0) के उपराजा कार्कल नरेश वीर पाण्ड्य ने 1432 में बाहुबली की प्रतिमा निर्मित करायी थी, जिसके प्रतिष्ठा महोत्सव समारोह में स्वयं देवराय सम्मिलित हुए थे। उस काल के प्रतिष्ठित जैन गुरु श्रुतमुनि की काव्यमय प्रशस्ति श्रवणबेलगोल की सिद्धर-बसदि के एक स्तम्भ पर 1433 में उत्कीर्ण की गई थी।

हरिहर द्वितीय के सामन्त एवं उपराजा कुलशेखर आलुपेन्द्रदेव ने 1385 में पार्श्वनाथ का मन्दिर मूडबिद्री में बनवाया था। तौलव देश की राजकुमारी देवमति ने श्रुतपंचमी व्रत के उद्यापन में धवल, जयधवल, महाधवल (महाधवल) की ताड़पत्रीय प्रतियां लिखाकर मूडबिद्री की सिद्धान्त-बसदि में स्थापित की थीं। सम्राट् कृष्णदेव राय (1509-1539) विजयपुर नरेशों में सर्वाधिक प्रतापी सम्राट् थे। उन्होंने अनेक जिनालयों को दान दिया था। दक्षिण भारत में अन्य राजाओं के आश्रय में भी जैनधर्म फला-फूला। जिनमें मंत्री पद्मनाभ, सेनापति मंगरस, रानी काललदेवी, वीरय्य नायक आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

मध्यकाल उत्तरार्ध (लगभग 1556—1755 ई०)

मुगल साम्राज्यकाल में जैनधर्म का ह्रास और विकास दोनों हुए। पानीपत के युद्ध में लोदी सुल्तानों को समाप्त करके दिल्ली एवं आगरा पर अधिकार कर बाबर ने मुगलराज्य की नींव डाली थी। बाबर के बाद हुमायूं उसका उत्तराधिकारी बना। उसका पुत्र अकबर (1556-1605) मुगल साम्राज्य का वास्तविक संस्थापक था। रणकाराव, भारमल्ल, टोडरसाहू, हीरानन्द, कर्मचन्द बच्छावत आदि अनेक प्रतिष्ठित जैन व्यक्ति अकबर के कृपापात्र थे। आचार्य 'हीरविजय' की प्रसिद्धि सुनकर सम्राट् ने 1581 ई0 में उन्हें आमन्त्रित करके 'जगद्गुरु' की उपाधि से विभूषित किया था। अकबर के समय अनेक जैन प्रभावक सन्त हुए, अनेक मन्दिरों का निर्माण हुआ और लगभग दो दर्जन जैन साहित्यकारों ने अपनी साहित्यिक कृतियों का सृजन किया। अकबर के मित्र और प्रमुख अमात्य अबुल फजल ने 'आइने अकबरी' में जैनों और जैनधर्म का विवरण दिया है। 'आइने अकबरी' में अकबर की कुछ उक्तियां संकलित है यथा- 'यह उचित नहीं है कि मनुष्य अपने उदर को पशुओं की कब्र बनायें' आदि।

अकबर के पुत्र एवं उत्तराधिकारी जहाँगीर (1605-1627 ई0) जिनसिंहसूरि (यति मानसिंह) आदि जैन गुरुओं के साथ चर्चा किया करते थे। इनको उसने 'युगप्रधान' की उपाधि भी प्रदान की थी। इसी समय पण्डित बनारसी दास ने आगरा में विद्वद्गोष्ठी प्रारम्भ की थी। शाहजहाँ (1628-1658 ई0) के काल में दिल्ली में लालकिले के सामने लालमन्दिर का निर्माण हुआ था, जो उर्दू (सेना की छावनी) मन्दिर या लश्करी-मन्दिर भी कहलाता था, क्योंकि वह शाही सेना के जैन सैनिकों एवं अन्य राज्यकर्मियों की प्रार्थना पर सम्राट् के प्रश्रय में उसकी अनुमति-पूर्वक बना था। औरंगजेब (1658-1707 ई0) के शासन में मथुरा, वाराणसी, दिल्ली आदि के अनेक जैन मन्दिरों को तोड़कर मस्जिदें बनवा दी गयीं थीं।

उत्तर मध्यकाल के राजपूत राज्य

उत्तर मध्यकाल में मेवाड़ (उदयपुर), जोधपुर, बीकानेर, जयपुर, बूंदी आदि में राजपूत राजाओं का शासन था। उनके द्वारा शासित क्षेत्रों में जैनियों की स्थिति अपेक्षाकृत अच्छी थी। राजागण जैन मुनियों, यतियों और विद्वानों का आदर करते थे। इन राज्यों में भी दीवान, भण्डारी, कोठारी आदि उच्च पदों पर जैनी नियुक्त होते थे।

मेवाड़ राज्य में राणासांगा का मित्र भारमल कावड़िया था, जिसे राजा ने अलवर से बुलाकर रणथम्भौर का दुर्गपाल नियुक्त किया था। बाद में राणासांगा के पुत्र उदयसिंह के शासनारम्भ में वह प्रधानमंत्री के पद पर प्रतिष्ठित हुआ। 1567 ई0 में जब सम्राट् अकबर ने चित्तौड़ पर अधिकार कर लिया तब राजा उदयसिंह ने उदयपुर नगर बसाकर उसे अपनी राजधानी बनाया था।

दानवीर भामाशाह के नाम से कौन परिचित नहीं होगा। भामाशाह भारमल के पुत्र थे। उन्होंने मेवाड़ ही नहीं देश की स्वाधीनता में महती भूमिका निभाई थी। 'मेवाड़ोद्धारक' उनकी उपाधि थी। भामाशाह उदयसिंह के समय से ही राज्य के दीवान एवं प्रधानमंत्री थे। जब हल्दी घाटी के युद्ध में राणाप्रताप पराजित हो गये और जंगल व पहाड़ों में भटककर स्वदेश परित्याग का संकल्प किया तब स्वदेशभक्त और स्वामिभक्त भामाशाह राजा का रास्ता रोककर खड़ा हो गये और देशोद्धार के लिए उन्हें उत्साहित करने लगे। राणा ने कहा 'न मेरे पास धन है, न सैनिक और न साथी। किस बलबूते पर मैं देशोद्धार का प्रयत्न करूँ', भामाशाह ने तत्काल विपुल द्रव्य उनके चरणों में समर्पित कर दिया, इतना कि जिससे 25000 सैनिकों का 12 वर्ष तक निर्वाह हो सकता था। यह सब धन भामाशाह का अपना पैतृक एवं स्वयं उपार्जित किया हुआ था। इस अप्रत्याशित उदारता और सहायता से हर्ष विभोर राजा ने भामाशाह को गले लगा लिया और दूने उत्साह से मुगलों को बाहर करने में जुट गया। उसने अनेक युद्ध लड़े, जिनमें भामाशाह और उसका भाई ताराचन्द सदैव राजा के साथ रहे। इसका परिणाम यह हुआ कि मुगल सैनिकों के पैर उखड़ने लगे और 1586 ई0 तक दशवर्ष के भीतर चित्तौड़ और मांडलगढ को छोड़कर सम्पूर्ण मेवाड़ पर राणा का पुनः अधिकार हो गया। भामाशाह का जन्म 1547 ई0 और निधन 1600 ई0 के लगभग हुआ था। भामाशाह स्वामिभक्त, दानवीर होने के साथ-साथ जैनधर्म पर प्रगाढ़ श्रद्धा रखने वाला था। भामाशाह के पुत्र जीवाशाह और पौत्र अक्षयराज अपने पिता की भांति मंत्री और दीवान रहे।

औरंगजेब की हिन्दू और जैन विरोधी असहिष्णु नीति तथा जोधपुर के महाराज जसवंत सिंह की विधवा एवं पुत्रों के साथ किये गये अन्यायपूर्ण बर्ताव से जब राजपूत भड़क उठे, तब मेवाड़ के वीर राजा राजसिंह ने एक कड़ा पत्र औरंगजेब को लिखा। इस समय राजसिंह के प्रधानमंत्री संघवी दयालदास नामक जैन वीर थे, जो भारी योद्धा और कुशल सैन्य-संचालक भी थे। संघवी दयालदास ने 1677 ई0 में छाणी ग्राम में एक पाषाणमयी जिनप्रतिमा की प्रतिष्ठा कराई थी और उदयपुर में एक जिनमन्दिर बनवाया था, जिसके निर्माण में एक पैसा कम दस लाख रुपया लगा था।

जोधपुर राज्य में मेहता रामचन्द, मेहता अचलोजी, मेहता जयमल, मेहता नैणसी (नयनसिंह) आदि प्रमुख दीवान/प्रधानमंत्री रहे। जोधपुर के ही भण्डारी वंशीय जैन, कलम और तलवार के धनी होने के

साथ-साथ परम जिनभक्त और राजभक्त थे। भण्डारी राज्यभण्डार के प्रबन्धक होने से भण्डारी कहलाये। इस वंश के लोग राव जोधा (1427-1489 ई0) के समय मारवाड़ में आकर बसे थे। जोधपुर नरेश अजीतसिंह (1680-1725 ई0) के समय रघुनाथ भण्डारी राज्य के दीवान थे। वह उदार और दानी थे। उस समय लोक-कहावत चल पड़ी थी कि 'अजीत तो दिल्ली का बादशाह हो गया और रघुनाथ जोधपुर का राजा हो गया'। जोधपुर राजघराने में भंडारी वंश के खिमसी, विजय, अनूपसिंह, पोमसिंह, सूरतराम, रतनसिंह आदि सूबेदार-सेनापति-दीवान पदों पर रहे। ये सभी जैनधर्म के परमभक्त थे।

1727 ई0 में सवाई जयसिंह ने जयपुर नगर का निर्माण कराया। इससे पूर्व आमेर उनकी राजधानी थी। सवाई जयसिंह के वंश कछवाहा राजपूत के संस्थापक साढ़ेदेव थे। उनके राजमंत्री निर्भयराम या अभयराम छाबड़ा गोत्रीय खण्डेलवाल जैन थे। इनके समय में जैन धर्म और जैनी खूब फले-फूले। राज्य के मंत्री, दीवान तथा उच्चपदस्थ कर्मचारी जैन होते रहे। इस राज्य के लगभग पचास जैन मंत्रियों के स्पष्ट उल्लेख वंशावलियों में मिलते हैं। शताधिक जैन साहित्यकारों ने जयपुर राज्य के प्रश्रय में प्रभूत साहित्य रचा। राज्य के आमेर, जयपुर, टोडा, सांगानेर, चाकसू, जोबनेर, झुंझनू, मौजमाबाद आदि अनेक नगर जैनधर्म के प्रसिद्ध केन्द्र रहे हैं, जैन तीर्थ और जैन मन्दिर तो यहां अनेक हैं ही।

आमेर राज्य के महामंत्री मोहनदास भांवसा, राजा जयसिंह के दीवान संघी कल्याणदास, महाराज रामसिंह के दीवान बल्लूशाह छाबड़ा, महाराज बिशनसिंह (1689-1700) के दीवान विमलदास छाबड़ा तथा उनके पुत्र रामचन्द्र छाबड़ा, फतहचंद छाबड़ा, किशनचन्द्र छाबड़ा आदि दीवान जैन थे। 1717 से 1733 तक सवाई जयसिंह के दीवान राव जगराम पाण्ड्या, उनके पुत्र कृपाराम पाण्ड्या, फतहराम पाण्ड्या, भगतराम पाण्ड्या (1735-1743) भी दीवान रहे। इसी समय के एक दीवान श्री विजयराम छाबड़ा या विजयराम तोतूका भी उल्लेखनीय हैं, जिनके संदर्भ में महाराज ने एक ताम्रपत्र में लिखा था -'तुम्हें शाबासी है, तुमने कछवाहों के धर्म की रक्षा की है, यह राज्यवंश तुमसे कभी उऋण नहीं हो सकता और जो पायेगा तुम्हारे साथ बांटकर खायेगा।'

सवाई जयसिंह के ही समय में ताराचन्द विलाला, नैनसुख, श्रीचंद छाबड़ा, कनीराम वैद (1750-1763), केसरी सिंह कासलीवाल (1756-1760) आदि जयपुर के दीवान रहे। जैन साहित्यकार दौलतराम कासलीवाल 1720 के लगभग राज्यसेवा में नियुक्त हुए थे। वे दीवान भी रहे और उन्होंने हिन्दी आदिपुराण, पद्मपुराण, हरिवंशपुराण आदि ग्रन्थों की रचना की है।

दक्षिण भारत में विजयनगर राज्य में बेंकट द्वितीय के महालेखाकार राय-करणिक-देवरस ने 1630 ई0 में मलेयूर पर्वत की पार्श्वनाथ वसदि में जिन मुनियों के बिम्ब स्थापित किये थे। कर्णाटक में मैसूर का ओडेयर वंश भी प्राचीन गंगवंश की ही एक शाखा थी। ये राजा स्वयं को गोम्मटेश प्रतिष्ठापक महाराज चामुण्डराय का वंशज भी बताते हैं। पहले यह राज्य जैनधर्मानुयायी था, बाद में कुछ राजाओं द्वारा शैव-वैष्णव धर्म स्वीकार कर लेने पर भी मैसूर के राजा स्वयं को गोम्मटेश का संरक्षक बताते रहे। मैसूर नरेश देवराज ओडेयर ने 1674 में जैन साधुओं के नित्य आहार दान हेतु श्रवणबेलगोल के भट्टारक जी को मदने ग्राम दान में दिया था। इसी तरह कृष्णराज ओडेयर ने भी श्रवणबेलगोल आकर गोम्मटेश के दर्शन कर भरपूर दान दिया था, जो इन राजाओं की जैन धर्म के प्रति श्रद्धा को अभिव्यक्त करता है।

आधुनिक युग (लगभग 1756 से 1947 ई०)

आधुनिक युग के देशी राज्यों में भी पूर्व की भाँति जैन भारी संख्या में उच्च पदों पर आसीन रहे। विस्तार भय से अत्यंत संक्षेप में ही उनका परिचय यहाँ दिया जा रहा है। मेवाड़ोद्धारक भामाशाह के संबंधी कर्मचन्द बच्छावत के वंशज अगरचंद बच्छावत को मेवाड़ के राणा अरिसिंह द्वितीय ने माण्डलगढ़ का दुर्गपाल तथा उस जिले का शासनाधिकारी बनाया था। बाद में वह राणा के मंत्री भी बन गये। अगरचंद के ज्येष्ठ पुत्र देवीचन्द जहाजपुर दुर्ग के शासक रहे। मेहता शेरसिंह, मेहता गोकुलचंद, मेहता पन्नालाल, सोमचन्द गांधी, शिवदास गांधी, मेहता मालदास, मेहता नाथजी, मेहता लक्ष्मीचंद, मेहता जोरावर सिंह आदि उदयपुर के राजाओं के मंत्री/ किलेदार आदि रहे थे।

जोधपुर राज्य में भी मेहता वंश राज्य के दीवान पद पर रहा। इनमें मेहता सवाईराम, सरदारमल, ज्ञानमल, नवलमल, रामदास, चैनसिंह उल्लेखनीय हैं। इसी तरह जोधपुर राज्य में भण्डारी वंश भी दीवान / शासक / कोषाध्यक्ष आदि पदों पर रहा। इनमें गंगाराम, लक्ष्मीचंद, बहादुरमल, किशनमल के नाम उल्लेखनीय हैं। इन्दुराज सिंघवी और धनराज सिंघवी सेनापति आदि पदों पर रहे थे।

बीकानेर राज्य के महाराज अनूपसिंह (1669-1698) से खरतरगच्छाचार्य जिनचन्द्रसूरि का पत्राचार चलता था। यहीं के राजा सूरतसिंह (1787-1828) के दीवान अमर चन्द्र सुराना थे। कहा जाता है कि उन्हें झूठा आरोप लगाकर मृत्युदण्ड दे दिया गया था। जैसलमेर राज्य के राजा मूलराज या मूलसिंह ने, जो 1761 में गद्दी पर बैठे, मेहता स्वरूप सिंह को अपना प्रधानमंत्री बनाया। एक कुचक्र के तहत स्वरूप सिंह की भी हत्या कर दी गई। स्वरूप सिंह के पुत्र मेहता सालिमसिंह को मूलराज ने अपना मन्त्री बनाया था। सालिमसिंह ने अपने पिता के हत्यारों से चुन-चुनकर बदला लिया। राजा मूलराज द्वारा अंग्रेजों से सन्धि करने का भी सालिमसिंह ने विरोध किया था।

जयपुर राज्य में भी इस युग में अनेक जैन दीवान होते रहे। खण्डेलवाल जैन सदाराम के पुत्र दीवान रतनचन्द साह 1756 से 1768 तक दीवान रहे। इन्हीं दीवान ने जयपुर में अपने भाई बधीचंद के नाम से एक विशाल जिनमन्दिर बनवाया था। अनन्तराम खिन्दूका, बालचंद छाबड़ा, नैनसुख खिन्दूका, संघी नन्द लाल गोधा, जयचन्द साह, संघी मोतीराम गोधा, भीवचन्द छाबड़ा, जयचन्द छाबड़ा, अमरचन्द सोगानी, जीवराज संघी, मोहनराम संघी, श्योजीलाल पाटनी, भगतराम बगड़ा, राव भवानीराम, सदासुख छाबड़ा, अमरचंद पाटनी, रामचन्द्र या राजचन्द्र छाबड़ा, मन्नालाल छाबड़ा, कृपाराम छाबड़ा, लिखमीचंद छाबड़ा, नोनदराम खिन्दूका, संघी हुकुमचन्द, मानक लाल ओसवाल आदि जयपुर राज्य के दीवान रहे।

भरतपुर राज्य में राजा सूरजमल के काल में चांदुवाड़गोत्रीय संघई मयाराम राज्य के पोतदार (खजांची) और महाराज के मोदी थे। इनके पुत्र संघई फतहचन्द भी उन पदों पर रहे। फतहचन्द के आश्रित एवं सहायक पोतदार पण्डित नथमल विलाला ने अनेक ग्रन्थों की रचना की थी, जिनमें 1767 में लिखित 'सिद्धान्तसार दीपक' प्रमुख है। यह रचना उन्होंने फतहचन्द के पुत्र जगन्नाथ के प्रबोध के लिए की थी।

मैसूर राज्य पर जब टीपू सुल्तान को हराकर अंग्रेजों ने अधिकार कर लिया तब पुराने राजवंश के राजकुमार इम्मडि कृष्णराज ओडेयर को गद्दी सौंप दी। धर्मस्थल के जैन प्रमुख कोमार हेग्गडे की प्रार्थना पर राजा ने पूर्व प्रदत्त ग्रामादि दे दिये थे। इस राजा ने 1828 के लगभग केलसूर के जिनमंदिर में चन्द्रप्रभु,

विजयदेव (पार्श्वनाथ) और ज्वालामालिनी देवी की प्रतिमाएें पुनः प्रतिष्ठित कराईं थीं, जो इसकी जैन धर्म के प्रति श्रद्धा का प्रमाण है। कृष्णराज ओडेयर के प्रधान अंगरक्षक राजा देवराज अरसु राज्यसेवा से अवकाश प्राप्त कर जीवन के अन्तिम दिनों में श्रवणबेलगोल में भगवान् गोम्मटेश के चरणों में रहने लगे थे। मैसूर राज्य के प्रसिद्ध विद्वान् पण्डित देवचन्द्र राज्य में करणिक के पद पर प्रतिष्ठित थे। 1804 में जब कर्नल मेकेन्जी कनकगिरि का सर्वेक्षण करने आया तो पण्डित जी उसके सम्पर्क में आये। कर्नल ने राजा से उन्हें सहायक के रूप में मांगा। इसी कारण पण्डित देवचन्द्र 'कर्नल मेकेन्जी के पण्डित' नाम से विख्यात हुए।

जैन राजनैतिक व्यक्तियों में कटक के मंजु चौधरी का नाम भी विशेष उल्लेखनीय है। जैन धर्म / साहित्य / संस्कृति / कला के लिए विख्यात बुन्देलखण्ड के ललितपुर जिले के महरौनी तहसील के कुम्हेणी ग्राम में मंजु चौधरी का जन्म एक साधारण जैन परिवार में हुआ। बाल्यावस्था में माता-पिता का निधन हो गया, जो था वह जुए में हरा दिया। अन्ततः पैदल ही एक दिन के अन्तराल से रोटी खाते, मजदूरी करते 1740-45 के लगभग नागपुर पहुँचे। वहाँ छोटा-मोटा धन्धा किया, भाग्य और पुरुषार्थ ने साथ दिया तो राजा मुकुन्ददेव के दरबार में पैठ बना ली। अपनी बुद्धिमत्ता और साहस के बल पर वे मराठा सरदार रघुजी भोंसले के मोदी और इतने विश्वासपात्र बन गये कि भोंसले ने इन्हें कटक के राजा के दरबार में चौधरी नियुक्त कर दिया। बाद में उन्होंनें बंगाल के नवाब से युद्ध का निश्चय किया। नवाब डरकर भाग गया तब भोंसले और राजा मुकुन्ददेव ने उन्हें दीवान बना दिया। राज्य की ओर से उन्हें कटक में जागीरदारी मिली तथा एक बाजार भी उपहार स्वरूप मिला जो आज भी चौधरी बाजार कहलाता है। आपने खण्डगिरि पर 1760 के लगभग एक जैन मन्दिर बनवाया था। मंजु चौधरी के बाद उनका भान्जा भवानीदास चौधरी (भवानी दादू) उनके पद पर प्रतिष्ठित हुआ। उसके बाद भवानी का छोटा भाई तुलसी दादू चौधरी हुआ।

लखनऊ में 'राजा' पदवी से विभूषित तथा राजमान्य राजा बच्छराज नाहटा ने नगर में प्रसिद्ध श्वेताम्बर जैन मंदिर बनवाया था। दिल्ली के राजा हरसुखराय मुगल बादशाह शाहआलम द्वितीय (1759-1806) के शाही खजाञ्ची और जौहरी नियुक्त हुए थे। हरसुखराय के पुत्र राजा सगुन चन्द भी पिता की तरह खजाञ्ची थे। इन्होंने अनेक जैन मंदिर बनवाये, जिनमें हस्तिनापुर का प्रसिद्ध प्राचीन जैन मंदिर भी है। अवध के नबाब वाजिद अली शाह ने सेठ सगुनचन्द का विशाल स्वर्णजटित चित्र बनवाकर उन्हें भेंट किया था।

राजस्थान के किशनगढ़ राज्य के चौधरी रत्नपाल नामक जैन सामन्त वहाँ के राजा से रुष्ट होकर बुन्देलखण्ड (वर्तमान म0प्र0) के चन्देरी में आ बसे थे। बाद में वहाँ के राजा से इन्हें जागीर व चौधराहट मिली। इनका परिवार बहुत समय तक चौधरी होता आया। इसी वंश में चौधरी हिरदै सहाय हुए जिनकी 'सवाई' और 'राजधर' उपाधियां थीं। सिंघई सभासिंह भी चन्देरी के प्रधान कारकुन थे, इन्होंने थूवोन जी में 35 फीट ऊँची देशी पाषाण की भगवान् आदिनाथ की प्रतिमा प्रतिष्ठापित की थी। इन्हीं सभासिंह ने चन्देरी की प्रसिद्ध चौबीसी बनवाई थी।

इनके अतिरिक्त भी अनेक राजमान्य जैन व्यक्ति इस काल में हुए जिनमें राजा लक्ष्मण दास, प्रसिद्ध हिन्दी लेखक राजा शिवप्रसाद सितारेहिन्द, राय बद्रीदास, डिप्टी कालेराय, पण्डित प्रभुदास, सेठ मूलचंद सोनी, सेठ माणिकचन्द जे0पी0, राजा चन्दैया हेंगड़े, सर सेठ हुकुमचंद, सर मोतीसागर, राजा बहादुर सिंह सिंघी आदि के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं।

आजादी के आन्दोलन में अपना सर्वस्व समर्पण करने वाले शहीद अमरचंद बांठिया को 1857 में ग्वालियर में तथा लाला हुकुमचंद जैन को हांसी में फांसी की सजा दी गई थी। अमर शहीद मोतीचंद को आरा के महन्त-हत्याकांड में शूली पर लटका दिया गया था।

महात्मा गांधी जब विलायत जाने लगे और उनकी माता ने मांसाहार, मदिरापान आदि के भय से भेजने से इंकार कर दिया तब एक जैन साधु वेचरजी स्वामी ने गांधी जी को मदिरापान आदि न करने की प्रतिज्ञा दिलायी थी। इसी प्रकार गांधी जी के जीवन पर गहरा प्रभाव डालने वाले जो तीन पुरुष थे, उनमें रायचंद भाई (जैन) प्रमुख थे। धार्मिक, शंकाओं का समाधान गांधी जी रायचंद भाई से ही प्राप्त करते थे।

1942 के आन्दोलन में वीर उदयचंद, वीर साबूलाल, वीर प्रेमचन्द, वीर मगनलाल ओसवाल, कु0 जयावती संघवी, श्री नत्थालाल शाह आदि गोली लगने से मारे गये। लगभग 5 हजार जैनों ने स्वतंत्रता के आन्दोलन में जेल की दारुण यातनायें सहीं। इस बीच किन्हीं के पारिवारिक जन मारे गये तो किसी की आजीविका छिन गई। अनेक जैन ऐसे भी हैं जिन्हें जेल जाने का सौभाग्य नहीं मिल सका, उन्होंने भूमिगत रहकर काम किया। अल्पवय के कारण भी अनेक स्वतंत्रता प्रेमी जैन जेल नहीं जा सके। सहस्राधिक जैन ऐसे भी हैं जो जेल तो नहीं गये पर बाहर से आन्दोलन को अपना नैतिक समर्थन दिया। जैन या अजैन किसी के भी जेल जाने पर उनके परिवार के भरण-पोषण की व्यवस्था करना भी अनेकों का लक्ष्य था। ऐसे व्यक्तियों का एक लम्बा इतिहास हमारे सामने है। इस प्रकार भारतीय राजनैतिक क्षितिज में जैन समाज का योगदान अपना उदाहरण आप है।

❑❑❑

जेल में पर्युषण पर्व

जेल अवधि में दो बार पर्युषण पर्व आये। सन् 1942 में जिला-जेल, मंडलेश्वर में मनाया। 10-12 जैन बंधु थे, पर्व के दिनों में बिना देवदर्शन के भोजन नहीं करने के कारण स्थानीय मंदिर जी से भगवान् की प्रतिमा जी लाने की अनुमति मिल गई, अतः प्रतिदिन सुबह शांति से अभिषेक-पूजन होता, दोपहर में तत्त्वार्थसूत्र का पठन और शाम को सामायिक। इन दिनों अपने ही हाथों बना शुद्ध भोजन एक बार लेते थे। इसी प्रकार सन् 1943 में केन्द्रीय कारागार, इंदौर में भी प्रतिमा जी लाने की अनुमति मिल गई थी, वहां शुद्ध भोजन शहर से आ जाता था। मिश्रीलाल जी गंगवाल, जो बाद में मध्यभारत के मुख्यमंत्री रहे और बाबूलाल जी पाटौदी के होने से पर्व में बड़ा आनंद रहा।

-कमल चंद जैन, एडवोकेट
सनावद् (म0प्र0) के वरिष्ठ स्वतंत्रता सेनानी

उपक्रम : दो

स्वतंत्रता आन्दोलन : एक सिंहावलोकन

हमारा भारतवर्ष प्राचीन काल से ही 'सोने की चिड़िया' कहा जाता रहा है, जो इसकी समृद्धि और विपुल प्राकृतिक सम्पदा का सूचक है। इस समृद्धि की कहानी सुनकर यूरोप में पुर्तगालियों ने सबसे पहले भारत से व्यापार सम्बन्ध बढ़ाना प्रारम्भ किया। भारत से व्यापार के सभी मार्गों पर तुर्कों का आधिपत्य था, इसीलिए पुर्तगालियों को नये समुद्री मार्ग की खोज करनी पड़ी। 'वास्को-डि-गामा' नामक पुर्तगाली अफ्रीका महाद्वीप के चक्कर लगाता हुआ 20 मई 1498 को कालीकट पहुँचा और वहाँ के राजा जमोरिन से एक संधि की। सोलहवीं शताब्दी के प्रारम्भ में पुर्तगालियों ने भारत से जोर-शोर से व्यापार करना आरम्भ कर दिया। पुर्तगालियों की देखा-देखी हालैण्ड, इंग्लैण्ड और फ्रांस के व्यापारियों ने भारत से व्यापार करने का निश्चय किया। लार्ड मेयर की अध्यक्षता में 22 दिसम्बर 1599 को अंग्रेज व्यापारियों ने इस उद्देश्य से एक संस्था की स्थापना करने का निर्णय लिया। 31 दिसम्बर 1600 को ब्रिटिश सम्राज्ञी ने भारत से व्यापार करने के लिए अंग्रेज व्यापारियों को अधिकार पत्र (Charter) दिया, जिसके द्वारा 'ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कम्पनी' का निर्माण किया गया। 1664 में लुई चौदहवें ने भारत से व्यापार करने के लिए 'फ्रेञ्च ईस्ट इंडिया कम्पनी' की स्थापना की।

इस प्रकार सत्रहवीं शताब्दी तक भारत से अनेक यूरोपीय देशों ने अपने व्यापारिक सम्बन्ध बढ़ा लिये थे। फलत: उनमें आपस में प्रतिद्वन्द्विता, प्रतिस्पर्धा और संघर्ष होने लगा। पहली मुठभेड़ में पुर्तगाल और हालैण्ड के व्यापारी समाप्त हो गये। व्यापारिक और राजनैतिक प्रभुत्व के लिए लड़ाई मुख्यत: अंग्रेजों और फ्रांसीसियों के मध्य हुई, जिसमें फ्रांसीसी हार गये। इसके बाद ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कम्पनी ने भारतीय नबाबों और राजाओं को हराकर अपना राजनैतिक प्रभुत्व जमाना प्रारम्भ कर दिया। प्लासी और बक्सर के युद्धों के बाद, बंगाल, बिहार और उड़ीसा के शासन पर कम्पनी का आधिपत्य हो गया तथा दिल्ली का बादशाह उनका पेंशनर बन गया। 1773 से 1856 तक कम्पनी ने देशी रियासतों से छोटी-बड़ी लडाइयां लड़ीं और उन्हें परास्त करके विस्तृत भू-भाग को अपने अधिकार में ले लिया।

तदनन्तर अंग्रेज अत्यन्त सस्ते दामों पर कच्चा माल इंग्लैण्ड भेजने लगे और वहाँ निर्मित सामान भारत में अधिक मूल्य पर विक्रय करने लगे। अंग्रेजों की इस नीति से इंग्लैंड के उद्योगों की तो उन्नति हुई, लेकिन भारतीय व्यापार, वाणिज्य और उद्योग-धन्धे पूरी तरह चौपट हो गये। अंग्रेजों की भू-राजस्व तथा भूमि सम्बन्धी नीतियों के कारण भारतीय किसान विपन्न हो गये और प्रशासनिक दबाव तथा अन्य कारणों से जमींदार भी असंतुष्ट हो गये। 19वीं शती के पूर्वार्द्ध में ईसाई मिशनरियों ने भारत में अपना-अपना प्रभाव बढ़ाना प्रारम्भ कर दिया। चिकित्सा, मानव सेवा, शिक्षा तथा सुदूर ग्रामीण इलाकों में लोगों को जीवनोपयोगी सुविधायें देने के बहाने उन्होंने ईसाई धर्म का प्रचार-प्रसार करने का प्रयास किया।

ईसाई मिशनरियों द्वारा अशिक्षित तथा निर्धन ग्रामवासियों का व्यापक पैमाने पर कराया जाने वाला धर्मान्तरण हिन्दू तथा इस्लाम धर्मावलम्बियों के लिए चिन्ता का विषय बन गया। सार्वजनिक स्थानों पर

भारतीयों के साथ किये जाने वाले अपमानजनक व्यवहार, रेल-डाक-तार तथा अन्य वैज्ञानिक प्रयोगों की शुरूआत, मन्दिरों का प्रबन्ध अपने हाथ में लेने, विधवा विवाह को कानूनी आधार प्रदान करने, सती प्रथा पर रोक लगाने, ईसाई बनने पर भी पैतृक सम्पत्ति को हिस्सा मिलने का कानून, सैनिकों को विदेश भेजने जैसे कार्यों ने भारतीय जनमानस तथा धार्मिक भावनाओं को आहत किया।

राजनैतिक क्षेत्र में डलहौजी नामक अंग्रेज गवर्नर जनरल की विलय नीति ने सर्वाधिक असंतोष फैलाया। डलहौजी के शासनकाल में सतारा, सम्भलपुर, उदयपुर, जैतपुर, झांसी तथा नागपुर को ब्रिटिश साम्राज्य में मिला लिया गया। अबध के नबाब वाजिद अली शाह, नाना साहब (पेशवा बाजीराव के द्वितीय पुत्र) तथा मुगल सम्राट् बहादुर शाह द्वितीय के प्रति अंग्रेजों की नीति ने बहुत से शासकों को विरोधी बना दिया। प्रशासन में भारतीयों के साथ भेदभाव, न्याय-प्रणाली में निहित दोष तथा भारतीयों की उपेक्षा ने असंतोष को और भड़काया।

सेना में भारतीयों की स्थिति बहुत खराब थी। वेतन तथा पदों के सम्बन्ध में भारतीयों को अंग्रेजों के बहुत नीचे रखा जाता था। अंग्रेज अधिकारी सामान्य गलतियों पर भी भारतीय सैनिकों को कठोर दण्ड देते थे। 1857 में चर्बी युक्त कारतूसों के प्रयोग के आदेश ने सैनिक-असंतोष की अग्नि में पूर्णाहुति डाल दी और प्लासी युद्ध के पश्चात् 100 वर्षों तक एकत्र हुए कारणों से विस्फोट हो गया, जिसे इतिहास में प्रथम स्वाधीनता संग्राम कहा गया और जिसका आरम्भ बैरकपुर की सैनिक छावनी में एक घटना से हुआ। 29 मार्च 1857 को मंगल पाण्डे नामक भारतीय सैनिक ने चर्बीयुक्त कारतूसों के प्रयोग के विरोध में परेड के समय अंग्रेज अधिकारी की हत्या कर दी। मंगल पाण्डे पर मुकदमा चला और अन्ततः उसे फाँसी दे दी गई। मंगल पाण्डे के बलिदान की खबर से देशभर में सैनिक छावनियों में असंतोष चरम सीमा पर पहुँच गया। मेरठ छावनी में सैनिकों ने विद्रोह कर दिया। चर्बीयुक्त कारतूसों का प्रयोग करने से मना करने पर सैनिकों को निःशस्त्र कर बन्दी बना लिया गया। 10 मई को सैनिकों ने खुली बगावत करके और अपने साथियों को कारागार से मुक्त कराकर दिल्ली की ओर प्रस्थान किया। सैनिकों ने लालकिले सहित महत्त्वपूर्ण स्थानों पर कब्जा कर लिया और विद्रोह का नेतृत्व करने के लिए बहादुरशाह जफर को सहमत कर लिया।

11 मई से 31 मई 1857 तक दिल्ली, फिरोजपुर, इटावा, बुलन्दशहर, मुरादाबाद, जून में ग्वालियर, झाँसी, इलाहाबाद, फैजाबाद, लखनऊ, राजस्थान तथा मध्य भारत एवं जुलाई में इन्दौर, महू, सागर और पंजाब में विद्रोह फैल गया। अबध में बेगम हजरत महल, कानपुर में नाना साहब, इलाहाबाद में मौलवी लियाकत अली, जगदीशपुर में कुँअर अली तथा झाँसी में लक्ष्मीबाई ने विद्रोह का नेतृत्व किया। सितम्बर 1857 तक अंग्रेजों ने दिल्ली पर पुनः अधिकार कर लिया और बहादुरशाह को देश से निर्वासित करके बर्मा भेज दिया। 19 जनवरी 1858 को बहादुर शाह जफर के सहयोगी लाला हुकुमचंद जैन, उनके तेरह वर्षीय भतीजे फकीर चंद और मिर्जा मुनीर बेग को फाँसी पर लटका दिया गया। 6 दिसम्बर तक कानपुर पर भी अंग्रेजों का फिर से कब्जा हो गया। बेगम हजरत महल तथा नाना साहब अंग्रेजों की पकड़ में नहीं आये और नेपाल की ओर जाकर भूमिगत हो गये। झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई अंग्रेजों से लड़ते हुए 18 जून 1858 को वीरगति को प्राप्त हुईं। लक्ष्मीबाई के बलिदान के चार दिन बाद ही 22 जून 1858 को ग्वालियर के सिंधिया राजा के खजांची अमरचंद बांठिया को लक्ष्मीबाई की सहायता करने के आरोप में फांसी पर चढ़ा दिया गया। तात्या टोपे को विश्वासघात करके पकड़ लिया गया और 18 अप्रैल 1859 को फाँसी पर लटका दिया गया।

धीरे-धीरे एकता, संगठन, नीति और दृढ़ता के बल पर अंग्रेजों ने इस प्रथम स्वतंत्रता संग्राम को दबा दिया। उल्लेखनीय है कि विद्रोह के समय भारतीय सेना अंग्रेजों से सात गुनी अधिक थी। विद्रोहियों के साथ नागरिकों की सहानुभूति, दिल्ली पर विद्रोहियों का अधिकार तथा यातायात के साधन भंग होने के बाद भी विद्रोह दबाने में अंग्रेजों की सफलता आश्चर्यजनक थी।

इस संग्राम ने जहां भारत में नवजागरण युग का सूत्रपात किया और भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन की ऐसी सुदृढ़ नींव रखी जिस पर आज के भारत की भव्य अट्टालिका खड़ी हुई है। वहीं दूसरी ओर अंग्रेज सरकार ने भी सतर्क होकर वास्तविकता और उग्र भारतीय मानसिकता को पहचाना, जिसके परिणाम स्वरूप इंग्लैंड की संसद ने एक कानून पासकर भारत का शासन अपने हाथ में ले लिया। इसके तहत अब शासन व्यवस्था कम्पनी के हाथ से सीधे इंग्लैंड की महारानी के पास पहुँच गई। भारत के गवर्नर जनरल के स्थान पर वाइसराय के पद की घोषणा की गई।

इस घोषणा के बाद भारत का नेतृत्व 'भारत-सचिव' के पास पहुंच गया, जिसके सहयोग हेतु एक भारत परिषद् बनाई गई। भारत-सचिव का मुख्यालय लन्दन में था, जो सिर्फ ब्रिटिश पार्लियामेन्ट के प्रति उत्तरदायी था, किन्तु इसका समस्त खर्च भारत की जनता उठाती थी। इसका प्रतिनिधि वाइसराय था, जो ब्रिटिश संसद द्वारा निर्धारित नीतियों के तहत भारत का शासन चलाता था।

उक्त घोषणा के अधीन भारत का शासन दो धाराओं में बंट गया। एक धारा सीधी ब्रिटिश साम्राज्य के नियंत्रण की थी एवं दूसरी धारा 562 रजवाड़ों की थी, जिनके ब्रिटिश राजा के साथ संधिगत सम्बन्ध थे। इनमें कुछ रजवाड़े तो बहुत छोटे (लगभग 1 वर्ग कि0मी0 एवं आबादी लगभग 100) एवं हैदराबाद जैसे, कुछ बहुत बड़े थे जिनका क्षेत्रफल ब्रिटेन से अधिक था।

आम जनता की बात शासन के समक्ष रखने के सदैव प्रयत्न होते रहे। 1851 में कलकत्ता में 'ब्रिटिश इंडियन एसोसिएशन' की स्थापना की गई। इसी तरह 1852 में 'बम्बई प्रेसीडेंसी एसोसिएशन', 1852 में ही 'मद्रास नेटिव एसोसिएशन' सन 1867 में 'पूजा सार्वजनिक सभा', 1876 में 'इण्डियन एसोसिएशन' और 1881 में मद्रास में 'महाजन सभा' की स्थापना की गई। शासन के सामने जनता का पक्ष प्रस्तुत करने के लिए अखिल भारतीय स्तर की संस्था की आवश्यकता महसूस होने लगी। इसको कार्यरूप में परिवर्तित करने का काम एक अवकाश प्राप्त ब्रिटिश अफसर 'एलेन ओक्टेवियन ह्यूम' ने किया, जिसने देशभर के चोटी के नेताओं से सम्पर्क किया और उन्हें एक मंच पर लाकर 1885 में 'भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस' की स्थापना की। स्थापना अधिवेशन गोकुलदास तेजपाल संस्कृत कॉलेज, बम्बई में दिनांक 28 से 30 दिसम्बर 1885 को हुआ, इसमें देश के 72 प्रतिनिधियों ने भाग लिया। भाग लेने वालों में से कुछ थे। उमेश चन्द्र बनर्जी, दादाभाई नौरोजी, काशीनाथ त्रयंवक तैलंग, फिरोजशाह मेहता, एस0 सुब्रह्मण्यम् अय्यर, पी0 आनंद चार्लू, दीनशा एदलजी वाचा, गोपाल गणेश आकरकर, जी0 सुब्रह्मण्यम् अय्यर, एम0 वीर राघवाचार्य, एन0जी0चंद्रावरकर, रहमतुल्ला, एम0सयानी आदि और सरकारी अधिकारी विलियम वैडरबर्न और महादेव गोविन्द रानाडे। श्री सुरेन्द्र नाथ बनर्जी, जो उस समय के चर्चित नेता थे, इस सम्मेलन में भाग नहीं ले सके, क्योंकि उसी समय उन्होंने कलकत्ता में एक राष्ट्रीय सम्मेलन बुलाया था।

अंग्रेजों के 'दमन', 'फूट डालो एवं राज करो' की नीति के कारण जन-मानस का नैतिक बल गिरना प्रारम्भ हो गया था। जनमानस की मानसिकता देशहित में बनी रहे, इस भावना से देशभक्तों ने सामाजिक एवं धार्मिक आयोजनों को देशभक्ति का प्रचार माध्यम बनाया। ये स्वत: ही अंग्रेजों से मुक्ति पाने का माध्यम बन गए।

1886 के बाद भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में हर क्षण राष्ट्रीय कांग्रेस का योगदान बढ़ता गया। 1886 में कांग्रेस का दूसरा अधिवेशन कलकत्ता में हुआ। अधिवेशन की अध्यक्षता दादाभाई नौरोजी ने की। देश के करीब 450 प्रतिनिधियों ने इसमें भाग लिया। इस अधिवेशन में यह बात जोर देकर कही गई कि 'भारत का दारिद्र्य अंग्रेजों द्वारा भारत का शोषण एवं भारत के धन को इंग्लैण्ड ले जाने का परिणाम है।'

कांग्रेस के प्रारम्भिक 20 वर्ष 1885-1905 'नरम दौर' के वर्ष माने जाते हैं। इस दौरान इस मंच से प्रशासन में भारतीयों को अधिकाधिक अधिकार देने, विधानसभाओं में निर्वाचित प्रतिनिधियों की संख्या बढ़ाने, भारतीयों की उच्च सरकारी पदों पर भर्ती, सिविल सर्विस परीक्षायें भारत में ही आयोजित कराने, सेना पर होने वाले भारी खर्च का विरोध, भारतीय धन को विदेश ले जाने का विरोध, भाषण एवं बोलने की आजादी, लोक कल्याण की योजनाओं का विस्तार एवं शिक्षा-प्रसार आदि की चर्चा एवं मांग की गई।

प्रारम्भ में कांग्रेस में अंग्रेज अफसर भी भाग लेते थे। जार्ज यूले (1888) सर विलियम वेडरबर्न (1889), एल्फ्रेड (1894), सर हेनरी काटन (1904) तो कांग्रेस के अध्यक्ष भी रहे। किन्तु अंग्रेजों को इस संस्था के कार्यक्रमों में अंग्रेज-विरोध नजर आने लगा, फलत: उन्होंने किसी भी अधिकारी को इस संस्था से जुड़ने (प्रत्यक्ष/अप्रत्यक्ष) पर रोक लगा दी। इसे राजद्रोही संगठन करार दिया गया। इसे अल्पसंख्यकों का एक संगठन बताया गया। यह भी कहा गया कि 'यह भारत की जनता का न तो प्रतिनिधित्व करता है और न उसके हित की बात करता है, फलत: आम आदमी को इससे दूर रहना चाहिए।' राष्ट्रीय कांग्रेस की समुद्रपारीय इकाई ब्रिटेन में भी समर्थन पाने में समर्थ हुई। ब्रिटिश पार्लियामेंट में भी भारत में सुधार लागू करने के प्रयास सदस्यों द्वारा किये गये किन्तु बहुमत के बल से वह असफल रहे।

उन्नीसवीं सदी के अन्त में भारत की जनता को भारी कष्ट झेलना पड़े। देश का बड़ा भाग अकाल के गाल में आ गया, लाखों लोग इससे प्रभावित हुये, कई लाख लोग मर गये, गरीबी सबसे प्रमुख सवाल बन गया, लोगों को लगा कि इस सबके लिये ब्रिटिश शासन एवं उसकी नीतियां जिम्मेदार हैं, इससे सार्वजनिक मंचों पर शासन की तीखी आलोचना प्रारम्भ हुई, राष्ट्रीय आन्दोलन में एक नई विचारधारा का जन्म हुआ। कांग्रेस की नीतियों की आलोचना 'राजनीतिक भिक्षावृत्ति' कहकर की गई। नवोदित नेताओं, जिनमें बालगंगाध र तिलक, लाला लाजपतराय एवं विपिन चन्द्र पाल प्रमुख थे, ने कहा -'सरकार से भलाई की आशा करने के बजाय जनता को अपने बल पर भरोसा करना होगा।' उन्होंने कहा कि- 'प्रशासन से सुधार की मांग करना पर्याप्त नहीं है, स्वराज्य अपरिहार्य है।' इसी तारतम्य में बालगंगाधर तिलक ने अपना प्रसिद्ध नारा 'स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है और मैं इसे लेकर रहूंगा'- दिया। इसी समय उनका समाचार पत्र 'केसरी' राष्ट्रीय पत्र के रूप में स्थापित हुआ। जन जागरण को निरन्तर जीवित रखने के लिए धार्मिक आयोजनों का उपयोग किया गया। महाराष्ट्र में घर-घर में मनाया जाने वाला 'गणेश महोत्सव' इसका आधार बना। स्वदेशी उद्योगों को प्रोत्साहन देने के निमित्त स्वदेशी वस्तुओं के उपयोग की बात प्रचारित की गई। विदेशी वस्तुओं का

विरोध किया गया। विदेशी कपड़ों की होली जलाई गई। विदेशी वस्तुओं को बेचने वाली दुकानों पर धरने आयोजित किये गये । देश की महिलाओं ने सामूहिक रूप से पहली बार राजनैतिक मामलों में सड़कों पर अपना अस्तित्व पूरी शक्ति से जताया एवं बड़ी सफलता प्राप्त की। 1905 के आते-आते राष्ट्रीय आन्दोलन जन-आन्दोलन बन गया। लाखों लोग उससे जुड़ गये और स्वतंत्रता प्राप्त करना उनका एक मात्र लक्ष्य बन गया।

1905 में गोपाल कृष्ण गोखले ने वाराणसी में कांग्रेस अधिवेशन की अध्यक्षता की, उन्होंने 'स्वदेशी और बहिष्कार' आन्दोलन का जोरदार समर्थन किया। इस आन्दोलन से जन चेतना बढ़ी। पहली बार देश की आर्थिक नीति की दिशा में विचार हुआ। इससे स्वदेशी उद्योगों की स्थापना में मदद मिली। स्वेदशी वस्तुएं बेचने वाली दुकानें स्थापित करना 'देशभक्ति का प्रतीक और ब्रिटेन के विरुद्ध संघर्ष का हिस्सा' बन गया। इसी तारतम्य में तमिलनाडु के राष्ट्रवादी नेता पी0ओ0 चिदंबरम् पिल्लई ने 'स्वदेशी स्टीम नेवीगेशन कम्पनी' की स्थापना की।

1906 में कलकत्ता में कांग्रेस का अधिवेशन हुआ। दादाभाई नौरोजी ने उसकी अध्यक्षता की। नरम और गरम दल का विचार-संघर्ष चरम सीमा पर था। इस अधिवेशन में यह बात उभर कर सामने आई कि अब कांग्रेस की रुचि प्रशासन के सुधार को आगे बढ़ाकर कनाडा और आस्ट्रेलिया जैसे स्वशासित उपनिवेशों की तरह की सरकार में है। ये देश ब्रिटेन के आधिपत्य में थे जबकि शासन जनता से चुने गये प्रतिनिधियों की सरकार के पास था।

जहाँ एक ओर प्रदर्शन और प्रस्तावों से स्वतंत्रता प्राप्ति की बात आगे बढ़ रही थी, वहीं देश में एक वर्ग ऐसा भी था जो ब्रिटिश शासन को बल के जरिए उखाड़ फेंकने में विश्वास करता था। उसके अधिकांश सदस्य नौजवान थे। अंग्रेजों की दमनकारी नीतियां उन्हें भड़काती थीं। ये संगठन महाराष्ट्र और बंगाल में अधिक सक्रिय रहे। महाराष्ट्र में इनका संगठन 'अभिनव भारत सोसायटी' एवं बंगाल में 'अनुशीलन समिति' के नाम से जाना जाता था। इन संगठनों ने बदनाम ब्रिटिश अफसरों, पुलिस अफसरों, मजिस्ट्रेटों, मुखबिरों, गवर्नरों तथा वायसरायों के विरुद्ध हिंसात्मक कार्यवाही की। क्रांतिकारी संगठन के सदस्य सदैव कम रहे किन्तु उन्हें जन मानस का श्रद्धायुक्त समर्थन मिलता रहा। जनता की निगाह में उनकी इज्जत मंच पर भाषण देने वालों से सदैव ही अधिक रही।

क्रांतिकारी संगठनों के खुदीराम बोस और प्रफुल्ल चाकी ने 1908 में मुजफ्फरपुर में एक घोड़ागाडी पर इस अनुमान से बम फेंके कि इसमें ब्रिटिश जज जा रहा है, वह जज आन्दोलन के कार्यकर्ताओं को कड़ी एवं लम्बी सजा देने के लिए प्रख्यात था। भाग्य उसके साथ था, वह गाड़ी में नहीं था, फलत: दो अंग्रेज महिलाओं, जो गाड़ी में सफर कर रही थीं, की मृत्यु हो गई। चाकी ने आत्महत्या कर ली एवं खुदीराम बोस को फाँसी दे दी गई। इस घटना के बाद क्रांतिकारियों की जोर-शोर से तलाश प्रारंभ हुई। कलकत्ता के मणितल्ला गार्डन (जिसका उपयोग क्रांतिकारी बम बनाने एवं हथियार प्रशिक्षण में करते थे) पर पुलिस ने छापा मारा, अनेक क्रांतिकारी पकड़े गये, जिनमें अरविंद घोष एवं वारीन्द्र कुमार घोष प्रमुख थे। कुछ को आजीवन कारावास हुआ एवं अरविन्द घोष ने राजनैतिक गतिविधियों से सन्यास ग्रहण कर पांडिचेरी में आश्रम की स्थापना की। क्रांतिकारियों ने ढाका के मजिस्ट्रेट तथा नासिक एवं तिन्नेवेली के कलेक्टरों को गोली से मार डाला। 1912 में वायसराय हार्डिंग की हत्या का प्रयत्न चांदनी चौक में उनके जलूस पर बम फेंक कर किया गया।

क्रांतिकारियों के संगठन भारत के बाहर लंदन, पेरिस, बर्लिन, उत्तरी अमेरिका में भी सक्रिय रहे थे। उन्होंने क्रांतिकारी विचारों को प्रचारित करने के लिए पत्र-पत्रिकाएं निकालीं एवं क्रांतिकारियों से सम्पर्क किया। इसमें संलग्न रहे। कुछ प्रमुख क्रांतिकारी हैं- श्याम जी वर्मा, मैडम कामा, मदाम भिकाजी बरकत उल्लाह, बी0बी0एस0 आयंगार, लाला हरदयाल, रास बिहारी बोस, सोहनसिंह भकना, विनायक दामोदर सावरकर, उनैतुल्ला सिंधी एवं मानवेन्द्र नाथ राय एवं मदन लाल धींगड़ा आदि।

1907 में 1857 के संघर्ष का 50वाँ वर्ष पड़ता था। केन्द्रीय शासन इस बारे में आवश्यकता से अधिक सावधान रहा था। उसे भय था कि इस समय देश में पुन: देशव्यापी दूसरा व्यापक विद्रोह भड़क सकता है। शासन कांग्रेस के 'नरम विचार धारा' के लोगों से आश्वस्त था, किन्तु गरम दल के सभी नेताओं को उनके कार्यक्षेत्र से अलग कर दिया गया। बाल गंगाधर तिलक एवं लाला लाजपतराय को गिरफ्तार कर बर्मा भेज दिया गया। विपिन चन्द्र पाल को भी गिरफ्तार कर जेल में डाल दिया गया। इन सब के बाबजूद भी देश में अनेक जगह प्रदर्शन हुए, पुलिस को उन्हें शान्त करने के लिए बल प्रयोग करना पड़ा। तिन्नेवेली (तमिलनाडु) में एक सभा पर राजाज्ञा का विरोध करने के लिए पुलिस ने गोली चलाई। चार लोग घटना स्थल पर ही शहीद हो गये।

प्रथम विश्वयुद्ध (1914-1918) के दौरान क्रांतिकारी दलों ने सशस्त्र विद्रोह से ब्रिटिश सरकार को उखाड़ फेंकने के लिए भारत में भारी मात्रा में चोरी छिपे हथियार लाने का प्रयत्न किया। बाधा जतीन, जो विदेशों से प्राप्त हथियारों से सत्ता को उखाड़ने का प्रयास कर रहे थे, उन्हें मार दिया गया। इन सबकी भनक सरकार को पूर्व में ही लग गई थी। बहुत से पकड़े गये, अनेकों को आजीवन कारावास एवं अनेकों को फाँसी की सजा दी गई। जिन्हें फाँसी हुई, उनमें 19 वर्ष का करतार सिंह सरांगा भी था। काबुल में क्रांतिकारी दल ने स्वतंत्र भारत की अन्तरिम सरकार स्थापित की। इसके राष्ट्रपति राजा महेन्द्र प्रताप सिंह एवं प्रधानमंत्री बरकत उल्लाह बने। यद्यपि क्रान्तिकारियों की गतिविधियां किसी बड़ी सफलता को प्राप्त करने में असफल रहीं, किन्तु उनकी निर्भयता से भारत की जनता को बल मिला।

1914 में यूरोप के साम्राज्यवादी देशों के दो विरोधी गुटों के बीच शत्रुता के कारण प्रथम विश्वयुद्ध प्रारम्भ हुआ जो 1918 तक चला। ब्रिटेन ने इस युद्ध में भारतीय सिपाहियों एवं साधनों का पूरा उपयोग अपने हित में किया, यद्यपि भारत का कोई हित इससे संबंधित नहीं था।

सरकार ने 1905 में बंगाल का विभाजन किया। उसका एक उद्‌देश्य हिन्दू और मुसलमानों में फूट डालना था। वह अपने इस उद्‌देश्य में सफल भी हुई, जिसका परिणाम था मुस्लिम लीग की स्थापना। इस संस्था का जन्म 1906 में मुसलमानों के एक सम्प्रदाय के प्रमुख आगा खां एवं ढाका के नबाब सलीमुल्ला के प्रयास से हुआ। इस संस्था को सदैव अंग्रेजों की शह मिलती रही। आगे चलकर यही भारत के बंटवारे का कारण बनी।

1917 में भारत मंत्री एडविन मान्टेग्यू ने ब्रिटिश पार्लियामेंट में भारत में 'उत्तरदायी सरकार' स्थापित करने के उद्‌देश्य से धीरे-धीरे 'स्वशासित संस्थाओं' की स्थापना की बात कही। इससे प्रभावित होकर भारतीय नेताओं ने ब्रिटेन के युद्ध-प्रयासों में मदद की। ब्रिटेन की यह घोषणा जल्दी ही झूठी साबित हो गई, जब 1918 में 'मान्टेग्यू चेम्सफोर्ड रिपोर्ट' प्रकाशित हुई, जिसमें यह कहा गया कि 'भारतीय जनता उत्तरदायी शासन चलाने

में समर्थ नहीं है।' इस रिपोर्ट में प्रारम्भ किये जाने वाले सुधारों की भी चर्चा थी। इन सुधारों पर विचार करने के लिए बम्बई में कांग्रेस का विशेष अधिवेशन बुलाया गया, जिसकी अध्यक्षता सैयद हसन इमाम ने की। इस अधिवेशन में सुधारों को घोर निराशाजनक बताया गया।

1915 में भारत के राजनैतिक वातावरण में एक नये व्यक्तित्व का प्रवेश हुआ, जिसने आततायियों से लड़ने का एक अहिंसक तरीका ईजाद किया था, जिसे 'सत्याग्रह' कहा गया एवं जिसका अफ्रीका में सफल प्रयोग हो चुका था। यह नया व्यक्तित्व था मोहनदास करमचन्द गाँधी। गाँधी जी अपने 'सत्याग्रह' का झंडा अफ्रीका में गाड़ चुके थे। भारत आकर उन्होंने आरंभिक संघर्ष चंपारण (बिहार) से प्रारंभ किया। वह वहां किसानों को अत्याचार से मुक्त कराने हेतु गये थे। 1917 में सरकार ने उन्हें चंपारण छोड़कर जाने का आदेश दिया, पर उन्होंने नहीं माना। अन्ततः सरकार ने अत्याचारों की जांच की एवं उनका निराकरण किया। यह गाँधी जी की भारत में पहली राजनैतिक सफलता थी। इस सफलता के बाद लगभग सारा राजनैतिक परिवेश धीरे-धीरे उनके चारों ओर इकट्ठा होने लगा एवं वह केन्द्र बिन्दु बन गये।

गाँधी जी ने आन्दोलन को नई दिशा देने एवं उसे जन-जन से सम्बन्धित करने के लिये अस्पृश्यता की अमानवीय प्रथा को समाप्त करने का बीड़ा उठाया। उच्च जातियों द्वारा 'अछूत' समझे जाने वाले लाखों लोगों का जीवन उठाने, उन्हें सामाजिक मान्यता प्रदान करने के कार्य में वह जुट गये। उन्होंने अपने पत्र का नाम भी 'हरिजन' रखा। उन्होंने अपने आश्रम में अपने अनुयायियों को वह सब कार्य करने की प्रेरणा दी जो उच्च जाति के लोग नहीं करते थे, जिसमें अन्य कार्यों के साथ शौचालय साफ करने का काम भी था।

सार्वजनिक जीवन में जुड़ने के पूर्व गांधी जी ने देश के प्रत्येक हिस्से का सघन दौरा किया, उन्होंने पाया कि गांव नितान्त दयनीय स्थिति में हैं। वहां श्रम का मूल्य ही नहीं है। उनके पास काम भी नहीं है। हर हाथ को काम देने के लिए उन्होंने खादी का प्रचार किया। गांधी जी ने प्रत्येक कांग्रेसी एवं राष्ट्रभक्त को खादी पहनने की प्रेरणा दी। आगे चलकर खादी, आन्दोलन का आवश्यक अंग बन गई। गांधी जी ने चरखे को भी इतना प्रोत्साहन दिया कि आगे चलकर वह झंडे का 'केन्द्र-चिह्न' बन गया। खादी के प्रचार से गांवों की माली हालत बदली, साथ ही स्वतन्त्रता आन्दोलन/ स्वदेशी भावना गांव-गांव तक पहुंच गयी। इससे स्वाधीनता आन्दोलन को व्यापकता एवं जन-जन से जुड़ाव प्राप्त हुआ।

1919 में मान्टेग्यू चेम्सफोर्ड के सुधारों के अन्तर्गत विधान मण्डलों का निर्माण किया गया किन्तु उसके अधिकार न के बराबर रहे। इसी समय 'रोलेक्ट एक्ट' बना, जिसके अनुसार बिना किसी मुकदमे के किसी भी व्यक्ति को जेल में डालने का अधिकार शासन के पास सुरक्षित था। इसका भी तीव्र देशव्यापी विरोध हुआ। कई नेताओं एवं विधान परिषद् के सदस्यों ने इस्तीफे दिये। मुहम्मद अली जिन्ना (बाद में पाकिस्तान के संस्थापक) ने अपने इस्तीफे में कहा 'जो सरकार शांतिकाल में ऐसे कानून को स्वीकार करती है वह अपने को सभ्य सरकार कहलाने का हक खो देती है।' इस कानून के विरोध में 6 अप्रैल 1919 को 'राष्ट्रीय अपमान दिवस' मनाया गया। सारे देश में व्यापक रूप से प्रदर्शन एवं हडतालें आयोजित की गईं।

10 अप्रैल 1919 को दो राष्ट्रवादी नेता श्री सत्यपाल और डॉ0 सैफुद्दीन किचलू गिरफ्तार कर लिये गये। 13 अप्रैल 1919 को इनकी गिरफ्तारी के विरोध में अमृतसर के पास एक छोटे से पार्क, 'जलियांवाला

बाग' में एक सभा का आयोजन किया गया। इस सभा में भारी संख्या में स्त्री, पुरुष एवं बच्चे उपस्थित थे। सभा चल ही रही थी कि उसी समय जनरल डायर अपने सैनिकों को लेकर सभा स्थल पर पहुंचा एवं बिना किसी सूचना के सभा पर गोलियां चलाने का आदेश दे दिया। गोलियां 10 मिनट तक तब तक चलती रहीं जब तक सैनिकों की गोलियां समाप्त नहीं हो गईं। इसके बाद सैनिक वहां से ऐसे चले गये जैसे कुछ हुआ ही नहीं। 10 मिनट के इस हादसे में एक हजार से अधिक स्वाधीनता प्रेमी मारे गये एवं दो हजार से अधिक घायल हुये। इसी बाग में एक कोने में एक कुआँ है। आदमी अपनी जान बचाने उसमें कूदते गये इस प्रकार वह कुआँ मनुष्यों की जीवित समाधि बन गया। बाग की दीवारों पर गोलियों के निशान आज भी मौजूद हैं। इस काण्ड की जाँच-समिति के सामने डायर ने बड़ी बेहूदगी से कहा था कि 'उसने यह सब जनता को सबक सिखाने के लिये किया है यदि सभा चालू रहती तो वह सबकी हत्या कर देता।'

जलियांवाला काण्ड की तीखी प्रतिक्रिया पूरे देश में हुई। सरकार का दमन-चक्र बढ़ता गया। पंजाब में सड़क पर लोगों को रेंगने के लिये मजबूर किया गया। सार्वजनिक स्थान पर कोड़े लगाये गये, अखबार बन्द कर दिये गये, संपादकों को गिरफ्तार कर लिया गया। नोबल पुरस्कार विजेता 'रवीन्द्रनाथ ठाकुर' ने, जिन्हें ब्रिटिश सरकार ने 'सर' की उपाधि से विभूषित किया था, वाइसराय को पत्र लिखकर सर की उपाधि वापस कर दी।

अगस्त 1919 में कांग्रेस का अधिवेशन अमृतसर में हुआ। अमृतसर में ही जलियांवाला बाग है। अधिवेशन की अध्यक्षता मोतीलाल नेहरू ने की। पहली बार अधिवेशन में भारी संख्या में किसानों ने भाग लिया। 1920 में नागपुर अधिवेशन में गाँधी जी की प्रेरणा से 15000 प्रतिनिधियों की उपस्थिति में कांग्रेस के संविधान में संशोधन किया गया। अब संविधान की प्रथम धारा हुई, 'सभी न्यायोचित और शांतिमय साधनों से भारतीय जनता द्वारा स्वराज प्राप्त करना।' जनता के आन्दोलन को एक नया शब्द 'असहयोग आन्दोलन' दिया गया। यह नाम आन्दोलन के तरीके के कारण ही दिया गया था। इस आन्दोलन का जनमानस पर प्रारंभिक प्रभाव यह पड़ा कि जहां पहले लोग ब्रिटिश पदवियाँ प्राप्त करना अपना गौरव समझते थे वहां अब ये पदवियां वापिस की जाने लगीं। गांधी जी ने 'कैसरे हिन्द' पदक लौटा दिया। सुब्रह्मण्यम् अय्यर ने 'सर' की उपाधि वापिस कर दी। रवीन्द्रनाथ ठाकुर पहले ही इसे वापिस कर चुके थे। विधान परिषदों के चुनाव में अधिकांश लोगों ने वोट नहीं डाले। हजारों विद्यार्थियों और अध्यापकों ने स्कूल, कॉलेज छोड़ दिये। राष्ट्रवादियों द्वारा अपनी संस्थायें प्रारम्भ की गईं। दिल्ली में जामिया मिलिया और वाराणसी में काशी विद्यापीठ की स्थापना हुई। वर्तमान में दोनों विश्वविद्यालय हैं।

यह आन्दोलन काफी सफल रहा। 1921 के समाप्त होने तक 50 हजार से अधिक लोग जेलों में बंद हो गये थे, इनमें अधिकांश देश के नेता थे। किन्तु प्रणेता जेल के बाहर थे। इसी समय केरल में किसानों ने अपना आन्दोलन इतना व्यापक किया कि उसे सरकार ने विद्रोह के रूप में माना। 'मोपला विद्रोह' के नाम से विख्यात इस विद्रोह को सेना की मदद से बर्बरता पूर्वक दबाया गया। 2000 से अधिक लोग मारे गये। करीब 45000 गिरफ्तार किये गये। अमानवीयता इस हद तक थी कि जब कैदियों को रेल के बैगन से एक जगह से दूसरी जगह ले जाया जा रहा था तो इतने अधिक कैदी बैगन में ठूंस दिये गये कि 67 मोपलाओं की दम

घुटने से ही मृत्यु हो गई। इस विद्रोह में मोपलों ने भी भयंकर हिंसा की थी। उन्होंने न केवल अंग्रेजों को मारा था, अपितु हजारों हिन्दू स्वदेशवासियों को भी मौत के घाट उतार दिया था।

फरवरी 1922 में उत्तर प्रदेश के 'चौरा-चौरी' स्थान में लोग एक प्रदर्शन में भाग ले रहे थे। छेड़खानी की कोई वारदात न होने पर भी पुलिस ने गोली चला दी। गुस्से में आकर लोगों ने पुलिस स्टेशन को घेर लिया, जहाँ भीड़ के दबाव के कारण गोली चलाने वाले पुलिसकर्मी अपनी सुरक्षा हेतु पहुंच गये थे, उन्होंने प्रवेश दरवाजे को, जो लकड़ी का था, भीतर से बंद कर लिया था। भीड़ ने पुलिस स्टेशन में आग लगा दी, फलत: 22 व्यक्ति अन्दर ही जलकर मर गये।

इस हिंसक काण्ड के कारण गांधीजी ने अपना आन्दोलन वापिस ले लिया। गांधीजी के इस निर्णय की व्यापक आलोचना हुई। विश्व इतिहास का यह पहला उदाहरण था कि आन्दोलन उस समय वापिस लिया गया जब वह अपनी चरम सीमा पर था। किन्तु बाद में यह सिद्ध हुआ कि गांधीजी का यह निर्णय उनके अद्वितीय नैतिक साहस और जनमानस में उनके गहरे प्रभाव को सिद्ध करने में समर्थ हुआ। सरकार ने इसका लाभ उठाकर मार्च 1922 में गांधीजी को गिरफ्तार कर लिया। उन्हें छह साल की सजा सुनाई गई।

असहयोग आन्दोलन करीब 2 वर्ष तक देश को आंदोलित करता रहा। इस आन्दोलन से राष्ट्रीय आन्दोलन शहरों की सीमा को लांघकर गांव-गांव तक पहुंचा। हर वर्ग के लोग इसमें शामिल हो गये। एक नया नारा जो इस आन्दोलन में व्यापक रूप से लोकप्रिय हुआ, वह था -'हिन्दू- मुसलमान की जय', यह नारा अंग्रेजों की पृथकता की नीति का सार्वजनिक जवाब था।

आन्दोलन के वापिस लेने के बाद विधान परिषदों के संदर्भ में दो धारणायें उपजीं। एक थी उनसे अपने को हटाना एवं दूसरी थी विधान परिषदों में जाकर सरकार का प्रबल विरोध और सरकार द्वारा कानून न बना पाने की स्थिति निर्मित करना। दूसरी धारणा के लोगों ने अपना लक्ष्य प्राप्त भी किया। उन्होंने ब्रिटिश शासकों द्वारा प्रस्तुत उनकी नीतियों तथा प्रस्तावों के संबंध में परिषद् की सम्मति प्राप्त करना लगभग असंभव कर दिया।

फरवरी 1924 में गांधी जी जेल से छूटे। उन्होंने खादी का प्रचार, हिन्दू-मुस्लिम एकता मजबूत करना, अस्पृश्यता को दूर करना आदि कार्यक्रम प्रारम्भ किये। उन्होंने प्रत्येक कांग्रेसी को प्रतिमाह 2000 गज सूत कातने पर बल दिया। खादी का विकास ग्रामोत्थान कार्यक्रम के साथ जग-जागरण एवं आर्थिक स्वतंत्रता का मूलाधार बना। इससे सुदूर ग्रामीण क्षेत्रों में भी स्वतंत्रता आन्दोलन का सन्देश पहुंचना प्रारम्भ हो गया।

असहयोग आन्दोलन को वापिस लिये जाने से युवा वर्ग में आक्रोश का भाव उत्पन्न होना स्वाभाविक ही था। सचिन सान्याल, जोगेश चटर्जी जैसे लोगों ने मिलकर 'हिन्दुस्तान रिपब्लिक एसोसिऐशन' नामक संस्था की स्थापना की। इसका पहला धमाका हरदोई से लखनऊ जा रही रेल को काकोरी में रोककर शासकीय खजाना लूटकर, पार्टी के लिये धन इकट्ठा करने के रूप में हुआ। उस समय रेल ब्रिटिश शासन की प्रतीक थी। उसमें ऐसी घटना से उसकी सत्ता की शक्तिहीनता का संकेत था। जैसा स्वभाविक था, घटना के बाद क्रान्तिकारियों की जोर-शोर से तलाश हुई, कई लोग गिरफ्तार हुए, 'काकोरी षड्यंत्र' के तहत उन पर मुकदमा चला। रामप्रसाद बिस्मिल, अशफाक उल्ला खां, रोशनसिंह और राजेन्द्र लाहिड़ी को मृत्युदंड दिया गया। एक चर्चित सदस्य चन्द्रशेखर आजाद पकड़े नहीं जा सके, उन्होंने दूसरे क्रान्तिकारियों से मिलकर नये संगठन की

नींव डाली। 1928 में स्थापित इस संगठन का नाम था 'हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिक आर्मी'। इसी संगठन के एक प्रमुख नेता थे, सरदार भगत सिंह।

1928 में सरदार वल्लभ भाई पटेल के नेतृत्व में करांची में कांग्रेस का अधिवेशन हुआ। इसमें कांग्रेस ने जनता से कर न देने को कहा। इस क्रम का सर्वाधिक प्रभावी आन्दोलन गुजरात में बारडोली में हुआ। किसानों ने कर न अदा करने की घोषणा की। फलतः सरकार कर वसूलने में असमर्थ रही।

30 अक्टूबर 1928 को पंजाब में साइमन कमीशन के बहिष्कार को लेकर आयोजित जुलूस का नेतृत्व कर रहे पंजाब केसरी लाला लाजपतराय को लाठी चार्ज के दौरान बेरहमी से पीटा गया, जिससे कुछ समय बाद उनकी मृत्यु हो गई। उस समय पुलिस दल का नेतृत्व ब्रिटिश अफसर 'साण्डर्स' कर रहा था। क्रान्तिकारियों ने उसे अमृतसर में गोली से उड़ा दिया।

जनता का मनोबल बढ़ाने के लिये एवं गूंगी सरकार के कान खोलने के लिए, सर्वाधिक सुरक्षित जगह केन्द्रीय विधानसभा में 8 अप्रैल 1928 को दो बम फेंके गये। बमों से किसी को मारने का कोई उद्देश्य नहीं था, फलतः खाली स्थान पर इन्हें फेंका गया। बम फेंकने वालों ने भागने की भी कोई कोशिश नहीं की। भगतसिंह और बटुकेश्वरदत्त को गिरफ्तार कर लिया गया। उनके इस प्रयास से पूरे देश में उनकी भारी प्रशंसा हुई। वे आख्यान पुरुष के रूप में स्थापित हुए। बम काण्ड के बाद जो मुकदमा चला उसमें भगतसिंह, राजगुरु एवं सुखदेव को फांसी हुई एवं अन्य सात को आजीवन कारावास हुआ। घटना के सूत्रधार आजाद अब भी शासन की पकड़ से बाहर थे। बाद में इलाहाबाद में अल्फ्रेड पार्क में उन्हें पुलिस ने घेर लिया। एक को घेरने सैकड़ों की संख्या में पुलिस थी। मुकाबला बहादुरी से हुआ। पुलिस कप्तान अपने कुछ अंग्रेज सहयोगियों के साथ घायल हो गया, आजाद भी शहीद हो गये। उस समय खौफ इतना था कि मरने के बाद भी कोई पास जाने को तब तक तैयार नहीं हुआ जब तक कि आजाद के मृत शरीर पर अनेक गोलियां नहीं चलाई गईं।

क्रान्तिकारियों के इतिहास में एक महत्त्वपूर्ण घटना 1930 में घटी। 18 अप्रैल 1930 को 'इण्डियन रिपब्लिक आर्मी' के क्रांतिकारियों ने सूर्यसेन के नेतृत्व में चटगांव के पुलिस शस्त्रागार पर कब्जा कर लिया। कुछ समय तक चटगांव ब्रिटिश शासन से मुक्त रहा। दिसम्बर 1930 में तीन क्रान्तिकारियों विनय बोस, बालद गुप्ता और दिनेश गुप्ता ने कलकत्ता की राइटर्स बिल्डिंग में प्रवेश कर ब्रिटिश पुलिस अधीक्षक की हत्या कर दी।

चटगांव विद्रोह के अधिकांश कार्यकर्ता घटना के बाद भाग निकले थे। उनमें से सूर्यसेन और तारकेश्वर को मृत्युदण्ड दिया गया। संगठन की दो महत्त्वपूर्ण युवा सदस्यायें भी थीं, इनमें प्रीतिलता बट्टेदार ने आत्म हत्या कर ली एवं कल्पना दत्त को आजीवन कारावास हुआ।

12 मार्च 1930 'दांडी मार्च' के कारण स्मरण किया जाता रहेगा, उस दिन महात्मा गांधी 79 स्वयंसेवकों के साथ नमक पर लगाये गये कर को वापिस लेने की मांग करते हुए, समुद्र किनारे जाकर नमक बनाने के उद्देश्य से, 'साबरमती आश्रम' (अहमदाबाद) से पैदल निकले, वह आगे बढ़ते गये एवं उनके पीछे कारवां बढ़ता गया। 6 अप्रैल 1930 को गांधी जी दांडी पहुँचे। वहाँ उन्होंने समुद्रतट से एक मुट्ठी नमक उठाकर 'कानून' तोड़ा। यह आन्दोलन देशव्यापी बना। लगभग एक लाख लोग इस आन्दोलन में गिरफ्तार किये

गये। 'दांडी मार्च' में महिलाओं का नेतृत्व सरलादेवी साराभाई ने किया था। मध्यप्रदेश में इसी समय 'जंगल सत्याग्रह' अपनी चरम सीमा पर था।

राष्ट्रीय आन्दोलन के दो चमकते सितारे पं0 जवाहर लाल नेहरू एवं सुभाष चन्द्र बोस ने आम जनता को यह समझाया कि उनकी समस्त परेशानियों का मूल कारण ब्रिटिश सत्ता है। नेहरू एवं सुभाष समाज के बिल्कुल अलग वर्गों से आये थे। नेहरू का पारिवारिक वातावरण उस समय के सम्पन्न लोगों से सम्बन्धित था जबकि सुभाष का सम्बन्ध सामान्य वर्ग से था।

सुभाषचंद्र बोस 1920 में 'इंडियन सिविल सर्विस' की प्रतिष्ठित परीक्षा में चौथा स्थान प्राप्त कर अपनी प्रतिभा का डंका बजा चुके थे। उस समय किसी पढ़े-लिखे व्यक्ति का इस परीक्षा में चुना जाना गौरव की बात मानी जाती थी, किन्तु नेताजी ने जलियांवाला बाग हत्याकाण्ड से दुखी होकर इस सेवा से इस्तीफा दे दिया।

परतंत्र भारत का यह एक मात्र उदाहरण था जब किसी व्यक्ति ने इस सेवा में चुने जाने के बाद उसे लात मार दी हो। उनके इस कार्य से वह राष्ट्रीय आन्दोलन से जुड़ते ही शीर्ष नेताओं के बीच पहुंच गये। उनका पूरा जीवन देदीप्यमान रहा। महात्मा गाँधी के विरोध के बाबजूद उन्होंने महात्मा गाँधी के समर्थन से खड़े प्रत्याशी पट्टाभिसीतारमैया के विरोध में कांग्रेस का चुनाव लड़ा एवं विजयी हुये। उनकी अध्यक्षता में सम्पन्न त्रिपुरी कांग्रेस का अधिवेशन कांग्रेस का चर्चित अधिवेशन रहा था। उनकी कार्यपद्धति एवं महात्मा गाँधी के कार्यक्रम में तादात्म्य नहीं बैठ सका, फलत: वह कांग्रेस से अलग हो गये। द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान उन्हें कलकत्ता में अपने निवास पर नजरबन्द कर दिया गया। इस नजरबन्दी से वह सफलता पूर्वक निकलकर देश के बाहर चले गये एवं ब्रिटिश विरोधी खेमे का नेतृत्व करने वाले जर्मनी के तानाशाह से बर्लिन में मिले।

ब्रिटिश साम्राज्य में 562 रियासतें थीं, इनके अधिकांश शासक अच्छे नहीं थे, प्रजा दु:खी थी, उन पर दोहरा नियंत्रण था। पड़ोस के प्रदेशों में जन चेतना का संचार देख उनमें भी जनतांत्रिक अधिकारों और जनतांत्रिक सरकार की मांग उठने लगी। वे राज्यों के शासकों के भोग-विलास की खुलकर निन्दा करने लगे। इन सबके लिये प्रजामण्डलों की स्थापना हुई। आरंभिक प्रजामण्डल विजय सिंह पथिक, माणिकलाल वर्मा के नेतृत्व में राजस्थान की रियासतों में स्थापित किये गये। रियासतों के इन सभी संगठनों का एक अखिल भारतीय संगठन 'आल इंडिया स्टेट्स पीपुल्स कांग्रेस' के रूप में 1927 में बना। भावनगर प्रजामण्डल के अध्यक्ष वल्लभ मेहता इसके सचिव बने। इस संगठन के माध्यम से मांग की गई कि भारतीय रियासतों को भारतीय राष्ट्र का अंग माना जाना चाहिये। चौथे दशक तक रियासतों में जन आन्दोलन काफी शक्तिशाली बन गया था। राजस्थान में जयनारायण व्यास, जमनालाल बजाज, उड़ीसा में सारंगधर दास, त्रावणकोर में एन्नी मस्करों तथा पद्मयथान पिल्लई, जम्मू-कश्मीर में शेख अब्दुल्ला, हैदराबाद में स्वामी दयानन्द तीर्थ आदि ने इस आन्दोलन का नेतृत्व किया। राजाओं द्वारा इनका दमन किया गया। पटियाला में आन्दोलन के नेता, प्रजामण्डल प्रमुख सेवासिंह ठिकीवाला को जेल में इतनी यातनाएं दी गईं कि वहीं उनकी मृत्यु हो गयी।

कांग्रेस ने प्रारम्भ में रियासतों के मामले में तटस्थता का रुख अख्तियार किया था, यद्यपि नेता रियासतों में जाते रहे तथा मांग का समर्थन भी करते रहे, किन्तु 1938 में सुभाषचंद्र बोस की अध्यक्षता में कांग्रेस अधिवेशन में यह घोषणा की गई कि पूर्ण स्वराज्य का लक्ष्य रियासतों सहित समूचे देश के लिए है। यह भी स्पष्ट किया गया कि रियासतें देश का हिस्सा हैं, उनकी जनता के हित और शेष देश की जनता के हित एक से हैं।

सितंबर 1939 में हिटलर ने पोलैंड की सेना को रौंदकर द्वितीय विश्वयुद्ध का सूत्रपात किया। इस युद्ध के कारण पूरा विश्व दो भागों में बंट गया। एक तरफ मित्र राष्ट्र फ्रांस, इंग्लैंड, अमेरिका एवं सोवियत संघ (रूस) थे, दूसरी तरफ धुरी राष्ट्रों में जर्मनी, इटली, एवं जापान थे। वस्तुत: इस युद्ध के एक तरफ तानाशाही शक्तियां थीं तो दूसरी तरफ लोकतांत्रिक। भारत का इस युद्ध से कुछ लेना-देना नहीं था, फिर भी ब्रिटेन का उपनिवेश होने के कारण ब्रिटेन ने भारत की जनता की सलाह लिये बिना ही उसे इस युद्ध में शामिल कर लिया। कांग्रेस ने मांग की कि तुरन्त राष्ट्रीय सरकार का गठन किया जाए एवं युद्ध समाप्त होते ही भारत को पूर्ण स्वतंत्र करने का वचन दिया जाये। ब्रिटेन ने यह मांग अस्वीकार कर दी। उस समय प्रान्तों में चुने हुए मंत्रिमंडल, जिनके पास एकदम सीमित अधिकार थे, अस्तित्व में थे। ब्रिटेन के निर्णय के विरोध में उन्होंने इस्तीफे दे दिये।

भारत को जबरन युद्ध में शामिल करने के विरुद्ध मार्च 1940 में देशव्यापी प्रदर्शन किये गये। कांग्रेस ने पूर्ण स्वतंत्रता की मांग की। अक्टूबर 1940 में कांग्रेस ने 'व्यक्तिगत सत्याग्रह' आन्दोलन प्रारम्भ किया, इस आन्दोलन का अर्थ था कि कांग्रेस द्वारा चुने गये सत्याग्रही एक-एक करके सार्वजनिक स्थानों पर पहुंचेंगे, युद्ध के खिलाफ भाषण देंगे, लोकमत तैयार करेंगे एवं गिरफ्तारी देंगे। इस आंदोलन के चुने हुए पहले सत्याग्रही विनोबा भावे थे। थोड़े ही समय में 25000 सत्याग्रही गिरफ्तार होकर जेल में बंद हो गये। इनमें कांग्रेस के अधिकांश प्रमुख नेता चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य (बाद में भारत के प्रथम गवर्नर जनरल), जी0बी0 गाडगिल, सरोजनी नायडू, जी0बी0मावलंकर, अरुणा आसफ अली आदि थे।

1942 के आरम्भ में युद्ध में ब्रिटेन का पलड़ा हल्का पड़ने पर उसकी सेनाओं को भारी क्षति उठानी पड़ी, फलत: उसने भारतीय नेताओं से बात करने के लिए सर स्टैफर्ड क्रिप्स को भेजा। यह मिशन असफल रहा क्योंकि वास्तव में ब्रिटेन राष्ट्रीय सरकार की स्थापना को तैयार ही नहीं था। उन्होंने (सर क्रिप्स ने) संविधान सभा की मांग तो स्वीकार की किन्तु साथ ही यह भी कहा कि राजाओं द्वारा नामजद व्यक्ति ही उसके प्रतिनिधि होंगे। जनता को संविधान सभा में प्रतिनिधित्व नहीं मिलेगा।

क्रिप्स मिशन की असफलता के साथ ही भारतीय जनता का 'तीसरा महान् संघर्ष' शुरू हुआ। इस संघर्ष को 'भारत छोड़ो आन्दोलन' के नाम से जाना जाता है। 8 अगस्त 1942 को भारतीय कांग्रेस कमेटी ने एक प्रस्ताव पास किया, जिसमें कहा गया था कि 'आजादी एवं जनतंत्र की विजय के लिए फासिस्ट देशों तथा जापान के विरुद्ध लड़ रहे मित्र राष्ट्रों के लिये यह जरूरी है कि भारत को जल्दी से स्वाधीनता मिल जाये।' प्रस्ताव में यह भी कहा गया था कि 'स्वतंत्र हो जाने पर भारत अपने सम्पूर्ण साधनों से उन देशों के साथ महायुद्ध में शामिल हो जायेगा, जो फासिज्म और साम्राज्यवादी आक्रमण के खिलाफ संघर्ष कर

रहे हैं।' इस प्रस्ताव के पास हो जाने पर गांधी जी ने अपने संक्षिप्त सारगर्भित भाषण में कहा था- 'मैं आपको एक संक्षिप्त मंत्र देता हूं। इसे हृदय में आप पक्का बिठा लीजिए और अपनी प्रत्येक सांस के साथ इसे व्यक्त होने दीजिए, मंत्र है- "करो या मरो" और "भारत छोड़ो।" इस प्रयास में हम या तो आजाद होंगे या मर जायेंगे।'

9 अगस्त के प्रातः कांग्रेस के अधिकांश नेता गिरफ्तार कर लिए गये। उन्हें देश के विभिन्न भागों में बन्द कर दिया गया। कांग्रेस पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया। देश के हर हिस्से में हड़तालें हुईं, प्रदर्शन हुये, गोलियां चलीं, लाठी चार्ज हुआ, अश्रुगैस छोड़ी गई, सारे देश में गिरफ्तारियां हुईं। लोगों ने सरकारी सम्पत्ति पर हमले किये, रेल पटरियां तोड़ी गईं और डाकतार व्यवस्था में रुकावटें पैदा की गईं। अनेक स्थानों पर जनता की पुलिस के साथ मुठभेड़ हुई। आन्दोलन के समाचार प्रकाशित करना प्रतिबंधित कर दिया गया, फिर भी गुप्त समाचार पत्र छपते और बंटते रहे। वर्ष के अन्त में लगभग 60000 स्वाधीनता सेनानी विभिन्न जेलों में बन्द कर दिये गये। सैकड़ों की मृत्यु हुई। मरने वालों में वृद्ध, बच्चे, महिलाएं सभी थे।

प्रदर्शन में भाग लेने के कारण 73 वर्षीय मातंगिनी हाजरा को तमलुक (बंगाल) में, 13 वर्ष की कनकलता बरुआ को गोहपुर (आसाम) में, 19 वर्षीय साबूलाल जैन को गढ़ाकोटा, सागर (म0प्र0) में, उदयचंद जैन को मण्डला (म0प्र) में गोली से उड़ा दिया गया। पटना में सात तरुण विद्यार्थियों एवं अन्य सैकड़ों की गोली लगने से मौत हुई। देश के कुछ भाग जैसे उत्तर प्रदेश में बलिया, बंगाल में तमलुक, महाराष्ट्र में सतारा, कर्नाटक में धारावाद, उड़ीसा में बालासौर तथा थलचर आदि ब्रिटिश शासन से मुक्त कर लिये गये और वहां जनता की समानान्तर सरकारें बनीं। पूरे महायुद्ध के दौरान जयप्रकाश नारायण, अरूणा आसफ अली, एम0एम0 जोशी, राम मनोहर लोहिया आदि अनेक नेताओं द्वारा क्रांतिकारी गतिविधियां जारी रहीं।

इसी दौरान बंगाल में भयंकर अकाल पड़ा। शासन ने कोई व्यवस्था नहीं की। जिस कारण लगभग 30 लाख लोग अकाल ही काल के गाल में समाहित हो गए। कहा जाता है कि यह अकाल संसार का सबसे बड़ा मानव कृत अकाल था। जहाँ एक ओर हजारों की तादाद में स्त्री, पुरुष और बच्चे भूख से तड़प-तड़प कर मर रहे थे, वहीं दूसरी ओर सरकारी गोदामों में अनाज सड़ रहा था। यह अकाल सरकार की दमन नीति का ही एक अंग था। विदेशी शासन के अभिशाप की इससे अधिक नृशंस मिसाल नहीं मिल सकती। कलकत्ता विश्वविद्यालय के एक अध्ययन के अनुसार 34 लाख व्यक्ति इस अकाल में भूख से मरे और लगभग 46 प्रतिशत आबादी को भंयकर बीमारियां हुईं।

दूसरे विश्वयुद्ध के प्रारम्भिक चरण में जापान को भारी सफलता मिली, सिंगापुर तक उसका अबाध कब्जा हो गया। हजारों ब्रिटिश सैनिकों को, जिनमें भारतीय सैनिक ही अधिक थे, आत्मसमर्पण करना पड़ा। इन सैनिकों की मदद से 'आजाद हिन्द फौज' की स्थापना, जनरल मोहन सिंह ने की। इसी बीच 1941 में नेताजी सुभाषचंद्र बोस जर्मनी से एक पनडुब्बी में यात्रा कर सिंगापुर पहुंचे। उस समय आजाद हिन्द फौज में 45000 सिपाही थे। 1943 में नेताजी ने सिंगापुर में स्वतंत्र भारत की अन्तरिम सरकार की घोषणा की। उनका यह ऐतिहासिक भाषण जापान के सहयोग से विश्वभर में प्रसारित किया गया। इसमें उन्होंने यह प्रसिद्ध नारा दिया- 'तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूंगा।'। इसके बाद सभी ने सुभाषचंद्र बोस को

'नेताजी' उपनाम से पुकारना प्रारम्भ कर दिया। 1944 में नेताजी अंडमान निकोबार गये। उन्होंने वहां राष्ट्रीय ध्वज फहराया। आजाद हिन्द फौज के कुछ दस्ते मणिपुर (इम्फाल) तक पहुंचे।

'आजाद हिन्द फौज' की सफलता आगे नहीं बढ़ सकी, क्योंकि अणुबमों के आक्रमण से जापान परास्त हो गया था और फौज को रसद मिलना बन्द हो गया था। साथ ही फौज के सैनिक भारी संख्या में या तो मार दिये गये या गिरफ्तार कर लिये गये। 'आजाद हिन्द फौज' की संरचना ने बिटिश सरकार पर यह मनोवैज्ञानिक दबाव डाला कि भारतीय सिपाहियों के शासन से विमुख हो जाने पर उसकी हालत दयनीय बन सकती है।

'आजाद हिन्द फौज' के गिरफ्तार अफसरों शाह नबाज खान, पी0के0सहगल, जी0एस0 ढिल्लो आदि पर लाल किले में मुकदमा चलाया गया। शासन के इस कार्य का देशव्यापी विरोध हुआ। फरवरी 1946 में इण्डियन नेवी के नाविकों ने अनेक स्थानों पर विद्रोह किया। नेवी कर्मचारियों ने भी उनका साथ दिया। नाविकों, उनके समर्थकों एवं पुलिस के बीच संघर्ष में बम्बई में लगभग 300 व्यक्ति मारे गये। स्थिति अत्यधिक विस्फोटक हो जाती यदि सरदार पटेल ने मध्यस्थता कर मामले को नहीं संभाला होता, क्योंकि युद्ध के विद्रोही नाविक, अपनी भारी दूरी तक मार करने वाली तोपों का उपयोग करने को तैयार थे और बम्बई शहर का बहुत बड़ा हिस्सा उनकी मार में था।

निरन्तर आन्दोलन एवं उसे प्राप्त भारी समर्थन के कारण ब्रिटिश गुप्तचर विभाग इस नतीजे पर पहुंचा कि यदि उचित समाधान शीघ्र नहीं हुआ तो यह आन्दोल्न हिंसक दौर में पहुंच सकता है और उस स्थिति में गोरी चमड़ी ही खतरे में पड़ सकती है। गांधी जी के बीमार होने से उन्हें आगाखां महल, जिसमें वह कैद थे एवं जहां 22 फरवरी 1944 को गांधी जी की पत्नी कस्तूरबा का देहान्त हो गया था, से छोड़ दिया गया। यह गांधी जी की अन्तिम जेल-यात्रा थी। उन्होंने अपने जीवन के लगभग 2388 दिन जेल में बिताए थे।

1945 में लार्ड वेवेल, जो उस समय भारत के गवर्नर जनरल थे, ने यह घोषणा की कि निकट भविष्य में भारत को 'स्वायत्त शासन' प्रदान करने के लिये शिमला में सम्बन्धित पक्षों का एक सम्मेलन बुलाया जायेगा। उस समय सभी नेता जेल में थे। सभी को छोड़ दिया गया। शिमला सम्मेलन विफल रहा। जुलाई 1945 में ब्रिटेन में चुनाव हुए, जिसमें सत्ता परिवर्तन हो गया। लेवर सरकार सत्ता में आई, उसने भारत की समस्या को गम्भीरता से हल करने पर विचार किया। भारत-सचिव ने घोषणा की 'भारत की स्वाधीनता पर विचार करने के लिए एक संसदीय आयोग शीघ्र ही भारत की यात्रा करेगा।' यह संसदीय प्रतिनिधि मण्डल बाद में 'केबीनेट मिशन' के रूप में जाना गया। मुस्लिम लीग अलग राज्य की मांग पर लगातार जोर दे रही थी। प्रतिनिधि मण्डल भारत आया, उसने अप्रत्यक्ष रूप से मुसलमानों को अलग राज्य देने की मांग मंजूर कर ली। अत: मुस्लिम लीग ने प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया किन्तु कांग्रेस ने अस्वीकार कर दिया।

'केबीनेट मिशन' की योजना के अनुसार जब कांग्रेस, लीग एवं सरकार में संविधान की बात चल रही थी, तब अचानक लीग ने अपनी रणनीति बदल दी। वह 'केबिनेट मिशन योजना' की स्वीकृति से मुकर गई और 16 अगस्त 1947 को 'सीधी कार्यवाही' दिवस मनाने की घोषणा कर दी। यह साम्प्रदायिक दंगों का निमंत्रण था। इसके साथ ही पूरे देश में दंगों का दौर प्रारम्भ हो गया।

मार्च 1947 में वेवेल के स्थान पर लार्ड माउण्टबेटन वाइसराय बनकर भारत आये थे। उन्होंने भारत-विभाजन घोषित कर दिया। जिन प्रान्तों में मुसलमानों का बहुमत था, उनको मिलाकर पाकिस्तान बना दिया गया। 14-15 अगस्त 1947 को मध्य रात्रि में भारत स्वतंत्र हो गया।

स्वतंत्रता के दिन जब पूरा देश सदियों की गुलामी से मुक्त होकर खुशियां मना रहा था तब शांति का मसीहा, अहिंसा का पुजारी, स्वतंत्रता आन्दोलन का सूत्रधार बंगाल में 'नोआखली' में दंगों के पीड़ितों के गहरे जख्मों पर मरहम पट्टी कर रहा था। बी0बी0सी0 के संवाददाता ने जब देश को सन्देश देने की बात गांधी जी से कही तो उन्होंने कहा- *'दुनियां से कह दो गांधी अंग्रेजी नहीं जानता।'*

❑❑❑

राष्ट्रगान में जैन

हमारे देश का राष्ट्रगान 'जनगणमन-अधिनायक जय हे' है। इसके रचयिता विश्वकवि रवीन्द्रनाथ टैगोर हैं। इसका सर्वप्रथम गायन 27 दिसम्बर 1911 को 'भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस' के अधिवेशन में हुआ था। स्वतंत्रता के पश्चात् 24 जनवरी 1950 को यह राष्ट्रगान के रूप में स्वीकृत हुआ। इस गान में पाँच खण्ड हैं, किन्तु पहला खण्ड ही राष्ट्रगान के रूप में स्वीकृत है। इसके दूसरे खण्ड में जैन शब्द भी आया है। सम्पूर्ण राष्ट्रगान इस प्रकार है-

जनगणमन-अधिनायक जय हे भारत-भाग्यविधाता।
पंजाब सिन्धु गुजरात मराठा द्राविड़ उत्कल बंग
विंध्य हिमाचल यमुना गंगा उच्छल जलधितरंग
तब शुभ नामे जागे, तव शुभ आशिष मागे,
गाहे तव जय गाथा।

जनगण-मंगलदायक जय हे भारत-भाग्यविधाता।
जय हे, जय हे, जय हे, जय जय जय, जय हे।।
अहरह तव आह्वान प्रचारित, शुनि तव उदार वाणी
हिंदु बौद्ध सिख **जैन** पारसिक मुसलमान ख्रिस्टानी
पूरब-पश्चिम आसे तव सिंहासन-पाशे
प्रेमहार हय गाथा।

जनगण-ऐक्य-विधायक जय हे भारत- भाग्यविधाता।
जय हे, जय हे, जय हे, जय जय जय, जय हे।।
पतन-अभ्युदय-बंधुर पन्था, युगयुगधावित यात्री,
हे चिरसारथि, तव रथचक्रे-मुखरित पथ दिन रात्रि
दारुण-विप्लव-माझे, तव शंखध्वनि बाजे,
संकटदु: खत्राता।

जनगण-पथपरिचायक जय हे भारत-भाग्यविधाता।
जय हे, जय हे, जय हे, जय जय जय, जय हे।।
घोर तिमिरघन निबिड़ निशीथे पीड़ित मूर्छित देशे
जाग्रत छिल तब अविचल मंगल नतनयने अनिमेषे।
दु:स्वप्ने आतंके रक्षा करिले अंके,
स्नेहमयी तुमि माता।

जनगण-दु:खत्रायक जय हे भारत-भाग्यविधाता।
जय हे,जय हे, जय हे, जय जय जय, जय हे।।
रात्रि प्रभातिल, उदिल रविच्छवि पूर्व-उदयगिरिभाले,
गाहे विहंगम, पुण्य समीरण नवजीवन रस ढाले।
तव करुणारुण-रागे निद्रित भारत जागे
तव चरणे नत माथा।

जय जय जय हे, जय राजेश्वर, भारत-भाग्यविधाता।
जय हे, जय हे, जय हे, जय जय जय, जय हे।।

आ0- Our National Songs, Publications Division, Government of India, Patiala House, New Delhi 110001, 2000

उपक्रम : तीन

भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन की कुछ महत्त्वपूर्ण घटनाएँ

1857	प्रथम स्वाधीनता संघर्ष। (इस संघर्ष के लिए 31 मई तारीख तय की गई थी, पर सेना द्वारा मेरठ में चरबी वाले कारतूसों को खोलने से मना करने आदि पर 10 मई को ही सशस्त्र विद्रोह प्रारम्भ हो गया।)
1958	(19 जनवरी) अमर शहीद लाला हुकुमचन्द जैन, मिर्जा मुनीर बेग व फकीरचन्द जैन को हांसी में फांसी।
1858	(18 जून) महारानी लक्ष्मीबाई का बलिदान।
1858	(22 जून) ग्वालियर के खजांची अमरचन्द बाँठिया को ग्वालियर के सराफा में नीम के पेड़ पर लटकाकर फांसी।
1885	भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की विधिवत् स्थापना (यद्यपि इसकी नींव 1883 में ही रखी जा चुकी थी।) दिसम्बर 1885 में बम्बई में इसका प्रथम अधिवेशन हुआ, जिसमें 72 प्रतिनिधि शामिल हुए।
1889	बम्बई कांग्रेस अधिवेशन में 'होमरूल बिल' या 'होमरूल स्कीम' पास।
1898-99	चाफेकर बन्धुओं (दामोदर हरि, वासुदेव हरि, बालकृष्ण हरि) को रेंड हत्या में फांसी।
1905	बंग-भंग आन्दोलन।
1906	मुस्लिम लीग की स्थापना।
1907	सूरत में सम्पन्न कांग्रेस के अधिवेशन में कांग्रेस, उदारवादी (नरम दल) तथा उग्रवादी (गरम दल) दलों में विभाजित।
1908	खुदीराम बोस (आयु 16 वर्ष) को फांसी की सजा।
1914-1918	प्रथम विश्वयुद्ध या महायुद्ध।
1915	अमर शहीद मोतीचन्द शाह को आरा के महन्त हत्याकाण्ड में फांसी की सजा।
1915	महात्मा गांधी दक्षिण अफ्रीका से वापिस आये। प्रथम महायुद्ध के बीच गांधी जी ने युद्ध-प्रयासों में अंग्रेजी सरकार की पूरी सहायता की, सरकार ने उन्हें 'केसरे हिन्द' स्वर्णपदक से विभूषित किया।
1919	रोलेक्ट एक्ट, जस्टिस्ट रोलर के सभापतित्व में बना। इस एक्ट के अन्तर्गत देश में आन्तरिक शान्ति बनाये रखने के बहाने अंग्रेज नौकरशाही जिसको चाहे, जब तक चाहे, बिना कोई मुकदमा आदि चलाये जेल में डाले रख सकती थी। सरकार की इस दमन नीति ने ही गांधी जी को राजभक्त से विद्रोही बना दिया।

1919 (13 अप्रैल) जलियां वाला बाग काण्ड (इस काण्ड में ब्रिगेडियर जनरल रेजिनाल्ड एडबर्ड हैरी डायर ने निहत्थी जनता पर तब तक गोली चलवाई जब तक सारा बारूद समाप्त नहीं हो गया)।

1920 लाला लाजपतराय की अध्यक्षता में कलकत्ता में कांग्रेस का विशेष अधिवेशन, जिसमें कांग्रेस ने पहली बार भारत में विदेशी शासन के विरुद्ध सीधी कार्यवाही करने, विधान-परिषदों का बहिष्कार करने तथा असहयोग और सविनय अवज्ञा आन्दोलन प्रारम्भ करने की बात तय की। बाद में नागपुर में हुए वार्षिक अधिवेशन में उक्त मत की पुष्टि की गई।

1920 असहयोग आन्दोलन के फलस्वरूप स्वदेशी का प्रचार और भावना बढ़ी, विदेशी वस्त्रों की होली जलाई गयी, शराब की दुकानों पर पिकेटिंग की गयी।

1920 गाँधी जी द्वारा (अंग्रेजों द्वारा प्रथम महायुद्ध के समय प्रदत्त) 'केसरे हिन्द' खिताब वापिस। साथ ही सैकड़ों लोगों द्वारा ब्रिटिश सरकार से मिले खिताब वापिस।

1920 (31 जुलाई) लोकमान्य तिलक का बम्बई में देहावसान।

1921 (17 नव0) प्रिंस ऑफ वेल्स का बम्बई आगमन, विरोध में बम्बई में हड़ताल।

1920-21 असहयोग आन्दोलन में लगभग 50 हजार व्यक्तियों द्वारा गिरफ्तारियाँ दी गईं।

1921 (अगस्त) मालावार में 'मोपला विद्रोह', जिसमें मोपलों ने अंग्रेजों के साथ अनेक हिन्दू स्वदेशवासियों की हत्या कर दी।

1922 (5 फरवरी) गोरखपुर जिले का 'चौरा चौरी काण्ड', जिसमें क्रोध से उतावली भीड़ ने पुलिस के 22 आदमियों को थाने के अन्दर जला दिया। तब गांधी जी ने तत्काल आन्दोलन बन्द करने का आदेश दिया।

1923 पं0 मोतीलाल नेहरू व चितरंजन दास द्वारा 'स्वराज्य दल' का संगठन।

1927 कांग्रेस द्वारा मद्रास अधिवेशन में अपना लक्ष्य 'पूर्ण स्वराज्य' घोषित।

1927 'काकोरी रेल काण्ड' में राजेन्द्रनाथ लाहिड़ी, अशफाक उल्ला खां, रामप्रसाद बिस्मिल तथा रोशनसिंह को क्रमश: गोंडा, फैजाबाद, गोरखपुर तथा इलाहाबाद जेल में फाँसी।

1928 (30 अक्टूबर) साइमन कमीशन के भारत आगमन पर 'साइमन वापिस जाओ' के नारे लगाते लाला लाजपतराय पर पुलिस की लाठियों की बौछार, उनका अमर वाक्य-'मेरे ऊपर जो लाठियों के प्रहार किये गये हैं, वही एक दिन ब्रिटिश साम्राज्य की शवपेटी में कीलें साबित होंगे।' प्रसिद्ध हुआ।

1928 (17 नव0) लाला लाजपतराय का बलिदान।

1928 पटेल के नेतृत्व में सूरत जिले के बारडोली के किसानों को लगान बन्दी सत्याग्रह में आशातीत सफलता, तभी से पटेल 'सरदार पटेल' कहलाये।

1929 (23 सित0) जतीनदास की राजनैतिक बन्दियों से किये जाने वाले दुर्व्यवहार के विरोध में 62 दिन तक भूख हड़ताल कर 63वें दिन मृत्यु।

1930	(11 फरवरी) कांग्रेस कार्यकारिणी द्वारा गांधी जी को सविनय अवज्ञा आन्दोलन प्रारम्भ करने का अधिकार दिया गया।
1930	(12 मार्च) गांधी जी का दांडी मार्च प्रारम्भ। गांधी जी अपने साथ चुने हुए 79 अनुयायियों को लेकर चले और 200 मील की यात्रा उन्होंने 24 दिन में पूरी की, इस यात्रा में महिलाओं का नेतृत्व सरला देवी साराभाई ने किया था। महिलायें पहली बार गांधी जी के आह्वान पर हजारों की संख्या में जेल गईं।
1930	(6 अप्रैल) यात्रा के अन्त में उन्होंने नमक कानून तोड़कर सविनय अवज्ञा आन्दोलन शुरू किया। सारे देश में जगह-जगह नमक बनाकर कानून तोड़ा गया।
1930	(23 अप्रैल) पेशावर में सत्याग्रह के दौरान सैकड़ों पठानों को अमानवीय नृशंसता के साथ भून दिया गया।
1930	(12 नवम्बर) लन्दन में प्रथम गोलमेज सम्मेलन प्रारम्भ, जो 19 जनवरी 1931 तक चला।
1931	(27 फरवरी) इलाहाबाद के अल्फ्रेंड पार्क में चन्द्रशेखर आजाद का बलिदान।
1931	(5 मार्च) 'गांधी-इर्विन समझौता', जिसके अनुसार सभी अहिंसक राजनैतिक बन्दी रिहा किये जायेगें, आन्दोलन स्थगित।
1931	(23 मार्च) सांडर्स हत्याकाण्ड में भगतसिंह, सुखदेव तथा शिवनारायण राजगुरु को लाहौर जेल में फाँसी।
1931	(7 सितम्बर से 1 दिसम्बर) लन्दन में दूसरा गोलमेज सम्मेलन। गांधी इर्विन समझौता लागू न होने तथा बातचीत असफल होने से पुनः सविनय अवज्ञा आन्दोलन प्रारम्भ।
1932	(16 अगस्त) साम्प्रदायिक पंचाट (कम्युनल एवार्ड) प्रकाशित। इसमें सम्प्रदायों के आधार पर पृथक्-पृथक् निर्वाचन क्षेत्रों की व्यवस्था की गयी थी। भारतीय समाज के जितने तरह के विभाजन सम्भव थे वे सभी पंचाट ने करने का प्रयास किया।
1932	(नव-दिस0) लन्दन में तीसरा गोलमेज सम्मेलन।
1933	(जून) गांधी जी द्वारा सविनय अवज्ञा आन्दोलन स्थगित, पर व्यक्तिगत सत्याग्रह चलाते रहने का आदेश।
1934	(अप्रैल) सत्याग्रह आन्दोलन स्थगित।
1939	(सित0) द्वितीय विश्वयुद्ध प्रारम्भ होने पर भारत के वायसराय द्वारा केन्द्रीय या प्रान्तीय विधान मण्डलों की सलाह के बिना ही भारत द्वारा जर्मनी के विरुद्ध ब्रिटेन के साथ लड़ाई में शामिल होने की घोषणा।
1940	(21 जून) ऊधमसिंह को लन्दन में फाँसी।
1940	(अगस्त) मुस्लिम लीग द्वारा अपने लाहौर अधिवेशन में 'पाकिस्तान-प्रस्ताव' पारित।
1940	(नव0) गांधी जी द्वारा सीमित व्यक्तिगत सत्याग्रह प्रारम्भ। प्रथम सत्याग्रही आचार्य विनोबा भावे (इस सत्याग्रह में लगभग 25 हजार नेता जेल गये)

1941 (जनवरी) सुभाषचंद्र बोस अंग्रेजों की आंखों में धूल झोंककर जर्मनी पहुँचे।

1942 (मार्च) सुभाषचंद्र बोस द्वारा बर्लिन रेडियो से अपना पहला सन्देश प्रसारित।

1942 बम्बई में 5 अगस्त को कांग्रेस कार्यकारिणी और 7 अगस्त को महासमिति की बैठक।

1942 (8 अगस्त, रात्रि) 'भारत छोड़ो' प्रस्ताव पारित। गांधी जी द्वारा 'करो या मरो' संघर्ष की घोषणा।

1942 (9 अगस्त को तड़के) गांधी जी एवं कांग्रेस कार्यकारिणी के अन्य सदस्य गिरफ्तार। पुराने नेताओं के गिरफ्तार होने पर युवकों द्वारा आन्दोलन का नेतृत्व। (सरकारी आंकड़ों के अनुसार 1942 के आन्दोलन में 1028 व्यक्ति मरे और 3200 घायल हुए। 1942 के आखिरी पाँच महीनों में 60 हजार से अधिक व्यक्ति गिरफ्तार किये गये और 18 हजार को बिना कोई मुकदमा चलाये जेलों में भेज दिया गया। गैर सरकारी अनुमानों के अनुसार मृतकों की ही संख्या 10 हजार से 40 हजार के बीच थी, घायलों और जेल यात्रियों की संख्या लाखों में थी)।

1942 (16 अगस्त) मण्डला (म0प्र0) में उदयचन्द जैन (19 वर्ष) की पुलिस की गोली से शहादत।

1942 (22 अगस्त) गढ़ाकोटा में साबूलाल जैन की पुलिस की गोली से शहादत।

1943 (10 फरवरी) गांधी जी द्वारा आगाखां पैलेस में, जहाँ वह नजरबंद थे, 21 दिन का उपवास। 6 मई 1944 को गांधी जी रिहा हुए।

1943 बंगाल का दुर्भिक्ष। इस दुर्भिक्ष को संसार का सबसे बड़ा मानव कृत दुर्भिक्ष कहा गया है। एक तरफ अनाज के भण्डारों में अनाज सड़ रहा था, दूसरी ओर अकाल पड़ा था। कलकत्ता विश्वविद्यालय के एक अध्ययन के अनुसार लगभग 34 लाख व्यक्ति इस अकाल में भूख से मारे गये, लगभग 46 प्रतिशत आबादी भयंकर बीमारियों की शिकार हुई। कहा जाता है कि महायुद्ध के दौरान ब्रिटिश सरकार को आंशका थी कि यदि बंगाल पर जापान का हमला हुआ तो नेताजी सुभाष चन्द बोस और उनकी आजाद हिन्द फौज के कारण बंगाल की जनता ब्रिटिश सरकार की सहायता न कर हमलावरों की सहायता करेगी। अत: उसने भीषण अकाल की स्थिति पैदा कर दी।

1944 (18 फरवरी) बम्बई में नौसेना के एक भाग द्वारा अंग्रेज अफसरों के विरुद्ध विद्रोह। मद्रास, करांची और कलकत्ता में भी नौसेना द्वारा विद्रोह।

1945 (अगस्त) हीरोशिमा और नागासाकी पर अणुबम डाले जाने और जापान द्वारा हथियार डाल देने पर विश्वयुद्ध समाप्त।

1945 (19 सितम्बर) भारत में आम चुनावों की घोषणा तथा ब्रिटिश संसद में सम्राट् द्वारा- 'भारतीय जनमत के नेताओं के सहयोग से भारत में पूर्ण स्वराज्य की यथाशीघ्र स्थापना के पूरे प्रयास का आश्वासन।'

1946-47	देशभर में भीषण साम्प्रदायिक दंगे।
1947	(20 फरवरी) ब्रिटिश प्रधानमंत्री एटली द्वारा हर हालत में जून 1948 से पहले भारत में ब्रिटिश शासन का अन्त कर सत्ता जिम्मेदार भारतीय हाथों में सौंपने की घोषणा।
1947	(मार्च) वायसराय लार्ड माउण्टबेटन का भारत आगमन और 15 अगस्त 1947 को भारतीय हाथों में सत्ता सौंपने की घोषणा।
1947	माउण्टबेटन द्वारा विभाजन की योजना तैयार। विवशतावश कांग्रेस द्वारा योजना को स्वीकारोक्ति, पर गांधी जी द्वारा विरोध करते हुए घोषणा कि 'भारत का विभाजन मेरे शव पर ही हो सकेगा।'
1947	(18 जुलाई) 'भारतीय स्वतन्त्रता अधिनियम' ब्रिटिश संसद में पास, जिसके अनुसार 15 अगस्त 1947 से भारत और पाकिस्तान दो 'डोमीनियनों' की स्थापना हो जायेगी, आदि।
1947	(15 अगस्त) भारत स्वतन्त्र राष्ट्र घोषित, सारे देश में स्वतन्त्रता का जश्न।

❑❑❑

भारतीय संविधान में प्राणी मात्र के प्रति दयाभाव और समान भ्रातृत्व की भावना

अनुच्छेद 51-ए

भारतीय नागरिकों के मूल कर्तव्य

(ङ) भारत के सभी लोगों में **समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करें** जो धर्म, भाषा और प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेदभाव से परे हो, ऐसी प्रथाओं का त्याग करें जो स्त्रियों के सम्मान के विरुद्ध हैं।

(च) हमारी मिली-जुली संस्कृति की गौरवशाली परम्परा का महत्त्व समझें और उसको बनाए रखें।

(छ) प्राकृतिक पर्यावरण की, जिसके अन्तर्गत वन, झील, नदी और वन्य जीव हैं, रक्षा करें और उसका संवर्धन करें तथा **प्राणी मात्र के प्रति दयाभाव रखें।**

(ज) वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानवतावाद और ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करें।

(झ) सार्वजनिक सम्पत्ति को सुरक्षित रखें और **हिंसा से दूर रहें।**

(ञ) व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर बढ़ने का सतत् प्रयास करें जिससे राष्ट्र निरन्तर नई उपलब्धियाँ प्राप्त करते हुए ऊँचा उठता जाए।

उपक्रम : चार

अमर जैन शहीद

अमर शहीद लाला हुकुमचंद जैन (कानूनगो)

1857 का स्वातन्त्र्य समर भारतीय राजनैतिक इतिहास की अविस्मरणीय घटना है। यद्यपि इतिहास के कुछ ग्रन्थों में इसका वर्णन मात्र सिपाही विद्रोह या गदर के नाम से किया गया है, किन्तु यह अक्षरशः सत्य है कि भारतवर्ष की स्वतन्त्रता की नींव तभी पड़ चुकी थी। विदेशी अंग्रेजी शासन के विरुद्ध ऐसा व्यापक एवं संगठित विद्रोह अभूतपूर्व था। इस समर में अंग्रेज छावनियों के भारतीय सैनिकों का ही नहीं, राजच्युत अथवा असन्तुष्ट अनेक राजा-महाराजाओं, बादशाह-नवाबों, जमींदारों- ताल्लुकदारों का ही नहीं, सर्व साधारण जनता का भी सक्रिय सहयोग रहा है। विदेशी सत्ता को उखाड़ फेंकने व विदेशी शासकों को देश से खदेड़ने का यह जबरदस्त अभियान था। इस समर में छावनियां नष्ट की गईं, जेलखाने तोड़े गये, सैकड़ों छोटे-बड़े खूनी संघर्ष हुए, भयंकर रक्तपात हुआ, अनगिनत सैनिकों का संहार हुआ, अनेक माताओं की गोदें सूनी हो गईं, अबलाओं का सिन्दूर पुछ गया। यद्यपि अनेक कारणों से यह समर सफल नहीं हो सका, पर आजादी के लिए तड़प का बीज-बपन इस समर में हो गया था।

इस स्वातन्त्र्य समर में हिन्दू, मुस्लिम, जैन, सिख आदि सभी जातियों व धर्मों के देशभक्तों ने अपना योगदान दिया। अंग्रेजी सरकार को जिस व्यक्ति के सन्दर्भ में थोड़ा सा भी यह ज्ञात हुआ कि इसका सम्बन्ध विद्रोह से है, उसे सरेआम फांसी पर लटका दिया गया। अनेक देशभक्तों को सरेआम कोड़े लगाये गये, तो अनेक के परिवार नष्ट कर दिये गये, सम्पत्तियां लूट ली गईं, पर ये देशभक्त झुके नहीं। आज भारतवर्ष की स्वतन्त्रता का महल इन्हीं देशभक्तों एवं अमर शहीदों के बलिदान पर खड़ा है।

1857 के इस क्रान्ति-यज्ञ में अपने जीवन की आहुति देने वालों में दो अमर जैन शहीद भी थे। प्रथम लाला हुकुमचंद जैन और दूसरे थे श्री अमर चन्द बांठिया।

लाला हुकुमचंद जैन का जन्म 1816 में हांसी (हिसार) हरियाणा के प्रसिद्ध कानूनगो परिवार में श्री दुनीचंद जैन के घर हुआ। आपका गोत्र गोयल और जाति अग्रवाल जैन थी। आपकी आरम्भिक शिक्षा हांसी में हुई। जन्मजात प्रतिभा के धनी हुकुमचन्द जी की फारसी और गणित में विशेष रुचि थी, इन विषयों पर आपने कई पुस्तकें भी लिखीं। अपनी शिक्षा एवं प्रतिभा के बल पर आपने मुगल बादशाह बहादुरशाह जफर के दरबार में उच्च पद प्राप्त कर लिया और बादशाह के साथ आपके बहुत अच्छे सम्बन्ध हो गये।

1841 में मुगल बादशाह ने आपको हांसी और करनाल जिले के इलाकों का कानूनगो एवम् प्रबन्धकर्ता नियुक्त किया। आप सात वर्ष तक मुगल बादशाह के दरबार में रहे, फिर इलाके के प्रबन्ध के लिए हांसी लौट आये। इस बीच अंग्रेजों ने हरियाणा प्रान्त को अपने अधीन कर लिया। हुकुमचंद जी ब्रिटिश शासन में कानूनगो बने रहे, पर आपकी भावनायें सदैव अंग्रेजों के विरुद्ध रहीं।

श्री जैन उच्च कोटि के दानी, उदार हृदय और परोपकारी थे, आपने गांवों में मन्दिरों, शिवालयों, कुओं व तालाबों का निर्माण कराया तथा टूटे हुए मंदिरों का जीर्णोद्धार भी कराया।

1857 में जब प्रथम स्वतंत्रता संग्राम का बिगुल बजा तब लाला हुकुमचंद की देशप्रेम की भावना अंगडाई लेने लगी। दिल्ली में आयोजित देशभक्त नेताओं के उस सम्मेलन में, जिसमें तात्या टोपे भी उपस्थित थे, हुकुमचंद जी उपस्थित थे। बहादुरशाह जफर से उनके गहरे सम्बन्ध पहले ही थे अत: आपने अंग्रेजों के विरुद्ध युद्ध करने की पेशकश की। आपने उपस्थित नेताओं और बहादुरशाह जफर को विश्वास दिलाया कि 'वे इस स्वतंत्रता संग्राम में अपना तन-मन और धन सर्वस्व बलिदान करने को तैयार हैं।' हुकुमचंद जी की इस घोषणा के उत्तर में मुगल बादशाह ने लाला हुकुमचंद को विश्वास दिलाया कि वे अपनी सेना, गोला-बारूद तथा हर तरह की युद्ध सामग्री सहायता स्वरूप पहुँचायेंगे। हुकुमचंद जी इस आश्वासन को लेकर हांसी आ गये।

हांसी पहुंचते ही आपने देशभक्त वीरों को एकत्रित किया और जब अंग्रेजों की सेना हांसी होकर दिल्ली पर धावा बोलने जा रही थी, तब उस पर हमला किया और उसे भारी हानि पहुंचाई। आपके और आपके साथियों के पास जो युद्ध सामग्री थी वह अत्यन्त थोड़ी थी, हथियार भी साधारण किस्म के थे, दुर्भाग्य से जिस बादशाही सह ता का भरोसा आप किये बैठे थे, वह भी नहीं पहुँची, फिर भी आपके नेतृत्व में जो वीरतापूर्ण संघर्ष हुआ वह एक मिशाल है। इस घटना से आप हतोत्साहित नहीं हुए, अपितु अंग्रेजों को परास्त करने के उपाय खोजने लगे।

लाला हुकुमचंद व उनके साथी मिर्जा मुनीर बेग ने गुप्त रूप से एक पत्र फारसी भाषा में मुगल सम्राट् को लिखा (कहा जाता है कि यह पत्र खून से लिखा गया था)*, जिसमें उन्हें अंग्रेजों के विरुद्ध संघर्ष में पूर्ण सहायता का विश्वास दिलाया, साथ ही अंग्रेजों के विरुद्ध अपने घृणा के भाव व्यक्त किये थे और अपने लिए युद्ध-सामग्री की मांग की थी। लाला हुकुमचंद मुगल सम्राट् के उत्तर की प्रतीक्षा करते हुए हांसी का प्रबन्ध स्वयं सम्हालने लगे। किन्तु दिल्ली से पत्र का उत्तर ही नहीं आया। इसी बीच दिल्ली पर अंग्रेजों ने अधिकार कर लिया और मुगल सम्राट् गिरफ्तार कर लिये गये।

15 नवम्बर 1857 को बादशाह की व्यक्तिगत फाइलों की जांच के दौरान लाला हुकुमचंद और मिर्जा मुनीर बेग के हस्ताक्षरों वाला वह पत्र अंग्रेजों के हाथ लग गया। यह पत्र दिल्ली के कमिश्नर श्री सी0एस0 सॉडर्स ने हिसार के कमिश्नर श्री नव कार्टलैन्ड को भेज दिया और लिखा कि– 'इनके विरुद्ध शीघ्र ही कठोर कार्यवाही की जाये।'

* इस पत्र की प्राप्ति के लिए हमने राष्ट्रीय अभिलेखागार नई दिल्ली के अनेक चक्कर लगाये, रजिस्टर्ड पत्र भी डाले, अन्त में अभिलेखागार ने अपने पत्र दि० 6 नवम्बर 1995 संख्या मि० सं० 9/2/1/90 पी० ए० में लिखा कि-'इस विभाग में उक्त विषय से सम्बन्धित विस्तृत खोज की गई, परन्तु वाँछित पत्र उपलब्ध नहीं हो सका। आपको यह सुझाव दिया जाता है कि आप निदेशक अभिलेखागार, हरियाणा से सम्पर्क करें। शायद उनके पास वाँछित सूचना प्राप्त हो सके।' निदेशक, अभिलेखागार, हरियाणा से सम्पर्क करने पर उन्होंने अपने पत्र 20 फरवरी 1996 संख्या 11/6-91 अभि० 453 में लिखा कि 'कार्यालय में आकर यहाँ उपलब्ध अभिलेखों में वाँछित पत्र की खोज कर लें।'

पत्र प्राप्त होते ही कलेक्टर एक सैनिक दस्ते को लेकर हांसी पहुंचे और हुकुमचंद तथा मिर्जा मुनीर बेग के मकानों पर छापे मारे गये। दोनों को गिरफ्तार कर लिया गया, साथ में हुकुमचंद जी के 13 वर्षीय भतीजे फकीर चंद को भी गिरफ्तार कर लिया गया। हिसार लाकर इन पर मुकदमा चला, एक सरसरी और दिखावटी कार्यवाही के पश्चात् 18 जनवरी 1858 को हिसार के मजिस्ट्रेट जॉन एकिंसन ने लाला हुकुमचंद और मिर्जा मुनीर बेग को फांसी की सजा सुना दी। फकीर चंद को मुक्त कर दिया गया।

19 जनवरी 1858 को लाला हुकुमचंद और मिर्जा मुनीर बेग को लाला हुकुमचंद के मकान के सामने (जहाँ नगर पालिका हांसी ने 22-1-1961 को इस शहीद की पावन स्मृति में 'अमर शहीद हुकुमचंद पार्क' की स्थापना की है।) फांसी दे दी गई। क्रूरता की पराकाष्ठा तो तब हुई जब लाला जी के भतीजे फकीर चंद को, जिसे अदालत ने बरी कर दिया था, जबरदस्ती पकड़कर फांसी के तख्ते पर लटका दिया गया।

भारतवर्ष के इतिहास का वह क्रूरतम अध्याय था। अंग्रेजों की क्रोधाग्नि इतने से भी शान्त नहीं हुई। इनके रिश्तेदारों को इनके शव अन्तिम संस्कार हेतु नहीं दिये गये, अपितु उनकी धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुँचाने के लिए लाला हुकुमचंद के शव को जैनधर्म के विरुद्ध भंगियों द्वारा दफनाया गया और मिर्जा मुनीर बेग के शव को मुस्लिम परम्पराओं के विरुद्ध जला दिया गया।

शहीद होने के समय हुकुमचंद जी अपने दो पुत्रों को छोड़ गये थे जिनमें न्यामत सिंह की आयु आठ वर्ष और सुगनचंद की आयु मात्र उन्नीस दिन थी। आपकी धर्मपत्नी दोनों बच्चों को लेकर आश्रय के लिए गुप्त रूप से किसी सम्बन्धी के यहाँ चलीं गईं। प्रशासन उन्हें खोजता रहा पर सफल नहीं हुआ।

लाला जी के बाद उनकी सम्पत्ति कौड़ियों के भाव नीलाम कर दी गई। उनकी सम्पन्नता का परिचय इसी से मिल जाता है कि लगभग 9000 एकड़ जमीन उनके पास थी। अन्य वस्तुओं में लगभग 400 तोले सोना, 3300 तोला चांदी, 1300 चांदी के सिक्के, 107 मोहरें आदि।

हरियाणा के प्रसिद्ध कवि श्री उदय भानु 'हंस' ने ठीक ही लिखा है-

'हांसी की सड़क विशाल थी, हो गई लहू से लाल थी।
यह नर-पिशाच का काम था, बर्बरता का परिणाम था।
श्री हुकुमचन्द रणवीर था, संग मिर्जा मुनीर बेग था।
दोनों स्वदेश के भक्त थे, जनसेवा में अनुरक्त थे।
कोल्हु में पिसवाये गये, टिकटी पर लटकाये गये।
हिन्दू को दफनाया गया, मुस्लिम शव झुलसाया गया।
कितने जन पकड़े घेरकर, फिर बड़ पीपल के पेड़ पर।
कीलों से टँके गरीब थे, ईसा के नये सलीब थे।'

लाला हुकुमचन्द जैन जैसे अमर शहीदों पर केवल जैन समाज को ही नहीं सम्पूर्ण भारतीय समाज को गर्व है। लाला हुकुमचंद की स्मृति में हांसी नगरपालिका ने 1961 में अमर शहीद हुकुमचन्द पार्क बनवाया, जिसमें लाला जी की आदमकद प्रतिमा लगी है।

आ॰- (1) Who's who of Indian Martyrs, Volume III, Page, 56, 57 (2) सन् सत्तावन के भूले-बिसरे शहीद, भाग 3, पृष्ठ 68-70 (3) डॉ॰ रत्नलाल जैन, हाँसी का आलेख (4) शोधादर्श, फरवरी 1986 (5) The Martyrs, Page 10-13 (6) जैन दर्पण, दिसम्बर 1995 (7) अमृतपुत्र, पृष्ठ 27 एवं 73

अमर शहीद फकीरचंद जैन

भारतवर्ष के स्वातन्त्र्य समर में हजारों निरपराध मारे गये, और यदि सच कहा जाये तो सारे निरपराध ही मारे गये, आखिर अपनी आजादी की मांग करना कोई अपराध तो नहीं है। ऐसे ही निरपराधियों में थे 13 वर्षीय अमर शहीद फकीरचंद जैन। फकीरचंद अमर शहीद लाला हुकुमचंद जैन के भतीजे थे। हुकुमचंद जैन ने 1857 के प्रथम स्वाधीनता आन्दोलन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

हुकुमचंद जैन हांसी के कानूनगो थे, बहादुरशाह जफर से उनके बहुत अच्छे सम्बन्ध थे, उनके दरबार में श्री जैन सात वर्ष रहे फिर हांसी (हरियाणा) के कानूनगो होकर आप अपने गृहनगर हांसी लौट आये। आपने मिर्जा मुनीर बेग के साथ एक पत्र बहादुरशाह जफर को लिखा, जिसमें अंग्रेजों के प्रति घृणा और उनके विरुद्ध संघर्ष में पूर्ण सहायता का विश्वास बहादुरशाह जफर को दिलाया था। जब दिल्ली पर अंग्रेजों ने अधिकार कर लिया तब बहादुरशाह जफर की फाइलों में यह पत्र अंग्रेजों के हाथ लग गया। तत्काल हुकुमचंद जी को गिरफ्तार कर लिया गया, साथ में उनके भतीजे फकीरचंद को भी। 18 जनवरी 1858 को हिसार के मजिस्ट्रेट ने लाला हुकुमचंद और मिर्जा मुनीर बेग को फांसी की सजा सुना दी। फकीर चंद को मुक्त कर दिया गया।

19 जनवरी 1858 को हुकुमचंद और मिर्जा मुनीर बेग को हांसी में लाला हुकुमचंद के मकान के सामने फांसी दे दी गई। 13 वर्षीय फकीरचंद इस दृश्य को भारी जनता के साथ ही खड़े-खड़े देख रहे थे, पर अचानक यह क्या हुआ ? गोराशाही ने बिना किसी अपराध के, बिना किसी वारन्ट के उन्हें पकड़ा और वहीं फांसी पर लटका दिया। इस प्रकार अल्पवय में ही यह आजादी का दीवाना शहीद हो गया।

आ0- (1) Who's who of Indian Martyrs, Volume III, Page, 56, 57 (2) सन् सतावन के भूले-बिसरे शहीद, भाग 3, पृष्ठ 68-70 (3) डॉ० रत्नलाल जैन, हाँसी का आलेख (4) शोधादर्श, फरवरी 1986 (5) The Martyrs, Page 10-13 (6) जैन दर्पण, दिसम्बर 1995 (7) अमृतपुत्र, पृष्ठ 27 एवं 73

❑❑❑

महात्मा गांधी ने जिस अहिंसा के बल पर देश को आजादी दिलाई उसकी प्रेरणा उन्हें अपने वैष्णव और जैन संस्कारों से मिली थी। गांधी जी जब अध्ययनार्थ विदेश जाने लगे और उनकी माता ने उन्हें इस भय से भेजने में आना-कानी की, कि विदेश में जाकर यह माँस-मदिरा भक्षण करेगा तब जैन मुनि बेचरजी स्वामी ने उन्हें माँसादि सेवन न करने की प्रतिज्ञा दिलाई थी। स्वयं गांधी जी ने लिखा है- 'बेचरजी स्वामी मोढ़ बनियों में से बने हुए एक जैन साधु थे, ...उन्होंने मदद की। वे बोले-'मैं इस लड़के से इन तीनों चीजों के व्रत लिवाऊँगा। फिर इसे जाने देने में कोई हानि नहीं होगी।' उन्होंने प्रतिज्ञा लिवाई और मैंने माँस, मदिरा तथा स्त्री-संग से दूर रहने की प्रतिज्ञा की। माताजी ने आज्ञा दी।'

- सत्य के प्रयोग, पृ० 32

अमर शहीद अमरचंद बांठिया

भारतवर्ष का प्रथम सशस्त्र स्वाधीनता संग्राम 1857 ई0 में प्रारम्भ हुआ था। इसे स्वाधीनता संग्राम की आधारशिला कहें तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। इस संग्राम में जहाँ महारानी लक्ष्मी बाई, तात्या टोपे, मंगल पांडे आदि शहीदों ने अपनी कुर्बानी देकर आजादी का मार्ग प्रशस्त किया, वहीं सहस्रों रईसों और साहूकारों ने अपनी तिजोरियों के मुंह खोलकर संग्राम को दृढता प्रदान की। तत्कालीन ग्वालियर राज्य के कोषाध्यक्ष अमर शहीद अमरचंद बांठिया ऐसे ही देशभक्त महापुरुषों में से थे, जिन्होंने 1857 के महासमर में जूझ रहे क्रान्तिवीरों को संकट के समय आर्थिक सहायता देकर मुक्ति-संघर्ष के इतिहास में अपना नाम अमर कर लिया।

अमरचंद बांठिया के पूर्वज बांठिया गोत्र के आदि पुरुष श्री जगदेव पंवार (परमार) क्षत्रिय ने 9-10वीं शताब्दी (एक अन्य मतानुसार जगदेव के पुत्र या पौत्र माधव देव/माधवदास ने 12वीं शताब्दी) में जैनाचार्य भावदेव सूरि से प्रबोध पाकर जैन धर्म अंगीकार किया था और ओसवाल जाति में शामिल हुए थे। कुछ इतिहासकार विक्रम की 12 वीं शताब्दी में रणथम्भौर के राजा लालसिंह पँवार के पुत्रों द्वारा जैनाचार्य विजय बल्लभ सूरि से प्रतिबोध पाकर जैन धर्म अंगीकार कर लेने से उनके ज्येष्ठ पुत्र बंठ से बांठिया गोत्र की उत्पत्ति मानते हैं। कुछ इतिहासकार माधवदेव द्वारा दानवीरता की अनुकरणीय परम्परा का श्रीगणेश करने के कारण (धनादि को बांटने के कारण) बांटिया=बांठिया उपनाम की प्रसिद्धि मानते हैं। स्पष्ट है कि अमरचंद जी को दानवीरता का गुण जन्मजात ही मिला था। अमरचंद बांठिया का परिवार व्यापार/व्यवसाय हेतु सन् 1835 (वि०सं० 1892) में फलवृद्धि (फलौदी) में भूमि से प्रकट हुई चिन्तामणि पार्श्वनाथ की प्रतिमा के चल समारोह में अनेक संघपतियों के परिवार के साथ बीकानेर से ग्वालियर आया और यहीं बस गया। प्रतिमा की प्रतिष्ठा ग्वालियर के हृदय स्थल सर्राफा बाजार के शिखरबन्द जिनालय में संवत् 1893 में हुई थी।

अमरचंद के दादा का नाम खुशालचंद एवं पिता का नाम अबीरचंद था। अमरचंद अपने सात भाइयों (श्री जालमसिंह, सालमसिंह, ज्ञानचंद, खूबचंद, सवलसिंह, मानसिंह, अमरचंद) में सबसे छोटे थे।

अमरचंद बांठिया में धर्मनिष्ठा, दानशीलता, सेवाभावना, ईमानदारी, कर्तव्यपरायणता आदि गुण जन्मजात थे, यही कारण था कि सिन्धिया राज्य के पोद्दार श्री वृद्धिचंद संचेती, जो जैन समाज के अध्यक्ष भी थे, ने अमरचंद को ग्वालियर राज्य के प्रधान राजकोष गंगाजली के कोषालय पर सदर मुनीम (प्रधान कोषाध्यक्ष) बनवा दिया। उस समय सिन्धिया नरेश 'मोती वाले राजा' के नाम से जाने जाते थे। 'गंगाजली' में अटूट धन संचय था, जिसका अनुमान स्वयं सिंधिया नरेशों को भी नहीं था। विपुल धनराशि से भरे इस खजाने पर चौबीसों घण्टे सशस्त्र पुलिस बल का कड़ा पहरा रहता था। कहा जाता है कि ग्वालियर राजघराने में उन दिनों पीढियों से यह आन चली आ रही थी कि न तो कोई राजा अपने राजकोष की सम्पत्ति को देख ही सकता था और न उसमें से कुछ निकाल ही सकता था, अत: गंगाजली की सदैव वृद्धि होती रहती थी। इस अकूत धन संचय को कोषाध्यक्ष के अतिरिक्त और कोई नहीं जानता था।

अमरचंद बांठिया इस खजाने के रक्षक ही नहीं ज्ञाता भी थे, वे चाहते तो अपने लिए मनचाही रत्न राशियाँ निकालकर कभी भी धनकुबेर बन सकते थे। पर बांठिया जी तो जैन धर्म के पक्के अनुयायी थे, जो राजकोष का एक पैसा भी अपने उपयोग में लाना घोर पाप समझते थे।

बांठिया जी की दैनिक चर्या बड़ी नियमित थी। प्रातः उठकर जिनेन्द्र देव की अर्चना और यदि कोई मुनि/साधक विराजमान हों तो उनके उपदेश सुनना, समय पर कोषालय जाना, सूर्यास्त से पूर्व भोजन और रात्रि नौ बजे शयन उनके यान्त्रिक जीवन के अंग थे।

'गंगाजली' के खजांची पद को सुशोभित करने के कारण बांठिया जी का आत्मीय परिचय बड़े-बड़े राज्याधिकारियों से हो जाना स्वाभाविक ही था। सेना के अनेक अधिकारियों का आवागमन कोषालय में प्राय: होता रहता था। बांठिया जी के सरल स्वभाव और सादगी ने सबको अपनी ओर आकर्षित कर लिया था। चर्चा-प्रचर्चा में अंग्रेजों द्वारा भारतवासियों पर किये जा रहे अत्याचारों की भी चर्चा होती थी। एक दिन एक सेनाधिकारी ने कहा कि 'आपको भी भारत माँ को दासता से मुक्त कराने के लिए हथियार उठा लेना चाहिए।' बांठिया जी ने कहा- 'भाई अपनी शारीरिक विषमताओं के कारण मैं हथियार तो नहीं उठा सकता पर समय आने पर ऐसा काम करूँगा, जिससे क्रान्ति के पुजारियों को शक्ति मिलेगी और उनके हौसले बुलन्द हो जावेंगे।'

ध्यातव्य है कि अंग्रेजों के विरुद्ध जहाँ कहीं भी युद्ध छिड़ता था, वे भारतीय सैनिकों को ही सर्वप्रथम युद्ध की आग में झोंक देते थे। एक वयोवृद्ध सन्यासी ने अमरचंद बांठिया से चर्चा में 1857 के पूर्व की एक घटना सुनाते हुए कहा कि -'700 बंगाली सैनिकों की एक रेजीमेन्ट को अंग्रेज अफसरों ने इसलिए गोलियों से भून दिया था, कि उन्होंने बैलों पर चढ़कर जाने से मना कर दिया था।' ज्ञातव्य है कि भारतीय संस्कृति में गाय हमारी माता है और उसके पुत्र बैल पर चढ़कर जाना पाप माना जाता है। सैनिकों ने इसी कारण बैल की पीठ पर बैठने से मना कर दिया था। यह भी ध्यातव्य है कि गाय/बैल की चर्बी लगे कारतूस को मुंह मे खोलने के लिए मना करने पर हजारों निरपराध सैनिकों को अंग्रेज-अधिकारियों द्वारा मौत के घाट उतार दिया गया था।

ऐसी ही अनेक घटनाओं को सुन-सुनकर बांठिया जी का हृदय भी देश की आजादी के लिए तड़फडाने लगा। इधर मुनिराज के प्रवचन में भी उन्होंने एक दिन सुना कि 'जो दूसरों के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर कर दे, उसी का जन्म सार्थक है, वह मरणोपरान्त अमर रह सकता है।' यह सुनकर बांठिया जी का निश्चय दृढ से दृढतर और दृढतर से दृढतम हो गया। उन्होंने तय किया कि मातृभूमि की रक्षा के लिए मुझे जो भी समर्पित करना पड़े, करूँगा। यह अवसर शीघ्र ही उनके सामने आ गया।

1857 की क्रान्ति के समय महारानी लक्ष्मीबाई उनके सेना नायक राव साहब और तात्या टोपे आदि क्रान्तिवीर ग्वालियर के रणक्षेत्र में अंग्रेजों के विरुद्ध डटे हुए थे, परन्तु लक्ष्मीबाई के सैनिकों और ग्वालियर के विद्रोही सैनिकों को कई माह से वेतन नहीं मिला था, न ही राशन-पानी का समुचित प्रबन्ध हो सका था। तब बांठिया जी ने अपनी जान की परवाह न करते हुए क्रान्तिकारियों की मदद की और ग्वालियर का राजकोष लक्ष्मीबाई के संकेत पर विद्रोहियों के हवाले कर दिया।

ग्वालियर राज्य से सम्बन्धित 1857 के महत्त्वपूर्ण दस्तावेज राष्ट्रीय अभिलेखागार, नई दिल्ली, राजकीय अभिलेखागार, भोपाल आदि में उपलब्ध हैं। डॉ० जगदीश प्रसाद शर्मा, भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली ने इन दस्तावेजों और अनेक सरकारी रिकार्डों के आधार पर विस्तृत विवरण 'अमर शहीद : अमरचंद बांठिया' पुस्तक में प्रकाशित किया है, जिसके अनुसार- 1857 में क्रान्तिकारी सेना जो अंग्रेजी सत्ता को देश

से उखाड़ फेंकने हेतु कटिबद्ध होकर ग्वालियर पहुँची थी, राशन पानी के अभाव में उसकी स्थिति बड़ी ही दयनीय हो रही थी। सेनाओं को महीनों से वेतन प्राप्त नहीं हुआ था। 2 जून 1858 को राव साहब ने अमरचंद बांठिया को कहा कि उन्हें सैनिकों का वेतन आदि भुगतान करना है, क्या वे इसमें सहयोग करेंगें अथवा नहीं ? (ग्वालियर रेजीडेंसी फाइल, राष्ट्रीय अभिलेखागार, नई दिल्ली) तत्कालीन परिस्थितियों में राजकीय कोषागार के अध्यक्ष अमरचंद बांठिया का निर्णय एक महत्त्वपूर्ण निर्णय था, उन्होंने वीरांगना लक्ष्मीबाई की क्रान्तिकारी सेनाओं के सहायतार्थ एक ऐसा साहसिक निर्णय लिया जिसका सीधा सा अर्थ उनके अपने जीवन की आहुति से था। अमरचंद बांठिया ने राव साहब के साथ स्वेच्छापूर्वक सहयोग किया तथा राव साहब प्रशासनिक आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु ग्वालियर के राजकीय कोषागार से समूची धनराशि प्राप्त करने में सफल हो सके। सेन्ट्रल इण्डिया ऐजेंसी आफिस में ग्वालियर रेजीडेंसी की एक फाइल में उपलब्ध विवरण के अनुसार - '5 जून 1858 के दिन राव साहब राजमहल गये तथा अमरचंद बांठिया से 'गंगाजली' कोष की चाबियां लेकर उसका दृश्यावलोकन किया। तत्पश्चात् दूसरे दिन जब राव साहब बड़े सबेरे ही राजमहल पहुँचे तो अमरचंद उनकी अगवानी के लिए मौजूद थे। गंगाजली कोष से धनराशि लेकर क्रान्तिकारी सैनिकों को 5-5 माह का वेतन वितरित किया गया।'

महारानी बैजाबाई की सेनाओं के सन्दर्भ में भी ऐसा ही एक विवरण मिलता है। जब नरबर में बैजाबाई की फौज संकट की स्थिति में थी, तब उनके फौजी भी ग्वालियर आकर अपने-अपने घोड़े तथा 5 महीने की पगार लेकर लौट गये। इस प्रकार बांठिया जी के सहयोग से संकट-ग्रस्त फौजों ने राहत की सांस ली। अमरचंद बांठिया से प्राप्त धनराशि से बाकी सैनिकों को भी उनका वेतन दे दिया गया (ग्वालियर रेजीडेंसी फाइल, 1261, राष्ट्रीय अभिलेखागार, नई दिल्ली)। 'हिस्ट्री ऑफ दी इण्डिया म्यूटिनी,' भाग-2 के अनुसार भी अमरचंद बांठिया के कारण ही क्रान्तिकारी नेता अपनी सेनाओं को पगार तथा ग्रेच्युटी के भुगतान के रूप में पुरस्कृत कर सके थे। (डा० जगदीश प्रसाद शर्मा का उक्त लेख)।

उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट है कि 1857 की क्रान्ति के समय यदि अमरचंद बांठिया ने क्रान्तिवीरों की इस प्रकार आर्थिक सहायता न की होती, तो उन वीरों के सामने कैसी स्थिति उत्पन्न होती, इसकी कल्पना नहीं की जा सकती। क्रान्तिकारी सेनाओं को काफी समय से वेतन नहीं मिला था, उनके राशन-पानी की भी व्यवस्था नहीं हो रही थी। इस कारण निश्चय ही क्रान्तिकारियों के संघर्ष में क्षमता, साहस और उत्साह की कमी आती और लक्ष्मीबाई, राव साहब व तात्या टोपे को संघर्ष जारी रखना कठिन पड़ जाता। यद्यपि बांठिया जी के साहसिक निर्णय के पीछे उनकी अदम्य देशभक्ति की भावना छिपी हुई थी, परन्तु अंग्रेजी शब्दकोष में तो इसका अर्थ था "देशद्रोह" या "राजद्रोह" और उसका प्रतिफल था ''सजा-ए-मौत''।

अमरचंद बांठिया से प्राप्त इस सहायता से क्रान्तिकारियों के हौसले बुलंद हो गये और उन्होंने अंग्रेजी सेनाओं के दाँत खट्टे कर दिये और ग्वालियर पर कब्जा कर लिया। बौखलाये हुए ह्यूरोज ने चारों ओर से ग्वालियर पर आक्रमण की योजना बनाई।

योजनानुसार ह्यूरोज ने 16 जून को मोरार छावनी पर पूरी शक्ति से आक्रमण किया। 17 जून को ब्रिगेडियर स्मिथ से राव साहब व तात्या टोपे का कड़ा मुकाबला हुआ। लक्ष्मीबाई इस समय आगरा की तरफ से आये सैनिकों से मोर्चा ले रही थीं। दूसरे दिन स्मिथ ने पूरी तैयारी से फिर आक्रमण किया। रानी लक्ष्मीबाई

ने अपनी दो सहायक सहेलियों के साथ पुरुषों की वेश-भूषा में आकर सेना की कमान सँभाली। युद्ध निर्णायक हुआ, जिसमें रानी को संगीन गोली एवं तलवार से घाव लगे तथा उनकी सहेली की भी गोली से मृत्यु हो गयी। यद्यपि आक्रमणकर्ताओं को भी रानी के द्वारा मौत के घाट उतार दिया गया, किन्तु घावों से वे मूर्च्छित हो गईं। साथियों द्वारा उन्हें पास ही बाबा गंगादास के बगीचे में ले जाया गया, जहाँ वे वीरगति को प्राप्त हुईं। शीघ्र ही उनका तथा सहेली का दाह-संस्कार कर दिया गया।

लक्ष्मीबाई के इस गौरवमय ऐतिहासिक बलिदान के चार दिन बाद ही 22 जून 1858 को ग्वालियर में ही राजद्रोह के अपराध में न्याय का ढोंग रचकर लश्कर के भीड़ भरे सर्राफा बाजार में ब्रिगेडियर नैपियर द्वारा नीम के पेड़ से लटकाकर अमरचंद बाँठिया को फाँसी दे दी गई।

बाँठिया जी की फांसी का विवरण ग्वालियर राज्य के हिस्टोरिकल रिकार्ड में उपलब्ध दस्तावेज के आधार पर इस प्रकार है- 'जिन लोगों को कठोर दंड दिया गया उनमें से एक था सिन्धिया का खजांची अमरचंद बाँठिया, जिसने विद्रोहियों को खजाना सौंप दिया था। बाँठिया को सर्राफा बाजार में नीम के पेड़ से टाँगकर फाँसी दी गई और एक कठोर चेतावनी के रूप में उसका शरीर बहुत दिनों (तीन दिन) तक वहीं लटकाये रखा गया।'

इस प्रकार इस जैन शहीद ने आजादी की मशाल जलाये रखने के लिए कुर्बानी दी, जिसका प्रतिफल हम आजादी के रूप में भोग रहे हैं। ग्वालियर के सर्राफा बाजार में वह नीम आज भी है। इसी नीम के नीचे अमरचंद बाँठिया का एक स्टेच्यू हाल ही में स्थापित किया गया है।

आ० - (1)सन् सत्तावन के भूले-बिसरे शहीद, भाग-2, पृ० 49-51 (2)म० स०, 15 अगस्त 1987, पृष्ठ अ 69-71 (3)अमर शहीद अमर चंद बाँठिया (4) शोधादर्श, फरवरी 1987 (5) जैन प्रतीक, जून 1996 (6) इ० अ० ओं०, प्रथम खण्ड, पृष्ठ 381 (7) The Martyrs, Page 31-33 (8) अमृतपुत्र, पृष्ठ 29 एवं 75ए (9) नई दुनियां, (इन्दौर) 11-8-1997 एवं 3-9-1997, (10) चौथा संसार (इन्दौर) 11-8-1997

❑❑❑

भारतीय संविधान में राष्ट्रीय आन्दोलन के प्रति सम्मान की भावना

अनुच्छेद 51 (क)

भारतीय नागरिकों के मूल कर्तव्य

भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य होगा कि वह -

(क) संविधान का पालन करें और उसके आदर्शों, संस्थाओं, राष्ट्र ध्वज और राष्ट्र गान का आदर करें,

(ख) स्वतंत्रता के लिए हमारे **राष्ट्रीय आन्दोलन** को प्रेरित करने वाले उच्च आदर्शों को हृदय में संजोए रखें और उनका पालन करें,

(ग) भारत की प्रभुता, एकता और अखण्डता की रक्षा करे और उसे अक्षुण्ण रखें,

(घ) देश की रक्षा करें और आह्वान किये जाने पर राष्ट्र की सेवा करे।

अमर शहीद मोतीचंद शाह

भारतीय स्वातन्त्र्य-समर का मध्यकाल था वह, उन दिनों 'अंग्रेजो भारत छोड़ो' और 'इंकलाब जिन्दाबाद' जैसे नारे तो दूर 'वन्दे मातरम्' जैसा सात्विक और स्वदेश पूजा की भावना के प्रतीक शब्द का उच्चारण भी बड़े जीवट की बात समझी जाती थी। जो नेता सार्वजनिक मंचो से 'औपनिवेशिक स्वराज्य' की माँग रखते थे, उन्हें गर्म दल का समझा जाता था और उनसे किसी प्रकार का सम्पर्क रखना भी खतरनाक बात समझी जाती थी।

ऐसे समय में प्रसिद्ध क्रान्तिकारी श्री अर्जुन लाल सेठी अपनी जयपुर राज्य की पन्द्रह सौ रुपये मासिक की नौकरी छोड़कर क्रान्ति-यज्ञ में कूद पड़े। उन्होंने जयपुर में वर्धमान विद्यालय की स्थापना की। कहने को तो यह धार्मिक शिक्षा का केन्द्र था किन्तु वहाँ क्रान्तिकारी ही पैदा किये जाते थे। 'जिस विद्यालय का संस्थापक स्वयं क्रान्तिकारी हो उस विद्यालय को क्रान्ति की ज्वाला भड़काने से कैसे रोका जा सकता है।'

सेठी जी एक बार 'दक्षिण महाराष्ट्र जैन सभा' के अधिवेशन में मुख्य वक्ता के रूप में महाराष्ट्र के सांगली शहर गये। वहाँ उनकी भेंट दो तरुणों से हुई। एक थे श्री देवचन्द्र, जो बाद में दिगम्बर जैन समाज के बहुत बड़े आचार्य, आचार्य समन्तभद्र के नाम से विख्यात हुए और जिन्होंने महाराष्ट्र में अनेक शिक्षण संस्थाओं की स्थापना की। दूसरे थे अमर शहीद मोतीचंद शाह।

हुतात्मा मोतीचंद का जन्म 1890 में सोलापूर (महाराष्ट्र) जिले के करकंब ग्राम में सेठ पदमसी शाह के घर हुआ। माँ का नाम गंगू बाई था। सेठ पदमसी अत्यन्त निर्धन होते हुए भी संतोष-वृत्ति के धनी थे। वे न्याय से आजीविका कमाने तथा दयालु अन्तःकरण वाले सीधे-साधे छोटे से व्यवसायी थे। बालक की आँखों में मोती सी चमक देखकर ही माता ने बालक का नाम मोतीचंद रखा। परिवार की यह खुशी अधिक दिन तक स्थायी नहीं रह सकी। अल्पावस्था में ही मोतीचंद पितृच्छाया-विहीन हो गये। फलतः मामा और मौसी के घर उनका लालन-पालन हुआ। मराठी की चौथी कक्षा तक अध्ययन करने के बाद पेट भरने के लिए उन्हें किसी पुरानी मिल में मजदूरी का काम करना पड़ा, पर ऐसी प्रतिकूल परिस्थितियों में भी ज्ञान की प्यास जागृत रही, कुछ-कुछ अध्ययन वे करते ही रहे। व्यायाम, तैरना, लाठी चलाना आदि के साथ-साथ देशभक्तों के चरित्रों को पढ़ने का उन्हें विशेष शौक था। देश की क्रान्ति से सम्बन्धित अनेक गीत-कवितायें उन्हें मुखाग्र थीं।

इसी बीच दुधनी से पढ़ाई के लिए सोलापूर आकर रह रहे बालक देवचन्द्र (जो बाद में समन्तभद्र महाराज बने) से मोतीचंद की मुलाकात हो गई। मुलाकात मित्रता और मित्रता प्रगाढ़ता में परिणत हुई। इस समय महाराष्ट्र में लोकमान्य तिलक द्वारा प्रारम्भ किये गये 'स्वदेशी आन्दोलन' का बहुत बोलबाला था। जन-सामान्य, विशेषतः युवा मन पर उसका गहरा प्रभाव पड़ा था। जगह-जगह सभायें होती थीं, जिनमें स्वतन्त्र भारत की घोषणा और 'वन्दे मातरम्' का जयघोष होता था।

बालक मोतीचंद और देवचंद इन समारोहों में अक्सर जाया करते थे। इन्हीं दिनों उनकी मुलाकात एक तीसरे साथी श्री रावजी देवचंद से हुई। तीनों ने मिलकर 'जैन बालोत्तेजक समाज' की स्थापना की और शुक्रवार पीठ के बड़े मंदिर के पीछे देहलान में बालकों के इकट्ठा होने का स्थान निश्चित हुआ। हरिभाई देवकरण और उनके भाई जीवराज जी भी इसमें मिल गये। धीरे-धीरे चालीस-पचास विद्यार्थियों का संगठन बन गया।

आपस में पुस्तकों के आदान-प्रदान व साप्ताहिक सभाओं आदि से विद्यार्थियों का उत्साह बढ़ता गया। मोतीचंद अपनी वाक्‌पटुता, निर्भीकता और गंभीर गर्जना के कारण अनायास ही इनके नेता बन गये। वे विद्यार्थियों के बीच देश-विदेश में घटने वाली घटनाओं और आदोलनों के बारे में बताते थे। मोतीचंद और देवचंद अकेले में बैठकर आंदोलन के बारे में सोचते थे। इनके बैठने के स्थान श्री कस्तूरचंद बोरामणीकर तथा कभी-कभी रावजी देवचंद के घर हुआ करते थे। विदेशी-वस्त्रों का उपयोग नहीं करना, विदेशी शक्कर नहीं खाना आदि प्रतिज्ञायें ये लोग किया करते थे। सोलापूर की देखा-देखी अन्य स्थानों पर भी 'जैन बालोत्तेजक समाज' की स्थापना हुई।

1906 के आसपास लोकमान्य तिलक स्वदेशी का प्रचार करने के लिए सोलापूर आये। एक स्वयं सेवक के नाते मोतीचंद उनसे मिले और इकट्‌ठी की गयी कमाई स्वदेशी प्रचार के लिए तिलक जी को समर्पित कर दी, साथ ही अपने 'बालोत्तेजक समाज' की स्थापना की जानकारी तिलक जी को दी। इसी समय तिलक जी के कर-कमलों से मैकेनिक थियेटर में 'बालोत्तेजक समाज' की विधिवत् स्थापना हुई।

मोतीचंद, देवचंद और उनके अधिकांश साथियों का जन्म जैनकुल में हुआ था। पारिवारिक संस्कार जैन धर्म से आप्लावित थे। भोगों के प्रति विरक्ति स्वाभाविक ही थी। एक दिन मोतीचंद ने आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत लेने का विचार अपने मन में किया और अपने लंगोटिया यार देवचंद को बताया। 'जीवन की साधना के बीच ब्रह्मचर्य ही उत्तम साधना है।' इसका विश्वास मोतीचंद से पहले देवचंद को हो चुका था, अतः उन्होंने मोतीचंद के विचारों का अन्तःकरण से स्वागत किया और कुन्थलगिरि जाकर बाल ब्रह्मचारी देशभूषण, कुलभूषण भगवान् के चरणों में एक-दूसरे की साक्षी पूर्वक ब्रह्मचर्य व्रत ले लिया।

1910 के आसपास रावजी देवचंद मैट्रिक परीक्षा उत्तीर्ण कर शिक्षा प्राप्ति हेतु बम्बई के विल्सन कॉलेज में चले गये। बाद में उन्होंनें फर्ग्यूसन कॉलेज, पूना में शिक्षा प्राप्त की। मोतीचंद ने अपने ज्ञानार्जन की हवस दिन-रात किताबें पढ़कर ही पूरी की। इसी बीच 'दक्षिण महाराष्ट्र जैन सभा', सांगली के अधिवेशन का समाचार मोतीचंद ने पढ़ा और जाना कि प्रमुख व्यक्ति के रूप में जयपुर के पंडित अर्जुन लाल सेठी आ रहे हैं। सभा का अधिवेशन शोलापुर के श्री हीराचंद अमीचंद गाँधी की अध्यक्षता में होने वाला था। सेटी जी के बारे में उन दिनों बड़ी ख्याति फैल चुकी थी कि वे बी०ए० तक लौकिक शिक्षा प्राप्त अत्यन्त बुद्धिमान्, प्रतिभासम्पन्न, ओजस्वी वक्ता, लेखक, पत्रकार, अर्थसम्पन्न, धार्मिक ज्ञान प्राप्त, जैन शिक्षा प्रचार समिति नामक शिक्षण संस्था तथा बोर्डिंग चलाने वाले व्यक्ति हैं। उनसे मिलने की अभिलाषा लिये मोतीचंद और देवचंद सांगली अधिवेशन में उपस्थित हुए। सेठी जी का समाज और राष्ट्र-सेवा की भावना से ओत-प्रोत व्याख्यान सुनकर दोनों तरुणों ने विचार किया कि हमारी आशा-अपेक्षायें इनके पास रहकर पूर्ण हो सकती हैं। दोनों ने अपने विचार सेठी जी को बताये, सेठी जी ने जयपुर आने को कहा।

सब लोग एक साथ जयपुर पहुँचने की अपेक्षा धीरे-धीरे पहुँचे, ऐसा विचार कर तय हुआ कि पहिले देवचंद और माणिकचंद पहुँचे, बाद में मोतीचंद अन्य साथियों के साथ पहुँचेंगे। योजनानुसार तीनों जयपुर पहुँचे, साथ में श्री बालचंद शहा आदि भी थे। जयपुर की उक्त संस्था में कुछ राजपूत विद्यार्थी भी थे। राजस्थान के प्रसिद्ध क्रान्तिकारी केशरी सिंह बारहठ के दो तेजस्वी बालक प्रताप सिंह एवं जोरावर सिंह भी वहाँ पढ़ते थे।

इसी बीच सेठी जी की मुलाकात पं० विष्णुदत्त शर्मा से हुई। शर्मा जी स्थान-स्थान पर पहुँचकर सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध व्याख्यान देने वाले एक सीधे-साधे ब्राह्मण उपदेशक जान पड़ते थे, किन्तु वास्तव में उनका कार्य था देश के स्वाधीनता युद्ध के लिए सैनिकों की भरती करना। अपने इस कार्य की पूर्ति के लिए शर्मा जी भिन्न-भिन्न स्कूलों/कालेजों और गुरुकुलों/पाठशालाओं में घूमा करते थे। इन स्थानों पर उन्हें जो भी ऐसा युवक दिखाई देता, जिसके नेत्रों में दीप्ति और मुख पर दृढ़ता होती, उसी को वे अपने पंथ में दीक्षित कर लिया करते थे।

इसी प्रकार घूमते-घामते वे एक दिन जयपुर के उक्त विद्यालय में पहुँचे, सेठी जी से मुलाकात हुई, दोनों का रास्ता एक था, दोनों ने एक दूसरे को पहिचाना, एक दूसरे की भावनाओं को अनुभव किया और परस्पर गहरे मित्र हो गये। शर्मा जी विद्यालय में क्रान्तिकारी व्याख्यान देने लगे, जो विद्यार्थियों के हृदय में भारी उथल-पुथल मचाते थे।

शर्मा जी और सेठी जी के मुख से देश की दुर्गति का हाल सुन-सुन कर इन नवयुवकों का हृदय क्षोभ और वेदना से भरता गया। उन्होंने भारत माँ को स्वतन्त्र कराने का बीड़ा उठाया और क्रान्तिकारी दल में सम्मिलित होने का निश्चय किया। ग्रीष्मावकाश में बारहट जी के ग्राम में जाकर गोली चलाना, लाठी चलाना आदि की शिक्षा इन नवयुवकों ने ली और क्रान्तिकारी दल में सम्मिलित हो गये।

उस समय क्रान्तिकारी दल का काम अर्थाभाव के कारण ठप्प होता जा रहा था। अतः इन युवकों ने किसी देशद्रोही धनिक को मारकर धन लाने का निश्चय किया। बंगाल में ऐसी घटनाओं का उदाहरण इनके सामने था ही। तय हुआ कि 'निमेज' जिला-शाहाबाद (बिहार) के महन्त का धन हस्तगत किया जाये। इस काम के अगुआ थे पं० विष्णुदत्त शर्मा। अन्य लोगों में थे जोरावार सिंह, मोतीचंद, माणिकचंद और जयचंद। जोरावर सिंह ने ऐन मौके पर स्वयं न जाकर अपने एक साथी को भेज दिया। यद्यपि योजना यह थी कि 'महन्त के मुँह में कपड़ा भरकर चाबी ले ली जाये और तिजोरी से माल निकालकर भाग आया जाये।' किन्तु वहाँ जाकर इन लोगों ने महन्त को मार दिया और चाबी ले ली। दुर्भाग्य! कि तिजोरी खोलने पर वह खाली मिली। यह घटना 20 मार्च 1913 की है। घटना के बाद डकैतों की छानबीन हुई, पर कुछ पता नहीं चल सका। इधर जयपुर के विद्यालय की हालत खस्ता होने लगी थी।

इस घटना के कुछ दिनों बाद ही सेठी जी जयपुर का विद्यालय छोड़कर इन्दौर चले गये और वहाँ त्रिलोकचंद जैन हाई स्कूल में काम करने लगे। यहाँ पर उनके साथ शिव नारायण द्विवेदी नामक एक युवक भी रहता था। एक दिन अकस्मात् ही इन्दौर की पुलिस ने इस युवक की तलाशी ली तो उसके पास कुछ क्रान्तिकारी पर्चे निकले। युवक को गिरफ्तार कर लिया गया, उसी से पुलिस को जयपुर के विद्यालय में संगठित क्रान्तिकारी दल तथा निमेज के महन्त की हत्या का सुराग हाथ लग गया।

इधर मोतीचंद सेठी जी के साथ रोजाना की तरह घूमने निकले। मोतीचंद ने सेठी जी से प्रश्न किया 'यदि जैनों को प्राण-दण्ड मिले, तो वे मृत्यु का आलिंगन कैसे करें।' सेठी जी ने इसका उत्तर दिया ही था कि पुलिस ने घेरा डालकर दोनों को गिरफ्तार कर लिया। अब सेठी जी की समझ में आया कि मोतीचंद ऐसा प्रश्न क्यों कर रहा था। बाद में पं० विष्णुदत्त शर्मा, माणिकचंद आदि को भी गिरफ्तार कर लिया गया।

अर्जुन लाल सेठी का नाम दिल्ली बम षड्यन्त्र में होने से वे सरकार की नजरों में पहले ही चढ़े थे, पर ठोस सबूत न होने से पुलिस उन्हें गिरफ्तार नहीं कर पा रही थी। उनके गिरफ्तार होते ही हलचल मच गई। मोतीचंद की ओर से केस लड़ने के लिए उनके मामा माणिक चंद ने सोलापूर से कुछ फण्ड इकट्ठा किया। श्री अजित प्रसाद एडवोकेट से सलाह ली गई, अन्त में सेशन कार्ट ने उन्हें फाँसी की सजा सुना दी। उच्च न्यायालय में अपील की गई पर वहाँ भी सजा को बरकरार रखा गया। पं० विष्णुदत्त शर्मा को 10 वर्ष के कालापानी की सजा मिली। अर्जुन लाल सेठी को यद्यपि सबूत के अभाव में दण्ड नहीं दिया जा सका, पर उन्हें जयपुर लाकर जेल में डाल दिया गया। विधि की विडम्बना देखिये कि जयपुर सरकार ने न तो उन्हें मुक्त ही किया और न ही उनके अपराध की सूचना ही उन्हें दी गई। अन्त में वे बेलूर जेल भेज दिये गये, जहाँ पर उन्होंने दर्शन और पूजा के लिए जैन मूर्ति न दिये जाने के कारण छप्पन दिन का निराहार व्रत किया।

मोतीचंद जी ने जेल से अपने अंतिम दिनों में रक्त से एक पत्र* अपने मित्रों के नाम लिखा था। फाँसी से पूर्व जब उनकी अंतिम इच्छा पूछी गई तो उन्होंने कहा कि 'प्रथम मुझे फाँसी से पूर्व जैन प्रतिमा के दर्शन कराये जायें, द्वितीय मुझे दिगम्बर (नग्न) अवस्था में फाँसी दी जाये।' पर यह जेल के नियमों के प्रतिकूल होने के कारण सम्भव नहीं हुआ। फाँसी से पूर्व उनका वजन 10-11 पौण्ड बढ़ गया था। मोतीचंद जी के एक साथी सोलापूर निवासी श्री बालचंद नानचंद शहा, जो फाँसी के समय वहाँ मौजूद थे, ने उन्हें प्रात: 4 बजे से पूर्व ही भ० पार्श्वनाथ की मूर्ति के दर्शन करा दिये थे। सामायिक और तत्त्वार्थसूत्र का पाठ मोतीचंद जी ने किया और समाधिमरण का पाठ बालचंद जी ने सुनाया था। 'Who's who of Indian Martyrs, Vol. I, Page 234' के अनुसार फाँसी की तिथि मार्च 1915 है।

1951 में व्याबर से प्रकाशित 'राजस्थानी आजादी के दीवाने' पुस्तक के लेखक श्री हरिप्रसाद अग्रवाल ने मोतीचंद के साहस के सन्दर्भ में लिखा है- 'केवल एक ही घटना से उसके साहस का पता चल जाता है, जब वह क्रान्तिकारी दल का नेतृत्व कर रहा था, उन्हीं दिनों उसका ऑपरेशन हुआ, डॉक्टर की राय थी कि ऑपरेशन क्लोरोफार्म सुंघाकर किया जाये, ताकि पीड़ा न हो। किन्तु वह तो पीड़ा का प्रत्यक्ष अनुभव करने को प्रस्तुत रहता था। उसकी जिद के कारण ऑपरेशन बिना बेहोश किये ही हुआ और उसने उफ तक न की। डॉक्टर भी दाँतो तले उंगली दबाकर रह गया।.........फाँसी की रस्सी का उसने प्रसन्नतापूर्वक आलिंगन किया और मृत्यु के समय तक बलिदान की खुशी में उसका वजन कई पौण्ड बढ़ चुका था।'(पृष्ठ 113-114)

श्री मोतीचंद और अर्जुन लाल सेठी के अन्य शिष्यों के सन्दर्भ में प्रसिद्ध विप्लववादी श्री शचीन्द्र नाथ सान्याल ने 'बन्दी जीवन', द्वितीय भाग, पृष्ठ-137 में लिखा है- 'जैन धर्मावलम्बी होते हुए भी उन्होंने कर्तव्य की खातिर देश के मंगल के लिए सशस्त्र विप्लव का मार्ग पकड़ा था। महन्त के खून के अपराध में वे भी जब फाँसी की कोठरी में कैद थे, तब उन्होंने भी जीवन-मरण के वैसे ही सन्धिस्थल से अपने विप्लव के

---

* यह पत्र मराठी भाषा में है, जो 'सन्मति', दिसम्बर 1952 के अंक में छपा है। (अंक हमारे पास सुरक्षित है) सम्पादकीय नोट के अनुसार यह पत्र उन्हें मोतीचंद के मित्र श्री वा०ना०शहा से प्राप्त हुआ था। 'हुतात्मा मोतीचंद' के लेखक ब्र० माणिकचंद ज०चवरे ने हमारे नाम अपने पत्र दि० 27.9.95 में भी यही लिखा है कि यह पत्र उन्हें श्री बालचंद नानचंद शहा से पढ़ने को मिला था। दि० 24-1-96 के पत्रानुसार चवरे जी ने यह पत्र स्वयं पढ़ा है, देखा है। पत्र के लिए चवरे जी ने बहुत प्रयत्न किया पर प्राप्त नहीं हो सका है। श्री बालचंद नानचंद शहा और श्री चवरे जी का भी देहावसान हो जाने से पत्र प्राप्ति प्राय: अशक्य लगती है।

साथियों के पास जो पत्र भेजा था, उसका सार कुछ ऐसा था -'भाई मरने से डरे नहीं, और जीवन की भी कोई साध नहीं है, भगवान् जब, जहाँ, जैसी अवस्था में रखेंगे, वैसी ही अवस्था में सन्तुष्ट रहेंगे।' इन दो युवकों में से एक का नाम था मोतीचंद और दूसरे का नाम था माणिकचन्द्र या जयचंद। इन सभी विप्लवियों के मन के तार ऐसे ऊँचे सुर में बँधे थे, जो प्राय: साधु और फकीरों के बीच ही पाया जाता है।' (द्र०-'जैन जागरण के अग्रदूत', पृष्ठ 366-67)

कैसा आत्म-सन्तोष, कैसी निश्चिन्तता और मृत्यु के प्रति कैसी निष्कपट उपेक्षा का भाव। यह किसी जैन धर्मानुयायी में ही सम्भव है।

सेठी जी अपने इस जांबाज और वफादार शिष्य को बहुत स्नेह करते थे, इनकी मौत पर उन्हें बहुत सदमा पहुँचा। मोतीचन्द्र की पवित्र-स्मृति में सेठी जी ने अपनी कन्या का विवाह महाराष्ट्र के एक युवक से इस पवित्र भावना से कर दिया था कि 'मैंने जिस प्रान्त और जिस समाज का सपूत देश को बलि चढ़ाया है, उस प्रान्त को अपनी कन्या अर्पण कर दूँ। सम्भव है उससे भी कोई मोती जैसा पुत्ररत्न उत्पन्न होकर देश पर न्योछावर हो सके।'

मोतीचंद के जयपुर विद्यालय के सहपाठी और जेल-जीवन के साथी, सम्प्रति बम्बई प्रवासी, श्री कृष्णलाल वर्मा ने 'अमर शहीद श्रीयुत् मोतीचंद शाह के संस्मरण' शीर्षक से अनेक संस्मरण लिखे हैं, जो 'क्रान्तिवीर हुतात्मा मोतीचंद' पुस्तक में पृष्ठ 45 से 73 तक छपे हैं। 'सन्मति' (मराठी) के अगस्त 1957 के अंक में भी ये संस्मरण छपे हैं। उनमें से कुछ संस्मरण यहाँ प्रस्तुत हैं।

मोतीचंद ने विद्यार्थी जीवन में, जब वे क्रान्तिकारियों में शामिल हो गये थे, पर्युषण में दस उपवास किये थे। जेल में वर्मा जी ने पूछा-'आपने उपवास क्यों किये थे?' मोतीचंद ने कहा-'ऐसा तो कोई नियम नहीं है कि राष्ट्रीय कार्यकर्ता धर्म कार्य न करें और यदि दूसरी दृष्टि से देखा जाये तो ये धार्मिक व्रत, उपवास उस कठोर जीवन के लिए तैयारी ही हैं, जो राष्ट्रीय सेवक के लिए आवश्यक हैं। राष्ट्रसेवक को, जो षड्यन्त्रकारी पार्टी का सदस्य हो, हर तरह की तकलीफ सहन करने की आदत डालना चाहिए। उसे भूख, प्यास, सर्दी, गर्मी, मार या और भी सभी तरह के दु:ख, जिनकी सम्भावना हो सकती है, हँसते- हँसते सहने की आदत होना चाहिए। जैनधर्म में जो बाईस परीषह बताये गये हैं, उन सभी को जो सानन्द सहता है और राष्ट्र को आजाद करने के काम में लगा रहता है, वही सच्चा राष्ट्र सेवक है, वही सच्चा साधु है, वही सच्चा त्यागी है।' (पृष्ठ-60)

वर्मा जी के यह पूछने पर कि महन्त के समान निर्दोष व्यक्तियों को मारने से क्या मिलता है? मोतीचंद ने कहा-'पार्टियाँ चलाने के लिए धन की जरूरत है। वह धन ऐसे व्यक्तियों से ही जबरदस्ती मारकर या लूट कर प्राप्त किया जा सकता है। यह माना कि ऐसे लोग सीधे किसी अपराध के अपराधी नहीं होते, परन्तु उनका यह अपराध क्या कम है कि वे देश के काम के लिए धन नहीं देते। अगर कोई सरकारी अधिकारी इनके पास जाता है तो बड़ी खुशी से उनके लिए थैली का मुँह खोल देते हैं, परन्तु देशभक्त की बात छोड़ो, किसी गरीब और लाचार आदमी को भी दो पैसे निकालकर देते इनकी त्योरियों पर बल पड़ जाता है।'

मैंने पूछा - 'देश में लाखों धनवान तो हैं, फिर बेचारे महंत को ही आप लोगों ने क्यों पसन्द किया?'

उन्होंने कहा-'बड़े काम को सिद्ध करने के लिए अनेक ऐसे काम भी करने पड़ जाते हैं, जिनका करना सामान्यतया अपराध या अनुचित माना जाता है। जिन्होंने राज्य स्थापित किये हैं, उन्होंने सैकड़ों ही नहीं हजारों निर्दोषों की जानें ली थीं। इतिहास इस बात का साक्षी है। परन्तु आज तक क्या किसी इतिहासकार ने यह लिखा कि उन्होंने अनुचित काम किया था। समय आयगा तब हमारे काम भी उत्तम समझे जायेंगे।' (पृष्ठ-68)

(फाँसी से पूर्व) मैंने (वर्मा जी ने) पूछा-'अपने साथियों को या देशवासियों को कुछ सन्देश देना चाहते हैं?'

वे बोले -''मेरा फाँसी पर लटकना ही मेरा सन्देश होगा। मुझे फाँसी क्यों हुई? इसका कारण जानकर देशभक्त लोग कहेंगे, 'एक निर्दोष मारा गया', अंग्रेज के गुलाम कहेंगे- 'जैसा किया वैसा पाया'। सम्भव है कुछ जैनी लोग कहेंगे, 'जैनियों की नाक कटवा दिया।' पर जवान लोग, जिनके खून गरम हैं और जो अपनी जननी-जन्मभूमि से प्यार करते हैं, कुछ न बोलेंगे, मन ही मन संकल्प करेंगे कि, हम जब तक इस खून का बदला न लेंगे, अंग्रेजों को भारत से न निकालेंगे, तब तक चैन से न बैठेंगे।' उनकी यह प्रतिज्ञा मुझे स्वर्ग में भी संतोष देगी।'' (पृष्ठ-72)

आ0:- (1)Who's. who of Indian Martyrs. vol.1, Page 234 (2)जै0 स0 रा0 अ0 (3)जैन जागरण के अग्रदूत, (4) क्रान्तिवीर हुतात्मा मोतीचन्द्र (5)सन्मति (मराठी), दिसम्बर 1952 तथा अगस्त 1957 के अंक (6) राजस्थानी आजादी के दीवाने,पृष्ठ बी० 113-114 (7) पं० माणिक चंद जी चंवरे, कारजां के अनेक पत्र।

अहिंसक युद्ध

'अहिंसक युद्ध' परस्पर विरोधी बात लगती है यह, पर इतिहास में एक ऐसा भी युद्ध हुआ जो पूर्णतः अहिंसक था। ऋषभदेव वैराग्य धारण कर जब तपस्यार्थ वन चले गये तब उनके दो पुत्रों भरत और बाहुबली के बीच राज्य विस्तार की सीमा को लेकर युद्ध की तैयारियाँ होने लगीं। दोनों ओर की सेनाएँ आमने-सामने खड़ी हो गईं। तब दोनों पक्षों के मंत्रियों ने परस्पर विचार किया कि ये दोनों भाई बलिष्ठ हैं, अत: क्यों न आपस में लड़कर हार-जीत का निर्णय कर लें, व्यर्थ सेना क्यों मारी जावे। मंत्रियों का प्रस्ताव मान दोनों में मल्ल, जल और दृष्टि युद्ध हुए, जिनमें बाहुबली विजयी हुए, पर उन्होंने जीतकर भी सन्यास ले लिया। अहिंसा के बल पर स्वराज्य प्राप्ति से इस घटना का औचित्य सिद्ध हो जाता है।

अमर शहीद सिंघई प्रेमचंद जैन

दमोह (म0प्र0) जिले के एक छोटे से ग्राम सेमरा बुजुर्ग में उस दिन प्रेम की बरसात होने लगी, सारे गांव में सुख छा गया, जिस दिन भारतमाता से प्रेम करने वाले अमर शहीद प्रेमचंद का जन्म सिंघई सुखलाल एवं माता सिरदार बहू के आंगन में हुआ।

सिंघई प्रेमचंद जैन बचपन से ही उत्साही, लगनशील, निर्भीक, प्रतिभाशाली एवं होनहार युवक थे। सुखलाल जी की आर्थिक स्थिति बहुत अच्छी नहीं थी। फिर भी बालक प्रेमचंद को उन्होंने प्राथमिक शिक्षा के बाद माध्यमिक कक्षाओं में पढ़ने के लिए दमोह के महाराणा प्रताप हाईस्कूल में भेज दिया।

दिसम्बर 1933 में पूज्य महात्मा गांधी का दमोह नगर में आगमन हुआ। प्रेमचंद 16 कि0मी0 चलकर उनका भाषण सुनने दमोह आये, कहते हैं इसके बाद वे लौटकर गांव नहीं गये और दमोह में ही आजादी के महायज्ञ में कूद पड़े। जंगल सत्याग्रह, विदेशी कपड़ों का बहिष्कार, मादक वस्तुओं के विक्रय केन्द्रों पर धरना, नमक सत्याग्रह, झण्डा फहराना आदि साहसिक कार्यों में भाग लेने के परिणामस्वरूप सिंघई जी को स्कूल से निकाल दिया गया। तब आप खादी प्रचार, अछूतोद्धार और गांव-गांव में डुग्गी बजाकर गांधी जी के सन्देशों का प्रचार करने लगे। देशभक्ति की ऐसी लगन देखकर श्री रणछोड़ शंकर धगट आपको गांधी आश्रम, मेरठ ले गये।

मेरठ में आप तीन वर्ष रहकर 1937 में लौटे और श्री प्रेम शंकर धगट, सिंघई गोकल चंद, श्री रघुवर प्रसाद मोदी, श्री बाबू लाल पलन्दी आदि के साथ सक्रिय एवं कर्मठ कांग्रेस कार्यकर्ता बन गये, जिससे स्थानीय प्रशासन आपके नाम से थर्राने लगा।

द्वितीय विश्वयुद्ध के प्रारम्भ होते ही, युद्ध में भाग लेने के लिए सैनिकों की जगह-जगह भर्ती होने लगी। दमोह भी इससे अछूता नहीं रहा। सागर के तत्कालीन डिप्टी कमिश्नर फारुख दमोह पधारे, उन्होंने टाउन हाल के प्रांगण में सेना में भर्ती हेतु जनसमुदाय को सम्बोधित किया। इस जनसमूह में लगभग 6 हजार श्रोतागण एकत्रित थे। रईस, जागीरदार, मालगुजार, तालुकेदार विशेष आमन्त्रण द्वारा बुलाये गये थे और उन्हें प्रथम श्रेणी की कुर्सियां प्राप्त थीं। अभी कमिश्नर का भाषण चल ही रहा था कि अचानक भीड़ में से सिंह-गर्जना करते हुए सिंघई प्रेमचंद ने कहा -'यह युद्ध हमारे देश के हित में नहीं है, हमें कोई मदद नहीं करना है, युद्ध ब्रिटिश राज्य की सुरक्षा के लिए लड़ा जा रहा है, हम इसका बहिष्कार करते हैं।'

इस ललकार से डिप्टी कमिश्नर क्रोध से आग-बबूला हो गया। उसके आदेश से तत्कालीन पुलिस इंस्पेक्टर श्री जगदीश अवस्थी ने प्रेमचंद जी को गिरफ्तार कर लिया। पर यह क्या ? प्रेमचंद जी के गिरफ्तार होते ही जनसमुदाय उखड़ गया। सभा में गड़बड़ी उत्पन्न हो गई। जनसमुदाय की उत्तेजना देख डिप्टी कमिश्नर ने तत्काल प्रेमचंद को मंच पर बुलाया और कहा- 'इन्हें गिरफ्तार नहीं किया गया है, इन्हें तो मैंने अपने पास बुलाया था, अब ये भाषण देंगे।'

प्रेमचंद जी ने अपने भाषण में कहा - 'भाइयो ! यह युद्ध ब्रिटिश सरकार की सुरक्षा के लिए लड़ा जा रहा है। इसमें देशवासियों का हित नहीं है। यह फिरंगियों की चाल है। अत: कोई सेना में भर्ती नहीं होना और न इन्हें आर्थिक मदद ही करना।' इस सम्बोधन के पश्चात् जनसमूह ने 'सिंघई प्रेमचंद जिन्दाबाद', 'प्रेमचंद की जय' के नारों के साथ आपको कन्धों पर उठा लिया और गांधी चौक में ले आये, यहाँ जनता फिर

आमसभा के रूप में परिणत हो गई। डिप्टी कमिश्नर पुलिस बल के संरक्षण में किसी तरह जान बचाकर भागा।

महात्मा गांधी द्वारा चलाये गये व्यक्तिगत आन्दोलन में प्रेमचंद जी ने 14 जनवरी 1941 को हटा तहसील के प्रसिद्ध मेला 'सरसूमा' में, जहाँ अत्यधिक जनसमुदाय संक्रान्ति के पर्व के कारण एकत्रित होता है, सत्याग्रह किया। ब्रिटिश शासन के विरोध में उन्होंने ओजस्वी भाषण देने के बाद युद्ध विरोधी नारे लगाये, परिणामस्वरूप आपको गिरफ्तार कर दमोह लाया गया। मि0 राजन न्यायाधीश के न्यायालय में मुकदमा चला, आपको 4 माह के कारावास की सजा दी गई और सागर जेल भेज दिया गया। कुछ दिन बाद आपको नागपुर जेल में स्थानान्तरित कर दिया गया।

इसे 'विधि की बिडम्बना कहें या सिंघई जी को भारत माँ की स्वाधीनता की बलिवेदी पर प्राणोत्सर्ग करने का सौभाग्य !' जिस डिप्टी कमिश्नर फारुख को प्रेमचंद जी के कारण दमोह से जान बचाकर भागना पड़ा था, वही स्थानान्तरित होकर नागपुर जेल में पहुंच गया। जेल में निरीक्षण के समय उसने सिंघई जी को देखा, पूर्व स्मृतियां उद्‌बुद्ध हो गई, फारुख आग-बबूला हो गया, उसे लगा 'शिकार आज जाल में स्वयं फंसा पड़ा है, अब देखूंगा इसे, निकालूंगा इसका आजादपना, ऐसी मौत मारूंगा जो किसी को पता भी न चले।'

उस समय प्रेमचंद जी के कारावास की अवधि कुछ ही शेष रह गई थी। डिप्टी कमिश्नर ने उन्हें पहले ही जेल से मुक्त कर दिया। अन्तिम दिन विशेष आग्रह पूर्वक उन्हें भोजन कराया गया। सिंघई जी क्या समझते कि- 'जिस भोजन को वे प्रेमपूर्वक कर रहे हैं, उसमें उनकी मृत्यु उन्हें परोसी गई है।' उन्हें नागपुर से दमोह जाने के लिए टिकटादि की व्यवस्था कर ट्रेन में बैठा दिया गया। ज्यों-ज्यों रास्ता बीतता गया, उनके शरीर में कमजोरी आती गई।

इधर दमोह में पता चला कि 'सिंघई जी को मुक्त कर दिया गया है, और वह ट्रेन से दमोह आ रहे हैं', जनता स्वागत के लिए स्टेशन की ओर दौड़ पड़ी। भव्य स्वागत की तैयारियां होने लगीं। भाषण के लिए मंच बनाया जाने लगा। तय समय पर ट्रेन स्टेशन पर रुकी। पर यह क्या ? प्रेमचंद जी को पहचानना भी भारी हो रहा था। प्रेमचंद, प्रेमचंद नहीं लग रहे थे। जनता का सारा उत्साह ठण्डा पड़ गया, स्वागत- सम्मान के सारे आयोजन रद्द कर दिये गये।

जैसे-तैसे उन्हें घर पहुंचाया गया। क्षण-क्षण उनका शरीर कृश होता गया। नगर के सभी चिकित्सकों ने मुआयना किया और एक मत से निर्णय दिया कि-'इन्हें दिया गया विष शरीर में इतना फैल चुका है कि इसे दवाइयों द्वारा हटा पाना असम्भव है।' 9 मई 1941 (कुछ पुस्तकों में उनके निधन की तिथि 6 अप्रैल 1941 दी गई है) के सायं 7 बजे का क्रूर काल भी आ पहुंचा। संध्या की रक्तिम आभा फैलने लगी, सूर्य अस्ताचल की ओर जा रहा था, मानो सोच रहा हो, 'भारत माँ के इस वीर सपूत का अवसान मैं नहीं देख पाऊंगा, मैं भले ही अस्त हो जाऊँ।' भारत माँ का यह पूत सदा-सदा के लिए चला गया।

दावाग्नि की तरह पूरे शहर में यह समाचार फैल गया । दमोह और आस-पास की जनता एकत्रित हो गई। सभी ने अश्रुपूरित नेत्रों से उन्हें अन्तिम विदाई दी। धू-धू कर चिता जलने लगी। सिंघई जी मरकर भी अमर हो गये, वे अपने यश: शरीर से आज भी जीवित हैं। जैन समाज ही नहीं, पूरा देश उनकी शहादत से गौरवान्वित है। मध्यप्रदेश के स्वतंत्रता संग्राम सैनिक, खण्ड 2, पृष्ठ 77 पर लिखा है- 'भारत छोड़ो' आन्दोलन

के समय भी दमोह की जनता ने स्वतंत्रता के संघर्ष में अपने दो नवयुवकों का बलिदान देकर आजादी के दीप को प्रज्वलित किया। सिंघई प्रेमचंद और यशवंत सिंह नामक वे दो युवक हैं, जो दमोह में आजादी के संघर्ष में शहीद हो गये।'

25 अगस्त 1992 को मध्य प्रदेश के आवास एवं पर्यावरण राज्यमंत्री श्री जयन्त कुमार मलैया ने दमोह की एक सभा में घोषणा की थी कि- 'अमर शहीद यशवन्त सिंह और प्रेमचंद की मूर्तियां इसी साल दमोह में म0प्र0शासन के खर्चे से लगेंगी।' (देखें 'जनसत्ता' नई दिल्ली, 26 अगस्त 1992)

आ0- (1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग 2, पृष्ठ 85 तथा 77 (2) श्रद्धा सुमन, स्मारिका- युवक क्रान्ति संगठन, दमोह (3) श्री संतोष सिंघई एवं श्री प्रेमचंद विद्यार्थी, दमोह, द्वारा प्रेषित परिचय (4) शहीद गाथा, पृष्ठ 25-27 (5) प0 जै0 इ0, पृ0 517 (6) जनसत्ता, नई दिल्ली, 26 अगस्त 1992 (7) नवभारत, इन्दौर, 27-8-1997

❑❑❑

हमारा गौरव

पाठशाला में फर्नीचर बनाने का काम चल रहा था। कुछ लकड़ी के टुकड़े यहां-वहां पड़े थे, उनको उठाकर पं0 गोपालदास जी बरैया की पत्नी ने एक चौकी बनवा ली। पं0 जी ने पूछा-'यह चौकी कहां से आई?' पत्नी ने कहा 'लकड़ी के फालतू टुकड़े पड़े थे, उनकी बनवा ली है।' पं0 जी ने कहा 'वह लकड़ी तो पाठशला की थी।' इतना कहकर उन्होंने मजदूर की मजदूरी और लकड़ी के दाम पाठशाला में जमा करा दिये।

छप्पन दिन का निराहार व्रत

श्री अर्जुन लाल सेठी को उनके अपराध की सूचना दिये बिना जयपुर जेल में बंद कर दिया गया, बाद में बैलूर जेल भेज दिया गया, जहां उन्होंने दर्शन और पूजा के लिए जैन मूर्ति न दिये जाने के कारण छप्पन दिन का निराहार व्रत किया।

अमर शहीद वीर साताप्पा टोपण्णावर

'विजयी विश्व तिरंगा प्यारा।
झण्डा ऊँचा रहे हमारा।।'

श्री श्यामलाल पार्षद द्वारा रचित यह गीत हमारे स्वतंत्रता आन्दोलन का प्रेरणा-गीत बना था। इस गीत को गाते हुए न जाने कितने नौजवान आजादी के आन्दोलन में कूद पड़े थे। अपने झण्डे को ऊँचा रखने के लिए ही तो हमारे शहीदों ने अपनी कुर्बानियाँ दीं थीं। तिरंगा आज भी हमारे स्वाभिमान का प्रतीक है। यही तिरंगा राष्ट्र-ध्वज हमारी कीर्ति को दिग्-दिगन्त व्यापिनी बनाता हुआ आज भी शान से लहरा रहा है।

'इसकी शान न जाने पाये।
चाहे जान भले ही जाये।।'

यह मूल-मंत्र आज भी हमें राष्ट्र-ध्वज पर मर-मिटने की प्रेरणा देता है। इसी राष्ट्र-ध्वज के सम्मान की रक्षा के लिए अमर शहीद वीर साताप्पा टोपण्णावर ने अपनी जान की परवाह न करते हुए इसकी शान को बनाये रखा था।

दक्षिण भारत के कर्नाटक राज्य का एक छोटा सा ग्राम है 'कडवी शिवापूर'। मात्र 1500 लोगों की आबादी वाला यह ग्राम बेलगाँव जिले की मुरगुड तहसील में आता है। 'हमारे स्वतन्त्रता-आन्दोलन के नायक केवल शहरी ही नहीं रहे, निपट ग्रामीण क्षेत्र के शहीदों / क्रान्तिकारियों / स्वतन्त्रता सेनानियों ने भी इस आजादी-लता को अपने रक्त से सींचा है' इस उक्ति को चरितार्थ करने वाले साताप्पा का जन्म इसी कडवी शिवापूर में एक सामान्य जैन किसान परिवार में 1914 में हुआ। उनके पिता का नाम भरमाप्पा था।

साताप्पा उन दिनों मात्र 16 वर्ष का था, तभी 1930 का असहयोग आन्दोलन शुरू हुआ। इस आन्दोलन में जगह-जगह स्वयं सेवक संघ बनाये जा रहे थे। बालक साताप्पा ने भी अपना नाम मुरगुड के एक दल में लिखा दिया और यहीं से शुरू हुई उसकी क्रान्तिकारी यात्रा, जिसने 1942 में देश के लिए अपना सर्वस्व समर्पण कराकर ही विराम लिया।

राष्ट्रीय जन-जागरण के लिए साताप्पा निरन्तर गतिशील रहे। पास-पड़ौस के ग्रामों में जन-जागरण का सन्देश पहुँचाने का काम उन्हें सदैव सौंपा जाता रहा। धीरे-धीरे अपने गाँव कडवी शिवापूर के लोगों को तैयार कर उन्होंने एक 'स्वयं सेवक पंथ' बना लिया। यह पंथ रोज कोई न कोई कार्यक्रम करता था, जिससे जन-चेतना जागृत रहे। रोज रात्रि में बैठकर कार्यक्रमों की रूपरेखा बनाई जाती थी। सरकारी अधिकारियों को इसकी खबर लगना स्वाभाविक था। साताप्पा को अनेक बार अनेक तरह की धमकियां दी गईं, तरह-तरह से डराया गया, पर वे रुके नहीं। 1940 में वे दो बार जेल में बन्द कर दिये गये, पर इससे भी उनके उत्साह में कोई कमी नहीं आई, अपितु दिन-प्रतिदिन उनकी देश-प्रेम की भावना उग्र और दृढ़ होती गई। सन्मति (मराठी), अगस्त 1957 लिखता है -'सुमारे अट्ठाबीस वर्षाचा भरदार छातीचा ऊँचा पुरा उत्साही नि पाणीदार साताप्पा कडवी शिवापूरचंच नव्हे तर मुरगुड महालाच भूषण व स्फूर्ति-स्थान बनला होता।' अर्थात् करीब 28 साल का चौड़े सीने का ऊँचा-पूरा उत्साही व पानीदार (तेज या उग्र स्वभावी) साताप्पा केवल कडवी शिवापूर का ही नहीं मुरगुड का भी भूषण था।

अगस्त 1942 के 'भारत छोड़ो आन्दोलन' में 9 अगस्त को बापू ने 'करो या मरो' की घोषणा की और वे बन्दी बना लिये गये, साथ ही सभी राष्ट्रीय स्तर के नेता भी बन्दी बना लिये गये, तो जनता अपने विवेक

के अनुसार आन्दोलन चलाने लगी। जगह-जगह जुलूस, गिरफ्तारियाँ, धरना आम बात हो गई। इस आन्दोलन की यह विशेषता थी कि यह छोटे से छोटे गाँवों तक में फैल गया था। तब कडवी शिवापूर इससे अछूता कैसे रहता।

12 अगस्त 1942 को गाँव के लोगों ने साताप्पा के नेतृत्व में एक जुलूस निकाला। निपट देहाती भी अब 'स्वराज्य' जैसे सम्मानपूर्ण शब्दों का अर्थ जानने लगे थे, वे जानते थे कि स्वराज्य का अर्थ है, ग्राम की स्वतन्त्रता, प्रदेश की स्वतन्त्रता, देश की स्वतन्त्रता और स्वयं हमारी स्वतन्त्रता। जुलूस ने स्थानीय ग्राम-पंचायत (मराठी भाषा में चावडी) पर पहुँच कर एक सभा का रूप ले लिया, सभा के अन्त में 'ग्राम-स्वातन्त्र्य' की घोषणा की गई और ग्राम- पंचायत के ऊपर तिरंगा ध्वज फहरा दिया गया। ग्राम-पंचायत में जितने भी दस्तावेज थे, उन पर कब्जा कर लिया गया और वहाँ नियुक्त सरकारी कारिन्दों को पंचायत छोड़ने पर विवश कर दिया गया। बेचारे कर्मचारी जान बचाकर भागे।

सरकारी कर्मचारियों ने मुरगुड जाकर घटना की सारी जानकारी पुलिस-प्रशासन को दी। 15 अगस्त 1942 को पुलिस-प्रशासन ने लगभग 50 बन्दूकधारी और 10-15 लाठीधारी पुलिसवालों का दल बड़े सबेरे शिवापूर भेजा। इधर 50-60 युवकों की टोली सबेरे ही गाँव में साताप्पा के नेतृत्व में प्रभात-फेरी निकाल रही थी। गीत गाते और नारे लगाते युवकों का दल शान्तिपूर्वक ग्राम-पंचायत की ओर चला जा रहा था। दल के आगे साताप्पा राष्ट्रीय ध्वज लेकर चल रहे थे।

बन्दूकधारी पुलिस दल ने युवकों को घेर लिया। युवक दल ने अपने ऊपर संकट आया जानकर जोर से जयकारा लगाया - 'भारत माता की जय'। युवक जान रहे थे कि साक्षात् मृत्यु उनके सामने खड़ी है, फिर भी उनका उत्साह ठण्डा नहीं पड़ा, अपितु हृदय आनन्द से भर गया। शिवापूर की जनता इन युवकों का साथ दे रही थी। पाषाण हृदय सशस्त्र पुलिस-दानवों ने स्वातन्त्र्योत्सुक नि:शस्त्र मानवों पर क्रूर हास्य किया। बड़ा ही हृदय-द्रावक दृश्य था वह। एक पुलिस अधिकारी गरजा

'तुम्हारा झण्डा नीचे करो नहीं तो नाहक गोली खाओगे'

पर साताप्पा झुके नहीं, उन्होंने आवेशपूर्ण शब्दों में कहा-

'चाहे जान भले ही चली जावे, झण्डा नीचा नहीं करेंगे'

अंग्रेज अधिकारी इस उत्तर से और अधिक चिढ़ गया। उसने मजिस्ट्रेट का हुक्म दिखाया और गरज कर कहा-

'फिर कहता हूँ, नाहक मारे जाओगे, झण्डा नीचा करो'

वीर साताप्पा ने कड़ककर प्रत्युत्तर दिया-

'प्राण गेलातरी बेहेत्तर, पण झेंडा खाली घेणार नाही, घेऊँ देणार नाहीं'

इधर सारे युवक गर्जना करने लगे-

'तिरंगी झेंड्याचा विजय असो।
स्वतंत्र भारताचा विजय असो।।'

यह सुनकर अफसर आग-बबूला हो गया। साताप्पा ने ध्वज को अपने से अलग नहीं किया, न ही नीचे की ओर झुकाया। बौखला कर अंग्रेज अफसर ने गोली चलाने का आदेश दे दिया। धांय.....धांय....दो तीन गोलियां

चलीं, जो आगे खड़े साताप्पा को लगीं। उनकी छाती से रक्त की धार फूट पड़ी और मुँह से 'वन्दे मातरम्'। साताप्पा नीचे गिर पड़े। बालाप्पा आडिन, गुंडाप्पा पटगुंदी, सावंत जोडही, रुद्राप्पा मंगली, गंगाप्पा अरबल्ली, महादेव टोपण्णावर आदि अनेक युवक गिरफ्तार कर लिये गये। अंग्रेज अफसर ने ग्राम-पंचायत पर कब्जा कर लिया।

खून से लथपथ साताप्पा को घर लाया गया। पर वे तो इस नश्वर देह को त्यागकर अंग्रेजों से लड़ने के लिए पुनर्जन्म धारण करने हेतु प्रयाण कर चुके थे। वे मरकर भी अमर हो गये।

कडवी शिवापूर में जिस स्थान पर उन्हें शहादत प्राप्त हुई थी, उस स्थान पर उनकी स्मृति में खड़ा स्मारक आज भी उनकी कीर्ति-कथा कह रहा है। 'सन्मति' (मराठी) लिखता है-

-'क्रुर कालानं त्याचं फुलतं जीवन हिरावलं होतं, पण त्याला हुतात्म्यानं तेजस्वी मरण देऊन। कडवी शिवापूरच्याव नव्हे तर भारतीय स्वातंत्र्याच्या इतिहासांत अमर केलं यांत शंका नाही।'

आ०-(1) सन्मति (मराठी), अगस्त 1957 (2) भारतीय स्वातन्त्र्यलढ्यातील जैनांचे योगदान (मराठी), पृष्ठ-39

❑❑❑

भगवान् महावीर ने हमें अहिंसा का उपदेश दिया, जो आज भी विश्व के लिए उतना ही महत्त्वपूर्ण है, जितना 2500 वर्ष पूर्व था। विश्व में मानवता के लिए इससे बड़ा सिद्धांत नहीं हो सकता। अहिंसा का यह सिद्धांत हमारी आजादी के आन्दोलन की शक्ति बना। गांधी जी, पं० जवाहर लाल नेहरू और इन्दिरा जी ने भी अपनी नीतियां बनाते समय जैन सिद्धांतों की ओर देखा था। हमारी विदेश नीति भी महावीर के सिद्धांतों पर ही आधारित है। चाहे निःशस्त्रीकरण की बात करें या गुट निरपेक्षता की अथवा पर्यावरण सुधार की, यही सिद्धांत हमारे सामने रहता है। जब हम चुनौतियों को देखते हैं, तो हमारे सामने एक ही रास्ता रह जाता है और वह है अहिंसा का। आज विदेशी शक्तियाँ भी महसूस करती हैं कि मानवता को बचाने के लिए अहिंसा ही एकमात्र रास्ता है।

- प्रधानमंत्री श्री राजीव गांधी

18 अप्रैल 1989 को महावीर वनस्थली के उद्घाटन पर

प्रदत्त भाषण का अंश

अमर शहीद वीर उदयचंद जैन

भारत-वर्ष की आजादी के लिए 1857 ई० से प्रारम्भ हुए 1947 तक के 90 वर्ष के संघर्ष में न जाने कितने वीरों ने अपनी कुर्बानियां दीं, कितने देशभक्तों ने जेल की दारुण यातनायें भोगीं। इस बीच अनेक आन्दोलन, सत्याग्रह, अहिंसक संघर्ष हुए, किन्तु 1942 का 'करो या मरो' आन्दोलन निर्णायक सिद्ध हुआ। इसी आन्दोलन के अमर शहीद हैं वीर उदय चंद जैन।

प्राचीन महाकौशल और आज के मध्य प्रदेश का प्राचीन और प्रसिद्ध नगर है मण्डला। नर्मदा मैया कल-कल निनाद करती हुई यहाँ से गुजरती हैं। यह वही मण्डला है, जहाँ शंकराचार्य ने मण्डन मिश्र को शास्त्रार्थ में पराजित किया था, पर आज लोग मण्डला को अमर शहीद वीर उदयचंद की शहादत के कारण जांनते हैं।

मण्डला नगर के पास ही नर्मदा मैया के दूसरे तट पर बसा है महाराजपुर ग्राम। इसी ग्राम के निवासी थे वीर उदयचंद जैन, जिन्होंने मात्र 19 वर्ष की अल्पवय में सीने पर गोली खाकर देश की आजादी का मार्ग प्रशस्त किया था।

उदयचंद जैन का जन्म 10 नवम्बर 1922 को हुआ। आपके पिता का नाम सेठ त्रिलोकचंद एवं माता का नाम श्रीमती खिलौना बाई था। उदय चंद की प्रारम्भिक शिक्षा महाराजपुर में हुई। 1936-37 में आगे अध्ययन के लिए वे जगन्नाथ हाई स्कूल (वर्तमान नाम- जगन्नाथ शासकीय बहुद्देशीय आदर्श उच्चतर माध्यमिक शाला) मण्डला में प्रविष्ट हुए।

उदयचंद मेधावी छात्र तो थे ही, अपनी नेतृत्व क्षमता के कारण वे छात्र-संघ के अध्यक्ष चुने गये। तब वे हाई स्कूल के छात्र थे। उदय चंद बलिष्ठ और ऊंचे थे, हाकी उनका प्रिय खेल था। विज्ञान और गणित में उनकी अत्यधिक अभिरुचि थी। अपना काम स्वयं करने की प्रवृत्ति बचपन से ही थी। वे अत्यन्त मितव्ययी, ओजस्वी वक्ता और प्राय: मौन रहने वाले थे।

मण्डला नगर में आजादी की लड़ाई 1933 में ही उग्र रूप धारण कर चुकी थी, जब पूज्य बापू की चरण-रज इस नगर में पड़ी थी। 1939 में नेताजी सुभाष चंद बोस के आने से आंदोलन को और अधिक बल मिला।

1942 के आन्दोलन ने सारे देश को झकझोर दिया। 'करो या मरो' का नारा बुलन्द हुआ। मण्डला नगर भी पीछे नहीं रहा। यहाँ के शीर्षस्थ नेता पंडित गिरिजा शंकर अग्निहोत्री अन्य नेताओं के साथ जेल में बन्द किये जा चुके थे। ऐसी दशा में कार्यकर्ताओं को अपने विवेक से निर्णय लेना था। 14 अगस्त 1942 को श्री मन्नूलाल मोदी और श्री मथुरा प्रसाद यादव के आह्वान पर जगन्नाथ हाई स्कूल के छात्रों ने हड़ताल कर दी। उन्होंने कक्षाओं का बहिष्कार किया। उदय चंद मैट्रिक के छात्र थे। उदय चंद के चचेरे भाई कालूराम जी भी उनके साथ पढ़ते थे। शाम को कालूराम जी घर लौट गये पर उदय चंद घर वापिस नहीं गये, वे अपने साथियों से सलाह मशविरा करते रहे। उन्होंने श्री हनुमान प्रसाद अग्रवाल, श्री जीवन लाल घोष के निवास स्थानों पर सलाह की। पुलिस को सम्भवत: इन नौजवानों की गतिविधियों की भनक पड़ चुकी थी।

14 अगस्त 1942 की शाम की गतिविधियों के सन्दर्भ में उदयचंद के एक साथी- प्रो0 चित्रभूषण श्रीवास्तव, शासकीय शिक्षा महाविद्यालय, जबलपुर (म0प्र0), ने अपने संस्मरण 'एक अन्तरंग प्रसङ्ग : अमर शहीद वीर उदय चंद के संग' में लिखा है- ''14 अगस्त 1942 की शाम को मैं और उदय चंद नवजीवन क्लब से निकले। हम घूमने जा रहे थे। शाम के करीब 6 बजे होंगे। आकाश में बादल थे। पानी बरस कर निकल चुका था। हम लोग तहसील, कचहरी के पास पहुँचे ही थे कि वजनदार बूट पहने सिपाहियों के दल के मार्च की आवाज सुनाई दी। आगे देखा तो सशस्त्र सिपाहियों की एक टुकड़ी नीली वर्दी पहने, कंधों पर संगीन लगी बन्दूकें रखे, सड़क पर नगर की ओर बढ़ी चली आ रही थी। दल नायक बाजू से चलता हुआ आदेश देता जा रहा था -'लेफ्ट-राइट-लेफ्ट.........।' हम दोनों सड़क से पटरी पर आ गये। दल उसी चुस्ती से आगे बढ़ गया। बरगद के पेड़ के पास चौराहे पर रुका और वहाँ बन्दूकें दागी गईं- हवाई फायर हुए। गोली चलने की आवाजें सुनकर हम दोनों ने, जो टाऊन हाल के पास पहुंच रहे थे, मुड़कर देखा, किंचित् भयभीत से। तभी दल नायक ने कुछ आदेश दिया और पुलिस दल कमानियाँ गेट की ओर मुड़कर फिर रूट मार्च पर आगे बढ़ गया। यह सब शायद जनता को आतंकित करने के लिए किया गया प्रदर्शन था।''

वातावरण गम्भीर किन्तु शान्त था। उदय ने गम्भीर स्वर में आक्रोश से कहा- ''ये गोली क्यों चला रहे हैं ? क्या इनकी गोलियों से आन्दोलन रुक जायेगा ? क्या पुलिस किसी को भी गोली मार सकती है? आखिर ये भी भारतीय हैं। इनके मन में भी देश के लिए तो प्रेम होना चाहिये!"

मैंने कहा था - "हाँ होना तो चाहिये पर सरकार के नौकर हैं न ? जो आदेश होगा वही तो करेंगे। आज्ञा पालन न करने पर सजा या नौकरी से निकाले जाने का डर भी तो होगा इन्हें। आज्ञा पालन भी तो इनका कर्तव्य है।"

भावावेश में उदय के उद्‌गार थे- "भगतसिंह और चन्द्रशेखर कभी पुलिस से नहीं डरे। डरना कायरता है। निडर होकर हर एक को दमन का मुकाबला करना चाहिये, यह हमारा कर्तव्य है यदि हम सीना खोल कर खड़े हो जायें तो ?"

इस पर मुझे याद है- मैंने कहा था- "हो सकता है जनता को दबाने के लिए गोली चलाई जाये। क्या कह सकते हैं कि क्या होगा ? उन्हें जो सरकारी आदेश होगा वही करेंगे।'' आदि।

रात में भी उदयचंद घर नहीं गये अतः 15 अगस्त 1942 के प्रातः बाबूराम जी उदय चंद की तलाश में मण्डला आये। उन्हें पता चला कि नर्मदा गंज से जुलूस प्रारम्भ होने वाला है, वे वहां चले गये। वहीं पर उनकी भेंट उदय चंद से हुई। जुलूस का गन्तव्य जिलाधीश कार्यालय था। वहीं पर जुलूस सभा में परिवर्तित हो गया। तत्कालीन मण्डला नगर के हिसाब से यह जुलूस बहुत बड़ा था। सभा को श्री मन्नूलाल मोदी और श्री मथुराप्रसाद यादव ने संबोधित किया। तब सभा की बागडोर उदय चंद ने सम्हाली, उन्होंने लोगों से पत्थर नहीं फेंकने का आग्रह किया। इसी बीच पुलिस ने बर्बरता से लाठी चलानी शुरू कर दी। अनेक लोग पुलिस की लाठी के शिकार हुए। दोनों भाईयों को लाठियों की मार पड़ी। जुलूस तितर-बितर हो गया। उदयचंद ने बाबूराम को पीछे हटने का निर्देश दिया। बाबूराम इतवारी बाजार की ओर चले गये और घूमकर लकड़ी के पुल पर से होते हुए फतह दरवाजा प्राथमिक शाला के सामने पहुंच गये। तब पुलिस ने हवा में गोलियां चला दीं और लोगों को हट जाने का आदेश दिया।

प्रसिद्ध स्वाधीनता सेनानी श्री गोपाल प्रसाद तिवारी ने अपने संस्मरण- 'मैंने देखी है उदयचंद जैन की शहादत' में लिखा है- '..........(जब) लोग भागने लगे तब मैंने श्री उदयचंद जैन से कहा कि-''कहीं ऊँचे स्थान पर खड़े होकर जनता को प्रदर्शन करते रहने को कहो, मैं भीड़ में घुसकर लोगों को इकट्ठा करता हूँ।'' इस पर श्री उदय चंद कुएं की पनघट पर चढ़ गये और जनता से शान्तिपूर्ण प्रदर्शन जारी रखने का अनुरोध करने लगे। जनता पुन: इकट्ठी होकर नारे लगाने लगी। लोग रोष में थे किन्तु प्रदर्शन शान्तिपूर्ण था। मजिस्ट्रेट श्री मालवीय ने पुन: लोगों से घर चले जाने की चेतावनी दी, अन्यथा गोली चलाने की मंशा बताई।'

पुलिस की ज्यादतियों को श्री सरमन लाल गौतम और श्री विजय दत्त झा बर्दाश्त नहीं कर पाये और उन्होंने पुलिस को बुरी तरह लताड़ा। उप जिलाधीश ने पुलिस को गोली चलाने का आदेश दिया। वीर उदय चंद ने अपनी छाती खोल दी। उन्होंने कमीज को फाड़ते हुए खींचा, जिससे कमीज का बटन टूट गया, उन्होंने पुलिस को ललकारा कि 'गोली चला दी जाये, वे उसे झेलने के लिए तैयार हैं' इस समय वे केसरिया रंग की आधे बाजू की खादी की कमीज और धोती पहने हुए थे। पुलिस की गोली चली वे इसको झेलने के लिए उचके और गोली पेट को चीरते हुए शरीर में घुस गई। 'भारत माता की जय', 'तिरंगे झंडे की जय' के साथ उदयचंद गिर पड़े और खून की नदी बह चली। वे बेहोश हो गये थे। लोग उन्हें उठाने के लिए दौड़े, लेकिन पुलिस ने लोगों को आगे नहीं बढ़ने दिया। लोग जहां के तहां खड़े रह गये। पुलिस ने लाठियों का स्ट्रेचर बनाया और उस पर उदय चंद के बेहोश और खून से लथपथ शरीर को डाल दिया। पुलिस उन्हें कुछ ही दूरी पर स्थित शासकीय अस्पताल ले गई। बाबूराम को महाराजपुर के एक बुजुर्ग सज्जन महाराजपुर ले गये। भीड़ अस्पताल की ओर दौड़ पड़ी। लोग पुलिस के खून के प्यासे हो उठे थे।

पुलिस के घेरे में चिकित्सालय में उदय चंद की शल्य चिकित्सा की गई। उन्हें समीप के पेइंग वार्ड में ले जाया गया। छोटे-छोटे समूहों में पुलिस ने लोगों को उनके दर्शन करने दिये। लोगों ने उनके पैर छुए। नगर के सभी वर्गों के लोग अस्पताल की ओर दौड़ पड़े, कुटुम्बीजन दौड़े। शल्य चिकित्सा के उपरांत भी वे होश में नहीं आये। सभी लगातार 'भारत माता की जय', 'भारतवर्ष आजाद होगा' आदि नारे लगा रहे थे। मण्डला और आसपास के इलाके में तहलका मच गया। वे 15 अगस्त 1942 की रात्रि को तड़पते रहे और 16 अगस्त 1942 की प्रात: वीरगति को प्राप्त हो गये। उदय चंद मरकर भी अमर हो गये।

जिलाधीश श्री गजाधर सिंह तिवारी और पुलिस अधीक्षक श्री खान ने उदयचंद के पिताजी सेठ श्री त्रिलोकचंद को अपने निवास पर बुलाया। जिलाधीश ने उनसे कहा था कि 'अमर शहीद के शव का चुपचाप दाहसंस्कार कर दिया जाये।' त्रिलोक चन्द जी ने दृढ़तापूर्वक इसका विरोध किया। नगर-निवासी प्रशासन से क्रुद्ध हो गये थे। हिंसा की आशंका स स्थानीय प्रशासन आतंकित हो उठा था। नगर के प्रतिष्ठित वकील श्री असगर अली और महाराजपुर के मुंशी इब्राहीम खान ने क्रमश: मण्डला और महाराजपुर के नागरिकों की ओर से स्थानीय प्रशासन को आश्वस्त किया कि 'शवयात्रा के जुलूस में हिंसा नहीं भड़केगी। हाँ! यदि पुलिस जुलूस में शामिल हुई तो खून-खराबा रोका नहीं जा सकेगा।' मण्डला नगर स्तब्ध था। वह अपने सपूत को अन्तिम विदा देते हुए रो रहा था।

शवयात्रा का जुलूस अस्पताल से प्रात: 10.30-11.00 बजे के बीच प्रारम्भ हुआ। मण्डला और आस-पास के नागरिकों की भीड़ को पुलिस कभी नहीं संभाल पाती, पर जुलूस में पुलिस नहीं थी। तत्कालीन तहसीलदार श्री चौहान शवयात्रा में शामिल हुए थे। मण्डला के इतिहास में इतनी बड़ी शवयात्रा कभी नहीं निकली। नगर के सभी जाति-वर्ग के लोग शवयात्रा में शामिल थे। कहा जाता है कि लगभग नौ हजार लोग उनकी शवयात्रा में शामिल थे। उस समय मण्डला मात्र 12 हजार की बस्ती थी। अमर शहीद का शव तिरंगे में लिपटा हुआ था। भीड़ नारे लगाते हुए धीरे-धीरे आगे बढ़ रही थी। रपटा होते हुए शवयात्रा का जुलूस बंजर नदी के किनारे स्थित श्मशान घाट पर पहुँचा। लगभग 2 बजे उनके पार्थिव शरीर को चिता पर रखा गया। श्री चेतराम चौधरी ने बिलखते हुए हृदय पर पत्थर रखकर उनका अग्नि संस्कार किया। चिता धू-धू कर धधक उठी, उनका पार्थिव शरीर देखते-देखते भस्म हो गया।

उनकी कीर्ति को चिरस्थायी बनाने के लिए उदय चौक पर त्रिकोणाकार लाल लाट (पत्थर) का 'उदय स्तम्भ' बना है। समीप ही नगर पालिका, मण्डला द्वारा निर्मित 'उदय प्राथमिक विद्यालय' बना है। जगन्नाथ हाई स्कूल में उनकी प्रतिमा स्थापित की गई है। महाराजपुर में उनका समाधि स्थल है, जहाँ प्रतिवर्ष 16 अगस्त को मेला लगता है और इस अमर शहीद को श्रद्धांजलि दी जाती है। मण्डला के प्रखर कवि श्री मुरारी लाल के शब्दों में–

"अमर वीर माँ का दुलारा उदय
प्यारा उदय मेरा प्यारा उदय
पन्द्रह अगस्त सन् बयालीस की बात
नहीं भूल सकता वो खूनी प्रभात
जहाँ से हुआ शहीद प्यारा उदय
खुले वक्ष पर झेल गोली का बार
गुलामी की जंजीर पर कर प्रहार
किया माँ के ऋण का चुकारा उदय
सिखाया हमें मर के जीने का मोल
मरण क्षण लो 'जयहिन्द' 'जयहिन्द' बोल
बना पथ प्रदर्शक हमारा उदय
प्यारा उदय मेरा प्यारा उदय
हम सब मिल आपस के बैरों को भूल
चढ़ाते तेरी कब्र पर आज फूल
नमन हो स्वीकृत हमारा उदय
प्यारा उदय मेरा प्यारा उदय।"

(देखें- साप्ताहिक हिन्दुस्तान, 16 अगस्त, 1992, पृष्ठ 28)

आ0- (1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग 1, पृष्ठ 204 (2) साप्ताहिक हिंदुस्तान, 16 अगस्त 1992, पृष्ठ 28 (3) म0 , 15 अगस्त 1987 (4) जै0 स0 रा0 अ0 (5) नवीन दुनियां, जबलपुर- 15 अगस्त 1992 (6) अनेक स्मारिकायें (7) शहीद गाथा, पृष्ठ 1 सं 29 (8) क्रान्ति कथायें, पृ0 788 (9) नई दुनियां, इन्दौर, 2-8-1997

अमर शहीद साबूलाल जैन बैसाखिया

अत्यल्प वय में ही स्वतंत्रता की बलिवेदी पर अपनी कुर्बानी देकर भारत माँ को परतंत्रता की बेड़ियों से मुक्त कराने का रास्ता प्रशस्त कर गये शहीदों में गढ़ाकोटा, जिला-सागर (म0प्र0) के अमर शहीद श्री साबूलाल बैसाखिया का नाम अग्रगण्य है। साबूलाल का जन्म 1923 ई० में गढ़ाकोटा में हुआ। पिता पूरन चंद, वास्तव में उसी दिन पूरन (पूर्ण) हुए थे, जब साबूलाल ने उनके घर जन्म लिया। बालक साबूलाल ने स्थानीय स्कूल में ही पांचवीं तक शिक्षा ग्रहण की। उन दिनों दर्जा पांच पास कर लेना भी बहुत समझा जाता था। साबूलाल की इच्छा और अधिक पढ़ने की थी, पर पिता की आर्थिक स्थिति बहुत अच्छी नहीं थी, अत: असमय में ही उन्हें पढ़ाई छोड़कर गृहकार्य में लग जाना पड़ा। पर इससे देश-प्रेम की जो भावना उनमें जाग चुकी थी, वह मन्द नहीं पड़ी प्रत्युत दिन-ब-दिन बढ़ती ही गई।

1942 का 'भारत छोड़ो आन्दोलन' निर्णायक था। भारत माँ आजादी के लिए तड़फड़ा रही थी, रणबांकुरे एक-एक कर इस यज्ञ में अपना होम देने के लिए तैयार थे। सारे देश में हड़तालों, जुलूसों, सभाओं आदि का आयोजन हो रहा था। स्त्री और पुरुष सभी इस आन्दोलन में सहभागी थे।

बुन्देलखण्ड का हृदय 'सागर' आजादी की इस बयार से अछूता कैसे रहता। सागर शहर ही नहीं पूरे जिले में इस आन्दोलन ने एक क्रांति ला दी थी। प्राय: प्रतिदिन हड़ताल, जुलूस और आम सभायें हो रही थीं। छात्रों की भागीदारी भी इसमें कम नहीं थी, वे स्कूल छोड़-छोड़कर आजादी की इस लड़ाई में कूद पड़े थे।

22 अगस्त 1942 को गढ़ाकोटा में एक वृहत् सभा का आयोजन हुआ। सर्व सम्मति से तय हुआ कि 'अंग्रेजी शासन तन्त्र का प्रतीक पुलिस थाना यहाँ है, अत: इस पर ही तिरंगा झंडा फहराया जाये।' तत्काल ही उस सभा ने एक जुलूस का रूप ले लिया। जुलूस का नेतृत्व गढ़ाकोटा की वीरांगना पार्वतीबाई कर रहीं थीं। जुलूस में लगभग ढाई हजार स्त्री-पुरुष थे। यह संख्या किसी बड़े शहर के लिए कम प्रतीत हो सकती है, पर गढ़ाकोटा जैसे कस्बे में इतना बड़ा जुलूस शायद ही कभी निकला हो।

'भारत माता की जय', 'इंकलाब जिन्दाबाद', 'अंग्रेजो भारत छोड़ो' आदि नारे लगाता हुआ जुलूस पुलिस थाने पहुँचा। सैकड़ों नवयुवक हाथ में तिरंगा लिये, 'पहले मैं झंडा चढाऊँ !' 'पहले झंडा मैं चढाऊँ!' इस भावना से आगे बढ़े जा रहे थे। इधर पुलिस को जुलूस की सूचना पहले ही मिल गई थी, वह प्रतिरोध को तैयार थी। जब युवकों ने झंडा चढ़ाने का प्रयत्न शुरू किया तब पुलिस ने चेतावनी दी, पर आजादी के मतवाले कहाँ मानने वाले थे। पुलिस ने लाठीचार्ज शुरू कर दिया। लाठी खाकर भी आजादी के दीवाने गिरते रहे और आगे बढ़ते रहे, पर अपने कर्तव्य से विमुख नहीं हुए।

भीड़ को अनियन्त्रित देखकर पुलिस सब-इन्सपेक्टर गया प्रसाद खरे तथा कुछ अन्य सिपाहियों ने गोलियां चलाना प्रारम्भ कर दिया। पर गोलियों की परवाह किसे थी। साबूलाल भी हाथ में झंडा लिये थे, वे जानते थे कि थोड़ा भी आगे बढ़ना, मौत को आमन्त्रण देना है। जीवन की समाप्ति है। किन्तु 'जो घर से ही कफन बांधकर चला हो, उसे जीवन का मोह रोक नहीं सकता, वह तो क्षण-क्षण अपनी मृत्यु-प्रेमिका से मिलने को विह्वल रहता है।' साबूलाल अपने चार-पाँच साथियों के साथ आगे बढ़े, वे यूनियन जेक

निकालकर तिरंगा ध्वज लगाने की कोशिश में लगे हुए थे। पर धांय-धांय-धांय तीन गोलियां चलीं और वे वहीं ढेर हो गये, अनेक लोग गिरफ्तार कर लिए गये।

साबूलाल, कुंजीलाल और पं0 धनीराम दुबे को गोलियां लगीं थीं, अत: उन्हें तुरन्त सागर अस्पताल भेजा गया। पं0 धनीराम और श्री कुंजीलाल तो बच गये पर साबूलाल मरकर भी अमर हो गये। 24 अगस्त 1942 को प्रात:काल उनके शव का जुलूस निकाला गया। जनता ने अश्रुपूरित नेत्रों से उन्हें अन्तिम विदाई दी।

1942 के आंदोलन में सागर जिले में सिर्फ साबूलाल ही शहीद हुए। इस सम्बन्ध में 'मध्यप्रदेश के स्वतंत्रता संग्राम सैनिक', भाग-2, पृष्ठ 6 पर लिखा है- 'इस आन्दोलन (1942) में भारतीय अधिकारियों की सूझ-बूझ से सागर नगर में तो कोई दुर्घटना नहीं घटी, किन्तु जिले के एक छोटे से स्थान गढ़ाकोटा में अवश्य ही गोलीकाण्ड हो गया, जिसमें एक छात्र शहीद हुआ। यह घटना इस प्रकार बताई जाती है कि 22 अगस्त 1942 को एक बड़ा जुलूस गढ़ाकोटा नगर में निकाला गया, जो नगर के प्रमुख भागों से होता हुआ थाने की ओर बढ़ने लगा। इस जुलूस पर पुलिस ने गोली चलाई, जिसके फलस्वरूप एक छात्र श्री साबूलाल जैन शहीद हो गया।'

साबूलाल की शहादत ने विद्रोह की ऐसी ज्वाला भड़काई जिसने 1947 में देश को आजाद कराकर ही दम लिया।

अमर शहीद की स्मृति में सागर (म0प्र0) में एक कीर्तिस्तम्भ का निर्माण किया गया है, गढ़ाकोटा के प्राइमरी स्कूल का नाम साबूलाल के नाम पर रखा गया है। गुजरात राज्य शाला पाठ्यपुस्तक मण्डल, गांधीनगर द्वारा प्रकाशित, गुजरात में कक्षा-7 की हिन्दी विषय की निर्धारित पाठ्यपुस्तक में 'आजादी की राह पर' शीर्षक से साबूलाल पर एक पाठ दिया गया है।

आ0- (1) म0 प्र0 स्वा0 सै0, भाग- 2, पृष्ठ 6 (2) विन्ध्य वाणी, शहीद अंक, (1948) (3) प0 जै0 इ0, पृष्ठ 517 (4) अनेकान्त पथ, भोपाल 17-9-1992 (5) शहीद गाथा, पृष्ठ 12 (6) शोधादर्श, फरवरी 1988, पृष्ठ 27-29 (7) हिन्दी कक्षा-7 (गुजरात) पृष्ठ 118-121 (8) क्रांति कथायें, पृष्ठ 785 (9) पद्माकर स्मारिका, पृ० 36-37 (10) म0 स0, 15 अगस्त 1987, पृष्ठ ब-14 16 (11) नई दुनियां, इन्दौर, 19-11-1998

❑❑❑

'पूर्ण स्वराज्य कहने में आशय यह है कि वह जितना किसी राजा के लिए होगा उतना ही किसान के लिए, जितना किसी धनवान-जमींदार के लिए होगा, उतना ही भूमिहीन खेतिहर के लिए, जितना हिन्दुओं के लिए, उतना ही मुसलमानों के लिए, जितना जैन, यहूदी और सिक्ख लोगों के लिए होगा, उतना ही पारसियों ओर ईसाइयों के लिए। उसमें जाति-पांति, धर्म अथवा दरजे के भेदभाव के लिए कोई स्थान नहीं होगा।'

- महात्मा गांधी
पूर्ण स्वराज्य का अर्थ

अमर शहीद कुमारी जयावती संघवी

अहमदाबाद (गुजरात) की कुमारी जयावती संघवी भारत के स्वतन्त्रता आन्दोलन की वह दीपशिखा थीं जो अपना पूरा प्रकाश अभी दे भी नहीं पायीं थीं कि जीवन का अवसान हो गया। जयावती का जन्म 1924 में अहमदाबाद में हुआ था। 5 अप्रैल 1943 को अहमदाबाद नगर में ब्रिटिश शासन के विरोध में एक विशाल जुलूस निकाला जा रहा था। प्रमुख रूप से यह जुलूस कॉलेजों के छात्र-छात्राओं का ही था। इसमें प्रमुख भूमिका जयावती संघवी निभा रही थीं। जुलूस आगे बढ़ता जा रहा था,पर यह क्या? अचानक पुलिस ने जुलूस को तितर-बितर करने के लिए आँसू गैस के गोले छोड़ना प्रारम्भ कर दिया। स्वाभाविक था कि गोले आगे को छोड़े गये, अत: नेतृत्व करती जयावती पर इस गैस का इतना अधिक प्रभाव पड़ा कि उनकी मृत्यु हो गयी।

आ० (1) क्रान्ति कथाएँ, पृ० 808 (2) शोधादर्श, फरवरी 1987

❑❑❑

"मैं नहीं सारा राष्ट्र जैन है": श्रीमती इन्दिरा गांधी

बात फरवरी, 1981 की है। तत्कालीन प्रधानमंत्री इन्दिरा गाँधी श्रवणबेलगोला में 'भगवान् बाहुबली महामस्तकाभिषेक समारोह' के अवसर पर अपने श्रद्धा-सुमन अर्पित कर दिल्ली लौट आईं थीं। संसद में बहस के दौरान कुछ संसद सदस्यों ने अनकी इस यात्रा पर आपत्ति की तो श्रीमती गाँधी ने कहा-"मैं महान् भारतीय विचारों की एक प्रमुख धारा के प्रति अपनी श्रद्धा व्यक्त करने वहाँ गई थी। जिसने भारतीय इतिहास व संस्कृति पर गहरा प्रभाव छोड़ा है और स्वतन्त्रता संग्राम में अपनाए गए तरीके भी इससे प्रभावित हुए हैं। गाँधी जी भी जैन तीर्थंकरों द्वारा प्रतिपादित अहिंसा व अपरिग्रह के सिद्धान्तों से प्रभावित हुए थे।"

इस पर एक ससंद सदस्य ने व्यंग्य करते हुए प्रश्न किया कि-'क्या आप जैन हो गईं हैं?' तब श्रीमती गाँधी ने गर्जना के साथ उत्तर दिया-"केवल मैं ही नहीं सारा राष्ट्र जैन है, क्योंकि हमारा राष्ट्र अहिंसावादी है और जैन धर्म अहिंसा में विश्वास रखता है। जैन धर्म के आदर्श के रास्ते को हम नहीं छोड़ेंगे।" यह सुनकर प्रश्नकर्ता बगलें झाँकने लगे।

अमर शहीद नाथालाल शाह उर्फ नत्थालाल शाह

भारतीय स्वातन्त्र्य समर में 1942 का 'भारत छोड़ो आन्दोलन' निर्णायक सिद्ध हुआ। इसी आन्दोलन के एक शहीद थे श्री नाथालाल या नत्थालाल शाह। नत्थालाल का जन्म अहमदाबाद के निकटस्थ ग्राम रामपुरा में श्री सोमचन्द्र शाह के घर 1923 में हुआ था। अपने छात्र जीवन में उन्होंने आजादी के आन्दोलन में भाग लिया। 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में उन्होंने सक्रिय भूमिका निभाई, परिणाम स्वरूप अगस्त 1942 में उन्हें जेल में डाल दिया गया, जहाँ 9 नवम्बर 1943 को उन्होंने शहादत प्राप्त की।

आ() (1) क्रान्ति कथायें, पृष्ठ 1142,(2) शोधादर्श, फरवरी 1987

❑❑❑

सत्य से भिन्न कोई परमेश्वर है, ऐसा मैंने कभी अनुभव नहीं किया। यदि इन प्रकरणों के पन्ने-पन्ने से यह प्रतीति न हुई हो कि सत्यमय बनने का एक मात्र मार्ग अहिंसा ही है, तो मैं इस प्रयत्न को व्यर्थ समझता हूँ। प्रयत्न चाहे व्यर्थ हो, किन्तु वचन व्यर्थ नहीं हैं। मेरी अहिंसा सच्ची होने पर भी कच्ची है, अपूर्ण है। अतएव हजारों सूर्यों को इकट्ठा करने से भी जिस सत्य रूपी सूर्य के तेज का पूरा माप नहीं निकल सकता, सत्य की मेरी झांकी ऐसे सूर्य की केवल एक किरण के दर्शन के समान ही है। आज तक के अपने प्रयोगों के अन्त में मैं इतना तो अवश्य कह सकता हूँ कि सत्य का संपूर्ण दर्शन संपूर्ण अहिंसा के बिना असंभव है।

- महात्मा गांधी

(आत्मकथा, पृष्ठ-431)

अमर शहीद अण्णा पत्रावले

"अध्यापको ! नौकरियाँ छोड़ दो और देश को स्वतन्त्र कराने के लिए क्रान्ति कार्य में शामिल हो जाओ। 'अंग्रेजो यहाँ से भागो।' ऐसी घोषणा कर अंग्रेजों को जला दो।" अपनी तिमाही परीक्षा की कापी में यह लिखकर 1942 के आन्दोलन में कूद पड़ने वाले 17 वर्षीय नौजवान अमर शहीद अण्णा पत्रावले या अण्णा साहेब पत्रावले को आज हम भले ही भूल गये हों, पर भारतीय स्वातन्त्र्य-समर के इतिहास में उनका नाम सदा अमर रहेगा।

1942 का 'भारत छोड़ो आन्दोलन' एक ऐसा निर्णायक आन्दोलन था, जिसमें हजारों नहीं लाखों की संख्या में नौजवान विद्यार्थी अपनी पढ़ाई छोड़कर कूद पड़े थे। 'करो या मरो' उनका मूल-मंत्र था। इसी आन्दोलन में भारत माँ पर अपना सर्वस्व समर्पण करने वाले अण्णा साहब भी शहीद हो गये थे।

अण्णा पत्रावले का जन्म 22 नवम्बर 1925 को हातकणंगले, जिला-सांगली (महाराष्ट्र) में अपने नाना के घर एक जैन परिवार में हुआ। माँ इन्दिरा उस दिन सचमुच इन्दिरा=लोकमाता बन गईं जब अण्णा साहब ने उनकी कोख से जन्म लिया। पिता एगमंद्राप्पा व्यंकाप्पा उस दिन बहुत प्रसन्न थे। नाना के घर बधाईयाँ बज रहीं थीं। अण्णा साहब बचपन से ही होनहार, स्वावलम्बी और स्वातन्त्र्य-प्रिय बालक थे। उनकी बुद्धिमत्ता का अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि उन्होंने हाई स्कूल छात्रवृत्ति प्राप्त की थी। प्रतिदिन व्यायाम करना उनका शौक था, जिसके कारण उनका शरीर सुदृढ़ था और चेहरे पर विशेष कान्ति।

अंग्रेजी की चौथी कक्षा में वार्षिक परीक्षा सिर पर होने पर भी उन्होंने फरवरी में महात्मा गाँधी के हरिजन साप्ताहिक से संगृहीत चुनिंदा लेखों की छोटी-सी पुस्तक पढ़ी। यहीं से अण्णा साहब के विचार क्रान्ति में बदल गये। वे देश को आजाद कराने के लिए छटपटाने लगे। अगले वर्ष अगस्त में तिमाही परीक्षा के पेपर में उक्त वाक्य (अध्यापको !..........) लिखकर चले आये और क्रान्ति-यज्ञ में कूद पड़े।

1942 में सांगली स्टेशन चौक की सभा पर सरकार ने गोलीबारी की। अनेक लोग घायल हुए। घायलों की सेवा-सुश्रूषा का गुरुतर भार कौन ले ? यह यक्ष-प्रश्न सबके सामने मुँह बाये खड़ा था। अण्णा साहब आगे बढ़े और उन्होंने कहा- 'यह कार्य हम करेंगे।' पुलिस को जब पता चला तो पुलिस सुपरिन्टेन्डेन्ट ने उनके पिता पर बढ़े जुल्म ढाये, यहाँ तक कि उनका घर-बार तक जब्त करने की धमकी दी, पर भारत मैया के चरणों में ही अपने जीवन को समर्पित करने वाले क्या ऐसी धमकियों से डरे हैं? अण्णा साहब डरे नहीं, अपितु और अधिक खुलकर क्रान्तिकारियों का साथ देने लगे, वे क्रान्तिकारियों की गोपनीय बैठकों में भी शरीक होने लगे।

सांगली की बुरुड गली में क्रान्तिकारियों की एक बैठक चल रही थी। अण्णा साहब भी इस बैठक में मौजूद थे। पुलिस को किसी प्रकार इसकी भनक लग गई। सूँघती हुई पुलिस पहले गली और फिर मकान तक पहुँच गई। अचानक छापा मारा गया, क्रान्तिकारियों को पकड़ लिया गया और उन्हें सात महीने की सजा देकर सांगली जेल में बन्द कर दिया गया। इसी समय श्री बसन्त दादा पाटिल (जो बाद में महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री बने) भी इसी जेल में आये।

'जेल की दारुण यातनाओं के भीषण कष्ट को तो किसी तरह दबाया जा सकता है, पर दिल में देश को आजाद कराने की जो क्रान्ति-ज्वाला जल रही है, उसकी जलन को दबाया जाना सम्भव नहीं।' जेल में

बन्द इन क्रान्तिकारियों को भी चैन नहीं था, वे किसी भी कीमत पर बाहर निकलकर क्रान्ति की ज्वाला को प्रज्ज्वलित रखना चाह रहे थे। वे जानते थे कि भागने पर पकड़े गये तो मौत के सिवा कुछ नहीं मिलेगा, पर उनका मानना था कि हमारी मौत के बाद भी देश आजाद हो जाये तो ऐसी मौत सार्थक है।

सोलह क्रान्तिकारियों ने जेल से भागने की योजना बनाई। योजनानुसार लघुशंका का बहाना बनाकर पहरेदार को दरवाजा खोलने को कहा गया। दरवाजा खुलते ही पहरेदार की बन्दूक छीन ली गई और क्रान्तिकारी जेल की दीवार से छलांग लगाकर भागे। इधर शोर-शराबा हुआ। पता लगते ही पुलिस भी पीछे-पीछे भागी। क्रान्तिकारियों में कोई कृष्णा नदी के पानी में डुबकी लगा गया तो कोई सांगलवाडी की ओर भागा। कुछ हरिपुर की ओर प्रयाण कर गये। अण्णा साहब को तैरना नहीं आता था अत: वे समडोली की ओर भागे। जुलाई का महीना और बरसात के कारण गीली मिट्टी। अण्णा साहब के पैर मिट्टी में सन गये थे, दौड़ने की बात तो दूर चलने में भी परेशानी हो रही थी। तभी धायं......धायं......गोली चली और अण्णा साहब वहीं शहीद हो गये। वह क्रूर दिन था 24 जुलाई 1943 ई०।

आजादी के बाद सांगली के एक चौक को 'हुतात्मा अण्णा पत्रावले चौक' नाम दिया गया है और यहीं हाईस्कूल के समीप उनकी प्रतिमा (स्टेच्यू) लगी है।

Who's who of Indian Martyres, Vol. I, Page 272 पर अण्णा साहब पत्रावले के सन्दर्भ में लिखा गया है 'Took part in the Quit India Movement (1942). Arrested and sentenced to a term of imprisonment. shot and killed on July 24, 1943, while trying to escape from the Sangli Jail.'

आ० - (1) Who's who of Indian Martyres, Vol. I, Page 271-272 (2) सन्मति (मराठी), अगस्त 1957

❑❑❑

गांधी जी के जीवन में प्रसिद्ध आध्यात्मिक संत श्रीमद् रायचन्द्र का गहरा प्रभाव था। जब दक्षिण अफ्रीका में गांधी जी को हिन्दू धर्म पर अनेक शंकाएँ हुईं और उनकी आस्था डिगने लगी तब अपनी लगभग 33 शंकाएँ गांधी जी ने रायचन्द्र को भेजी। राजचन्द्र जी ने उनके जो उत्तर दिए उनसे गांधी जी की सत्य और अहिंसा में दृढ़ आस्था हो गई। स्वयं गांधी जी ने लिखा है - 'मेरे जीवन पर गहरा प्रभाव डालने वाले आधुनिक पुरुष तीन हैं ; रायचन्द भाई ने अपने सजीव सम्पर्क से, टॉलस्टाय ने 'बैकुण्ठ तेरे हृदय में' नामक अपनी पुस्तक से और रस्किन ने 'अन्टु दिस लास्ट'-सर्वोदय नामक पुस्तक से मुझे चकित कर दिया।'' (आत्मकथा, पृ० 76)

अमर शहीद मगनलाल ओसवाल

अमर शहीद मगनलाल ओसवाल की शहादत भारत के स्वतंत्रता संग्राम में स्वर्णाक्षरों में अंकित है। मगनलाल ओसवाल का जन्म 1906 ई० में जावरा (म०प्र०) में हुआ था। आपके पिता श्री हीरालाल ओसवाल इन्दौर में व्यवसाय करते थे। मोरसली गली में उनकी छोटी सी किराने की दुकान थी। मगनलाल अपने पिता की इकलौती संतान थे। ओसवाल जी की शिक्षा-दीक्षा अधिक नहीं हुई, मिडिल पास करने के उपरान्त आप पिताजी के साथ दुकान पर बैठने लगे। 1942 में जब 'भारत छोड़ो आन्दोलन' छिड़ा तब आपकी शादी हो चुकी थी, आप गृहस्थ बन गये थे और पिता भी। पर आजादी के दीवानों को क्या परिवार के बन्धन बाँध सके हैं?

'करो या मरो' के मूल मंत्र वाला अगस्त 1942 का आन्दोलन निर्णायक था, देश के सभी हिस्सों में इसकी गूँज थी, आजादी के दीवाने जगह-जगह भारत माँ को परतन्त्रता की बेड़ियों से मुक्त करने के लिए स्वयं बेड़ियाँ पहिन रहे थे, जेल की उन्हें परवाह न थी, माताओं की गोदें सूनी हो रहीं थीं और युवतियों की मांगें। इन्दौर शहर इस आन्दोलन में भला कैसे पीछे रहता। रोज सभायें, जुलूस, नारेबाजी, गिरफ्तारियाँ, गोली-डंडे चल रहे थे। इसी क्रम में 6 सितम्बर 1942 को एक जुलूस इन्दौर में निकला। इसका नेतृत्व श्री पुरुषोत्तम लाल 'विजय' कर रहे थे। जुलूस में लगभग 2-3 हजार लोग थे। जुलूस शान्त था। श्री मगन लाल भी आगे चलते हुए नारे लगाते जा रहे थे। 'भारत माता की जय', 'महात्मा गाँधी की जय', 'अंग्रेजो भारत छोड़ो', 'इंकलाब जिन्दाबाद'........आदि।

जब जुलूस सर्राफा बाजार में पहुँचा तो भारी संख्या में पुलिस आ गई और जुलूस को चारों तरफ से घेर लिया। सभी शान्त थे, पर बर्बरता की तो कोई सीमा नहीं, यह सदैव अपना घिनौना और वीभत्स चेहरा लिए ही प्रकट होती है। पुलिस ने अचानक इन अहिंसक सत्याग्रहियों पर लाठियों और गोलियों की बौछार शुरू कर दी। एक तरफ सभी निहत्थे थे, दूसरी तरफ थीं लाठियाँ और गोलियाँ। एक तरफ सभी शान्त थे, दूसरी तरफ थीं भद्दी-भद्दी गालियाँ। इन्दौर का सर्राफा बाजार जिन्होंने देखा है, वे जानते हैं कि इसकी सड़कें बड़ी संकरी हैं। पुलिस ने दोनों ओर से घेरकर सत्याग्रहियों को इतना पीटा कि बन्दूकें भी सहम गईं।

इस गोली चालन में कुछ इधर-उधर बिखर गये, कुछ को गोलियाँ लगीं तो कुछ को लाठियाँ, कुछ जमे रहे, लाठियाँ खाते रहे, कुछ गिर पड़े। मगन लाल की जाँघ में तभी एक गोली लगी, वे वहीं गिर पड़े और जब तक बेहोश नहीं हुए-'भारत माता की जय, भारत माता की जय, भारत माता की जय, भारत......' के नारे लगाते रहे। पुलिस की निर्दयता ने उस समय निर्दयता को भी पीछे छोड़ दिया जब कुछ पुलिस वालों ने निहत्थे, बेहोश पड़े मगन लाल पर जूतों की ठोड़े मारीं।

जुलूस के संचालक श्री पुरुषोत्तम लाल 'विजय' को उनके 15-20 साथियों के साथ गिरफ्तार कर लिया गया। मगन लाल को भी गिरफ्तार किया गया, पर समस्या थी, घायल अवस्था में कहाँ ले जाया जाये? अन्त में पुलिस उन्हें तत्कालीन महाराजा तुकोजी राव अस्पताल ले गई। चारों ओर पहरा बैठा दिया गया। डाक्टरों ने ऑपरेशन किया, जाँघ से गोली निकाली, काफी बड़ा घाव हो गया और यह घाव अन्त तक भरा नहीं जा सका। मगनलाल अस्पताल में रहे, पुलिस का पहरा रहा, घाव कभी भरता सा लगता, फिर बढ जाता। ऐसी ही आँख-मिचौनी चलती रही और लगभग सवा तीन बरस निकल गये। मगनलाल बिस्तर पर पड़े रोज नये समाचार सुनते, नई घटना, नई गिरफ्तारी, पर वह नहीं सुन सके जिसके लिए वे जी रहे थे, वह था, देश की आजादी का समाचार। वे सोचते 'काश! मैं उठकर भाग पाता। काश! यह घाव न होता तो अंग्रेजों को यहाँ से भगाकर ही दम लेता, पर सोचा कभी पूरा हुआ है क्या ?'

23 दिसम्बर 1945 को आजादी का यह दीवाना देश की आजादी का सपना अपने हृदय में छिपाये हुए वीरगति को प्राप्त हो गया।

आ०- (1) म० प्र० स्व० सै०, भाग 4, पृष्ठ 34 (2) क्रान्तिकथायें, पृष्ठ 788 (3) म० स०, 15 अगस्त 1987, पृष्ठ अ-270 एवं ब-49 (4) नवभारत, भोपाल, 6 जुलाई 1997

अमर शहीद भूपाल अणस्कुरे

भारतीय स्वातन्त्र्य-समर में गरीब-अमीर, छोटे-बड़े, बालक-जवान, जवान-वृद्ध, स्त्री-पुरुष, उद्योगपति-व्यवसायी, खेतिहर-मजदूर, ग्राम-नगर निवासी, शिक्षित-अशिक्षित, सभी लोगों ने अपनी शक्त्यनुसार भरपूर सहयोग दिया। ज्यादातर तो ऐसे रहे जो अपना नाम प्रख्यात कराये बिना ही मातृभूमि की बलि-वेदी पर शहीद हो गये। सच कहें तो हमारी आजादी-अट्टालिका की नींव के पत्थर वे ही हैं। ऐसे शहीदों में श्री भूपाल अणस्कुरे का नाम अग्रगण्य है।

श्री भूपाल अण्णाप्पा अणस्कुरे या भूपाल अणस्कुरे का जन्म कोल्हापुर (महाराष्ट्र) जिले के ठिकपुर्ली ग्राम (ता०-राधानगरी) में 1927 में हुआ। मराठी की छठी कक्षा तक शिक्षा प्राप्त करने के बाद उन्होंने, जगह-जगह लगने वाले हाट-बाजारों में दाल-चावल बेचने का काम शुरू किया। उनकी गरीबी ने ही उन्हें इस प्रकार का कार्य करने को मजबूर किया, पर दिल में देशहित के लिए भी कुछ करने की तमन्ना थी। 'दिल की जो तमन्ना बलवती होती है, वह समय आने पर अपना रास्ता खोज लेती है' यह कहावत अणस्कुरे जी के सन्दर्भ में पूर्णत: चरितार्थ हुई। एक दिन सांगली के श्री पी० बी० पाटील से उनकी मुलाकात हुई, मुलाकात परिचय में बढ़ी और परिचय प्रगाढ़ता में। इसी प्रगाढ़ता के कारण वे क्रान्तिकारी गतिविधियों में भूमिगत रहकर कार्य करने लगे। दिन में प्रकट रूप में वे कुछ कर नहीं सकते थे अत: भूमिगत क्रान्तिकारियों को सहयोग करने का जिम्मा उन पर सौंपा गया। क्रान्तिकारियों तक खाना पहुँचाना, उनकी दवा आदि की व्यवस्था करना उनके मुख्य कार्य थे। कभी-कभी तो रात के दो-दो बजे तक स्वयं अपने हाथों से खाना बनाकर भूमिगत कार्यकर्ताओं तक पहुँचाते थे।

गाँव से कोल्हापुर आकर वे रहने लगे थे। इस निपट गरीबी में एक कमरे से बड़ा मकान लेना उनके लिए कदापि सम्भव नहीं था, फिर भी उस छोटे से स्थान को भी देशहित समर्पित करने की उनकी तमन्ना थी। अणस्कुरे जी का यह एकाकी कमरा कोल्हापुर के नये पूल के पास संकरी गली में था। 'पुलिस को कभी यह कल्पना भी नहीं हो सकेगी कि इस प्रकार के मात्र एक कमरे वाले मकान में रहने वाला भी कोई अपने पास अस्त्र शस्त्र रखने का जोखिम उठायेगा।' यह सोचकर भूपाल जी ने अपने पास अस्त्र-शस्त्र रखना प्रारम्भ कर दिया। रात्रि के अँधेरे में भूमिगत क्रान्तिकारियों के पास अस्त्र-शस्त्र पहुँचाना उनका प्रमुख कार्य बन गया, पर पुलिस कब चूकने वाली थी। पुलिस की नजर उन पर पड़ी, अणस्कुरे जी को गिरफ्तार कर लिया गया और उन पर मुकदमा दायर किया गया।

पुलिस के अनगिनत अत्याचारों और गहन पिटाई से उनके अंग-अंग टूट गये। दायें हाथ की हड्डी फटकर उसमें पस पड़ गया, वेदना पर वेदना, अत्याचार पर अत्याचार, मार पर मार, यातनाओं पर यातनाऐं। ऐसे में अणस्कुरे जी ने शायद एक ही बचने का उपाय सोचा, 'अभी पुलिस के गवाह बन जाओ, जज के सामने बयान बदल देंगे। कम से कम कुछ समय के लिए तो यातनाओं से छुटकारा मिलेगा, बाद में मौत तो निश्चित है ही।'

योजनानुसार वे 'माफी के साक्षीदार' (पुलिस के गवाह) बन गये। पुलिस द्वारा जानबूझकर उनकी बीमारी से की गई उपेक्षा, टूटा और निराश मन, अपनों से मिलने की चाह, मित्रों को भी सब कुछ बताने की इच्छा, ये सब भावनायें उन्हें झकझोर रहीं थीं। उन्होंने मित्रों से मिलने की इच्छा प्रकट की। बड़े प्रयत्न के बाद

अन्त में बड़े जेल के दवाखाने में आने पर उनकी मित्रों से भेंट हुई। तब अणस्कुरे जी ने कहा-'पी० बी०! मैं माफी का साक्षीदार (पुलिस का गवाह) बन गया हूँ। क्या इसलिए नाराज हो? मेरी आधी बीमारी तो तुम लोगों की प्रतारणा है। मैं सच कह रहा हूँ कि हाथ की असहनीय वेदना से ही मजबूरन यह करना पड़ा है। दोस्तों की जबरदस्ती और जेल से छूटने पर रोगमुक्त होने की उम्मीद से माफी का गवाह बनने की अर्जी मैंने दी है। पर.........'

उचित समय पर मुकदमा शुरू हुआ। अन्तिम जवाब में जज महोदय के सामने अणस्कुरे जी ने पुलिस विरोधी और क्रान्तिकारियों के पक्ष में बयान दिये। उल्टी गवाही से पुलिस भौंचक्की रह गई। अब तो पुलिस के अत्याचार उन पर और अधिक बढ़ गये। उन्हें यम-यातनाओं (कठोर-कष्टों) का सामना करना पड़ा। पीड़ा बढ़ती गई, बीमारी बढ़ती गई और बढ़ती गई मन की निराशा। उन्हें छुड़ाने के बहुतेरे प्रयत्न किये गये। बीमारी की हालत में अन्त में उन्हें पाँच हजार की जमानत पर छोड़ा जाना तय हुआ। कोल्हापुर के श्री बापूसाहेब श्रीमंधर मिरजे जी ने पाँच हजार रुपयों की जमानत पर उन्हें छुड़ाया। मिरज में उनका उपचार जारी रहा। पर पुलिस द्वारा की गई इतनी तीव्र पिटाई और घाव की निरन्तर जानबूझकर की गई उपेक्षा के कारण उपचार का कोई असर नहीं हुआ। अन्त में 1945 के आषाढ़ मास में जिस दिन उन पर पुन: मुकदमा चलने वाला था उस दिन अणस्कुरे जी देश की आजादी का सपना दिल में ही संजोये शहीद हो गये।

अणस्कुरे जी के छोटे भाई को 1945 के सांगाव अधिवेशन में श्रीदेव जी के हाथ से 'कोल्हापुर प्रजा परिषद्' की ओर से शील्ड प्रदान की गई थी।

आ०-सन्मति (मराठी), अगस्त 1957

❑❑❑

शहीदों की शौर्यगाथा किसी भी राष्ट्र की सर्वाधिक मूल्यवान सम्पत्ति होती है। उनके गौरवमय बलिदानों का पुण्य स्मरण युवकों की धमनियों में देशभक्ति का रक्त संचारित कर उनमें अन्याय, अनाचार, अभाव, गरीबी, शोषण, उत्पीड़न और असमानता को जड़-मूल से उखाड़ फेंकने की अमोघ शक्ति उत्पन्न करता है, जिससे वे देश निर्माण के रथ को विद्युत गति से खींचने लगते हैं। जो राष्ट्र अपने शहीदों की कुर्बानियों का गुण-गान नहीं करता, वह अधिक दिनों तक टिक नहीं सकता।

-रघुबीर सहाय

(मध्य प्रदेश संदेश, 15 अगस्त 1987)

अमर शहीद कन्धीलाल जैन

भारत की आजादी के इतिहास में 1930 का सविनय अवज्ञा आन्दोलन मील का पत्थर सिद्ध हुआ था। ग्यारह फरवरी 1930 को कांग्रेस कार्यकारिणी ने गाँधी जी को सविनय अवज्ञा आन्दोलन प्रारम्भ करने का अधिकार दे दिया था। गाँधी जी ने बहुतेरे प्रयास किये कि वायसराय कांग्रेस की न्यायोचित माँगों को मान लें। जब बात नहीं बनी तो गाँधी जी ने 12 मार्च 1930 को अपना ऐतिहासिक 'दाण्डी मार्च' प्रारम्भ किया। इस मार्च में गाँधी जी के साथ चुने हुए 79 अनुयायी गये थे। 200 मील की यात्रा गाँधी जी ने 24 दिन में पैदल चलकर पूरी की थी। इस यात्रा में महिलाओं का नेतृत्व सरला देवी साराबाई ने किया था (देखें-'स्वराज्य और जैन महिलायें', पृ० 26, 'महिलायें और स्वराज्य' पृष्ठ, 177)। 6 अप्रैल 1930 को गांधी जी ने नमक कानून तोड़कर सविनय अवज्ञा आंदोलन का सूत्रपात किया था।

ध्यातव्य है कि सरकार ने नमक पर कर दुगुना कर दिया था। जब कि भारत जैसे गरीब देश की जनता का नमक सबसे अधिक काम आने वाला और सबसे अधिक सस्ता खाद्य है। गरीब जनता को जब कुछ नहीं मिलता तो वह नमक की एक डली के साथ ही अपना भोजन कर लेती है। निजी रूप से समुद्र के पानी से नमक बनाना कानूनी जुर्म था। गाँधी जी द्वारा कानून तोड़ने के बाद प्रतीक स्वरूप जगह-जगह नमक बनाया जाने लगा और इस काले कानून को खुलेआम भंग किया गया। शराब बंदी ओर विदेशी वस्त्रों का बहिष्कार भी इस आदोलन में शामिल किये गये। पुरुष और महिलायें इस आंदोलन में हजारों की संख्या में जेल गईं। लगभग 50-60 हजार लोग जेल गये। यहाँ तक कि सरकार को नई जेलें बनानी पड़ीं।

मध्य प्रदेश में नमक सत्याग्रह के साथ-साथ जंगल सत्याग्रह भी प्रारम्भ हुआ था, जो यहाँ की विशेष भौगोलिक परिस्थिति के अनुकूल था। यहाँ की जनता के लिए वनों का विशेष महत्त्व है, उस पर लगे हुए अन्याय पूर्ण प्रतिबन्ध ही विदेशी शासन के प्रतीक थे। म०प्र० में नमक बनाने का कोई स्थान नहीं, अत: यहाँ जनता ने 'जंगल-कानून' तोड़कर 'नमक-कानून' तोड़ा था। इसी कानून को तोड़ने वाले अमर शहीद कन्धीलाल जैन का जन्म 1894 में सिलोंड़ी (जबलपुर-मध्यप्रदेश) कस्बे के सेठ मटरूलाल के यहाँ हुआ। अन्य लोगों के साथ कन्धीलाल भी झण्डा उठाकर गाँव-गाँव घूमे और जँगल कानून भंग किया। पुलिस ने इन लोगों पर लाठियों और कोड़ों से प्रहार किये पर गिरफ्तार किसी को भी नहीं किया। इधर जनता ने विदेशी कपड़ों की होली जलाई। सिलोंड़ी और आस-पास के लोगों ने पुलिस का सामाजिक बहिष्कार किया। जनता ने अंग्रेजी सिक्के (कल्दार) को मुद्रा मानने से इंकार कर दिया और सिलोंड़ी मण्डल को पूर्ण स्वतन्त्र घोषित कर दिया। गाँव की पुलिस चौकी के सिपाही भाग खड़े हुए और आला अफसरों को इसकी सूचना दी गई।

अराजकता को दबाने के लिए जिले के अधिकारियों ने एस०डी०ओ० छत्तर सिंह को विशेष पुलिस बल के साथ भेजा और कोड़े मारने तथा लाठीचार्ज का अधिकार उसे दिया। छत्तर सिंह 12 सितम्बर 1930 को सिलोंड़ी पहुँचा और ग्राम में 'मार्शल लॉ' लागू कर दिया। खुलेआम जनता को मारा गया और तरह-तरह की धमकियां दी गईं। चुनौती भरे स्वर में छत्तर सिंह ने कहा कि 'है कोई माई का लाल, जो सत्याग्रह करने की कोशिश करे' कन्धीलाल ने इस चुनौती को स्वीकार किया। अपनी गृहस्थी और अबोध बच्चों की परवाह न कर उन्होंने 15 सितम्बर को संकीर्तन समापन के जुलूस का नेतृत्व किया, वे जुलूस के आगे-आगे नारे लगाते चल रहे थे। जब यह जुलूस पुलिस चौकी (वर्तमान में माध्यमिक कन्या पाठशाला भवन) की ओर बढ़ रहा

था तो पुलिस ने उसे रोका, इस पर कुछ कहा सुनी हुई और अचानक पुलिस ने लाठीचार्ज करना प्रारम्भ कर दिया। कन्धीलाल पर अनगिनत लाठियों के वार पड़े पर उन्होंने झण्डा अपनी छाती से लगाकर उसकी रक्षा की। पुलिस ने झण्डा छीनना चाहा, पर छीन नहीं सकी। लाठी का एक वार कन्धीलाल के सिर पर पड़ा और वह सदा-सदा के लिए भारत मैया की गोद में सो गये।

इधर जनता हिंसात्मक प्रतिशोध पर उतर आई। पर ग्राम के माननीय चौधरी बनवारी लाल राय के साहसिक हस्तक्षेप से मामला शान्त हुआ। 15 सितम्बर 1931 को कन्धीलाल की प्रथम पुण्यतिथि पर बलिदान-दिवस मनाया गया और सिलोंड़ी के सत्याग्रह स्थल (गल्ला बाजार) पर विशाल समूह के बीच मालगुजार गंगाप्रसाद ने शहीद कन्धीलाल जैन की स्मृति में वट वृक्ष (बरगद) रोपा जो आज भी है। इसी सत्याग्रह स्थल पर 'जय स्तम्भ निर्माण समिति', सिलोंड़ी ने 1983 में शहीद-स्तम्भ निर्मित कराया है।

जबलपुर के वयोवृद्ध स्वतन्त्रता सेनानी और 'मध्य प्रदेश स्वतंत्रता सेनानी संघ' के संस्थापक-मंत्री श्री रतन चंद जैन के निवास पर उनके दर्शनार्थ जब हम गये तो उपरोक्त सारा लिखित वर्णन उन्होंने हमें दिया। श्री जैन ने उपरोक्त वृत्तान्त श्री कन्धीलाल जैन के पारिवारिक जनों से मिलकर प्राप्त किया था, जो सम्प्रति जबलपुर में रहते हैं। शहीद स्तम्भ का चित्र जिसमें कन्धीलाल जी का नाम सबसे ऊपर है, इसी पुस्तक में प्रकाशित है।

आ॰-(1) वरिष्ठ स्वतंत्रता सेनानी श्री रतन चंद जैन, जबलपुर द्वारा प्रदत्त परिचय (2) शहीद स्तम्भ का चित्र जिसमें अमर शहीद कन्धीलाल का नाम सबसे ऊपर है।

❑❑❑

जैन इतिहास-विद्या अभी भी बहुत कुछ अविकसित एवं प्रारम्भिक अवस्था में है। सामग्री विपुल है, किन्तु इतस्ततः इतनी बिखरी हुई है कि उस सबको एकत्रित कर, शोध-खोजपूर्वक उसे व्यवस्थित करना और इतिहास निर्माण में उसका सम्यक् उपयोग करना एक-दो व्यक्तियों का कार्य नहीं है, वरन् किसी साधन सम्पन्न संस्था में कार्यकर्ताओं के सुगठित दल द्वारा कई दशकों में सम्पादित होने वाला कार्य है।

– सुप्रसिद्ध इतिहासविद् डॉ॰ ज्योति प्रसाद जैन

अमर शहीद मुलायमचंद जैन

जबलपुर (म०प्र०) के अमर शहीद मुलायमचंद जैन एक क्रान्तिकारी के हमशक्ल होने के कारण शहादत को प्राप्त हो गये। मुलायम चंद जैन, पुत्र-श्री भैयालाल पुजारी, जबलपुर के लार्डगंज में अपनी छोटी-सी कपड़े की दुकान चलाकर जीविकोपार्जन करते थे। अपनी पारिवारिक मजबूरियों के कारण मुलायम चंद स्वतंत्रता आन्दोलन में सक्रिय भाग तो नहीं ले पाते थे, पर उनकी हृदय की भावनायें तो आजादी के लिए हिलोरें लेती ही रहती थीं, वे खादी पहनते थे, संध्या के समय दुकान पर कांग्रेसी मित्रों का जमावड़ा होता था। दो-तीन दैनिक-पत्र वे दुकान पर मँगवाया करते थे, उन पर चर्चा होती थी, गर्मागर्म राजनैतिक बहसें होतीं थीं। यह बात पुलिस की निगाहों में आ चुकी थी, पर बिना आरोप के पुलिस कुछ कर नहीं पा रही थी। एक रात अचानक पुलिस उन्हें पकड़ ले गई और जेल में बन्द कर दिया। बाद में पता चला कि पुलिस एक ऐसे आदमी की तलाश कर रही थी,जो वेष बदलकर पुलिस को चकमे दे रहा था। मुलायम चंद का चेहरा उससे मिलता जुलता था अत: पुलिस ने संदेह में उन्हें पकड़ लिया।

जेल में साधारण पूछताछ के बाद जब मुलायमचंद कुछ नहीं बता सके, (बताते भी क्या ?) तो उन्हें भीषण यातनायें दी गईं। बर्बरतापूर्वक उनकी पिटाई की गई। यह क्रम लगातार नौ दिन तक चलता रहा। नौ दिन बाद जब वे छोड़े गये तो उनका शरीर इस योग्य नहीं रह गया था कि वह परतन्त्र भारत में साँस ले सके। वे मुँह से खाना नहीं खा पाते थे, पेशाब में निरन्तर खून आता था, उठने-बैठने में शरीर असमर्थ हो चुका था। एक माह तक जिन्दगी और मौत की आँख-मिचौली चलती रही। मुलायम चंद के पारिवारिक जनों/मित्रों/सहयोगियों/समाज के वरिष्ठ व्यक्तियों ने भरसक प्रयत्न किये पर मुलायमचंद को बचाया नहीं जा सका। इस प्रकार यह आजादी का प्रेमी अमर शहीद बिना किसी प्रमाणित अपराध के ही शहादत को प्राप्त हो गया। यह घटना 1942-43 की है।

आ०- (1) म० जै० इ०, पृष्ठ 518 (2) घटना के प्रत्यक्षदर्शी वयोवृद्ध स्वतन्त्रता सेनानी श्री रतन चंद जैन, जबलपुर द्वारा प्रेषित घटना क्रम।

❑❑❑

हल्दीघाटी के युद्ध में पराजित होने के बाद जब राणाप्रताप ने स्वदेश परित्याग का संकल्प लिया तब स्वदेशभक्त और स्वामीभक्त भामाशाह राणाप्रताप का रास्ता रोककर खड़ा हो गया और देशोद्धार के लिये उन्हें उत्साहित करने लगा। राणा ने कहा-'न मेरे पास धन है, न सैनिक और न साथी। किस बलबूते पर मैं देशोद्धार का प्रयत्न करूँ।' भामाशाह ने तत्काल विपुलद्रव्य उनके चरणों में समर्पित कर दिया। वह द्रव्य इतना था जिससे 25000 सैनिकों का 12 वर्ष तक निर्वाह हो सकता था।

अमर शहीद चौधरी भैयालाल

नाटा कद, गठीला बदन, गौर वर्ण और चेहरे पर जवानी की आभा, यही व्यक्तित्व था अमर शहीद चौधरी भैयालाल का। भैयालाल का जन्म 1886 में मध्यप्रदेश के दमोह नगर में पिता श्री बिहारी लाल के घर हुआ। 1908 के बंग-भंग के समय से ही वे राजनीति में सक्रिय हो गये थे। देश को आजाद देखने की उनमें ललक थी। संगठन की अद्‌भुत क्षमता के धनी चौधरी जी 1920-21 में दमोह के कांग्रेस जनों में अग्रणी थे। उन्होंने लोकमान्य बाल गंगाधर राव तिलक को दमोह में आमन्त्रित किया, पर शासन की ओर से सभा पर पाबन्दी लगा दी गई। चौधरी जी इससे निराश होने वाले नहीं थे। उन्होंने 20 मील दूर श्री दि० जैन अतिशय क्षेत्र कुण्डलपुर की सुरम्य पहाड़ियों के मैदान में सभा कराई और अपनी संगठन क्षमता का परिचय दिया। शासन जनता पर इनके प्रभाव से परेशान था।

प्रथम विश्वयुद्ध के समय जब दमोह में रेक्रूटिंग ऑफिसर सैन्यदल में जनता की भर्ती करने आया और उसने म्युनिसिपल कार्यालय में अपना भाषण दिया, तब चौधरी जी ने विरोध स्वरूप भाषण के लिए समय मांगा। जब समय नहीं दिया गया तो उन्होंने धन्यवाद देने के बहाने समय मांगा। अंत में सीमित समय देने पर चौधरी जी ने 'सेना में भर्ती' होने का विरोध किया और अगले दिन तिलक मैदान में सभा का ऐलान कर दिया। दूसरे दिन की सभा में जनता को इस सेना में भर्ती न होने की चेतावनी दी गई, नेताओं का तर्क था कि यह युद्ध हमारे देश के हित में नहीं है और न ही हमारे हितों के लिए लड़ा जा रहा है।

इस अपराध के कारण चौधरी जी पर राजद्रोह का मुकदमा चला। इस मुकदमे में सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि सरकारी पक्ष से एक भी गवाह पूरे दमोह शहर व देहात में नहीं मिला, परन्तु चौधरी जी के पक्ष में दो हजार लोगों ने गवाही देने को अपने नाम दिये। सरकारी दबाव पड़ने पर भी जब कोई व्यक्ति गवाह के रूप में नहीं मिला तो बहुत दिनों तक मुकदमा टालते हुए अन्त में मुकदमा खारिज कर दिया गया।

इसी बीच प्रान्तीय सरकार द्वारा सागर जिले के 'रतोना' ग्राम में बूचड़खाना खोले जाने का प्रस्ताव आया। सागर के साथ दमोह जिले में भी इसका डटकर विरोध किया गया, चौधरी जी इस विरोध में अग्रिम पंक्ति में थे। अंत में बूचड़खाने का कार्य बंद करा दिया गया।

शहीद गाथा, पुस्तक में 'शहीद चौधरी भैया लाल' के लेखक श्री कपूर चंद विद्यार्थी ने एक घटना का उल्लेख किया है जो चौधरी जी के दबंग व्यक्तित्व को प्रकट करती है। 'चौधरी जी ने असहयोग में भाग लिया और प्रत्येक दुकानदार से विदेशी कपड़ा बेचने का बहिष्कार कराया। एक धनी-मानी, विदेशी कपड़ों का प्रधान व्यापारी मना करने पर भी चोरी से रातों-रात कपड़ा बेचता और दिन को लम्बी-चौडी बातें करता। जब चौधरी जी को पता चला तो वे उसी दुकान के सामने अनशन पर बैठ गये और 3-4 दिन लगातार बैठते रहे, अन्त में दुकानदार ने महाबली होते हुए भी क्षमा मांगी। आखिर चौधरी जी ने छठे दिन अनशन तोड़ा।'

चौधरी जी जब कलकत्ता कांग्रेस की किसी मीटिंग में भाग लेकर लौट रहे थे तब मिर्जापुर के आस-पास दो अंग्रेज सैनिकों से ट्रेन में ही उनका विवाद हो गया। विवाद इतना बढ़ गया कि अंग्रेज सैनिकों ने गोली चला दी। इलाहाबाद जंक्शन पर गाड़ी खड़ी होने पर लाश को बाहर निकाला गया और पुलिस के संरक्षण में दाह-संस्कार कर दिया गया। परिवार वालों को तार द्वारा सूचना दी गई, जो दो दिन बाद उन्हें मिली। परिजन यह दुखद समाचार सुनकर इलाहाबाद पहुँचे, परन्तु पुलिस ने कोई निश्चयात्मक उत्तर नहीं दिया और

खिड़की से टकराकर मृत्यु होने की बात कहकर टाल दिया। इस घटना के साक्षी कुछ लोगों को ढूँढ़कर जब परिवार वालों ने पता लगाया तो, दो अंग्रेज सैनिकों को वाद-विवाद में हराने और उनके द्वारा प्राण-हनन का पता लगा जो चौधरी जी के स्वभाव से सत्य ही है।

यद्यपि 'परवार जैन समाज का इतिहास', पृष्ठ 519 एवं 'शहीद गाथा', पृष्ठ 28-30 में चौधरी जी को शहीद लिखा गया है। परन्तु 'मध्य प्रदेश के स्वतन्त्रता संग्राम सैनिक', भाग 2,पृष्ठ 87 पर उन्हें स्वतन्त्रता सेनानी ही लिखा गया है। यथा '.........सन् 1908 में बंग-भंग के समय से स्वतन्त्रता संग्राम में भाग लिया। सन् 1917 में बन्दी। सन् 1922 में एक यात्रा में आकस्मिक स्वर्गवास।'

आ०-(1) शहीद गाथा, पृष्ठ 28-30, (2) प० जै० इ०, पृ० 519, (3) म० प्र० स्व० सै०, भाग-2, पृष्ठ 87, (4) चौथा संसार, इन्दौर 27-8-1997 (5) ज्ञानोदय, मई 1952 अंक

❑❑❑

प्राचीन पुरुषों के गुणों को कौन कह सकता यहाँ।
सम्पूर्ण सागर नीर यों घट मध्य रह सकता कहाँ।।

– राष्ट्रकवि श्री मैथिलीशरण गुप्त

क़िस्मए अज़मते माजी को न मुहम्मिल समझो।
क़ौमें जाग जाती हैं अक्सर इन अफसानों से।।

– खाँ

इतिहासप्रदीपेन मोहावरणघातिना।
सर्वलोकधृतं गर्भं यथावत्संप्रकाशयेत्।।

स्वजातिपूर्वजानां तु यो न जानाति सम्भवम्।
स भवेत् पुंश्चलीपुत्रसदृशः पितृवेदकः।।

अमर शहीद चौथमल भण्डारी

1942 के 'भारत छोडो आन्दोलन' में जेल में ही अपना जीवन भारत-माता के चरणों में समर्पित करने वाले अमर शहीद चौथमल भण्डारी का जन्म 3 जुलाई 1926 को ग्राम कायथा, जिला-उज्जैन (म०प्र०) में हुआ। इनके पिता का नाम श्री केशरी मल भण्डारी था जो आस-पास की जनता में अत्यन्त लोकप्रिय थे। माता धार्मिक स्वभाव वाली समाज-सेविका महिला थीं। किशोरावस्था में ही भण्डारी जी जुलूसों और सभाओं में जाने लगे थे। सिर पर सफेद टोपी, धोती और कुर्ता, यही वेषभूषा थी चौथमल भण्डारी की।

भण्डारी जी ने महिदपुर क्रान्ति में भाग लिया था। श्री विनायक राव व्यास इनके क्रान्तिकारी साथी थे। 1942 के आन्दोलन में भण्डारी जी को 20 अगस्त 1942 को बन्दी बना लिया गया। 22 जुलाई 1943 को इन्दौर जेल में ही उनकी किसी कारणवश मृत्यु हो गई। शव-यात्रा इन्दौर में निकाली गई थी, जिसमें अनेक कांग्रेसी नेता सम्मिलित हुए थे।

इन्दौर (म०प्र०) से प्रकाशित होने वाले 'जैन प्रतीक' (मासिक) ने अपने जुलाई 1996 के अंक में 'जैन समाज का गौरव : अमर शहीद चौथमल भण्डारी' शीर्षक से एक सचित्र लेख प्रकाशित किया है जिसके अनुसार इन्दौर का सर्राफा बाजार प्रति गुरुवार को अमर शहीद के सम्मान में बन्द रहता था। इनके पिता को अल्प समय के लिए पेंशन भी मिली थी। लेख के अनुसार 'शासन ने इनकी (चौथमल भण्डारी की) स्मृति में इन्दौर में शहीद चौथमल उद्यान (जो आज नहीं) तथा कायथा इनकी जन्मस्थली पर शासकीय आयुर्वेदिक औषधालय बनाया था, किन्तु आज इस आयुर्वेदिक औषधालय पर इनके नाम का स्मृति-पटल नहीं है। इन्दौर उद्यान के बाद एक मार्ग का नाम 'शहीद चौथमल भण्डारी' रखा था।' (पृष्ठ-4) 'मध्य प्रदेश के स्वतन्त्रता संग्राम सैनिक', भाग 4, पृष्ठ 162 पर चौथमल भण्डारी जी का नाम स्वतन्त्रता सेनानियों की सूची में है। इस सूची के अनुसार भण्डारी जी ने दि० 3 जून 1942 से 24 सितम्बर 1942 तक कारावास भोगा था। नई दुनिया, इन्दौर में प्रकाशित एक संक्षिप्त परिचय में भी चौथमल भंडारी को शहीद लिखा गया है।

आ० (1) म० प्र० स्व० सै०, भाग 4, पृष्ठ 162, (2) जैन प्रतीक, इन्दौर, जुलाई 1996, (3) नई दुनियां, इन्दौर, 31-12-1997

❑❑❑

श्री अर्जुनलाल सेठी के वफादार और जांबाज शिष्य वीर मोतीचन्द जैन को फाँसी की सजा हो गई। मोतीचन्द महाराष्ट्रियन जैन थे। सेठी जी को बहुत सदमा पहुँचा। मोतीचन्द की पवित्र स्मृति में सेठी जी ने अपनी कन्या का विवाह महाराष्ट्र के एक युवक से इस पवित्र भावना से कर दिया कि "मैंने जिस प्रान्त और जिस समाज का सपूत देश को बलि चढ़ाया है उस प्रान्त को अपनी कन्या अर्पण कर दूँ। सम्भव है उससे भी कोई मोती जैसा पुत्र-रत्न उत्पन्न होकर देश पर न्यौछावर हो सके।"

अमर शहीद भूपाल पंडित

अगस्त 1957 के 'सन्मति' (मराठी) में प्रकाशित 'स्वातन्त्र्य युद्धांतील अहिंसेचा वीर हुतात्मा श्री भूपाल पंडित', संक्षिप्त लेख के अनुसार पाँच बार जेलयात्रा करने वाले और अन्त में पराधीनता की बेड़ियों से मुक्ति दिलाने के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर करने वाले वीर हुतात्मा भूपाल पंडित असामान्य गुणों के धनी थे। वे अनायास ही किसी के कब्जे में आने वाले नहीं थे। उनमें गजब का बल था। अंधनिष्ठा और अंधभक्ति उनके पास नहीं थी। हर बात को सत्य और तर्क की कसौटी पर कसना उनका स्वभाव था। इसी स्वभाव के कारण देश की आजादी के क्रान्ति-यज्ञ में वे कूद पड़े।

पंडित जी एक स्वतन्त्र बुद्धि के धारक, सत्याग्रह के लिए सदैव तैयार रहने वाले क्रान्तिकारी थे। अपने ऊपर दायर मुकदमा और शिवाजी दंगल मुकदमे के आरोपियों को छुड़ाने के लिए उन्होंने 'राम के पार' पर उपोषण शुरू किया था। खालसा में तीन बार, हैदराबाद संस्थान में एक बार और कोल्हापुर में एक बार इस प्रकार पाँच बार उन्होंने जेल यात्रायें कीं। उनका कार्यक्षेत्र सिर्फ महाराष्ट्र न होकर पूरा देश ही था। ब्रिटिश राज हो या संस्थान राज जहाँ कहीं भी वे जुल्म और अत्याचार देखते, आपे से बाहर हो जाते और उस अत्याचार को दूर करने का प्रयत्न करते रहते। यही कारण था कि जब उन्होंने कोल्हापुर में रहते हुए हैदराबाद में अत्याचारों के सन्दर्भ में सुना तो तत्काल हैदराबाद गये और वहीं जेल में बन्द कर दिये गये। हैदराबाद जेल से छूटते ही कोल्हापुर आये और आन्दोलन में कूद पड़े। उन्होंने न केवल स्वयं ही आन्दोलन में भाग लिया अपितु अन्य भी अनेक लोगों को आन्दोलन में भाग लेने के लिए प्रेरित किया, उनमें गजब की नेतृत्व क्षमता थी। पंडित जी रात-दिन जन-जागरण का कार्य करते रहे और अन्त में शहीद हुए। कुरुंदवाड संस्थान में मोर्चा निकालने में उनका बड़ा हाथ था। भूपाल पंडित सेनापति बापट जी के प्राण-यज्ञ-दल में एक बड़े सेनानी थे। सेनापति बापट जी भूपाल पंडित पर पुत्रवत् प्रेम करते थे।

आ0-सन्मति (मराठी), अगस्त 1957

❑❑❑

जिस संविधान का देशवासियों के जीवन, उनके लक्ष्यों और आकांक्षाओं से कोई सरोकार नहीं होता, वह खोखला रह जाता है, उससे देशवासियों की अवनति होती है। लोगों के मन-मस्तिष्क को ऊँचें लक्ष्यों की ओर केन्द्रित करना संविधान का लक्ष्य होना चाहिए।

-पं0 जवाहर लाल नेहरू

(संविधान सभा, 8 नवम्बर, 1948)

अमर शहीद भारमल

'सन्मति', (मराठी) के ही अगस्त 1957 के अंक में प्रकाशित संक्षिप्त लेख के अनुसार 16 दिसम्बर 1942 को पुलिस की गोली से तत्काल ही अमर शहीद भारमल का देहावसान हो गया था। Who's who of Indian martyrs, vol. I, Page 43 के अनुसार 'भारमल का जन्म 1927 के लगभग ग्राम मुरगुड, तालुका-कागल, जिला कोल्हापुर (महाराष्ट्र) में हुआ। उनके पिता का नाम श्री रामचन्द्र भारमल था। वे कक्षा 7 के विद्यार्थी थे तभी उन्होंने 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में भाग लिया। उन्होंने कागल की ट्रेजरी पर (लूटने के लिए) हमला किया, पुलिस द्वारा पकड़े गये और उसी दिन पुलिस की गोली से मारे गये। यह घटना 13 दिसम्बर 1942 की है।'

आ०-(1) Whos' who of Indian myrtyrs, Vol. 1, Page 43 (2)सन्मति (मराठी), अगस्त 1957

❑❑❑

मैं इस मंच पर खड़े होकर यह घोषणा करता हूँ कि आज हम पर जो लाठी चार्ज हुआ है, वह अंग्रेजी साम्राज्य का अन्त निकट आने की सूचना देता है- मेरे शरीर पर पड़ी एक-एक लाठी ब्रिटिश साम्राज्य के ताबूत की एक-एक कील सिद्ध होगी।

- अमर शहीद लाला लाजपत राय

इस देश की आजादी, एकता और अखण्डता की रक्षार्थ, शहीदों की स्मृति को स्थायित्व प्रदान करने के लिए उनके बलिदान-स्थलों पर स्मारक बनाना, सभाऐं आयोजित करना, जन-जागरण रैलियाँ निकालना, डाक टिकट जारी करना एवं स्मारिकायें प्रकाशित करना आज की सबसे बड़ी आवश्यकता है।

- रघुवीर सहाय

(मध्य प्रदेश सन्देश, 15 अगस्त 1987)

अमर शहीद हरिश्चन्द्र दगडोबा जैन

भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन में हैदराबाद मुक्ति संग्राम का भी बड़ा महत्त्व है। हैदराबाद को निजाम-राज से मुक्ति दिलाने के लिए भी देशप्रेमियों ने अपनी जान की बाजी लगा दी थी। इसी संग्राम के अमर शहीद हैं श्री हरिश्चन्द्र दगडोवा जैन। महाराष्ट्र के परभणी जिले के मानवत कस्बे में हरिश्चन्द्र जी सपरिवार रहते थे। 1937 में हरिश्चन्द्र जी के एक भाई को रझाकारों ने छल से मार दिया था। इतने पर भी हरिश्चन्द्र हतोत्साहित नहीं हुए। वे समय-समय पर राज्याधिकारियों से लोहा लेते रहे। हैदराबाद मुक्ति संग्राम के समय वे धर्माबाद (जिला-नांदेड) जाकर बस गये थे। वहाँ उन्होंने स्वामी रामानन्द तीर्थ जैसे प्रभावशाली नेताओं के नेतृत्व में काम किया।

स्वामी जी के प्रमुख साथी श्री गोविन्द राव पानसरे के सहकारी बनकर हरिश्चन्द्र जी आन्दोलन करते रहे। 1946 के अक्टूबर में निजाम सरकार ने गोविन्दराव तथा हरिश्चन्द्र जी को उनके अन्य साथियों के साथ हिरासत में ले लिया। जैसे-तैसे वहाँ से छूटकर सभी जा रहे थे कि धर्माबाद से 7-8 किलोमीटर कुंडलवाडी ग्राम में रझाकारों ने सबको घेर लिया। घटना स्थल पर ही श्री गोविन्दराव धराशाई हो गये। हरिश्चन्द्र जी भी मार से काफी जख्मी हो चुके थे, फलस्वरूप दो-तीन दिन बाद ही वे शहीद हो गये। हरिश्चन्द्र जी के पुत्र श्री मधुकर राव भी स्वतंत्रता सेनानी हैं।

आ०- (1) श्री मधुकर हरिश्चन्द्र जैन, मानवत द्वारा प्रेषित परिचय (2) भारतीय स्वातंत्र्यलढ्यातील जैनांचे योगदान (मराठी), पृ० 154

❑❑❑

माता (देश) और धर्म की रक्षा के लिए अपने प्राण देना ही में पसन्द करता हूँ।

मेरा फांसी पर लटकना ही मेरा संदेश होगा।

आपने केवल मेरी माता की ही बात सोची है, परन्तु मेरी माँ की भी माँ, हम सबकी माँ, भारत माता की बात नहीं सोची।

- अमर शहीद मोतीचंद

भूतदया जैनों का मुख्य तत्त्व है। मैं सब अहिंसावादी लोगों को जैन समझता हूँ।

मुझे दुनियां को कोई नई चीज नहीं सिखानी है। सत्य और अहिंसा अनादि काल से चले आये हैं।

- महात्मा गांधी

उपक्रम : पाँच

जैन स्वतंत्रता सेनानी

श्रीमती अंगूरी देवी जैन

पर्युषण पर्व, वीर निर्वाण संवत् 2519, अपने आगरा पर्युषण-प्रवास के दौरान मैं अनंत चतुर्दशी के दिन सायंकाल 'साहित्य कुंज' में प्रविष्ठ हुआ, एक



वृद्ध महिला ने बड़े प्रेम से बैठाया, मुझे समझते देर न लगी कि यही 'देश हित तैयार हैं गरदन कटाने के लिए' का आह्वान करने वाली श्रीमती अंगूरी देवी हैं। इनको देखकर कौन कह सकता है कि इस सम्भ्रान्त महिला ने जेल की कठोर यातनायें सही होगीं और देश की आजादी के लिए सब कुछ होते हुए भी अपना सुख उन्होंने छोड़ दिया होगा ? परन्तु यह सच है। श्रीमती अंगूरी देवी जैन आगरा के प्रसिद्ध स्वाधीनता सेनानी, साहित्यकार, पत्रकार, संस्कृतिकर्मी, जैन-साहित्योद्धारक, प्रकाशक और श्री बनारसी दास चतुर्वेदी के शब्दों में 'अखिल भारत के चोटी के हिन्दी सेवक' स्व0 महेन्द्र जी (जिनका परिचय इसी ग्रंथ में है) की पत्नी हैं।

श्रीमती अंगूरी देवी का जन्म 19 जनवरी 1910 को श्री होतीलाल जैन के यहां कासगंज में हुआ। आपने कक्षा 5 तक पढ़ाई की। 22 मई 1922 में आगरा के महान् देशभक्त महेन्द्र जी के साथ आपका विवाह हुआ।

अपने अतीत में डूबते हुए श्रीमती जैन ने बताया कि 'उन दिनों स्त्रियों में शिक्षा की कमी थी। पर्दा प्रथा चरम सीमा पर थी। मेरे पति ने स्वयं मुझे पढ़ाया और पर्दा छुड़ाकर स्वतंत्रता संग्राम में अपने साथ सम्मिलित कर लिया। इस समय भारत में स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए आग भड़क उठी थी। 1930 के सत्याग्रह में वे महिलायें, जो कभी पर्दे के बाहर निकलने की सोच भी नहीं सकती थीं, वो भी अपने देश की खातिर सब बंधन तोड़, स्वतंत्रता की लड़ाई में कूद पड़ीं। मैंने सैकड़ों महिलाओं को घर से निकाल कर एकत्रित किया और उनका नेतृत्व किया । मुझे आगरा जिला का चौथा डिक्टेटर नियुक्त किया गया।'

नमक सत्याग्रह आंदोलन में श्रीमती जैन ने कोतवाली पर धरना दिया, पुलिस के प्रहार के कारण काफी चोटें आयीं और छ: माह की सजा व जुर्माना हुआ। जेल से रिहा होकर आप फिर कार्य में जुट गयीं। गोरी सरकार द्वारा सभा पर पाबंदी होने पर भी आपने 26 जनवरी को 'सैनिक प्रेस' की छत पर खड़े होकर भाषण दिया। इस सभा में सैकड़ों भाई बहिन एकत्रित हुए थे। पुलिस ने इस सभा में लाठी चार्ज किया, जिससे सभा भंग हो गयी, चारों तरफ पुलिस की लाल पगड़ी दिखाई दे रही थी। पुलिस ने आपको गिरफ्तार कर लिया। साथ में आपकी बड़ी पुत्री पद्मा भी थी। आपको गिरफ्तार कर कोतवाली ले जाया गया, सारे रास्ते आप नारे लगाती रहीं 'इंकलाब जिंदाबाद' दरोगा मुहम्मद अली डंडे फटकारता रहा और कहता रहा कि 'चुप रहिये' लेकिन आपकी आवाज कम नहीं पड़ी, यहां से आपको जिला जेल भेजा गया, आप उस समय गर्भवती थीं। फिर भी छ: माह की सख्त सजा सुनाई गई, जेल में पुत्री पद्मा भी साथ रहीं।

1932 के बाद के समय में सत्याग्रह कुछ मंथरगति में आ गया, वहीं अंदर ही अंदर हिंसात्मक गतिविधियों ने भी जन्म ले लिया था। आपके निर्देशन

में थाना छत्ता में बम फेंका गया, टेलीफोन की तार व्यवस्था भंग कर दी गई, टूंडला स्टेशन पर रेल की बोगियां जला दी गयीं, पोस्ट आफिस फूंके गये, इस तरह अनेक हिंसात्मक गतिविधियों का सफल निर्देशन आपने किया।

1941-42 का व्यक्तिगत सत्याग्रह आन्दोलन अंग्रेजों को सहयोग न देने के रूप में आरंभ हुआ। 'भारत छोड़ो आन्दोलन' ने तो पूरे देश में आग ही लगा दी। इससे एक भारी तूफान उठ खड़ा हुआ, सारा देश आंदोलित हो उठा, धड़ाधड़ गिरफ्तारियां होने लगीं, विदेशी कपड़ों की होली जलाई जाने लगी, सूत कातना, चरखा चलाना एवं खादी का प्रचार-प्रसार हुआ।

1946-48 के मध्य में सांप्रदायिक दंगे भड़क उठे, आपके पति इन दिनों जेल में नजरबंद थे, उनका निर्देश था कि 'मेरे सभी कार्यकर्ताओं के परिवारों की सहायता व देखभाल करें' इन सब में आप अनवरत लगी रहीं। घर-घर जाकर उनकी सहायता की साथ ही सक्रिय रूप से आंदोलन में भाग लिया।

'आज की पीढ़ी को आप क्या संदेश देना चाहेंगी' हमारे यह कहने पर आपने कहा कि- 'मैं बहुत थोड़ी सी शिक्षा ही ग्रहण कर पायी पर उस समय इतना मतलब अवश्य समझती थी कि देश को आजाद कराना है, मैं अनपढ़ तथा पढ़े-लिखे सभी से यह कहना चाहूँगी कि वो इस देश के मूल्यों को पहचानें, इस धरोहर को सहेज कर रखें एवं इसके विकास के लिये उठ खड़े हों, यह देश हमारा है, इस देश को अपना समझें, पहचानें, विदेशी फैशन को न अपनायें। हमारी सभ्यता एवं संस्कृति को सहेज कर रखें।'

अंगूरी देवी जी की वेदना है कि 'राजनैतिक पार्टियां धर्म को सड़क पर ला रही हैं। धर्म बौद्धिक ज्ञान व मनशुद्धि का साधन है न कि कुर्सी हथियाने का। पार्टियां धर्म के नाम पर जातिवाद व देश का विखंडन न करें। आज हम एकता की बजाय अनेकता की ओर अग्रसर हो रहे हैं। देश विभाजित हो रहा है, जाति भेद में हम बंटे जा रहे हैं। अनेकता एवं विभाजन के इस प्रवाह को रोकने की जरूरत है। समाज सेवी संस्थाओं, युवाओं तथा देशभक्तों को आगे आने की आज अत्यधिक आवश्यकता है।'

अपनी जेल यात्रा का कोई संस्मरण सुनाने का आग्रह करने पर उन्होंने कहा कि – 'जब हम सभी महिलायें काम निपटाकर रात में एक साथ बैठतीं तो कोई न कोई कविता आदि सुनाती थीं, मैंने भी एक कविता बनाई थी।' श्रीमती जैन ने स्वयं यह कविता सुनाई–

जेल मत समझो री बहनो
जेल जाने के लिए
कृष्ण मंदिर है वहां
प्रसाद पाने के लिए।
दो समय प्रसाद भी मिलता नहीं
बराबर नियम से
एक चमचा दाल,
रोटी पांच खाने के लिये।
हापुड़ के पापड़ से बढ़कर
रोटियां हैं जेल कीं
दाल क्या? जीरा जल,
कब्जी मिटाने के लिये।
यहां कोई बेकार बैठ सकता है नहीं
चक्र भी है कृष्ण का चक्की चलाने के लिये।
शरम है गर, चोरी चारी कर
जावें जेल में
देश हित तैयार हैं
गरदन कटाने के लिये।

आ0–(1) साक्षात्कार (2) उ0 प्र0 जै0 ध0, पृ0 89 (3) जै0 स0 रा0 अ0 (4) गो0 अ0 ग्र0, पृ0 218

श्री अक्षयकुमार जैन

भोपाल (म0 प्र0) के श्री अक्षयकुमार जैन, पुत्र-श्री मानकलाल का जन्म 1922 में हुआ। 1948 के भोपाल राज्य विलीनीकरण आन्दोलन के सक्रिय कार्यकर्ता रहे श्री जैन ने राष्ट्रीय आन्दोलन में भूमिगत रहकर कार्य किया। शासन ने सम्मान पत्र प्रदान कर आपको सम्मानित किया है।

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-5, पृ0 09

सेठ अचलसिंह

आगरा (उ0प्र0) से लगभग 25 वर्ष तक लोकसभा सदस्य रहे, प्रसिद्ध सामाजिक कार्यकर्ता, कर्मठ स्वतंत्रता संग्राम सेनानी सेठ अचलसिंह का जन्म 5 मई 1895 को आगरा के रोशन मौहल्ले में हुआ, उनके पिता का नाम श्री पीतममल था, जो प्रसिद्ध पहलवान थे, अत: सेठ जी को उच्च नैतिक एवं शारीरिक बल विरासत में मिला, उनकी माता श्रीमती स्वरूपा बाई धर्मपरायण महिला थीं।



सेठ जी की शिक्षा-दीक्षा गवर्नमेंट हाई स्कूल एवं राजपूत कालेज, आगरा में हुई। बाद में आप कृषि कालेज, कानपुर तथा नैनी भी अध्ययनार्थ गये किन्तु राष्ट्र प्रेम के कारण अध्ययन छोड़ आजादी की लड़ाई में कूद पड़े।

सेठ जी ने 1916 के लखनऊ कांग्रेस अधिवेशन में भाग लिया। 1918 में वे आगरा कांग्रेस कमेटी के सदस्य बने। 1921 से 30 तक आगरा शहर कांग्रेस कमेटी के उपाध्यक्ष तथा 1930 से 1947 तक अध्यक्ष पद पर रहे। 1943 से 1945 तक आप प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी में आगरा नगर की ओर से प्रतिनिधि भी रहे थे।

1928 में साइमन कमीशन के भारत आने पर सेठ जी के नेतृत्व में आगरा में उसका जोरदार विरोध किया गया। 1930 के नमक सत्याग्रह में आपने भाग लिया और गिरफ्तार कर लिये गये। यह सेठ जी की प्रथम जेल यात्रा थी। सेठ जी ने 'नैतिक जीवन दर्पण' में स्वयं अपना परिचय देते हुए लिखा है—

'मुझे आज भी वह दृश्य भुलाये नहीं भूलता कि हजारों स्त्री-पुरुषों की भीड़ मेरे साथ नमक कानून तोड़ने के लिए चल दी थी। हमने कई जगह नमक बनाकर कानून तोड़ा। फलत: मुझे गिरफ्तार कर लिया गया। इस अपराध में मुझे 6 माह की जेल और 500 रुपये जुर्माना किया गया'

'1932 के सत्याग्रह आन्दोलन में भी 22 फरवरी 1932 को मुझे गिरफ्तार किया गया। इस बार मुझे अलग-अलग धाराओं में 18 माह की जेल एवं 500 रुपये जुर्माना किया गया। इस लम्बी जेल यात्रा में मुझे विकट शारीरिक कष्ट हुआ। मेरा स्वास्थ्य बिगड़ गया था, कूल्हे में भयंकर दर्द शुरू हो गया था, जो आज तक बरकरार है। इधर मैं जेल में था उधर मेरे पिता तुल्य ज्येष्ठ भ्राता सेठ बलवन्तराय का स्वर्गवास हो गया।........."जेल में मेरा जैनाभ्यास" नामक पुस्तक मेरे इन्हीं दिनों के अध्ययन और परिश्रम का फल है।'

'चूंकि मेरी रुचि जनसेवा में थी इसलिए बड़े भ्राता की मृत्यु के बाद सारा व्यापार ढप्प पड़ गया। 1933 में मैं जेल से छूट कर आया तो अपने सारे कारोबार को बन्द करके पूरी तरह कांग्रेस की सेवा में लग गया। 1934 में मैंनें एक लाख रुपयों की धनराशि से अचल ट्रस्ट की स्थापना की, जिसका उद्‌घाटन मानवीय गोविन्द वल्लभ पन्त ने किया था।............ 1935 में मैंने मोतीलाल नेहरू स्मारक भवन का निर्माण कराया, जिसका शिलान्यास कांग्रेस अध्यक्ष श्री राजेन्द्र प्रसाद ने किया था।.......... 1937-38 में आगरा जिले में नशीली वस्तुओं की खपत बढ़ने से

चिन्तित होकर मैंने 10 अप्रैल 1939 को ''आगरा मद्य निषेद्य बोर्ड'' की स्थापना की।'

'1940 में महात्मा गांधी द्वारा पुनः सत्याग्रह आन्दोलन प्रारम्भ किया गया। इस बार गांधी जी ने सामूहिक सत्याग्रह के स्थान पर व्यक्तिगत सत्याग्रह करने का आदेश दिया। लेकिन चूंकि गांधी जी का आदेश था और व्यक्तिगत सत्याग्रह पर बैठने वाले को अपने क्षेत्र का जनप्रिय होना भी आवश्यक था। इसलिए लौट फिरकर सर्वप्रथम मेरा नाम ही आया। मैंने सहर्ष अपनी स्वीकृति दे दी। मैंने सत्याग्रह पर बैठने का निर्णय 15 दिसम्बर 1940 को लिया और इसकी सूचना अधिकारियों को भेज दी। फलस्वरूप मुझे मेरे बंगले से गिरफ्तार कर लिया गया। उस समय मुझे एक वर्ष के कठोर कारावास का दण्ड दिया गया।'

1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में भी आपने जेल यात्रा की। इस सन्दर्भ में आपने स्वयं लिखा है- '............मुझे गिरफ्तार किया गया तथा जेल भेज दिया गया। जेल में इस बार मेरे कूल्हे का दर्द बहुत बढ़ गया था, इसलिए मेरा स्वास्थ्य निरन्तर गिरता गया, यहाँ तक कि मेरा वजन जेल में 50 पौंड कम हो गया। अन्त में 1944 में ढाई वर्ष जेल में रखने के बाद मुझे स्वतः छोड़ दिया गया'

15 अगस्त 1947 को देश के आजाद होने के संस्मरण को सेठ जी ने इस प्रकार व्यक्त किया है-- '..........पूरे देश में उल्लास पूर्वक 15 अगस्त को स्वतंत्रता दिवस मनाया गया। उस दिन आगरा नगर में भी स्वतंत्रता दिवस मनाया गया। मैं चूंकि नगर कांग्रेस कमेटी का अध्यक्ष था, 14.15 अगस्त की रात को 12 बजे मैंने किनारी बाजार के चौराहे पर ऐलान किया कि आज हमारा देश स्वतंत्र हो गया है, अतः हजारों के हर्षित-उल्लसित जन-समूह के समक्ष मैंने ही आगरा के रामलीला मैदान में प्रातः 7 बजे झण्डारोहण किया। उस दिन का ऐतिहासिक दिन कितना मनोहारी था, यह मैं आज भी नहीं भूला हूँ। हजारों की भीड़ उमड़ी पड़ रही थी। सबके मुख पर हर्ष एवं मन प्रफुल्लित थे। झंडारोहण कार्यक्रम में 'वन्देमातरम्' और 'झंडा गायन' के पश्चात् स्वतंत्रता के संबंध में मैंने जो भाषण दिया था वह संघर्ष के बाद मिली सफलता के उदगार थे, जिसे सुनकर लोगों में जोश भर गया था। उन्होंने करतल ध्वनि कर अपना हर्ष एवं उत्साह प्रकट किया। उस समय मुझे भी लगा था कि स्वाधीनता आन्दोलन की संघर्ष-साधना में राष्ट्र की ओर से मेरी भी विजय हुई है।'

1946 में आप आगरा नगर की ओर से प्रान्तीय धारा सभा के लिए चुने गये और 1952 तक इस पद पर रहे। 1952 में प्रथम लोकसभा के गठन से ही 1977 तक लगातार आप आगरा से लोकसभा सदस्य निर्वाचित होते रहे, पर 1977 में पराजय का मुंह देखना पड़ा। इसके बाद आपने अपने नाती श्री निहाल सिंह को चुनाव में उतारा और वे भी भारी बहुमत से विजयी हुए।

1924 में स्वराज्य पार्टी के टिकट पर तत्कालीन विधान परिषद् की सदस्यता हेतु आप चुने गये थे। तिलक स्वराज्य फण्ड व गांधी स्मारक राष्ट्रीय कोष के लिए क्रमशः 25 हजार व साढ़े चार लाख रुपया आपने आगरा से एकत्रित कराया था। आप आगरा विश्वविद्यालय सीनेट के सदस्य रहे थे। 1953 में आपके संयोजकत्व में आगरा में 'अखिल भारतीय कांग्रेस' का अधिवेशन हुआ था, जिसमें पं0 जवाहर लाल नेहरू व पं0 गोविन्द वल्लभ पन्त पधारे थे। 1954 में चीन के तत्कालीन प्रधानमंत्री चाऊ एन0 लाई के आगरा पधारने पर आपने उनका भव्य स्वागत किया था। पाकिस्तान से आये शरणार्थियों की भी आपने हर सम्भव मदद की थी। बिहार के

भूकम्प, आसाम की बाढ़, आन्ध्र के भूकम्प आदि में भी आपने अपनी ओर से हजारों रुपया देकर सहायता की थी।

सेठ अचल सिंह ने ग्रामों के उत्थान में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। 1928 में आपने 'अचल ग्राम सेवा संघ' की स्थापना की थी, जिसने अपनी शैक्षणिक एवं स्वास्थ्य सेवाओं से ग्रामों में क्रान्ति कर दी थी। 1935 में आपने एक लाख रुपये का 'अचल ट्रस्ट' बनाया था, जिससे वाचनालय, पुस्तकालय आदि अनेक गतिविधियों का संचालन होता था।

पशुकल्याण के क्षेत्र में सेठ जी का योगदान अविस्मरणीय है। साम्प्रदायिक सद्भावना बनाने में आप सदैव अग्रणी रहे। 1931 में हुए दंगे में आप पर ईंट पत्थरों से हमले हुए, सिर में घातक चोटें आईं फिर भी आप अडिग सेनानी की भांति डटे रहे। सेठ जी लोकहित व जनसेवा के कार्यों के लिए धन एकत्र करने का कार्य अपने हाथ में लेते थे और लोग भी उन्हें मुक्त हस्त से दान देते थे। सेठ जी की धन संग्रह करने की क्षमता देखकर श्री कृष्णदत्त पालीवाल उन्हें आगरा का 'जमना लाल बजाज' कहकर सम्बोधित करते थे।

सेठ अचल सिंह के मन-मस्तिष्क को जो बात सबसे अधिक चिन्तित करती रही वह थी व्यक्ति-समाज और देश में उत्तरोत्तर बढ़ती हुई अनैतिकता और नैतिक मूल्यों का तेजी से होता ह्रास। उनका मानना था कि जब तक हमारे राष्ट्रीय चरित्र का उत्थान नहीं होगा तब तक भारत की उन्नति नहीं हो सकती। उन्होंने समाज से भ्रष्टाचार, तस्करी, मिलावट, लूट एवं अनैतिक आचार आदि को मिटाने के लिए आगरा से ही एक प्रयोग शुरू किया, इसके लिए उन्होंने 1964 में 'नैतिक नागरिक संघ' की स्थापना की थी। आगे चलकर 1978 में उन्होंने घोषणा की थी कि 'आगरा जनपद में उन नागरिकों का सार्वजनिक अभिनन्दन किया जाय जो किसी भी क्षेत्र में नैतिक मूल्यों व सदाचार पर आधारित साफ सुथरा जीवन व्यतीत कर रहे हों।'

पं० जवाहर लाल नेहरू से आपका घनिष्ठ संबंध था। 1929 में पं० मोतीलाल नेहरू एक मुकदमे के संदर्भ में आगरा आये। सेठ जी उनसे मिलने गये। पं० जी ने हंसते हुए कहा-'अब आपको अपनी सेठाई छोड़कर देश के लिए कष्ट उठाने होंगे', सेठ जी ने तत्काल उत्तर दिया 'मैं देश सेवा के लिए तैयार हूँ और उस मार्ग में आने वाले हर संकट को सहन करूँगा।'

इन्दौर में सम्पन्न अ०भा० कांग्रेस कमेटी के जनरल अधिवेशन में भाग लेने सेठ जी पहुँचे, वहाँ भारी भीड़ थी। पं० जवाहर लाल नेहरू भाषण दे रहे थे। उनकी निगाह जब सेठ जी पर पड़ी तो तत्काल बोले 'आगरे का मोटा ताज जन-समुद्र की लहरों में फंसा हुआ है- मैं जनता से निवेदन करता हूँ, उन्हें मंच पर आने दिया जाय'

इसी प्रकार एक बार नेहरू जी विदेश यात्रा से वापिस आये। सेठ जी माला लेकर अभिवादन करने सबसे आगे पहुँच गये। हवाई जहाज से उतरते हुए नेहरू जी ने कहा-'सेठ जी क्या आज आप राष्ट्रपति हैं?' (सेठ अचल सिंह अभिनन्दन ग्रन्थ, पृष्ठ 50)

सेठ जी जैनधर्म के कट्टर अनुयायी थे, 1936 में अजमेर में हुए द्वितीय ओसवाल जैन महासम्मेलन के आप सभापति चुने गये थे। 'ओसवाल सुधारक' का प्रकाशन आपकी देखरेख में ही होता था। भ० महावीर 2500वां निर्वाण महोत्सव समिति के भी आप सदस्य थे। आपने स्वयं लिखा है- 'मेरे जीवन पर महावीर स्वामी एवं जैनधर्म के गुरुओं-सन्तों का प्रभाव मेरे विद्यार्थी जीवन में ही पड़ चुका था।' 'जेल में मेरा जैनाभ्यास' पुस्तक आपने जैन दर्शन की अनेक पुस्तकें पढ़ने के बाद लिखी थी। 450 पृष्ठों

की इस पुस्तक में 70 शीर्षक हैं। जैनधर्म के प्रति उनकी गहन आस्था को लक्ष्य कर ही प्रसिद्ध पत्रकार श्री यशपाल जैन ने लिखा है– 'सेठ जी में तड़प है कि जैन समाज ऊँचा उठे' (अभि0 ग्र0, पृ0 62)

सेठ जी की रचनाओं में 'जेल में मेरा जैनाभ्यास' के अतिरिक्त 1930 में लिखी 'सफल साधना' भी उल्लेखनीय है। इसके अतिरिक्त उन्होंने अनेक राजनैतिक लेख भी लिखे हैं। 'नैतिक जीवन दर्पण' को सेठ जी की संक्षिप्त आत्मकथा कहा जा सकता है।

आपकी धर्मपत्नी श्रीमती भगवती देवी में वे सभी गुण विद्यमान थे जो एक सद्गृहिणी में होना चाहिए। निर्भयता, तेजस्विता और राष्ट्रप्रेम उनमें कूट-कूट कर भरे थे। स्वतंत्रता आन्दोलन में भी वे पीछे नहीं रहीं। इस सन्दर्भ में सेठ जी ने लिखा है–

'मेरे जीवन की सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह रही कि जब-जब मैं भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन में जेल गया तब मेरी धर्मपत्नी ने मेरी अनुपस्थिति में महिला आन्दोलन चलाकर देश सेवा में मुझे सहयोग दिया।' 1930 में जब सेठ जी सत्याग्रह करते हुए गिरफ्तार कर लिये गये तब सदर में एक बड़ा जुलूस निकाला गया। श्रीमती भगवती देवी ने कोतवाली के सामने हँसते-हँसते फूलों की माला पहनाई और हर्ष के साथ विदाई दी। श्रीमती भगवती देवी का निधन 18 जून 1949 को हुआ पर उससे पूर्व ही सेठानी जी ने 1946 में ही अपनी चल-अचल सम्पत्ति का वसीयतनामा एक महिला शिक्षण संस्थान के लिए कर दिया था। 29 जनवरी 1949 को श्रीमती रामेश्वरी नेहरू के कर-कमलों द्वारा 'भगवती देवी जैन शिक्षण संस्थान' का उद्घाटन हुआ। आज यह 'भगवती देवी जैन पोस्ट ग्रेजुएट कालेज' के नाम से आगरा वि0 वि0 का उत्कृष्ट महिला कालेज है। सेठानी जी की इच्छानुसार ही आपने 1952 में अपने भतीजे नरेन्द्र सिंह उर्फ मुन्ना बाबू को तत्कालीन गृहमंत्री माननीय गोविन्द वल्लभ पन्त और राजर्षि पुरुषोत्तम दास टण्डन की उपस्थिति में गोद लिया था। श्री मुन्ना बाबू इस समय उक्त कालेज के प्रबन्धक हैं। दि0 21/9/96 को अपने आगरा प्रवास के दौरान जब मैं मा0 रिखब चंद जैन (आगरा) के साथ श्री मुन्ना बाबू से मिलने गया तो यह देखकर दंग रह गया कि क्रोडों की सम्पत्ति के मालिक होते हुए भी मुन्ना बाबू अपने हाथों से कालेज की बैन्चों की बैल्डिंग कर रहे थे।

सेठ जी की कुछ मौलिक विशेषतायें थीं, वे कभी कोई सार्वजनिक चुनाव नहीं हारे, सदैव शुद्ध खादी के वस्त्र धारण करते थे, आगरा में अनेक नेताओं की मूर्तियाँ उन्होंने स्थापित करवाईं। 1971 में इन्दिरा गांधी के समाजवाद के नारे पर उन्होंने 'सेठ' पदवी लिखना बन्द कर दिया था। 'नैतिक पतन' को देखकर वे सदैव चिन्तित रहा करते थे। पूज्य बापू और नेहरू जी से जब-तब उनका पत्राचार होता रहता था। बापू द्वारा 1935 में सेठ जी को लिखा गया पत्र निम्न है–

राष्ट्रपिता म0 गांधी द्वारा सन् 1935 में लिखा गया पत्र-

वर्धा, 19-2-35

भाई अचलसिंह,

आप एक एम0एल0 सी0 क्यों लिखते हैं? बहुत हि अनुचित लगता है। उत्तर लिखाते समय आपका खत मेरे सामने होने के कारण मेरी आँख छपी हुई चीज पर पड़ी, और यह देखा। इतने बड़े हर्फों में भी लेटरहेड नहीं छापे जाते।

सुअर की बात पढ़कर मैं तो व्याकुल-चित्त बन गया हूँ। आपके खत को आज ही पहुँचा। उसका उत्तर ऐसे ही देता हूँ। क्या आपने यह दृश्य पहले हि देखा ? कितने हरिजन थे ? यह देखकर आपने कुछ किया ? यदि किया तो उन लोगों ने क्या उत्तर दिया ? यदि जिन्दा सुअर को आग में डालते थे तो

क्या वह चिखते नहीं थे ? आप इस बारे में सूक्ष्म निरीक्षण करके मुझे लिखें। यदि यह प्रथा हरिजनों में सर्वसाधारण है तो हमारे बड़ा आन्दोलन करना होगा।

अगर जैसे आप लिखते हैं वैसे हर जगह होता होगा तो यह भयंकर पाप हरिजनों का नहीं हमारा है, वैसा मैं मानूंगा हमने उसकी घोर उपेक्षा की है उसका हि यह परिणाम हो सकता है।

आपका

मो० क० गाँधी

(नोट– पत्र में जिस प्रकार की भाषा है वह वैसी ही दे दी है।)

(साभार-सेठ अचल सिंह अभि0 ग्रन्थ, पृष्ठ 105)

सेठ जी को अपने जीवन में अनेक सम्मान मिले, 1974 में एक वृहद् अभिनन्दन ग्रन्थ उन्हें भेंट किया गया था। जिसके सम्पादक श्री प्रताप चंद जैसवाल हैं। 22 दिसम्बर 1983 को सेठ जी का निधन हो गया।

आ0-(1) सेठ अचल सिंह अभिनन्दन ग्रन्थ, (2) नैतिक जीवन दर्पण, (3) अचल चरित, (4) इ0 अ0 ओ0 2/393 (5) जै0 स0 रा0 अ0, (6) गो0 अ0 ग्र0, पृ0 217-218 (7) उ0प्र0जै0ध0, पृ0 89 (8) अमर उजाला, आगरा (9) जिनवाणी, जनवरी 1984

श्री अजितकुमार जैन

श्री अजितकुमार जैन का जन्म उत्तर प्रदेश के



ग्राम-कैलगुंवा, तहसील-महरौनी, जिला - झांसी में संभ्रान्त नागरिक, धर्मप्रेमी श्रीमान् पंडित मुन्नालाल जैन सतभैया के घर दिनांक 24 अक्टूबर 1914 को हुआ।

21 वर्ष की अल्पायु में ही आप स्वतंत्रता संग्राम में कूद पड़े। 1941 के व्यक्तिगत सत्याग्रह में आप कार्य करते रहे तथा 1942 में जब बापू ने 'करो या मरो' का नारा दिया तब आंदोलन के कारण इनका तथा भगवानदास जोशी, कैलगुवां का वारंट कटा । आप फरार (भूमिगत) होकर ओरछा राज्य स्टेट में आकर 'ओरछा सेवा संघ' के सक्रिय सदस्य बने और 'ओरछा सेवक संघ मंडल' ग्राम कारी के मंत्रीपद पर कार्य करने लगे। तभी आप पं0 श्री लालाराम बाजपेई, पं0 चतुर्भुज पाठक, नारायणदास खरे, बाबूलाल मामुलिया, सुन्नु लाल नापित आदि के संपर्क में आये।

अपना राजनैतिक परिचय व अपने संस्मरण देते हुए आपने लिखा है- 'जब मैं भूमिगत रहकर कार्य कर रहा था तब तहसीलदार श्री राज बहादुर सिंह उर्फ हंटर बहादुर का दौरा हुआ, उसमें. बेगार में साहब बहादुर तथा उनके स्टाफ के लेटने के वास्ते चर्मकारों के यहां से खटिया, कुम्हारों के यहाँ से मिट्टी के कोरे बर्तन, ढीमरों को पानी भरने के लिए तथा साहब बहादुर की पालकी उठाने के लिए पकड़ लिया जाता था तथा बनियों के यहां से भोजन सामग्री आदि बेगार में आती थी। तहसीलदार का स्वागत ऐसे होता था जैसे किसी दूल्हे का स्वागत हो रहा हो, बैण्ड बाजे के साथ ग्राम के संभ्रान्त नागरिकों को लेने जाना पड़ता था। पालकी में सवार तहसीलदार जैसे दूल्हा हो, प्रत्येक घर पर उनका टीका होता था, जो साहब बहादुर की जेब खर्च के काम आता था, परंतु मजदूरों की मजदूरी नहीं दी जाती थी न ही बनियों को रसद का पैसा। यदि दिया भी गया तो साल छः महीने बाद, वह भी आधा-अधूरा।

मेरे विरोध करने पर तहसीलदार ने राजा से शिकायत की जिसके परिणामस्वरूप मुझे गिरफ्तार कर मोहनगढ़ में बंद रखा गया।

'राजपूत सेवा संघ' राजा जागीरदारों द्वारा बनाया गया गुट था। जिसका विरोध करने पर मुझे इतना

पीटा गया कि मैं तीन दिन तक बेहोश रहा, शरीर में अनेक चोटें आयीं जो आज भी बद्दल होने पर उक्त घटना की याद दिला देतीं हैं। मैं टीकमगढ़ शहर से नौ मील दूर इन्टीरियल में था। जब टीकमगढ़ श्री सरदार सिंह तथा श्री मगनलाल गोइल्ल को खबर मिली तब वह ग्राम कारी आये और मुझे बेहोशी की हालत में खटिया पर रखकर टीकमगढ़ अस्पताल में भर्ती करवाया।'

'1946 में उत्तरदायी शासन प्राप्ति हेतु चरखारी जेल में जाना पड़ा। चरखारी जेल में 2 माह 10 दिन तक बंद रहा। जेल से छूटने के बाद सरीला, बाबनी, बिजावर, छतरपुर, मैहर, पन्ना, नागोद आदि स्थानों पर जाकर आंदोलन हेतु लोगों को तैयार करता रहा।'

जीवन का सबसे दुखद पहलू बताते हुये श्री जैन ने लिखा है-'जब मैं जेल में बंद था तब मेरी पत्नी श्रीमती कस्तूरी देवी बीमार पड़ी। मुझे मिलने के लिये पैरोल पर जाकर इलाज के लिये कहा गया लेकिन मैंने बाकी के साथियों को छोड़कर जाना उचित नहीं समझा। आखिरकार वह स्वर्ग सिधार गयी, मुझे मिल ही न सकी। अमानत के रूप में एक पुत्री पुष्पा देवी को ग्यारह माह का छोड़ गयी, जिसका पालन किया और फिर उसका विवाह किया था परन्तु उसके पति ने इंदौर जाकर दूसरी शादी कर ली। वह परित्यक्ता, उसके सभी बाल बच्चे मेरे साथ रह रहे हैं व मेरे ही आश्रित हैं।'

अपने राजनैतिक कार्यों को बताते हुए आपने लिखा है-'ओरछा राज्य में जितने भी राजनैतिक आंदोलन चलाये गये उन सब में मैं भागीदार रहा। रचनात्मक कार्यों के अन्तर्गत विदेशी वस्त्रों का त्याग कराया। अस्पृश्यता निवारण में अग्रणी रहा। उसी के फलस्वरूप समाज से बहिष्कृत रहा। 1946 में विद्यार्थी आंदोलन में विद्यार्थियों का साहस बंधाया तथा आंदोलन में साथ रहा। 'वीर बाल मंडल' का गठन किया तथा उसके संरक्षक पद पर रहा। हरिजन सेवक संघ का सदस्य रहने के कारण हरिजनों को मंदिर-प्रवेश कराने में अग्रणी रहा। अन्य राजनैतिक, सामाजिक आंदोलनों में समय-समय पर समर्पण की भावना से सक्रिय योगदान देता रहा।'

पिता से विरासत में प्राप्त गरीबी, राष्ट्रहित में समर्पित जवानी और बुढ़ापे में पुत्री और उसके बच्चों का भार, क्षीण होती आंखें, समाज की उदासीनता इन सबने श्री जैन को तोड़ दिया है। हम उनके दीर्घायुष्य की कामना करते हैं।

आ०-(1) म० प्र० स्व० सै०, 2/125, (2) स्व० प०

बाबू अजितप्रसाद जैन

भारतीय संविधान निर्मातृ सभा के सदस्य रहे, सहारनपुर (उ०प्र०) के बाबू अजितप्रसाद जैन का जन्म 6 अक्टूबर 1902 को मेरठ (उ० प्र०) में



हुआ। आपके पिता का नाम श्री मुकुन्दलाल तथा माता का नाम दुर्गा देवी था। ग्यारह भाई- बहिनों में आप आठवीं सन्तान थे। सात बहिनों के बाद जन्म होने के कारण आपका लालन-पालन बहुत लाड़-प्यार से हुआ। आपकी शिक्षा मेरठ, मसूरी, सहारनपुर, लखनऊ आदि शहरों में हुई। लखनऊ से वकालात की परीक्षा पास कर आप सहारनपुर में वकालात करने लगे और वहीं के स्थायी निवासी हो गये। छात्र जीवन में आपने आन्दोलनों में भाग लिया। 1925-26 के आस-पास आपने राजनीति में प्रवेश किया।

अछूतोद्धार, चरखा चलाना आदि कार्य उन दिनों की राजनीति के महत्त्वपूर्ण अंग थे, सहारनपुर में इस प्रकार के रचनात्मक कार्यों का प्रारम्भ 1921 में हो गया था। बाबू झुम्मन लाल जैन इसके अगुआ

थे। 1926 के बाद अजितप्रसाद जी भी इसमें सक्रिय हो गये। 1927-28 में उनके इस प्रकार के कार्यों की चरम परिणति तब हुई जब जैनियों ने उन्हें जाति से बहिष्कृत करने का विचार किया। इस सन्दर्भ में श्री जैन के साथी श्री हीरा वल्लभ त्रिपाठी ने एक साक्षात्कार में बताया था कि '1927-28 में सहारनपुर में एक सहभोज का आयोजन किया गया जिसमें कोई जाति, वर्णादि का भेद नहीं रखा गया। मौलाना मंजूरुल नबी, अजित प्रसाद जैन व मैं सहभोज में सक्रिय थे, अत: तीनों को उलेमाओं, जैनियों और पण्डितों ने जाति से निकालने का प्रयत्न किया, परन्तु उन्हें सफलता न मिल सकी।'

सहारनपुर में जब 1927 में कांग्रेस का विधिवत् गठन हुआ तो उसमें श्री जैन सक्रिय कार्यकर्ता थे। 1928 में श्री जैन कलकत्ता कांग्रेस में सम्मिलित हुए। 1929 में जब महात्मा गांधी सहारनपुर आये तो अजितप्रसाद जैन को स्वागत समिति का मंत्री बनाया गया। उन्हीं के प्रयास से गांधी जी को दस हज़ार रुपये की थैली भेंट की गई।

गांधी जी की ऐतिहासिक दांडी यात्रा मार्च 1930 में साबरमती आश्रम से प्रारम्भ हुई। इस यात्रा के प्रारम्भ होते ही समस्त देश में हलचल मच गई, सहारनपुर जनपद पर भी इसका गहरा प्रभाव पड़ा। 8 मार्च को विशाल सभा का आयोजन सहारनपुर में किया गया जिसकी अध्यक्षता श्री जैन ने की थी। 13 मई 1930 को सहारनपुर के सैयद अब्बास तैय्यब को गिरफ्तार कर लिया गया इसके विरोध में जुबली पार्क में एक जलसा हुआ, जिसमें 14 मई की हड़ताल का ऐलान किया गया। यह जलसा 11 बजे तक चला, इसमें अजित प्रसाद जी ने जोशीला भाषण दिया था।

जनवरी 1932 में नेताजी सुभाषचन्द्र बोस की गिरफ्तारी के बाद सहारनपुर में एक विशाल जुलूस निकाला गया। तत्काल प्रशासन ने धारा 144 लगा दी, पर श्री जैन कहाँ मानने वाले थे, अपने अनेक साथियों के साथ उन्होंने धारा 144 तोड़ी और गिरफ्तार हुए। आपके गिरफ्तार होने पर श्रीमती सरजू प्रभादेवी एवं जावित्री देवी ने भाषण दिये थे। दिसम्बर 1932 में धारा 144 तोड़ने के अपराध में आपको पुन: गिरफ्तार कर लिया गया और 4 माह की सजा सुनाई गई। वहाँ से छूटने के बाद आपने श्री खुरशैदी लाल के साथ पुन: सत्याग्रह कर दिया, फलत: पुन: गिरफ्तार हुए और जेल से तभी छूटे जब आन्दोलन शान्त हो गया।

सहारनपुर के साथ-साथ आप तहसील देवबंद में भी सक्रिय रहे थे। 12-4-1930 को देवबन्द में एक कांफ्रेंस हुई। देवबंद के हाकिम इलाका बाबूराम यादव ने घोषणा की थी- 'जो देवबन्द में जलसा करेगा उसे हन्टर से पिटवाऊँगा,' अजितप्रसाद जी ने यह चुनौती स्वीकार की, वे लालता प्रसाद अख्तर, मौलाना अब्दुल वहीद और लगभग चार सौ कांग्रेसियों के साथ कांफ्रेंस में भाग लेने के लिए देवबन्द पहुंचे। सभा में जोशीला भाषण दिया, परिणामत: आपको गिरफ्तार कर लिया गया। 5-3-1931 में जब गांधी इरविन समझौता हो गया तब आप रिहा कर दिये गये।

12 अगस्त 1934 को श्री हीरा वल्लभ त्रिपाठी की अध्यक्षता में सहारनपुर नगर कांग्रेस कमेटी के चुनाव हुए। अजित प्रसाद जी इसमें प्रधान चुने गये इसी वर्ष जिला कांग्रेस कमेटी में आप प्रतिनिधि चुने गये।

1935 के भारत सरकार अधिनियम के अन्तर्गत केन्द्र और प्रान्तों में अलग-अलग सरकार बनाने की व्यवस्था थी। यह अधिनियम पहली अप्रैल 1937 से लागू होना था। इसमें मुसलमानों के लिए अलग से निर्वाचन की व्यवस्था की गई थी। 1936 में यू0पी0असेम्बली के चुनाव कांग्रेस ने मुस्लिम लीग के साथ मिलकर लड़े थे। सहारनपुर जनपद में नये

एक्ट के अन्तर्गत एक के स्थान पर तीन हिन्दू सीटें हो गईं थीं। नगरीय सीट पर भारी बहुमत से श्री जैन विजयी हुए थे।

श्री जैन किसान कानून के विशेषज्ञ माने जाते थे। वे सहाकारिता आन्दोलन से भी जुड़े रहे। 1938 के आस-पास सरकार ने आपको रूस जाने का पासपोर्ट नहीं दिया, परन्तु उ0प्र0 सरकार के नाराज होने पर केन्द्र सरकार को यह देना पड़ा था और श्री जैन विदेश यात्रा पर गये थे। उ0प्र0 में जमींदारी उन्मूलन में भी आपने सक्रिय भूमिका निभाई थी। इस सन्दर्भ में प्रसिद्ध साहित्यकार और स्वतंत्रता सेनानी श्री कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' ने लिखा है– 'सारा किसान कानून उनकी प्रतिभा का बल पाकर सजीव हुआ। संसार भर की किसान समस्या का अध्ययन करने के लिए जब वे विदेश गये तो जर्मनी के एक पत्रकार ने उन्हें- ''संसार के सबसे बड़े कानून के प्रमुख विधाता'' (किसान कानून पर 2400 संशोधन आये थे) कहा था। आज (1947) जमींदारी की जब्ती के बारे में यू0पी0 जो महान् अनुष्ठान कर रही है उसके वे मुख्य अंग हैं।'

16-17 दिसम्बर 1939 को मुजफ्फराबाद में पांचवां जिला राजनैतिक सम्मेलन हुआ, इसमें आयोजित किसान सम्मेलन की अध्यक्षता अजित प्रसाद ने की थी। इस राजनैतिक सम्मेलन में कुल चार प्रस्ताव पारित हुए थे, जिनमें तीन पर आपने जोशीले भाषण दिये थे।

8 सितम्बर 1941 को सहारनपुर में सत्याग्रह करते हुए आप गिरफ्तार हुए, आपको खतरनाक कैदी मानते हुए फतेहगढ़ जेल भेजा गया था। 1942 के प्रारम्भ में सहारनपुर के दस व्यक्तियों को उग्रवादी भाषण देने के आरोप में गिरफ्तार किया गया था, आपको भी वहराइच में दिये गये भाषण के आधार पर गिरफ्तार कर लिया गया था।

1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन के समय सहारनपुर का जिला कलेक्टर लॉयड जनता को अच्छी शिक्षा देना चाहता था। अतः 30 अगस्त 1942 को उसने पुलिस तथा होमगार्डों को साथ लेकर सहारनपुर जेल को घेर लिया। जेल में इस समय श्री जैन, ठा0 फूलसिंह और सेठ दामोदर दास थे। लॉयड ने बन्दियों को अपने-अपने स्थान पर जाने का आदेश दिया परन्तु सभी बंदी एक स्थान पर इकट्ठे हो गये। स्थिति की गम्भीरता को समझते हुए वह उस समय तो वापिस चला गया, परन्तु पुनः रात के ग्यारह बजे जेल पहुँचा और बैठक में बंदी सत्याग्रहियों पर लाठी चार्ज करवाया। झगड़ा होने पर जेल में खतरे की घण्टी बज गई और लॉयड नौ आदमियों को जेल से ले गया तथा उनका स्थानान्तरण मेरठ जेल में करा दिया, इनमें सम्भवतः श्री जैन भी थे।

अपने जेल जीवन के विशद अनुभव श्री जैन ने रोचक ढंग से वर्णित किये हैं। कुछ अंश हम यहाँ दे रहे हैं-'मुझे सहारनपुर से हरदोई स्थानान्तरित कर दिया गया था, जहाँ मैनें अपने जीवन के कुछ सबसे सुखद क्षण जिये........ गणेश शंकर विद्यार्थी हमें छोटे भाई की तरह स्नेह करते थे। .... मुझे जेल में कभी कोई परेशानी या परिवार से विछोह महसूस नहीं हुआ। .....मुझे खूब याद है कि जेल से जाते हुए गणेश शंकर विद्यार्थी की आखों में आंसू थे। मेरे रिहा न हो सकने के कारण उनकी अपनी जेल से छूटने की खुशी मद्धिम हो गई थी। ....हमारी जेल में झगड़े बहुत होते थे। ...मुझे याद है कि पुलिस आई0 जी0 की यात्रा के दौरान बहुत नारेबाजी हुई थी और हम में से जो इस नारेबाजी के नेता थे, उन्हें एकान्त कोठरियों में भेज दिया गया था। मैं भी उन्हीं में से एक था।'

1946 में कैबिनेट योजना के अन्तर्गत हुए चुनावों में हिन्दू सीट के अन्तर्गत आप सहारनुपर से चुने गये।

इसी समय संविधान निर्मातृ सभा के लिए भी आप चुने गये जहां आपने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

आजादी के बाद देश के निर्माण में भी आपने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। 1952 में हुए प्रथम आम चुनावों में आप सहारनपुर-मुजफ्फरनगर से लोकसभा के सदस्य चुने गये।

1957 में भी आप संसद सदस्य सहारनपुर-मुजफ्फरनगर से चुने गये थे। केन्द्रीय सरकार में आप पुनर्वास, खाद्य एवं कृषिमंत्री भी रहे थे। 1961-64 में आप उ0प्र0 कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष, 1965-66 में केरल के राज्यपाल और 1968-74 में राज्यसभा सदस्य रहे थे। सहारनपुर में गूंगों-बहरों के लिए एक विद्यालय की स्थापना भी आपने की थी। 'सेवानिधि ट्रस्ट' के आप एकमात्र ट्रस्टी थे। 'यू0 पी0 टिनेंक्सी एक्ट' व 'रफी अहमद किदवई का जीवन चरित्र' पुस्तकों के साथ-साथ आपके अनेक लेख पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए हैं। 2 जनवरी, 1977 को कैन्सर जैसे असाध्य रोग से आपका देहावसान हो गया।

आ0 - (1)- जै0स0रा0अ0, (2)- स0स0, 1/ 146-188, 538, 544, 554 आदि, (3)- स0स0, 2/ 248-258, (4)- उ0प्र0 जै0ध0 पृ0-86, (5)- भारत की संविधान निर्मातृ सभा का फोल्ड किया बड़ा चित्र इसी पुस्तक में देखें, जिसमें श्री अजित प्रसाद जैन का चित्र है।

श्री अबीरचंद जैन

श्री अबीरचंद जैन, पुत्र-श्री पन्नालाल का जन्म 1900 में जबलपुर (म0प्र0) में हुआ। 1942 के आन्दोलन में आप अपने पुत्र श्री हीरालाल द्वारा भूमिगत होकर तोड़-फोड़ के कार्य करने और गिरफ्तार न होने पर बंधक के रूप में बन्दी बनाये गये थे। जेल से पुत्र को आत्म समर्पण न करने की प्रेरणा देते रहे। अन्ततः श्री हीरालाल के गिरफ्तार होने पर 5 माह बाद रिहा किये गये।

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग- 1, पृष्ठ 29, (2)- स्व0 स0 ज0, पृष्ठ 83

श्री अभयकुमार जैन

श्री अभयकुमार जैन का जन्म 1912 में हुआ। आपके पिता का नाम श्री कल्याणदास था। कल्याणदास



जी ग्राम-वैर, तहसील-मैहर में कांग्रेस का काम गुप्त रूप से करते थे। जबलपुर त्रिपुरी अधिवेशन में जाने से राजा साहब नाराज हो गये और लाखों रुपया, जो मैहर और बैर में दुकान का था, वसूल नहीं होने दिया और जो जमीन थी वह भी जब्त करके अपने नौकरों को दे दी।

श्री जैन ने अपने परिचय में लिखा है- '1939 में रक्षाबन्धन के समय पहला झंडा निकला, जबकि उस समय शोर था, कि राजा सा0 मैहर ने पुलिस को आज्ञा दे दी है कि 'जो झंडा उठावे उसको गोली मार दो।' हम लोग आजाद चौक, मैहर में दीवानों की तरह झंडा लिये राष्ट्रगीत गाते मौत का इन्तजार कर रहे थे, एस0पी0 सा0 आये और मेरे सीने पर पिस्तौल लगाकर गरजे कि 'तुमने झंडा किसकी आज्ञा से निकाला है।' मैंने कहा- 'आज्ञा गुलामों को लेनी पड़ती है, हम तो आजाद हैं'। इस पर एस0पी0 ने पकड़ लिया और झंडा मांगा परन्तु जब तक हम लोगों के हाथों में हथकड़ी नहीं पड़ी, झंडा लिये हुए चार हजार जनता का हमारा जुलूस दीवान नागेन्द्रनाथ के बंगले पर पहुंचा। दीवान ने एस0पी0 को बुरे शब्दों में गाली दी फिर हम लोगों को (छः आदमियों को) कोतवाली ले जाकर बन्द कर दिया गया।

फिर हम लोगों के ऊपर मुकदमा चला जिसमें दो वर्ष की सजा तथा 100 रु0 जुर्माना सुना दिया गया और हम लोग जेल भेज दिये गये। जेल में हम लोगों पर डाकुओं और कातिलों द्वारा नाना प्रकार के अत्याचार होने लगे। अत्याचार सहन न होने पर हम

अनशन पर जब डाक्टर ने रिपोर्ट दी कि, ये सब मर जायेंगे, तब जाकर अत्याचार कम हुए इस तरह मैहर जेल में एक वर्ष छः माह बिताये।'

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग 5, पृ0 256 (2) स्व0 प0 (3) अनेक प्रमाण पत्र (4) वि0 स्व0 स0 इ0, पृ0-344

श्री अभयकुमार जैन

'अब्बू' उपनाम से विख्यात श्री अभयकुमार जैन, पुत्र-श्री गुलाबचन्द जैन का जन्म 7 सित0 1913 को



सिवनी (म0प्र0) में हुआ। 1937 में आपने कांग्रेस की सदस्यता ग्रहण की। 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में आपने भाग लिया तथा सिवनी, छिन्दवाड़ा, नागपुर, जबलपुर जेलों में डेढ़ वर्ष का कारावास भोगा। सम्पूर्ण जीवन राष्ट्र के प्रति समर्पित करने वाले श्री जैन में देश-सेवा, ईमानदारी, राष्ट्र के प्रति पूर्ण निष्ठा एवं श्रद्धा कूट-कूट कर भरी थी।

भारत की प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने स्वतंत्रता के पच्चीसवें वर्ष के अवसर पर स्वतंत्रता आन्दोलन में स्मरणीय योगदान के लिए राष्ट्र की ओर से आपको ताम्रपत्र भेंटकर सम्मानित किया था। इसी प्रकार दिगम्बर जैन समाज की ओर से भी सम्मान पत्र भेंटकर आपको सम्मानित किया गया था। शासकीय उपाधि महाविद्यालय, सिवनी की ओर से भी आपको अभिनंदन पत्र भेंट किया गया था।

वर्ष 1975-76 में आप बीस सूत्रीय आर्थिक कार्यक्रम समिति के सदस्य, 1981 से 83 तक जिला इंदिरा कांग्रेस कमेटी, सिवनी के कार्यकारी अध्यक्ष, वर्ष 1982 में जिला थोक उपभोक्ता भण्डार के

17-1-1983 को आपका स्वर्गवास हो गया।

आ0- (1) म0प्र0 स्व0 सै0, भाग-1, पृष्ठ 225 (2) श्री नरेश दिवाकर द्वारा प्रेषित परिचय।

श्री अभयकुमार जैन

व्यवसाय से चिकित्सक और 'अग्रगामी' जैसे राष्ट्रीय पत्रों के प्रकाशक, कटनी, जिला-जबलपुर (म0प्र0) के श्री अभयकुमार जैन, पुत्र-श्री बारे लाल का जन्म 1904 में हुआ। आयुर्वेद तथा होम्योपैथी चिकित्सा में महारत प्राप्त श्री जैन 1920 से ही स्वतन्त्रता संग्राम में सक्रिय हो गये थे। 1930 के जंगल सत्याग्रह में भाग लेने पर आप जबलपुर तथा मंडला जेलों में लगभग साढ़े सात माह बंद रहे। 1934 में 'आदर्श' तथा 1938 में 'अग्रगामी' नामक राष्ट्रीय पत्रों का प्रकाशन आपने किया था।

आ0- (1) म0प्र0 स्व0 सै0, भाग-1, पृष्ठ 29, (2) जै0स0 रा0 अ0।

श्री अभयमल जैन

'मारवाड़ लोक परिषद्' के संस्थापकों में एक श्री अभयमल जैन का जन्म जोधपुर (राजस्थान) में 1906 ई0 में हुआ। शिक्षा समाप्त कर वे जोधपुर रेलवे- कार्यालय में नौकरी करने लगे। राष्ट्रीय भावना से ओत-प्रोत श्री जैन ने 1928 से खादी पहनना शुरू किया और 1932 में जब श्री जयनारायण व्यास ने पुष्कर में मारवाड़ राजनैतिक सम्मेलन बुलाया तो श्री जैन उसमें भाग लेने गये, हुआ वही जिसकी उन्हें आशंका थी, उन्हें राजद्रोहात्मक कार्यों में भाग लेने का अपराधी मानकर नौकरी से निकाल दिया गया। अब वह खुलकर सार्वजनिक कार्यों में भाग लेने लगे। कागज स्टेशनरी की जो दुकान उन्होंने खोली वह राजनैतिक गतिविधियों का केन्द्र बन गई। 1936 में आपने अपने सहयोगी श्री मानमल जैन और श्री छगनराज चौपासनी के साथ छात्रों की शुल्क वृद्धि

और बाई जी के तालाब के मसले को लेकर आन्दोलन किया। सरकार द्वारा गिरफ्तार कर लेने पर आपको एक वर्ष परबतसर के किले में रहना पड़ा, मारवाड़ लोक परिषद् के 1940 के आन्दोलन में आप सक्रिय रहे, 1942 के आन्दोलन में आप दो वर्ष जेल में रहे। जोधपुर की अनेक सामाजिक और राजनैतिक संस्थाओं की स्थापना में आपकी सक्रिय भूमिका रही। देश की आजादी का शीघ्र सपना देखने वाले श्रद्धेय अभयमल जी आजादी के मात्र एक माह पूर्व जुलाई 1947 में आजादी का भावी जश्न देशवासियों को छोड़कर पंचतत्त्व में विलीन हो गये।

आ0-(1) जैन संस्कृति और राजस्थान, पृ0-344 (2) रा0 स्व0 से0, पृ0-680

श्री अभिनंदनकुमार टडैया

ललितपुर (उ0प्र0) निवासी, प्रसिद्ध टडैया परिवार में सेठ पन्नालाल जी के पुत्र श्री अभिनंदन



कुमार टडैया के राष्ट्रीय विचार कॉलेज जीवन से ही रहे हैं। 1942 के राष्ट्रव्यापी जन आंदोलन में सम्मिलित होने के कारण आप एक वर्ष कारावास और 100 रुपये के दंड से दंडित होकर झांसी जेल में रहे। टडैया जी जिले के प्रसिद्ध वकीलों में से हैं। आप जिला कांग्रेस एवं मंडल कांग्रेस के सदस्य रहे हैं। जैनाजैन जनता पर आपका अच्छा प्रभाव है। आप कई संस्थाओं की प्रगति से जुड़े हुए हैं। आपका जीवन सादा है। सही जिंदगी की तलाश में और सत्य की खोज में आप सदैव लगे रहते हैं।

आ0-(1) र0 नी0, पृ0-64, (2) जै0 स0 रा0 अ0, (3) डॉ0 बाहुबली कुमार द्वारा प्रेषित परिचय

श्री अमीरचंद जैन

अपनी कविताओं से राष्ट्रीयता की अलख जगाने वाले, मण्डला (म0प्र0) के श्री अमीरचंद जैन उग्रवक्ता और कर्मठ सिपाही रहे हैं। आप अपने अग्रज श्री श्यामलाल जी के साथ आन्दोलन में सक्रिय हुए। आशा थी कि श्यामलाल जी के जेल जाने पर आप शान्त हो जावेंगे, पर आप नहीं माने। 1941 एवं 1942 के आन्दोलनों में आपको जेल यात्रायें करनी पड़ीं, 1942 में आप डेढ़ वर्ष जेल में रहे। आप प्रचार सामग्री प्रेस में छापकर दिया करते थे।

आ0-(1) जै0 स0 रा0 अ0

श्री अमीरचंद जैन

जबलपुर (म0प्र0) के श्री अमीरचंद जैन, पुत्र- श्री कस्तूरचन्द का जन्म 1920 में हुआ। 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में होशंगाबाद में आप बन्दी बना लिये गये। आपने होशंगाबाद तथा अकोला जेल में 2 माह का कारावास भोगा।

आ0-(1) म0प्र0 स्व0 सै0, भाग-1 , पृष्ठ 29

श्री अमीरचंद जैन

बालाघाट (म0प्र0) के श्री अमीरचंद जैन, पुत्र श्री फदालीलाल जैन का जन्म 1920 में नरसिंहपुर (म0प्र0) में हुआ। दस वर्ष की उम्र में ही आप नमक सत्याग्रह के समय मंडला में स्वाधीनता आन्दोलन की ओर आकृष्ट हुए। 1932 में प्रभातफेरी निकालने के आरोप में आपको बेंतों की सजा दी गई। 1941 में व्यक्तिगत सत्याग्रह में 4 माह की नजरबन्दी तथा 1942 में लगभग 3 वर्ष जबलपुर जेल में आपने काटे। 'वनवासी सेवा मण्डल' के आप सक्रिय कार्यकर्ता रहे। 1949 के बाद आप नरसिंहपुर से बालाघाट चले गये।

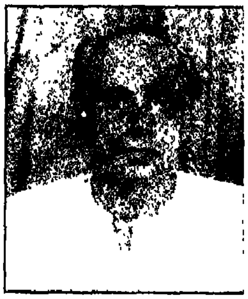
22 अगस्त 1997 को दैनिक भास्कर, जबलपुर को दिये एक साक्षात्कार में आपने कहा था- 'उस समय हमारा सपना था कि देश आजाद होने के बाद

भारत में हमें एक खुशहाल देश देखने को मिलेगा। हुआ भी यही, आजादी के समय इस देश में सुई का भी कारखाना नहीं था, सिंचाई व्यवस्था, विद्युत संयंत्र, शिक्षा का भी कोई खास फैलाव नहीं था। पंचवर्षीय योजनाओं द्वारा हमने कल कारखाने लगाये........ किन्तु आज देश में चारित्रिक गिरावट हुई है। रिश्वतखोरों, बेईमानों, घोटालों की बू आज हमें हर तरफ दिखाई दे रही है। .... इस गहन अंधकार को दूर करने वाला कोई सूरज अवश्य निकलेगा।'

आ०- (1)म०प्र०स्व० सै०, भाग-1, पृष्ठ 170, (2) दैनिक भास्कर, जबलपुर, 22 अगस्त 1997

श्री अमृतलाल चंचल

राष्ट्रीय गीतों के प्रसिद्ध लेखक श्री अमृतलाल चंचल, पुत्र-श्री हजारीलाल का जन्म 9 नवम्बर

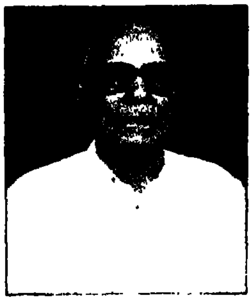


1913 को टिमरनी, जिला-होशंगाबाद (म०प्र०) में हुआ। बाद में आप गाडरवारा, जिला- नरसिंहपुर (म०प्र०) आकर बस गये। जब आप इन्टरमीडिएट में अध्ययनरत थे तभी से विद्यार्थी आन्दोलन में सक्रिय हो गये। 1932 के आन्दोलन में आपने हरदा में सत्याग्रह किया, गिरफ्तार हुए और साढ़े सात माह का कारावास भोगा। आपने अनेक राष्ट्रीय और जैन कवितायें लिखीं साथ ही 'रत्नकरण्ड-श्रावकाचार' और 'भक्तामर' का हिन्दी पद्यानुवाद किया है।

आ०-(1) म०प्र० स्व० सै०, भाग-1, पृष्ठ 137 (2) स्व० प०

श्री अमृतलाल जैन शास्त्री

जैन साहित्य के तलस्पर्शी विद्वान्, सुकवि पं० अमृतलाल शास्त्री, पुत्र-श्री बुद्धिसेन जैन का जन्म सात जुलाई 1919 को बमराना, जिला-झाँसी



(उ० प्र०) में हुआ। अल्पवय में ही आपको मातृ-पितृ वियोग सहना पड़ा।

आपने ललितपुर, सादूमल, बरुआसागर आदि स्थानों पर शिक्षा ग्रहण की और उच्च शिक्षा के लिए वाराणसी के स्याद्वाद महाविद्यालय पहुँचे, जहाँ से आपने न्यायतीर्थ और जैनदर्शनाचार्य की परीक्षायें उत्तीर्ण कीं।

स्याद्वाद महाविद्यालय 1942 में क्रान्तिकारियों का गढ़ था। विद्यालय के सभी छात्र आजादी के आन्दोलन में शरीक हुए थे और अधिकांश ने गिरफ्तार होकर जेल की दारुण यातनायें सही थीं। शास्त्री जी ने अपने 21-9-1994 के पत्र में स्वयं लिखा है-'सन् 1942 के राष्ट्रीय आन्दोलन में स्याद्वाद महाविद्यालय के छोटे-बड़े सभी छात्रों ने सक्रिय भाग लिया था। सभी को भिन्न-भिन्न काम सौंपे गये थे। पिस्तौलों की रक्षा तथा आगन्तुक नेताओं की व्यवस्था का भार मुझे सौंपा गया था। ......इक्कीस दिन तक हम तीनों (शास्त्री जी, श्री घनश्यामदास व श्री गुलाब चंद) हवालात में बंद रहे। श्री गणेशदास जैन ने जमानत देकर हमें छुड़ाया। उस समय जमानत देने वाले नहीं मिलते थे...'

सौभाग्य का विषय है कि जिस स्याद्वाद महाविद्यालय में आपने अध्ययन किया और क्रान्तिकारी गतिविधियों में भाग लिया, उसी विद्यालय में आप 1944 में अध्यापन कार्य करने लगे तथा 1959 तक कार्य किया। 1960 से 1980 तक सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी, 1981 से 1988 तथा 1993 से 1996 तक आपने जैन विश्वभारती (सम्प्रति मान्य विश्वविद्यालय), लाडनूँ (राजस्थान)

में अध्यापन कार्य किया। 1989 से 1992 तक आप प्राच्य प्राकृत-संस्कृत विद्यापीठ, अहमदनगर (महाराष्ट्र) में रहे।

जैन संस्कृत साहित्य के सर्वोत्कृष्ट विद्वान् पं0 जी ने द्रव्यसंग्रह, चन्द्रप्रभचरितम्, तत्त्वसंसिद्धि जैसे दुरूह ग्रन्थों का हिन्दी अनुवाद किया है। अनेक अनुसन्धानपरक शोध-लेख आपके प्रकाशित हो चुके हैं। अस्सी वर्ष की उम्र में भी आप साहित्य-साधना में संलग्न हैं। हाल ही में आपको 'श्रुत संवर्धन ट्रस्ट' द्वारा इकतीस हजार के पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

दिनांक 25-5-97 को वाराणसी में भगवान् पार्श्वनाथ के जन्म स्थान भेलूपुर जैन धर्मशाला में वयोवृद्ध और कृशकाय पूज्य पं0 जी से हमने एक साक्षात्कार लिया। इस अवसर पर डॉ कमलेश कुमार, डॉ0 फूलचंद प्रेमी, डॉ0 सुरेशचंद जैन तथा पं0 जी के सुपुत्र श्री अशोक कुमार जैन भी मौजूद थे।

हमारे यह प्रश्न करने पर कि-'आप स्वतंत्रता आन्दोलन में कैसे कूद पड़े' श्रद्धेय पं0 जी ने कहा कि 'मैं ही क्या 1942 के आन्दोलन में स्याद्वाद महाविद्यालय, वाराणसी के शत-प्रतिशत छात्र आंदोलन में सक्रिय थे। मैं स्याद्वाद महाविद्यालय का सबसे सीधा छात्र था। मैं बाहर बहुत कम जाता था इसलिए मुझे ऐसे काम सौंपे जाते थे जो अन्दर रहकर ही करने पड़ें। मैं सीधा और भोला-भाला था, अत: विद्यालय के अधिकारी व पुलिस मुझ पर क्रान्तिकारी होने का विश्वास नहीं करते थे। एक बार मुझे छह पिस्तौलें सुरक्षा के लिए सौंपी गईं और कहा गया कि छेदीलाल के मंदिर (यह मंदिर आज भी भदैनी घाट, वाराणसी में एकदम गंगा के किनारे है। गंगा की लहरें बरसात में इसकी दीवारों को छूती जाती हैं) में छिपा आओ। मैं लेकर गया, भोला-भाला होने से सी0 आई0 डी0 के आदमियों तक ने मुझ पर शंका नहीं की, पर मैं उन्हें देखकर डर गया, फलत: मंदिर के पास से ही मैंने पिस्तौलें गंगा में फेंक दीं। सी0 आई0 डी0 के लोगों ने पहले मुझे गालियां दीं फिर रात नौ बजे पुलिस आई और मुझे व अन्य 15-20 छात्रों को गिरफ्तार करके ले जाने लगी। मुहल्ले के लोग मेरे समर्थन में बाहर निकल आये। सभी ने कहा "यह लड़का बड़ा भोला है यह तो बाहर भी नहीं निकलता।" पर पुलिस नहीं मानी। मुझे 21 दिन हवालात की सजा दी गई थी।'

'अपने जेल जीवन के कुछ संस्मरण सुनायें' हमारे ऐसा कहने पर पं0 जी बोले-'हवालात में बी0 एच0 यू0 के अशोक, जो 16 वर्ष के थे और बी0 एस0 सी0 के छात्र थे, हमारे साथ ही बन्द हुए थे प्रात: उनके पिता आये और उनका तथा 4 अन्य हम लोगों का भोजन लाये, उस दिन तो शान्ति से भोजन किया। बाद में जेल में वैसा भोजन नसीब नहीं हुआ।' पं0 जी कुछ द्रवित से होकर बोले-'भैय्या! जेल तो जेल है, दु:ख ही दु:ख था उन दिनों जेलों में। आज की जेलें तो सुनते हैं बहुत अच्छी हैं। उन दिनों राजनैतिक कैदियों तक को मार खानी पड़ती थी। मैं तो एक समय भोजन करता था। कम्बल ऐसे थे कि पहली रात जो दो कम्बल मिले थे उनमें एक बिछाया दूसरा ओढ़ा। जब लेटा तो लगा कि आलपिनें चुभ रहीं हैं।'

पं0 जी ने आगे कहा- 'बाद में हमें श्री हरिश्चन्द्र वकील, श्री गणेशदास जैन रहीस व एक बैरिस्टर छुड़ाने गये थे।'

अन्त में मैंने एक प्रश्न और कर दिया-'पं0 जी आपके साथ पं0 खुशाल चंद गोरावाला जी भी थे, जो बाद में सम्पूर्णानन्द जी के खास व्यक्ति रहे, राजनैतिक क्षेत्र में उनकी लम्बी पहुँच भी थी, फिर आपने पेंशन लेना क्यों स्वीकार नहीं किया।' निस्पृही पं0 जी बोले-'वह तो आज भी हो सकता है। पर न तब पेंशन लेने की इच्छा हुई थी और न आज भी है। देश को किया सो किया, उसे क्या भुनाना ?'

हमने ऐसे निस्पृही व्यक्तित्व को प्रणाम कर अपने जीवन को कृतकृत्य माना।

आ० (1) जै० स० रा० अ० (2) वि० अ०, पृष्ठ 183 (3) साक्षात्कार 25-5-1997 (4) स्व० प०

श्री अमोलकचंद जैन

मुगल साम्राज्य के अन्तिम दिनों में बंगाल की तरफ से आकर एक संभ्रान्त जैन ओसवाल कुल बनारस में बस गया था। इसी शाखा के वंशधरों में



से एक कुल 'बालूजी के फर्श' मुहल्ले में रहने लगा। इसी घर में 11 जनवरी 1907 को श्री अमोलकचंद जैन का जन्म हुआ था। 1929 में प्रथम श्रेणी में वकालात पास करने के बाद आपकी वकालात खूब चल पड़ी थी। आपकी युक्ति और प्रतिभा की छाप अदालत में स्पष्ट थी। 1930 का स्वतंत्रता संग्राम प्रारम्भ होते ही इस युवक वकील ने सभी राजनैतिक मुकदमे मुफ्त में लड़े। फलत: नौकरशाही की नजरों में खटक गया। जेल में हुए अत्याचारों के भण्डाफोड़ को लेकर सरकार ने इन पर दफा 500 में मुकदमा चलाया और 500 रु० जुर्माने की सजा दी। यद्यपि आप अपील में निर्दोष सिद्ध हुए तथापि ब्रिटिश साम्राज्यशाही का एक-एक दोष आपको स्पष्ट हो गया और उसका अन्त करने के लिए दृढ़प्रतिज्ञ हो गये।

श्री जैन दैनंदिन राजनीति में भाग लेने लगे और 1937 में श्री गोविन्दवल्लभ पन्त की अध्यक्षता में हुए जिला राजनैतिक सम्मेलन के प्रधानमंत्री हुए। इसके बाद 38-39 में आप युक्त प्रान्त (वर्तमान उ०प्र०) के शिक्षामंत्री बा० सम्पूर्णानन्द जी के प्राइवेट सेक्रेटरी रहे। 1942 में आपने व्यक्तिगत सत्यागह में भाग लिया और 6 मास का कारावास तथा 100) जुर्माने की सजा पायी। 1942 की महाक्रान्ति के दिनों में आप ग्वालियर राज्य में थे। पहिले आप वहीं गिरफ्तार हुए, उसके बाद वहां से निष्कासित होते ही हैलैटशाही के शिकार होकर 25 दिसम्बर 1944 तक नजरबन्द रहे। बाद में भी आप युक्त प्रान्त के शिक्षा, सम्पत्ति, सूचना तथा श्रम विभाग के सहज सरस्वती सेवक मंत्री बाबू सम्पूर्णानन्द जी के प्राइवेट सेक्रेटरी रहे। श्री जैन (1) अफीसर आन पर्सनल स्टाफ, मुख्यमंत्री, यू० पी० 1948-51 (2) आनरेरी निदेशक, सूचना विभाग, उ० प्र० (3) सचिव, उ० प्र० कांग्रेस पार्लियामेन्ट्री बोर्ड (4) उप मुख्य सचेतक, राज्यसभा 1952-56 आदि अनेक विशिष्ट पदों पर रहे। आपने पूर्वी जर्मनी, हॉलैण्ड, बेल्जियम, फ्रांस, इटली आदि अनेक देशों की यात्रायें की थीं। अनेक भारतीय दलों का नेतृत्व आपने किया था। अनेक जैन मंदिरों/धर्मशालाओं का उद्घाटन भी आपने किया था। देहली में महावीर जयन्ती के संयोजक भी आप रहे थे। आप नैतिकता और स्पष्टवादिता के लिए विख्यात थे।

आ०-(1) जै० स० रा० अ० (2) पुत्र-श्री वीरेन्द्र कुमार द्वारा प्रेषित पत्र 2-12-98 एवं परिचय

श्री अमोलकचंद जैन

कद से ठिगने किन्तु भारी भरकम व्यक्तित्व के धनी, खण्डवा (म०प्र०) के श्री अमोलकचंद जैन, पुत्र--श्री छोटू जैन का जन्म 1 फरवरी 1908 में हुआ। आपने मैट्रिक तक शिक्षा ग्रहण की तथा युवावस्था में ही राष्ट्रीय आन्दोलन में सक्रिय भूमिका निभाने लगे।

जंगल सत्याग्रह में निमाड़ में अन्य कार्यकर्ताओं के गिरफ्तार होने पर आपने जिले के डिक्टेटर की हैसियत से आंदोलन कुछ समय के लिए संचालित किया था। आप अनेक वर्षों तक जिला कांग्रेस कमेटी के मंत्री और प्रांत के सदस्य भी

रहे। 1942 के आन्दोलन में आप एक रात अचानक गिरफ्तार कर लिए गये और खण्डवा और जबलपुर की जेलों में लगभग 1 वर्ष तक रहे।

आ0- (1)-म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग 4, पृष्ठ 9 (2)-जै0 स0 रा0 अ0, पृष्ठ 74

श्री अमोलकचंद जैन

श्री अमोलकचंद जैन का जन्म 1916 में रीवां (म0प्र0) में हुआ, आपके पिता का नाम श्री लक्ष्मीचंद जैन था। आपने माध्यमिक शिक्षा ग्रहण की। आप 1935 से 1942 तक आंदोलनों में सक्रिय रहे। इस दौरान आपने भूमिगत रहकर आंदोलनों को गति प्रदान की। आपने सुचारु रूप से पार्टी का संगठनात्मक कार्य किया और अंग्रेजी सरकार को दिखा दिया कि भारत में रहने वाला प्रत्येक नागरिक देश-प्रेमी है।

आपकी अनेक पुस्तकें शासन ने जब्त कर लीं। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् आप व्यावसायिक एवं धार्मिक कार्यों में अपनी रुचि अनुसार संलग्न हैं।

आ0 म0 प्र0 स्व0 सै0, 5/255

श्री अयोध्याप्रसाद गोयलीय

सिर पर टोपी, मंझोला कद, कसरती देह, गेंहुआ रंग, गठे हुए अंग, भरी हुई सजग मुखाकृति, विरलश्मश्रु, वाणी में ओज, शैली में गम्भीरता और



निरालापन, यही व्यक्तित्व था वाणी के जादूगर श्रद्धेय श्री अयोध्याप्रसाद गोयलीय का।

जैन समाज में जागृति का शंखनाद करने वाले 'वीर, अनेकान्त' जैसे प्रगतिवादी पत्रों के सम्पादक गोयलीय जी का जन्म 7 दिसम्बर 1902 को वर्तमान हरियाणा के बादशाहपुर, जिला-गुडगांवा में हुआ था। आपके पिता श्री रामशरणदास खानदानी बजाजे का व्यवसाय करते थे। कहा जाता है कि आपके दादा दिगम्बरावस्था में जिन दर्शन करते थे। जब आप साढ़े तीन वर्ष के थे तब दादा जी का देहावसान होने से आपकी दादी आपको लेकर कोसीकलां (मथुरा) उ0प्र0 में आ गई थीं।

गोयलीय जी की प्रारम्भिक शिक्षा चौरासी (मथुरा) में हुई जहां उन्होंने मध्यमा तक अध्ययन किया। आपकी आजीविका और राजनीति में प्रवेश के संदर्भ में आपके पुत्र श्री श्रीकान्त गोयलीय ने जो संस्मरण (तीर्थङ्कर नव0-दि0 1977) लिखा है। उसे हम यहाँ यथावत उद्धृत कर रहे हैं।

'अपने पूर्वजों के नाम को रोशन करने के लिए पिता जी दिल्ली आ गये। बाबा की बुआ (बैरिस्टर चम्पतराय जी की बहन मीरो) के वात्सल्यपूर्ण निर्देशन में उन्होंने एक छोटा सा मकान लिया और बजाजे का पुश्तैनी कार्य संभाला। उनकी मिठास और ईमानदारी पर ग्राहक रीझे रहते थे। कारोबार चल निकला। सुबह-शाम सामायिक, स्वाध्याय और जिन-दर्शन उनका स्वभाव हो गया।

पहाड़ी धीरज (दिल्ली) में ताऊजी (श्री नन्हेंमल जी जैन) के सहयोग से 'जैन संगठन लाइब्रेरी सभा' की स्थापना की और उसके मंच से सामाजिक, राजनैतिक और साहित्यिक उत्सव किये। हिन्दी- उर्दू साहित्य एवं भारतीय इतिहास के उद्धरण उनके भाषणों में प्रवाह लाते। वे वाणी के जादूगर हो गये।

दिल्ली के पहाड़ी धीरज और चाँदनी चौक ने उन्हें अपना राजनैतिक नेता माना। एक बार वे चाँदनी चौक की विशाल जनसभा में धाराप्रवाह भाषण दे रहे थे। 'देहलवी टकसाली जुबान और मौके के चुस्त शेर' भीड़ को भारतमाता की बेड़ियाँ तोड़ने पर जोश भर रहे थे। पुलिस- उच्चाधिकारी ने अदालत में कहा था - "गोयलीय साहब को सभा में गिरफ्तार करना बहुत मुश्किल था। आप अवाम पर छाये हुए थे। पूरी भीड़

हम पर टूट पड़ती; अत: मीटिंग खत्म होने पर गोयलीय जी को गिरफ्तार करना मुनासिब समझा।"

आदरणीय ताऊजी (लाला नन्हेमल जी) और पिताजी दिल्ली में एक साथ गिरफ्तार हुए। दादी ने अपने बेटों को जी भरकर आशीर्वाद दिया और कहा, "मैंने तुम्हें इसीलिए (आज के लिए) जना था।" जनता ने जयजयकार की।

ताऊजी और पिताजी दिल्ली के प्रथम नमक-सत्याग्रही थे। दिल्ली में सबसे पहले नमक बनाकर उन्होंने बेचा। महामना मालवीय जी ने स्वयं उनसे नमक खरीदा था।

पिता जी ने 3 साल की 'सी' क्लास बामशक्कत कैद सहर्ष मंजूर की। जेल में वे मूंज बँटते, चक्की चलाते। छह माह पिताजी ने रोटी नमक और पानी से लगाकर खायी। उनके मौन सत्याग्रह पर जेल अधिकारियों का ध्यान गया। अलग से बिना प्याज की सब्जी बनने लगी। जेल में समय का उपयोग अध्ययन में किया। सर इकबाल की 'बांगदरा' और 'बालेजबरील' जेल में पढ़ डाली। अल्लामा इकबाल का 'कलाम-ओ-फलसफा', उनकी भाषा, वाणी और जिन्दगी का ओढ़ना-बिछौना हो गया। मास्टर काबुलसिंह जी और कौमी श्री गोपालसिंह उनके मौण्टगुमरी और मियाँवली जेल के खास साथियों में थे। शहीदों के शहीद भगतसिंह की सीट पर पिताजी को 12 घंटे रहने का फख्र हासिल है।

कारावास के अनुभवों को पिता ने अपनी कहानी की पुस्तकों 'गहरे पानी पैठ', 'जिन खोजा तिन पाइयां', 'कुछ मोती कुछ सीप' और 'लो कहानी सुनो' (सभी भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली से प्रकाशित) में पिरोया है। ये अनुभव अब साहित्य की बहुमूल्य थाती हैं।

उनके जेल से छूटने का दिल्ली वासी बहुत बेताबी से इन्तजार कर रहे थे। भव्य स्वागत योजना थी। कारावास पिता जी आत्मशुद्धि के लिए गये थे। जेल से वे चुपचाप घर आ गये। लाला शंकर लाल और श्री आसफअली घर पर मिलने आये। पिताजी के त्याग एवं देशसेवा की सराहना की। श्री देवदास गाँधी ने गाँधी आश्रम में पिता जी को सर्विस देनी चाही; किन्तु उन्होंने देश सेवा का मुआवजा स्वीकार नहीं किया।

उनका दिल्ली के क्रान्तिकारियों से बहुत घनिष्ठ सम्पर्क था। अपने ओजस्वी विचारों से वे आजीवन कारावास जाने वाले थे। पार्लियामेन्ट में साइमन कमीशन पर बम फेंका जाएगा, इसकी जानकारी उन्हें बहुत पहले से थी। उनके राजनैतिक शिष्यों में क्रान्तिकारी श्री विमल प्रसाद जैन और श्री रामसिंह प्रमुख हैं।

वे श्री अर्जुनलाल जी सेठी से बहुत प्रभावित थे। सेठीजी पर उनके लिखे संस्मरण ('जैन जागरण के अग्रदूत' भारतीय ज्ञानपीठ काशी) बहुत सजीव एवं मार्मिक बने हैं।'

गोयलीय जी लगभग 15 वर्ष भारतीय साहित्य की प्रसिद्ध प्रकाशिका संस्था, भारतीय ज्ञानपीठ के अवैतनिक मंत्री रहे। यहीं उन्होंने ज्ञानपीठ की प्रसिद्ध पत्रिका 'ज्ञानोदय' का सम्पादन किया। वे 'वीर' और 'अनेकान्त' के भी सम्पादक रहे। गोयलीय जी अपने जीवन में कितने ईमानदार थे यह बताने के लिए 'विकास' और 'नया जीवन' के सम्पादक श्री अखिलेश शर्मा का निम्न संस्मरण ही पर्याप्त है।

"सन् 1953 में भारतीय ज्ञानपीठ कार्यालय (काशी) का जाना हुआ। वहाँ गोयलीयजी डालमिया नगर से पधारे हुए थे। गोयलीयजी अपने कार्यालय में थे। आराम का वक्त था। वे अपने बिस्तरे पर विश्राम कर रहे थे। उसी समय 'ज्ञानपीठ' के तत्कालीन मैनेजर आये। आदेशानुसार तकिये के पास रखा लिफाफा और रखी हुई दुअन्नी उठा ली। मुझे लिफाफे पर रखी दुअन्नी की बात समझ में नहीं आयी।

कार्यालय में मैनेजर से बातचीत के दौरान पूछा। मैनेजर ने बताया- "मंत्रीजी, व्यक्तिगत डाक में ज्ञानपीठ का पोस्टेज खर्च नहीं करते हैं। दुअन्नी टिकट के लिए दी है।"

गोयलीयजी हिन्दी, उर्दू, अरबी, फारसी, संस्कृत, अंग्रेजी, आदि के उद्भट विद्वान् थे। नाटक, कविता, कहानी, निबन्ध आदि सभी विधाओं में उनकी अप्रतिहत गति थी। इतिहास और पुरातत्त्व के वे खोजी विद्वान् थे। 'दास' और 'तखल्लुस' उपनाम से उन्होंने उर्दू शायरी को बहुत कुछ दिया है। गोयलीयजी ने उर्दू कैसे सीखी उन्हीं की जुबानी सुनिये-

"मेरे अज्ञात हितैषी !

न जाने इस वक्त तुम कहाँ हो ? न मैं तुम्हें जानता हूँ और न तुम मुझे जानते हो, फिर भी तुम कभी-कभी याद आते रहते हो। बकौल फिराक गोरखपुरी--

मुद्दतें गुजरीं तेरी याद भी आई न हमें।
और हम भूल गये हों तुझे, ऐसा भी नहीं।।

तुम्हें तो 27 जनवरी 1921 की वह रात स्मरण नहीं होगी, जबकि तुमने मुझे अन्धा कहा था। मगर मैं वह रात अभी तक नहीं भूला हूँ। रौलेट एक्ट के आन्दोलन से प्रभावित होकर मई 1919 में चौरासी-मथुरा-महाविद्यालय से मध्यमा की पढ़ाई छोड़कर मैं आ गया था और कांग्रेस-कार्यों में मन-ही-मन दिलचस्पी लेने लगा था। उन्हीं दिनों सम्भवत: 26 जनवरी 1921 ई0 की बात है, रात को चाँदनी-चौक से गुजरते समय बल्लीमारान के कोने पर चिपके हुए कांग्रेस के उर्दू पोस्टर को खड़े हुए बहुत से लोग पढ़ रहे थे। मैं भी उत्सुकतावश वहाँ पहुँचा और उर्दू से अनभिज्ञ होने के कारण तुमसे पूछ बैठा- "बड़े भाई ! इसमें क्या लिखा हुआ है?" तुमने फौरन जवाब दिया- "अमां अन्धे हो, इतना साफ पोस्टर नहीं पढ़ा जाता।" जवाब सुनकर मैं खिसियाना-सा खड़ा रह गया। घर आकर गैरत ने तख्ती और उर्दू का कायदा लाने को मजबूर कर दिया।"...

बाद में आप प्रसिद्ध उर्दू साहित्यकार शेरसिंह 'नाज' के साथ मुशायरों में जाने लगे। गोयलीय जी की रगों में राष्ट्रीयता और जिनभक्ति का लहू दौड़ा करता था उनकी एक नज्म यहाँ दृष्टव्य है, जो उन्होंने बैरिस्टर चम्पतराय के स्वागतार्थ 21 जनवरी 1927 को कही थी-

'मकताँ हैं बेमिसाल हैं और लाजवाब हैं
हुस्ने सिफाते दहर में खुद इन्तख्वाब हैं।
पीरी में भी नमनूमे अहदे शबाब हैं।
गोयाकि जैन कौम के एक आफताब हैं।'

जैन साहित्य और संस्कृति का क्रमबद्ध और प्रामाणिक इतिहास न होने की पीड़ा गोयलीय जी को सदैव सालती रही। जिसकी अभिव्यक्ति 'जैन जागरण के अग्रदूत' में निम्न शब्दों में हुई है-

'हमारे यहाँ तीर्थङ्करों का प्रामाणिक जीवन-चरित्र नहीं, आचार्यों के कार्य-कलाप की तालिका नहीं, जैन-संघ के लोकोपयोगी कार्यों की सूची नहीं; जैन-सम्राटों, सेनानायकों, मंत्रियों के बल पराक्रम और शासनप्रणाली का कोई लेखा नहीं, साहित्यिकों एवं कवियों का कोई परिचय नहीं। और-तो- और, हमारी आँखों के सामने कल-परसों गुजरने वाली विभूतियों का कहीं उल्लेख नहीं है; और ये जो दो-चार बड़े-बूढ़े मौतकी चौखट पर खड़े हैं; इनसे भी हमने इनके अनुभवों को नहीं सुना है, और शायद भविष्य में दस-पाँच पीढ़ी में जन्म लेकर मर जाने वालों तक के लिए परिचय लिखने का उत्साह हमारे समाज को नहीं होगा।

प्राचीन इतिहास न सही, जो हमारी आँखों के सामने निरन्तर गुजर रहा है, उसे ही यदि हम

बटोरकर रख सकें, तो शायद इसी बटोरनमें कुछ जवाहरपारे भी आगे की पीढ़ी के हाथ लग जाएँ'।

'जैन जागरण के अग्रदूत' को वे 4 भागों में निकालना चाहते थे। पर एक ही निकल पाया। उनका अन्य साहित्य है-

प्रकाशित- 1. मौर्य साम्राज्य के जैन वीर, 2. राजपूताने के जैन वीर, 3. 'दास'-पुष्पांजलि, 4. शेर-ओ-शायरी, 5. शेर-ओ-सुखन (5 भाग), 6. शाइरी के नयेदौर (5 भाग), 7. शाइरी के नये मोड़ (5 भाग), 8. नग्मये हरम, 9. उस्तादाना कमाल, 10. हँसो तो फूल झंडें, 11. गहरे पानी पैठ, 12. जिन खोजा तिन पाइयाँ, 13. कुछ मोती कुछ सीप, 14. लो कहानी सुनो, 15. मुगल बादशाहों की कहानी खुद उनकी जुबानी।

अप्रकाशित-1. शराफत नही छोड़ूँगा, 2. हैदराबाद दरबार के रहस्य, 3. पाकिस्तान के निर्माताओं की कहानी खुद उनकी जबानी, 4. उमर खैय्याम की रुबाइयात, 5. बेदाग हीरे-विषयवार अशआ (2 भागों में)।

गोयलीय जी को जीवन में अनेक पुरस्कार/ सम्मान मिले। जिनमें प्रमुख हैं- उत्तरप्रदेश सरकार द्वारा 'शेर ओ सुखन', 'शेर-ओ-शाइरी' तथा 'कुछ मोती कुछ सीप' पर पुरस्कार। हरियाणा सरकार द्वारा- 'मुगल बादशाहों की कहानी खुद उनकी जुबानी' पर पुरस्कार। चण्डीगढ़ में दुशाला ओढ़ाकर तथा 500/- की राशि भेंटकर सार्वजनिक सम्मान, केन्द्र तथा उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा स्वतंत्रता सेनानी होने से ताम्रपत्र से सम्मान आदि।

गोयलीय जी का जीवन एक ऐसे तपस्वी और साधक का जीवन रहा है जिसने जीवन में आये झंझावातों को चुपचाप सहा और आपत्तियों का विषपान करते हुए भी साहित्यामृत प्रदान किया।

आ0- (1) तीर्थङ्कर, नव-दिस0 1977, (2) जै0 जा0 अ0, (3) विद्वत् अभिनन्दन ग्रन्थ, पृष्ठ 179, (4) दिवंगत हिन्दी सेवी, भाग-1, पृष्ठ 58 आदि, (5) जैन सन्देश, अगस्त 1990

श्री अयोध्याप्रसाद जैन

श्री अयोध्याप्रसाद जैन का जन्म 1916 में राजगढ़ (म0प्र0) में हुआ। आपके पिता श्री मोहनलाल जी थे। आपने 1930 के जंगल सत्याग्रह में भाग लेने के कारण 4 माह 18 दिन का कारावास बिलासपुर जेल में भोगा। पुलिस द्वारा मारपीट किये जाने के कारण हाथ की उंगलियों को क्षति पहुंची। इतना ही नहीं आपको 15 दिन गुनहखाने की सजा भी हुई। 30-5-1996 को आपका निधन हो गया।

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग 3, पृष्ठ 207, (2)पत्र- डॉ0 नन्दलाल जैन रीवां, दि0 13-6-1996

श्री अर्जुनलाल सेठी

क्रान्तिकारी, देशभक्त, सुधारवादी, समाजसेवी, स्वतंत्रचेता, अध्यापक, लेखक, कवि, पत्रकार, वक्ता,



बहुभाषाविद्, दारिद्र्यव्रती, जैनधर्म, गीता और इस्लाम के उद्भट विद्वान् पण्डित अर्जुनलाल सेठी का जन्म 9 सितंबर 1880 ई0 को जयपुर (राजस्थान) में हुआ।

अर्जुनलाल सेठी के पिता का नाम श्री जवाहर लाल सेठी और पितामह का नाम श्री भवानीदास सेठी था। भवानीदास सेठी दिल्ली (वैद्यवाड़ा) में रहते थे। अन्तिम मुगल बादशाह बहादुर शाह जफर के शहजादों के साथ उनके मैत्री सम्बन्ध थे। सेठी जी का कारोबार गुमाश्ते देखते थे, फिर भी अपने प्रभाव और परिचय के बल पर उनका अच्छा कारोबार चलता था। पत्नी और बच्चे के निधन के बाद 1845 ई0 में आपको यकायक स्वप्न दिखाई देने लगे। स्वप्न में कोई बार-बार दिल्ली छोड़ने का आग्रह करने लगा। पहले तो कोई ध्यान नहीं दिया गया, किन्तु बार-बार जब यही वाक्य दुहराया जाने लगा तो इसे आने वाली

आपत्ति का संकेत समझ भवानीदास जी दिल्ली छोड़कर जयपुर चले गये।

जयपुर में भवानीदास जी ने अपना दूसरा विवाह किया और उससे श्री जवाहरलाल सेठी का जन्म हुआ। जवाहरलाल जी ने मैट्रिक तक शिक्षा प्राप्त की और जयपुर राज्य के चौमूँ ठिकाने के कामदार (दीवान) और कौन्सिल के सेक्रेटरी पद पर नियुक्त हुए, उनका विवाह जयपुर राज्य के प्रतिष्ठित और सम्मानित श्री मोहनलाल नाजिम की पुत्री पांचो देवी से हुआ, जिनकी कोख से श्री अर्जुनलाल सेठी का जन्म हुआ।

छह फुट लम्बा कद, चौड़ा वक्ष, गेहुँआ रंग, चिपके हुए गाल, सुतवां नाक, चमकीली आंखें, ऊँचा माथा, सुन्दर चश्मा, खद्दर का ढीला-ढाला कुर्ता, सिर पर टोपी, यही पहचान थी उन दिनों श्री अर्जुनलाल सेठी की।

सेठी जी में बाल्यावस्था से ही लोकसेवा के चिह्न प्रकट होने लगे थे। घर आया भिक्षु कभी खाली हाथ नहीं जाता था। सभाओं में व्याख्यान, नाटकों में भाग, जैन प्रदीप का प्रकाशन, विद्या प्रचारिणी सभा की स्थापना, साथी बालकों पर अनुशासन, हिन्दी जैन गजट में लेखों का प्रकाशन आदि कार्य आपने लगभग 13-14 वर्ष की उम्र में ही प्रारम्भ कर डाले थे।

संस्कृत की शिक्षा आपको घर पर ही प्राप्त हुई थी। जैनधर्म की शिक्षा के सन्दर्भ में श्री चिमनलाल वक्ता को आप अपना गुरु मानते थे। संस्कृत, प्राकृत, अंग्रेजी, फारसी, हिन्दी, अरबी, पालि, उर्दू आदि भाषाओं पर आपका समान अधिकार था।

सेठी जी ने 1898 में मैट्रिक और 1902 में बी0ए0पास किया। उन दिनों बी0ए0पास बड़ी मुश्किल से मिलते थे। आपकी जयपुर राज्य में निजामत (डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट) पद पर नियुक्ति होने वाली थी कि 1902 में ही पिता जी की मृत्यु हो जाने से चौमूँ ठिकाने की कामदारी का पद सम्भालना पड़ा। अभी आप पूरी तरह से काम सम्भाल भी नहीं पाये थे कि चौमूँ ठिकाने में ए0जी0जी0 का पदार्पण हुआ। स्टेट ने औकात से भी ज्यादा उसका स्वागत किया, फिर भी उसने कह ही दिया, 'These are Rustics (ये गंवार हैं)। सेठी जी के हृदय पर अंग्रेजी राज्य का यह पहला आघात था।

सेठी जी का विवाह 1903 के आसपास श्री हमनाम की पुत्री गुलाबदेवी से हुआ। 1904 में उनका पहला पुत्र प्रकाश हुआ जो 1924 में अचानक स्वर्ग सिधार गया। उनकी 6 संतानें और हुईं। जिनमें चार पुत्रियां और 2 पुत्र हैं।

सेठी जी के सहपाठियों में सुप्रसिद्ध लेखक श्री चन्द्रधर शर्मा गुलेरी भी थे। 1904 में सेठी जी दिगम्बर जैन महासभा द्वारा संचालित मथुरा (उ0प्र0) के विद्यालय में शिक्षक हो गये। 1905 में उन्होंने बंगाल के स्वदेशी आन्दोलन में भाग लिया वे सूरत की तूफानी कांग्रेस में भी शामिल हुए।

1907 में सेठी जी ने जयपुर में जैन विद्यालय की स्थापना की। कहने को तो यह विद्यालय था, पर वास्तव में यह क्रान्तिकारियों की टकसाल थी। अमर शहीद मोतीचंद, क्रान्तिकारी माणिकचंद, जयचंद, देवचंद (आचार्य समन्तभद्र), जोरावर सिंह आदि इसी विद्यालय के छात्र थे। स्वतंत्र राष्ट्र के उपासक जैन-अजैन इसमें अध्ययन करते थे। इस विद्यालय का महत्त्व इसलिए और बढ़ जाता है कि उस समय काशी विद्यापीठ या काशी हिन्दू विश्वविद्यालय जैसे राष्ट्रीय चेतना सम्पन्न विद्यालयों की स्थापना नहीं हुई थी।

1905 से 1912 तक के सभी क्रान्तिकारी आन्दोलनों में सेठी जी ने भाग लिया। आरा मंदिर के महन्त की हत्या में आप प्रमुख अभियुक्त थे (इस घटना का विशेष विवरण अमर शहीद मोतीचंद के परिचय में देखें)। उत्तर भारत का सबसे बड़ा काण्ड, जो 'दिल्ली षडयन्त्र' के नाम से जाना जाता



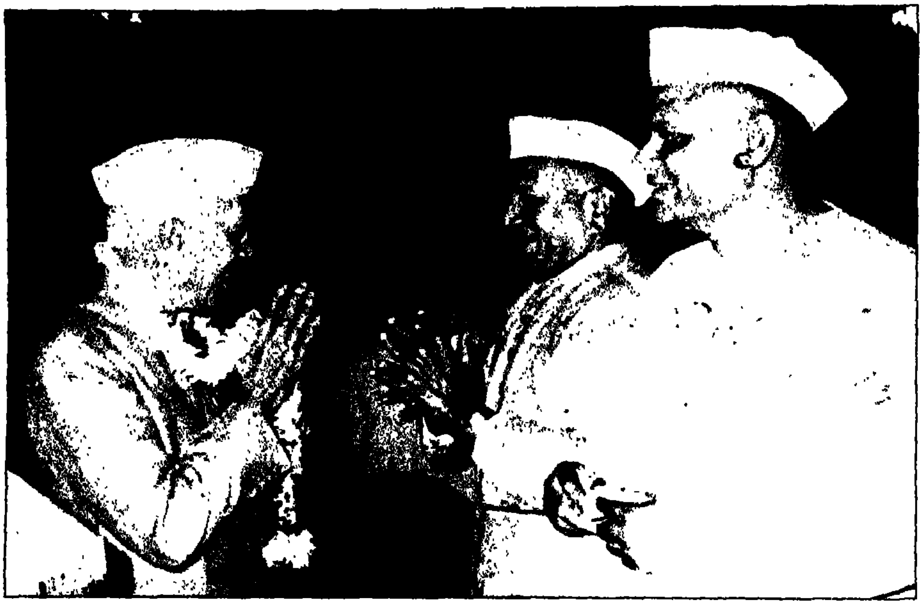
क्रान्तिकारी श्री अर्जुन लाल सेठी के दो दुर्लभ चित्र

चित्र सौजन्य-श्री ज्ञानचंद खिन्दूका, जयपुर (राज.)

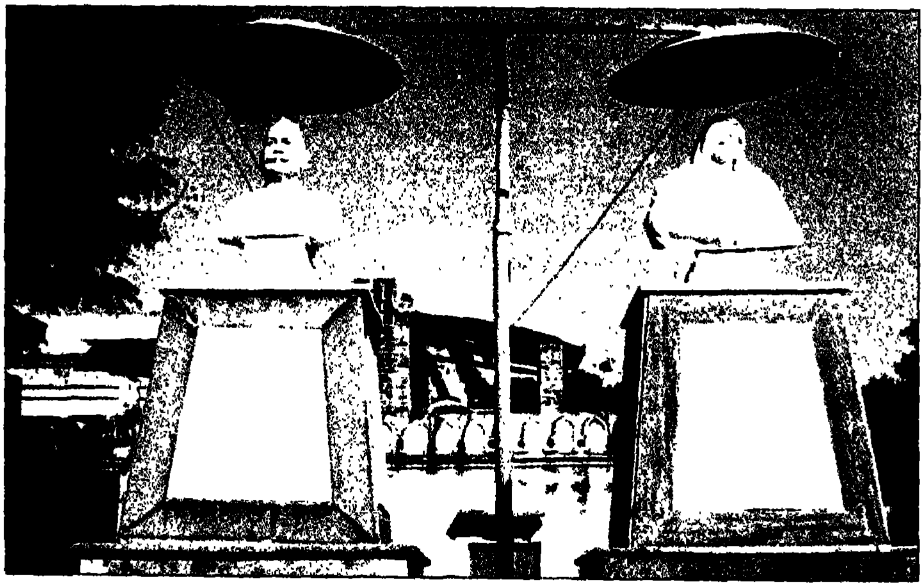


नेताजी सुभाष चंद बोस के निजी चिकित्सक रहे
कर्नल डॉ० राजमल कासलीवाल

चित्र सौजन्य-श्री ज्ञानचंद जैन खिन्दूका, जयपुर (राज.)



पं० जवाहर लाल नेहरू के साथ स्वतंत्रता सेनानी, सांसद सेठ अचल सिंह जी;
(हाथ जोडे हुए), आगरा (उ०प्र०)



आगरा (उ०प्र०) के बी.डी. जैन डिग्री कालेज में स्थित अमर दम्पति सेठ अचल सिंह एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती भगवती देवी के स्टेच्यू

चित्र सौजन्य से-श्री नरेन्द्र कुमार उर्फ मुन्ना बाबू



भारतीय संविधान निर्मातृ-सभा के सदस्य, स्वतंत्रता सेनानी श्री कुसुमकान्त जैन, इन्दौर,
दि० 11-3-1989 को महामहिम राष्ट्रपति श्री आर० वेंकटरमण से
अपनी एक पुस्तक का विमोचन कराते हुए



सागर (म०प्र०) में 1974 में एक समारोह में माननीय मोरार जी देसाई के साथ
स्वतंत्रता सेनानी पं० फूलचन्द जी सिद्धान्ताचार्य



प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी के साथ
स्वतंत्रता सेनानी पं० खुशाल चंद गोरावाला (एकदम बायें)



प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी से अपनी पुस्तक
'कोई अछूत नहीं' पर सम्मति लेते स्वतंत्रता सेनानी,
विधायक डॉ. नरेन्द्र विद्यार्थी, छतरपुर (म०प्र०)



महामहिम राष्ट्रपति श्री आर० वेंकटरमण के साथ स्वतंत्रता सेनानी श्री नरेन्द्र कुमार जैन, देहरादून (उ०प्र०)



मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री श्री प्रकाश चंद सेठी के साथ स्वतंत्रता सेनानी श्री प्रेमचंद जैन, छिन्दवाड़ा (म०प्र०)



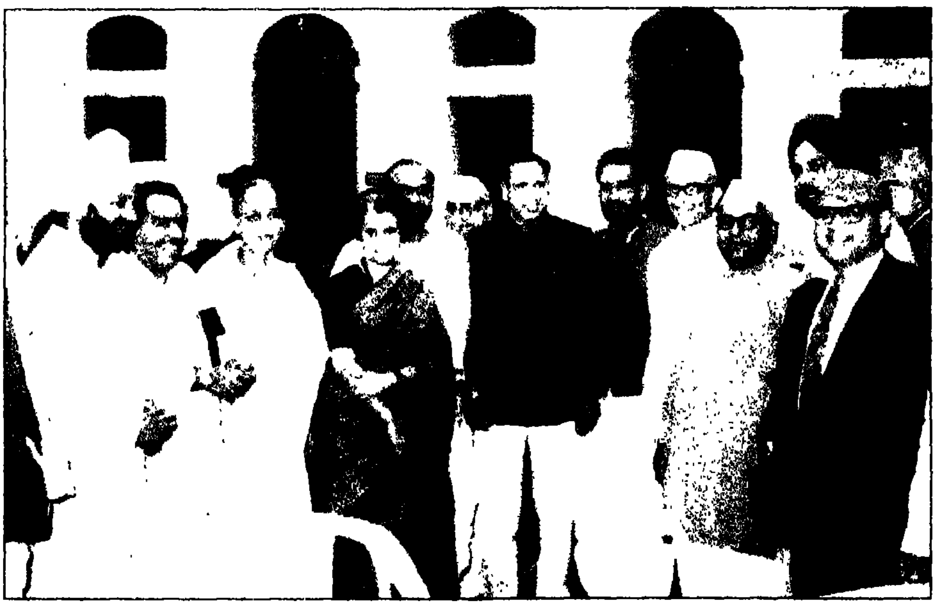
स्वतंत्रता सेनानी डा० फूलचंद भदौरा, टीकमगढ़ (म०प्र०) महामहिम राष्ट्रपति श्री व्ही० व्ही० गिरि से अमर शहीद नारायण दास खरे का स्मारक बनाने हेतु निवेदन करते हुए



महामहिम राष्ट्रपति श्री आर वेंकटरमण से 'पद्मश्री' अलंकरण प्राप्त करते हुए स्वतंत्रता सेनानी श्री बाबूलाल जी पाटोदी



प्रधानमंत्री पं० जवाहर लाल नेहरू के साथ स्वतंत्रता सेनानी एवं
पूर्व मुख्यमंत्री भैया मिश्रीलाल जी गंगवाल।



प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी के साथ स्वतंत्रता सेनानी, सांसद श्री विमल कुमार
चोरडिया, भानपुरा (म०प्र०) (बगल में काले कोट में)।



प्रधानमंत्री पं० जवाहर लाल नेहरू के साथ स्वतंत्रता सेनानी, तत्कालीन वित्त एवं समाजसेवा मंत्री, मध्यप्रदेश श्री महेन्द्र कुमार 'मानव' (नेहरू जी के साथ धोती पहने हुए)।



4 दिसम्बर 1952 को खण्डवा (म०प्र०) में प्रधानमंत्री पं० जवाहर लाल नेहरू एवं विजयलक्ष्मी पण्डित का स्वागत करते हुए स्वतंत्रता सेनानी श्री रायचंद नागड़ा, खण्डवा (म०प्र०)

है, और जिसमें भारत के वाइसराय लार्ड हार्डिंग पर बम फेंका गया था, के मुख्य सूत्रधारों में आपका नाम था।

1914 में सेठी जी को जयपुर में नजरबन्द कर दिया गया। जब उनकी नजरबंदी से सारे भारत में तहलका मचा तो उन्हें मद्रास प्रेसीडेन्सी के वैलूर जेल में भेज दिया गया, जहाँ जिनदर्शन न होने पर वे 70 दिन, एक मत के अनुसार 56 दिन निराहार रहे। 1920 में आप जेल से छूटे और अजमेर को अपना कार्यक्षेत्र बनाया, वहीं से कांग्रेसी तथा क्रान्तिकारी गतिविधियों का संचालन किया। 1921 के सविनय अवज्ञा आन्दोलन में अजमेर में हिन्दू मुस्लिम एकता का अभूतपूर्व उदाहरण प्रस्तुत किया। प्रसिद्ध क्रान्तिकारी चन्द्रशेखर को अजमेर में सेठी जी ने छिपाया था (घटना का विशेष विवरण आगे है)।

5 जुलाई 1934 को स्वयं महात्मा गांधी अजमेर में सेठी जी के घर गये। सितम्बर 1934 में आप राजपूताना व मध्यभारत प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी के प्रान्तपति चुने गये।

1935 में प्रान्तीय झगड़ों से बचने की दृष्टि से आपने अफ्रीका जाने का विचार किया, किन्तु पासपोर्ट बनने के बाद भी जा नहीं सके। 1936 में मिल मजदूरों की हड़ताल के अवसर पर आप पुन: अति सक्रिय राजनीति में आये पर अपनी असंतुष्ट वृत्ति में मानसिक असन्तुलन के कारण मजदूरों का अधिक हित न कर सके।

1937 में खण्डवा (म0प्र0) में हुई जैन परिषद् के सम्मेलन में आप सम्मिलित हुए थे। इस सन्दर्भ में जैनमित्र (1938 ई0 वैशाख वदी 13) लिखता है- '..... आपका भाषण बहुत तात्विक व मर्मभेदी होता था। आप पं0 गोपालदास के समय के वक्ता हैं। आप गोम्मटसार व समयसार के मर्मी हैं।' 1939 में रतरे नैरीमन के साथ कांग्रेस कमान्ड के विरुद्ध मोर्चा लेने का साहस सेठी जी ने ही किया था, सेठी जी जितने क्रान्तिकारी थे, उससे कहीं अधिक धार्मिक और दार्शनिक भी थे। उनका अंतिम भाषण 13 अगस्त 1939 को 'जैनिज्म तथा सोशलिज्म' पर ब्यावर में हुआ था। उन्होंने जैनधर्म पर अनेक लेख एवं पुस्तकें लिखीं। जिनमें 'महेन्द्र कुमार नाटक', 'मदन पराजय नाटक', पारस यज्ञ पूजा' आदि अति प्रसिद्ध रही हैं। अनेक स्तोत्रों आदि की भी रचनायें उन्होंने की थीं। वे अपने अन्तिम समय तक धर्म और राष्ट्रहित की साधना करते रहे।

सेठी जी अपनी स्वरचित तुकबन्दी को प्राय: गाया करते थे, जिसमें उनका समूचा क्रान्तिदर्शी जीवन-दर्शन समाया हुआ है-

कब आयेगा वह दिन की बनूं साधू बिहारी।
दुनियां में कोई चीज मुझे थिर नहीं पाती।
और आयु मेरी यूं ही तो बीतती जाती।।
मस्तक पै खड़ी मौत वह सब ही को है आती।
राजा हो महाराणा, या हो रंक भिखारी।।
कब................।

सर्वस्व लगाके मैं करूँ देश की सेवा।
घर-घर में जाके मैं रखूंगा ज्ञान का मेवा।।
दु:खों का सभी जीवों का हो जायेगा छेवा।
भारत में न देखूंगा कोई मूर्ख-अनारी।
कब..................।

सेठी जी स्वयं लेखक थे, राजनीति एवं धर्म पर अनेक लेख उन्होंने लिखे पर अपने बारे में कहीं कुछ नहीं लिखा। हमें सेठी जी के जीवन के सन्दर्भ में जो सामग्री प्राप्त हुई है उसमें श्री अयोध्या प्रसाद 'गोयलीय' द्वारा लिखित 'जैन जागरण के अग्रदूत' प्रमुख है। गोयलीय जी सेठी के साथ काफी समय रहे थे। उन्होंने सेठी जी का जीवन-चरित उनसे पूछकर लिखना भी चाहा, पर सफल नहीं हुए।

गोयलीय जी ने संस्मरणात्मक शैली में जो लिखा है, वह सेठी जी के पूर्ण व्यक्तित्व को प्रकट करने में सक्षम नहीं है। फिर भी वह सामग्री प्रामाणिक है और आगे सेठी जी के जीवन के सन्दर्भ में हम जो घटनाएं दे रहे हैं उनका प्रमुख आधार गोयलीय जी की उक्त पुस्तक ही है। यद्यपि अन्य जगहों से जितना सम्भव हुआ, घटनाओं की प्रामाणिकता जांच ली गई है। हमारे जैसे अल्पज्ञ उनके व्यक्तित्व के साथ न्याय कर सकेंगे? इसमें सन्देह है फिर भी जो सामने है, उसी आधार पर लिखा जा रहा है। यहाँ केवल राजनैतिक घटनाओं का ही उल्लेख है।

1912 में चांदनी चौक में जब लार्ड हार्डिंग पर बम फेंका गया तो दिल्ली के मास्टर अमीरचंद को उनके घर में ही नजरबंद कर दिया गया, उनके मकान के आसपास छद्म वेष में पुलिस लगा दी गई ताकि अन्य क्रांतिकारियों को भी पकड़ा जा सके। सेठी जी अमीरचंद जी से मिलने दिल्ली आये। स्टेशन पर ही अमीरचंद जी की नजरबंदी की सूचना गुप्तचरों से उन्हें मिल गई। पर मिलना आवश्यक था। सेठी जी साहूकार के वेष में अमीर चंद जी के दरवाजे पर पहुँचे और वैसी ही आवाज लगाने लगे जैसी साहूकार कर्जदार को लगाता है। पुलिस ने पूछा तो सेठी जी ने कहा - 'हजरत पर एक डेढ़ वर्ष से रुपया पावना है, लेकिन देने का नाम नहीं लेते, रोजाना कोई न कोई घिस्सा देते रहते हैं। मैं आज नावा वसूल करके ही जाऊँगा।' पुलिस ने और भी शह दे दी- 'बड़ा बदमाश है, जो लिया जा सके वसूल कर लो। इसे तो फांसी लगने वाली है।'

मास्टर जी ने सेठी जी की आवाज पहचान ली, वे ऊपर से ही बोले- 'तुम नीचे से ही शोर क्यों मचा रहे हो, भले आदमियों की तरह चाहो तो ऊपर आकर बात कर सकते हो'। दोनों भले आदमियों ने जो विचार विमर्श करना था कर लिया।

★ ★ ★

1916-17 में अम्बाला में जैन वेदी प्रतिष्ठा थी। बाबू अजित प्रसाद लखनऊ वाले वहाँ पधारे थे, वे सेठी के छुटकारे के लिये प्रयत्न कर रहे थे, पाण्डाल में उनका प्रभावशाली भाषण हुआ। आर्थिक सहायतार्थ उन्होंने सेठी जी के छपे चित्र बेचे, जनता ने अपनी शक्ति के अनुसार मूल्य देकर उन्हें खरीदा था। जब 'सेठी जी को मुक्त करो' आन्दोलन प्रबल हुआ तो कुछ शर्तों के साथ भारत सरकार उन्हें छोड़ने को तैयार हो गई किन्तु सेठी जी ने सशर्त रिहा होना ठुकरा दिया।

★ ★ ★

सेठी जी राजनैतिक चिन्तन में इतने तल्लीन रहते थे कि उन्हें मुश्किल से 2-1 घण्टे ही नींद आती थी। उन्हें तपोमूर्ति कहा जाय तो कोई आश्चर्य की बात नहीं।

★ ★ ★

सेठी जी जिनदर्शन किये बगैर भोजन नहीं करते थे, वैलूर जेल में जिनदर्शन की सुविधा न होने के कारण उन्होंने भोजन का त्याग कर दिया और इतने दृढ़ रहे कि 70 दिन तक निराहार रहे। अन्त में सरकार को झुकना पड़ा और प्रसिद्ध शिक्षाविद् तथा स्वतंत्रता सेनानी महात्मा भगवानदीन ने जेल में जिन प्रतिबिम्ब विराजमान कराया, तब उनका उपवास समाप्त हुआ। इस सन्दर्भ में 'वीर निकलंक' (अक्टू0 1993) को दिये अपने एक साक्षात्कार में सेठी जी की पुत्री 80वर्षीया सरस्वती देवी जी ने बताया था कि-'हम मूर्ति जयपुर से ले गये थे।' भारत के राजनैतिक बन्दियों में यह प्रथम उदाहरण था, इसलिए भारतीय नेताओं ने 'भारत का जिन्दा मेकस्वनी' कहकर उनका अभिनन्दन किया था।

★ ★ ★

जयपुर अढ़ाई शती समारोह (1978) के अवसर पर प्रकाशित 'जयपुर- दर्शन' ग्रन्थ (पृष्ठ 110)

लिखता है कि-'राजस्थान के (बाद में) मुख्यमंत्री श्री हीरालाल शास्त्री ने सेठी जी के यह कहने पर कि- "आँख बंद कर आजादी की लड़ाई के समुद्र में कूद जाओ तो तुम तिर जाओगे"। 7 दिसम्बर 1927 को अपना सरकारी महत्त्वपूर्ण पद त्याग दिया था।

★ ★ ★

1920 में छह वर्षों की जेल के बाद सेठी जी मुक्त होकर पूना होते हुए बम्बई जा रहे थे। पूना स्टेशन पर बाल गंगाधर राव तिलक द्वारा सेठी जी का अभूतपूर्व स्वागत किया गया। तिलक जी इतने भावविभोर हुए कि उन्होंने अपने गले का रेशमी दुपट्टा सेठी जी के गले में डाल दिया और अभिनन्दन करते हुए कहा- 'आज महाराष्ट्रवासी सेठी जी को अपने बीच देखकर फूले नहीं समाते। ऐसे महान् त्यागी, देशभक्त और कठोर तपस्वी का स्वागत करते हुए महाराष्ट्र आज अपने को धन्य समझता है।'

★ ★ ★

वैलूर जेल से मुक्त होने के बाद जब सेठी जी इन्दौर पहुंचे तो उनके सम्मान में छात्रों ने बग्घी के घोड़े खोल दिये और खुद गाड़ी में घोड़ों की जगह जुतकर बग्घी को खींचा। उन जोशीले नौजवानों में श्री हरिभाऊ उपाध्याय भी थे।

★ ★ ★

1922 में सेठी जी को भेंट की गई गांधी टोपी नीलाम करने पर 1500/- रु0 में बिकी थी।

★ ★ ★

कानपुर कांग्रेस अधिवेशन में सेठी जी के अनुयायियों का बहुमत हो गया। वहाँ हुए चुनाव को जब वर्किंग कमेटी ने रद्द कर दिया तो सेठी जी के नेतृत्व में लोग सत्याग्रह पर बैठ गये। स्वयंसेवकों ने सेठी जी को लाठियों से मारा, वे घायल हो गये तब उन्हें देखने गांधी जी पं0 मोतीलाल नेहरू, लाला लाजपतराय, पं0 जवाहरलाल नेहरू, सरोजिनी नायडू, शौकत अली आदि के साथ उनके निवास पर पहुंचे और सेठी जी से कहा- 'मुझे आपके चोट लगने का भारी दुःख है उसके प्रायश्चित स्वरूप मैं उपवास करना चाहता हूँ।' सेठी जी के समझाने पर गांधी जी ने उपवास के संकल्प का त्याग करते हुए कहा-'आप धर्मशास्त्र के ज्ञान में मेरे गुरुतुल्य हैं।'

★ ★ ★

सेठी जी शायरी का भी अच्छा शौक रखते थे। बातचीत के बीच मुंह का जायका बदलने और वातावरण नीरस न होने देने के लिए 'गालिब', 'जौक' आदि के शेर सुनाते थे। गोयलीय जी ने एक संस्मरण में उनके इस व्यक्तित्व को उजागर किया है। गोयलीय जी ने लिखा है- (सेठी जी) एक दिन जो मौज में आये तो बोले-

' बेटा, हम भी तुकबन्दी कर लेते हैं।'

'तुकबन्दी कैसी आप तो अच्छी खासी कविता कह लेते हैं। मैंने बचपन में आपकी बनाई कई कवितायें पढ़ी हैं। 'कब आयगा वोह दिन कि बनूँ साधु विहारी' मुझे खास तौर से पसन्द थी।

वे हंसकर बोले- 'अच्छा तो बदमाश तू बचपन से मेरा आशिक रहा है।'

'यह तो आपकी महती कृपा है, जो आप इस सम्बोधन से मुझे कृत-कृत्य कर रहे हैं। हाँ, एक अकिंचन भक्त मैं आपका अवश्य रहा हूँ।'

'अच्छा तो बच्चू यह बात है जो दौड़-दौड़कर तुम जयपुर और अजमेर जाते रहे हो, और हजार ठिकाने छोड़कर मैं तुम्हारे पास ठहरने को मजबूर हुआ हूँ।'

'जी, आप शायद अपना कोई ताजा कलाम सुनाना चाह रहे थे !'

'ताजा तो नहीं है, 5-6 वर्ष पूर्व कही गई, एक तुकबन्दी है। कुछ दोस्तों ने इस समस्या की- 'देखें कहाँ-कहाँ पै हथेली लगायेंगे' पूर्ति करने को मजबूर

कर दिया। 10-15 मिनट तबीयत पै जोर दिया तो ये पक्तियाँ मुंह से निकल पड़ीं–

मन्दिर में कैद करते हैं ताले ठुका दिये,
मस्जिद में उसी हबीब के परदे लगा दिये,
पूछा सबब तो एंठ के पोथे दिखा दिये,
वाइजने चीख-चीख सिपारे सुना दिये।
महफिल में बेहिजाब हम आँखें लड़ायेंगे।
देखें कहाँ-कहाँ पै हथेली लगायेंगे।।
वाइजसे जाके पूछा कि मय है हराम क्यों,
बोला कि 'मेरे सामने लेते हो नाम क्यों'।
जन्नत की तलाश में है बूढ़ा इमाम क्यों,
खुल जाये राजेमक्फी पीले न जाम क्यों ?
मयख्वार, उस खुदा को भी एक्शा पिलायेंगे।
देखें कहाँ-कहाँ पै हथेली लगायेंगे।

अर्थात् मेरे प्यारे को किसी ने ताले में बन्द कर दिया है तो किसी ने उसे परदों में छिपा दिया है। कारण पूछने पर धर्मशास्त्रों के पोथे दिखा दिये कि इनके वारण्ट पर इन्हें बन्दी बनाया है, किन्तु इन मूर्खों ने यह नहीं समझा कि उसका हुस्न हजार पर्दों में नहीं छिप सकता। न जाने दें मुझे मन्दिरों और मस्जिदों में। मैं तो खुले आकाश के नीचे खड़ा होकर उसको निहारूँगा, देखूँ कहाँ-कहाँ पर ये लोग बन्दिशें लगायेंगे ?

देव-दर्शन और शास्त्र-श्रवण का अधिकार मानवमात्र को क्यों नहीं ? क्यों चन्द आदमी इस अमृत-सुरा के ठेकेदार बने हुए हैं। अध्यात्म-सुरा पीकर तू-मैं का भेद भूल जाने का सभी को अधिकार है। यह सुधा पीते ही आत्मा और परमात्मा के बीच का व्यवधान मिट जायगा। हम तो स्वयं भी पियेंगे, अपने प्यारे को भी पिलायेंगे और एकाकार हो जायेंगे। ओ! धर्म के ठेकेदारो, तुम कहाँ कहाँ पर अपनी टाँग अड़ाते फिरोगे ?

उक्त कविता न हिन्दी है, न उर्दू, न इसे कोई शायराना अहमियत ही दी जा सकती है। सचमुच तुकबन्दी है। मगर यह तुकबन्दी किस वातावरण में कही गई और क्यों कही गई, यह पसेमंजर मुझे मालूम था। उसका तसब्बुर मस्तिष्क में था ही, बस कुछ न पूछिये-एक-एक पंक्ति पर तड़प-तड़प गया।

बात यह थी कि सेठी जी के एक शिष्य मोतीचन्द जैन को फाँसी दे दी गई थी। वह महाराष्ट्रीय जैन था। सेठीजी को उससे बहुत स्नेह था। अपने वफादार और जाँबाज शिष्य की मौत पर उन्हें बहुत सदमा पहुँचा ! मगर कर भी क्या सकते थे ?

5 वर्ष बाद जब वे जेल से मुक्त होकर आये तो मोतीचन्द की पवित्र स्मृति में सेठीजी ने अपनी कन्या का विवाह महाराष्ट्र के एक युवक से इस पवित्र भावना से कर दिया कि मैंने जिस प्रान्त और जिस समाज का सपूत देश को बलि चढ़ाया है, उस प्रान्त को अपनी कन्या अर्पण कर दूँ। सम्भव है उससे कोई मोती जैसा पुत्ररत्न उत्पन्न होकर देशपर न्यौछावर हो सके।

यह सम्बन्ध उक्त पवित्र भावना के साथ-साथ अन्तर्जातीय और अन्तर्प्रान्तीय भी था। जैनों में यह नया उदारहण था और हर नये कार्य से रूढ़िवादियों को चिढ़ होती है। अत: सेठीजी जाति से बहिष्कृत भी किये गये और मन्दिर-प्रवेश पर भी रोक लगा दी गई। (इस सन्दर्भ में जैन पत्र-पत्रिकाओं में उस समय काफी बावेला मचा था। 'दिगम्बर जैन' 1919 ई0, वर्ष 13 अंक 4, लिखता है-'अभी खण्डेलवाल पंचायत ने पं0 अर्जुनलाल सेठी का जाति व्यवहार बन्द कर दिया है। सेठी जी खण्डेलवाल हैं और आपने अपनी एक पुत्री का विवाह हुमड जाति में किया है। ....यह कार्य धर्म विरुद्ध तो नहीं है परन्तु जाति बन्धन विरुद्ध अवश्य है।....)

इसी वातावरण के आस-पास कुछ मनचलों ने तत्काल उक्त मजाकिया समस्यापूर्ति करने को मजबूर कर दिया। हृदय के भावों को जो आग्रह की हवा लगी तो भड़क उठे और उक्त पंक्तियाँ मुँह से निकल पड़ीं।

★ ★ ★

सेठी जी प्रखर देशभक्त होने के साथ-साथ उग्र समाज सुधारक भी थे। केवल व्याख्यान देकर या लेख लिखकर उनकी जिज्ञासा शान्त नहीं होती थी, वे अपने प्रत्येक विचार को साकार देखना चाहते थे, जयपुर और इन्दौर के गुरुकुल इसके उदारहण हैं। सेठी जी हरिजन मंदिर प्रवेश के समर्थक थे।

★ ★ ★

एक दिन सेठी जी और गोयलीय जी साथ सो रहे थे. प्रात: उठकर गोयलीय जी ने जब सेठी जी को नहीं पाया तो बड़े उद्विग्न हुए। तीन चार दिन बाद सेठी जी लौटकर आये तो गोयलीय जी ने कहा– 'आप भी खूब हैं। कोई मरे या जिए आपको क्या ?'

सेठी जी ने हंसकर कहा– 'पहले पूरी बात तो सुनो' फिर उन्होंने कहना प्रारम्भ किया– (उस दिन) 'सुबह बाहर जाकर जो अखबार पढ़ा तो मेरे हाथों के तोते उड़ गये। तुमने भी चन्द्रशेखर आजाद का अजमेर में गिरफ्तार होने का संवाद पढ़ा होगा। संवाद क्या था, मेरे लिए तो मृत्यु संदेश था। आजाद को मैंने ही एक गुप्त स्थान पर ठहराया हुआ था। उसका मेरे यहाँ से गिरफ्तार हो जाने का अर्थ मेरी नैतिक मृत्यु थी, मेरी सारी तपस्या निष्फल हो जाती! दुनियाँ क्या कहती कि सेठी भी उसकी सुरक्षा का यथोचित प्रबन्ध न कर सका।'

'बस इसी न्यूज को पढ़कर मैं तुमको बगैर सूचित किये ही छद्म रूप में वास्तविक बात जाँचने को अजमेर पहुँचा। शुक्र है कि उसको सही सलामत पाया। पुलिस ने उसके धोखे में किसी और को मेरे यहाँ से पकड़ लिया था। अब उसको स्थानान्तर करके आया हूँ।'

★ ★ ★

जाब के स्थानकवासी जैन समाज ने मुनि धनीराम जी की प्रेरणा से पंचकूले में एक गुरुकुल की स्थापना की। उसके संचालकों की इच्छा थी कि गुरुकुल का भार सेठी जी ले लें। किसी तरह सेठी जी राजी हुए। वे चाहते थे कि पंचकूला को क्रान्तिकारियों का केन्द्र बनाया जाये और फरार देश भक्तों को उसके पहाड़ी इलाकों में छिपाने का प्रबन्ध किया जाय। तदनुरूप कुछ कार्य भी किया गया, परिणामत: इस गुरुकुल से भी सेठी जी का सम्बन्ध विच्छेद हो गया।

★ ★ ★

सेठी जी दारिद्र्यव्रती थे। वे तमाम जीवन गरीबी से जूझते रहे और अपने परिवार को भी इस गरीबी में रहने को मजबूर किया । वे चाहते तो अन्य नेताओं की तरह सुख-चैन से रह सकते थे, पर उनके पास तो किसी का दिया हुआ भी जो कुछ आता था वह देश सेवा के यज्ञ में होम हो जाता था। उनके इस दारिद्र्यव्रत का एक संस्मरण, जो श्री गोयलीय जी ने लिखा है, यहाँ दृष्टव्य है–

'मैं सन् 32 में कारागार से मुक्त होने के बाद सेठीजी की चरण-रज लेने अजमेर पहुँचा। वहाँ जाकर जो उनकी स्थिति देखी, उससे कई घण्टे सुबक-सुबक कर रोता रहा । सर्वस्व होम देने के बाद, जिन्दगी भर स्वयं भी देश-सेवा में जूझते रहने के कारण घरेलू स्थिति भयावह हो उठी ! आर्थिक स्रोत सब सूखे हुए और 8.10 प्राणियों के भरण-पोषण की समस्या। मौत के सामने भी घुटने न टेकने वाला सेठी स्वयं तो न झुका, पर उसकी कमर झुक गई। उसमें वह तनाव और बाँकपन देखने में न आया। घर का वातावरण मुझसे ओझल नहीं रह सका। तभी बरफ बेचने वाले ने रबड़ी मलाई की बरफ की चटखारेदार आवाज दी तो बच्चों

के मुँह में पानी भर आया और सेठी जी से बरफ दिलवाने की जिद करने लगे। मगर चील के घोंसले में माँस कहाँ ? वे चुपचाप थोड़ी देर तो बच्चों का रोना-बिलखना देखते-सुनते रहे। जब न रहा गया तो मुझसे बोले- "गोयलीय! तुम बहुत अच्छा व्याख्यान दे लेते हो, आज इन बच्चों को बरफ की अनुपयोगिता पर एक स्पीच दो !"

मैंने कहा- "सेठीजी, कहीं बच्चे भी इस तरह की सीख मानते हैं। खासकर, बरफ, चूरन और मिठाई के संबंध में।"

सेठी जी के अब तेवर बदल चुके थे ! बोले- "तो इन्हें यह समझाओ कि तुम्हारे नालायक पिता कुछ कमाते-धमाते नहीं हैं, और जो तुम्हारे बाबा छोड़ गये थे उसे भी ये स्वाहा कर चुके हैं।"

मैं सहम कर बोला- "सेठीजी, अभी इनमें इतनी समझ ही कहाँ है जो समझाने से मान सकें।"

बोले- "नालायक, यह भी नहीं समझेंगे, वह भी नहीं समझेंगे तो फिर मैं क्या करूँ ? सरकारी नौकर को 20 वर्ष में पैंशन मिल जाती है और वह अपने बच्चों का निश्चिन्त होकर भरण-पोषण करता है। मैंने अपनी एक-एक हड्डी गलाकर रख दी तब भी क्या मुझे इनके भरण-पोषण की चिन्ता से मुक्ति नहीं मिलेगी ?"

मैं क्या जवाब देता। हिचकी बंध गई-

मुझे रोता देखकर बोले- "गधे, मेरी हालते जार से कुछ नसीहत ले। अन्धों की तरह कुएँ में मत कूद। वर्ना जिन्दगीभर रोता रहेगा। मेरा क्या है मैं तो मिट चुका-

मेरे बच्चों पर जो गुजरेगी उससे मैं वाकिफ हूँ, उनकी आँखों के आँसू पौंछने का भी किसी को अहसास न होगा।

लेकिन मैं नहीं चाहता कि तू इस तरह की गलतियाँ दोहराये। देश और समाज की सेवा जितनी बन पड़े उतनी कर, मगर सेवा करते-करते एक दिन निरा सेवक बनकर न रह जाना पड़े इसके लिए सदैव सावधान रहना।"

★ ★ ★

सेठी जी राजनैतिक क्षेत्र में ही पीड़ित नहीं रहे, वे पारिवारिक भरण-पोषण की चिन्ता में भी जीवन के अन्तिम श्वास तक गलते रहे। यौवन काल में ही देशसेवा में कूद पड़े। पूर्वजों का जो संचित था वह स्वराज्य के दाव पर लगा दिया। बुढ़ापे में सहायता तो दूर 30/- रु0 मासिक वेतन पर भी वे मंहगे समझे गये। उनकी इस दयनीय स्थिति का पता श्री अयोध्याप्रसाद गोयलीय को लिखे निम्न पत्र से चलता है-

अजमेर
17 अगस्त 1937

बन्धुवर,

मैं कल यहाँ आया, जयपुर में बीमार हो गया था। मेरी तन्दुरुस्ती ख़राब हो ही गई। दर असल में मैं दिलोदिमाग खो ही चुका। यहाँ आपका पत्र रखा हुआ मिला। आपने जो कुछ लिखा है- वाकई वह वैसा ही है, जो मैं समझ चुका था। ठीक ही है श्रद्धा और प्रेम-भावना असमर्थ, अशक्त के प्रति कभी किसी की न रही और न रहेगी। भूल इतनी-सी मेरी है कि मैंने अपने को 30/- रु0 का नौकर न समझा।..................

गोयली जी, सच है रुपये का दासत्व नरक से बढ़कर है और रुपया तो दास भी बनाता है।.......

एक व्यक्ति के सहारे रहना न मेरे लिए इष्ट है न उपादेय। नौकरी तो 30 रु0 की यहाँ भी मिल ही जायेगी मुझे तो एक उद्देश्य सताता है और यह वही है जो शायद शपथ खाकर मैंने आपसे उभय पक्ष के बचनों के साथ जयपुर में प्रकट किया था। मेरे बच्चे आनासागर में डुबो दिये जाएँ, कुछ परवाह नहीं । मेरा

कतल कर दिया जाये फबहा (बहुत अच्छा)। अन्न कष्ट, जल कष्ट, वायु कष्ट ,..........आवें..............।

..................मैं तो जैनधर्म और उस राजनीति का प्रचार करूँगा जो आपसे कई बार स्पष्ट हो चुके हैं। जो बड़वानी पर ले गये वे ही आगे का रास्ता खोलेंगे।.............................

–अ0 सेठी

★ ★ ★

1937-40 के आसपास सेठी जी राजनैतिक घात-प्रतिघातों से इतने क्षत-विक्षत हो चुके थे कि सचमुच अपना मानसिक सन्तुलन खो बैठे थे। वे राजस्थान प्रान्तीय कांग्रेस के अध्यक्ष थे। कांग्रेस हाई कमाण्ड नहीं चाहता था कि राजपूताने की बागडोर सेठी जी के हाथ में रहे। कांग्रेस-चुनाव में खद्दर के कपड़े कुली-कवाडियों को पहनाकर सेठी जी के प्रतिद्वन्दी को बोट दिलवाये गये, फिर भी सेठी जी विजयी हुए। जब वे बन्दी बनाकर रेल द्वारा ले जाये जाने लगे तो जनता इंजन के आगे लेट गई। महात्मा गांधी अजमेर आये तो सेठी जी उनके यहाँ नहीं गये, महात्मा जी ही उनके घर आये। इतनी दृढ़ स्थिति को हाई कमाण्ड कैसे वर्दास्त करता। सेठी जी का राजनैतिक जीवन समाप्त करने के लिए कई लाख रुपया व्यय किया गया, अनेक दांव-पेच खेले गये और इस प्रकार इस क्रान्तिकारी की राजनैतिक हत्या कर दी गई।

★ ★ ★

जीवन के अन्तिम समय में राजनैतिक और आर्थिक दु:श्चिन्ताओं के कारण सेठी जी का मानसिक सन्तुलन खराब हो गया। जब कहीं आश्रय नहीं मिला तो 30 रुपया मासिक पर अजमेर में मुस्लिम बच्चों को पढ़ाने पर मजबूर हो गये। अपने ही लोगों के तिरस्कार का उनके हृदय पर ऐसा आघात लगा कि उन्होंने घर आना-जाना भी बन्द कर दिया। 22 दिसम्बर 1941 को वे इस स्वार्थी संसार से प्रयाण कर गये। मजहबी दीवानों ने सेठी जी को दफना दिया। उनके परिवार वालों को तीन दिन बाद उनकी मृत्यु का संवाद मिला। प्रसिद्ध क्रान्तिकारी और धर्मज्ञ महात्मा भगवानदीन ने लिखा है– "अर्जुनलाल सेठी को हम आदमी कहें या देश की आजादी का दीवाना कहें, हम अर्जुनलाल सेठी को हिन्दुस्तानी कहें या आजादी के दीपक का परवाना कहें, जो अपने 25 वर्ष के इकलौते बेटे को मौत के बिस्तर पर छोड़कर पं0 सुन्दर लाल के एक मामूली तार पर दौड़ा हुआ बम्बई पहुँचता है और बेटे के मर जाने के बाद भी उसे देश का काम छोड़कर घर लौटने की जल्दी नहीं होती"

★ ★ ★

देशबन्धु चित्तरंजनदास जी ने सेठी जी के सन्दर्भ में कहा था-' आप (सेठी जी) के जन्म का उपयुक्त स्थान राजस्थान नहीं था। आप बंगाल में जन्म लेते तो देखते कि बंगाल आपका कितना सम्मान करता है।

★ ★ ★

प्रसिद्ध दिगम्बर जैनाचार्य और विद्यार्थी जीवन में सेठी जी के शिष्य रहे आचार्य समन्तभद्र ने लिखा है- 'सेठी जी हिन्दू थे, मुसलमान थे, जैन थे या क्या थे, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। उन्हें जलाया गया या दफनाया गया, यह भी दुनियाबी बातें हैं। सेठी जी इन सबसे ऊपर थे.... वे अपना काम करते रहे। उनका कर्म ही धर्म था।

★ ★ ★

'भारत में अंग्रेजी राज' के लेखक पं0 सुन्दर लाल जी तथा महात्मा भगवानदीन जी ने एक संयुक्त वक्तव्य में 26 अक्टूबर 1948 (विश्वमित्र दैनिक, दिल्ली संस्करण) को कहा था– 'हम दोनों सेठी जी को उनके पब्लिक जीवन के करीब-करीब शुरू होने से जानते थे। हममें व उनमें घनिष्ट संबंध था। हम उन्हें देश की महान् से महान् आत्माओं में से एक गिनते हैं। जिनकी लगन, जिनका त्याग, जिनकी

तपस्या और जिनके बलिदान की बदौलत ही देश को आज यह दिन देखना नसीब हुआ।'

आ०-(1) रा० स्वा० से०, पृ० 340 (2) जै० जा० अ० (3) जै० स० रा० अ० (4) जैन संस्कृति और राजस्थान, पृ० 340, (5) अजमेर वार्षिकी एवं व्यक्ति परिचय (6) जयपुर दर्शन (7) वीर, 22-4-1989 (8) वीर निकलंक, अक्टू० 1993 हिन्दुस्तान (दैनिक), 17-2-1986 (9) जै० स० वृ० इ०, पृ० 202 (10) राजस्थानी आजादी के दीवाने (11) जनसत्ता (दैनिक) 1-10-1997, (12) दैनिक भास्कर, (इन्दौर) 1-10-1997, (13) जैन गजट, 7-1-1918, (14) जैनमित्र, 1938, (15) दिगम्बर जैन, 1918-1919, के अनेक अंक, आदि।

श्री अवन्तीलाल जैन

अपनी ही नगरी उज्जयिनी में अखबार के हॉकर से नगरपालिका के अध्यक्ष तक की यात्रा तय करने वाले प्रसिद्ध क्रान्तिकारी, पत्रकार, अ०भा० स्वतंत्रता संग्राम सेनानी संगठन के सचिव श्री अवन्ती लाल जैन, पुत्र-श्री रामलाल का जन्म 1 अगस्त 1922 में हुआ। 11 वर्ष की उम्र में ही पिता का देहावसान हो गया, फलत: माता केशरबाई ने कठिन परिस्थितियों में अवन्ती लाल का भरण पोषण किया। संघर्षमय जीवन में श्री जैन ने अल्पायु में ही अखबार के हॉकर के रूप में जीवनयात्रा प्रारम्भ की, साथ में पढ़ाई भी जारी रखी। बाद के दिनों में वे उज्जैन नगरपालिका में दिन के 11 बजे से 5 बजे तक नौकरी और शाम 6 बजे से प्रात:काल 6 बजे तक मिल में कार्य करते रहे।



1938-39 में हैदराबाद में निजाम के विरुद्ध समस्त भारत में जोश था, आर्य समाज की जागृति से प्रभावित होकर छात्र जीवन में ही श्री जैन ने विद्यार्थियों का संगठन बनाया, 'हैदराबाद चलो' का जत्था तैयार किया और हैदराबाद जा पहुँचे। वहाँ आपको गिरफ्तार करके हैदराबाद से बाहर कर दिया गया, तो कानून तोड़कर वापस हैदराबाद में प्रवेश किया। सिक्खों के प्रसिद्ध, पवित्र स्थान 'नांदेड' में आपको पुन: गिरफ्तार कर लिया गया और जेल की कोठरी में ठूंस कर तरह-तरह की यातनाएं दी गईं। जेल में आपके साथ मध्यप्रदेश के भूतपूर्व स्पीकर श्री घनश्याम सिंह भी थे। हैदराबाद आन्दोलन ने आपके जीवन में जोश भर दिया था। वहाँ से आने के पश्चात् आप सक्रिय रूप से देश की आजादी की लड़ाई में कूद पड़े। ग्वालियर राज्य में 'सार्वजनिक सभा' जो उस समय कांग्रेस की पर्याय थी, में सम्मिलित होकर आपने संगठन का कार्य तीव्र गति से किया।

1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में गांधी जी ने करो या मरो का आह्वान किया। यह आह्वान हवा की तरह देश भर में फैल गया। श्री जैन ने उसे आत्मसात किया और उज्जैन में बडे नेताओं, सर्वश्री कन्हैयालाल मनाना, शिवशंकर रावल, वी०वी० आर्याचित, स्वामी रामानंद, केशवलाल गुप्ता आदि के साथ कार्य किया। जब सभी गिरफ्तार हो गये तब पूरे आंदोलन का संचालन आपने बड़ी वीरता के साथ किया। इस आन्दोलन के दौर में पुलिस के अत्याचार से देशभर में हजारों लोग मार डाले गये व हजारों को जेल में ठूंस दिया गया था।

अवंतीलाल जी को भी कुचल देने व गिरफ्तारी के आदेश हुए। आप जनक्रान्ति को चलाने की गरज से भूमिगत हो गए। लेकिन आन्दोलन पूरी गति से बराबर चलता रहा। उन दिनों एक दिन भी ऐसा नहीं गया कि जुलूस और सभाएं अवन्तीलाल जैन के नेतृत्व में नहीं हुईं हों। पुलिस के अत्याचार भी बहुत हुए जिनको सुनकर रोंगटे खड़े हो जाते हैं। हण्टर, कोड़ों की मार, खून-खराबा के अतिरिक्त लोगों पर घोड़े दौड़ाए जाते थे, लेकिन आप अपने लक्ष्य से नहीं डिगे व संकटों को सहते रहे।

आपने युवकों का एक दल बनाकर रेल की पटरियों को उखाड़ने, टेलीफोन के तार काटने का दृढ़ संकल्प लेकर कार्यक्रम शुरू कर दिया। उज्जैन, कोटा, मुरैना, ग्वालियर और भोपाल क्षेत्र के अनेक हिस्सों में पटरियों को उखाड़ कर रेलों के आवागमन को रोक दिया गया व टेलीफोन के तारों को काट-काट कर सारी कार्य प्रणाली को ठप्प कर दिया गया।

इसी बीच उज्जैन में एक जुलूस का नेतृत्व करते हुए पुलिस ने आपको गिरफ्तार कर लिया। उज्जैन व ग्वालियर की जेलों में रखने के बाद मुंगावली में बनाई गई नजरबन्द जेल में आपको भेज दिया गया। 6 माह के बाद भी जब आप अपने लक्ष्य से विचलित न हुए तो ब्रिटिश शासन के सुपुर्द कर दिया गया। आपको इन्दौर रेसीडेण्सी जेल में भेज दिया गया और रेल की पटरियां उखाडने, टेलीफोन और टेलीग्राफ के तार काटने व देशद्रोह के आरोप में मुकदमों की कार्यवाही शुरू कर दी गई। आप इन्दौर रेसीडेण्सी जेल में बंद थे और मुकदमा चल रहा था भोपाल में। श्री जैन राजनीतिक कैदी थे किन्तु सुलूक किया जाता था जघन्य हत्या के आरोपियों की तरह। दोनों हाथों में भारी-भरकम हथकडियां डाल कर सुनवाई के लिए भोपाल ले जाया जाता था। एक बार भोपाल ले जाते समय एक पुलिस अधिकारी ने आपसे कुछ अपमानजनक शब्द कह दिये। बस फिर क्या था, उस अधिकारी की श्री जैन ने हथकड़ियों से जकड़े हाथों से ही मार्ग में ऐसी मरम्मत की, कि वह अधमरा सा हो गया और उसे अस्पताल में कुछ दिनों के लिए भर्ती कराया गया।

मुकदमें की सुनवाई के समय सबके सम्मुख एक ही प्रश्न था। 'फांसी या कैद ?'

'कैसे मुकदमें से निकाला जावे।' इसके लिए देश-प्रेमियों के दो दल गठित हुए। एक वकीलों का और दूसरा नेताओं का। इस ऐतिहासिक, बहुचर्चित मुकदमें से बचाव के लिए तत्कालीन ग्वालियर राज्य के वयोवृद्ध कांग्रेसी नेता श्री त्रयम्बक दामोदर, मध्य भारत के दो भूतपूर्व मुख्यमंत्री श्री तख्तमल जैन व लीलाधर जोशी तथा उज्जैन नगर कांग्रेस के अध्यक्ष बनारसी दास जैन आदि प्रमुख नेताओं ने बचाव समिति बनाई। वकीलों की ओर से बचाव की पैरवी का नेतृत्व तत्कालीन एडवोकेट जनरल माननीय श्री के0एल0 चितले ने किया था। करीब एक वर्ष तक मुकदमा चला और 1943 के अन्त में अवन्तीलाल व उनके साथियों को छोड़ दिया गया।

भारत की आजादी के लिए क्रांतिकारी प्रवृत्तियों, उग्र स्वभाव, तोड़-फोड़ और मौका आने पर हिंसा करने में भी आगे रहने के कारण आप कम्युनिस्ट पार्टी में सम्मिलित हो गये। आपने उज्जैन, रतलाम, ग्वालियर व बम्बई में बड़े-बड़े मजदूर आंदोलनों का सफलता से संचालन किया। इसके बाद कम्युनिस्ट पार्टी के टिकिट पर ही आप उज्जैन नगरपालिका के सदस्य और बाद में निर्विरोध अध्यक्ष चुन गये।

आजादी के बाद से ही आप 'नई दुनिया' से सम्बद्ध हैं। हरिजनों के लिए आपने बहुत कार्य किये हैं। आपने तीन बार विदेश यात्रा की है। आप उज्जैन जिला सहकार संघ के अध्यक्ष (1958), उज्जैन जिला केन्द्रीय बैंक के चेयरमैन (1954 से 1964) उज्जैन जिला भूमि विकास बैंक के अध्यक्ष (1967) आदि पदों पर रहे। आपका अनेक बार राष्ट्रीय स्तर पर सम्मान हुआ है।

1983 में आपका 'हीरक जयन्ती अभिनन्दन समारोह' आयोजित हुआ था। इस अवसर पर एक सचित्र स्मारिका प्रकाशित हुई है; जिसमें आपके बहुआयामी व्यक्तित्व एवं कृतित्व का आकलन किया गया है। पूरे मालव अञ्चल में आप 'भाई साब' के नाम से पुकारे जाते हैं।

आ0- (1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-4, पृष्ठ-157, (2) अवन्ती पुत्र : अवंतीलाल जैन, हीरक जयन्ती स्मारिका, (3) नई दुनिया, 5-11-1997 तथा 23-5-1998, (4) दैनिक भास्कर, 11-8-1998 आदि

श्री अशोक सिंघई

सागर (म0प्र0) के श्री अशोक सिंघई, पुत्र-श्री रज्जू लाल ने सन् 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में 2 माह का कारावास भोगा।

आ0- (1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-2, पृष्ठ-8, (2) आ0 दी0, पृष्ठ-30

श्री आनंदराव जैन

मुल्ताई, जिला-बैतूल (म0 प्र0) के श्री आनन्द राव जैन, पुत्र-श्री नारायण राव का जन्म 1914 में हुआ। 1938 में आप ब्रिटिश सेवा छोड़कर आन्दोलन में सम्मिलित हुए। 25-9-1941 से 1 माह तक आप बैतूल जेल में रहे। 1942 के आन्दोलन में भी आप 15 दिन नजरबन्द रहे थे।

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-5, पृ0 141

श्री आनंदीलाल जैन

इन्दौर (म0प्र0) के श्री आनंदीलाल जैन, पुत्र श्री शैतानमल का जन्म 20 अप्रैल 1926 को हुआ। आपने एम0 ए0 (अर्थशास्त्र) की उपाधि प्राप्त की। स्वतंत्रता संग्राम के सक्रिय कार्यकर्ता रहे श्री जैन को भारत छोड़ो आंदोलन में भाग लेने के कारण गिरफ्तार कर लिया गया और लगभग 15 माह के कारावास की सजा दी गयी। आपके बड़े भाई श्री गेंदालाल जी ने भी जेलयात्रा की।

आ0 - (1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-4, पृष्ठ-9

श्री इन्द्रमल बाफना

श्री इन्द्रमल बाफना का जन्म सीतामऊ, जिला मंदसौर (म0प्र0) में 1915 में हुआ। आपके पिता का नाम श्री थावरचंद था। आपका कार्यक्षेत्र सीतामऊ स्टेट ही रहा, किन्तु अनेक बार आप स्टेट से बाहर ग्वालियर स्टेट व सुदूर राजस्थान में जाकर भी आंदोलन में भाग लेते रहे। इंदौर रहकर भी आपने आंदोलन में भाग लिया। भारत छोड़ो आंदोलन में आपको गिरफ्तार कर मुंगावली जेल में रखा गया। गांधी जी के चरण-चिह्नों पर चलकर बाफना जी लोगों को स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए सदा प्रेरित करते रहे। गांव-गांव जाकर लोगों को रूढ़ियों से मुक्त कराने, नशाबन्दी तथा शिक्षा के प्रति रुचि लेने के लिए आप उत्साहित करते रहे।

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, 4/213, (2) स्व0 स0 म0, पृष्ठ-142

श्री ईश्वरचन्द्र जैन उर्फ वंशीलाल जैन

चलती ट्रेन को रोककर उसके इंजन पर राष्ट्रीय ध्वज फहराने वाले श्री ईश्वरचन्द्र उर्फ वंशीलाल



जैन का जन्म पिपरिया कलां, जिला-जबलपुर (म0प्र0) में हुआ। आपके पिता का नाम श्री कन्छेदीलाल जैन था। आप 1930 से ही सविनय अवज्ञा आंदोलन में दादा बद्रीनाथ दुबे के नेतृत्व में सक्रिय हो गये थे। नमक-कानून भंग करने के दौरान पुलिस के निर्मम लाठी प्रहार से आपका शरीर लहूलुहान हो गया। पुन: जंगल सत्याग्रह और विदेशी वस्त्र बहिष्कार आंदोलन में भाग लिया। ट्रेन पर आरूढ़ होकर गाडरवारा स्टेशन के समीप जंजीर खींचकर ट्रेन रोकी और 'भारत माता की जय' के नारे लगाते हुए, हाथ में तिरंगा झंडा लिए आप तेजी से इंजन के समीप पहुँचे और उस पर तिरंगा ध्वज फहराने में सफल हो गये। ट्रेन के यात्रियों में खासा कौतूहल फैल गया। पुलिस दौड़ी और इस 'बागी' युवक को गिरफ्तार कर केन्द्रीय कारागार जबलपुर भेज दिया गया, जहां आपको दिनांक 30 सितम्बर 1932 से 8 मार्च 1933 तक कठोर यातनायें भोगनी पड़ीं। जेल से मुक्त होने पर कांग्रेस कार्यकर्ता के रूप में

कार्यरत रहे। मंडलेश्वर एवं जनपंद सभासद भी आप बाद में रहे।

आ0- (1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-1, पृष्ठ-30, (2) स्व0 स0 पा0, पृष्ठ-107, (3) श्री राकेश जैन, शहपुरा द्वारा प्रेषित परिचय

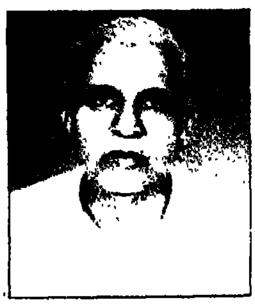
श्री उगमराज मोहनोत

विधि स्नातक श्री उगमराज मोहनोत का जन्म 25 जुलाई 1925 को श्री मूलराज के घर जोधपुर (राजस्थान) में हुआ। 1940 में लोक परिषद् के आन्दोलन में आपने वानर सेना के स्वयंसेवक के रूप में कार्य किया। 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में आप दसवीं कक्षा के छात्र थे, वहाँ से गिरफ्तार कर आपको भारत सुरक्षा कानून के अन्तर्गत डेढ़ वर्ष की सजा दी गई व अमानुषिक पीड़ायें दी गईं। तलाशी में पुलिस घर का समान ले गई। जेल से छूटने के बाद स्कूलों में प्रवेश पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया फिर भी आपने किसी तरह एम0ए0, एल0एल0बी0 तक शिक्षा ग्रहण की। आपके पिता पुलिस विभाग में कार्य करते थे, लेकिन पुत्र की राजद्रोही प्रवृत्तियों के कारण उनकी तरक्की रोक दी गई।

आ0- (1) रा0 स्व0 से0, पृ0-71।

श्री उत्तमचंद जैन

नगर कांग्रेस के मंत्री रहे, पिण्डरई, जिला-मण्डला (म0प्र0) के श्री उत्तमचंद जैन, पुत्र-श्री



कुञ्जीलाल का जन्म 15 फरवरी 1924 को ग्राम-कदवां, तहसील- बण्डा, जिला-सागर (म0प्र0) में हुआ। स्थानीय उच्च नेताओं की प्रेरणा पाकर आप राष्ट्रीय आंदोलन में सक्रिय हुए। 1941 के व्यक्तिगत सत्याग्रह में आप गांव-गांव जाकर आंदोलन का प्रचार करते रहे। 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में जुलूस निकलवाने, क्रान्तिकारी नारे लगवाने तथा सरकार विरोधी गतिविधियों में भाग लेने के कारण आप गिरफ्तार कर लिए गये, फलत: 6 माह के कारावास का दण्ड भोगा।

आ0 - (1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-1, पृष्ठ-203, (2) जै0 स0 रा0 अ0

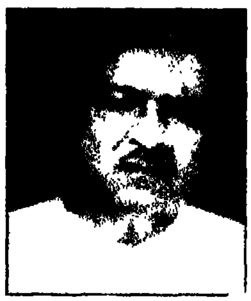
श्री उत्तमचंद जैन

जबलपुर (म0प्र0) के श्री उत्तमचंद जैन, पुत्र-श्री मूलचंद ने 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में भाग लिया, फलत: आप गिरफ्तार कर लिये गये और कारावास में डाल दिये गये।

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-1, पृष्ठ-31 (2) स्व0 स0 ज0, पृष्ठ-85

श्री उत्तमचंद जैन कठरया

श्री उत्तमचंद कठरया का जन्म 1-11-1919 में उत्तमधाना (ललितपूर) उ0प्र0 में हुआ। आपके



पिता का नाम श्री मुरलीधर जैन था।

कठरया जी को राष्ट्रीय जन-आन्दोलन में कार्यरत होने की प्रेरणा अपने अग्रज श्री नन्दकिशोर कठरया से मिली। श्री रामेश्वर प्रसाद शर्मा के नेतृत्व में आपने अपने ग्राम उत्तमधाना में जनजागृति का श्रीगणेश किया। चर्खा, स्वदेशी वस्तुओं के प्रचार और विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार में योगदान दिया। 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में सम्मिलित होकर तिरंगा झंडा हाथ में लेकर रक्षा-बंधन के अवसर पर सत्याग्रह करते हुए गिरफ्तार होकर वर्ष भर का कठोर कारावास तथा 100/- का अर्थ दण्ड आपने भोगा। 29-3-1994 को आपका निधन हो गया।

आ0-(1) र0 नी0, पृष्ठ-22, (2) जै0 स0 रा0 अ0, (3) डॉ0 बाहुबली जैन द्वारा प्रेषित परिचय (4) श्री महेन्द्र कुमार कठरया द्वारा प्रेषित परिचय।

बाबू उत्तमचंद वकील

आगरा के निकट बरारा ग्राम के रहने वाले बाबू उत्तमचंद वकील, पुत्र-श्री उमराव सिंह जैन 1936 से राष्ट्रीय क्षेत्र में प्रकाश में आये। आप कांग्रेस कमेटी के पदाधिकारी रहे। 1940 के आंदोलन में आप नजरबंद कर लिए गये और लगभग एक वर्ष जेल में रहे। 1942 के आन्दोलन में भी आपको 9 अगस्त को ही गिरफ्तार कर लिया गया और मई 1944 में छोड़ा गया। समाजवादी विचारधारा से प्रभावित वकील सा0 ने उस समय किसानों का बड़ा संगठन खड़ा किया था।

आ0 · (1) प0 इ0, पृष्ठ 139, (2) जै0 स0 रा0 अ0, (3) उ0 प्र0 जै0 ध0, पृ0 92, (4) श्री महावीर प्रसाद अलवर द्वारा प्रेषित परिचय, (5) गो0 अ0 ग्र0, पृ0 218 . 219

श्री उत्तमचंद वासल

मण्डल कांग्रेस कमेटी के मंत्री रहे, पिण्डरई, जिला-मण्डला (म0प्र0) के श्री उत्तमचंद वासल तत्कालीन नेताओं में अग्रगण्य रहे हैं। राष्ट्रीय आन्दोलन में सक्रियता से आपने भाग लिया, फलत: गिरफ्तार हुए और 6 माह की जेल यात्रा की।

आ0-(1) जै0 स0 रा0 अ0

श्री उमरावसिंह ढावरिया

मेवाड़ प्रजा-मण्डल आन्दोलन से संबद्ध रहे श्री उमरावसिंह ढावरिया का जन्म बनेड़ा (राजस्थान) के जैन ओसवाल परिवार में हुआ। बनेड़ा और उदयपुर में शिक्षा प्राप्त ढावरिया जी विद्यार्थी जीवन में ही राजनीति में कूद पड़े, उन्होंने पिछड़ी जातियों में शिक्षाप्रसार का काम हाथ में लिया और प्रजामण्डल के तत्त्वावधान में किसानों और मजदूरों के संगठन का कार्य सम्हाला। 'अखिल भारतीय देशी राज्य लोक परिषद्' के सदस्य रहे ढावरिया जी 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में भारत सुरक्षा कानून के अंतर्गत 6 माह के लिए इसवाल और उदयपुर की जेलों में नजरबंद कर दिये गये। देश की आजादी के बाद आप समाजवादी पार्टी में शामिल हो गये। दो वर्ष तक आप प्रान्तीय सोशलिस्ट पार्टी के महामंत्री रहे। ढावरिया जी लगभग 5 वर्ष ग्राम पंचायत के सरपंच, 4 वर्ष पंचायत समिति के प्रधान तथा 1962 से 1967 तक राज्य विधान सभा के सदस्य रहे। आजादी के बाद भी आप अनेक बार जेल गये।

आ0- (1) रा0 स्वा0 से0, पृष्ठ-511 (2) जैन संस्कृति और राजस्थान, पृष्ठ-343, (3) इ0 अ0 ओ0, 2/401

श्री उम्मेदीलाल जैन

ग्राम साधन खेड़ा, तहसील-किरावली, जिला-आगरा (उ0प्र0) के श्री उम्मेदीलाल जैन ने 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में भाग लिया था और जेल के दारुण दुख झेले थे। आप मण्डल कांग्रेस कमेटी के सदस्य भी रहे थे।

आ0--(1) गो0 अ0 ग्र0, पृ0-219

श्री एन० कुमार जैन

इटारसी (म0 प्र0) के श्री एन0 कुमार जैन, पुत्र-श्री कालूराम जैन का जन्म बाबई (माखननगर) में चार जनवरी 1913 को हुआ। आपकी शिक्षा मैट्रिक तक हो पाई थी कि स्वतंत्रता आन्दोलन की राह में ऐसे निकले कि फिर आगे पढ़ने का नाम ही नहीं लिया। आर्थिक रूप से सम्पन्न परिवार के होने के बावजूद भी आपने युवकों की टोलियों बनाकर, गांव-गांव जाकर स्वतंत्रता की अलख जगाई। बाबई पुलिस थाने और सरकारी इमारतों पर तिरंगा फहराने के जुर्म में अंग्रेजों ने श्री जैन को 1938 में गिरफ्तार कर 6 माह के लिए होशंगाबाद जेल भेज दिया किंतु श्री जैन जेल से भी आंदोलन की गतिविधियां चलाते रहे।

1942 के आंदोलन में तो श्री जैन ने अद्‌भुत साहस का परिचय दिया। बागड़ा रेलवे स्टेशन को अपने कब्जे में ले लिया तथा भारी तोड़फोड़ की एवं स्टेशन मास्टर को कमरे में बंद कर उसकी जबर्दस्त पिटाई

की। अंगेजों ने स्थिति से निपटने के लिए इटारसी और पचमढ़ी से सेना भेजी तथा इन्हें गिरफ्तार किया गया। 16 महीने श्री जैन को नजरबंद रखा गया, पहले होशगांबाद तथा बाद में अकोला जेल ले जाया गया। श्री रामकृष्ण बजाज, कमलनयन बजाज, बसंतदादा नाईक, नरेन्द्र तिड़के और ठाकुर निरंजन सिंह से इनका जेल में संपर्क हुआ। श्री एन० कुमार रामकृष्ण बजाज के संपर्क में आने के बाद महात्मा गांधी के भी संपर्क में आए। अकोला जेल से बांस की सीढ़ी बनाकर जेल कूदकर भागे तथा नेहरू जी को नागपुर जाकर संदेश दिया किंतु नागपुर में फिर गिरफ्तार कर लिये गये।

गांधीजी से श्री जैन इतने ज्यादा प्रभावित हुए कि बाबई स्थित शनीचरे मोहल्ले की अंग्रेजी कपड़े की पूरी दुकान को आग लगा दी। फिर जीवन पर्यन्त ये खादी ही पहनते रहे। श्री जैन 1935 से ही कांग्रेस में आ गये थे। गरीब साथियों की समय-समय पर मदद करना इनका मुख्य उद्देश्य था। बाबई में 1953 में एक सुसज्जित अस्पताल बनाकर उन्होंने सरकार को दान किया जो आज भी चल रहा है। श्री जैन में स्वतंत्रता की भावना कूट-कूट कर भरी थी। उन्होंने जीवन पर्यन्त केन्द्र एवं राज्य सरकार की श्रद्धा निधि या अन्य कोई सुविधा प्राप्त नहीं की। 15 अगस्त 72 को दिल्ली में श्रीमती इंदिरा गांधी ने उन्हें ताम्रपत्र भेंट दिया था। 26 जनवरी 1975 को बम्बई में आपका देहावसान हो गया।

आ०-(1) म० प्र० स्व० सै०, 5/325 (2) स्व० स० हो० पृ० 117, (3) दैनिक जागरण (भोपाल), 22 अगस्त 1997

श्री कंचनलाल जैन

सागर (म०प्र०) के श्री कंचनलाल जैन, पुत्र श्री छोटे लाल का जन्म 1924 में हुआ। 1942 के भारत छोड़ो आन्दालन में आपने 6 माह का कारावास भोगा।

आ०-(1) म० प्र० स्व० सै०, भाग 2, पृष्ठ 10, (2) आ० दी०, पृष्ठ 31

श्री कज्जूलाल पोरवाल जैन

नाथद्वारा (उदयपुर) राजस्थान के श्री कज्जूलाल पोरवाल जैन, पुत्र श्री-हीरालाल ने 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में भाग लिया और उदयपुर जेल में 6 माह की सजा काटी।

आ०-(1) रा० स्व० से०, पृ०-495

श्री कन्छेदीलाल डेरिया

बाबई, जिला-होशंगाबाद (म० प्र०) के श्री कन्छेदीलाल डेरिया, पुत्र-श्री मन्नूलाल डेरिया का जन्म वि० सं० 1952 (सन् 1895) में हुआ। 1930 से आप कांग्रेस के सक्रिय कार्यकर्ता बन गये। 1941 के व्यक्तिगत सत्याग्रह आन्दोलन में आप होशंगाबाद जेल में 15 दिन नजरबंद रहे। 1942 के आन्दोलन में भी आपने जेल यात्रा की थी। 17 वर्ष की उम्र से ही आन्दोलन में सक्रिय रहे डेरियाजी का निधन कार्तिक शुक्ल 3 वि० सं० 2036 (सन् 1979) में हो गया। आपके पुत्र व भाई भी जेलयात्री रहे हैं।

आ०-(1) म० प्र० स्व० सै०, भाग-5, पृ० 326, (2) स्व० स० हो०, पृ० 115

सिंघई श्री कन्छेदीलाल जैन

सिंघई कन्छेदीलाल जैन, पुत्र-श्री गल्लीलाल जैन का जन्म 1920 में तेंदूखेड़ा, जिला-नरसिंहपुर



(म०प्र०) में हुआ। प्राथमिक कक्षा में अध्ययन के समय ही आप राष्ट्रीय आन्दोलन में कूद पड़े और 1930 के आन्दोलन में भाग लिया। 1942 के आन्दोलन में आपने सत्याग्रह किया और गिरफ्तार हुए। आपने लगभग 10 माह का कारावास नरसिंहपुर, होशंगाबाद, मण्डला एवं जबलपुर की जेलों में काटा। देश की आजादी के बाद

सेठ गोविन्ददास जी के हाथों आपने ताम्रपत्र प्राप्त किया। 21-9-1996 को आपका देहावसान हो गया।

आ0- (1)- म0प्र0 स्व0 सै0, भाग-1, पृष्ठ-137, (2) स्वतंत्रता सेनानी श्री खेमचंद स्वदेशी द्वारा प्रेषित परिचय

श्री कन्छेदीलाल जैन

बण्डा, जिला-सागर (म0प्र0) निवासी श्री कन्छेदीलाल जैन, पुत्र-श्री रामलाल ने 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में भाग लिया व 14 माह का कारावास भोगा। आपका निधन 1972 में हो गया।

आ0- (1)-म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-2, पृष्ठ 10, (2) आ0 दी. पृ0 31

श्री कन्हैयालाल कटलाना

श्री कन्हैयालाल कटलाना प्रसिद्ध स्वाधीनता सेनानी स्व0 शंकरलाल कटलाना (इनका परिचय अन्यत्र दिया गया है) के अनुज हैं। आप उग्र स्वभाव के आंदोलनकारी रहे। आपका जन्म 1909 में श्री मोतीलाल कटलाना के घर हुआ। 15 वर्ष की अल्प आयु में ही आप स्वतंत्रता आंदोलन में शामिल हो गये और पढ़ाई छोड़, क्रातिकारी का बाना धारण कर लिया। सीतामऊ (जहां आपका जन्म हुआ) से परिवार सहित निर्वासित हुए। अनेक बार पुलिस से सीधे-सीधे टकराते रहे। स्टेट की पुलिस, जिस पर अंग्रेजियत का वर्चस्व था, श्री कन्हैया लाल कटलाना के आंदोलनकारी रवैये से सदा परेशान रही। आंदोलन को प्रखर बनाने में श्री कटलाना का योगदान महत्त्वपूर्ण था। भारत छोड़ो आंदोलन में आप अपने भाई के साथ मुंगावली जेल में रहे। जेल में भी आपका रवैया पुलिस के प्रति आक्रामक ही रहा। जेल से छूटने के बाद आप मंदसौर में ही स्थायी रूप से बस गये। छुआछूत आंदोलन में भाग लेने के कारण आप जाति से भी निष्कासित कर दिये गये थे।

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग 4, पृष्ठ 213, (2) स्व0 स0 म0, पृ0 139-140

श्री कन्हैयालाल जैन

अपने कठिन परिश्रम से जीविकोपार्जन करने वाले, जबलपुर (म0प्र0) के श्री कन्हैयालाल जैन, पुत्र-श्री अबीरचन्द (अमीरचन्द) ने 1932 के आन्दोलन में भाग लिया तथा 6 माह का कारावास भोगा।

आ0- (1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग 1, पृष्ठ-32, (2) स्व0 स0 ज0, पृ0 86

श्री कन्हैयालाल जैन

भरी जवानी में प्रथम प्रसवोद्यता नवविवाहिता प्रियतमा के भी प्रेम को ठुकराकर भारत माँ से प्यार



करने वाले श्री कन्हैयालाल जैन का जन्म 26 अगस्त 1910 को चिकसंतर, में हुआ। आपके पिता का नाम श्री कल्याण दास जैन था। आपने माध्यमिक तक शिक्षा ग्रहण की। पिता की जर्जर अवस्था के कारण आप मुरार, ग्वालियर (म0प्र0) में आकर बस गये।

9 अगस्त को जब गांधी जी द्वारा 'करो या मरो' का नारा दिया गया तब आपने मुरार छावनी की फौज से बगावत करने वाले सैनिकों को मुरार नदी पर तिरंगा झण्डा देकर उन्हें भी आजादी के लिये प्रेरित किया। परिणामस्वरूप अंग्रेजों की फौजों द्वारा बर्बरता पूर्वक लाठी चार्ज किया गया। जिससे आपके दोनों पैरों को काफी चोटें आईं और आप आजीवन परेशान रहे।

29 अगस्त 1942 को एक जुलूस के रूप में अपने अन्य सहयोगियों के साथ मुरार थाने पर जाकर आपने गिरफ्तारी दी, जहाँ से आपको ग्वालियर कारावास में भेज दिया गया और कुछ दिनों के बाद सबलगढ़ स्थानान्तरित कर दिया गया, जहां से 25 मई 1943 को आप आजाद हुए। देश की आजादी के बाद

भी आप देशहित में समर्पित रहे, अत: अन्त तक भी अपने परिवार के भरण-पोषण हेतु स्थाई साधन नहीं कर सके।

आप जितने कर्मठ थे उतने ही सादगी पसन्द भी थे। 18 मई 1976 को आपका देहावसान हो गया।

आ0- (1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग 4, पृष्ठ 234, (2) जै0 इ0, पृष्ठ 85, (3) जै0 जै0 यु0, पृ0 228, (4)- पुत्र दिलीप कुमार द्वारा प्रेषित परिचय

श्री कन्हैयालाल नागोरी

जावद क्षेत्र से म0 प्र0 विधानसभा सदस्य रहे श्री कन्हैयालाल नागोरी, पुत्र-श्री नथमल नागोरी का



जन्म 6 फरवरी 1921 को जमुनियां कलां, जिला-मन्दसौर (म0 प्र0) में हुआ। आपने 21 वर्ष की युवा आयु में स्वतन्त्रता सेनानी बद्रीदत्त भट्ट के नेतृत्व में स्वतन्त्रता आंदोलन में भाग लेना शुरू किया। श्री जगदीश ऐरन, दशरथ लाल नागर, बलदेवदास बैरागी, भागीरथ जी पाटीदार आदि युवा साथियों सहित जुलूस निकालना, सांमतशाही और अंग्रेजों के विरुद्ध नारे लगाना, पोस्टर लगाना, सूचनाएं प्रसारित करना आदि आपके प्रमुख काम थे।

आंदोलन के दौरान अनेक बार सेनानियों को या तो गिरफ्तार कर लिया जाता था या फिर किन्हीं कारणों से उन्हें भूमिगत हो जाना पड़ता था, तब इस युवा दल को सक्रिय होकर मोर्चा सम्हालना पड़ता था। श्री नागोरी की सक्रियता उस समय सराहनीय होती थी। पुलिस इन पर डण्डे बरसाती और पकड़ कर दूर जंगल में छोड़ आती थी। किन्तु अगले दिन ये फिर सक्रिय होकर आंदोलन करने हेतु प्रगट हो जाते थे।

आप अनेक बार जेल गये पर एक दो रात रखकर छोड़ दिये गये, किन्तु शक्कर ब्लैक का विरोध करने पर आपको गिरफ्तार कर लम्बी अवधि के लिये जेल की सजा दी गई, बाद में श्री सीताराम जाजू की पैरवी पर 10 दिन की सजा भुगतकर मुक्त हो गये और छूटते ही फिर आंदोलन में कूद पड़े।

1942 के आंदोलन में वरिष्ठ नेताओं के गिरफ्तार हो जाने के कारण नागोरी जी अपने युवादल द्वारा स्वतंत्रता आंदोलन को चालू रखे रहे। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् भी आपने जनजागरण में स्वयं को सक्रिय रखा। आप 1972-77 तक जावद क्षेत्र के विधायक रहे।

आ0-(1) स्व0 स0 म0, पृष्ठ-151-152

श्री कन्हैयालाल परमहंस

इन्दौर (म0प्र0) के श्री कन्हैयालाल परमहंस, पुत्र-श्री नन्दराम जैन का जन्म 25 सितम्बर 1915 को हुआ। 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में आपने सक्रिय भाग लिया एवं 15 माह 9 दिन का कारावास भोगा।

आ0- (1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग 4, पृष्ठ 12

श्री कन्हैयालाल जैन

श्री कन्हैयालाल जैन, पुत्र-श्री नारायण जैन का जन्म 1904 ई0 में हुआ। आपने मैट्रिक तक शिक्षा ग्रहण की। 1930 से ही आप स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय हो गये थे। 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में आपने भाग लिया, फलत: गिरफ्तार हुये और जबलपुर जेल में 8 माह का कारावास भोगा।

आ0- (1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग 1, पृष्ठ 32, (2) स्व0 स0 ज0, पृष्ठ 88

वैद्य कन्हैयालाल जैन

जिनका सारा परिवार ही स्वाधीनता आन्दोलन में जेल गया, ऐसे कानपुर (उ0प्र0) के वैद्य कन्हैया लाल के सन्दर्भ में 2-3 बार कानपुर यात्रा करने के बाद जो ज्ञात हुआ उसके अनुसार वैद्य जी का जन्म वि0 सं0 1940 (1883 ई0) में शेरकोट,



जिला-बिजनौर (उ0प्र0) में हुआ। पिता का नाम श्री पूरनमल जैन था। आपके पूर्वज जयपुर राज्य से शेरकोट आकर बसे थे। आपके पूर्वज श्री दीपचंद जी ने हकीम का व्यवसाय अपनाया और दूर-दूर तक प्रसिद्ध हो गये। उनके पूर्वजों ने 1857 के गदर में भाग लिया था। वैद्य कन्हैयालाल का वैद्यकी परीक्षा में प्रथम स्थान आने पर अम्बाला छावनी में महासभा के जलसे में सम्मान हुआ था।

अपने वैद्यकीय व्यवसाय को प्रतिष्ठा की चरम सीमा पर पहुंचाने वाले कन्हैयालाल जी स्वतंत्रता आंदोलन में भी उतनी ही तल्लीनता से सक्रिय रहे। 1930 के आन्दोलन में उन्हें छह मास का कारावास मिला। 'जैन सन्देश' के अनुसार वे सच्चे अर्थों में देशभक्त थे। उनकी पत्नी श्रीमती गंगा बाई, पुत्र महेशचंद्र व सुन्दरलाल सभी जेल यात्री हैं। आप कुछ दिन बम्बई भी रहे। 'जैन संदेश' लिखता है-'पूज्य बाल गंगाधर तिलक के द्वारा चलाये स्वदेशी आन्दोलन के समय आप बम्बई में स्वदेशी व्रत धारण कर चुके हैं। 1930 के आन्दोलन में आप छह मास के लिए जेल जा चुके हैं। हमेशा कांग्रेस के प्रत्येक कार्य में शरीक होते हैं। म्यूनिसिपल बोर्ड कानपुर के मेम्बर भी रह चुके हैं।'

आपको प्रवचन का शौक था। बड़े मंदिर कानपुर में सदैव शास्त्र पढ़ते थे। शुद्ध औषधियाँ व्रती श्रावकों को मिलें इस हेतु आपने एक औषधालय की स्थापना की थी। कानपुर में अनेक संस्थाओं से आप सम्बद्ध रहे हैं। अनेक संस्थाओं की स्थापना भी आपने की है।

1940 में जब आपके पुत्र सुन्दर लाल जी गिरफ्तार कर लिये गये, तब आप जेल में ही थे। 2 माह बाद वीर शासन जयंती के दिन मझले पुत्र महेश चंद को भी जेल भेज दिया गया, तब भी आप विचलित नहीं हुए। कानपुर में चैत्र शुक्ल अष्टमी को वटा देवी मेले पर बकरों की बलि दी जाती थी, वैद्य जी ने अनेक लोगों के साथ मिलकर उसे बन्द कराया था। आपका निधन 5-11-1956 को कानपुर में हुआ।

आ0 (1) जै0 स0 रा0 अ0, (2) वैद्य जी के प्रिय शिष्य पं0 बच्चू लाल जी जैन, कानपुर द्वारा प्रदत्त परिचय।

श्री कन्हैयालाल उर्फ मथुरालाल जैन

इन्दौर (म0प्र0) के श्री कन्हैयालाल उर्फ मथुरालाल जैन, पुत्र-श्री रूपचंद का जन्म 2 जुलाई 1930 को हुआ। 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में आपने भाग लिया। फलत: 2 माह की अवधि तक गिरफ्तार रहे। आजादी के बाद शासन ने आपको प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया।

आ0- (1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग 4, पृष्ठ 121

श्री कपूरचंद छाबड़ा

1913 के आसपास जन्मे, जयपुर (राज0) के श्री कपूरचंद छाबड़ा 1932 में सत्याग्रह करने अजमेर गये और वहीं गिरफ्तार कर नौ माह जेल में रखे गये। 1939 के प्रजामण्डल आन्दोलन में भी आपने भाग लिया, पर पुलिस गिरफ्तार नहीं कर सकी। आजीवन खद्दरधारी श्री छाबड़ा जनता की सेवा के लिए सदैव तैयार रहने से बड़े लोकप्रिय रहे हैं।

आ0-(1) रा0 स्व0 से0, पृ0-603

श्री कपूरचंद जैन

गढाकोटा, जिला-सागर (म0प्र0) के श्री कपूरचंद जैन, पुत्र-श्री दरबारीलाल जैन 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में 15 दिन नजरबन्दी में रहे।

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-2, पृष्ठ-11, (2)आ0 दी0, पृ0-32

श्री कपूरचंद जैन

श्री कपूरचंद जैन का जन्म 1921 में सैदपुर, जिला-ललितपुर (उ0प्र0) में हुआ, आपके पिता श्री पल्टूराम थे। आपने श्री विजय कृष्ण शर्मा के साथ

गोपनीय क्रांतिकारी आंदोलन में भाग लिया और 1941 में व्यक्तिगत सत्याग्रह में जेल यात्रा की। आपको 6 माह की सजा और 15 रु0 अर्थदंड हुआ। आप झांसी तथा बारावंकी जेलों में रहे। भारत आजाद होने के बाद भी देशप्रेम की खातिर आप 1948-49 तक प्रांतीय रक्षा दल में रहे।

आ0-(1) र0 नी0, पृ0-49

डॉ० कपूरचंद जैन

सागर (म0प्र0) के डॉ0 कपूरचंद जैन, पुत्र-श्री नन्हे लाल का जन्म 1919 में हुआ। आपने नागपुर में मेडीकल कॉलेज में अध्ययन के समय शासकीय भवनों पर राष्ट्रीय ध्वज फहराया, फलत: नागपुर में 15 दिन नजरबन्द रहे। राष्ट्रीय आन्दोलन में भाग लेने के कारण शासकीय सेवा से भी आप वंचित रहे।

आ0- (1)- म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग 2, पृष्ठ 14, (2)- आ0 दी0, पृ0 35

श्री कपूरचंद जैन

सागर (म0प्र0) के श्री कपूरचंद जैन, पुत्र-श्री हीरालाल जैन का जन्म 1924 में हुआ। प्राथमिक शिक्षा ग्रहण कर आप 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में सक्रिय हो गये और 6 माह का कारावास भोगा।

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-2, पृ0 4, (2) आ0 दी0, पृ0 32

श्री कपूरचंद जैन चौधरी

श्री कपूरचंद चौधरी, पुत्र-श्री दरबारीलाल चौधरी का जन्म दमोह (म0प्र0) में 16-10-1916 को हुआ। आपके चाचा श्री भैयालाल चौधरी दमोह में स्वतंत्रता आंदोलन के प्रमुख रहे हैं, जिनकी कलकत्ता-कांग्रेस मीटिंग से लौटते समय हत्या कर दी गई थी। श्री कपूरचंद चौधरी ने विदेशी वस्त्र बहिष्कार आन्दोलन में भाग लिया। 1942 के आन्दोलन में एक आम सभा गाँधी चौक में दि0 14-8-1942 को हुई। डिक्टेटर के रूप में भाषण देते हुए आप गिरफ्तार कर लिये गये और दि0 15-8-1942 को जबलपुर जेल भेज दिये गये, जहाँ आपको नाना साहब गोखले, श्री के0देशमुख, राजेन्द्र प्रसाद मालपाणी, छक्कीलाल गुप्ता, जनरल आवारी जैसे नेताओं के सम्पर्क में रहने का अवसर मिला। सरकारी अभिलेखों के आधार पर आपको दो वर्ष छ: माह के कारावास की सजा भुगतनी पड़ी। श्री चौधरी कपड़े का व्यवसाय करते हैं।

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग 2, पृष्ठ 79, (2)- श्री संतोष सिंघई द्वारा प्रेषित परिचय।

श्री कपूरचंद पाटनी

'जैन जगत' और 'सुधारक' जैसे पत्रों के सम्पादक रहे श्री कपूरचंद पाटनी, पुत्र-श्री पं0 चन्द्रपाल पाटनी का जन्म 30 जनवरी 1901 को जयपुर (राजस्थान) में हुआ। आपने पं0 अर्जुनलाल सेठी के क्रान्तिकारी विद्यालय, वर्धमान जैन विद्यालय जयपुर में शिक्षा प्राप्त की। सेठी जी का विद्यालय जब इन्दौर चला गया तो आपने महाराजा कालेज, जयपुर में शिक्षा प्राप्त की।

1926 में गांधी जी की प्रेरणा से श्री जमना लाल बजाज की देखरेख में पाटनी जी ने खादी का काम संभाला, साथ में हरिजन सेवा का काम भी करते रहे। 1927 में आप चर्खा-संघ में सम्मिलित हो गये। 1933 में आपने इस संघ से त्यागपत्र दे दिया।

पाटनी जी का हिन्दी व अंग्रेजी दोनों भाषाओं पर समान अधिकार था। जहाँ-कहीं पाटनी जी उपस्थित होते वहाँ के प्रस्ताव उनकी कलम से ही लिखे जाते थे। 1931 में अनाज पर कर लगाने के विरोध में जयपुर में जोरदार जन आन्दोलन हुआ। उन्हीं दिनों जयपुर राज्य प्रजामण्डल की स्थापना हुई, दोनों में पाटनी जी की महती भूमिका रही। पाटनी जी प्रजामंडल के आजीवन वफादार सेवक रहे। वे उसके संस्थापक

और प्रथम मंत्री थे। पाटनी जी को पद और प्रसिद्धि की कभी लालसा नहीं रही। वे ठोस काम करने वाले व्यवहारिक राष्ट्रकर्मी थे। पाटनी जी मतभेदों को मिटाकर, विरोधियों को मिलाकर समीप लाने के काम में सिद्धहस्त थे।

पाटनी जी ने जयपुर सत्याग्रह में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया, फलतः गिरफ्तार हुए और छह माह के कठोर कारावास की सजा आपने भोगी। बाद में प्रजामंडल और सरकार के बीच जो समझौता हुआ उसमें पाटनी जी जमनालाल बजाज के विश्वासपात्र साथी थे।

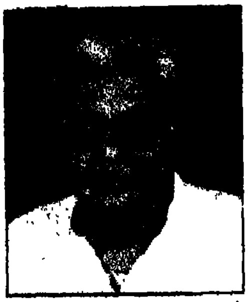
मृदुभाषी एवं व्यवहार कुशल पाटनी जी की संगठन शक्ति अपूर्व थी। वे सही अर्थ में जयपुर की जन-जागृति के सूत्रधार थे। वे पदलिप्सा से सदैव दूर रहे। पं0 हीरालाल शास्त्री ने अपनी आत्मकथा में लिखा है-'पाटनी जी ने स्वयं को सदैव पद से दूर रखा। उन्होंने जयपुर राज्य की लोकप्रिय सरकार में मंत्री पद लेने से भी इंकार कर दिया था।' प्रजामंडल के शास्त्री जी और पाटनी जी प्रमुख संचालक थे। कहा जाता है -'अगर शास्त्री जी हृदय थे तो पाटनी जी उसके मस्तिष्क।'

जैन समाज से भी पाटनी जी घनिष्ठ रूप में जुड़े थे। वे 'आल इण्डिया जैन एसोसिएशन' और 'आल इण्डिया जैन पोलिटिकल कांफ्रेन्स' के प्रान्तीय सचिव थे। 26 सितम्बर 1946 को 45 वर्ष की अल्प आयु में ही देश की आजादी का स्वप्न लिए यह सेनानी सदा-सदा के लिए सो गया। 1950 के लगभग, जयपुर कांग्रेस अधिवेशन के अवसर पर 'कपूरचंद पाटनी द्वार' का निर्माण कर आपका स्मरण किया गया था।

आ0-(1) जैन संस्कृति और राजस्थान, पृष्ठ 342 (2) जै0 स0 रा0 अ0, पृष्ठ-71, (3) जै0 स0 वृ0 इ0, पृ0 203, (4) रा0 स्व0 से0, पृष्ठ 552 (5) राजस्थानी आजादी के दीवाने, पृष्ठ 131-132

श्री कमलचंद जैन

श्री कमलचंद जैन, पुत्र-श्री चम्पालाल जैन का जन्म 4-11-1916 को सनावद, जिला- पश्चिम



निमाड़ (म0प्र0) में हुआ, आपने बी0 ए0, एल0 एल0 बी0 इन्दौर से की। राष्ट्रीय आन्दोलन में भाग लेने के सन्दर्भ में आपने स्वयं लिखा है।

'सन् 40 में कानून की परीक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात् मैं इन्दौर से अपने घर सनावद लौट आया, वकालत प्रारंभ की, साथ ही नगर प्रजामंडल का सदस्य भी बन गया, सन् 41-42 में प्रजामंडल का अध्यक्ष बना और भारत छोड़ो आंदोलन का नगर में नेतृत्व किया। धारा 144 तोड़कर सभा करने के जुर्म में 25 अगस्त 42 को बंदी बनाकर मुझे और मेरे दो साथियों को जिला-जेल मंडलेश्वर भेज दिया गया, वहां 2 अक्टूबर गांधी जयंती के अवसर पर अन्य साथियों के साथ जेल तोड़कर भागने के अपराध में दिनांक 11-10-42 को भा0 द0 वि0 की धारा 147, 224 और 353 के अंतर्गत दो-दो वर्ष की सश्रम सजा हुई और हमें पैरों में डंडा-बेड़ियां डाल दी गईं, जो 6-7 माह बाद ही हटीं। बाद में भारत रक्षा कानून की धारा 38 (1 ए) के अंतर्गत भी एक वर्ष की सजा दी गई, उपरोक्त तीन धाराओं की सजा साथ-साथ चलनी थी, अतः कुल 3 वर्ष की सजा हुई। चूंकि 1 वर्ष से अधिक की सजा वाले मंडलेश्वर जेल में नहीं रखे जाते थे, अतः मुझे अपने कुछ साथियों के साथ दि0 7-11-42 को केन्द्रीय कारागार, इंदौर भेज दिया गया।

इंदौर नरेश और हमारे नेताओं के बीच समझौता हो जाने से दिनांक 29-11-43 को सभी राजनैतिक बंदियों की रिहाई के साथ मैं भी रिहा हो गया। रिहाई

के बाद रचनात्मक कार्यों में भाग लिया। जैन समाज द्वारा संचालित हाईस्कूल को सेठ मायाचंद जी से ढाई लाख का दान दिलाने में सफल हुआ। सनावद में सहकारी नागरिक बैंक की स्थापना कराई और 3 वर्ष उसका अध्यक्ष रहा।' जेल तोड़ने की घटना का विस्तार से वर्णन करते हुए आपने लिखा है-

'जिला जेल मंडलेश्वर में युवा और बुजुर्ग दोनों प्रकार के सत्याग्रही थे। युवाओं के बीच चिंतन चल रहा था कि जेल में रोटियाँ खाने ही नहीं आये हैं, बैठे-बैठे क्या होगा, कुछ करना चाहिए। जेल में सत्याग्रहियों के लिये केवल एक ही कमरा था जो करीब 20 X 30 का होगा। सत्याग्रही आते रहे, जिले से भी और कुछ इन्दौर से भी। रात्रि में कमरे का दरवाजा बंद हो जाता था अतः टट्टी पेशाब के लिए कमरे में ही बनी दो फुट ऊंची दीवाल के पीछे जाना होता था अतएव रात्रि में दुर्गंध के मारे सो सकना मुश्किल हो गया था।रात्रि में शुद्धि के लिए बाहर जाने के लिए जेल अधिकारी से कमरे का दरवाजा खुला रखने के लिए कहा गया। जेल मैनुअल में ऐसी छूट देने की व्यवस्था न होने से अधिकारी ने अपनी असमर्थता जाहिर की, तो सूचना देकर सत्याग्रही दरवाजा खुला रखने लगे, कुछ भाई बाहर भी सोने लगे। जेल अधिकारी ने वस्तुस्थिति से उच्च अधिकारियों को अवगत कराते हुए मार्गदर्शन चाहा। खुले वातावरण में 5-6 दिन ही रहे होंगे कि इन्दौर से इंस्पेक्टर जनरल ऑफ जेल्स का आदेश आया कि 'कानून का सख्ती से पालन किया जाए और किसी भी सत्याग्रही को रात्रि में कमरे से बाहर न जाने दिया जाए'। आदेश के पालन में पुलिस फोर्स आंई और शाम होते ही सत्याग्रहियों को कमरे में बंद करने लगी। सब लोग कमरे में बंद हो गये किन्तु चार व्यक्तियों ने कमरे में बंद होने से मना कर दिया। उन्हें अन्य कमरे में बंद करने के लिए पुलिस ने जो बर्बर व्यवहार किया, उसे देखकर कमरे में बंद सत्याग्रहियों में आक्रोश फैल गया और उन्होंने दरवाजा खिड़की तोड़ने का प्रयत्न किया। एकाध घंटे की जोर आजमाइश के बाद दरवाजा टूट गया और अधिकांश सत्याग्रही बाहर आ गये। पुलिस के जवान मारे डर के गटर में छिप गये। विचार हुआ कि पुलिस की बर्बरता नगरवासियों को दिखाई जाए, अतः सत्याग्रही जत्था प्रमुख दरवाजे की ओर बढ़ा, चौकीदार ने रोकना चाहा, किन्तु 'गांधी जी की जय' के साथ जैसे ही चार पांच व्यक्तियों ने हाथ से धक्का दिया कि प्रमुख दरवाजे का एक ऊपरी भाग धड़ाम से नीचे गिर गया।

सत्याग्रही कस्बे की अनजान गलियों में इधर-उधर भटक न जाएं इसलिए बैजनाथ जी महोदय के नेतृत्व में सत्याग्रही आगे बढ़े। पटवारी वकील के यहां अच्छी रोशनी देखकर गांधी जयन्ती मनाने के लिए सत्याग्रही वहीं रुक गये। घायल चार साथियों की मरहम-पट्टी करवाई। इतने में एक बड़ी पुलिस टुकड़ी लेकर डी0 आई0 जी0 वहां आ गये और हमें घेर लिया, हवाई फायर किया, जिससे गांव की जमा भीड़ भाग गई, बचे सत्याग्रही, उन्होंने पुलिस की घेराबंदी में जेल लौटने से मना कर दिया- 'चाहे जान चली जाय'। गतिरोध को दूर करने के लिए नेताओं और पुलिस अधिकारियों में बातचीत हुई, एक घंटे बाद तय हुआ कि सारी पुलिस लौट जाय। एक भी पुलिस साथ न हो, हम अपने ढंग से वापस जेल लौट जायेंगे। इस प्रकार राष्ट्रीय गीत गाते हुए वापस जेल लौटे, जहां दरवाजे पर पुलिस फोर्स लगी थी। हमारे लौटते ही अधिकारियों ने चैन की सांस ली। जेल में ही मजिस्ट्रेट के सामने मुकदमा चला और 33 साथियों को धारा 147, 224, 353, भा0द0वि0 के अंतर्गत 2-2 वर्ष की साथ-साथ चलने वाली सश्रम सजा हुई।'

आ0-(1) म0प्र0स्व0सै0, भाग-4, पृष्ठ 83, (2) स्व- प्रेषित परिचय/संस्मरण, (3) नवभारत (इन्दौर), 4 सितम्बर, 1997

श्री कमलाकान्त जैन

थांदला, जिला- झाबुआ (म0प्र0) के श्री कमलाकान्त जैन, पुत्र- श्री टेकचन्द जैन का जन्म 1912 में हुआ। माध्यमिक तक शिक्षा प्राप्त श्री जैन 1934 से ही स्वतंत्रता आन्दोलन में सक्रिय हो गये थे। 1942 के आन्दोलन में गिरफ्तारी के पश्चात् आप राज्य से निष्कासित कर दिये गये। शासन ने ताम्रपत्र देकर आपको सम्मानित किया है।

आ0 (1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-4, पृष्ठ 137

श्रीमती कमला जैन

श्रीमती कमला जैन पुत्री-श्री किशोरीलाल जैन मलावली ग्राम, तहसील-लक्ष्मणगढ़ (अलवर) की



रहने वाली थीं। आपके पति का छोटी आयु में ही देहान्त हो गया था। उसके बाद आपने देश की सेवा में कार्य किया। 1946 में अलवर राज्य प्रजामंडल के आन्दोलन 'गैर जिम्मेदार मिनिस्टरो कुर्सी छोड़ो' में आपको भी अन्य महिलाओं के साथ पुलिस ने पकड़कर जंगलों में छोड़ दिया। स्वतंत्र भारत में राजस्थान सरकार ने आपको स्वतंत्रता सेनानी घोषित किया है।

आ0- (1) प0 इ0, पृष्ठ 138

श्रीमती कमला देवी

श्रीमती कमला देवी ने राष्ट्रीय आन्दोलन में जैन नारियों को गौरव और गरिमा के पद पर सुशोभित कराया। आपका जन्म ललितपुर (उ0प्र0) में 1915 के आसपास हुआ। आपके पति पं0 परमेष्ठी दास जी (इनका परिचय इसी पुस्तक में अन्यत्र देखें) सूरत और साबरमती जेलों में बंद रहे थे। तात्कालिक नारी वर्ग को अभिनव दिशा देते हुए राष्ट्रव्यापी 1942 के जन-आन्दोलन में आपने सक्रिय भाग लिया और भारत रक्षा कानून की दफा 56 के अन्तर्गत जेल में 5 माह रहीं। आपने दफा 144 को भंग करके जुलूसों का नेतृत्व भी किया था। सभाबन्दी कानून भंग करके सभा में भाषण देने के कारण आपको साबरमती जेल में रहना पड़ा।

आप प्रगतिशील विचारों की शिक्षित महिला थीं। आपने धर्म-न्याय और साहित्य का खूब अध्ययन किया था और कविता लेखन के क्षेत्र में विशेष सफलता प्राप्त की थी। साहित्यिक प्रतिभा के कारण ही आपको 'राष्ट्रभाषा कोविद्' की उपाधि से अलंकृत किया गया। आप न केवल अच्छा लिखती थीं बल्कि कविता भी बहुत जल्दी बनाती थीं। इनकी रचनायें 'सुधा', 'कमला' आदि साहित्यिक पत्रिकाओं में निकलती रहती थीं। सौम्यता, सरलता के साथ सेवापरायणता आपके विशिष्ट गुण थे। 21 अप्रैल 2000 को ललितपुर (उ0प्र0) में आपका निधन हो गया।

आ0- (1) वि0 अ0, पृष्ठ-227, (2) र0 नी0, पृष्ठ 32 (3) जैन प्रचारक, जून 2000

कविवर कल्याणकुमार 'शशि'

'अत्याचार कलम मत सहना तुझे कसम ईमान की' का आह्वान करने वाले, सरस्वती पुत्र, जिन्हें



कवित्व शक्ति नैसर्गिक देन के रूप में मिली और जिनकी प्रत्युत्पन्न मति ने कवित्व प्रवाह को और वेग से बढ़ाया, ऐसे कविवर श्री शशि जी का जन्म उत्तर प्रदेश के रामपुर नगर में 8 मार्च, 1908 में हुआ। पिता श्री बी0एल0जैन सद्गृहस्थ थे। शशि जी न तो कोई डिग्री या उपाधि प्राप्त विद्यार्थी रहे और न किसी महाविद्यालय या

विश्वविद्यालय में उन्होंने अध्ययन ही किया। 'वैद्यक' की शिक्षा अवश्य ग्रहण की और 1932 में स्वयं की जैन फार्मेसी में चिकित्सा कार्य करके दवाओं का निर्माण और विक्रय करते रहे। उच्च शिक्षा के लिये रामपुर से बाहर इसीलिए न जा सके कि अल्पायु (4 वर्ष) में आपको पिता का वियोग हुआ और एक विषम आर्थिक संकट के संक्रमण काल से आपको गुजरना पड़ा। परन्तु संघर्षों ने आपकी कवित्व शक्ति को स्वर तथा प्राण दिये और 11 वर्ष की अवस्था से आप कवितायें रचने लगे।

शशि जी ने 1926 के आसपास से प्रौढ़ काव्य रचना प्रारंभ की। कविता आपके लिये कल्पना लोक की वस्तु नहीं थी बल्कि इसी धरती से जन्म लेने वाली सौरभमय चेतना थी, काव्य प्रणयन मनोविनोद-हेतु नहीं था, बल्कि राष्ट्र और राष्ट्रीय विकास का हेतु था। उनकी कविता का आदर्श था-

'मैं मानव हूं मानवता को,
मानूंगा महान् वरदान।
आजीवन सम्मुख रखूंगा,
मानव का आर्दश महान्।।'

उन्होंने इस आदर्श का जीवन भर पालन किया। धर्म, जाति और देश की संकीर्णता से उठकर वे जीवन भर यही बात कहते रहे।

उनकी रचना 'हृदय की आग' (रचनाओं का संग्रह) बर्बर अंग्रेजों द्वारा जब्त कर ली गई। यह कवि का प्रथम पुस्तकाकार प्रकाशन था। आगे चलकर 'कलम', 'मेरी आराधना', 'खराद', 'मुर्दा अजायब घर', 'देवगढ़ दर्शन', 'जैन समाज दर्पण', 'कविता कुंज', 'पांखुरिया' (कविता संग्रह), 'अहिक्षेत्र पार्श्वनाथ-शौरीपुर वटेश्वर पूजन' आदि लगभग 22 जैन एवं जैनेतर पुस्तकें समय-समय पर प्रकाशित हुईं। शशि जी की निश्चित मान्यता थी- 'मृत्यु अमरता के पात्रों को नया प्राण देती है।' वे निरन्तर ऐसे पंथ को ही शोधते रहे, जिससे आदमी को अमरत्व मिल जाये। जैनमित्र, प्रदीप, जैन महिलादर्श, आदर्श जैन चरितमाला आदि अनेक पत्रों के संपादन से शशि जी अनेक वर्षों तक जुड़े रहे।

शशि जी ने जिन दिनों यौवन की देहरी पर पांव रखा तो उन्होंने देखा 'देश अंग्रेजों से पराधीन है, हमें स्वतंत्र बोलने-कहने का अधिकार नहीं।' आजादी के लिए पूरे देश में आन्दोलन चल रहा था। हजारों नौनिहालों के साथ शशि जी भी आजादी की लड़ाई में कूद पड़े। अमर शहीद चन्द्रशेखर आजाद से उनकी भेंट हुई, 1930 में एक अंग्रेज एस0 पी0 के ऊपर बम फेंकने के अपराध में शशि जी 1 वर्ष रावलपिंडी व कश्मीर जेल में रहे। जेल में आपको कड़ी यातनायें सहनी पड़ीं।

शशि जी गांधी जी के व्यक्तित्व से सर्वाधिक प्रभावित हुए, यह प्रभाव उनके समग्र जीवन में देखा जा सकता है। सत्य, अहिंसा, न्याय, जीव दया और स्वाभिमान के प्रति शशि जी जीवन भर सजग रहे। कड़वी होने पर भी सच बात कहने में कभी हिचक नहीं दिखाई। शशि जी की रचनायें गांधी जी से प्रभावित थीं। जैसे-

'बड़े-बड़े अरमानों से, यह आजादी आई।
बड़े-बड़े बलिदानों से, यह स्वतंत्रता पाई।।
गांधी जी का स्वप्न भला, साकार कहां हो पाया
अब उसमें भी घाटा है जो पाया कमा कमाया।।'

आपका उद्देश्य शिक्षा का प्रसार रहा। इस उद्देश्य हेतु आपने रामपुर में जैन इंटर कॉलेज की स्थापना में बड़ा हाथ बंटाया तथा जैन लाइब्रेरी की स्थापना करायी। 1940 में रामपुर में हिन्दी के प्रचारार्थ 'हिन्दी साहित्य गोष्ठी' की स्थापना आपने की थी। जीवन पर्यन्त आप पुस्तकालय एवं इंटर कॉलेज के

अध्यक्ष रहे। आप हिन्दी उच्चत्तर माध्यमिक कन्या विद्यालय के ऑनरेरी मैनेजर एवं डिस्ट्रिक्ट जेल रामपुर के विजीटर भी रहे।

समाज को पैनी दृष्टि से देखने वाले शशि जी को भारतीय समाज ने बहुत अधिक सम्मानित किया। शशि जी के 50 से भी अधिक अभिनंदन हुये। 1964 में जैन समाज, रामपुर द्वारा 'आशुकवि' की उपाधि तथा 1968 में राजकीय महाविद्यालय, रामपुर (उ0प्र0) द्वारा अभिनंदन पत्र आपको भेंट किया गया था। उ0 प्र0 के राज्यपाल श्री मा0 चेन्नारेड्डी ने 1975 में आपको सम्मानित किया था। लखनऊ में 'काव्यश्री' (1985) की उपाधि से भी आप अलंकृत हुए थे। कविवर शशि जी रामपुर और बाहर की बीसियों संस्थाओं से सम्बद्ध रहे हैं। उनकी सेवाओं को समाज कभी भुला नहीं सकेगा।

शशि जी आशु कवि के रूप में भारत भर में विख्यात रहे हैं, साहित्यिक उपलब्धियों से संपन्न होते हुए भी वे विज्ञापन और प्रशंसा से सदैव दूर रहे फिर भी कस्तूरी की सुगंध की भांति उनकी ख्याति सर्वत्र फैल गयी।

डॉ0 नंद किशोर त्रिपाठी ने रुहेलखंड विश्वविद्यालय, बरेली से 'शशि व्यक्तित्व और कृतित्व' विषय पर 1988 में शोध कार्य किया। आनन्द साहित्य संस्थान रामपुर ने - 'शशि और उनका काव्य' नाम से शशि जी के समग्र साहित्यिक जीवन पर एक पुस्तक प्रकाशित की है।

शशि जी कुशल मौन साधक थे उन्हीं के शब्दों में 'शायद उनकी मूक साधना का कोई कभी मूल्यांकन करे'-

यह कोरा कागद है।
मैं तो भूलों का चिरदास हूं
अपने उत्तरदायित्वों से
अब लेता अवकाश हूं
शायद कोई आंके क्षमता
मेरी मूक उड़ान की।
अत्याचार कलम मत सहना
तुझे कसम ईमान की।

परम यशस्वी शशि जी का एक स्कूटर दुर्घटना में 9 सितम्बर 1988 को आल इंडिया मेडिकल इन्स्टीट्यूट, दिल्ली में निधन हो गया। उनके निधन से जैन समाज और हिन्दी साहित्याकाश ने एक नक्षत्र खो दिया।

आ0-(1) वि0 अ0, पृष्ठ 211, (2) जैन सन्देश 6/10/1988, (3) आधुनिक जैन कवि, (4) जै0 स0 रा0 अ0

श्री कल्याणदास जैन

सतना (म0प्र0) के श्री कल्याणदास जैन का जन्म 1904 में हुआ, आपके पिता श्री लखपतराय जैन थे। श्री जैन ने माध्यमिक तक शिक्षा प्राप्त की। स्वतंत्रता आंदोलन के आप वीर सिपाही रहे। 1930 के आंदोलन में आप सक्रिय रहे। देश प्रेम की भावना से ओत-प्रोत श्री जैन ने 2 वर्ष का कारावास व 100 रु0 के अर्थदण्ड की सजा भोगी।

आ0- (1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-5, पृष्ठ 257

श्री कल्याणमल जैन

दौसा (राजस्थान) के श्री कल्याणमल जैन का जन्म दिनांक 20 जून 1915 को टोंक में हुआ था। आपके पिता श्री सुन्दरलाल जैन साधारण परिवार से संबंधित थे। जब आपने अपनी प्रारंभिक शिक्षा जयपुर में ग्रहण की तब सारा देश गुलामी की जंजीरों में जकड़ा हुआ था और आपकी उम्र मात्र 16 वर्ष की थी उस समय श्री जैन देशभक्ति से ओतप्रोत होकर अंग्रेजों के खिलाफ बगावत के पम्पलेट दुकानों पर वितरित करते थे।

भारत माता के इस सपूत ने 18 मार्च 1939 में श्री लालचन्द जी के नेतृत्व में चांदपोल बाजार में

तिरंगा झण्डा निकाला तो सरकार ने इन्हें गिरफ्तार करके जेल में ठूंस दिया तथा चाकसू के पास गढ़ में बन्द कर दिया। यहां पर पूर्व में ही श्री रामकरण जोशी एवं अन्य तीन सौ व्यक्ति बन्द थे। करीब 4 माह की जेल भुगतकर जब बाहर आए तो श्री जमनालाल जी बजाज के नेतृत्व में संगठित होकर स्वतंत्रता संग्राम के पुनीत कार्य में लग गये।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् आप जलदाय विभाग में हैल्पर की नौकरी करके जीवन यापन करते रहे तथा जब सरकार ने आपको स्वतंत्रता सेनानी घोषित किया तब उससे प्राप्त पेंशन से अपने परिवार का जीवन यापन करते रहे। दिनांक 20 फरवरी 1994 को स्वतंत्रता संग्राम का यह सेनानी एवं दौसा का गर्व हमेशा के लिए हम सबको छोड़कर चला गया।

आ0- (1) जैन गजट, 17/3/1994, (2) श्री संतोष सिंघई, दमोह द्वारा प्रेषित परिचय

श्री कस्तूरचंद जैन

आजादी के दीवानों को कैसे-कैसे कष्ट झेलने पड़े और आज भी झेल रहे हैं, इसके प्रत्यक्ष



उदाहरण हैं श्री कस्तूरचंद जैन, जो पूज्य आचार्यश्री विद्यासागर जी महाराज के डिण्डोरी (मण्डला) प्रवास के समय, कई किलोमीटर चार पहिये के ढेले पर बैठकर उनके दर्शनार्थ आये। श्री जैन एक छोटे से ग्राम- गोरखपुर (डिण्डोरी) में अकेले रहते हैं। अधिक उम्र होने से शरीर शिथिल पड़ गया है, आखों से दिखाई नहीं देता। एक दुर्घटना के कारण चलने-फिरने में असमर्थ हैं फिर भी शासन से कोई सहायता उन्हें नहीं मिल रही है।

श्री जैन का जन्म 1912 के चैत्र महीने में हुआ, पिता का नाम श्री कन्हैया लाल जैन था। आपने बताया कि श्री गंधू गौड़ तथा गिरधारी लाल सोनी की प्रेरणा से 1929-30 में आप स्वाधीनता आन्दोलन में कूद पड़े। 1942 में डिण्डोरी से गोरखपुर रोड़ पर 5वें मील पर धावाधार एवं कुकुरामठ के आसपास आप गिरफ्तार कर लिये गये। कुकुरामठ में आपने भाषणबाजी और कांग्रेस का प्रचार किया था। तिरंगा झंडा आपके हाथ में था। और लोग भी गिरफ्तार हुए थे, जिनमें एक कोल आदिवासी भी था। आप तीन दिन डिण्डोरी जेल में रहे। आपने तितराही, पाटन, वल्लापुर आदि ग्रामों में स्वतंत्रता का प्रचार किया था। लगान न देने का प्रचार करने के कारण भी आप अनेक बार गिरफ्तार होते-होते बचे थे।

आ0-(1) स्व0 प0, (2) अनेक सम्मान पत्र।

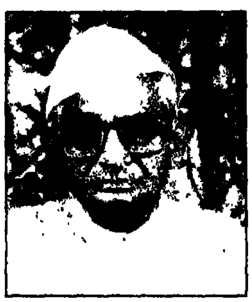
श्री कस्तूरचंद जैन

श्री कस्तूरचंद जैन के पिता का नाम श्री पूर्णचंद जैन था। आपका जन्म सागर (म0प्र0) में हुआ। 1932 के नमक सत्याग्रह में आप अहमदाबाद में गिरफ्तार हुए थे। सागर के स्वतंत्रता सेनानियों की सूची में आपका नाम दर्ज है। आपके अनुज श्री पदम कुमार जैन सराफ (सागर) सक्रिय सेनानी रहे हैं उनका विस्तृत परिचय इसी ग्रन्थ में है।

आ0- (1) आ0 दी0, पृ0 11, (2) श्री पदम कुमार जैन द्वारा प्रेषित परिचय

श्री कामताप्रसाद शास्त्री

दमोह (म0प्र0) के श्री कामताप्रसाद शास्त्री, पुत्र-श्री मूलचंद जैन का जन्म 1-1-1915 ई0 को



हुआ। मिडिल पास कर आपने कटनी के प्रसिद्ध जैन विद्यालय में अध्ययन किया, अनन्तर बनारस के जैन क्रान्तिकारियों के गढ़ स्याद्वाद महाविद्यालय में अध्ययनार्थ चले गये और वहाँ से शास्त्री

पास कर लौटे। 1940 में आपने श्री गणेश वर्णी संस्कृत महाविद्यालय मोराजी, सागर में नौकरी कर ली। किन्तु 42 के आन्दोलन में भाग लेने हेतु आपने नौकरी भी छोड़ दी।

शास्त्री जी प्रारम्भ से ही राष्ट्रीय विचारधारा के रहे हैं। 1926 में सम्भवत: पूरे विश्व में दमोह ऐसा शहर था, जहाँ शराब-बंदी हुई थी। शास्त्री जी ने इस आन्दोलन में पिकेटिंग कर शराब की दुकानें बन्द करवाई थीं। नमक सत्याग्रह व जंगल सत्याग्रह में आपने कटनी में रहते हुए भाग लिया, पुलिस द्वारा पकड़े गये पर छोड़ दिये गये। 32-33 में आप स्याद्वाद महाविद्यालय बनारस चले गये, वहीं आपने प्रसिद्ध क्रान्तिकारी श्री मन्मथनाथ गुप्त के सहयोग से क्रान्तिकारी पार्टी में पिस्तौल चलाना, बम फेंकना, तैरना, पेड़ पर चढ़ना आदि कार्यों का अभ्यास किया। आप कुछ समय दिल्ली भी रहे, वहां आपने पर्चे बांटने का काम किया। देश के बड़े नेताओं के दर्शन आपने यहीं किये।

पिण्डरई (जिला-मण्डला) में जंगल कटवाने और जैसीनगर में कोतवाली जलाने के प्रयास में 4-9-42 को आप गिरफ्तार कर सागर जेल भेज दिये गये, जहाँ नौ माह की सजा दी गई। अन्य साथियों के साथ आपने सागर जेल के फांसी घर को तोड़ दिया, दीवारों पर तिरंगे बना दिये, बगीचा उजाड़ दिया, अत: आपको जबलपुर जेल स्थानान्तरित कर दिया गया। जेल से आने के बाद भी आप सभी आन्दोलनों में भाग लेते रहे व कांग्रेस के सक्रिय सदस्य रहे। सम्प्रति शास्त्री जी धार्मिक ग्रन्थों के अध्ययन में संलग्न हैं।

आ0 (1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-2, पृष्ठ-80, (2) श्री संतोष सिंघई, दमोह द्वारा प्रेषित परिचय, (3) स्व0 प0

श्री कालूराम जैन

रहली, जिला-सागर (म0प्र0) निवासी श्री कालूराम जैन, पुत्र-श्री टुण्ड ने 1932 के आन्दोलन में 4 माह का कारावास भोगा था। 1972 में आपका निधन हो गया।

आ0- (1) आ0 दी0, पृष्ठ-33, (2) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-2, पृष्ठ 12

सिंघई कालूराम जैन

सिंघई कालूराम जैन, पुत्र-श्री दरबारीलाल जैन का जन्म 1897 में पाटन, जिला-जबलपुर (म0 प्र0) में हुआ। पाटन में आपने 1930 से 1934 तक सविनय अवज्ञा आन्दोलन के कार्यक्रमों एवं राष्ट्रीय महासभा के प्रसार में योग दिया। आपके शांत एवं अहिंसावादी सिद्धान्त के सम्बन्ध में पं0 कामताप्रसाद बबेले ने कहा था कि 'जब विलायती वस्त्रों की दुकान पर स्वयंसेवक धरना दे रहे थे और कतिपय देशघातक उनके शरीरों पर चरण रखते हुए आगे बढ़े, तब देशभक्तों के क्रोध का पार नहीं था, वे हिंसात्मक प्रतिशोध पर उतर आये थे। किन्तु सिंघई कालूराम जी के सामयिक हस्तक्षेप तथा उनके द्वारा गांधी जी की शांत नीति का स्मरण दिलाने पर सभी शांत हुए।'

1935 में आप कटनी चले गये और वहां की राष्ट्रीय गतिविधियों में सतत भाग लेते रहे। 1940 में व्यक्तिगत सत्याग्रह में भाग लिया। इसके अन्तर्गत आपने 13 जनवरी 1941 को सत्याग्रह-यात्रा पर दिल्ली के लिये प्रस्थान किया। मार्ग-स्थित ग्रामों में युद्ध-विरोध ी सन्देश एवं स्वतंत्रता संग्राम की हुंकार गुंजाते हुए-स्लीमनाबाद, सिहोरा, मझौली, संग्रामपुर, दमोह, बांसा होते हुए 10 फरवरी 1941 को रौंड ग्राम पहुंचे। वहीं आप पुलिस द्वारा गिरफ्तार कर सागर ले जाये गये, जहां आपको छह मास का कारावास एवं 100 रुपये का अर्थ दण्ड हुआ। आपने नागपुर कारागार में उक्त छह मास का कारावास काटा। द्वितीय बार आप 1942 की जनक्रांति के दौरान गिरफ्तार किये गये और केन्द्रीय कारागार में दि0 12-8-1942 से जनवरी 1944 तक बन्दी रहे। 'जैन सन्देश' लिखता है कि- 'सिंघई जी

के गिरफ्तार होने पर कटनी शहर में नौ दिन की गजब की हड़ताल हुई थी।' 1945 में आप पाटन आ गये और तहसील कांग्रेस के अध्यक्ष हुये। आपकी मृत्यु 51 वर्ष की आयु में एक आकस्मिक रोग से दि0 29 फरवरी 1948 को हो गयी।

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-1, पृष्ठ-116, (2) स्वा0 स0 प0, पृ0-115, (3) जै0 स0 रा0 अ0।

बाबू किशनलाल जैन

प्रसिद्ध जैन क्रान्तिकारी श्री बाबू किशनलाल जैन, पुत्र-श्री रघुनाथ, हार्डी बम काण्ड के अभियुक्त रहे हैं। जिला-आगरा (उ0 प्र0) निवासी श्री जैन 1930 के आन्दोलन में जेल गये। 1940 के आन्दोलन में नजरबंद रहे। 1942 के आन्दोलन में आपने 2 वर्ष की जेल काटी। आपका नाम क्रान्तिकारियों की सूची में था, अत: 1942 के आन्दोलन में 9 अगस्त से पहले ही आपको गिरफ्तार कर लिया गया था। 1943 में क्रान्तिकारी होने के कारण फतेहगढ़ जेल भेजा गया था।

आ0- (1) प0 इ0, पृष्ठ-141, (2) गो0 अ0 ग्र0, पृष्ठ 219-220, (3) जै0 स0 रा0 अ0, (4) उ0 प्र0 जै0 ध0, पृष्ठ 90, (5) श्री महावीर प्रसाद जैन, अलवर द्वारा प्रेषित परिचय।

श्री किशनलाल शाह

1952 से 62 तक कांग्रेस और 1967 से 72 तक स्वतंत्र पार्टी के टिकट पर राजस्थान विधान सभा के सदस्य तथा नागौर जिला कांग्रेस कमेटी के वर्षों तक अध्यक्ष/मंत्री रहे ग्राम-नावाँ (कुचामन रोड़), जिला-नागौर (राजस्थान) के श्री किशनलाल शाह ने कानपुर में अपने विद्यार्थी जीवन से ही राष्ट्रीय आन्दोलनों में भाग लिया था और सजायें भोगी थीं। एल0 एल0 बी0 करने के बाद आप मारवाड़ लोकपरिषद् के सक्रिय सदस्य हो गये और बाद में महामंत्री भी रहे। सामन्तशाही एवं जागीरदारी प्रथा को समाप्त करने के लिए आपने किसान आन्दोलनों का संगठन किया और जिले में जागीरदारों का मुकाबला किया। 14 मार्च 1947 को डाबड़ा हत्याकाण्ड में सामन्ती तत्त्वों द्वारा आप बुरी तरह घायल कर दिये गये। विधि की विडम्बना देखिये कि शासन ने आपको ही अभियुक्त बनाकर, खून और कत्ल के अभियोग में गिरफ्तार कर मुकदमा चलाया था।

आ0 (1) रा0 स्व0 से0, पृ0 712

सिंघई कुन्जीलाल जैन

शाहगढ़, जिला-सागर (म0प्र0) के श्री सिंघई कुन्जी लाल जैन 1918 से कांग्रेस के कार्यों में सदैव भाग लेते रहे और पांच साल तक कांग्रेस कमेटी के सभापति रहे। आप 1930 में एक साल के लिये जेल यात्री रहे व 1932 में भी जेल गये, जिसमें छह मास का कारावास व 200 रुपये जुर्माना हुआ था।

आ0-(1) जै0 स0 रा0 अ0, पृष्ठ 53

श्री कुन्दनलाल जैन

दमोह (म0प्र0) के श्री कुन्दनलाल जैन, पुत्र-श्री सिंघई छोटेलाल 1930 से ही स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय हो गये थे। 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में आपने जबलपुर में भाग लिया, परिणामत: जबलपुर जिले से निष्कासित किये गये। आपने 1 वर्ष 7 माह का कारावास भोगा। 65 वर्ष की आयु में आपका स्वर्गवास हो गया।

आ0- (1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-2, पृष्ठ-80

श्री कुन्दनलाल जैन नायक

देवरी, जिला-सागर (म0प्र0) निवासी श्री कुन्दन लाल जैन, पुत्र-श्री मिट्ठूलाल जैन का जन्म 1914 में हुआ। 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में आपने 13 माह का कारावास सागर जेल में भोगा। आप सच्चे गांधीवादी और खद्दरधारी थे, विनोबाजी के भूदान आंदोलन में आपने 2 एकड़ जमीन दान में दी

थी। आप जीवनपर्यन्त सर्वोदय से जुड़े रहे। 1969 में आपका निधन हो गया।

आ०- (1) आ० दी०, पृष्ठ-34, (2) म० प्र० स्वा० सै०, भाग-2, पृष्ठ 14

श्री कुन्दनलाल मलैया

कर्मठ कार्यकर्ता श्री मलैया जी उन सपूतों में अग्रणी थे, जिन्होंने देश को आजाद कराने में अपना तन-मन-धन होम कर दिया। आपका जन्म स्थान सादूमल (जिला-ललितपुर) उ0प्र0 है। आपके पिता का नाम श्री मोहन लाल मलैया था। 1941 में 6 माह की सजा और 100/- का अर्थदंड आपने भोगा। 1942 में भी एक वर्ष की सजा और 100/- का अर्थदंड पाया, इस प्रकार आप दो बार कारावास में रहे। गांधीवादी विचारधारा के प्रतीक इस स्वतंत्रता संग्राम सेनानी ने इस प्रकार शारीरिक यातनाओं के साथ-साथ आर्थिक क्षति भी स्वीकार की थी।

आ०-(1) जै० स० रा० अ०, (2) र० नी०, पृ०-85

श्री कुन्दनलाल समैया (जैन)

जबलपुर नगर कांग्रेस कमेटी के मंत्री व कोषाध्यक्ष रहे श्री कुन्दनलाल समैया (जैन), पुत्र-श्री खूबचन्द जैन का जन्म 1919 में बीना (सागर) म0 प्र0 में हुआ। सत्याग्रह आन्दोलनों को गतिमान् बनाने के लिए छोटे बालकों की वानर सेना के साथ आप 1930 से ही सक्रिय हो गये थे। 1932 में सत्याग्रह करते हुए गिरफ्तार किये गये व 3 माह जेल में रहे। 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में गाडरवारा में गिरफ्तार किये गये तथा लगभग डेढ वर्ष तक जेल में रहे। नेशनल स्काउट्स के सदस्य के रूप में उसके राष्ट्रीय कार्यों में सहयोगी रहे। 1939 में हुई त्रिपुरी कांग्रेस में निष्ठापूर्वक स्वयंसेवक का कार्य आपने किया था।

आ० (1) म० प्र० स्वा० सै०, भाग-1, पृष्ठ-35, (2) स्वा० स० ज०, पृ०-89

श्री कुसुमकान्त जैन

भारतीय संविधान निर्मातृ परिषद्, भारतीय परिषद् एवं मध्यभारत विधान सभा में सदस्य रहे श्री कुसुमकान्त जैन का जन्म 23 जुलाई 1921 ई0 को थांदला, जिला-झाबुआ (म0प्र0) में हुआ। आपके पिता का नाम श्री पूरनचंद जैन था।



श्री जैन की प्रारम्भिक शिक्षा धर्मदास जैन विद्यालय में हुई। यहां प्रधान अध्यापक श्री बालेश्वर दयाल थे, जो परम राष्ट्रभक्त थे, और जिन्होंने आदिवासियों के उत्थान में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है, उन्होंने बालक कुसुमकान्त के कोमल मन में राष्ट्र-प्रेम का बीजारोपण किया जो कालान्तर में एक लहलहाते पौधे के रूप में परिवर्तित हो गया। यही कारण था कि जब 1936 में ब्रिटिश सम्राट् की रजत जयन्ती स्कूल में धूमधाम से मनाने का आदेश लेकर अंग्रेज पोलिटिकल ऐजेन्ट थान्दला पहुंचा तो श्री जैन ने साहस से आगे बढ़कर उसका प्रबल विरोध किया व रजत जयन्ती का बहिष्कार करने हेतु विद्यार्थियों को संगठित किया, परिणामस्वरूप आपको थांदला छोड़ना पड़ा। कोप का शिकार आपका परिवार ही नहीं बना बल्कि विद्यालय को भी ब्रिटिश सीमा के बाहर जाना पड़ा। आपका अध्ययन अस्त-व्यस्त हो गया। इन्हीं मुसीबतों के बीच श्री जैन ने 'हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग' की विशारद परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की।

देशप्रेम की लौ दिल में दिन-प्रतिदिन बढ़ती गई। आपने कुछ दिन विदर्भ केसरी श्री ब्रिजलाल वियाणी के राष्ट्रीय साप्ताहिक 'नव राजस्थान' में भी कार्य किया तथा फौजपुर (महाराष्ट्र) में आयोजित अ0 भा0 राष्ट्रीय कांग्रेस के खुले अधिवेशन में भाग लिया। खादी पहनने का व्रत तो पूर्व में ही ले चुके थे, जिसे आज तक निभा रहे हैं।

आप जब 'साहित्यरत्न' का अध्ययन करने इन्दौर पहुंचे तो वहां मजदूर संघ के माध्यम से ट्रेड यूनियन का कार्य प्रारम्भ किया। प्रजामण्डल नेताओं से भी सम्पर्क हुआ। होल्कर राज्य में उन दिनों सभाबंदी का आदेश जारी था। इसके विरोध में श्री हजारीलाल जड़िया ने आमरण अनशन प्रारम्भ किया, उनके आन्दोलन को गति देने हेतु श्री जैन ने शहर सीमा के बाहर दशहरा मैदान पर आयोजित सभाओं में हिस्सेदारी की, फलत: आपको राज्य सीमा से निर्वासित कर दिया गया। आप इन्दौर से उज्जैन तथा वहां से अजमेर पहुंचे। वहाँ श्री जयनारायण व्यास, माणिक्यलाल वर्मा आदि क्रान्तिकारी नेताओं के सम्पर्क में आए। उनके निर्देशानुसार राजपूताना तथा पड़ोसी मालवा के छोटे राज्यों में आपने कांग्रेस व प्रजामण्डलों का प्रचार-कार्य किया। शौकत उस्मानी तथा प्रसिद्ध क्रान्तिकारी एम0 एन0 राय के सम्पर्क में भी आप आए।

1939-40 में आप गृहनगर उज्जैन लौट आए और मजदूर संगठन की गतिविधियां प्रारम्भ कीं। पुलिस तलाशी में श्री जैन के घर से कम्युनिस्ट साहित्य बरामद हुआ, अत: शान्ति भंग तथा युद्ध प्रयासों में बाधा डालने के अपराध में उन्हें छ: माह की सजा मिली और जेल में बंद कर दिया गया। जेल से छूटने पर आप दोहद पहुंचे और इसी स्थान को अपना कार्यक्षेत्र चुना।

दैनिक भास्कर, इन्दौर, 15 अगस्त 1997 को दिये एक साक्षात्कार में आपने कहा है- 'आजादी आंदोलन में मेरी भी दिली इच्छा थी कि बापू मुझे व्यक्तिगत सत्याग्रह की अनुमति दें। इंदौर, झाबुआ आदि देशी रियासत होने के कारण मैं पंचमहाल (गुजरात) में सक्रिय था। वहां के कांग्रेस जिला अध्यक्ष माणकलाल गांधी ने स्पष्ट इंकार कर दिया कि तुम सत्याग्रह नहीं कर सकते। मैं वर्धा में आचार्य नरेन्द्र देव की मदद से गांधीजी से मिला। तब वे म0 भा0 देशी राज्य लोक परिषद के अध्यक्ष थे। बापू ने मुझे व्यक्तिगत सत्याग्रह की अनुमति तो नहीं दी लेकिन पंचमहाल में सत्याग्रहियों की सभा की आवश्यक तैयारियां करने के लिए वालिंटियर घोषित कर दिया। सभा से पूर्व मैं स्थल पर झाडू लगाता, दरी बिछवाता, मंच एवं माइक व्यवस्था देखता। लोग मुझे देखने आते कि बापू ने किसे वालिंटियर नियुक्तकिया।

इंदौर, झाबुआ, देवास, रतलाम आदि रियासतों में मेरा प्रवेश भी प्रतिबंधित था, इसलिए मैं ट्रेन से इन शहरों के स्टेशन पर पहुंचता। स्थानीय साथी आकर मिल लेते, प्रचार सामग्री उनके सुपुर्द कर अगले स्टेशन के लिए रवाना हो जाता। बीमा एजेंट रहते हुए मैं कोट-पैंट पहने रहता, इसलिए किसी को मुझ पर शक भी नहीं होता। जिसे अंग्रेज हुकूमत आपत्तिजनक सामग्री मानती थी, उस सारे प्रचार साहित्य का बंडल भी मैं ट्रेन के दूसरे डिब्बे में छोड़ देता था, जिससे यदि मुझे पकड़ भी लिया जाए तो पुलिस मेरे पास से कोई आपत्तिजनक सामग्री बरामद नहीं कर पाए। सितंबर 1940 से जनवरी 41 तक इसी तरह कार्य किया।

गुजराती समझ और बोल लेता था, इसलिए 1942 में मुंबई से प्रकाशित 'वंदेमातरम्' (गुजराती) समाचार-पत्र में 250 रु0 महीने की नौकरी मिल गई। 9 अगस्त 42 को बापू ने भारत छोड़ो, करो-मरो का आह्वान किया। गांधीजी की गिरफ्तारी के बाद सभी सत्याग्रही भूमिगत हो गए। मुझे बम ले जाने, आगजनी करने के निर्देश मिले। मैंने स्पष्ट इंकार कर दिया कि जैनी हूं, ऐसा काम नहीं करूंगा। अन्ना सा सहस्त्रबुद्धे, बै0 पुरुषोत्तम त्रिकमदास, बै0 गूजर, सेठ शूरजी बल्लभदास ये चारों प्रचार सामग्री तैयार करते, उसे विभिन्न क्षेत्रों में मैं उक्त तरीके से पहुंचाता रहा। 21 वर्ष की उम्र थी, तब मैंने तय किया कि अब गिरफ्तारी दूंगा। गोधरा कलेक्टर मुझे पत्रकार होने के

कारण पहचानते थे। मुझे मेरी मर्जी से साबरमती जेल भेजकर 'ए' श्रेणी में रखा। जिन 18 'ए' श्रेणी कैदियों के साथ रहा, उनमें पुरुषोत्तम गणेश मावलंकर भी थे। तब अच्युत पटवर्धन, डॉ केसकर, मोहनलाल गौतम, अरुणा आसफ अली पर लाखों के इनाम थे। इन सबसे मेरा परिचय हुआ। डॉ0 केसकर ने इच्छा जाहिर की कि पं नेहरू से मुलाकात की व्यवस्था कराइए। उन्होंने वेशभूषा बदली, अब वे प्रो0 मेहता हो गए। मुंबई से उन्हें लेकर मैं उदयपुर पहुंचा, डी0एफ0ओ0 मुरड़िया के बंगले में प्रो0 मेहता के रूप में ठहराया। डॉ0 केसकर की लिखी चिट्ठी लेकर मैं उदयपुर में सभा मंच पर पहुंचा, जैसे-तैसे मोहनलाल सुखाड़िया ने नेहरू तक डॉ0 केसकर की चिट्ठी पहुंचाई, वे तुरंत नीचे आए। योजना मुताबिक मैं लक्ष्मीविलास गेस्ट हाउस पर किराए की कार लेकर पहुंचा। नेहरू आए, बैठे। मुरड़िया दंग रह गए अपने यहाँ नेहरू को देखकर। नेहरू-केसकर मुलाकात चालीस मिनट चली, मैं फिर उसी तरह नेहरू को छोड़ आया।'

अगस्त क्रान्ति के दौरान श्री जैन भूमिगत हो गए और भेष बदलकर प्रचार सामग्री पहुंचाते रहे, बाद में गिरफ्तार होना उचित समझा। अत: जैसे ही आप मार्च 43 में दोहद रेलवे स्टेशन पर प्रगट हुए, भारत रक्षा नियम के अन्तर्गत नजरबंद कर साबरमती जेल भेज दिया गया, वहां दादा साहब मावलंकर आदि नेताओं से उनका संपर्क हुआ। तीन माह के बाद जैसे ही जेल से रिहाई हुई, बम्बई शासन द्वारा उनको पंचमहाल जिले में प्रवेश न करने की आज्ञा थमा दी गई।

15 अगस्त 1947 को भारत आजाद हुआ तो एक माह बाद ही श्री जैन झाबुआ लौट आए। यहां आकर उन्होंने उत्तरदायी शासन की प्राप्ति का आन्दोलन छेड़ दिया और अल्पकाल में ही जनता एवं आदिवासियों में ऐसी आग फूंकी कि उनके मन में अपने अधिकारों के प्रति जाग्रति पैदा हो गई। जन आक्रोश के समक्ष झाबुआ नरेश ने घुटने टेक दिए। लोकप्रिय मंत्रिमंडल की घोषणा करने को उन्हें बाध्य होना पड़ा। 18-1-1948 को मंत्रियों ने शपथ ग्रहण की, कुसुमकान्त जैन भी उनमें एक थे। श्री जैन उस समय भारत में सबसे कम उम्र के केबिनेट मंत्री थे।

मई 1948 में मध्य भारत राज्य का गठन हुआ, जिसमें इन्दौर, ग्वालियर के अतिरिक्त मालवा के छोटे-बड़े 20 रजवाड़ों का विलीनीकरण किया गया। लीलाधर जोशी मध्य भारत के प्रथम प्रधानमंत्री चुने गए। श्री जोशी ने कुसुमकांत जैन को अपने मंत्रिमंडल में केबिनेट मंत्री नियुक्त किया।

श्री कालूराम जी विरुल द्वारा संविधान सभा से इस्तीफा दिये जाने पर छोटी रियासतें जैसे झाबुआ, बडवानी, धार, रतलाम आदि ग्रुप के प्रतिनिधि-रूप में श्री कुसुमकान्त जैन का निर्वाचन भारतीय संविधान निर्मातृ परिषद् के लिए हुआ। उन्होंने भारतीय संविधान पर हस्ताक्षर किये तथा 26 जनवरी 1950 तक इस महान् संविधान निर्मातृ संस्था के सदस्य रहकर पुन: अपने प्रदेश में लौट आये। श्री जैन संविधान निर्मातृ परिषद् के सदस्य के अलावा भारतीय संसद (प्राविजनल) के भी सदस्य रहे और उनकी मध्य भारत विधानसभा की सदस्यता भी यथावत् रही।

यह समय श्री जैन के चरम राजनैतिक उत्कर्ष का समय था। बाबू राजेन्द्र प्रसाद, पंडित नेहरू, सरदार पटेल आदि महान् नेताओं के साथ भारतीय संविधान पर अपने हस्ताक्षर कर श्री जैन इतिहास में अमर हो गये। मिनिस्टर, सांसद व विधायक तो हजारों हुए और प्रजातंत्र में होते रहेंगे लेकिन देश का प्रथम संविधान बनाने का गौरव जिन व्यक्तियों को प्राप्त हुआ, उन महान् संविधान निर्माताओं की विशिष्ट पंक्ति में स्थापित होने का महान् गौरव थांदला के इस युवक स्वतंत्रता सेनानी को सिर्फ 28 वर्ष की अल्प आयु में मिला, यह श्री जैन के जीवन की महान्

ऐतिहासिक घटना है, जिसे युग-युग तक वर्तमान व आने वाली पीढ़ियां याद करती रहेंगीं और प्रेरणा लेंगीं।

1948 से 51तक आप विधानसभा के सदस्य रहे। राज्य की यातायात नीति बनाने वाली महत्त्वपूर्ण शासकीय समिति के सदस्य, पब्लिक एकाउण्ट्स कमेटी के वर्षों तक चेयरमैन, रीजनल ट्रांसपोर्ट अथॉरिटी के सदस्य एवं पश्चिमी रेलवे सलाहकार समिति के सदस्य के नाते अपनी बहुमुखी सेवाएं प्रदेश को देते रहे। आप प्रदेश कांग्रेस समिति के भी सदस्य रहे। आप रतलाम जिले के आलोट क्षेत्र से 1952के आम चुनाव में पुन: भारी बहुमत से विधायक चुने गये थे।

विधानसभा की ओर से श्री जैन स्पीकर के साथ संसदीय कार्य प्रणाली के अध्ययन हेतु लंदन भेजे गए जहां 7 सप्ताह तक ब्रिटिश संसद प्रणाली का अध्ययन किया। इंग्लैण्ड, आयरलैण्ड एवं अन्य यूरोपियन व पश्चिमी एशिया के देशों की यात्रायें आपने कीं। लंदन निवास के दौरान बी0बी0सी0 के निमंत्रण पर श्री जैन ने एक ब्राडकास्ट कर अपने अनुभव सुनाये थे।

नवम्बर 1956 में विशाल मध्य प्रदेश बना। श्री जैन मध्य प्रदेश विधान सभा के सदस्य हुए और अप्रैल 1957 तक विधानसभा में बने रहे। 1957 में अखिल भारतीय कांग्रेस का खुला अधिवेशन इंदौर में हुआ, जिसके आयोजन में पूर्ण सहयोग श्री जैन का था।

आपके सम्मान में अनेक समारोह हुए, अनेक धार्मिक संस्थाओं से भी आप सम्बद्ध रहे हैं। 11 मार्च 1989 को राष्ट्रपति भवन में तत्कालीन राष्ट्रपति महामहिम श्री आर0वेंकटरमन ने पुष्प-माला और शाल ओढ़ाकर आपको सम्मानित किया। इस अवसर पर आपके व्यक्तित्व और कृतित्व पर एक सचित्र स्मारिका का विमोचन भी राष्ट्रपति जी ने किया था। स्मारिका का प्रकाशन 'श्री कुसुमकान्त जैन अभिनन्दन समिति', दिल्ली ने किया है। 1992 में आपके नाम पर एक लोकोपकारी ट्रस्ट की स्थापना की गई है। 1992 में ही देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर की एम0फिल0 उपाधि हेतु कु0 ऋचा गर्ग ने एक लघुशोध प्रबन्ध 'स्वतंत्रता सेनानी श्री कुसुमकांत जैन' श्री जे0सी0 उपाध्याय के निर्देशन में प्रस्तुत कर उपाधि प्राप्त की है। आजादी की स्वर्ण जयन्ती पर आयोजित अनेक विशिष्ट समारोहों में आपको सम्मानित किया गया है।

आ0- (1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-4, पृष्ठ 14, (2) श्री कुसुमकांत जैन अभिनन्दन स्मारिका, (3) दैनिक भास्कर (भोपाल) 24/3/89, (4) अनेक प्रमाणपत्र/ सम्मान पत्र आदि, (5) जनसत्ता (दिल्ली) 10/01/1997, (6) दैनिक भास्कर (इन्दौर) 15/8/1997

श्री केवलचंद जैन

पिण्डरई, जिला-मण्डला (म0प्र0) के श्री केवलचंद जैन, पुत्र-सेठ मुलायमचंद जैन का नाम तत्कालीन रईसों में गिना जाता था, पर अपने काम की परवाह न कर केवलचंद जी ने 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में खुलकर भाग लिया, गिरफ्तार हुए और मण्डला जेल में 6 माह का कारावास आपको भोगना पड़ा। आपको 14 दिन की गुनहखाने की भी सजा मिली थी। रईस होते हुए भी आपने अपने साथियों के साथ बी0 और सी0 क्लास जेल में रहना ही पसन्द किया था।

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-1, पृष्ठ 204, (2) जै0 स0 रा0 अ0।

श्री केवलचंद जैन

गौरझामर, जिला-सागर (म0प्र0) के श्री केवल चंद जैन, पुत्र-श्री हीरालाल का जन्म 1911 में हुआ। 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में आपने लगभग 8 माह का कारावास भोगा।

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-2, पृष्ठ-14, (2) आ0 दी0, पृष्ठ-35

श्रीमती केशरबाई

श्रीमती केशरबाई का जन्म अक्टूबर 1915 में हुआ था। आपके पति श्री मोतीलाल जैन ललितपुर (उ0प्र0) निवासी थे। स्वतंत्रता आन्दोलन के महान् कार्य में जहां किशोरों-नौजवानों ने अपना योगदान किया, वहां ललितपुर की यह नारी-नारी जाति के लिए गौरव बनीं। 1936 में गांधी जी की प्रेरणा से वे रणक्षेत्र में कूद पड़ीं। ऐसी उम्र में जब नारी केवल शृंगार एवं घर की चार दीवारी तक ही सीमित रहती थी, केशरबाई लोकलाज भारत-माता के चरणों में अर्पित कर, समाज के बन्धन तोड़ कर, नारी-जाति को जाग्रत करने में जुट गईं। इस नवयौवना को अलख जगाते देख नौजवानों को भी आजादी की लड़ाई लड़ने की प्रेरणा मिली थी।

1941 के व्यक्तिगत सत्याग्रह में केशरबाई एक माह कारावास में रहीं। आपके पति भी कांग्रेस कार्यकर्ता थे। अन्याय के प्रति संघर्ष की आवाज बुलंद करने वाले इस दम्पति की कुछ वर्ष पूर्व चोरों ने हत्या कर दी थी।

आ0-(1) र0 नी0, पृ0-39, (2) जै0 स0 रा0 अ, (3) डा0 बाहुबली कुमार द्वारा प्रेषित विवरण।

श्री केशरीमल जैन

इच्छावर, जिला-सीहोर (म0प्र0) के श्री केशरीमल जैन, पुत्र-श्री भंवरलाल जैन का जन्म 1·7·1925 को हुआ। इण्टरमीडिएट, साहित्यरत्न आदि उपाधिधारी श्री जैन ने भोपाल विलीनीकरण आन्दोलन में भाग लिया एवं 13-1-49 से 6-2-49 तक कारावास की कठोर यातनायें भोगीं।

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग- 5, पृष्ठ 39

श्री कैलाशचंद जैन

सरसावा, जिला-सहारनपुर (उ0प्र0) के श्री कैलाशचंद जैन ने 1942 के आंदोलन में 6 माह की सख्त कैद भोगी थी। 1930 से ही आप आन्दोलन में सक्रिय हो गये थे। 20 सितम्बर 1930 को सरसावा में कांग्रेस कान्फ्रेंस का आयोजन किया गया। उसको सफल बनाने में श्री झुम्मनलाल, दीपचंद, जम्बूप्रसाद जैन एवं आपने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। कांग्रेस सम्मेलन की सारी तैयारी हो गई तब 19-9-1930 को सरकार ने दफा 144 लागू कर सम्मेलन न किये जाने की घोषणा कर दी, तो कान्फ्रेंन्स का स्थान जमना के पुल पर निर्धारित किया गया, परन्तु जत्थे और सत्याग्रही 20 सित0 को सरसावा में एकत्रित हो गये। सम्मेलन न होने देने के लिए जमीदारों और हरिजनों की सहायता से सम्मेलन में भाग लेने वालों की पिटाई की गई। तभी एक पुलिस के सिपाही द्वारा वैद्य रामनाथ को यह सूचना मिली कि वैद्य रामनाथ, प्रभुदयाल, झुम्मनलाल, जम्बूप्रसाद जैन एवं कैलाश चंद जैन को सामने आने पर गोली मार देने के आदेश हो गये हैं। इनमें चार व्यक्ति फरार हो गये, आपको सूचना न मिल पाने के कारण पुलिस ने आपको पकड़कर बहुत मारा, आपको अनेक चोटें आईं।

आ0- (1) स0 स0, पृष्ठ 1/176, (2) जै0 स0 रा0 अ0, (3) उ0 प्र0 जै0 ध0, पृष्ठ-86

श्री कोमलचंद जैन

श्री कोमलचंद जैन, पुत्र - श्री ईश्वरीप्रसाद जैन का जन्म 1918 में जबलपुर (म0प्र0) में हुआ। 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में आप गिरफ्तार कर लिये गये और 9 माह जेल में रखे गये।

आ0- (1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-1, पृष्ठ-37, (2) स्व0 स0 ज0, पृष्ठ-90

श्री कोमलचंद जैन

श्री कोमलचंद जैन, पुत्र-श्री उदयचंद जैन का जन्म 1930 में जबलपुर (म0प्र0) में हुआ। 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में 12 वर्ष की आयु में आपने भाग लिया तथा 20 दिन जबलपुर जेल में काटे।

आ0- (1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-1, पृष्ठ-37, (2) स्व0 स0 ज0, पृष्ठ-90

श्री कोमलचंद जैन

श्री कोमलचंद जैन, पुत्र-श्री खुशालचंद जैन का जन्म 1925 में कटनी (म0प्र0) में हुआ। आपने प्राथमिक तक शिक्षा ग्रहण की। भारत छोड़ो आन्दोलन में 5 सितम्बर 1942 से 1 जून 1943 तक आप करावास में रहे। 1972 में आपका स्वर्गवास हो गया।

आ0- (1) म0प्र0स्व0 सै0, भाग-1, पृ0-37

श्री कोमलचंद जैन

छतरपुर (म0प्र0) के श्री कोमलचंद जैन, पुत्र-श्री खूबचंद जैन का जन्म 1916 में हुआ। आपने 'नमक सत्याग्रह' तथा 1942 के 'भारत छोड़ो आन्दोलन' में भाग लिया। 1942 में 21 अगस्त को आप गिरफ्तार हुए एवं 18 जनवरी 1943 तक जबलपुर जेल में रखे गये।

आ0- (1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-2, पृष्ठ 107

सिंघई कोमलचंद जैन

सिंघई कोमलचंद जैन, पुत्र-श्री खूबचंद जैन का जन्म 14-12-1924 को वारासिवनी (बालाघाट)



म0प्र0 में हुआ। 1941 के व्यक्तिगत सत्याग्रह में आपने भाग लिया। आप सत्याग्रहियों के निवास, भोजन एवं भाषण आदि की व्यवस्था करते रहे। स्वयं भी भाषण देने लगे। आपने वानर सेना में भी काम किया। शराब की दुकानों पर पिकेटिंग आदि आपके प्रमुख काम थे। 1942 के आन्दोलन में आप 15 अगस्त को रात 12 बजे गिरफ्तार कर लिये गये। पहले डिटेंशन में रखे गये फिर बालाघाट जेल में तीन दिन रहे। बाद में सेन्ट्रल जेल नागपुर भेज दिये गये, जहाँ से 3 अक्टूबर 1943 को मुक्त हुए। आजादी के बाद आप समाज सेवा के कार्यों से जुड़े रहे। आप मंडल कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष भी रहे हैं।

आ0- (1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-1, पृष्ठ-173, (2) स्व0 प0

श्री कोमलचंद जैन

श्री कोमलचंद जैन, पुत्र-श्री खेमचंद जैन का जन्म 5 जुलाई 1920 को करेली, जिला-नरसिंहपुर



(म0प्र0) में हुआ। आठवीं तक शिक्षा ग्रहण कर आप स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय हो गये। 1942 में 1 वर्ष का कारावास आपने होशंगाबाद एवं जबलपुर सेन्ट्रल जेल में भोगा। 1973 में आपका निधन हो गया।

आ0- (1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-1, पृष्ठ-138, (2) स्वदेशी श्री खेमचंद द्वारा प्रेषित परिचय, (3) पुत्र विपिन जैन द्वारा प्रेषित परिचय।

श्री कोमलचंद जैन 'आजाद'

सिवनी (म0 प्र0) नगर कांग्रेस के अध्यक्ष रहे श्री कोमलचंद जैन 'आजाद', पुत्र-श्री हुकुमचंद जैन



का जन्म 1 मई 1922 को ग्राम-छपारा, जिला-सिवनी (म0प्र0) में हुआ। आपने मिडिल तक शिक्षा ग्रहण की। 1941 के आन्दोलन में आप सक्रिय रहे, 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में आप कान्हीवाड़ा ग्राम में गिरफ्तार हुए तथा सिवनी एवं जबलपुर की जेलों में 1 वर्ष का कारावास भोगा। जेल में पुलिस की लाठियों से आपके हाथ, पैर व सिर में चोटें आयीं। 17-7-91 को आपका निधन हो गया।

आ०- (1) म० प्र० स्व० सै०, भाग-1, पृष्ठ-228, (2) श्री नरेश दिवाकर द्वारा प्रेषित परिचय।

श्री खुमान जैन

दलपतपुर, जिला-सागर (म०प्र०) निवासी श्री खुमान जैन, पुत्र-श्री आधार ने भारत छोड़ो आंदोलन में 4 माह का कारावास काटा। 1960 में आपका निधन हो गया।

आ०- (1) आ० दी०, पृष्ठ-36, (2) म० प्र० स्व० सै०, भाग-2, पृष्ठ-16

प्रो० खुशालचंद गोरावाला

परतंत्र भारत में विवाह न करने की प्रतिज्ञा करने वाले, क्षु० गणेश प्रसाद जी वर्णी के अत्यन्त



प्रिय पात्र, हिन्दी भाषा को 'भारती' नाम देने के पक्षधर प्रो० खुशाल-चंद गोरावाला का जन्म 22 सितम्बर 1917 को मड़ावरा, जिला-ललितपुर (उ० प्र०) में हुआ। आपके पिता श्री फुन्दीलाल गोरावाला जमींदार व जागीरदार हुआ करते थे। गोरावाला जी को सात वर्ष की अवस्था में मातृ-वियोग सहन करना पड़ा। सादूमल में प्राथमिक शिक्षा प्राप्तकर 1928 में उन्होंने वाराणसी के स्याद्वाद महाविद्यालय में प्रवेश लिया। यहीं उन्होंने पूज्य वर्णी जी, पं० कैलाश चंद शास्त्री और पं० राजेन्द्र कुमार के सान्निध्य में 1937 में बी० एच० यू० सेबी०ए० और गवर्नमेन्ट संस्कृत कालेज (अब सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय) से साहित्याचार्य की उपाधियाँ एक साथ प्राप्त कीं। वे जैन समाज के सम्भवतः ऐसे पहले व्यक्ति थे, जिन्होंने दो उपाधियाँ एक साथ प्राप्त कीं।

आपके पूर्वजों में श्री चिन्तामणी शाह को 'गोरा' जागीर से मड़ावरा में रहने का आग्रह किया गया था और वे आग्रह को स्वीकार कर मड़ावरा आ गये थे। इसीलिये चिन्तामणी शाह का परिवार 'गोरावाला' के नाम से विख्यात हो गया। 1857 की गदर के बाद यह परिवार बिट्रिश बर्बरता का शिकार हुआ। इस प्रकार चिन्तामणी शाह के वंशधर उमराव शाह जागीरदार से साधारण साहूकार रह गये। इस वंश में जन्में गोरावाला जी में क्रांति की भावना जन्म जात होना स्वाभाविक ही था। 1930 में गोरावाला जी सत्याग्रही स्वयंसेवक बने। 1932 में विलिंगडन शाही के दमन के समय वाराणसी के टाउनहाल में एल० ओवेन द्वारा किये गये गोलीकांड के समय आपको मृत समझ लिया गया था, क्योंकि पास ही में खड़े श्री योगेश्वर प्रसाद को गोली लगी थी।

स्वतन्त्रता आंदोलन के समय आप महात्मा गांधी से अत्यधिक प्रभावित रहे। 1941-42 के आंदोलनों में आपकी जेलयात्रा के संबंध में 'जैन सन्देश, राष्ट्रीय अंक (जनवरी 1947)' लिखता है-

'.........28 वर्ष का यह युवक सन् 41 के व्यक्तिगत सत्याग्रह में तूफान की तरह प्रसिद्धि में आया और आते ही प्रान्तीय नेताओं की अगली पंक्ति में जा पहुँचा। आपने उस समय कांग्रेस के सत्याग्रह आंदोलन के मुख्य संचालक और युक्त प्रांतीय कांग्रेस कमेटी के सेक्रेटरी के रूप में जो प्रान्त की राष्ट्रीय सेवा की, वह प्रान्त के इतिहास में एक मिसाल बन गई है। जिस वेग और योग्यता से आपने आंदोलन का संगठन किया, कांग्रेस को अवांछनीय तत्त्वों से मुक्त किया, उससे प्रान्त का रिकार्ड शानदार हो गया। ऐसे अवसर पर देश को जिनकी आवश्यकता होती है, सरकार को भी उनकी आवश्यकता होती है। पुलिस की आंखों में बराबर धूल झोंकते हुए भी आप जुलाई सन् 41 में पकड़े गये। दफा 129 में दो माह नजरबंद रखकर दफा 39 में चार माह की सजा हुई। उसके पश्चात् सन् 42

के आंदोलन में नेताओं की गिरफ्तारी के समय आप भी गिरफ्तार कर लिए गये और कई वर्ष तक आप सरकार के मेहमान रहे। वहाँ से निकलने के बाद भी आप कांग्रेस में सक्रिय कार्य करते आ रहे हैं। .... ..कुछ समय के लिए आप आरा के जैन कालेज में भी प्रोफेसर हो गये थे, लेकिन एक दिन वहाँ के प्रिंसिपल के द्वारा राष्ट्रीय नेताओं की शान में कुछ अपशब्द कहने पर तत्काल कालेज छोड़ दिया। इस पर कालेज के सारे विद्यार्थियों ने हड़ताल कर दी। तीन दिन तक अधिकारियों के अनवरत प्रयत्नों के बावजूद भी जब हड़ताल न खुली तो आपने ही विद्यार्थियों को समझाकर संस्था के हित की दृष्टि से हड़ताल खुलवाई। आरा से आकर यू0पी0 के शिक्षामंत्री बा0 सम्पूर्णानन्द जी आदि के कहने पर आप पुन: विद्यापीठ में अध्यापन कार्य करने लगे हैं।'

महापुरुषों का जेल जाना भी लोककल्याण के लिए होता है। जेल के दिनों में आपने 'वरांग-चरित' ग्रन्थ का हिन्दी में अनुवाद किया। आपका विचार था कि हिन्दी का नाम हिन्दी न होकर 'भारती' होना चाहिए। यह आपका मौलिक चिन्तन कहा जाना चाहिए। आपके ही शब्दों में-

'उत्तर भारत की भाषा का 'हिन्दी' नाम भ्रामक है। इस नाम का प्रयोग उन्होंने (विदेशी यात्री-मुस्लिम विजेता) किया है जो इस देश तथा इसकी संस्कृति और भाषा से अपरिचित थे। उन्होंने अज्ञान में एक प्रान्त सिन्ध (हिन्द) का नाम देश पर लाद दिया तो विश्वमान्य प्रथा के अनुसार यहां के वासियों को हिन्दू तथा उनकी भाषा को हिन्दी कह दिया। यह राष्ट्र 'भारत' है तो राष्ट्रभाषा भी 'भारती' ही होनी चाहिए, क्योंकि जर्मनी की जर्मन, फ्रांस की फ्रैंच, इंग्लैण्ड की इंगलिश, रूस की रसियन आदि भाषाएं हैं। सांगोपांग-विवेचन के लिए दृष्टव्य लेखक का लेख। (जनवाणी '49)'

'वरांग-चरित' की भूमिका में 'अनुवाद-गत' शीर्षक से आपने लिखा है कि-

'सन् 1941 में व्यक्तिगत सत्याग्रह का संचालन करते हुए जब जुलाई के महीने में नजरबंद होने पर जेल में विराम मिला तो पुन: अपने जीवनव्यापी व्यवसाय की स्मृति आयी। फलत: जेल के अधिकारियों से चर्चा करके मैंने पूज्य भाई पं0 कैलाशचन्द्र जी को लिखा कि वे कतिपय पुस्तकों के साथ मेरे महानिबन्ध "प्राचीन भारत में भूस्वामित्व" के लिए शोध की गयी सामग्री तथा वरांग-चरित के प्रारब्ध अनुवाद को भी जमा करा देवें। क्योंकि जब भाई ने इसकी भूमिका के अनुवाद के विषय में मुझसे कुछ पूछा था तभी से मेरे मन में इसका भारती में रूपान्तर करने की भावना हो गयी थी तथा सन् 40 की गर्मियों में सद्य: समागत संघ के प्रधान कार्यालय चौरासी, मथुरा में इसका मंगलाचरण भी किया था किन्तु इसके बाद ही राष्ट्रपिता गांधीजी ने व्यक्तिगत सत्याग्रह की चर्चा जोर से प्रारम्भ कर दी थी और वर्षा समाप्त होते-होते ही वह आरम्भ भी हो गया था। फलत: विद्यापीठ की नीति के अनुसार हम पीठ के अध्यापक तथा छात्र इसके संगठन में लग गये और मूल-वरांगचरित के समान उसकी अनुवाद कल्पना को भी तिरोहित होना पड़ा। जब उक्त पुस्तक-पत्रादि जेल द्वार पर पहुंचे तो अधिकारियों ने उन सबको महीनों रोके रखा और बार-बार कहने पर अन्त में मुझे प्रथमगुच्छक और वरांगचरित पूजा-पाठ की संस्कृत पुस्तकें समझकर दे दिये, क्योंकि उन्हें आशा थी कि इनको पढ़कर मेरी राजद्रोह की प्रवृत्ति बढ़ेगी नहीं।

यत: कागज सुलभ नहीं था। अत: एक बार पूरा ग्रन्थ पढ़ गया। पढ़ जाने के बाद फिर समय काटने का प्रश्न हुआ और काफी प्रयत्न करने पर अपने लिए जमा हुयी कोरी कापियों में से दो-तीन पा सका। तीन-चार सर्ग लिख पाया था कि मेरे ऊपर राजद्रोह उभारने के लिए मुकदमा चलने लगा और दूसरे-चौथे

रोज होने वाली पेशियों के कारण अनुवाद का कार्य स्थगित हो गया। बाद में मुझे सजा भी हो गयी और केन्द्रीय जेल में भेज दिया गया। फलत: इस जेल द्वार पर वरांगचरित और गुच्छक भी मुझसे बिछुड़ गये। यहां पर भी काफी संघर्ष के बाद 42 की जनवरी के अन्त में मुझे वरांगचरित और कापियां मिलीं। फिर कार्य प्रारम्भ किया और चार-पांच सर्ग लिखने के बाद जेल मुक्त हो गया। बाहर आने पर इसकी जेल से भी बुरी हालत हुई। क्योंकि यह महान् राजनैतिक तनाव का समय था। प्रयाग की अखिल भा0का0 कमेटी का अधिवेशन, उसके बाद आगामी आन्दोलन की तैयारी आदि ऐसे कार्य थे कि मैं वरांगचरित को छू भी न सका। वरांगचरित की शुभ घड़ी तब आयी जब 42 में पुन: नजरबन्द हुआ और सन् 43 के अन्त में जब नजरबन्दों को कुटुम्बियों से मिलने तथा पत्र-व्यवहार की सुविधा मिली। अबकी बार ज्यों ही पुस्तक और कागज हाथ लगे त्यों ही इसमें लग गया और लगभग 1 मास में अनुवाद को समाप्त कर डाला।'

1942 के आन्दोलन में आपकी जन्मपत्री व प्रमाण-पत्र आदि जब्त कर लिये गये थे जो 1945 में जेल से छूटने पर मिले। आपने एम0वी0 कालेज, फिरोजाबाद में अध्यापन कार्य किया, किन्तु महात्मा गांधी के आह्वान पर वहां की सवैतनिक नौकरी छोड़कर काशी विद्यापीठ में अवैतनिक कार्य करने आ गये। वहीं 1946 में प्रोफेसर इन्चार्ज, लाइब्रेरी बने। गोरावाला जी अपनी स्पष्टवादिता और न्यायप्रियता के लिए विख्यात थे। 1961 में काशी विद्यापीठ के मान्य विश्वविद्यालय हो जाने पर विद्यापीठ में भाई-भतीजावाद काफी बढ़ गया। गोरावाला जी ने इसका खुलकर विरोध किया। वे कहा करते थे- 'एक कम योग्यता वाले व्यक्ति को कहीं भी कोई पद दिया जाना एक योग्य व्यक्ति के हक को मारना है।' यही कारण है कि विद्यापीठ में जहां उनके साथ के तमाम लोगों के पुत्र-पुत्रियां आदि विभिन्न पदों पर आसीन हैं, आपने अपने किसी पुत्र-पुत्री या रिश्तेदार को कहीं नहीं लगाया। यही कारण था कि आप अनेक बार उस संस्था के कुलपति होते-होते रह गये।

डॉ0 सम्पूर्णानन्द के अत्यन्त प्रिय व्यक्तियों में रहे गोरावाला जी ने 1952 में उ0प्र0 कांग्रेस महासचिव पद से त्यागपत्र दे दिया, उसके बाद वे कभी सक्रिय राजनीति में नहीं रहे। 1947 में देश के आजाद हो जाने के बाद ही 1950 में उन्होंने सरला देवी से विवाह किया। वह भी मित्रों के भारी जोर देने पर।

स्याद्वाद महाविद्यालय की स्थिति से गोरावाला जी काफी चिन्तित रहा करते थे, क्योंकि इस विद्यालय की स्थापना उनके पूज्य गुरु गणेशप्रसाद जी वर्णी ने की थी। जैन समाज और साहित्य की जो सेवा गोरावाला जी ने की वह इतिहास के स्वर्णिम पृष्ठों पर लिखी जाएगी। वे भा0दि0 जैन संघ, मथुरा, अ0भा0 दि0 जैन विद्वत्परिषद्, गणेशवर्णी जैन ग्रन्थमाला, सन्मति जैन निकेतन, नरिया, वाराणसी आदि संस्थानों से सदैव जुड़े रहे। 'जैन-सन्देश' का सम्पादन और प्रकाशन भी उन्होंने अनेक वर्षों तक किया था।

अपने मौलिक विचारों के कारण सदैव चर्चा में रहे गोरावाला जी के पास जब हम 25-5-1997 को गये और प्रस्तुत पुस्तक लिखने की चर्चा की तो उन्होंने असीम प्रसन्नता व्यक्त की थी। काल का चक्र किसी को नहीं छोड़ता। 10 जनवरी 1999 को गोरावाला जी शांतभाव से चिरनिद्रा में लीन हो गये।

आ0- (1) वि0 अ0, पृ0-168 (2) प0 जै0 इ0, पृ0- 265, (3) जै0 स0 रा0 अ0 (4) वरांग-चरित (5) जैन-सन्देश, 17 मार्च 1999 (6) र0 नी0, पृ0-77

सिंघई (दादा) खूबचंद जी खादी वाले

अंग्रेजों के लिए बेहद भारी पड़ने वाले दादा खूबचंद जी, जबलपुर (म0प्र0) के माने हुए खादी

प्रचारक थे। खादी प्रचार को ही माध्यम बनाकर वे राष्ट्रीय कार्यों में सम्मिलित हुए, खादी का ही व्यापार किया, इसलिए 'खादी वाले' कहलाने लगे।

दादा जी का जन्म 1907 में जबलपुर में हुआ। आपके पिता का नाम श्री छबलाल था। 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में भूमिगत कार्यकर्ताओं से सम्पर्क रहा और उनकी हर तरह से सहायता आपने की तथा आन्दोलन को उग्र बनाये रखने के लिए प्रेरक परचे छपवाकर वितरित किये। भूमिगत रहे श्री सत्येन्द्र मिश्र की सलाह पर, छोटे फुहारे पर निषेधाज्ञा भंग करके सभा की अध्यक्षता कर उसे संबोधित करते हुए आप पकड़े गये। पुलिस द्वारा शारीरिक यातनायें दी गईं तथा अर्थदण्ड सहित एक वर्ष की सजा हुई।

35 वर्ष के युवा खूबचंद ने हार नहीं मानी और कहा-'अर्थदण्ड नहीं दूंगा चाहे जितनी भी यातनायें सहनी पडें', फिर क्या था ? अर्थदण्ड वसूलने के लिए इनकी दुकान भी कुर्क कर ली गई।

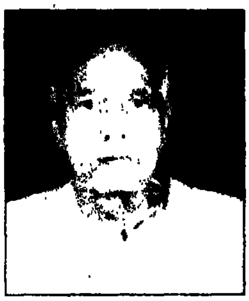
आजादी के बाद आप कांग्रेस के अनन्य भक्त रहे। धार्मिक और सामाजिक कार्यों में योगदान करना आपका स्वभाव था। जबलपुर के प्रसिद्ध जैन तीर्थ 'पिसनहारी की मढ़िया' की पहाड़ी पर पत्थरों की बड़ी-बड़ी चट्टानों को खुद हटवाकर मैदान बनवाया, इसीलिए आप 'शिलाचार्य' कहलाने लगे, उस मैदान में आपने एक चौबीसी का भी निर्माण कराया तथा तब चालीस हजार रुपये दान में दिये थे। आपका निधन 1990 में हो गया।

अपने कुटुम्बियों की आर्थिक सहायता भी आप करते थे। मढिया जी में व्रती आश्रम, भेड़ाघाट जैन मंदिर का जीर्णोद्धार, नन्दीश्वर द्वीप रचना आदि में आपका भारी योगदान रहा। आपके उत्तराधिकारी सुपुत्र श्री राजेन्द्र कुमार जबलपुर में अब भी 'महाकौशल खादी भंडार' चलाते हैं।

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-1, पृ0-38 (2) स्व0 स0 ज0, पृ0-92 (3) प0 जै0 इ0, पृ0-420 (4) जबलपुर गजरथ स्मारिका, 1993, पृ0-46 (5) सिंघई रतनचंद जी द्वारा प्रेषित परिचय।

श्री खूबचंद जैन 'पुष्प'

'पुष्प' उपनाम धारक श्री खूबचंद जैन का जन्म, वि0स0 1981 (सन् 1924) में पिपरई



(ललितपुर) उ0प्र0 में श्री खुशालचंद जी मोदी के यहाँ हुआ। कम उम्र में ही आप राष्ट्रभावना से युक्त कवितायें लिखने लगे। आप कविताओं को सुना- सुनाकर देशप्रेम के प्रति लोगों की भावनाओं को उभारते हुये ललितपुर में बंदी बना लिये गये। 1942 में आपको दफा 144 तोड़ने एवं विद्रोही कविता पाठ के कारण 6 माह की कठोर सजा तथा 500/- जुर्माना हुआ। जुर्माना अदा न करने पर 6 माह की और कठोर सजा भोगनी पड़ी। अनेक सत्याग्रहों में भी आपने भाग लिया। वर्तमान दशा पर आपका कहना है-

'गांव भटक गये, पांव बहक गये,
कहीं छांव विश्राम नहीं है।
बापू तेरे स्वप्नों का,
अब कोई सेवाग्राम नहीं है।।'
'दिशाहीन हैं न्यायमार्ग सब,
अपनापन वीरान हो गया।
किसे पुकारूँ, कौन सुनेगा,
हर राही अनजान हो गया।।'
'बापू तेरी अवधपुरी में,
अब तो कोई राम नहीं है।
बापू तेरे स्वप्नों का,
अब कोई सेवाग्राम नहीं है।।'

सम्प्रति आप मण्डी बामोरा (सागर) म0प्र0 में रह रहे हैं।

आ0- (1) जै0 स0 रा0 अ0 (2) रा0 नी0, पृ0-40 (3) स्व0 प0।

श्री खूबचंद बैसाखिया

रहली, जिला-सागर (म0प्र0) निवासी श्री खूबचंद बैसाखिया, पुत्र-श्री भोलानाथ बैसाखिया ने 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में भाग लिया व 9 माह का कारावास भोगा। आपका निधन 1964 में हो गया।

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-2, पृ0-16 (2) आ0 दी0, पृ0-36

श्री खेमचंद जैन

बलेह, जिला-सागर (मध्यप्रदेश) के श्री खेमचंद जैन, पुत्र-श्री कोमलचंद जैन का जन्म 10 फरवरी 1928 ई0 को हुआ। आपने बताया कि 'मेरे पिता बलेह के कर्मठ कार्यकर्ता थे, 1929 एवं 33 में उन्होंने विदेशी वस्त्रों की होली जलाई थी, गांधी जी के दमोह आगमन पर उनके साथ रहे थे व चरखा आश्रम खोला था। उन्हीं से विरासत में मुझे स्वाधीनता की भावना मिली। 1939 का त्रिपुरी अधिवेशन मुझे देखने को मिला था, 1942 के आन्दोलन में मुझे अपने 35 साथियों के साथ गिरफ्तार कर लिया गया। मैंने 23 सितम्बर से 15 अक्टूबर 42 तक का कारावास तथा 75/- का अर्थदण्ड भोगा था। जेल में बड़ी अमानुषिक यातनायें दी जाती थीं। सबसे विचित्र वहां शौच क्रिया का जाना था। हमें 12-12 लोगों को हथकड़ी पहनाकर शौच क्रिया हेतु हवालात से बाहर ले जाया जाता था। बाद में सागर के कलेक्टर से शिकायत करने पर हथकड़ी खोलने की अनुमति मिली थी।' श्री जैन म0प्र0 स्वतंत्रता सेनानी संघ, के सम्भागीय मंत्री व जिला स्वतंत्रता सेनानी संघ, दमोह के कोषाध्यक्ष हैं।



आ0- (1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-2, पृ0-16 (2) स्व0 प0 व अनेक चित्र।

श्री खेमचंद जैन

पिण्डरई, जिला- मण्डला (म0प्र0) के श्री खेमचंद जैन, पुत्र-श्री मुन्नालाल का जीवन आजादी का अलख जगाते बीता। हर समय- हर काम को तैयार खेमचंद जी सदैव रचनात्मक कार्यों से जुड़े रहे। 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में आपने खुलकर भाग लिया, तोड़-फोड़ की, गिरफ्तार हुए और 2 वर्ष 6 माह की कठोर कैद तथा 100/- रु0 का अर्थदण्ड आपको भोगना पड़ा। जेल में भी कठोर से कठोर यातनायें आपको दी जाती रहीं पर आप झुके नहीं।

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-1, पृ0-205 (2) जै0 स0 रा0 अ0।

श्री खेमचंद जैन 'स्वदेशी'

पिता की स्वदेशी भावना के कारण जिनका वंश ही स्वदेशी कहलाने लगा, ऐसे श्री खेमचंद स्वदेशी, पुत्र-श्री मोहनलाल स्वदेशी का जन्म 6-8-1923 को तेंदूखेड़ा, जिला-नरसिंहपुर (म0प्र0) में हुआ, आप त्रिपुरी कांग्रेस के अधिवेशन से स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय हो गये थे। राष्ट्रीय सत्याग्रह के लिये आपने जनमत तैयार किया। अपनी गिरफ्तारी के सन्दर्भ में आपने लिखा है कि- '1942 ई0 में मैंने जंगल सत्याग्रह में भाग लिया। वन विभाग एवं पुलिस द्वारा गिरफ्तार हुआ, पुलिस हथकड़ी डालकर ग्राम-सहजपुर से बरसात में ही पुलिस थाना केसली ले गई। केसली से 60 किमी0 पदयात्रा कर तहसील रहली, जिला-सागर लाया गया और रहली अदालत ने मुझे 4 माह की कड़ी कैद की सजा तथा 10/- रु0 अर्थदण्ड दिया। सागर जेल में कठोर यातनायें हँसते-हँसते झेलीं, पुलिस की मार से सिर फूट गया था, उस समय मेरी आयु 18 वर्ष की थी।



स्वतंत्रता संग्राम के दौरान हमारे साथी यह कविता गाते थे–

'खड़ी रहेगी, पुलिस फौज अरु,
पड़े रहेंगे, सब हथियार
थोड़े दिन में दिखता है यह
डूब जायेगी ये सरकार
पकड़ना हो तो पकड़ ले जालिम
सुना रहे हैं, सरे बाजार
अब न टिकेगी, हिन्द देश में
पाखंडी जालिम सरकार
गूँजे आजादी का नाद
इंकलाब जिन्दाबाद
धन शोषण की क्रूर कहानी
पूँजीपतियों की नादानी
हमें हमेशा रहेगी याद
इंकलाब जिन्दाबाद
लाठी गोली सेण्ट्रल जेल
जालिम का है अन्तिम खेल
कर ले मनमानी सैय्याद
इंकलाब जिंदाबाद
ये मजदूरो और किसानो
भावी राज्य तुम्हारा जानो
उजड़े घर होंगे आजाद
इंकलाब जिंदाबाद।'

आ०- (1) म० प्र० स्व० सै०, भाग-1, पृ०-139 (2) स्व० प०

श्री गंगाधर जैन

श्री गंगाधर जैन का जन्म 1909 में प्रभात-पट्टन, जिला-बैतूल (म०प्र०) में हुआ, आपके पिता का नाम श्री बाला जी था, आपने कक्षा 4 तक शिक्षा ग्रहण की। 1930 के देशव्यापी कांग्रेस आंदोलन में बड़े ही उत्साहपूर्वक आपने भाग लिया। 1 वर्ष की कडी सजा एवं 75 रु० के अर्थदंड की सजा आपको मिली, जिसे आपने सहर्ष स्वीकार कर लिया। आपमें देशभक्ति की भावना कूटकूट कर भरी थी।

आ०- (1) म० प्र० स्व० सै०, भाग-5, पृ०-150

श्रीमती गंगाबाई जैन

कानपुर (उ०प्र०) की श्रीमती गंगाबाई जैन प्रसिद्ध देशभक्त वैद्य कन्हैयालाल जी (इनका परिचय इसी पुस्तक में अन्यत्र देखें) की धर्मपत्नी थीं, श्रीमती जैन, उनके पति और दो पुत्र जेल यात्री रहे हैं। शिक्षा प्रसार-प्रचार के लिए समर्पित श्रीमती जैन अपने पति के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर आन्दोलन में सक्रिय रहीं। जैन सन्देश, राष्ट्रीय अंक लिखता है– 'आपको स्वदेशी से बड़ा प्रेम था। आपके कारण जैन समाज की तथा नगर की स्त्रियों में स्वदेशी का काफी प्रचार हुआ। 1931 के आन्दोलन में जब कानपुर में यू०पी० कांग्रेस का जलसा श्रद्धेय बा० पुरुषोत्तम दास जी टण्डन के सभापतित्व में हुआ था, उसकी स्वागताध्यक्षा बनने के कारण आपको छह मास का कारावास हुआ था।'

आ०- (1) जै० स० रा० अ० (2) पं० बच्चू लाल जी द्वारा प्रदत्त परिचय।

श्री गजाधर जैन उर्फ श्री नाथूराम

छतरपुर (म०प्र०) के श्री गजाधर जैन उर्फ श्री नाथूराम, पुत्र-श्री गुलाबराय जैन का जन्म 1906 में हुआ। स्वतंत्रता संग्राम में आप 1942 से ही सक्रिय हो गये थे। 1947 में गंज कैम्प में 1 माह का कारावास आपने भोगा।

आ०-(1) म०प्र० स्व० सै०, भाग-2, पृ०-107

श्री गटोलेलाल भायजी

'भायजी' उपनाम से विख्यात, सागर (म०प्र०) के श्री गटोलेलाल ने अहमदाबाद कांग्रेस में बीना के प्रतिनिधि के रूप में भाग लिया। 1929 में रेलवे सत्याग्रह में भाग लेने के कारण आपने 15 दिन की

जेल यात्रा की । उस समय जेलों में राजनैतिक कैदियों के साथ इतना कड़ा व्यवहार किया जाता था कि 20 सेर (किलो) अनाज पीसने के बाद भी आपको प्रतिदिन गुनाहखाने में बन्द कर दिया जाता था। 1942 के आन्दोलन में भी आपने एक वर्ष का कारावास भोगा।

आ० (1) जै० स० रा० अ०।

श्री गनेशीलाल जी 'बाबा'

'बाबा' उपनाम से प्रख्यात श्री गनेशीलाल जी, बीना (म०प्र०) निवासी थे। 1940 के व्यक्तिगत सत्याग्रह में आप तीन बार जेल गये। बीना के आप प्रमुख कांग्रेस कार्यकर्ताओं में एक थे। लगातार जेल यात्रा ने आपका स्वास्थ्य चौपट कर दिया। तीसरी बार जेल से रिहा होने के थोड़े ही दिन बाद हृदयगति अवरुद्ध हो जाने के कारण आपका स्वर्गवास हो गया।

आ०-(1) श्रद्धेय पं० वंशीधर जी द्वारा प्रेषित परिचय। (2) जै० स० रा० अ०

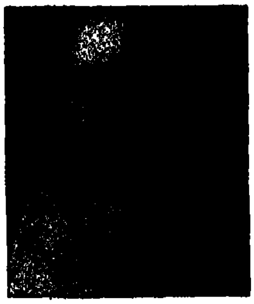
श्री गप्पूलाल उर्फ उमरावमल आजाद

जयपुर (राजस्थान) के श्री गप्पूलाल उर्फ उमरावमल आजाद का जन्म अगस्त 1928 में हुआ। 14 वर्ष की उम्र में आजाद जी ने आन्दोलन में भाग लेना प्रारम्भ किया। पर्चे बांटना, बुलेटिन घर-घर पहुंचाना उनके प्रमुख कार्य थे। एक दिन पुलिस ने इतना पीटा कि सदैव के लिए उनके दायें हाथ और बाएं पैर की हड्डी टूट गई। उन्हें अपने स्कूल से भी निकाल दिया गया। आजाद जी आगरा, इन्दौर, रतलाम कोटा आदि में क्रान्तिकारियों के सम्पर्क में भी रहे थे।

आ० (1) रा० स्व० से०, पृ० 603

श्री गुणधरलाल जैन 'निर्भय'

'निर्भय' उपनामधारी, कायमगंज, जिला-फर्रुखाबाद (उ०प्र०) निवासी और कुरावली, जिला



मैनपुरी (उ०प्र०) प्रवासी श्री गुणधरलाल जैन, पुत्र-श्री वंशीधर जैन का जन्म 15 अगस्त 1885 को हुआ। श्री जैन को नमक कानून भंग आंदोलन में भाग लेने के कारण एक वर्ष का कठिन कारावास भोगना पड़ा था। आप गांधी इरविन समझौता होने पर छूट पाये थे। बन्दी जीवन में परिवार की आर्थिक स्थिति बिगड़ गई, फलत: कायमगंज का मकान भी बेच देना पड़ा। इतने पर भी आर्थिक स्थिति नहीं सुधरी तो सपरिवार बम्बई प्रवास के लिए बाध्य होना पड़ा, वहाँ भी चार वर्ष जीवन के लिए संघर्ष करने पर कोई स्थाई साधन न जुटा सके और कुरावली 1942 में वापिस आना पड़ा। 'जैन सन्देश, राष्ट्रीय अंक' लिखता है कि- 'उस समय इनके बच्चे बहुत छोटे थे, घर में इनके अतिरिक्त कमाने वाला कोई नहीं था, फिर भी सबकी उपेक्षा करते हुए अपने हृदय में उठते हुए उद्‌गारों को न रोक सके, इस पर भी सरकार ने इन पर 100 रु० जुर्माना और कर दिया, जो इनकी स्थिति के बाहर की चीज थी। इस बीच काफी कर्ज बढ़ गया और विवश होकर इन्हें अपना एक मकान भी बेच देना पड़ा।' 17 मई 1969 को आपका निधन हो गया।

आपके पुत्र श्री देशदीपक जैन, 1942 के आंदोलन में जेल गये थे, जिनका परिचय इसी ग्रन्थ में अन्यत्र देखें।

आ० (1) जै० स०, रा० अ० (2) उ०प्र० जै० ध० पृ०-93 (3) पुत्र श्री देश दीपक जैन द्वारा प्रेषित परिचय।

श्री गुलझारीलाल जगाती

'नेताजी' उपनाम से प्रसिद्ध श्री गुलझारीलाल जगाती का जन्म वैशाख सुदी पंचमी, संवत् 1972 (1915 ई०), को टड़ा, तहसील-देवरी, जिला-सागर



(म0प्र0) में हुआ। आपके पिता का नाम श्री सुन्दरलाल जैन था, जो अत्यन्त निर्धन थे। फलत: जगाती जी की शिक्षा अत्यल्प, कक्षा 4 तक ही हो सकी। 1941 से ही आप रचनात्मक कार्यों में संलग्न हो गये। पूज्य बापू के करो या मरो के अगस्त 42 के आन्दोलन में आपने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया, जगह-जगह भाषणबाजी के कारण आप 'नेताजी' कहे जाने लगे, गिरफ्तार हुए और 9 माह की कड़ी जेल- यातना भुगती। जेल से आने के बाद भी आप अपनी ओजस्वी वाणी से स्वतंत्रता का प्रचार करते रहे व आजादी के दीवानों को उद्वेलित करते रहे।

देश की आजादी के बाद स्वाधीनता सेनानियों का सम्मान, देर से ही सही, हुआ। 'नेताजी' को माननीय सेठ गोविन्ददास जी, सांसद (जबलपुर) ने ताम्रपत्र प्रदान कर सम्मानित किया।

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-2, पृ0-19 (2) स्व0 प0।

श्री गुलजारीलाल जैन

ग्राम-सिरोंहा, जिला-सागर (म0प्र0) के श्री गुलजारीलाल जैन, पुत्र- श्री दरियावप्रसाद ने 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में 6 माह का कारावास भोगा।

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-2, पृ0-19 (2) आ0 दी0, पृ0-39

वैद्य गुलझारीलाल जैन

फिरोजाबाद म्यूनिसिपल बोर्ड के चेयरमैन रहे श्री वैद्य गुलझारीलाल, फिरोजाबाद (उ0प्र0) के प्रतिष्ठित व्यक्तियों में से थे। आप वैद्य नौबतराम गुलझारीलाल के नाम से विख्यात थे। वैद्य जी अपनी विनम्रता, ईमानदारी और राष्ट्रीय भावना के लिए भी दूर-दूर तक विख्यात थे। 1941 के आन्दोलन में आपको नजरबन्द कर लिया गया था।

1941 में जब जनता से जबरन बारफण्ड वसूल किया जा रहा था। तब आप नगर की चुंगी विभाग के चेयरमैन थे। अंग्रेजी शासन ने स्थानीय चुंगी (नगरपालिका) में एतद् विषयक प्रस्ताव पारित कराने पर जोर डाला। चेयरमैन गुलझारीलाल तथा पं0 श्यामलाल व लाला टुण्डामल जी ने प्रस्ताव पारित नहीं होने दिया, फलत: तीनों को गिरफ्तार करके जेल में भेज दिया गया। वैद्य जी एक माह कारावास में रहे।

आ0- (1) जै0 स0, रा0 अ0 (2) उ0 प्र0 जै0, ध0, पृ0-90 (3) अमृत, पृष्ठ 24, (4) प0 इ0, पृ0-140

श्री गुलाबचंद कासलीवाल

1956 से 1972 तक राजस्थान सरकार के एडवोकेट जनरल राजस्थान विधानसभा के सदस्य रहे श्री गुलाबचंद कासलीवाल, पुत्र-श्री पूर्णचन्द्र कासलीवाल का जन्म 16 जौलाई 1909 को जयपुर (राजस्थान) में हुआ। आपने लखनऊ विश्वविद्यालय से एम0ए0, एल0एल0बी0 की परीक्षाएं उत्तीर्ण कीं और 1932 में जयपुर में वकालत प्रारंभ की। 1934 से 1936 तक आपने हरिजन बस्तियों में शिक्षा-प्रसार व समाज सुधार का कार्य किया।

10 फरवरी 1939 की रात्री को जब पंडित हीरालाल शास्त्री के निवास स्थान पर 'जयपुर राज्य प्रजामंडल' की कार्यकारिणी के समस्त सदस्यों को गिरफ्तार किया गया उस समय पुलिस के घेरे के बीच से प्रजामंडल के तमाम गुप्त कागजात लेकर आप निकल गये थे। प्रजामंडल की कार्यकारिणी ने सत्याग्रह संचालन की जिम्मेदारी श्री कासलीवाल को सौंपी।

सत्याग्रह संचालन के संबंध में आप दो बार राष्ट्रपिता महात्मा गांधी से मिले। गांधीजी ने जयपुर राज्य प्रजामंडल के सत्याग्रह संचालन की प्रशंसा में उन्हें एक पत्र लिखकर दिया। दूसरी बार मिलने पर गांधीजी ने सत्याग्रह बंद करने की आज्ञा दी। जयपुर सत्याग्रह बंद होने पर श्री कासलीवास खादी उत्पादन के कार्य में लग गए।

1942 में जयपुर राज्य प्रजामंडल ने ब्रिटिश विरोधी आंदोलन के लिए जो नीति स्वीकार की थी उससे असंतुष्ट होकर कासलीवाल जी ने प्रजामंडल से त्यागपत्र दे दिया और अपने अन्य साथियों के साथ आजाद मोर्चे में शामिल हो गए। आजाद मोर्चे का कार्यालय आपके निवास पर ही था। आजाद मोर्चे ने भारत छोड़ो आंदोलन के रूप में स्वतंत्रता संग्राम को जयपुर राज्य के कोने-कोने में फैलाया। आंदोलन में काफी तेजी आ गई थी। 9 सितम्बर 1942 को श्री कासलीवाल के मकान की 6 घंटे तक तलाशी होती रही। अंत में वे गिरफ्तार कर लिए गए तथा 6 महीने तक जेल में रहे, जिसमें दो हफ्ते की कालकोठरी की भी सजा उन्हें दी गई।

भारत छोडो आंदोलन समाप्त होने पर श्री कासलीवाल पुन: प्रजामंडल में सम्मिलित हो गए। वे निरंतर कई वर्षों तक जयपुर राज्य प्रजामंडल के कोषाध्यक्ष रहे। उन्होंने प्रजामंडल की राज्यव्यापी सभी प्रवृत्तियों में उत्साह से भाग लिया। 1943-44 में प्रजामंडल ने श्री कासलीवाल को जयपुर नगरपालिका के लिए खड़ा किया और वे विजयी हुए। 1945 में जयपुर में लेजिसलेटिव कौंसिल और रिप्रिजेंटेटिव एसेम्बली के चुनाव हुए।कासलीवाल जी जयपुर से लेजिसलेटिव कौंसिल के प्रत्याशी थे। जयपुर शहर के चुनाव का श्रेय भी श्री कासलीवाल को ही था। जयपुर शहर से प्रजामंडल के सभी प्रत्याशी विजयी हुए। श्री कासलीवाल लेजिसलेटिव कौंसिल में प्रजामंडल के मुख्य सचेतक थे।

कासलीवाल जी 1946 में नगरपालिका के अध्यक्ष निर्वाचित हुए। 1946 से 51 तक वे राजकीय, राजनैतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक सौ से अधिक संस्थाओं और समितियों के अध्यक्ष, संरक्षक, सलाहकार और सदस्य रहे। जयपुर के कांग्रेस अधिवेशन में उन्होंने स्वागत समिति के एक संयोजक के रूप में महत्त्वपूर्ण कार्य किया।

अखिल भारतीय देशी राज्य प्रजा परिषद् के उदयपुर अधिवेशन में श्री कासलीवाल ने ही सबसे पहले राजपूताने की सभी रियासतों को मिलाकर एक राज्य बनाने का प्रस्ताव रखा था। जिसे सर्व सम्मति से स्वीकृत किया गया था।

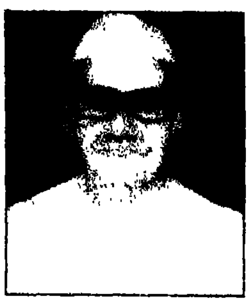
कासलीवाल जी 1952 में जयपुर शहर से राज्य विधानसभा के लिए कांग्रेस टिकट पर सदस्य चुने गए। एसेम्बली में वे कांग्रेस के मुख्य सचेतक रहे। इसके अतिरिक्त वे अरबन इम्प्रूवमेंट बोर्ड के अध्यक्ष बनाए गए और अंत में 1956 में राज्य के एडवोकेट जनरल बने।

कासलीवाल जी सुप्रीम कोर्ट आफ इंडिया के एडवोकेट, रायल-इंडियन सोसाइटी, लंदन के फैलो, अन्तर्राष्ट्रीय कमीशन आफ जूरिस्ट्स के सदस्य, बार एसोशिएशन आफ इंडिया के फाउन्डर मेम्बर तथा आजीवन सदस्य रहे थे।

आ० (1) रा० स्वा० से०, पृष्ठ-553, (2) जै० स० वृ० इ०, पृष्ठ-205

श्री गुलाबचंद जैन

1939 में जब कांग्रेस के गांधीवादी वर्ग ने



तत्कालीन कांग्रेस के अध्यक्ष नेताजी सुभाषचंद बोस को सहयोग न देकर उनके नेतृत्व को चुनौती दी और उसके फलस्वरूप नेताजी ने अपने अनुयायियों सहित कांग्रेस का परित्याग कर

'अग्रगामी दल' (फारवर्ड ब्लाक) निर्मित किया तब पाटन, जिला-जबलपुर (म0प्र0) से भी अनेक कांग्रेस-कर्मी उसमें कूद पड़े। तरुण राष्ट्रीय कार्यकर्ता श्री गुलाबचंद, पुत्र-श्री मूलचंद जैन भी इसी उग्र विचारधारा के अनुगामी बने। आपका जन्म 2 सितम्बर 1921 को शहपुरा (म0प्र0) में हुआ था। शहपुरा क्षेत्र के कांग्रेस कार्यकर्ताओं में आप अग्रणी रहे। 1942 की जनक्रांति के दौरान कांग्रेस-कर्मी अपने सूत्रधारों के आकस्मिक बंदी बना लिये जाने से पथ निश्चित नहीं कर पा रहे थे। इसी बीच भूमिगत कार्यकर्ता श्री नानक चंद नामदेव और टीकाराम 'विनोदी' शहपुरा आये। वे गुप्त रूप से खैरी के ठाकुर मोहन सिंह के यहाँ ठहराये गये, उन्होंने क्रांति का संदेश स्थानीय कार्यकर्ताओं को दिया। तोड़-फोड़ की योजनायें बनायी जा रही थीं। इसी बीच श्री गुलाब चंद पुलिस द्वारा एकाएक गिरफ्तार कर लिये गये तथा केन्द्रीय कारागार जबलपुर भेज दिये गये। वहाँ आप सितम्बर 1942 से नवम्बर 1943 तक भारत रक्षा कानून की धारा 129 व 26 के अन्तर्गत बन्दी रहे। जेल से मुक्त होने पर आप कांग्रेस संगठन में जुट गये। स्वतंत्रता के पूर्व 1945 से 47 तक आप परगना कांग्रेस के मंत्री रहे थे। स्वतंत्रता के पश्चात् आर्थिक कारणों से आप सार्वजनिक राजनीति से विरक्त हो गये थे।

आ0- (1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-1, पृष्ठ-41, (2) श्री राकेश जैन, शहपुरा द्वारा प्रेषित परिचय, (3) स्वा0 स0 पा0, पृ0 93

श्री गुलाबचंद जैन

सागर (म0प्र0) के श्री गुलाबचंद जैन, पुत्र-श्री नानूराम जैन का जन्म 1920 में हुआ। आप प्राथमिक तक शिक्षा ग्रहण कर 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में सक्रिय हो गये। आपने बम बनाने में सहयोग दिया, गिरफ्तार हुये व 3 वर्ष का कारावास तथा 100/- रु0 का अर्थदण्ड भोगा। बाद में आप जबलपुर प्रवासी हो गये।

आ0- (1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-2, पृष्ठ-20, (2) आ0 दी0, पृष्ठ 39

श्री गुलाबचंद जैन

श्री गुलाबचंद, पुत्र-श्री रूपचंद का जन्म 1913 में म0प्र0 के रायपुर जिले में हुआ था। आपने माध्यमिक शिक्षा ही ग्रहण कर पाई। देश की स्वतंत्रता की रक्षा में तत्पर श्री जैन ने राष्ट्रीय आंदोलन में भाग लिया और 8 माह 13 दिन का कारावास भोगा

आ0- (1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-3, पृष्ठ-20

श्री गुलाबचंद जैन 'वैद्य'

श्री गुलाबचंद जैन ढाना, जिला-सागर (म0 प्र0) के निवासी हैं। आपके पिता का नाम श्री



वलजूराम था। अपना परिचय देते हुए आपने लिखा है कि 'मैं राष्ट्रप्रेम की पवित्र भावना से प्रेरित होकर राष्ट्रीय कांग्रेस से सन् 1930 से ही जुड़ गया था परन्तु सक्रिय कार्य करने का मौका 1941-42 के दौरान मिला। उन दिनों स्वराज्य की तूफानी लहर चल रही थी। प्रभात फेरियां, झंडा वंदन, सभायें, चरखा कातने आदि के प्रोग्राम होते रहते थे। अंग्रेजी सरकार ने गांव-गांव में डिफेंस सोसायटियां बनाकर जनता के दमन का कार्यक्रम बनाया था। सरकार तो जैसे मानों बौखला ही गयी थी। स्वराज्य का नाम लेने पर लाठी गोली का सामना हो जाता था।

एक दिन हमारे ग्राम में डिफेंस के नाम पर सभा हुई, गांव के सभी प्रतिष्ठित आदमी बुलाये गये सबको कुर्सियां डाली गयीं, बीच में अंग्रेज डी0एस0पी0 बैठा, उसने मेरा नाम लेकर पुकारा और कहा-"टुम गांव का गुंडा हाय। टुम लोगों को अंग्रेजी सरकार के खिलाफ भड़काता हाय, अखबार सुनाता हाय, और अफवाहें फैलाता हाय। हम तुम्हारा गर्दन टोड़ डेगा।"

में भी जवाब देने वाला था पर लोगों ने रोक दिया। इसके बाद सभा भंग कर दी गई। उन दिनों मेरे मित्र व सहयोगी भूमिगत थे।

मेरे मित्र पं0 जुगलकिशोर उन दिनों अक्सर मेरे यहां ठहरा करते थे। एक रोज जब वह मेरे यहां थे तो किसी ने इसकी सूचना पुलिस को दे दी। हम लोगों को पुलिस के आने का पता लगा तो हम लोगों ने सभा करके जुलूस निकाल कर गिरफ्तार होने की योजना बनाई। एक घंटे में सभा-स्थल भर गया, भाषण होने लगा। पुलिस आई और सभा रोककर, हम सबको गिरफ्तार कर पुलिस चौकी ले गई। जनता ने पुलिस पर पत्थर बरसाना शुरू कर दिया। पुलिस ने भी डंडे संभाले, कई पुलिस वालों और जनता को भी चोटें आयीं, पुलिस ने मुझे मुखिया बनाकर कुछ और आदमियों के साथ चालान कर दिया और अंत में इस केस में मुझे 6 माह का कारावास और 50 रु0 अर्थदंड हुआ। जेल में रस्सी बटना, चक्की पीसना आदि काम करना पड़ता था।'

अपना एक संस्मरण आपने इस प्रकार लिखा है-'एक रात जब मैं सागर जेल में था, आधी रात को जेल में खलबली मच गयी, कारण यह था कि गढ़ाकोटा से दो बसें भरकर सत्याग्रही आये थे, उनको जगह बनानी थी। कपड़ों का इंतजाम करना था। जैसे-तैसे सब हुआ। सत्याग्रहियों में जैन लोग ज्यादा थे, सब अपने साथ लोटा और पानी छानने का छन्ना लिये हुये थे। (बुन्देलखण्ड में यह परम्परा अब भी विद्यमान है) कुछ ही देर में सबको छोड़ दिया गया क्योंकि सागर जेल में जगह ही नहीं थी उस दिन जेल में बड़ा हो-हल्ला हुआ।'

वैद्य जी कवि हैं अत: आपका ओजपूर्ण गायन लोगों में राष्ट्रीय गीत की तरह गूंजने लगता था। उस समय अनेक पत्र-पत्रिकाओं में आपकी राष्ट्रीय प्रेम से सम्बन्धित सहस्राधिक कवितायें छपीं। एक गीत की कुछ पंक्तियां इस प्रकार हैं-

'जेल गांधी गये हैं हमारे लिये,
फिक्र हमको भी उनके छुड़ाने की है।
दिल में सच्ची लगन देश की हो लगी
क्या उल्फत फकत मुंह दिखाने की है।।
चक्र चलता है तो उसको चलने भी दो,
फिक्र हमको तो चर्खा चलाने की है।
काम कुछ तो करो देश के वास्ते,
कोई सूरत तो फिर मुंह दिखाने की हो।।'

आ0- (1) जै0 स0 रा0 अ0, (2) स्व0 प0

श्री गुलाबचंद जैन 'हलवाई'

'हलवाई' उपनाम से विख्यात श्री गुलाबचंद जैन, पुत्र-श्री वृन्दावन का जन्म 1920 में पिण्डरई, जिला- मण्डला (म0प्र0) में हुआ। 1940 के व्यक्तिगत सत्याग्रह में आपने सक्रिय भाग लिया पर गिरफ्तार नहीं किये जा सके, पर 1942 के आन्दोलन में तोड़-फोड़ करने के कारण आप गिरफ्तार कर लिये गये और 2 वर्ष 4 माह का कारावास भुगतना पड़ा। आपके अग्रज श्री मुलायम चंद जैन भी 2 सित0 1942 से 1 मार्च 1943 तक जेल में रहे।

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-1, पृष्ठ-206, (2) जै0 स0 रा0 अ0

श्री गुलाबचंद सिंघई

दमोह (म0प्र0) के श्री गुलाबचंद सिंघई, पुत्र-श्री राजाराम का जन्म 1923 में हुआ। आपने माध्यमिक तक शिक्षा ग्रहण की। आप विद्यार्थी जीवन से ही स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय हो गये थे। 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में जबलपुर और सागर में 9 माह 10 दिन का कारावास तथा 50/ रुपये का अर्थदण्ड आपने भोगा।

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग 2 , पृष्ठ 81

श्री गुलाबचंद सेठ

पिण्डरई, जिला-मण्डला (म0प्र0) के श्री गुलाबचंद सेठ, ग्राम के प्रतिष्ठित व्यक्ति रहे पर देश प्रेम के कारण आप आजादी की लड़ाई में कूद पड़े और 1942 के आंदोलन में 6 माह की जेल यात्रा की

आ0-(1) जै0 स0 रा0 अ0

श्री गेंदमल देशलहरा

श्री गेंदमल देशलहरा (जैन), पुत्र-श्री हंसराज जैन का जन्म 15 अगस्त 1902 ई0 को हुआ। आप ग्राम नेवारी (गुण्डरदेही), जिला- रायपुर (म0प्र0) के निवासी हैं।

1920 में महात्मा गांधी के आदेशानुसार आपने अंग्रेजी शिक्षण का बहिष्कार कर दिया और कांग्रेस कार्यों में लग गये। 1930 में राष्ट्रीय कार्यों के उपलक्ष्य में सरकार द्वारा 1 साल सख्त कैद की सजा एवं 50/ जुर्माना की सजा आपने पाई और सेन्ट्रल जेल रायपुर में रहे। विदेशी वस्त्रों का बहिष्कार कर दुर्ग में स्वदेशी वस्त्रों का कारखाना (खादीभण्डार का कार्य) आपने प्रारम्भ किया। आपने रामगढ़ कांग्रेस की पैदल यात्रा की और आठ माह तक प्रान्तों का पैदल भ्रमण कर कांग्रेस का प्रचार-कार्य किया।

आ0 (1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग 03, पृष्ठ-109 (2) जै0 स0 रा0 अ0

श्री गेंदमल पोखरना

श्री गेंदमल पोखरना (ओसवाल) का जन्म रामपुरा, जिला-मन्दसौर (म0प्र0) में हुआ। श्री रामलाल पोखरना, श्री मधुप, श्री रामबिला, किशन लाल पोरवाल आदि आपके प्रमुख साथियों में से थे। इन्होंने इंदौर तथा रामपुरा दोनों स्थानों पर आंदोलन में भाग लिया। अनेक बार पुलिस की मार खाई, किन्तु प्रदर्शन करने में कभी पीछे नहीं रहे। पोखरना जी को भारत छोड़ो आंदोलन के मध्य इंदौर में गिरफ्तार किया गया व सेन्ट्रल जेल इंदौर में रखा गया।

आ0 (1) स्व0 स0 म0, पृ0 137

श्री गेंदालाल छाबडा

जयपुर (राजस्थान) के श्री गेंदालाल छाबड़ा ने 1930 में, राष्ट्रसेवा में ही जीवन भर कर्मठ रहने की प्रतिज्ञा की थी। उन्होंने सभी आन्दोलनों में भाग लिया, वे श्री कपूरचंद पाटनी के घनिष्ठ सहयोगी रहे हैं। अनेक बार पुलिस ने उन्हें पकड़ा (पर अपराध प्रमाणित न कर पाने के कारण) और 50-60 मील दूर जंगलों में छोड़ दिया। अनेक यातनायें भी उन्हें सहन करनी पड़ीं।

आ0- (1) रा0 स्व0 से0, पृ0-605

श्री गेंदालाल जैन

इंदौर (म0प्र0) के गेंदालाल जैन, पुत्र- श्री बिरदीचंद जैन का जन्म 1 मार्च 1927 को हुआ। 1942 में आजादी के आन्दोलन में भाग लेने पर दिनांक 23-2-43 से 23-6-43 तक आपको इन्दौर जेल में रखा गया।

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-4, पृष्ठ 17

श्री गेंदालाल जैन

इन्दौर (म0प्र0) के श्री गेंदालाल जैन, पुत्र-श्री शैतानमल जैन का जन्म 28 जून 1918 को हुआ। 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में आपने सक्रिय योगदान दिया। आन्दोलन के दौरान ही आपको गिरफ्तार कर लिया गया और 9 सितंबर 42 से 25 जनवरी 43 तक के कारावास की सजा आपको दी गई। आपके अनुज श्री आनन्दी लाल ने भी जेलयात्रा की थी।

आ0 (1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-4, पृष्ठ 18

श्री गोकलचंद जैन

सिलवानी, जिला-रायसेन (म0प्र0) के श्री गोकलचंद जैन, पुत्र-श्री जवाहरलाल जैन का जन्म 1918 में हुआ। 1949 के भोपाल राज्य विलीनीकरण आन्दोलन में आपने भाग लिया तथा एक माह के कारावास की सजा भोगी।

आ0 (1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग 5, पृष्ठ-71

श्री गोकुलचंद जैन

श्री गोकुलचंद जैन का जन्म लडवारी, जिला-ललितपुर (उ0प्र0) में हुआ। आपके पिता का नाम श्री दमरू जैन था। 1941 के आंदोलन में एक माह की सजा एवं 100 रु0 जुर्माना का दण्ड स्वीकार कर आपने देश को आजाद कराने में सहयोग दिया।

आ0-(1) र0 नी0, पृ0-100

श्री गोकुलचंद जैन

श्री गोकुलचंद जैन मेघपुर, जिला-आगरा (उ0प्र0) निवासी थे। 1942 के आन्दोलन में आपने सक्रिय भाग लिया, गिरफ्तार हुए और एक साल की कड़ी सजा भोगी। आप मथुरा ब्लाक के, ब्लाक प्रमुख भी रहे।

आ0-(1) प0 इ0, पृष्ठ-142, (2) गो0 अ0 ग्र0, पृ0-220

श्री गोकुलचंद जैन

जबलपुर (म0प्र0) के श्री गोकुलचंद जैन, पुत्र-श्री नोखेलाल ने 1932 के आन्दोलन में भाग लिया तथा 5 माह के कारावास एवं 30 रु0 अर्थदण्ड की सजा पाई।

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-1, पृष्ठ-42

श्री गोकुलचंद सिंघई

दमोह (म0प्र0) के श्री गोकुलचन्द सिंघई वकालत का व्यवसाय करते थे, उन पर अमर शहीद चौधरी भैयालाल का बड़ा प्रभाव था, उन्हीं के सान्निध्य में आपने खादी आश्रम चलाना, गौरक्षा, शराबबंदी आदि कार्य सक्रियता से किये। सिंघई जी की बुद्धि कुशाग्र थी अत: दमोह में शासकीय अधिकारी तक उनसे सलाह लेने आते थे। अखाड़ेबाजी के शौकीन सिंघई जी ने दमोह में सभी अखाड़ों का संगठन बनाकर दशहरा महोत्सव प्रारम्भ कराया था। 1931 में आप गिरफ्तार हुए और रायपुर जेल भेज दिये गये। 1933 में 58 वर्ष की उम्र में आपका निधन हो गया।

कहा जाता है कि 1916 में अंग्रेज पुलिस कप्तान दमोह जेल के सामने पुलिस लाइन के बगल के बंगले में रहता था। उसने आदेश निकाला कि 'इस रोड़ के कोई बैलगाड़ी नहीं निकलेगी। हमारी नींद में बाधा आती है।' सिंघई जी ने उसका विरोध किया, कई आम सभायें कीं, जिससे वह अफसर इनका दुश्मन बन गया और आपको मार डालने के लिए एक भयंकर अपराधी को जेल से मुक्त कर दिया। दूसरे दिन जब सिंघई जी साइकिल पर उस रास्ते से जा रहे थे, तब उस कैदी ने उन्हें रोका और पैर पकड़कर कप्तान का हुक्मनामा सुनाकर क्षमा मांगी। यह सिंघई जी के व्यक्तित्व का ही प्रभाव था। अन्त में वह रास्ता हर प्रकार के वाहनों के लिए खोल दिया गया।

आ0- (1) प0 जै0 इ0, पृ0 519, (2) श्री सन्तोष सिंघई द्वारा प्रेषित परिचय

श्री गोपालदास जैन

पेशे से व्यापारी किन्तु स्वतंत्रता संग्राम में अपनी आहुति देने से पीछे न हटने वाले श्री गोपालदास जैन का जन्म 1912 में साढूमल, जिला-ललितपुर (उ0प्र0)में हुआ, आपके पिता का नाम श्री सवाई जी था। 1941 में व्यक्तिगत आंदोलन में भाग लेकर डी0आई0 आर0 में 9 माह की सजा आपने भोगी। 1942 में 'करो या मरो' आन्दोलन में भी आप पीछे नहीं रहे, फलत: पुन: 1942 में 1 वर्ष की जेलयात्रा की।

आ0-(1) र0 नी0, पृ0-46

श्री गोपाललाल कोटिया

मृत्यु से पूर्व दाने-दाने को मोहताज और मृत्यु के बाद ससम्मान राजकीय शोक के साथ अन्त्येष्टि, यही दशा रही है इस देश के स्वातन्त्र्य सैनिकों की। श्री गोपाल लाल कोटिया इसके जीते-जागते उदाहरण हैं।

श्री गोपाललाल कोटिया का जन्म पौष शुक्ल पूर्णिमा वि0 सं0 1940 (1883 ई0) को वैभवशाली धन-सम्पन्न परिवार में, श्री केसरीसिंह कोटिया के घर बूंदी (राजस्थान) में हुआ, व्यायाम के विशेष शौकीन गोपाललाल जी 5 किलो दूध पीकर प्रतिदिन जन-जागृति की योजनाएं बनाया करते थे। उनका वैभव उन्हें अपने में अवलिप्त न कर सका, वैभव सम्पन्न परिवार को लात मारकर आप 15 वर्ष की उम्र में समाज सेवा हेतु निकल पड़े। उसी उम्र में एक पुस्तकालय खोला और लोगों को घर-घर जाकर नि:शुल्क पढने की प्रेरणा देने लगे, गरीबों की सहायता उनका मिशन बन गया।

बंग-भंग के विरोध में आन्दोलन प्रारम्भ होने पर आपने अपने विदेशी वस्त्र आग में जला दिये और स्वदेशी का प्रण किया, जो जीवन के अन्त तक चलता रहा। जब इतने से संतोष न हुआ तो बंम्बई गये और वहाँ से पूना चले गये। पूना में श्री माधव राज सप्रे से आपकी मुलाकात हुई और वहीं आजन्म नि:स्वार्थ देशसेवा का प्रण लिया, क्रान्तिकारी होने का प्रशिक्षण भी वहीं पाया। लोकमान्य तिलक, वीर सावरकर, ठाकुर केसरी सिंह, श्री अर्जुन लाल सेठी, श्री विजय सिंह पथिक आदि से आपका सम्पर्क सप्रे जी ने ही कराया था। कोटिया जी ने क्रान्तिकारियों को आर्थिक सहायता और हथियार के क्रय में अपना धन लगाना श्रेयस्कर समझा, उनकी क्रान्तिकारी गतिविधियाँ चलती रहीं। पूज्य बापू के सम्पर्क में आने पर आपने क्रान्तिकारी रास्ता छोड़कर अहिंसक रास्ता अपनाया, पर अपने उग्र स्वभाव को एकदम नहीं छोड़ सके।

1920 में नरकेसरी श्री विजयसिंह पथिक बूंदी पधारे और आपके घर रहे। उन्हीं के हाथों कोटिया जी ने प्रजामण्डल का उद्घाटन कराया। कोटिया जी प्रजामण्डल के अध्यक्ष थे। पथिक जी ने बूंदी राज्य के बरड़ तथा मेवाड़ के बिजौलियाँ इलाके में किसानों के आन्दोलनों का सूत्रपात किया था। आन्दोलनों में सहभागिता के कारण बूंदी राज्य ने पं0 नयनूराम शर्मा और कोटिया जी को बूंदी कैदखाने में कैद कर दिया और कड़ी यातनायें दीं। पैरों में दस-दस सेर की बेडियाँ डालीं गईं और खाने को सड़े जौ की रोटियाँ दी गईं। इस तरह तीन वर्ष तक बिना मुकदमें के ही आपको कैद में रहना पड़ा, कोटिया जी की सारी सम्पत्ति जब्त कर ली गई और जबरदस्ती यह लिखवाने का प्रयास किया गया कि 'यह सम्पत्ति सरकारी कर्जे की अदायगी में दी जाती है।'

जेल से रिहा होने पर कोटिया जी को बूंदी राज्य से निर्वासित कर दिया गया, फिर भी वह चोरी-छिपे बूंदी जाते रहे। 1942 के आंदोलन में भी आपको गिरफ्तार कर एक वर्ष की सजा दी गई और रिहा होने पर पुन: बूंदी राज्य से निर्वासित कर दिया गया।

1940 में आपने कोटा में छात्रों का एक छात्रावास खोला था, जिसमें क्रान्ति की शिक्षा दी जाती थी। 1944 में कोटा में 144 धारा तोड़ने पर भी आप सात दिन जेल में रहे थे। कोटा व बूंदी में प्रजामण्डल की स्थापना आपने ही की थी।

महात्मा गांधी के बलिदान के बाद कांग्रेस में बढ़ रही अवसरवादिता से खिन्न होकर कोटिया जी ने कांगेस व राजनीति से सन्यास ले लिया।

कोटिया जी विपुल सम्पत्ति के मालिक थे। उस जमाने में उनके पास सिनेमाहाल, कोटा व केशवराम पाटन में भारी जमीन तथा बूंदी का वर्तमान तहसील भवन उन्हीं का था। देशहित के लिए यह सब कुछ न्यौछावर करने में वे जरा भी नहीं हिचकिचाये। उनका एक पुत्र नवलखचंद व तीन पुत्रियाँ थीं। जब तक पुत्र ने होश सम्हाला, गोपाल लाल जी सब कुछ होम कर चुके थे। उनके पुत्र को घर का खर्च चलाने के लिए एक टेलर मास्टर मौहम्मद के यहाँ नौकरी करनी पड़ी। कोटिया जी की पुत्रवधु ने श्री महेशकुमार जैन, बूंदी को एक साक्षात्कार में बताया था 'मेरे श्वसुर जी को जब

सरकार पकडती थी तो कंजरों (एक आपराधिक जाति विशेष) के साथ रखती थी व बहुत भारी बेडियाँ पहनाकर रखा जाता था। बेडियों के निशान व घाव उनको मृत्यु तक भोगना पड़े। उनके घाव पूरी जिन्दगी नहीं भरे थे, घावों पर हमेशा पट्टी बांधे रहते थे। आर्थिक परेशानी व सरकारी उपेक्षा के कारण इलाज नहीं हो पाया। हाथों की अंगुलियाँ हथेली की तरफ मुड़ गईं थीं।'

1973 में प्रकाशित 'राजस्थान में स्वतंत्रता संग्राम के सेनानी' ग्रन्थ में पृष्ठ 117 पर श्री सुमनेश जोशी ने 'दधीचि ऋषि की अंतिम आकांक्षा' शीर्षक में उनके संबंध में लिखा है-'इस समय भी कोटिया जी देशभक्ति में सर्वस्व अर्पण करने को उद्यत हैं। धन तो उनके पास है नहीं परन्तु देश की रक्षार्थ दधीचि ऋषि की तरह भक्ति पूर्वक अपनी अस्थियाँ देने का उपयोग वे देश की सभ्यता और अखण्डता की रक्षा के लिए करना चाहते हैं। यही उनकी हार्दिक कामना है।' इससे पूर्व जोशी जी पृष्ठ-115 पर लिखते हैं-'कोटिया जी आध्यात्मिक साम्यवादी हैं, वे फिलासफर हैं, और उनका रहन-सहन भी दार्शनिकों जैसा ही है। लेकिन इस जमाने में, जबकि बुलबुलों को उल्लू न होने का गम है, श्री कोटिया जी जैसे व्यक्ति आप से आप विस्मृति के गर्भ में छिपते चले जा रहे हैं।'

हाड़ोती नागरिक मोर्चे की ओर से 15 अगस्त 1972 को कोटिया जी का सार्वजनिक अभिनन्दन किया गया था। इस दिन आपने नयापुरा (कोटा) स्थित शहीद स्मारक पर राष्ट्रीय ध्वज फहराया था। कोटिया जी के निधन की सही तिथि ज्ञात नहीं पर श्री महेश कुमार जैन के आलेख के अनुसार 1975 के लगभग कोटिया जी इन्दिरा गांधी के शासन काल में जयपुर रैली में उनसे मिलने गये थे, जहाँ उनकी मृत्यु हो गई। इन्दिरा जी के आदेश पर जयपुर में राजकीय सम्मान के साथ जुलूस निकाला गया और बाद में बूंदी में भी जुलूस निकालकर राजकीय सम्मान के साथ अन्तिम संस्कार किया गया।

आ० (1) रा० स्व० से०, पृ० 115-117, (2) श्री महेशकुमार जैन (बरमुण्डा) द्वारा प्रेषित परिचय।

श्री गोपीचंद जैन

आपका जन्म 1912 के लगभग हुआ। राष्ट्रीय आन्दोलन में आप सादूमल, जिला-ललितपुर (उ0प्र0) के प्रतिनिधि के रूप में सक्रिय रहे। 1941 व 42 के आन्दोलनों में आपने एक-एक वर्ष का कारावास भोगा।

आ०- (1) प० जै० इ०, पृ० 473, (2) जै०स०रा०अ०

श्री गोपीलाल जैन

सागर (म0प्र0) के श्री गोपीलाल जैन, पुत्र-श्री किशोरीलाल का जन्म 1914 में हुआ। आपने 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में 6 माह का कारावास भोगा।

आ०- (1) म0प्र0 स्व० सै०, भाग-2, पृष्ठ-20, (2) आ० दी०, पृष्ठ-40

श्री गोर्धनदास जैन

पर्युषण पर्व, वी0 नि0 सम्वत् 2522 (1996 ई0) में अपने आगरा प्रवास के दौरान दि0 25-9-96 को एक भव्यात्मा के दर्शन का सौभाग्य मिला। वृद्धावस्था के कारण जीर्ण होती देह, चेहरे पर झुर्रियां पर वाणी में ओज, और आज भी कुछ कर गुजरने की अदम्य लालसा। ये थे श्री गोर्धनदास जैन, जो अपनों के बीच 'मास्साब' या 'मास्टर साहब' उपनाम से विख्यात हैं।



श्री गोर्धनदास जैन का जन्म कार्तिक शुक्ल एकम् वि0 सं0 1970 तदनुसार 30 अक्टूबर 1913 ई0 को

गुदड़ी मंसूर खाँ, आगरा (उ0 प्र0) में पिता श्रीचंद एवं माता जीवनी बाई के यहाँ हुआ। अभी वे 4 वर्ष के बालक ही थे कि पिता का देहावसान हो गया, तब पितृव्य (चाचा) सुखराम जी ने आपका लालन-पालन किया। 1931 में हाई स्कूल परीक्षा पास करने के बाद आप श्री महावीर दि0 जैन स्कूल मोती कटरा (आगरा) में अध्यापक और तीन वर्ष बाद वहीं प्रधानाचार्य हो गये। तभी अपनों ने 'मास्साव' नाम दिया जो आज तक चला आ रहा है। 1930 में श्री जैन की पहली कविता 'प्रेम से विजय' पल्लीवाल जैन, लेखमाला में छपी, बाद में अनेक लेख आपने लिखे। 1937 में आप प्रसिद्ध साहित्य प्रेमी महेन्द्र जी के संस्थान- 'साहित्य रत्न भण्डार' से जुड़ गये, तभी 'नागरी प्रचारिणी सभा' से सम्पर्क हुआ, साथ ही बाबू गुलाबराय, डॉ0 सत्येन्द्र जैसे साहित्यकारों के सम्पर्क में भी आये।

1930 के आन्दोलन के समय आप 'जैन सेवा मण्डल' के अधिकारी थे। आपकी प्रेरणा से 'आगरा जैन मण्डल' ने यह निश्चय किया था कि जैन मंदिरों में सभी दर्शनार्थी स्वदेशी वस्त्र पहनकर ही देव-दर्शन को जावें तथा पूजन हेतु भी स्वदेशी वस्त्रों का प्रयोग करें। 1940 के आन्दोलन में भी आपने भाग लिया था। 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में आगरा आन्दोलन का नेतृत्व महेन्द्र जी के हाथ में था। विशेषत: समाचार-पत्रों के माध्यम से वे जन-जागृति ला रहे थे। ऐसे समय में गोर्धनदास जी ने एक साइक्लोस्टाइल समाचार पत्र का सम्पादन और प्रकाशन स्वयं किया, जिसका नाम 'आजाद हिन्दुस्तान' था। उस समय जिसके पास इस पत्र की एक भी प्रति पाई जाती थी, उसे कठोर दण्ड दिया जाता था। गोर्धनदास जी भूमिगत रहकर इस पत्र का संचालन कर जन-जागृति करते रहे, पर अन्तत: 8 मार्च 1943 को गिरफ्तार कर आगरा जेल भेज दिये गये। 10 जून 1944 तक आपको जेल की दारुण यातनाऐं भोगनी पड़ीं।

आपके जेल जीवन का एक संस्मरण है। आपका नित्य देवदर्शन-पूजन का नियम था। पुलिस आपको रिमाण्ड पर लेना चाहती थी। जब पुलिस आपको लेने जेल पहुँची, आप पूजन कर रहे थे, पूजन के बाद देखा! अचानक पुलिस गायब थी। इस प्रकार पूजा के प्रभाव से आप बच गये। श्री जैन के जेल जीवन के साथी प्रसिद्ध स्वाधीनता सेनानी श्री चिम्मनलाल जैन ने लिखा है- 'आगरा में हर महीने की नौ तारीख को गिरफ्तारी तथा बम विस्फोट का कार्यक्रम चलता था। मास्टर साहब ने विस्फोट के लिए एक बम एम0एससी0 के विद्यार्थी हुकुमचन्द जैन को दिया, जो सेठ गली के सिटी पोस्ट आफिस में बम का पार्सल करा आया था। जब वह फटा तो आधा फर्नीचर उड़ गया था। मास्टर साहब के भेजे एक विद्यार्थी ने आगरा कालेज के प्रिन्सीपल की मेज की दराज में बम रखा था, जिससे मेज छत तक उड़कर टूट गई थी। मास्टर साहब ने जैन मन्दिरों से अखबार का वितरण कराया, जिसमें मेरी माँ, और बहिन दो-दो, तीन-तीन घण्टे पैदल चलकर अखबार यथास्थान पहुँचाती थीं।' (गो0 अ0 ग्र0, पृ0-123)

इसी तरह स्वाधीनता सेनानी श्री रोशन लाल गुप्त 'करुणेश' ने श्री जैन के सन्दर्भ में लिखा है-

"(महेन्द्र जी के गिरफ्तार होने के बाद 'आजाद हिन्दुस्तान के प्रकाशन का दायित्व) मास्टर गोर्धनदास के सबल कंधों पर आ पड़ा। श्री गोर्धनदास साहित्यिक परिवेश में परिपक्व हो चुके थे। .... वे विगत सत्याग्रह संग्रामों में 'सिहंनाद' पत्र निकाल चुके थे। उसे बांटने वाले अनेक कार्यकर्ता पुलिस प्रशासन के कोप-भाजन बन चुके थे। खुफिया विभाग के लोग हर कोशिश करने पर भी उसके प्रकाशन का पता नहीं लगा सके थे। उसी प्रणाली को -'भारत छोड़ो आन्दोलन' में श्री जैन ने अपनाया। 'आजाद हिन्दुस्तान' के बण्डल न जाने कहाँ से कहाँ पहुँचा दिये जाते और खुफिया विभाग के लोग देखते ही रह जाते। सन् 1943

की आठ मार्च को सरकार ने श्री गोर्धनदास को घर दबोचा। आगरा के केन्द्रीय कारावास में जब उन्होंने प्रवेश किया तो बारह ताला बैरकों में उनकी गिरफ्तारी का समाचार बिजली की तरह फैल गया।........ उनकी गिरफ्तारी का पता चलते ही सैकड़ों की संख्या में भीड़ कोतवाली के दरवाजे पर जमा हो गई।.........आगरा के केन्द्रीय कारागार में अनेक क्रान्तिकारी भी थे। श्री जैन सहित दर्जनों बन्धुओं के गले में पाँचवें कोलम का प्रश्न-चिह्न लगाकर पट्टा लटका दिया गया था। यह गर्म अफवाह फैला दी गई थी कि जापानी आक्रमण के समय कांग्रेस जनों ने विद्रोह किया है। जिनके गले में तौक डाल दिया गया है, उन्हें शीघ्र ही लाहौर के किले में (ले) जाकर गोली मार दी जायेगी।" (गो0 अ0 ग्र0, पृ0-155)

श्री जैन धार्मिक और सामाजिक क्षेत्रों में सदैव अग्रणी रहे हैं वे मुनिराजों के परम भक्त हैं। सदैव खादी के वस्त्रों को उपयोग करते हैं और रेशम-चमड़े जैसी हिंसक वस्तुओं के पूर्णत: त्यागी हैं। आप 'आगरा होलसोल कन्ज्यूमर्स' के प्रबन्धक, 'दि0 जैन शिक्षा समिति', आगरा के 20 वर्ष से महामंत्री 'आगरा कालेज' व 'नेहरू स्मारक' के ट्रस्टी आदि पदों पर रहे हैं।

जैन पत्रकारिता से आप आरम्भ से ही घनिष्ठ रूप से जुड़े रहे हैं। आप 'पल्लीवाल जैन' के सम्पादक/प्रकाशक, 'जैनदर्शन' के प्रबन्धकर्ता, 'दिगम्बर जैन' के सम्पादक आदि पदों पर रहे हैं। 1963 में आपने 'अमर जगत' नाम से अपना स्वयं का पत्र निकाला जो आज भी आपके पुत्र/पौत्र चला रहे हैं। जै0स0रा0अ0 के अनुसार "1942 के आन्दोलन में 'पल्लीवाल जैन' पत्र, प्रेस बन्द होने से बन्द हो गया था। 1947 तक सरकार ने उसे पुन: प्रकाशन की अनुमति नहीं दी थी।"

जन्मपर्यन्त जिन-पूजा और स्वाध्याय का नियम लेने वाले श्री जैन 83 वर्ष की उम्र में भी नित्य पूजा करते देखे जाते हैं। अनेक धार्मिक आयोजन आपकी ओर से हुए है। अनेक बार आपका सम्मान राज्य/नगर की ओर से हुआ है। हाल ही में अक्टूबर 1996 में 'आगरा दि0 जैन परिषद्' और 'श्री दि0 जैन शिक्षा समिति, आगरा' की ओर से एक वृहत् अभिनन्दन ग्रन्थ आपको भेंट किया गया है।

'आगे आने वाली पीढ़ी से आप क्या कहना चाहेंगे'। मेरे यह कहने पर आपने कहा कि 'मैं तीन सूत्र नई पीढ़ी को अपने अनुभवों से देना चाहूँगा- (1) दृढ़ संकल्पवान व्यक्ति के मार्ग की बाधायें स्वयमेव दूर होती रहती हैं। (2) अपने धर्म और इष्ट के प्रति अटूट आस्था सभी विपत्तियों को दूर करती है। (3) देश और समाज की सेवा ऐसा कार्य है, जिसमें मनुष्य को विरोध और सहयोग प्राप्त होते हैं। समाजसेवी को विरोध से न घबराते हुए सहयोगियों से सहयोग प्राप्त करना चाहिए।'

आ0 (1) गो0 अ0 ग्र0, (2) जै0 स0 रा0 अ0, (3) प0 इ0, पृ0-141 (4) साक्षात्कार 25-9-1996

श्री गोविन्ददास जैन

श्री गोविन्ददास जैन का जन्म 8-11-1909 को पाली, जिला-ललितपुर (उ0प्र0) में हुआ। आपके



पिता का नाम श्री फूलचंद था। आप प्रसिद्ध जैन कवि श्री हरिप्रसाद 'हरि' के बड़े भाई हैं।

श्री रघुनाथ विनायक धुलेकर से प्रेरणा पाकर आपने क्रान्ति स्थल पाली के गौरव को बनाए रखा। 1930 में विदेशी वस्त्रों का बहिष्कार किया और जल-विहार (एक जैन समारोह) के दिन पाली की गली-गली में घूमकर पिकेटिंग की। अंग्रेज सरकार के स्थानीय चाटुकारों के आतंक के प्रति जनता में संघर्ष की ज्वाला फूंकी। 1936 के

जंगल सत्याग्रह में आपके साहस और धैर्य की पाली की जनता ने भूरि-भूरि प्रंशसा की थी। 1941 के व्यक्तिगत आन्दोलन में 6 माह की सजा आपने झांसी एवं रायबरेली की जेलों में काटी। जेल में अंग्रेजी सरकार के विरोध में अनेक गीतों की रचना आपने की थी। अब भी आप संगीत के क्षेत्र में आध्यात्मिक गीतों से प्रभावना करते रहते हैं। आपने अपने जीवन का एकमात्र लक्ष्य समाज सेवा बनाया है।

आ0- (1) र0 नी0, पृष्ठ 27, (2) जै0स0रा0अ0 (3) डॉ0 बाहुबलि कुमार द्वारा प्रेषित विवरण

श्री गोविन्ददास सिंघई

गांधीवादी विचारधारा से प्रभावित सिंघई जी का जन्म 19-5-1913 को ललितपुर (उ0 प्र0) में हुआ। आपके पिता श्री पन्नालाल जी थे। 1932 में आप एक वर्ष तक जेल में रहे। परतंत्रता काल में आपने सेनानियों को यथाशक्ति सहयोग प्रदान किया। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् भी आप गांधीवादी विचारधारा को फलता-फूलता देखने की कामना करते हुए कार्य करते रहे हैं।

आ0- (1) र0 नी0, पृ0-26

श्रीमती गोविन्ददेवी पटुआ

स्वतंत्रता की वेदी पर सहर्ष कष्ट झेलने वाली वीर महिलाओं में कलकत्ता की श्रीमती गोविन्ददेवी पटुआ अग्रगण्य थीं। गांधी जी ने जब 'असहयोग' का शंख फूंका तब श्रीमती पटुआ ने बड़ा बाजार, कलकत्ता की विदेशी वस्त्रों की दुकानों पर धरना देने वाले जत्थों का नेतृत्व किया। 1928 में जब साईमन कमीशन भारत आया तो उसका प्रबल प्रतिरोध हुआ एवं बहिष्कार किया गया। श्रीमती पटुआ इस बहिष्कार में अग्रणी थीं। 1942 के करो या मरो आन्दोलन में भी वे अग्रणी रहीं, फलत: आपको गिरफ्तार कर लिया गया एवं जेल की यातनाऐं दी गईं।

आ0- (1) इ0 अ0 ओ0, भाग-2, पृष्ठ- 373

श्री गोविन्दराम जैन

आगरा (उ0 प्र0) के श्री गोविन्दराम जैन ने 1942 के आन्दोलन में भाग लिया था। पुलिस के अनुसार आप स्वाधीनता सेनानी श्री नेमीचंद के सहयोगी थे। सरकार आपके घर से एक मशीन के पुर्जा उठाकर ले गई थी और आपको 2 माह नजर बंद रखकर छोड़ दिया था।

आ0- (1) गो0 अ0 प्र0, पृ0-220, (2) जै0 स0 रा0 अ0, (3) उ0 प्र0 जै0 ध0, पृष्ठ-90

श्री गौतमप्रसाद गिल्ला

स्वयंसेवक के रूप में स्वतंत्रता संग्राम में भागीदारी निभाने वाले होशगाबांद (म0 प्र0) के श्री गौतमप्रसाद गिल्ला, पुत्र-श्री कन्हैयालाल जैन का जन्म 1 जनवरी 1920 में हुआ। 1938 से ही आप आन्दोलन में सक्रिय हो गये। 1940 में व्यक्तिगत सत्याग्रह के दौरान भोजन-व्यवस्था का भार आप पर डाला गया। आपने श्री प्यारेलाल गुरु व डेरिया जी के साथ शराब बंदी, किसान-संगठन आदि रचनात्मक कार्यों में भाग लिया। 1942 के आन्दोलन में गिल्ला जी ने दो बार जेल यात्रायें कीं। आप होशंगाबाद जेल में रहे। आपके भाई श्री बाबूलाल गिल्ला भी आन्दोलन में सक्रिय रहे थे।

आ0- (1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-5, पृ0-328, (2) स्व0 स0 हो0, पृ0-113

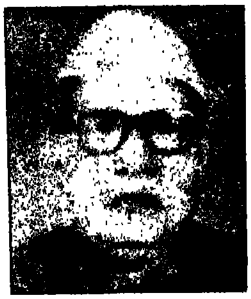
श्री चन्दनमल जैन

श्री चन्दनमल जैन, पुत्र-श्री फतेहचंद जैन का जन्म राजगढ़ (म0प्र0) में हुआ। आपने कक्षा 8 तक शिक्षा प्राप्त की। आप प्रजामंडल की यूनिट के अध्यक्ष भी रहे। स्वतंत्रता आंदोलन में कुल 25 दिन की सजा आपने भुगती।

आ0- (1) म0 प्र0 स्व0 सै0 5/112

श्री चन्दनमल कूमठ

श्री चन्दनमल कूमठ का जन्म 1914 में नारायणगढ़ (मन्दसौर) म0प्र0 में हुआ। आपके पिता



का नाम श्री मूलचंद कूमठ था। आपका मत था कि 'जब तक हम अपने देशवासियों में जागरण की भावना पैदा नहीं करेंगे, तब तक हमारे सत्याग्रह और आंदोलन उपयोगी सिद्ध नहीं हो सकते। अशिक्षा छुआछूत, कुरीतियां, सामाजिक रूढ़ियाँ और वर्गभेद आदि नहीं मिटाया गया तो हम कभी स्वराज्य नहीं ला सकते और यदि मिल भी गया तो उसे टिका नहीं सकते।'

प्रजामण्डलों के कार्यक्रमों को पूरे मनोयोग व योजनाबद्ध तरीके से चलाने में आप अपने साथियों में सदैव सराहे जाते थे। अफीम कटोत्री काण्ड में प्रजामण्डल के निर्देश पर विद्यार्थी जी के नेतृत्व में जब कूमठ जी ने गांव-गांव जाकर किसानों को संगठित किया और सरकार के विरुद्ध वातावरण बनाया तब सरकार तिलमिला उठी और खीजकर पुलिस ने विद्यार्थी जी व कूमठ जी को गिरफ्तार कर लिया। दो साल तक मुकदमा चला, बाद में दोनों को मनासा कोर्ट ने ससम्मान बरी करते हुए पुलिस को ताड़ना दी और भविष्य में इस प्रकार भूल नहीं दोहराने की हिदायत भी दी।

कूमठ सा0 ने श्री हार्टन के सम्मुख नारे लगाए थे कि 'हार्टनशाही मुर्दाबाद', 'लालफीताशाही मुर्दाबाद', 'विदेशी गोरे लंदन जाओ', 'भारत माता की जय', 'महात्मा गांधी की जय'। यह उस समय की बात है जब भानपुरा (म0प्र0) में पुलिस आंदोलनकारियां पर जुल्म ढा रही थी। हार्टन स्वयं गरोठ गये थे और वहाँ से लौट रहे थे।

कूमठ जी का साहसी व दबंग व्यक्तित्व त्याग-तपस्या एवं राष्ट्रधर्म से अभिषिक्त था। वे जेल गये और जेल से छूटते ही फिर पहले से भी अधिक जोश के साथ काम में जुट गये। उन्हें जितना भी तपाया गया वे उतने ही अधिक खरे होते गये। विद्यार्थी जी के साथ निमाड़ तथा कुछ समय तक झाबुआ क्षेत्र में भी आपने सेवा कार्य तथा जनजागरण का कार्य किया था।

आ0- (1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग 4, पृष्ठ 214, (2) स्व0 म0 म0, पृ0 58-59

श्री चन्द्रभूषण पुरुषोत्तम बानाईत

विधि स्नातक श्री चन्द्रभूषण पुरुषोत्तम राव बानाईत का जन्म ग्राम-साबंगा, तहसील-सौंसर, जिला-छिन्दवाड़ा (म0प्र0) में 7 जून 1919 को हुआ। आपके पिता श्री पुरुषोत्तम राव इस क्षेत्र के गणमान्य तथा प्रभावशाली व्यक्ति थे, वे लोकल बोर्ड के अध्यक्ष जीवन के आखिरी काल तक रहे, परिणामत: चन्द्रभूषण जी को राजनीति विरासत में मिली। पुराने म0प्र0 के नागपुर में 'राष्ट्रीय युवक संघ' नामक एक क्रान्तिकारी संगठन था। इसके माध्यम से चन्द्रभूषण जी पूज्य महात्मा गांधी, पंडित जवाहरलाल नेहरू, डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद, विनोबा भावे, काका कालेलकर, दादा धर्माधिकारी आदि व्यक्तियों के सम्पर्क में आये।

1942 में जब बानाईत जी लॉ कालेज में पढ़ते थे तब गांधी जी के आह्वान पर भारत छोडो आन्दोलन में सहभागी हुये। 1942 में ही नागपुर तेलनखेडी बमकाण्ड में आपको अभियुक्त बनाया गया, फलत: नागपुर जेल में ग्यारह माह तक बन्द रहे। जेल से छूटने के बाद 1943 में महाराष्ट्र के छात्रों का सम्मेलन आपने किया, जिसका उद्घाटन महाराष्ट्र के महान् क्रान्तिकारी नेता सेनापति बापड़ जी ने किया, इस सम्मेलन में यूनियन जैक जलाया गया था, परिणामस्वरूप पुन: आपकी गिरफ्तारी हेतु वारंट जारी किया गया, लेकिन

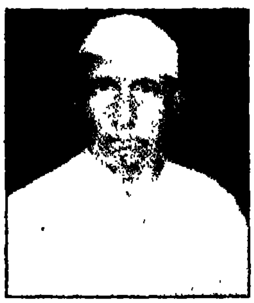
सरकार गिरफ्तार न कर सकी। 1946 में सम्पन्न 'अखिल भारतीय युवक सम्मेलन' के आप संयोजक तथा स्वागताध्यक्ष थे। इस सम्मेलन का उद्घाटन कांग्रेस अध्यक्ष डॉ0 पट्टाभिसीतारामैया ने किया था। आप 1948 में पंडित जी एवं श्री रफी अहमद किदवई की प्रेरणा से निर्मित 'अखिल भारतीय युवक कांग्रेस' के भी स्वागताध्यक्ष थे।

रूस में सम्पन्न विश्व युवक महोत्सव में पं0 जवाहर लाल नेहरू की प्रेरणा से भारत युवक समाज का एक प्रतिनिधि मण्डल भी गया था, जिसमें बानाईत जी भी थे। आप हंगरी और पोलेण्ड के युवकों के निमन्त्रण पर इन देशों में गये और भारत की सांस्कृतिक परम्परा को विशद् रूप से प्रस्तुत किया। आप सौंसर क्षेत्र जनपद पंचायत के अध्यक्ष रहे हैं। 'जनतन्त्र' (पाक्षिक पत्रिका) नागपुर के सम्पादक मण्डल के सदस्य भी आप रह चुके हैं लोकसेवा संघ के संयोजक के रूप में भी आपने काम किया है।

आ0 (1) स्व0 प0, (2) श्री रतन चंद जैन जबलपुर द्वारा प्रदत्त परिचय

श्री चन्द्रसेन जैन 'नेताजी'

'नेताजी' उपनाम से विख्यात, भिण्ड (म0प्र0) के श्री चन्द्रसेन जैन का जन्म पिता श्री ललित



बिहारी एवं माता श्रीमती रामश्री की बगिया में 1-1-1926 को हुआ। आप विद्यार्थी काल में ही पढ़ाई छोड़कर आन्दोलन में कूद पड़े, फलत: शिक्षा का क्रम टूट गया। आप ग्वालियर सार्वजनिक सभा स्टेट कांग्रेस के कार्यकर्ता बन गये।

1942 में प्रदर्शन के समय लाठी चार्ज में आपके बायें पैर के घुटने की हड्डी टूट गई, आप पकड़े गये। थाने में पुलिस ने गाँधी टोपी उतारने का आदेश दिया, पर आजादी के दीवाने ऐसे आदेशों की परवाह कहाँ करते, आपने टोपी नहीं उतारी, जिस पर पुलिस ने पिटाई की, शरीर पर चोटें आईं, जिनके निशान आज भी हैं। कम उम्र होने के कारण आपको छोड़ दिया गया, बाद में आप भूमिगत रहकर कार्य करते रहे। आपके साथियों में श्री अमर सिंह एवं रघुवीर सिंह कुशवाह के नाम प्रमुख हैं।

आप सोशलिस्ट पार्टी भिण्ड के नगरमंत्री, दिगम्बर जैन मंदिर परेट के अध्यक्ष, दिगम्बर जैन पार्श्वनाथ मंदिर के मंत्री आदि पदों पर हैं। प्रमुख समाज सेवी हैं। म0प्र0 शासन ने आपको सम्मानित किया है।

आ0-(1) स्व0 प0 तथा प्रमाण पत्र

श्री चम्पालाल फूलफगर

लाडनूँ नगरपालिका के जन्मदाता श्री चम्पालाल फूलफगर का जन्म 27 दिसम्बर 1905 को लाडनूँ (राजस्थान) के एक ओसवाल परिवार में हुआ। वे बचपन से ही सार्वजनिक कार्यों में भाग लेने लगे थे। लाडनूँ में निर्वाचित नगर परिषद् की स्थापना करवाने में उन्होंने अथक परिश्रम किया था। मारवाड़ लोकपरिषद् की स्थापना के बाद वे परिषद् के सदस्य बन गये और उसकी संगठनात्मक प्रवृत्तियों में भाग लेने लगे। वे लोकपरिषद् के आन्दोलन में भाग लेने की तैयारी कर चुके थे कि अकस्मात् 21 अक्टूबर 1942 को उनका देहावसान हो गया। लाडनूँ के एक मार्ग का नाम उन्हीं के नाम पर 'चम्पालाल फूलफगर मार्ग' रखा गया है।

आ0- (1) रा0 स्व0 से0, पृ0-717

श्री चाँदमल चोरड़िया

अन्याय के विरुद्ध जन्मजात बागी श्री चाँदमल चोरड़िया का जन्म 1874 में आगरा (उ0प्र0) में हुआ। आपके पिता का नाम बाबू गुलाबचंद था, जो आगरा में जवाहरात का व्यवसाय करते थे और जिनकी फर्म

की बडी साख थी। चाँदमल जी बड़े निरभिमानी और विचारशील वकील थे। आप सदा सच्चे मुकदमे ही लेते थे। आपके इस सिद्धांत से प्रभावित होकर जज लायड् साहब ने लिखित रूप में आपकी प्रशंसा की थी। अक्सर आपको विवाद निपटाने हेतु कमिश्नर नियुक्त किया जाता था।

चोरड़िया जी गांधी जी के अनन्य भक्त थे, आप जीवन पर्यन्त खद्दरधारी रहे। आगरा में कांग्रेस के पाँच वर्ष तक प्रधान रहे। 1921 से आप गाँधी जी के असहयोग आन्दोलन से जुड़ गये, फलत: अनेक बार जेल गए। एक बार बीच बाजार में गोरा (अंग्रेज) शासक एक व्यक्ति को कोड़े मार रहा था– आपसे रहा नहीं गया और उस एवज में खुद कोड़ों के शिकार हुए। भरी-पूरी वकालत को लात मारकर स्वतंत्रता आन्दोलन को समर्पित हो जाना उनकी देशभक्ति एवं गांधी जी के प्रति गहरी आस्था का परिचायक है। सामाजिक सुधारों के प्रति भी आप सदा जागरूक रहते थे। ओसवाल महासम्मेलन के मुखपत्र 'ओसवाल सुधारक' का आगरा से सफल सम्पादन आपने किया था। 1938 में आपका देहावासन हो गया।

आ० (1) इ० अ० ओ०, भाग-2, पृष्ठ 399-400, (2) जै० स० रा० अ०, (3) उ० प्र० जै० ध०, पृष्ठ-89, (4) गो० अ० ग्र०, पृष्ठ 220

श्री चाँदमल जैन

झाबुआ (म०प्र०) के श्री चाँदमल जैन, पुत्र-श्री रतनचंद का जन्म 1909 में हुआ। आपने 1930 से 1947 तक के सभी आन्दोलनों में सक्रिय भाग लिया। आजादी के बाद शासन ने प्रशस्ति पत्र प्रदान कर आपको सम्मानित किया है।

आ०- (1) म० प्र० स्व० सै०, भाग-4, पृ० 140

श्री चाँदमल मेहता

श्री चाँदमल मेहता का जन्म 23 फरवरी 1904 को सारंगी (झाबुआ) म०प्र० में हुआ। आपके पिता का नाम श्री भागीरथ मेहता था। झाबुआ में आपने श्री कन्हैया लाल वैद्य के साथ स्वतंत्रता के लिए काम किया, फलत: वहाँ का राजा नाराज हो गया और तरह-तरह के जुल्म ढाने लगा। उसके दमन से तंग आकर आप रतलाम आ गये। आपकी शिक्षा मात्र मैट्रिक ही थी, पर प्रत्येक विषय की गहन पकड़ आप में थी। 1931 से आप पूर्णत: राष्ट्रीय आन्दोलन से जुड़ गये, 1938 में रतलाम में उत्तरदायी शासन की मांग के साथ राज्य प्रजामंडल की स्थापना की व इसके प्रथम महामंत्री हुए। कुछ कम्युनिस्ट साथियों के साथ मजदूर किसान आन्दोलन में भी आपने भाग लिया। 1940 में 'रतलाम राज्य षडयंत्र केस' में आप गिरफ्तार कर लिये गये। राजद्रोह, षडयंत्र आदि अनेक धाराओं के अन्तर्गत मुकदमा चला। बैरिस्टर मीनू मसानी आपके बचाव पक्ष के वकील थे। कोर्ट द्वारा आपको 10 वर्ष (या 7 वर्ष) की सजा मिली। पूज्य गांधी जी के कहने पर श्री के० एम० मुंशी ने हाईकोर्ट मे पैरवी की, फलत: सजा घटाकर 3 वर्ष कर दी गई। 1942 में आपकी अन्य राज्यबन्दियों के साथ रिहाई हुई। 1978-79 में आपका स्वर्गवास हो गया।

आ० (1) म० प्र० स्व० सै०, भाग 4, पृष्ठ-192, (2) रतलाम के वरिष्ठ स्व० सं० सै० श्री दलीचंद जैन द्वारा प्रेषित परिचय।

श्री चितरंजन कुमार

संगीतकला प्रेमी मध्य प्रदेश (मालवा-प्रान्त) के श्री चितरंजन कुमार 1942 में विद्यार्थी अवस्था में ही गिरफ्तार कर लिये गये थे। निर्माण पथ में चिरन्तन रत रहने वाले श्री कुमार काफी समय तक राष्ट्रीय संवक दल के प्राणवान सदस्य रहे। आपने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से एम० ए० किया था।

आ०-(1) जै० स० रा० अ०, पृ०-75

श्री चिन्तामन जैन

श्री चिन्तामन जैन, पुत्र-श्री दशरथ लाल जैन का जन्म दमोह (म०प्र०) जिले के पटेरा के निकट



बमनपुरा ग्राम में 1913 में हुआ। आपकी रुचि देश-सेवा एवं सामाजिक कार्यों में बचपन से ही रही अत: आप घूम-घूमकर देश को स्वतंत्र कराने की भावना लोगों में जागृत करते रहे। सोलह वर्ष की उम्र में ही आप भारतीय अधिनियम की धारा 379 आई0पी0सी0 के अन्तर्गत दिनाक 4-9-1930 से 3-1-1931 तक केन्द्रीय जेल जबलपुर में रहे। जेल से छूटने के पश्चात् आपका सम्पूर्ण जीवन कटई (दमोह) में बीता।

आ0- (1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-1, पृष्ठ-47 तथा (2) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-2, पृष्ठ-82, (3) श्री यशवंत शास्त्री, दमोह द्वारा प्रेषित परिचय।

श्री चिन्तामन जैन

आजादी के दीवाने श्री चिन्तामन जैन का जन्म टड़ा (सागर) म0प्र0 में हुआ। आपके पिता का नाम श्री लालचंद जैन था। लगभग 75 वर्ष की उम्र में आपका निधन 1992 में हुआ। आप 30 वर्ष सागर में रहे। पुलिस चौकी में झंडा लगाने पर आपको गिरफ्तार कर लिया गया अत: 18 सितम्बर 1942 से 8 अक्टूबर 1942 तक जेल की दारुण यातनायें आपको भोगनी पड़ीं।

आ0- (1) सागर जिले के स्व0 सेनानी-सूची, (2) श्री मुलायम चंद जैन टड़ा द्वारा प्रदत्त परिचय

बाबू चिम्मनलाल जैन 'नेताजी'

'नेताजी' उपनाम से ख्यात, आगरा (उ0प्र0) निवासी बाबू चिम्मनलाल जैन, पुत्र-श्री गोपीचंद जैन को 1942 के आन्दोलन में ध्वंसात्मक कार्य करने के आरोप में गिरफ्तार कर लिया गया था। किन्तु जब अपराध साबित नहीं हो सका तो नजर-बंद कर दिया गया। आप वार्ड कांग्रेस कमेटी के उत्साही कार्यकर्ता रहे हैं। शासन आपको क्रान्तिकारी मानता था। आप सक्रिय सर्वोदय कार्यकर्ता के रूप में भी विख्यात हैं।

आ0- (1) प0 इ0, पृ0-141, (2) जै0 स0 रा0 अ0, (3) उ0 प्र0 जै0 ध0, पृ0-90, (4) श्री महावीर प्रसाद जी अलवर द्वारा प्रेषित परिचय, (5) गो0 अ0 ग्र0, पृ0-220-221

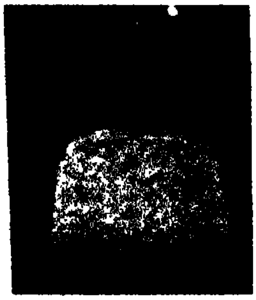
श्री चिरंजीलाल वैद्य

श्री चिरंजीलाल जैन का जन्म 1917 में ग्राम-पारना (बाह), जिला-आगरा (उ0प्र0) में हुआ। बाह में विद्याध्ययन के समय आप रा0 आ0 में कूद पड़े। 1932 एवं 1942 के आन्दोलनों में आपने सक्रिय भाग लिया था। 18 मार्च 1941 को आप बाह पुलिस द्वारा गिरफ्तार किये गये और अक्टूबर में रिहा हुए। आप अपने निजी प्रेस 'कल्याण प्रिंटिंग' का संचालन भी करते थे, जिसमें शासन के विरुद्ध पर्चे आदि छापते थे। पता लगने पर प्रेस बन्द हो गया। 1942 के आन्दोलन में आप भूमिगत रहकर कार्य करते रहे। उन दिनों आप भिण्ड, मुरैना ग्वालियर, मन्दसौर आदि स्थानों पर रहे। उसी समय आप पूज्य बापू के सम्पर्क में आये और वर्धा में उनके सान्निध्य में रहकर देशसेवा, राजनीति और समाजसेवा का व्रत लिया। व्यवसाय से वैद्य होने के कारण आप भदावर क्षेत्र में काफी लोकप्रिय नेता हैं। धार्मिक सेवा में आपका सहयोग अग्रगण्य है। आपने स्कूल और धर्मशालायें प्रारम्भ कराई हैं जो आज फल-फूल रही हैं। जिनमें भदावर (डिग्री) कालेज प्रमुख है।

आ0- (1) श्री रामजीत जैन एडवोकेट द्वारा प्रेषित परिचय, (2) उ0 प्र0 जै0 ध0, पृ0-92, (3) ल0 जै0 इति0, (4) गो0 अ0 ग्र0, पृ-221

श्री चुन्नालाल जैन

चरथावल, जिला-मुजफ्फरनगर (उ0प्र0) के श्री चुन्नालाल जैन का जन्म 1908 ई0 के लगभग हुआ। 1942 के आन्दोलन में 'अंग्रेजो भारत छोड़ो' का नारा बुलन्द करने के कारण लम्बे समय



तक आपको जेल की दारुण यातनाऐं भोगनी पड़ीं। आजादी के बाद श्री जैन ने शिक्षा के प्रचार-प्रसार में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। आप अन्तिम समय तक श्री गाँधी इन्टर कालेज चरथावल के प्रबन्धक, अध्यक्ष, मार्ग-निर्देशक आदि पदों पर रहे। आपका निधन मई 1992 में हुआ।

आ0- (1) जैन मित्र 10 अप्रैल 1941 (2) दैनिक अमर उजाला, मेरठ, 12 मई 1992

श्री चुन्नीलाल जैन

भारत माता गुलामी की जंजीरों से त्रस्त थी। भारत के गण्यमान नेता अपनी भारत माता को विदेशीय शक्ति से छुटकारा दिलाने के लिए भारत की जनता को जगा रहे थे। प्रत्येक ग्राम की जनता के हृदय में विदेशियों के प्रति अग्नि की ज्वाला भड़क उठी थी। इस पुनीत कार्य में ग्राम पिण्डरई का जनसमूह भी पीछे नहीं था। पिण्डरई के बाल, वृद्ध व नवयुवक राष्ट्रीय चेतना से ओतप्रोत थे। इनमें श्री चुन्नीलाल जैन, पुत्र-श्री पन्नालाल जैन का नाम अग्रगण्य है।

चुन्नीलाल जी का जन्म 1920 में हुआ। आप की शिक्षा पिण्डरई में ही हुई थी। राष्ट्रहित को प्रधानता देने के कारण आप अपनी पढ़ाई से पिण्ड छुडा कर कांग्रेस कार्य में व्यस्त रहने लगे। 1936 में आप पिण्डरई से नैनपुर आकर कपड़े की दुकान का भार सम्हालने लगे। त्रिपुरी कांग्रेस अधिवेशन में चुन्नीलाल जी ने स्वयंसेवक के रूप में कार्य किया। 1940 में व्यक्तिगत सत्याग्रह में आपने सक्रिय भाग लिया। अगस्त 1942 के आन्दोलन में चुन्नीलाल जी पीछे नहीं रहे। आंदोलन में सक्रिय भाग लेने के कारण विदेशी सरकार ने 2 सितम्बर 1942 को आपको मण्डला जेल में बन्द कर दिया। निरन्तर छः माह तक जेल के कष्टों को सहन कर 1 मार्च 1943 को जेल से रिहा हुए।

आ0- (1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-1, पृ0-207, (2) स्व0 प0

श्री चुन्नीलाल जैन

ग्राम-विनौका, जिला-सागर (म0प्र0) निवासी और जबलपुर प्रवासी श्री चुन्नीलाल जैन, पुत्र-श्री भागीरथ ने 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में 1 माह का कारावास भोगा।

आ0- (1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-2, पृष्ठ-24, (2) आ0 दी0, पृ0-42

श्री चुन्नीलाल जैन

जबलपुर (म0प्र0) के श्री चुन्नीलाल जैन, पुत्र-श्री मूलचन्द ने भारत छोड़ो आन्दोलन में 17 सितम्बर 1942 से 15 जनवरी 1943 तक का कारावास सागर जेल में भोगा।

आ0- (1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-1, पृ0-48

बाबू चेतराम जैन

जुर्माना अदा न करने पर जिनकी सारी सम्पत्ति ही नीलाम कर दी गई, पर जो झुके नहीं, ऐसे बाबू चेतराम जैन का जन्म कटंगी, तहसील-पाटन, जिला-जबलपुर (म0प्र0) में हुआ। श्री जैन लगनशील, साहसी एवं कर्मठ राष्ट्रसेवी थे। 1930 से 1942 तक के सभी आन्दोलनों में वे जीवटता से सक्रिय रहे। प्रथमतः जंगल सत्याग्रह के दौरान आप गिरफ्तार हुए और चार माह की कठोर कैद तथा 100/- रु0 का जुर्माना पाया, पर 'आजादी के दीवानों ने कभी जुर्माना भरा है क्या?' आपने भी जुर्माना अदा नहीं किया फलतः आपकी सम्पत्ति नीलाम कर दी गई। पाटन तहसील में कांग्रेस संगठन को सशक्त बनाने में आपका प्रयास आज भी स्मरण किया जाता है। 1942 के आन्दोलन में आप पुनः गिरफ्तार हुए और सित0

1942 से दिसम्बर 1943 तक लगभग 15 माह की दारुण यातनाऐं जबलपुर जेल में भोगीं। बाद में आप किसान आन्दोलन से भी सम्बद्ध रहे। 1966 में आपका निधन हो गया।

आ0- (1) म0 प्र0 स्वा0 सै0, भाग-1, पृ0-48, (2) स्वा0 स0 पा0, पृ0-117

श्री चैनदास लोढ़ा

इन्दौर (म0 प्र0) के श्री चैनदास लोढ़ा, पुत्र-श्री हरिदास लोढ़ा का जन्म- 1 अक्टूबर 1922 को हुआ। 1942 के स्वाधीनता संग्राम में भाग लने पर आप 2 माह इन्दौर जेल में नजरबंद रहे तथा मण्डलेश्वर जेल में एक वर्ष का कारावास आपने भोगा था।

आ0- (1) म0 प्र0 स्वा0 सै0, भाग-4, पृ0-20, (2) पुत्र श्री ज्ञान सिंह लोढ़ा द्वारा प्रेषित पत्र

श्री छक्कीलाल जैन

ग्राम लौंडी भड़ोकर (तत्कालीन-विन्ध्य प्रदेश) के श्री छक्कीलाल जैन, पुत्र-श्री दौलत जैन 1937 से ही कांग्रेस के कार्यकर्ता हो गये थे। 1939 के थौना लुहारी झण्डा आन्दोलन के समय अपने गांव में झण्डा फहराने के कारण 22-2-1939 को आपको गिरफ्तार किया गया। ओरछा अदालत ने 3-3-1939 को तीन माह की सजा व 50/- रुपये का अर्थदण्ड आपको दिया था। 2-9-1939 को आप जेल से रिहा हुए। आपके भाई श्री राजधर भी आपके साथ जेल में रहे।

आ0- (1) वि0 स्वा0 स0 इ0, पृ0-187

श्री छक्कीलाल जैन लोडुवा

श्री छक्कीलाल जैन लोडुवा, पुत्र-श्री दुलीचंद लोडुवा का जन्म वि0सं0 1873 (1916 ई0) में टीकमगढ़ (म0 प्र0) में हुआ। आपने प्रारम्भिक शिक्षा जैन पाठशाला टीकमगढ़ में पाई और लौकिक शिक्षा कक्षा 7 वीं तक स्थानीय सवाई महेन्द्र हाई स्कूल में प्राप्त की।



जब आप अध्ययनरत थे तब पं0 जवाहर लाल नेहरू टीकमगढ़ (तत्कालीन ओरछा राज्य) आये। पर निषेध के कारण टीकमगढ़ की सीमा में प्रविष्ट नहीं हो सके, फलतः उत्तर प्रदेश के सीमावर्ती ग्राम खिरिया में उन्होंने सभा की। श्री जैन उस सभा में गये थे। पं0 नेहरू के भाषण से प्रभावित हो आपने 30 सितम्बर 1937 में टीकमगढ़ के झण्डा आन्दोलन में सक्रिय भाग लिया और 'ओरछा सेवा संघ' के सक्रिय सदस्य बनकर अपने सहपाठी प्रसिद्ध शहीद श्री नारायण दास खरे के साथ कार्य करने लगे। राज्य सरकार ने इस पर आपको पकड़वाकर उ0प्र0 के सीमावर्ती कस्बा मऊरानीपुर में छुड़वा दिया और टीकमगढ़ से ढाई वर्ष को निष्कासित कर दिया। आप समीपवर्ती ग्रामों में घूम-फिर कर स्वतंत्रता की अलख जगाते रहे।

पड़ौसी रियासतों में उत्तरदायी शासन हेतु चलाये गये लगभग सभी आन्दोलनों में आपने भाग लिया, गिरफ्तार हुए और पुलिस की मार खायी। आपने मैहर, नागौद, चरखारी, रीवां आदि राज्यों में सत्याग्रह करवाये । आप 1942 से 47 तक टीकमगढ़ कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष रहे। आपने वहाँ खादी भंडार भी संचालित किया। केन्द्र और राज्य दोनों सरकारों ने आपको सम्मानित किया है।

आ0- (1) म0 प्र0 स्वा0 सै0, भाग-2, पृ0-127, (2) स्वा0 प0 (3) वि0 स्वा0 स0 इ0, पृ0-152, 190, 305, 356 आदि

श्री छीतरमल जैन

मुरैना (म0 प्र0) के श्री छीतरमल जैन, पुत्र-श्री हरगोविन्द का जन्म 1893 में हुआ। आपने माध्यमिक तक शिक्षा ग्रहण की और राजनैतिक गतिविधियों में सक्रिय भाग लेने लगे। आप सार्वजनिक सभा के

सदस्य बने। 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में भी आपने भाग लिया एवं जेल में रहे।

आ0- (1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-4, पृ0-262, (2) जै0 इ0, पृ0 85, (3) जै0 जै0 मु0, पृ0-228

श्री छोटेलाल जैन

'दिल्ली षडयंत्र केस' अपरनाम 'हार्डिंग्स बम केस' को तो सभी जानते हैं। पर इस केस के एक अभियुक्त रहे श्री छोटेलाल जैन को शायद ही कोई जानता हो। छोटेलाल जी का जन्म 1892 ई0 के आसपास जयपुर के भांवासा गोत्रीय श्री हुकुमचंद जैन के तृतीय पुत्र के रूप में हुआ। इनके बड़े भाइयों का नाम आनन्दीलाल तथा नानूलाल था। छोटेलाल जी का विवाह मास्टर मोतीलाल सेठी की पुत्री से हुआ। बचपन में ही पत्नी का देहान्त हो गया। छोटेलाल जी ने दूसरा विवाह करने से इंकार कर दिया। देश के नवयुवक उस समय विदेशी सत्ता को आतंक एवं सशस्त्र क्रान्ति द्वारा उलटने के स्वप्न देखा करते थे, छोटेलाल भी ऐसे नवयुवकों में एक थे। उन्होंने जेल की यातनायें सहीं, अनेक युवकों को क्रान्ति की दीक्षा दी तथा क्रान्तिकारी दलों का सफलतापूर्वक नेतृत्व किया।

छोटेलाल जी क्रान्तिकारी श्री अर्जुन लाल सेठी के निकटवर्ती साथियों में थे। वे राजस्थान के तपस्वी जनसेवक श्री रामनारायण चौधरी के सहपाठी थे। श्री जैन साबरमती आश्रम में कुछ साल रहकर महात्मा गांधी के साथ वर्धा चले गये और बापू जी के बहुत निकट सम्पर्क में रहे। कुछ दिनों तक आपको महादेव भाई के साथ-साथ बापू के निजी मन्त्री का कार्य करने का अवसर भी प्राप्त हुआ। वर्धा में ही आप बीमार हो गये। आपने आजन्म देश सेवा की।

आपके निधन पर पूज्य बापू ने 'हरिजन सेवक' (1-9-1937) में लिखा है-

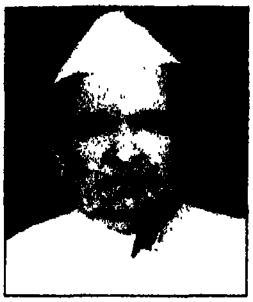
"छोटेलाल की मूक सेवा का वर्णन भाषा बद्ध नहीं हो सकता। ऐसा करना मेरी शक्ति से बाहर है।. .... उनकी बुद्धि तीव्र थी।............. वे भाषा-शास्त्री भी थे। राजपूताना निवासी होने से उनकी मातृभाषा हिन्दी थी पर वह गुजराती, मराठी, बंगाली, तामिल, संस्कृत और अंग्रेजी भी जानते थे। नई भाषा या नया काम हाथ में लेने की उनकी जैसी शक्ति मैंने कहीं और नहीं देखी। आश्रम (साबरमती) के स्थापना-काल से ही छोटेलाल ने उससे अपना सम्बन्ध जोड़ लिया था। उनके शब्दकोष में 'थकान' के लिये स्थान नहीं था....... ग्राम-उद्योग-संघ स्थापित हुआ तो घानी का काम दाखिल करने वाले छोटेलाल, धान दलने वाले छोटेलाल.............उन्हें हलके प्रकार के मियादी बुखार ने पकड़ लिया। यह उनके प्राणों का ग्राहक निकला। मालूम होता है, उन्हें छः सात दिन अपनी सेवा कराना भी असह्य लगा। अत: 31 अगस्त, मंगलवार की रात को ग्यारह और दो बजे के बीच में सब को सोता छोड़कर वह मगनवाड़ी के कुएं में कूद पड़े। आज पहली तारीख को शाम के चार बजे लाश हाथ में आई। मैं सेगांव में बैठा रात के आठ बजे यह लिख रहा हूँ। छोटेलाल की देह का इस समय वर्धा में अग्नि-दाह हो रहा होगा।

इस आत्मघात के लिये छोटेलाल को दोष देने की मुझे में हिम्मत नहीं। उनका नाम 1915 के दिल्ली षडयंत्र-केस में आया था, पर उसमें वह बरी हो गये थे। किसी आफिसर को मार कर खुद फांसी के तख्ते पर चढ़ने का स्वप्न वह उन दिनों देखते थे।............... अपनी तीव्र हिंसक बुद्धि को उन्होंने बदल दिया और अहिंसा के पुजारी बन गये।........ .... उन्हें इस बीमारी में अपनी सेवा लेना असह्य मालूम दिया और गहरी पैठी हुई हिंसा को खुद अपनी बलि दे दी।................ छोटेलाल मुझे अपना देनदार बना कर 45 वर्ष की उम्र में चल बसे। उनसे मैं अनेक आशायें रखता था।"

आ0- (1) राजस्थानी आजादी के दीवाने, पृ0 ए/3-4 तथा बी/117-118 (2) श्री ज्ञानचंद खिन्दूका, जयपुर का 26/10/2001 का पत्र तथा 'सम्पूर्ण गांधी वाङ्मय' से पूज्य बापू द्वारा 'हरिजन सेवक' में लिखी टिप्पणी

छोटेलाल जैन

वीर छत्रसाल की भूमि बुन्देलखण्ड 'वीरप्रसूता भूमि' के नाम से जानी जाती है। बुन्देलखण्ड में



पन्ना, छतरपुर, झाँसी, दतिया, सागर जैसे कुछ बड़े राज्य उस समय थे, छोटी-छोटी रियासतें तो कई थीं। इसी वीर प्रसूता भूमि के छतरपुर जिले में प्रसिद्ध तीर्थ तथा मूर्तिकला की अनुपम धरोहर खजुराहो है, जहाँ से 10-15 किलोमीटर दूर शस्य-श्यामला भूमि पर है ग्राम अकोना। इसी अकोना के श्री दरबारीलाल जैन के घर 1908 में एक दिन बधाईयां बजने लगीं, जब चार संतानों में इकलौते पुत्र छोटेलाल का जन्म हुआ। लाडले-दुलारे छोटेलाल को माता-पिता के स्नेह के साथ-साथ अपने ताऊजी व बड़ी माँ का भी दुलार भरपूर मिला क्योंकि परिवार में मात्र यही इकलौते पुत्र थे।

लाड़-प्यार ने कुछ विशिष्ट उपलब्धियां भी दीं। घर में ही सामान्य शिक्षा का प्रबन्ध हो गया। धीरे-धीरे शिक्षा के प्रति जागरूकता उत्पन्न हुई और इतनी बढ़ी कि जैन धर्म के ग्रंथों के अलावा आपने वैद्यक और ज्योतिष का गहन अध्ययन किया, जो अंत तक बना रहा।

देश में स्वातंत्र्य-आंदोलन धीरे-धीरे चंहु ओर फैल रहा था। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की एक आवाज पर देश के नौजवान प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से आंदोलन में भाग लेने हेतु अपने-अपने घरों की, गांवों की, कस्बों की दीवारों को लांघ कर बढ़-चढ़ कर भाग लेने लगे थे। ऐसे वातावरण में वीर प्रसूता भूमि का यह लाड़ला कैसे अछूता रहता। वह भी स्वतंत्रता-संग्राम में कूद पड़ा। ग्रामों में चुपचाप, स्वतंत्रता की अलख जगाता, गांधी बाबा का संदेश सुनाता, लोगों को एकत्र करता और प्रजामंडल के माध्यम से जब-तब मौका हाथ आते ही- 'माँ भारती जिंदाबाद, अंग्रेजो भारत छोड़ो' आदि नारों को बुलंद करता आगे बढ़ता रहा। परिणामस्वरूप अंग्रेज-शासन (तब इस क्षेत्र में नौगांव एजेंसी थी।) के दमन का शिकार भी होता रहा, गिरफ्तार होता रहा, जेल भुगतता रहा पर दमन चक्रों की मार सहते हुए भी स्वतंत्रता-देवी का दामन नहीं छोड़ा। जेल से वापस आते देरी नहीं होती कि दूसरे कार्यक्रमों की अगुवाई करने के लिए तैयार हो जाते।

आपने 1939 के जंगल सत्याग्रह में अगुवाई की, जंगल कटवाया और दो माह बिना मुकदमा चले ही राजनगर में बंद रहे। पुन: जोर-शोर के साथ आंदोलनों में भाग लिया। भूतपूर्व लोकसभा सदस्य श्री रामसहाय तिवारी के साथ नौगांव एजेंसी जेल में साथ-साथ रहे, क्योंकि 'चरण-पादुका गोलीकांड' में आप शामिल थे। काफी मार पड़ी थी। पैरों में काफी चोटें आई थीं, जिससे चलने-फिरने में तकलीफ शुरू हो गई थी किन्तु भारत-माँ का सपूत बिना स्वतंत्रता प्राप्त करे-चुपचाप बैठने वाला कहां था। हर बार एक नया जोश, नया संकल्प मन में उभरता और पुन: किसी सत्याग्रह-आंदोलन-धरना-पिकेटिंग-जुलूस में सोत्साह शामिल हो जाते। 1939 से 1947 तक आप कई बार जेल गए।

गांधी जी के करो या मरो आंदोलन के दौरान झंडा लेकर नेतृत्व करते हुए ग्रामवासियों को साथ लेकर आगे बढ़ते गए। जेल में आपका जनेऊ उतार लिया गया और खाने-पीने की जबरदस्ती की गई किन्तु स्वतंत्रता की बलि-बेदी पर न्यौछावर होने वाले इस युवक ने सभी कैदियों के बीच सिंहनाद में घोषणा की कि-'जब तक जनेऊ नहीं मिलेगा और छना हुआ पानी, तब तक मैं एक बूंद भी अन्न-जल ग्रहण नहीं करूंगा' शासन को झुकना पड़ा और तब आपने अन्न-जल ग्रहण किया।

1942 से 1944 के मध्य राज्य प्रजामंडल, छतरपुर के आदेशानुसार हर आंदोलनों में आपने शिरकत की, मारे पीटे गए और घायल हुए। 1946 में लाठी चार्ज में अत्यधिक घायलावस्था में प्रथम श्रेणी मजिस्ट्रेट के सामने उपस्थित किए गए और 10 माह जेल की सजा 30 अप्रैल 47 तक के लिए सुना दी गई। 300 रुपए जुर्माना किया गया। जुर्माना अदा न करने पर 2 माह सख्त मशक्कत कैद की सजा बढ़ा दी गई और फिर माँ भारती की स्वतंत्रता की घोषणा के कुछ पहिले 15-5-47 को राज्य का समझौता हो जाने के कारण रिहा कर दिये गये।

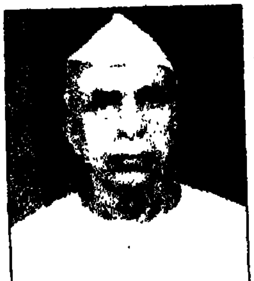
स्वतंत्रता की लालिमा बिखरी, देश नवगान में झूम उठा। केन्द्रीय एवं राज्य शासन द्वारा स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों को कई सुविधायें प्रदान की गईं, किन्तु आरम्भ से ही स्वाभिमानी होने के कारण श्री जैन ने समस्त सुविधाओं को सधन्यवाद नकार दिया, मात्र प्रशस्ति-पत्र सम्हाल कर रखे रहे।

16 मई 1985 को इस नश्वर शरीर को छोड़कर आपने संसार से विदा ली।

आ० (1) म० प्र० स्व० सै०, भाग-2, पृ०-109, (2) पुत्र अभयकुमार द्वारा प्रेषित परिचय एवं अनेक अनुशंसा तथा प्रशस्ति पत्र (3) वि० स्व० स० इ०, पृ०-289

श्री छोटेलाल 'भास्कर'

गांधी साहित्य के प्रचार-प्रसार के शौकीन श्री छोटेलाल 'भास्कर' का जन्म जबलपुर संभाग के



बिलाई ग्राम में 1912 ई० में हुआ। पिता श्री बृजलाल की अपेक्षा माँ का पूरा सहयोग आपको मिला। आपने ब्यावर (राजस्थान) में धार्मिक शिक्षा ली और 1928 से भारत माँ की सेवा में जुट गये। आपने विदेशी वस्त्र बहिष्कार, नमक सत्याग्रह, जंगल सत्याग्रह, भगतसिंह की फांसी, गांधी जी के अहिंसक आंदोलन का जनता में उफान और आक्रोश देखा, जिससे आपका मन देश की आजादी के लिए तड़फ उठा। 1938 से आप स्थायी रूप से दमोह में बस गये, जैन पाठशाला में शिक्षक का कार्य किया और खादी प्रचार में जुट गये।

1942 के अगस्त आंदोलन में आप खादी प्रचार के साथ गुप्त रूप से बुलेटिन बांटने का कार्य करने लगे। 16 अक्टूबर 1942 को आपके घर और दुकान की असफल तलाशी हुई। पुलिस ने स्वयं दुकान में बुलेटिन रखकर जप्ती की पर्ची बनाई और थाने में बुलाकर बन्द कर दिया। चार माह की सख्त सजा आपको भोगनी पड़ी, फरवरी 1943 में आप छोड़ दिये गये।

जेल से छूटने के पश्चात् आप खादी और गांधी साहित्य का प्रचार करते रहे। 'गांधी चौक के गांधी' के नाम से विख्यात भास्कर जी का निधन 74 वर्ष की अवस्था में दमोह में हुआ।

आ०- (1) म० प्र० स्व० सै०, भाग-2, पृ०-82, (2) श्री संतोष सिंघई, दमोह द्वारा प्रेषित परिचय

श्री छोटेलाल उर्फ रतनचन्द मलैया

गढ़ाकोटा, जिला-सागर (म०प्र०) के श्री छोटेलाल उर्फ रतनचंद मलैया, पुत्र-श्री सजन कुमार का जन्म 1919 में हुआ। आपने 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में भाग लिया तथा 9 माह का कारावास भोगा।

आ०- (1) म० प्र० स्व० सै०, भाग-2, पृ०-25, (2) आ० दी०, पृ०-44

श्री जड़ावचंद जैन

धार (म० प्र०) के श्री जड़ावचंद जैन, पुत्र-श्री कस्तूरचंद जैन का जन्म फरवरी 1921 में हुआ। आपने बोरखेड़ा तथा उपरबाड़ा जागीरों में स्वतंत्रता आंदोलन हेतु सक्रिय कार्य किया। महात्मा गांधी के आह्वान पर आपने हरिजनोद्धार के कार्य किये। फलत: आपकी सम्पत्ति जब्त कर ली गई,

परिणामस्वरूप आपको अपना ग्राम भी छोड़ना पड़ा। स्वाधीनता सेनानी श्री दलीचंद जैन, रतलाम की सूचनानुसार सम्प्रति आप मद्रास में रह रहे हैं।

आ०- (1) म० प्र० स्व० सै०, भाग-4, पृ०-192

श्री जड़ावचंद जैन

'वृहत्तर निमाड़ आंदोलन' के जनक कहे जाने वाले, विधायक और जिला कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष रहे श्री जड़ावचंद जैन का जन्म मध्यप्रदेश के मण्डलेश्वर में 1904 में हुआ। शिक्षा-प्राप्ति के उपरान्त आप महात्मा गाँधी के आह्वान पर स्वाधीनता-संग्राम में कूद पड़े। आपने कई बार जेल-यात्राएँ की थीं। आप 1948 तथा 1952 में दो बार मध्यप्रदेश विधान सभा के सदस्य चुने गये तथा 1948 से 1951 तक जिला कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष भी रहे थे।

प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी श्री हजारीलाल जड़िया जब मंडलेश्वर किले की जेल में बन्द थे और उन्हें अमानुषिक यातनायें दी जा रही थीं, तब उन्होंने जेल के अन्दर से ही इस अत्याचार के समाचार भेजे। उनके इस कार्य में श्री जैन ने सक्रिय सहयोग दिया था।

आप जिस तन्मयता से राजनीति के क्षेत्र में अग्रणी रहे उसी तन्मयता से साहित्य तथा संस्कृति की भी सेवा की। आपने अनेक पुस्तकें लिखीं तथा निमाडी भाषा की अभिवृद्धि के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य किया । निमाड़ी भाषा के मर्मज्ञ एवं अध्येता के रूप में आपकी सेवाएँ अभिनन्दनीय थीं। आपका निधन चार मई 1981 को हो गया।

आ०- दिवङ्गत हिंदी सेवी, भाग-2, पृ०-296, (2) म० प्र० स्व० सै०, भाग-4, पृष्ठ-81 (3) नवभारत, इन्दौर, 1-10-1997, (4) नई दुनिया, इन्दौर, 20-8-1997

श्री जयकुमार जैन

कटनी, जिला-जबलपुर (म०प्र०) के श्री जय कुमार जैन, पुत्र-श्री हुकुमचन्द का जन्म 1923 में हुआ। 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में भाग लेने पर 15 दिन का कारावास आपको भोगना पड़ा।

आ०- (1) म० प्र० स्व० सै०, भाग-1, पृ०-53, (2) जै० स० रा० अ०

सिंघई जवाहरलाल जैन

सिंघई जवाहरलाल जैन, पुत्र-श्री मुन्नालाल जैन का जन्म अगस्त 1928 में पनागर, जिला- जबलपुर



(म० प्र०) में हुआ। 1958 में आप जबलपुर आ गये। वर्तमान में आप सूरत (गुजरात) में रह रहे हैं। आप अनेक वर्षों तक पनागर जैन समाज के मंत्री रहे। 1986 में पंचकल्याणक प्रतिष्ठा एवं गजरथ महोत्सव के आप अध्यक्ष रहे। आपने अपनी जेल यात्रा के संदर्भ में लिखा है–

'स्वतंत्रता संग्राम आंदोलन 1942 की अगस्त क्रान्ति के समय मेरी उम्र 14 वर्ष की थी, पनागर के ही भाई रतन चंद जैन, नागपुर कृषि विश्वविद्यालय से एवं पनागर के ही भाई गणेश प्रसाद पांडे बनारस हिंदू यूनिवर्सिटी से पनागर आये और हम सभी को एकत्रित कर यहां आंदोलन का संचालन किया। मैं 2-9-42 को पनागर पुलिस द्वारा गिरफ्तार किया गया। मुझे सैण्ट्रल जेल जबलपुर में धारा 129 (1) (A) DIR के अन्तर्गत रखा गया बाद में कलैक्टर के आर्डर से जेल में जो कम उम्र के लड़के थे, सभी दिनांक 28-11-42 के करीब छोड़ दिये गये।'

आपने लिखा है कि- 'आंदोलन करते समय मेरे पिताजी एवं अन्य लोग यह कहा करते थे कि जेल जाओगे तो वहाँ पर खाने में कांच व मिट्टी मिलेगी। जब जेल पहुँचा तो यह बात ध्यान में थी। वहाँ शाम का खाना आया, उस दिन दाल जल गई थी, इसलिए उसका स्वाद विचित्र लगा, मैंने बाजू वालों से पूछा तो पता लगा कि इसमें मिट्टी व कांच नहीं है, दाल

जल गई है, इसमें पानी डालकर वह पानी फेंक दो, कुछ ठीक हो जायेगी, मैंने वैसा ही किया।'

'इस बीच पर्युषण पर्व आ गया, जेल के हमारे सर्किल में करीब 40-45 भाई जैन थे। सभी ने इस बात को लेकर 'सत्याग्रह' का वातावरण बना डाला कि 'हम अपने पर्व के दिनों में शुद्ध तथा अपने हाथ का बना खाना ही खायेंगे।' आखिर सफलता मिली तथा 10 दिन सामूहिक रूप से सभी बंधुओं ने खाना बनाया। पूजन भजन साथ हुए।'

स्वतंत्रता सेनानी होते हुए भी आज तक आपने कोई पेंशन या सम्मान निधि नहीं ली है।

आ0- (1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-1, पृ0-53, (2) प0 जै0 म0 इ0, पृ0-452, (3) स्व0 प0

श्री जिनेंद्रकुमार मलैया



सागर (म0प्र0) के प्रसिद्ध व्यवसायी श्री जिनेन्द्र कुमार मलैया, पुत्र-श्री मूलचंद ने 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में भाग लिया तथा 4 माह का कारावास भोगा

आ0- (1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-2, पृ0-27, (2) आ0 दी0, पृ0-87

श्री जीतमल लूणिया



'सस्ता साहित्य मण्डल' नामक सुप्रसिद्ध प्रकाशन संस्था के संस्थापक, देशभक्त श्री जीतमल लूणिया का जन्म 15 नवम्बर 1895 ई0 को अजमेर (राजस्थान) में हुआ। आपके पिता का नाम श्री पूनमचंद लूणिया था, जो अजमेर के प्रसिद्ध ओसवाल लूणिया गोत्र के सेठ नागराज रूपराज के वंशज थे। सेठ पूनमचंद जी का अल्पायु में ही प्लेग के कारण देहान्त हो गया था।

लूणिया जी एकान्त प्रिय और आध्यात्मिक वृत्ति सम्पन्न साधक थे। आपने एम0 ए0 तक शिक्षा ग्रहण की और 1914 में इंदौर चले गये, वहाँ श्री हरिभाउ उपाध्याय के साथ मिलकर 'मालव मयूर' नामक मासिक पत्र का प्रकाशन किया। आपने इन्दौर के धनकुबेर सेठ हुकुमचंद जी के यहाँ उनके प्राइवेट सेक्रेटरी का भी पदभार सम्भाला था। 1916-17 में आप सार्वजनिक क्षेत्र में कूद पड़े और देश सेवा को अपना ध्येय बनाया। 1916 में आपने 'हिन्दी साहित्य मन्दिर' की स्थापना की। 1922 में इसका कार्यालय बनारस स्थानान्तरित हो गया। 1924 में देशभक्त सेठ जमनालाल बजाज से सम्पर्क होने पर इसका कार्यालय गुजरात स्थानान्तरित करने की योजना बनाई किन्तु श्री अर्जुनलाल सेठी के सुझाव पर 1925 में अजमेर आ गये, बिड़ला एवं बजाज बन्धुओं के सहयोग से यहीं 'सस्ता साहित्य मण्डल' की स्थापनां की। थोड़े ही समय में यह संस्था अपने राष्ट्रीय प्रकाशनों के कारण देशभर में प्रसिद्ध हो गई।

1930 में अजमेर में आप कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष चुने गये। भारत सरकार ने इस कमेटी को गैर कानूनी घोषित कर दिया था। आपका स्वास्थ्य भी खराब था, फिर भी आप आन्दोलन में कूद पडे, गिरफ्तार हुए, मुकदमा चला और एक वर्ष के कठोर कारावास की सजा दी गई । जेल से छूटकर सपरिवार सत्याग्रह में भाग लेने लगे। परिणामस्वरूप पत्नी श्रीमती सरदार कुवंर वाई व पुत्र प्रतापसिंह लूणिया सहित जेल गये।

1933 में आपने 'अजमेर सेवा भवन' नामक संस्था की स्थापना की और अछूतोद्धार एवं राष्ट्रोत्थान सम्बन्धी रचनात्मक कार्यों में लगे रहे। 1940 में पुनः

सत्याग्रह में भाग लिया। 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में गिरफ्तार हुए और एक वर्ष के कारावास की सजा पाई।

लूणिया जी 'हिन्दी साहित्य कुल', 'जैन नवयुवक मण्डल', 'राष्ट्रीय प्रेम विद्यालय' आदि संस्थाओं के वर्षों तक सभापति रहे। 1938 व 1945 में जब अजमेर में प0 जवाहर लाल नेहरू पधारे तब आप स्वागताध्यक्ष थे। 1947 में कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष चुने गये और अजमेर में भारत के स्वाधीन होने की घोषणा 15 अगस्त 1947 को कांग्रेस अध्यक्ष की हैसियत से नया बाजार में राष्ट्रीय ध्वज फहराते हुए आपके द्वारा ही की गई थी।

देश की आजादी के बाद आप अजमेर नगर परिषद् के अध्यक्ष चुने गये। 1973 में 78 वर्ष की उम्र होने पर भी 'अजमेर शराब बन्दी सत्याग्रह आन्दोलन' में आप जेल गये थे।

आ0 (1) इ0 अ0 ओ0, भाग-2, पृ-394-395, (2) अजमेर वार्षिकी एवं व्यक्ति परिचय, पृ0-49, (3) जै0स0रा0अ0

श्री जीवनचंद जैन

सरल स्वभावी श्री जीवनचंद जैन के पूर्वज हरदा (म0प्र0) तहसील के भादूगांव से आकर भोपाल में



बस गये थे, यहीं श्री जैन का जन्म 3 जनवरी 1931 को हुआ। आपके पिता का नाम श्री हीरालाल जैन था। आपने आई0काम0 तथा हिन्दी विशारद तक शिक्षा ग्रहण की। 1949 के भोपाल विलीनीकरण आन्दोलन में आपने भाग लिया और जेल यात्रा की। आपने अपने परिचय में लिखा है कि – 'भोपाल का विलीनीकरण आंदोलन दिसम्बर 1948 से प्रारंभ हुआ जो 6 फरवरी 1949 को समाप्त हुआ। यह आन्दोलन इस बात को लेकर था कि भोपाल स्टेट को भी अन्य राज्यों की भाँति भारत में विलीन किया जाये। इसके लिये भोपाल-नवाब श्री हमीदउल्ला खां किसी भी प्रकार तैयार नहीं थे, अतएव यहां की जनता ने आंदोलन की राह पकड़ी। इस आंदोलन के चलते ही भोपाल-नवाब का दमन चक्र शुरू हो गया जो बढ़ते-बढ़ते पूरे भोपाल राज्य में फैल गया जिसमें बरेली के पास बोरासघाट पर 14 जनवरी 1949 के दिन 7 लोग नवाब भोपाल की पुलिस द्वारा शहीद हुये।

जब यह आंदोलन प्रारम्भ हुआ उस समय मैं सातवीं कक्षा का छात्र था और मांडल हाईस्कूल में अध्ययनरत था, यहां पर श्री परमानंद शास्त्री, श्री सुरेशचन्द जी एवं अन्य शिक्षक जो आंदोलन को गुप्त रूप से चला रहे थे, गिरफ्तार कर लिये गये। हम लोग जो इन्हीं से शिक्षा ग्रहण करते थे, इनकी गिरफ्तारी से बैचेन हो गये और कुछ करने की स्थिति में विचार करने लगे। भाई रतनकुमार जी सम्पादक-'नई राह', गुलाबचंद जी तामौट, विष्णुदत्त मिश्रा, डा0 शंकरदयाल शर्मा आदि बड़े-बड़े नेता गिरफ्तार किये जा चुके थे, आंदोलन 14 जनवरी 1949 तक अपनी चरमसीमा पर पहुंच चुका था। जबकि आंदोलनकारी बोरासघाट पर शहीद हो चुके थे।

भोपाल में प्रतिदिन प्रभात फेरी निकलती और प्रतिदिन गिरफ्तारियां होतीं। उसमें मैं भी भाग लेता था किन्तु छोटी आयु का होने से हर समय गिरफ्तार कर भोपाल नगर से 15-20 मील दूर ले जाकर छोड़ देते थे। यह सब चलते हुए मुझे गुप्त रूप से समाचार मिला कि 'बैरसिया जेल में आंदोलन शिथिल हो रहा है और वहां का कार्य तुम्हें देखना है' बैरसिया भोपाल से 40 कि0मी0 दूर एक कस्बा है, उस समय वहां जाने का साधन केवल बैलगाड़ी थी। भोपाल से बाहर जाने वालों की सघन चैकिंग होती थी। भोपाल नगर के लोगों को बाहर ही रोक दिया जाता था, ऐसी स्थिति में वहां कैसे जाया जाये यह भी एक समस्या थी, किन्तु शीघ्र ही इसका हल निकल आया। मेरे भानजे स्व0 श्री मोहन

दास की बारात बैरसिया जा रही थी, मेरे एक भाई राजमल जी जैन (बुआ जी के लड़के) विदिशा निवासी मेरे पास आये, उनसे इस विषय में चर्चा हुयी और हम लोग बारात में, जो ठेलों में गई थी, निकल गये। यह 15 जनवरी 1949 की बात है। जब हम लोग वहां पहुंच गये और वहां के लोगों से बातचीत की, जिसमें वहां के निवासी श्री शंकरदयाल सक्सेना एडवोकेट प्रमुख थे, उन्होंने वहां की स्थिति से अवगत कराया। उन्होंने बताया–

''यहां के स्थानीय नेता सब गिरफ्तार हो चुके हैं और यहां कोई नेतृत्व करने वाला नहीं है। यहां बाजार भी खुलने लगा है। अच्छा हुआ आप लोग आ गये हैं मैं गुप्त रूप से आपकी पूरी सहायता कर सकता हूँ। अब उन्होंने वहां के उत्साही युवकों से हमारा परिचय कराया, जुलूस निकालने व आंदोलन को गति देने का आह्वान किया, साथ ही बताया कि ये लोग भोपाल से आपका नेतृत्व करने आये हैं। अब वहां के स्थानीय लोगों में से चार लोग तैयार हुये जिनमें श्री छोगमल जी जैन, मन्नूलाल जी सोनी प्रमुख थे। सारी व्यवस्था होने के पश्चात् तय हुआ कि सुबह 7 बजे प्रभात फेरी गंज मौहल्ले से निकाली जायेगी, जो जनता का नेतृत्व करती हुई पुलिस थाने की ओर बढ़ेगी, वहीं पर तहसील और कोर्ट हैं।

दिनांक 17 जनवरी 1949 को सुबह 7 बजे पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार हम लोग गंज में एकत्रित हुये और वहीं से नारे लगाने शुरू किये, जब भीड़ इकठ्ठी हो गई तो जुलूस के रूप में हम लोग आगे बढ़ने लगे, भीड़ इकट्ठी होती गई और चौपड़ा बाजार तक पहुंचते-पंहुचते लगभग चार सौ लोग इकट्ठे हो गये। जिनमें बच्चे अधिक थे। चौपड़ा बाजार में पुलिस ने घेरा डालकर जुलूस को रोक लिया, हम लोगों ने जुलूस को सभा के रूप में परिवर्तित कर दिया और सबसे पहले भाई राजमल जी जैन ने संक्षिप्त भाषण दिया, जिसमें नवाब की दमनकारी नीति और हठवादिता की निन्दा की गई। तत्पश्चात् मेरी बारी आयी और मैंने भी भोपाल में हो रहे नवाब के दमनचक्र का वर्णन किया। बोरास घाट के शहीदों का वर्णन किया जिससे लोगों में जोश आ गया और वे नवाब के विरुद्ध नारे लगाने लगे, जो पुलिस के लिये असहनीय हो गया। अब उन्होंने मजिस्ट्रेट के आदेश से हम छः लोगों को तत्काल गिरफ्तार कर लिया और ले जाकर हवालात में बंद कर उसी दिन चालान पेश कर दिया। हम पर सुरक्षा अधिनियम के तहत छः माह की सजा व 100/- रुपये जुर्माना किया गया, जुर्माना अदा न करने पर एक माह की और सजा। तत्पश्चात् 18 जनवरी को भोपाल लाकर यहां के सेन्ट्रल जेल में भेज दिया गया, हमारे 2 साथी माफी मांगकर छूट गये।

हमें यहां छः नम्बर की बेरिक में रखा गया यहां पर पहले से ही 396 आंदोलनकारी बंद थे, जब हम लोग यहां पर पहुंचे तो सभी बंदियों ने स्वागत किया। डा0 शंकरदयाल शर्मा जी भी बेरिक में थें। उनसे मेरा घनिष्ठ संबंध हो गया उन्हें जब मालूम पड़ा कि मैं सातवीं कक्षा का विद्यार्थी हूँ तो उन्होंने मेरे घर से किताबें मंगवाईं और नियमित रूप से मुझे संस्कृत एवं इंगलिश पढ़ाने लगे। हम लोग यहां छः फरवरी तक रहे। छः फरवरी 1949 को रात्रि 9 बजे जेल से रिहा किया गया। मालूम हुआ कि गृहमंत्री सरदार पटेल एवं भोपाल नवाब के मध्य समझौता हो गया है, भोपाल नवाब ने भारत में विलय होना स्वीकार कर लिया है, इस प्रकार भोपाल का विलीनीकरण आंदोलन समाप्त हुआ, हम लोग फिर से अपने अध्ययन में व्यस्त हो गये।'

देश की आजादी के बाद से श्री जैन अपने व्यवसाय में सलंग्न हैं। 1985 में भोपाल में अन्य सेनानियों के साथ तत्कालीन उपराष्ट्रपति डा0 शंकर दयाल शर्मा द्वारा आपका सम्मान किया गया था।

आ0-(1) म0प्र0स्व0सै0, भाग-5, पृ0-14, (2) स्व0प0

श्री जुगमंदिर दास जैन

श्री जुगमंदिर दास जैन का जन्म 1912 में एटा (उ0 प्र0) में हुआ। अल्पायु में ही आप नौकरी के लिये कलकत्ता चले गये। शिक्षा के साधन होने पर भी जब आप अर्थाभाव के कारण पढ़ नहीं सके तो आपने शास्त्र-स्वाध्याय और जन-सम्पर्क से शिक्षा ली। 1930 के स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने हेतु आप देहली आये। वहाँ से पुनः बंगाल गये। 1934 के षडयंत्र केस में गिरफ्तार हुए। विभिन्न राष्ट्रीय आन्दोलनों में सक्रिय भाग लेकर भी आपने चरित्र, निष्ठा और धैर्य को सुरक्षित रखा।

मनोहारी व्यक्तित्व, सौम्य मुखमुद्रा वाले जुगमंदिर दास जी विद्वानों के अनुरागी थे। आप पद्मावती पुरवाल जाति के भूषण थे। 'पदमावती संदेश' के जन्म और जीवनदाता आप ही थे।

आ0-(1) वि0 अ0, पृ0-285

श्री जुगलकिशोर जैन

ग्राम-नगला संज्ञा, पोस्ट-अकोस, जिला-मथुरा (उ0प्र0) निवासी श्री जुगलकिशोर जैन, पुत्र-श्री अम्मन लाल जैन का जन्म एक अक्टू0 1921 को हुआ। हाईस्कूल में अध्ययन के समय से ही आप स्वाधीनता आंदोलन में सक्रिय हो गये। 1942 के आन्दोलन में आप दो छोटे बच्चों की चिन्ता न कर कूद पड़े, गिरफ्तार हुए और एक वर्ष जेल में रहे।

आ0- (1) प0 इ0, पृ0-143, (2) श्री महावीर प्रसाद जैन अलवर द्वारा प्रेषित प्रमाण पत्र

श्री जोरावर सिंह जैन

श्री जोरावर सिंह जैन का जन्म 1911 में कोटा (राजस्थान) में हुआ। 1930 में छात्र जीवन से ही वे स्वतंत्रता आंदोलन से जुड गये थे। उन्हीं दिनों उन्होंने राष्ट्रीय समाचार पत्रों की एजेन्सी का कार्य शुरू किया और खादी पहनने का व्रत लिया, जिसे वे जीवन पर्यन्त निभाते रहे। कोटा नगर के केन्द्र में स्थित अपनी दुकान पर जन-जागरण हेतु वर्षों तक बिना नागा राष्ट्रीय महत्त्व के समाचार प्रतिदिन बोर्ड पर लिखते रहे।

कानपुर में अध्ययन-काल में वे क्रांतिकारियों के संपर्क में भी आये। अगस्त 1942 के 'अंग्रेजो भारत छोड़ो' आन्दोलन में प्रजामंडल के नेताओं की गिरफ्तारी के विरोध में कोतवाली पर प्रदर्शन करती जनता का नेतृत्व करते हुए इन्हें 13 अगस्त 1942 को गिरफ्तार करके कोटा केन्द्रीय कारागृह में नजरबंद कर दिया गया, जहां से अन्य नेताओं के साथ 24 अगस्त 1942 को इन्हें भी बिना शर्त रिहा कर दिया गया। तत्पश्चात् श्री जैन स्वाधीनता आंदोलन में और अधिक सक्रिय हो गये। 1943 में कोटा में होली के अवसर पर हुये साम्प्रदायिक दंगों में निर्दोष लोगों को बचाने के प्रयास में वे गंभीर रूप से घायल भी हो गये थे।

आप सत्ता की राजनीति से दूर रहे पर सिद्धान्त की राजनीति में अपना पूर्ण सहयोग देते रहे। श्री जैन रूढ़िवाद, दिखावे और फिजूलखर्ची के विरोधी थे। स्त्रीशिक्षा के कट्टर समर्थक थे, इसीलिए उन्होंने अपनी चारों लड़कियों को बहुत कष्ट सहकर भी उच्च शिक्षा दिलायी थी। राजस्थान सरकार की स्वतंत्रता सग्रांम सेनानी पेन्शन आपको स्वीकृत हुई थी। इनके निधन के बाद पेंशन इनकी पत्नी उमरावबाई को मिल रही है। कट्टर गांधीवादी श्री जैन का 11 सितम्बर 1985 में निधन का हो गया।

आ0- श्री बागमल बांठिया, कोटा द्वारा प्रेषित परिचय एवं प्रमाण पत्र।

श्री जौहरीलाल झांझरिया

इन्दौर (म0प्र0) के श्री जौहरीलाल झांझरिया पुत्र-श्री पन्नालाल झांझरिया का जन्म 1918 में हुआ। आपने बी0ए0 तक शिक्षा ग्रहण की। विद्यार्थी जीवन से ही आप राष्ट्रीय आन्दोलन में सक्रिय हो गये थे। 1930 के सत्याग्रह आन्दोलन में आपने 1 वर्ष 3 माह

6 दिन की सजा माहेश्वर जेल में भोगी। 1942 के आन्दोलन में भी आपने भाग लिया। आपके अन्य दो भाई भी जेल यात्री रहे हैं।

आ0- (1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-4, पृ0-22

श्री ज्ञानचंद जैन

श्री ज्ञानचंद जैन का जन्म बिजनौर (उ0प्र0) में 1910 में हुआ। आपके माता-पिता आपको अल्पवय में ही छोड़कर स्वर्ग सिधार गये, अतः



आपका पालन-पोषण आपके चाचा प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी एवं पूर्व एम0एल0सी0 श्री रतनलाल जैन, बिजनौर की देखरेख में हुआ। वहीं पर आपने इण्टरमीडिएट तक शिक्षा प्राप्त की। तत्पश्चात् अपने पूर्वजों की धरोहर की देखभाल के लिए अफजलगढ़ (बिजनौर) चले गये। वहां पर रहते हुए आपके हृदय में देश-प्रेम तथा अंग्रेजी दास्तां से छूटने की भावना प्रतिदिन बढ़ती गयी। आप नमक आंदोलन तथा सत्याग्रह में अपने चाचा श्री रतनलाल जी के साथ अनेक बार जेल गये। विदेशी वस्त्रों का बहिष्कार व देशी वस्त्रों का प्रचार आप जोर-शोर से करते थे।

कुछ समय बाद आप अफजलगढ़ से अपनी जमींदारी छोड़कर सहारनपुर आ गये और यहीं पर अपना व्यापार करने लगे। व्यापार के साथ ही धार्मिक भावना भी आप में कम नहीं थी। प्रतिदिन जिनेन्द्र भगवान् की पूजन और स्वाध्याय का आपका नियम था। चारों प्रकार के दान देने की आपकी रुचि थी। 26-9-1976 को सहारनपुर में शहीद भगतसिंह जी की विशाल प्रतिमा के अनावरण समारोह में अचानक भगदड़ मच जाने से आपको साधारण सी चोट लगी तथा रात्रि में ही एकाएक ब्रेन हेमरेज हो जाने से आपका निधन हो गया। आप अपने पीछे भरापूरा परिवार छोड़ गये।

आ0-(1) पुत्र श्री विनोद जैन द्वारा प्रेषित परिचय एवं प्रमाण पत्र आदि

श्री ज्ञानचंद जैन

जबलपुर जैन समाज के उत्साही कार्यकर्ता रहे श्री ज्ञानचंद जैन, पुत्र-श्री भोलानाथ का जन्म 1913 में जबलपुर (म0प्र0) में हुआ। आप 1932 के प्रारम्भ में आन्दोलन में सक्रिय हुये, राष्ट्रीय झंडे को सत्याग्रह का माध्यम बनाये जाने पर गिरफ्तार किये गये और 6 माह की सजा पायी। 'नेशनल ब्वाय स्काउट्स' के सदस्य के रूप में समाज के कार्यक्रमों में आपने प्रमुखता से भाग लिया था। 1942 के आन्दोलन में आप 1 वर्ष जबलपुर जेल में नजरबंद रहे। 1982 में आपका निधन हो गया।

आ0- (1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-2, पृ0-127, (2)स्व0 स0 ज0, पृ0-190

श्री ज्ञानचंद जैन

श्री ज्ञानचंद जैन, पुत्र-श्री मुलायमचंद जैन का जन्म 1928 में जबलपुर (म0प्र0) में हुआ



अपनी गिरफ्तारी के संदर्भ में आपने लिखा है-

'मैं सन् 1942 के आन्दोलन में भाग लेने के कारण पकड़ा गया था। जबलपुर खादी आश्रम उन दिनों राष्ट्रीय गतिविधियों का केन्द्र था, वहां से अंग्रेज सरकार के खिलाफ नित्य-प्रति परचे, गुप्त रूप से छापे जाते थे और जनता में गुप-चुप बांटे जाते थे।

परचा बांटने वालों में मैं भी था। मेरे हाथ से पुलिस ने कुछ पर्चे जब्त किये तथा मुझे पकड़कर ले गये थे। मुझे एक माह 16 दिन जेल में रहना

पड़ा, पर सरकार मुझे अपराधी सिद्ध नहीं कर पायी अतः छूट आया।'

आ0- (1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-1, पृष्ठ-127, (2) स्व0 स0 ज0, पृ0-190 (3) स्व0 प0

श्री ज्ञानचंद जैन

चंदला, जिला-छतरपुर (म0प्र0) के श्री ज्ञानचंद जैन, पुत्र-श्री मोतीलाल जैन ने 1946-47 में चरखारी



एवं छतरपुर राज्य प्रजामण्डल के उत्तरदायी शासन की मांग को लेकर छेड़े गये सत्याग्रह आन्दोलनों में भाग लिया। पुलिस की गिरफ्तारी से आप बचते रहे, चाहकर भी पुलिस गिरफ्तार न कर सकी। आपने भूमिगत रहकर आन्दोलन को सक्रियता प्रदान की। शासन ने आपको स्वतंत्रता सेनानी का दर्जा देकर सम्मानित किया है।

आ0- (1)छतरपुर जिले के स्वतंत्रता संग्राम सेनानी, सूची क्रमाङ्क 135 (2) स्व0 प0

श्री ज्ञानचंद जैन 'ज्ञानेन्द्र'

जैन पत्र-पत्रिकाओं का थोड़ा भी अध्येता 'ज्ञानेन्द्र' जी के नाम के अपरिचित नहीं होगा।



उनकी सहस्राधिक कवितायें जैन पत्रों में प्रकाशित हो चुकी हैं, उनकी लेखनी ने अब भी विराम नहीं लिया है, वह आज भी उसी अजस्र तेज के साथ प्रवाहित है, जैसी राष्ट्रीय आन्दोलन के समय थी। उनके गीतों को लोग गाते हैं, गुनगुनाते हैं और अपने अन्दर एक अलौकिक स्फूर्ति का संचार पाते हैं। पर कम ही लोग जानते होंगे कि ज्ञानेन्द्र जी को अपनी राजनैतिक गतिविधियों के कारण 1941 में टीकमगढ़ रियासत से निर्वासित होना पड़ा था।

आपका जन्म बड़ागांव, जिला-टीकमगढ़ (म0प्र0) में श्री हजारी लाल जैन के यहाँ फाल्गुन कृष्ण पंचमी वि0 स0 1978 (सन् 1921) में हुआ। 1942 में आप टीकमगढ़ में स्टेट कांग्रेस (ओरछा सेवा संघ) के संस्थापक सदस्य रहे। भारतीय विधान निर्मातृ परिषद्, नई दिल्ली के सदस्य एवं पूर्व सांसद, मंत्री श्री रामसहाय तिवारी के अनुसार आपने 1941 से 1944 तक भूमिगत रहकर कार्य किया। आप बुन्देलखण्ड के अमर शहीद श्री नारायणदास खरे के निकट साथी रहे हैं। श्री खरे का एक पत्र यहां देना असमीचीन नहीं होगा–

कैम्प निवाडी
10-10-42

प्रिय ज्ञान सदा सुखी रहो,

दूसरी सभा श्री पाठक जी व मैं 2-10-42 को कर आया हूं, सारे समाचार ठीक हैं, राज्य कर्मचारियों से कोई खतरा जल्दी और सहज नहीं हो सकता। धीरे-धीरे सफलता के आसार नज़र आने लगे हैं।.........परचे छपे हुए झांसी रखे हुये हैं, उन्हें ता0 15-16 तक अवश्य अपने पास टीकमगढ़ ही मंगवा लूंगा। आपके पास उनके भेजने का प्रबन्ध क्या हो सो समझ में नहीं आता। आप ता0 20 के अरीब-करीब किसी विश्वसनीय व्यक्ति को भेजकर 1/- रु0 फी सैकड़ा के हिसाब से जरूर मंगा लीजिए। 200-250 परचे से ज्यादा न दे सकूंगा। अगर आप न मंगा सकें तो उसका नमूना- नकल मैं भेज दूंगा, अपने नाम से सागर भी छपवा सकते हो, उत्तर देना जैसा ठीक हो वैसा किया जाय, डाकघर द्वारा भेजना ठीक नहीं जंचता.........। अभी जेल जाने का समय नहीं है, और न जेल जाना कोई कार्य ही है, आपको कार्य करना चाहिए।

आपका
नारायण दास खरे

अपने अरसठवें वर्ष पर (1991 में) आपने बड़ी सुन्दर और बहुचर्चित कविता लिखी थी, जो यहां दी जा रही है। इनकी एक कविता 'सुकवि' के मई 1946 के अंक में छपी थी, उसके बगल में ही श्री लाल बहादुर शास्त्री की कविता भी छपी थी।

अरसठवें वर्ष पर

लो देख चुका अब तक अरसठ
होली व दीपावली बसन्त !

शिशुपन में कुछ बालापन में
कुछ साक्षर होने में बीते
है नाम भले ही ज्ञानचन्द
पर रहे ज्ञान बिन ही रीते
पड़गई 'करो या मरो' भनक
गांधी बाबा का महामन्त्र
लो देख चुका................1

डिग्गी पीटी, चिल्लाये-गुंजाये
जीभर नारे जयकारे
स्वातन्त्र्य समर में जूझ रहे थे
देश प्रेम के मतवारे
ले दमन चक्र तब कूद पड़ा
रियासत का पागल राज तंत्र
लो देख चुका 2

तब लुटा-पिटा-बन्धन में रह
निर्वासित होकर के भटका
इस बीच अनेकों चिर वियोग
के पड़े झेलने को झटका
इस महायुद्ध की वेदी पर
कितनों का असमय हुआ अन्त
लो देख चुका................3

नेहरू ने लाल किले पर जब
फहराई ध्वजा तिरंगी थी
तब पूछ दबाकर भाग गई
भारत से सैन्य फिरंगी की
वह अमिट हो गई जन-मन-गण
पर इतिहासिक घटना ज्वलन्त
लो दखे चुका........................4

देखा है हमने गांधी को
हमने देखे नेहरू-पटेल
जिनके इङ्गित पर राजाओं के
नाकों में डाली गई नकेल
तब गूंज गया था दिग्-दिगन्त
भारत स्वतंत्र ! भारत स्वतंत्र !
लो देख चुका......................5

कुर्सी पाने अवसरवादी
सत्पात्रों को पीछे धकेल
निष्ठा-श्रद्धा को लिये जिये
जिनका अभाव से रहा मेल
छीना झपटी में सिद्धान्तों का
हो जाये न दुखद अन्त
लो देख चुका....................6

अब तन-तुरंग थक गाया किन्तु
विद्रोही मन दौड़ा करता है
अदृश रहकर सागर की
लहरों जैसा उमड़ा करता है
न जाने कब टूट जाय
चंचल स्वासों का वाद्य यन्त्र
लो देख चुका....................7

आ०- (1) वि० स्व० स० इ०, पृ०-67 तथा 205, (2) स्व० प०, (3) अनेक प्रमाण पत्र आदि, (4) 'सुकवि' पत्रिका के प्रथम पृष्ठ का फोटोस्टेट

श्री ज्ञानप्रकाश काला

जयपुर राज्य प्रजामण्डल के उत्साही स्वयंसेवक श्री ज्ञानप्रकाश काला का जन्म 1921 के लगभग

हुआ। 16 वर्ष की उम्र में ही आप प्रजामण्डल से जुड़कर उसकी गतिविधियों में भाग लेने लगे। गोपनीय रूप से बुलेटिन बाँटने, जूलूसों तथा अन्य गतिविधियों की गोपनीय सूचनाएं देने में आपको महारत हासिल थी। पुलिस का गुप्तचर विभाग आपके पीछे सदैव लगा रहता था। प्रजामण्डल आंदोलन के दौरान पुलिस की लाठियों से आपका सर फूट गया था, आप घायल होकर बेहोश हो गये, फिर भी गतिविधियाँ जारी रखीं।

आ0- (1) रा0 स्व0 से0, पृष्ठ-629

श्री ज्ञानीचंद मॉडल

गुना (म0 प्र0) के श्री ज्ञानीचंद मॉडल, पुत्र-श्री कस्तूरचंद मॉडल का जन्म 29 नवम्बर 1926 को गुना में हुआ। अपने विद्यार्थी जीवन में आपने 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में भाग लिया। तत्कालीन कलेक्टर ने आपको अन्य साथियों के साथ बुलाकर आन्दोलन वापिस लेने हेतु दबाव डाला, न मानने पर आप छह माह के लिए गुना से निष्कासित कर दिये गये। निष्कासन की सूचना पाकर आप भूमिगत हो गये, वापिस आने पर आगामी पढ़ाई से वंचित रहे क्योंकि स्कूलों ने प्रवेश देने से मना कर दिया। आपकी धर्मपत्नी श्रीमती प्रसन्नलता मॉडल भी स्वतंत्रता सेनानी हैं।



आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-4, पृष्ठ-309 (2) स्व0 प0

श्री झब्बूलाल जैन

विद्यार्थी जीवन से ही राष्ट्रीय आन्दोलन में अभिरुचि रखने वाले, जबलपुर (म0प्र0) के श्री झब्बूलाल जैन पुत्र-श्री चैन्नी लाल का जन्म 1917 में हुआ। 1930 से ही आप स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय हो गये थे। 1932 में विदेशी वस्त्र आन्दोलन में आपने प्रमुखता से भाग लिया तथा साढ़े सात माह का कारावास भोगा। आप नेशनल स्काउट एसोएियेशन के सदस्य रहे तथा नगर निगम द्वारा सम्मानित हुए।

आ0- (1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-1, पृ0-54, (2) स्व0 स0 ज0, पृष्ठ-114

श्री बाबू झूमनलाल जैन या झुम्मनलाल जैन

स्मृतिशेष बाबू झूमनलाल जी के परिवारजनों की तलाश में जब हम दि0 11-12- 1994 को सहारनपुर गये, तब वयोवृद्ध श्री विशालचंद जैन, जिन्होंने अप्रत्यक्ष रूप से सेनानियों की सहायता की थी, ने बताया कि उनके पुत्र हंसकुमार व शिवचन्द्र के सिवा अन्य पुत्रादि नहीं थे। हंसकुमार भी जेल गये थे (इनका परिचय इसी ग्रन्थ में अन्यत्र देखें) और अब वे भी नहीं हैं।

झूमनलाल जी जैनधर्म और दर्शन पर दृढ़ आस्था रखने वाले सहारनपुर के सम्मानित नागरिक थे। वे क्रोध या ममता दोनों के अवसर पर कभी भी अपने सिद्धान्तों से नहीं डिगे। 1920 में अपनी चमकती वकालत को छोड़कर वे राजनीति में आये और जितना सम्भव था उससे भी अधिक किया। वे सदैव कांग्रेस के साथ रहे। स्पष्ट वक्ता, पैने लेखक और संयमी कार्यकर्ता श्री जैन ने अपने सेवाकर्म को कभी व्यवसाय नहीं बनाया, उन्होंने कभी 'नेतागिरी' का भी प्रयत्न नहीं किया, उसकी ओर से वे जैसे भूले ही रहे।

श्री जैन का पूरा परिवार ही आन्दोलन में सक्रिय था। एक पुत्र श्री हंसकुमार जैन अपनी बीमार कन्या को छोड़कर 11-8-42 को जुलूस का नेतृत्व करते हुए गिरफ्तार हुए, कुछ दिन पश्चात् कन्या स्वर्ग सिधार गई। दूसरे पुत्र श्री शिवचन्द्र कुमार, जो उस समय कानपुर कालेज में द्वितीय वर्ष में पढ़ रहे थे, ने कालेज छोड़ दिया। श्री शिवचन्द्र कुमार ने 24-3-75 को दिये

एक साक्षात्कार में कहा था- 'मेरे साथ सात लड़कों ने भी कालेज छोड़ दिया था, और वे अपने-अपने स्थानों पर जाकर, असहयोग आन्दोलन में सम्मिलित हो गये थे।' (सहारनपुर सन्दर्भ, भाग-1, पृ0-140)

1920 में गांधी जी ने अदालतों के बहिष्कार का निर्देश दिया था अतः सहारनपुर में अदालतों का बहिष्कार किया गया और कौमी अदालतें बनायी गईं, जिनका निर्णय सबको मान्य होता था। इस प्रकार की अदालत में झुम्मनलाल जी न्यायाधीश और मुंशी जहूर अहमद पेशकार थे।

1921 के आन्दोलन के बाद सहारनपुर में रचनात्मक कार्य जैसे अछूतोद्धार, चरखा चलाना, समाज सेवा करना आदि प्रारम्भ हुए। इन सभी में अपने अन्य साथियों के साथ श्री जैन ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया था। 1927 में सहारनपुर में कांग्रेस का विधिवत् गठन हुआ इसमें श्री झुम्मन लाल जी सक्रिय कार्यकर्ता थे। 1932 के आन्दोलन में आप अपने पुत्र हंसकुमार के साथ जेल गये थे।

20 सितम्बर 1930 को सरसावा में कांग्रेस की ओर से एक कांफ्रेंस का आयोजन किया गया था, इसको सफल बनाने में श्री दीपचंद, श्री जम्बू प्रसाद (जैन) और श्री कैलाश चंद (जैन) के साथ आपने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। जब सम्मेलन की तैयारी शुरू हो गयी तो 19 सितंबर 1930 को सरकार ने दफा 144 लगा दी। यद्यपि कांफ्रेंस का स्थान बदलकर जमना का पुल निर्धारित किया गया किन्तु जत्थे और सत्याग्रही सरसावा में एकत्रित हो गये। तभी एक पुलिस के सिपाही द्वारा वैद्य रामनाथ को सूचना मिली कि वैद्य रामनाथ, प्रभुदयाल, झुम्मनलाल, जम्बू प्रसाद (जैन) और कैलाश चंद (जैन) के सामने आने पर गोली मारने के आदेश हो गये हैं। पता चलते ही झुम्मनलाल जी अपने 3 साथियों के साथ फरार हो गये। 1934 में जिला कांग्रेस कमेटी में आप प्रतिनिधि चुने गये। 1934 में ही नगर पालिका सहारनपुर की सीट पर भी आप चुनाव में जीते थे। म्यूनिसिपल विधान के बारे में आप उस समय जिले के महापण्डित माने जाते थे।

आ0- (1) जै0 स0 रा0 अ0, (2) स0 स0, भाग-2 पृष्ठ-140, 163, 176, 183, 544, (3) उ0 प्र0 जै0 ध0, पृष्ठ-85

श्री टीकमचंद जैन पहाडिया

श्रम कानून के विशेषज्ञ श्री टीकमचंद जैन पहाडिया का जन्म एक अप्रैल 1923 को कोटा (राजस्थान) में हुआ। विद्यार्थी जीवन में ही आप स्वतंत्रता आंदोलन में कूद पड़े और 1942 में पढ़ाई छोड़कर जेल यात्रा की। बाद में एम0ए0 (अर्थशास्त्र एवं राजनीतिशास्त्र) तथा एल0एल0बी0 करने के बाद राजकीय सेवा में प्रवेश लिया और अन्त में राजकीय अधिकारी के पद से निवृत होकर श्रम सलाहकार के रूप में विख्यात हुए।

श्री जैन के श्रम समस्याओं पर अनेक लेख प्रकाशित हुये हैं। आप यूरोप, थाईलैण्ड, जापान, दक्षिण कोरिया, हांगकांग, संयुक्त राज्य अमेरिका आदि देशों की यात्रा कर चुके हैं। लेबर कानून के आप विशेषज्ञ माने जाते हैं। स्वतंत्रता सेनानी के रूप में आपको राजस्थान सरकार द्वारा 13 अप्रैल 1988 को ताम्र पत्र भेंट कर सम्मानित किया गया है।

आ0- (1) जै0 स0 वृ0 इ0, पृ0-240

श्री टीकाराम जैन

'सागर जिला स्वतंत्रता संग्राम सैनिक संघ' के सचिव, श्री टीकाराम जैन, पुत्र-श्री राजाराम जैन का जन्म 18 नवम्बर 1923 को सागर (म0प्र0) में हुआ। आपने अंग्रेजी एवं पुरातत्त्व में स्नातकोत्तर उपाधियाँ अर्जित की हैं। अध्यापन के व्यवसाय से जुड़े श्री जैन ने शिक्षा सम्बन्धी अनेक पुस्तकों की रचना की है। 1942 के आन्दोलन में आपको 9

दिसम्बर को गिरफ्तार कर लिया गया और कलेक्टर के समक्ष पेश किया गया। कलेक्टर ने माफी मांगने को कहा पर आपने माफी नहीं मांगी, फलत: आठ माह के सख्त कारावास की सजा आपको भोगनी पड़ी। कुछ समय आप जेल की काल कोठरी में भी रखे गये। एक साक्षात्कार में श्री जैन ने प्रहलाद एस0 नायक से कहा था कि– 'आज के नेताओं में पहले जैसी भ्रातृत्व भावना, देशभक्ति एवं सेवा देखने को नहीं मिलती। आज का नेता स्वयं के विकास में उलझा रहता है, देश की किसी को परवाह नहीं है।'

आ0- (1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-2, पृ0-27, (2) दैनिक भास्कर, भोपाल, 20-11-94

श्री टीकाराम 'विनोदी'

अपने विनोदी स्वभाव के कारण 'विनोदी' उपनाम से ख्यात, प्रख्यात समाजसुधारक और राष्ट्रीय कवि, श्री टीकाराम 'विनोदी' का जन्म 1907 में हुआ। आपके पिता का नाम श्री किशोरी लाल जैन था। आपको आर्थिक कारणों से बचपन से ही व्यवसाय अपनाना पड़ा तथा कपड़े की फेरी लगाकर आप आत्मनिर्भर बने। समाज से हुए व्यापक संपर्क के कारण राष्ट्रीय चेतना उत्पन्न हुई और आपने 'विनोदी' उपनाम से कवितायें लिखना प्रारम्भ किया।

1920 के कांग्रेस के नागपुर अधिवेशन के समय आपने अपने साथियों सहित स्कूल छोड़ दिया और आन्दोलन में सक्रिय भाग लेने लगे। 1923 के झण्डा सत्याग्रह में बहुत प्रत्यन करने पर भी उम्र कम होने से आप सत्याग्रह नहीं कर सके। पर इससे आपके दिल में बलिदान की आकांक्षा और प्रबल होती गई। 1929 में आप गांव छोड़ जबलपुर (म0प्र0) आ गये। लाहौर कांग्रेस की पूर्ण आजादी की घोषणा के बाद आपने शहर के अपने नव जवान साथियों के साथ 'नव जवान भारत सभा' की स्थापना की और सबसे पहले कैण्टोनमेंट एरिया में प्रवेश कर कानून भङ्ग किया। आपको अन्य साथियों के साथ लाठी चार्ज, सड़कों पर घसीटे जाने तथा घोड़े-दौड़ाने आदि के कष्ट दिये गये। विनोदी जी ने कांग्रेस के प्रत्येक रचनात्मक कार्य, पिकेटिंग आदि में भाग लिया था।

1930 के जंगल सत्याग्रह के प्रथम जत्थे में गिरफ्तार होकर छ: माह की सख्त जेल आपने पाई। जेल से निकलकर शहर में 'नेशनल स्काउट ऐसोसियेशन' के गठन में आपने प्रमुख कार्य किया था। पुरानी 'नवजवान सभा' तो गैर कानूनी घोषित हो ही चुकी थी, यह नवजात संस्था भी सरकार के कोप से न बची अत: आप अपने साथियों के साथ लगान बंदी आन्दोलन में गिरफ्तार किये गये। 1934 में बा0 जयप्रकाशनारायण ने महाकौशल में सोशलिस्ट पार्टी स्थापित की। आप उसके डेलीगेट बन गये, तब आपका झुकाव समाजवाद की ओर हो गया था। मजदूर आन्दोलन में भी आपका जबरदस्त हाथ था। एक साल तक मजदूर यूनियन के सेक्रेटरी भी आप रहे। त्रिपुरी कांग्रेस में किसान तथा मजूदरों की रैली कराने में भी सहयोग दिया, उस रैली का नेतृत्व स्वामी सहजानंद तथा प्रो0 रंगा ने किया था।

1942 में विनोदी जी व उनके साथियों के वारण्ट निकल चुके थे, पर सीधे गिरफ्तार होना आपको गंवारा नहीं था। अत: पुलिस द्वारा घिरे रहने के बावजूद भी फरार हो गये और करीब एक माह फरार रहे। इन दिनों आपने गांवों का दौरा कर किसान आन्दोलन खड़ा किया। रात को अपने साथियों के साथ क्रान्तिकारी बुलेटिन छापते थे और आम जनता में वितरित करते थे। बहुत बार पुलिस घेर कर भी आपको पकड़ नहीं सकी। अन्त में 17 सितम्बर 1942 को आधी रात में पुलिस ने घेर लिया। डेढ़ साल तक जबलपुर सेण्ट्रल जेल में नजरबंद रखने के बाद 1 दिसम्बर 1944 को आप रिहा हुए।

आजादी के पश्चात् आप 'भूदान' आन्दोलन की ओर सक्रिय हुए और गढ़ाकोटा क्षेत्र की पैतृक भूमि में से कुछ भाग दान में दे दिया तथा वहीं निर्धन तथा बेसहारा महिलाओं के लिए 'मातृसदन' तथा 'अस्पताल' की स्थापना की। 1958 में असामान्य परिस्थितियों में आपका निधन हो गया।

आ0- (1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-1, पृष्ठ-55, (2) स्व0 स0 ज0, पृष्ठ-115, (3) जै0 स0 रा0 अ0, पृष्ठ-58

श्री टेकचंद जैन

श्री टेकचंद जैन, पुत्र-श्री वंशीलाल का जन्म 1921 में वारासिवनी, जिला- बालाघाट (म0प्र0) में हुआ। 1940 में युद्ध विरोधी सभाओं तथा 1941 में व्यक्तिगत सत्याग्रहियों की सभाओं का आयोजन आपने किया। 1942 के आन्दोलन में 22 अगस्त को आप गिरफ्तार कर लिये गये तथा 17 अक्टूबर 1943 तक बालाघाट एवं अकोला जेलों में नजरबन्दी की सजा भोगी। आप नोटिफाइड एरिया कमेटी, वारासिवनी के सदस्य भी रहे।

आ0- (1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-1, पृष्ठ-178

श्री डाडमचंद डोषी

दोहद (गुजरात) में जिलाधीश भवन की तीसरी मंजिल पर चढ़कर तिरंगा झण्डा फहराने वाले कुशलगढ़ (राजस्थान) के श्री डाडमचंद डोषी का जन्म एक दिसम्बर 1912 को हुआ। डोषी जी अपनी शिक्षा समाप्त कर झाबुआ राज्य की राजकीय सेवा में लग गये। अपनी राष्ट्रीय विचारधारा के कारण वे हर जन-आन्दोलन में भाग लेते थे। झाबुआ राज्य से जब श्री कन्हैयालाल वैद्य, बालेश्वर दयाल मामाजी और भूपेन्द्रनाथ त्रिवेदी का निर्वासन हुआ तो डोषी जी ने उन्हें अपने घर ठहरा लिया, इसी अपराध में उन्हें राजकीय सेवा से हाथ धोना पड़े।

1937 में डोषी जी व्यापारार्थ झालौदा (गुजरात) आ गये। 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में वे दोहद के आसपास के गांवों में घूम-घूमकर 'करो या मरो' का प्रचार करने लगे। दोहद में ही बड़े साहस के साथ उन्होंने जिलाधीश के भवन की तीसरी मंजिल पर तिरंगा झण्डा पहरा दिया। वे घटना-स्थल पर ही गिरफ्तार कर लिये गये और छह माह की सजा तथा एक सौ रुपये का अर्थदण्ड पाया। अर्थदण्ड न देने पर दो माह की सजा और भुगतनी पड़ी। इन दिनों वे साबरमती जेल में रहे। जेल से निकलने के बाद छह माह वे पूज्य बापू के सम्पर्क में रहे। बाद में वे अपनी मातृभूमि कुशलगढ़ आ गये और आदिवासी क्षेत्रों में जन-जागरण हेतु समर्पित भाव से काम करने लगे।

कुशलगढ़ में 1944 में प्रजामण्डल की स्थापना का श्रेय डोषी जी को ही है। प्रजामण्डल के माध्यम से उन्होंने जनता को नागरिक अधिकार और सुविधायें देने हेतु आन्दोलन किया साथ ही प्रौढ़शालायें और चलते-फिरते दवाखाने शुरू करवाये। 1946 में हरिजन उद्धार और अस्पृश्यता निवारण में भी उन्होंने महती भूमिका निभाई। उनके प्रयास से ही कुशलगढ़ में गांधी आश्रम एवं खादी केन्द्र की स्थापना हुई थी। कुशलगढ़ प्रजामण्डल के अन्य जैन कार्यकर्ताओं में श्री कन्हैया लाल जैन, कान्तिलाल शाह, पन्नालाल शाह, किशनलाल डोषी, शोभागमल डोषी आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

आ0- (1) जैन संस्कृति और राजस्थान, पृष्ठ-343, (2) रा0 स्व0 से0, पृष्ठ-521, (3) इ0 अ0 ओ0, भाग-2, पृष्ठ-401

श्री डालचंद जैन

गोटेगांव, जिला-नरसिंहपुर (म0प्र0) के श्री डालचंद जैन, पुत्र-श्री छब्बीलाल का जन्म 1900 में हुआ। 1930 से ही आप रा0 आ0 में सक्रिय हो गये थे। 1941 के व्यक्तिगत सत्याग्रह व 1942 के



भारत छोड़ो आन्दोलन में लगभग 14 माह का कारावास आपने भोगा। आपने श्री फूलचन्द जैन व भागचंद जैन के साथ झांसी तक पैदल यात्रा की थी और गिरफ्तार हुए थे।

आ0- (1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-1, पृष्ठ -142, (2) जै0 स0 रा0 अ0

श्री डालचंद जैन

श्री डालचंद जैन मडावरा (ललितपुर) उ0प्र0 के निवासी थे, आपके पिता का नाम श्री ठाकुर दास जैन था। 1942 के करो या मरो आन्दोलन में आपने एक वर्ष की कठोर सजा भुगती। आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी। आपकी माता जी अर्थाभाव के कारण स्वयं तिल-तिल आहुति देती रहीं और पुत्र को सदैव देश पर प्राणोत्सर्ग की प्रेरणा देती रहीं। बाद में आप समाजवादी विचारधारा के बन गये।

आ0 (1) र0 नी0, पृ0 94, (2) जै0 स0 रा0 अ0, (3) डा0 बाहुबलि कुमार द्वारा प्रेषित परिचय

श्री डालचंद जैन

दमोह (म0प्र0) के श्री डालचंद जैन, पुत्र-श्री नन्दीलाल का जन्म 1915 में हुआ । आप में राष्ट्रीय भावना इतनी अधिक थी कि जब आप 15 वर्ष के थे तभी देश की स्वतंत्रता के लिये आजीवन जुटे रहने की प्रतिज्ञा कर ली थी। नमक कानून और जंगल कानून तोड़ने के आन्दोलन में आप सम्मिलित रहे। उस समय गांधी जी के अहिंसक आन्दोलन की सारी जनता खिल्ली उड़ाती थी और कांग्रेस की सभाओं को सुनना भी नहीं चाहती थी। उस समय भी दमोह के प्रसिद्ध सेनानी श्री मोदी जी सभाओं की अध्यक्षता करते और डालचंद जी अकेले ही 'झंडा ऊँचा रहे हमारा' राष्ट्रीय गान गाते रहते थे।

आपकी कर्मठता इसी से ज्ञात होती है कि जब 1939 में त्रिपुरी कांग्रेस का अधिवेशन हुआ तो डालचंद जी ने एक माह तक दमोह में परेड की और तीन हफ्ते तक त्रिपुरी कांग्रेस के स्वयंसेवक सपत्नीक रहे। 1940 के दिल्ली चलो आन्दोलन में भी आप सम्मिलित हुए थे।

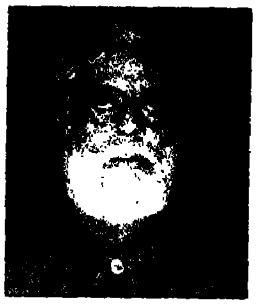
1942 में करो या मरो तथा भारत छोड़ो आन्दोलन प्रारम्भ हुआ और पुलिस अपनी सूची के अनुसार नेताओं को पकड़कर जेल भेजने लगी तो आपने बचकर काम करते हुए रोज नया डिक्टेटर ढूंढकर गांधी चौक की आम सभाओं का संचालन किया। आप सभा प्रारम्भ कराकर गायब हो जाते थे, फिर भी पुलिस की निगाहों से न बच सके और दि0 19-8-42 की सभा में पकड़ लिए गये तथा नौ माह की सजा भोगी।

दिनांक 24-7-66 को लम्बी बीमारी के बाद हृदय रोग के कारण आपका निधन हो गया।

आ0- (1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-2, पृष्ठ-83, (2) श्री संतोष सिंघई, दमोह, द्वारा प्रेषित परिचय

श्रीमंत सेठ श्री डालचंद जैन

पन्ना-दमोह क्षेत्र से लोकसभा के सदस्य रहे, प्रसिद्ध सामाजिक, राजनैतिक कार्यकर्ता, मृदुभाषी,



सहिष्णु, सरल हृदय, उदारमना श्री डालचंद जैन का जन्म ग्यारह सितम्बर 1928 को सागर (म0प्र0) में हुआ। आपके पिता श्रीमंत समाजभूषण सेठ श्री भगवानदास जी अपने समय के ख्यात पुरुष रहे हैं, वे स्वाधीनता सेनानियों से न केवल गहरी सहानुभूति रखते थे, बल्कि शासन के भय की चिन्ता न करते हुए उनकी सहायता भी करते थे।

विद्यार्थी जीवन से ही श्री जैन राष्ट्रीय आन्दोलन में सक्रिय हो गये। 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन

में पूज्य बापू के आह्वान पर आपने आन्दोलन में भाग लिया, उस समय आपकी उम्र मात्र 14 वर्ष थी, पर आजादी के दीवानों को उम्र का बन्धन बांध सका है क्या? सागर में उस समय आजादी के परवाने अपनी जान न्यौछावर करके भी भारत माँ को आजाद कराने का प्रण लिये बैठे थे, रोज जुलूस, लाठी चार्ज और गिरफ्तारियां, यही क्रम सागर में चल रहा था। इसी बीच कुछ सेनानियों, जिनमें श्री पदमकुमार सर्राफ व श्री गौरीशंकर पाठक प्रमुख थे, ने तय किया कि आंदोलन प्रतिदिन चलता रहे, इसलिए सभी एकदम गिरफ्तार न होकर रोज दो या चार व्यक्ति गिरफ्तार हों। लगभग 40 दिन तक यह क्रम चलता रहा। अनेक सेनानी गिरफ्तार हो चुके थे। आन्दोलन ठण्डा न होने पावे इसलिए तय किया गया कि शहर में लगभग 100 व्यक्तियों का जुलूस निकाला जावे व कटरा मोटर स्टैण्ड पर सभा की जाये। जुलूस की जिम्मेवारी श्री पदमकुमार को दी गई।

ठीक 3 बजे लक्ष्मीपुरा में लक्ष्मीबाई के चौपड़ा से 100 व्यक्तियों का जुलूस निकाला गया, इनमें श्री बाबूलाल तिवारी, सिंघई सुरेशचंद जैन एवं श्री डालचंद जैन प्रमुख थे। लगभग ड़ेढ घंटे बाद जुलूस कटरा मोटर स्टैण्ड पहुँचा, जहाँ मंच बनाकर सभा की गई, आध भाषण के दौरान पुलिस आ पहुँची, सर्वप्रथम श्री पदमकुमार सर्राफ को गिरफ्तार किया गया, उनके गिरफ्तार होते ही श्री बाबू लाल तिवारी ने भाषण देना प्रारम्भ किया, वे भी गिरफ्तार कर लिये गये, बाद में श्री सुरेश चंद जैन ने भाषण दिया, वे भी पकड़ लिये गये, बाद में श्री डालचंद जैन ने तिरंगा अपने हाथ में ले लिया अत: वे भी गिरफ्तार कर लिये गये। पुलिस ने लाठी चार्ज कर मैदान खाली करा लिया।

गिरफ्तार सेनानियों को लेकर इंसपेक्टर अवस्थी जा रहे थे, रास्ते में उन्होंने डालचंद जी को म्युनिसपल हाईस्कूल के पास उतार दिया, क्योंकि उनकी उम्र मात्र 14 वर्ष थी। इसके बाद तो डालचंद जी अनेक बार गिरफ्तार हुए व छोड़ दिये गये। कई बार आप डिटेन्शन में रखे गये। आजादी के आन्दोलन में इस प्रकार सक्रियता से भाग लेने के कारण स्कूल से उनका नाम काट दिया गया।

'सादा जीवन उच्च विचार' के पक्षधर श्री जैन ने विद्यार्थी जीवन में ही खादी पहनना शुरू किया था। वे 'भारत सेवक समाज' से भी जुड़े रहे और उसके सक्रिय कार्यकर्ता व पदाधिकारी रहे।

सागर में उन दिनों आस-पास के क्षेत्रों से अनेक जैन सेनानी जेल में आते थे, उनके शुद्ध भोजनादि की व्यवस्था आप करते थे। 1942 के आन्दोलन के समय आपने अपने पूज्य पिता श्री के साथ जेल में बन्द सेनानियों को समय-समय पर वस्त्रादि भेंट किये थे एवं उनके आश्रित परिवारों को हर तरह की सहायता पहुँचाई थी।

सामाजिक और राजनैतिक कार्यों से आप आजादी के बाद और अधिक जुड़ गये। सागर क्षेत्र के विकास का बहुत कछ श्रेय आपको भी जाता है। नवयुवकों में नई स्फूर्ति का संचार करने वाले श्री जैन 1963 में सागर नगर पालिका के अध्यक्ष, 1967 में बीना विधान सभा क्षेत्र से विधायक निर्वाचित हुए। 1984 में दमोह-पन्ना संसदीय क्षेत्र से कांग्रेस (इ) ने आपको अपना प्रत्याशी बनाया, आप प्रचण्ड बहुमत से संसद सदस्य चुने गये। इस चुनाव में आपने पन्ना रियासत के पूर्व महाराजा को परास्त किया था।

आप विदेश मंत्रालय की संसदीय सलाहकार समिति के सदस्य भी रहे हैं। भारत सरकार की डायरेक्ट टैक्स सलाहकार समिति एवं प्रशासकीय वित्त समिति के भी आप सदस्य मनोनीत किये गये थे। मध्य प्रदेश कांग्रेस (इ) कमेटी के आप अनेक वर्षों तक कोषाध्यक्ष रहे हैं।

अनेक राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं से सम्बद्ध श्री जैन, विश्व अहिंसा संघ के अध्यक्ष, अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन परिषद् के अध्यक्ष, अखिल भारतीय बीड़ी उद्योग संघ के कोषाध्यक्ष, अ०भा०दि० जैन तीर्थ क्षेत्र, कमेटी के ट्रस्टी, म०प्र० तीर्थक्षेत्र कमेटी के अध्यक्ष, दि० जैन महासमिति के उपाध्यक्ष आदि पदों पर रहे हैं। आप डॉ० हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर के कुल सांसद एवं कार्यकारिणी सदस्य, रेलवे सलाहकार समिति के सदस्य, म०प्र० चेम्बर ऑफ कॉमर्स के उपाध्यक्ष, गणेशवर्णी संस्कृत महाविद्यालय के अध्यक्ष, म०प्र० स्वतंत्रता संग्राम सैनिक संघ के कार्यकारिणी सदस्य आदि अनेक पदों पर भी रहे हैं। श्री भगवानदास शोभा लाल जैन चेरिटेबिल ट्रस्ट के आप अध्यक्ष हैं। आपने अमेरिका, कनाड़ा, इंग्लैण्ड, जर्मनी, हांगकांग, सिंगापुर आदि देशों में सम्पन्न सम्मेलनों में भारत का प्रतिनिधित्व किया है। आप शान्ति, समन्वय एवं एकता के लिए समर्पित हैं।

आ०- (1) आ० दी०, पृ० 9-10, (2) स्वा० प०

श्री डालिमचंद सेठिया

सुजानगढ़ (राजस्थान) के श्री डालिमचंद सेठिया का राजस्थान के स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों में अग्रगण्य स्थान है। आपके पिता श्री मूलचंद सेठिया वैरिस्टर थे। 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में राष्ट्रनायक श्री जयप्रकाश नारायण और श्री राममनोहर लोहिया ने फरार होकर आपके निवास पर ही शरण ली थी, फलत: आपको ब्रिटिश शासन का कोपभाजन होना पड़ा और 54 दिन का कारावास भोगना पड़ा। कलकत्ता के मारवाड़ी छात्रसंघ के आप सभापति रहे थे।

आ०-(1) इ० अ० ओ०, भाग-2, पृ०-399

श्री ताजबहादुर महनोत

उज्जैन (म०प्र०) के स्वाधीनता सेनानी दम्पति श्री सरदारसिंह महनोत और श्रीमती सज्जनदेवी महनोत के भतीजे श्री ताजबहादुर महनोत अपने चाचा जी, चाची जी व उनके पुत्र श्री राजेन्द्रकुमार महनोत के जेल जाने पर घर की व्यवस्था हेतु बनारस गये थे, पर स्वाधीनता की ऐसी लगन लगी कि आप भी परिवार वालों के साथ जेल में पहुँच गये और 1945 में छूटे।

आ०-(1) जै० स० रा० अ०, पृष्ठ-91

श्री ताराचंद जैन

सागर (म०प्र०) के श्री ताराचंद जैन, पुत्र-श्री दयाचंद का जन्म 1920 में हुआ। 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में आपने 6 माह का कारावास भोगा।

आ०-(1) म० प्र० स्वा० सै०, भाग-2, पृष्ठ-28 (2) आ० दी०, पृष्ठ-45

श्री ताराचंद जैन

अमरपाटन, जिला- सतना (म0प्र0) के श्री ताराचंद जैन, पुत्र-श्री बलदेव प्रसाद का जन्म 1919 में हुआ। 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में तिरंगा झण्डा लेकर जुलूस निकालने पर आप गिरफ्तार कर लिये गये व 6 माह रीवा जेल में कारावास की सजा भोगी।

आ०-(1) म० प्र० स्वा० सै०, भाग-5, पृष्ठ-262

श्री ताराचंद जैन

सागर (म०प्र०) के श्री ताराचंद जैन, पुत्र-श्री मौजीलाल का जन्म 1910 में हुआ। आपने शिक्षा प्राथमिक तक ही ग्रहण कर पाई। 1932 के आंदोलन में साढ़े पाँच माह तथा 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में 6 माह का कारावास भोगकर आपने राष्ट्र के प्रति अपने कर्तव्य का निर्वाह किया।

आ०- (1) म० प्र० स्वा० सै०, भाग-2, पृ०-28 (2) आ० दी, पृ०-45

श्री ताराचंद जैन

श्री ताराचंद जैन का जन्म ग्राम कंजिया, तहसील-खुरई, जिला-सागर (म0प्र0) में श्री रामचंद



जैन के यहाँ 1920 में हुआ। बचपन में ही पिताजी का स्वर्गवास हो जाने के कारण ललितपुर में मामा जी के घर आपका पालन-पोषण हुआ। जब आप प्राथमिक कक्षाओं में ही अध्ययनरत थे तब 35-36 के विदेशी वस्त्र बहिष्कार आन्दोलन में आपने भाग लिया। एक उत्साह था, लगन थी। आपने नारे लगाये, जुलूस निकाले और आम सभायें कीं।

1941के व्यक्तिगत सत्याग्रह में आपने भाग लिया, इस सत्याग्रह के सन्दर्भ में आपने लिखा है- ''गांधी जी का कहना था कि 'जो भी सत्याग्रही जहाँ से सत्याग्रह शुरू करें वहाँ से पैदल चलकर -दिल्ली पहुँचकर वायसराय भवन के सामने सत्याग्रह करें और अपनी गिरफ्तारी देवें।'

गांधी जी का यह भी कहना था कि -'हर सत्याग्रही अपने साथ भोजन के लिए झोला में एक पाव भुने चने एवं एक पाव गुड़ रखे, इससे ज्यादा कुछ भी नहीं'। भोपाल से आये अनेक सत्याग्रहियों की गिरफ्तारी ललितपुर में हुई, इससे हमें बहुत बल मिला, हममें भी कुछ करने का उत्साह और बढ़ गया।''

1942 के आन्दोलन के समय आपकी उम्र लगभग 22 वर्ष थी। 12 अगस्त 42 को आपके ग्रुप ने दफा 144 तोड़कर अहिंसात्मक सत्याग्रह द्वारा अपनी गिरफ्तारियां दीं। अदालत ने आपको एक साल की कैद व 100 रु0 जुर्माना की सजा दी। जुर्माना न देने पर दो माह की सजा आपको और काटनी पड़ी। पहले आप झाँसी जेल में रहे फिर नैनी भेज दिये गये। जेल में रहने के कारण स्कूलों में आपको प्रवेश नहीं मिला अत: आगे की शिक्षा से वंचित रह गये। आजादी के बाद आप टीकमगढ़ (म0 प्र0) में आ गये तब से वहीं रह रहे हैं।

आ0- (1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-2, पृष्ठ-128, (2) स्व0 प0, (3) र0 नी0, पृष्ठ-87

श्री ताराचंद जैन कासलीवाल

भारत के स्वतंत्रता आन्दोलन एवं राजनीति में इलाहाबाद जिले का अपना एक विशेष महत्त्व एवं



स्थान रहा है। इस जिले ने देश को शीर्षस्थ एवं वरिष्ठ नेता व सिपाही दिए हैं। इलाहाबाद शहर से 65 किलोमीटर दूर जिले का एक प्रमुख कस्बा दारानगर है। जहाँ के लोगों ने स्वतंत्रता आन्दोलन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाकर आन्दोलन को एक राह प्रदान की और कस्बे का नाम रोशन किया। उनमें सबसे ऊपर नाम है श्री ताराचन्द जैन (कासलीवाल) का।

आपका जन्म दि0 17-6-1899 को दारानगर ग्राम में ही एक प्रतिष्ठित जमींदार परिवार में हुआ। आपके पिता जी लाला हरसुखराय जैन दारानगर टाउन एरिया के चेयरमैन एवं इलाहाबाद जिला बोर्ड के सदस्य थे। आपको राजनैतिक शिक्षा एवं प्रेरणा अपने पिता जी से ही प्राप्त हुई। स्वतंत्रता आन्दोलन से पूर्व आप अवध की एक रियासत के दीवान के पद पर कार्यरत थे। 1928 में बापू (महात्मा गांधी) की आवाज पर उक्त महत्त्वपूर्ण पद से त्यागपत्र देकर स्वतंत्रता आन्दोलन से जुड़ गए

1930 के आन्दोलन में अपनी सक्रिय गतिविधियों के कारण आपको पहली बार गिरफ्तार किया गया और इसी के तहत घर की तलाशी, कुर्की

एवं अन्य पुलिस अत्याचारों को आपने सहा किन्तु सबूतों एवं गवाहों के अभाव के कारण अंग्रेज सरकार आपको सजा नहीं दे पाई। इसके बाद भी आपने जनचेतना का क्रम जारी रखा और आन्दोलन हेतु स्वयं-सेवकों की भर्ती, उनका प्रशिक्षण, राजनैतिक शिक्षा, प्रेरणा एवं मार्ग-दर्शन करते हुए 1942 के आन्दोलन में पूरी ताकत से हिस्सा लिया और अंग्रेजों को अच्छा सबक सिखाया। फलस्वरूप आप गिरफ्तार हुए और 18 माह की कठोर सज़ा और जुर्माना सहित जेल गए, जहाँ 17 दिनों का अनशन करके आवश्यक मांगों की पूर्ति कराई। 1943 में जेल से छूटते ही पुन: आन्दोलन में संघर्षरत हो गए जिसके परिणामस्वरूप दि0 6-8-43 को पुन: गिरफ्तार कर नैनी सेन्ट्रल जेल में 14 दिनों के लिए नजरबन्द कर दिए गए। वहाँ से छूटने के बाद भी आप स्वतंत्रता प्राप्ति तक हमेशा संघर्ष करते रहे।

कासलीवाल जी एकदम सरल, सौम्य, आकर्षक एवं प्रतिभावान व्यक्ति थे। आपकी कार्यप्रणाली से लोग बरबस ही खिंचे चले आते थे। राष्ट्र के स्वतंत्रता आन्दोलन में आपने अपना महत्त्वपूर्ण स्थान बनाया। इलाहाबाद जिला कांग्रेस कमेटी के वरिष्ठ उपाध्यक्ष पद पर कार्य करते हुए आन्दोलन के बड़े-बड़े नेताओं का ध्यान आकर्षित किया। पूर्व प्रधानमंत्री श्री लाल बहादुर शास्त्री एवं डा0 कैलाश नाथ काटजू आदि आपके अन्तरंग मित्रों में थे। आपका दारानगर स्थित आवास हमेशा आन्दोलन-राजनीति का अड्डा हुआ करता था। देश के शीर्षस्थ नेतागण भूमिगत होने की स्थिति में आपकी मेहमाननवाजी स्वीकार करते थे।

आपका पारिवारिक एवं व्यक्तिगत जीवन भी एकदम सादा एवं सरल था। आप धार्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति थे। आपके तीन पुत्रों एवं तीन बेटियों का भरा पूरा परिवार था। जिन सभी को अपने पैरों खडा कर व शादी- ब्याह करके सभी पारिवारिक जिम्मेदारियों का आदर्शपूर्वक निर्वाह किया। राजनीति के साथ ही सामाजिक क्रियाकलापों एवं प्रगति में आपकी दिलचस्पी रही है। आपने पू0 बापू की याद में दारानगर कस्बे में 'गांधी मेमोरियल हाई स्कूल' की स्थापना की जो आज भी उनकी याद अपने में संजोये इन्टर कालेज के रूप में भावी पीढ़ी को शिक्षा देने के कार्य में अनवरत प्रगतिशील है।

स्वतंत्रता के बाद आपने कोई राजनैतिक पद स्वीकार नहीं किया। आपकी आदर्शवादिता अनुकरणीय है। आपका निधन णमोकार महामंत्र का जाप करते हुए 18-3-1974 को हुआ।

आ0- (1) स्वतंत्रता संग्राम में इलाहाबाद, स्मारिका, सूची संख्या-310 (2) श्री मनोज कुमार जैन 'निर्लिप्त', अलीगढ़ द्वारा प्रेषित परिचय।

डॉ० ताराचंद पांड्या

कोटा (राजस्थान) के डॉ0 ताराचंद पांड्या का जन्म 15 अप्रैल 1928 को हुआ। आपके पिता का नाम श्री जमनालाल एवं माता का नाम श्रीमती धापूबाई था। स्वतंत्रता आन्दोलन में 1944-1947 में आपने भाग लिया एवं जेल यात्रा की। राजस्थान के स्वतंत्रता सेनानी होने का गौरव आपको प्राप्त है।

आ0-(1) जै0 स0 बृ0 इ0, पृष्ठ-397

श्रीमती ताराबाई जैन कासलीवाल

गर्भवती होने पर भी अपने पति के साथ जेल जाने वाली श्रीमती ताराबाई जैन महिदपुर, जिला-उज्जैन (म0प्र0) के प्रसिद्ध स्वाधीनता सेनानी श्री नेमीचंद जैन कासलीवाल की पत्नी हैं। 1942 के आन्दोलन में जब श्री जैन को गिरफ्तार किया गया तो पत्नी श्रीमती जैन भी साथ जाने के लिए अड़ गईं, उस समय वे गर्भवती थीं। पुलिस स्टेशन पर जब थानेदार ने श्री जैन को तो जेल में रखना स्वीकार किया किन्तु श्रीमती जैन को वापस जाने को कहा तो ताराबाई गिरफ्तार होने के लिए थाने में ही अनशन पर बैठ

गईं, तब उन्हें भी गिरफ्तार कर जेल में रखा गया। बाद में उन्हें कोर्ट उठने तक की सजा दी गयी।

आ0-(1) म0 स0, पृष्ठ ब-52

श्री तिलकचन्द तिरपंखिया

पंजाब के प्रसिद्ध स्वाधीनता सेनानी श्री तिलकचंद्र तिरपंखिया का जन्म 1900 ई0 में हुआ। आपके पिता का नाम लाला फग्गूमल था, जो धातु के बर्तनों के प्रसिद्ध व्यापारी थे। तिरपंखिया जी की शिक्षा गुजरानवाला के मिशन हाईस्कूल में हुई। वहीं से आपने क्रान्तिकारी विचारधारा लेकर जीवन में प्रवेश किया। महात्मा गांधी ने जब नमक सत्याग्रह छेड़ा तो आप उससे जुड़ गये एवं जेल यात्रा की। राष्ट्रीय आन्दोलन में पूरी तरह जुड़े होने के कारण आपको अनेक बार कारावास भुगतना पड़ा।

तिरपंखिया जी राजनैतिक, सामाजिक एवं आध्यात्मिक विकास की सभी मुख्य धाराओं से जुड़े थे। आत्मानन्द जैन गुरुकुल के आप प्रारम्भ से अवैतनिक मंत्री रहे एवं उसे उन्नति के शिखर तक पहुँचाने का श्रेय भी आपको ही है। अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के आप आजीवन सदस्य रहे। जिला कांग्रेस कमेटी के सचिव पद को भी आपने सुशोभित किया था। देशसेवा के कार्यों में बेसुध जुट जाने के कारण आपका व्यापार और स्वास्थ्य दोनों ही चौपट हो गये। 1945 में देश के स्वतंत्र होने के मात्र दो वर्ष पूर्व भारत का यह स्वतंत्रता सेनानी सदा के लिए सो गया।

आ0-(1) इ0 अ0 ओ0, भाग-2, पृष्ठ-400

श्री थानमल जैन

श्री थानमल जैन का जन्म 1926 में श्री लालचंद जी के यहां सीहौर (म0प्र0) में हुआ। कक्षा-3 तक आपने शिक्षा ग्रहण की। भोपाल विलीनीकरण आंदोलन (48-49) में भाग लेने के कारण जुर्माना एवं 17-1-49 से 6-2-49 तक की सजा आपको भोगनी पड़ी।

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-5, पृष्ठ-42

श्री दयाचंद जैन

खण्डवा (म0प्र0) के श्री दयाचंद जैन, पुत्र-श्री दुलीचंद का जन्म फरवरी 1910 में हुआ। आप 1930 से ही राष्ट्रीय आन्दोलन में सक्रिय हो गये थे। 1930 में 4 माह का तथा 1932 में 15 माह का कारावास आपने भोगा। जेल में ही आप कैंसर से पीड़ित हो गये थे। 1963 में आपका स्वर्गवास हो गया।

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-4, पृष्ठ-103

श्री दयाचंद जैन (बागड़ी)

श्री दयाचंद जैन, पुत्र-श्री जनूलाल जैन का जन्म 22 जून 1923 को टीकमगढ़ (म0प्र0) में हुआ। आपकी आरम्भिक शिक्षा म0प्र0 में हुई। 17 वर्ष की अवस्था में आप बनारस के प्रसिद्ध श्री स्याद्वाद महाविद्यालय में अध्ययनार्थ गये। वहाँ दो वर्ष ही अध्ययन कर पाये थे कि 1942 का भारत छोड़ो आन्दोलन शुरू हो गया और आप आन्दोलन में कूद पड़े। ब्रिटिश सरकार द्वारा गिरफ्तार हुए और धारा 38 D.I.R. तथा 39 D.I.R. में दो-दो वर्ष, कुल चार वर्ष सजा हुई। आप बनारस जिला जेल और बनारस सेन्ट्रल जेल में रहे। सी और बी दोनों क्लासों की जेलों में आपको रखा गया। एक वर्ष की सजा काटने पर ही आपको छोड़ दिया गया, किन्तु बनारस जिले से आप निष्कासित कर दिये गये, यह निष्कासन देश की आजादी के बाद ही समाप्त हुआ।

आ0 (1) म0प्र0 स्व0 सै0, भाग-2, पृष्ठ-128 (2)स्व0प0

श्री दयालचंद जैन

'शेरे सागर' के नाम से विख्यात श्री दयालचंद जैन का जन्म म0प्र0 के सागर जिलान्तर्गत पारगुवां ग्राम में दिनांक 11 अक्टूबर 1924 को श्री किशोरी लाल एवं श्रीमती हीराबाई के यहाँ हुआ। आप जैन साहित्य के अग्रगण्य विद्वान् श्रीमान् पण्डित पन्नालाल

जी साहित्याचार्य के चचेरे भाई हैं। आपके पिता पारगुवां



से आकर सागर में बस गये, अतः आपकी शिक्षा सागर में ही हुई।

उन दिनों देश में स्वतंत्रता प्राप्ति की लहर जोरों से चल रही थी 1942 के आन्दोलन में आप पढ़ाई की चिन्ता छोड़ 'भारत माता' को मुक्त कराने के लिए कूद पड़े। भारत सुरक्षा कानून की धारा 38/10 के अन्तर्गत आपको 10/9/1942 को छह माह की सजा हुई।

9 अगस्त को गांधी जी के द्वारा "करो या मरो" का संदेश देने के बाद जब सारे देश में दुश्मनों को खदेड़ने की तैयारी हो रही थी तब सागर कैसे शांत रहता, सागर में भी तूफान उठ चुका था, जगह-जगह छोटे-बड़े जिले के सभी प्रमुख नेताओं की गिरफ्तारियाँ शुरू हो चुकी थीं। तभी कांग्रेस का सन्देश घर-घर पहुँचाने के लिये एक गुप्त संदेश प्रचारित करने की योजना बनी और वह संदेश बुलेटिन के रूप में प्रचारित करना तय हुआ।

श्री जैन ने एक दिन स्वतंत्रता सम्बन्धी पर्चे बांटना शुरू किये, तभी आप पकड़े गये। अदालत में मुकदमा चला जहाँ आपने अदालत को भी अपने साथ आकर देश सेवा में कुछ करने के लिए कहा। 6 माह की सजा देकर इन्हें जेल भेज दिया गया। जेल में सरकारी कर्मचारियों को परेशान करना आपकी आदत बन गई और बड़ी निर्भीकता से जेल में संघर्षरत रहे। उस समय कलेक्टर एस0 एन0 मेहता जी थे, वह उदार थे, उनके कारण जेल अधिकारी सख्ती नहीं कर पाये परन्तु इस भारतीय कलेक्टर को ब्रिटिश सरकार ने सागर से हटा दिया।

श्री मेहता के हटते ही जिलाधीश श्री कौल साहब पधारे उन्होंने पहले ही दिन जेल में रहकर खादी के वस्त्र पहनना अपराध बतलाकर कपड़े जब्त करवा लिये व जेल की ड्रेस दी। श्री जैन अपने 14 साथियों को मिली हुई ड्रेस कलेक्टर कौल के सामने फेंककर नग्न ही खड़े रहे; उसके बाद खादी के स्थान पर बोरों की ड्रेसें सिलवाकर दी गईं तीन दिन नग्न रहकर चौथे दिन जब बोरों की ड्रेसें मिलीं तो प्रतिशोध की भावना प्रबल हुई और सबने मिलकर निश्चय किया कि आज जब कलेक्टर साहब आयें तो यह ड्रेसें एक साथ जलाकर उनके ऊपर फेंक दी जावें। जेल में एक अपराधी कैदी ताम्रकार बन्धु थे उनसे जेल के ही स्टाक से मिट्टी का तेल प्राप्त कर लिया गया और ड्रेसों पर डालकर कैदियों की परेड में ड्रेसें सामने रखकर नग्न ही बैठे रहे जैसे ही कौल साहब आये सभी साथियों ने ड्रेसों में आग लगा दी। परिणाम यह हुआ कि बालक दयालचन्द को गुनाह खाना में रखने का आदेश दे दिया गया। जब गुनाहखाने में वह जाने लगा तो साथी मित्र प्रभातचन्द पेन्टर ने जेलर से विरोध किया और वह जेलर पर बरस पड़े, परिणाम यह हुआ कि उन्हें भी इनके साथ ही गुनाहखाना भेज दिया गया। रात को वह दोनों गुनाहखाने में अपने ऊँचे स्वर में गाते—

अय मादरे हिन्द गमगीन न हो, अच्छे दिन आने वाले हैं।
आजादी का पैगाम तुम्हें हम जल्द सुनाने वाले हैं।।

देश की आजादी के बाद आप सदैव कांग्रेसी रहे। संगठन के चुनावों में सदैव जीतते रहे लगभग 30 वर्ष तक जिला कांग्रेस कमेटी में रहे। स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी होने के कारण म0प्र0 शासन ने 15-2-1964 को 15 एकड़ भूमि आपको प्रदान की। परन्तु आपने वह भूमि गरीबों को वितरित करने हेतु राज्य शासन को ही वापिस कर दी। आपकी

उदारता और सच्ची राष्ट्रभक्ति का यह अनुपम उदाहरण है। 1995 में आपका निधन हो गया।

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-2, पृष्ट-29 (2) आ0 दी0, पृष्ठ-46, (3) श्री जैन के अभिनन्दन समारोह 23-10-1989 के अवसर पर प्रकाशित संक्षिप्त परिचय पुस्तिका

सेठ दरबारीलाल

मंडल कांग्रेस कमेटी के कोषाध्यक्ष रहे, कुरावली, जिला-मैनपुरी (उ0प्र0) के श्री सेठ दरबारीलाल को 1942 के आन्दोलन में एक वर्ष का कठिन कारावास तथा 500 रु0 का अर्थदण्ड भुगतना पड़ा। आप प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी श्री देश दीपक जैन के सहयोगी रहे। आप अपने घर में (चाची, बुआ और पत्नी) तीन स्त्रियों के अतिरिक्त अकेले ही थे। जब आप जेल से छूटकर आये तो चाची व बुआ का देहान्त हो चुका था और घर से 10-12 हजार रुपये का गबन भी।

आ0-(1) जै0 स0 रा0 अ0, (2) उ0 प्र0 जै0 ध0, पृ0-93

श्री दलीचंद जैन

हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, अंग्रेजी, उर्दू, फ्रेंच, गुजराती, मराठी, आदि अनेक भाषाओं के जानकार और तत्त्वार्थसूत्र जैसे गहन दार्शनिक ग्रन्थों का अध्ययन करने वाले कवि, लेखक श्री दलीचंद जैन (कटारिया) का जन्म चैत्र कृष्ण त्रयोदशी, वि0 सं0 1972 (सन् 1915) को रतलाम (म0प्र0) में



हुआ। आपके पिता श्री समरथमल जैन (कटारिया) उस समय रतलाम रियासत के नगर सेठ थे। भाइयों के बीच आप चौथे हैं। जब आप इण्टर में अध्ययनरत थे तभी विदेशी वस्त्र बहिष्कार, सत्याग्रह-प्रचार, हरिजन आन्दोलन, प्रजामंडल, प्रजापरिषद् आदि के माध्यम से जनसेवा में आये।

1940 में भारत रक्षा कानून के तहत तीन माह तक सेना के पहरे में कैद रहे। वहीं आपने दो दिन अनशन (भूख हड़ताल) किया। पुनः 1942 में गांधी जयन्ती, दो अक्टूबर को हिन्दू मुस्लिम दंगा रोकने में आप घायल व गिरफ्तार हुए और दस दिन तक पुलिस-जेल में बंद रहे। हथकड़ी डालने और शौचादि की असुविधा के विरोध में दो दिन भूख हड़ताल की, पुलिस कमिश्नर ने आकर सुविधाऐं दीं व अनशन तुड़वाया। 1931 से ही आपने आजीवन खादी-वस्त्र के उपयोग का व्रत लिया हुआ है। आप 15-11-1942 से 16-11-1943 तक एक वर्ष के लिए रतलाम राज्य से निर्वासित रहे थे।

श्री जैन की सेवायें अविस्मरणीय हैं। आप 1944 में नगर पालिका के आम चुनावों में सर्वाधिक मतों से विजयी हुए थे। तब से लगातार 1968 तक सदस्य निर्वाचित होते रहे। आप चेयरमैन व उपाध्यक्ष भी रहे। जिला कांग्रेस महामंत्री, प्रजामण्डल के महामंत्री, प्रजापरिषद् के प्रचार मंत्री, अनेक राजकीय समितियों के सदस्य, रतलाम राज्य की अंतरिम मंत्रि परिषद् के सलाहकार, आदि अनेक पदों पर रहे। आपने ही 1939 में सुभाषचंद बोस तथा 1962 में भारत के प्रथम गवर्नर जनरल डॉ0 राजगोपालाचार्य का भव्य स्वागत रतलाम में करवाया था। आप 1968 तक जैन उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के महामंत्री रहे थे।

श्री जैन को पत्रकारिता का शौक है। आपने 1938 से पत्रकार का सक्रिय कार्य 1972 तक किया और यूनाइटेड़ प्रेस ऑफ इंडिया (बम्बई), टाइम्स ऑफ इंडिया (बम्बई), सैनिक (आगरा), नई दुनिया (इन्दौर), इन्दौर समाचार (इन्दौर), जन्मभूमि, मातृभूमि आदि पत्रों से जुड़े रहे।

एक संस्मरण में आपने लिखा है कि-"दिसम्बर 1940 में भारत सुरक्षा कानून 39 के अन्तर्गत मुझे

गिरफ्तार किया गया था। मेरे साथ ही श्री लहरसिंह भाटी (जैन) और श्री दीनदयाल भारतीय (हिन्दू) भी पकड़े गये थे। तीनों ही को पुलिस ने बिना वारंट पकड़ लिया था। पूरा एक दिन पुलिस की कस्टेड़ी में बंद रहे. दूसरे दिन रतलाम से 18 मील की दूरी पर सुनसान जंगल में बने मिलिट्री के विश्रामगृह में हमें राजपूत-रणजीत रेजिमेण्ट के एक दस्ते की देखरेख में बंद रखा गया था। हमें वहां किसी भी तरह की मानवीय सुविधाएं, सिवाय भोजन और दूध-चाय के कुछ भी नहीं दी गई थीं। न अखबार, न पुस्तकें। विश्रामगृह से लगे एक छोटे से गाँव जमुनियाँ के एक गड़रिये के यहाँ से बकरी का आधा सेर दूध तीनों के लिए दोनों समय मिलाकर दिया जाता था। नहाने-धोने के नाम पर वहीं से दो फर्लांग की दूरी पर स्थित एक कुंए पर दो चार दिन में, जब भी फौजी जमादार की इच्छा होती, वह हमें ले जाता।

पुलिस ने एक ब्राह्मण, शंकर नामक सिपाही को हमारे लिए रसोइया नियुक्त किया था, जो गुप्तचरी भी करता था। वह भोजन अपनी इच्छानुसार बनाता, कभी भी उसने हमारी इच्छा या राय के अनुसार भोजन बनाकर नहीं दिया। अनेक बार रोटी व दाल-सब्जी में कंकड़ तथा छोटे-मोटे जीव निकलते और हमें भोजन छोड़कर आधे भूखे उठ जाना पड़ता। शंकर वास्तव में 'कंकर' था, जो हमारे कहने-सुनने पर अधिकाधिक खराब भोजन बनाकर देने लगा। हमें बाध्य होकर सरकार को, जमादार के मार्फत अल्टीमेटम का पत्र भेजना पड़ा, 'कि हमारे भोजन की व्यवस्था सही करने के लिये या तो सिपाही शंकर को बदल दें या फिर हमारा राशन हमें दिया जावे ताकि हम अपना भोजन स्वयं बना लें।' किन्तु हमारी इस गुहार का सरकार पर कोई असर नहीं हुआ और समयावधि के बाद हमें बाध्य होकर अनशन याने भूखहड़ताल प्रारम्भ करनी पड़ी।

इस अनशन का पहला दिन जैसे-तैसे बीत गया। रात्रि को जमादार मेजर हमारे पास आकर बड़ी नम्रता से हमें समझाने लगा कि– 'आप रोटी न खायें पर दूध तो पी लें।' हमने कहा 'मेजर साहब, हम भगवान् महावीर के उपासक हैं, सत्याग्रही हैं, हम ऐसा नहीं कर सकते।' अनशन का दूसरा दिन भी समाप्त होने को आया, तभी रतलाम नरेश महाराजा सज्जन सिंह अपनी कार से घूमते हुऐ बंगले के बाहर सड़क पर आकर ठहरे। जमादार ने महाराज को शंकर के दुर्व्यवहार और भोजन में की जाने वाली सारी हरकतों एवं हमारे उपवास आदि की जानकारी दी तो महाराज ने तत्काल आदेश दिया कि– 'तुम पूरा ध्यान रखो, इन लोगों को खाने-पीने आदि की किसी प्रकार की तकलीफ नहीं होना चाहिये। उनको अपना भोजन स्वयं बनाने की सुविधा दे दो।'

मेजर भण्डार से राशन निकाल लाया और हमें भोजन बनाने के लिए आग्रह करने लगा। उस समय शाम हो चुकी थी, मैंने मेजर को समझाते हुए कहा, 'जमादार जी आप नहीं जानते, हम जैनी होने के नाते रात को नहीं खाते'। दूसरे दिन प्रातः बकरी के दूध से हम तीनों ने अपने दो दिन के उपवास (अनशन) की पारणा की।

हमारे साथी दीनदयाल भारतीय इस घटना से बहुत प्रभावित हुए, बोले– 'भाईयो वास्तव में यह तुम्हारी धर्म-साधना का चमत्कार था जो महाराज को यहाँ तक खींच लायी।' आज 55 वर्ष बाद भी यह घटना वास्तव में मुझे भी एक चमत्कार सी ही लगती है। जिसने अन्याय का मुँह काला किया।"

9 अगस्त 1997 को रतलाम में स्वतंत्रता सेनानियों के सम्मान में आयोजित समारोह को सम्बोधित करते हुए आपने कहा था कि-'देश में रूस जैसी खूनी क्रान्ति के हालात बन रहे हैं। वर्तमान में देश के भटकाव को नौजवान पीढ़ी ही रोक सकती है।'

इस अवसर पर भी आपने जेल यात्रा के अनेक संस्मरण सुनाये।

सम्प्रति आप रतलाम में अपने भरे-पूरे परिवार के साथ रहकर जैनग्रंथों के अध्ययन में लगे हुए हैं।

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग 4, पृष्ठ 193 (2)नई दुनिया, इन्दौर 11-8-1997 (3) स्व0 प0

श्री दलीपचंद जैन

होशंगावाद (म0 प्र0) के श्री दलीपचंद जैन, पुत्र-श्री परसराम जैन का जन्म 1901 में हुआ। 1932 में विदेशी वस्त्रों की पिकेटिंग करते हुए आप गिरफ्तार कर लिये गये और 4 माह के कारावास की सजा आपको दी गई। 1943 में अल्प आयु में ही आपका देहावसान हो गया। आपके पुत्र विजय कुमार जैन भी जेलयात्री रहे हैं।

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-5, पृ0-349 (2) स्व0 स0 हो0, पृ0-118

श्री दालचंद जैन

डिण्डोरी, जिला-मण्डला (म0प्र0) के श्री दालचंद जैन, पुत्र-श्री पन्नालाल का जन्म 1911 में हुआ। आप घर के रईस होने के साथ ही दिल के भी रईस थे। जै0 स0 रा0 अ0 के अनुसार सन् 42 से पहले आप कई बार जेल यात्रा कर चुके थे। आपने स्थानीय खादी केन्द्र खोल रखा था। 42 में आपको छः माह की कैद एवं 200/- रुपये जुर्माना की सजा हुई थी। जुर्माना वापसी की घोषणा सुनकर आपने वे रुपये खद्दर भण्डार में देना घोषित किया था। आप दिनाङ्क 21 अगस्त 1942 से 20 फरवरी 1943 तक जेल में रहे। आजादी के बाद आपने ग्रामोत्थान का महत्वपूर्ण कार्य किया। आप न्याय, जनपद एवं ग्राम पञ्चायत के अध्यक्ष तथा सरपंच आदि पदों पर रहे।

आ0- (1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-1, पृष्ठ-208 (2) जै0 स0 रा0 अ0

श्री दालचंद जैन या डालचंद जैन

गोटेगांव, जिला-नरसिंहपुर (म0 प्र0) के श्री दालचंद जैन, पुत्र-श्री पुनउलाल का जन्म 1907 में हुआ। 1931 से ही आप रा0 आ0 में सक्रिय हो गये



थे। गोटेगांव में स्वतंत्रता का शंखनाद आपने फूंका था। 1939-40 के व्यक्तिगत आन्दोलन में आप तीन बार जेल गये थे। गोटेगांव से झाँसी तक पैदल यात्रा आपने की। तीसरे सत्याग्रह के समय आपके भाइयों ने आपको रोका, न रुकने पर मार-पिटाई की, फिर भी आप विचलित नहीं हुए और सत्याग्रह किया। त्रिपुरी कांग्रेस में आपने स्वयंसेवक बनकर सहयोग दिया। 1942 में आप जबलपुर जेल में रहे। गोटेगांव की जनता राष्ट्र के प्रति आपकी लगन देखकर आपको 'महात्मा' कहने लगी थी।

आजादी के बाद आप कृषि कार्य करते रहे। जैन मंदिर रम्मेलाल सदानन्द में आपने एक मूर्ति व एक वेदी बनवाई थी तथा स्कूल को 25000/- रुपये का दान दिया था। आपने पेन्शन आदि कोई सहायता शासन से नहीं ली। 7 फरवरी 1992 को अपना निधन हो गया।

आ0- (1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-1, पृष्ठ-142 (2) जै0 स0 रा0 अ0 (3) भतीजे श्री सुगन चंद जैन द्वारा प्रेषित जानकारी

श्री दालचंद जैन

श्री दालचंद जैन, पुत्र-श्री भुलई लाल का जन्म 1917 में जबलपुर (म0प्र0) में हुआ। 1942 के आन्दोलन में आप जबलपुर शस्त्र फैक्टरी में राष्ट्रीय कार्य करते हुये गिरफ्तार किये गये तथा 1 वर्ष 6 मास नजरबन्दी में रहे।

आ0- (1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-1, पृष्ठ-59 (2) स्व0 स0 ज0, पृष्ठ-116

श्री दालचंद जैन

सागर (म०प्र०) के श्री दालचंद जैन, पुत्र-श्री मानकलाल जैन ने 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में भाग लिया और 3 माह का कारावास भोगा।

आ०- (1) म० प्र० स्व० सै०, भाग-2, पृष्ठ- 30 (2) आ० दी०, पृष्ठ-47

श्री दालचंद सिंघई

गढाकोटा, जिला- सागर (म०प्र०) के श्री



दालचंद सिंघई, पुत्र-श्री वृन्दावन का जन्म 1908 में हुआ। आरम्भ से ही आप स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय रहे। 28 फरवरी 1933 से 24 नवम्बर 1933 तक आपने कठोर कारावास की यातनायें सही थीं।

आ०-(1) म० प्र० स्व० सै०, भाग-2, पृष्ठ-30 (2) आ० दी०, पृष्ट- 47 (3) अनेक प्रमाण पत्र

श्री दिगम्बरराव जैन, खड़के

श्री दिगम्बरराव जैन (खड़के) पुत्र-श्री शांतीनाथ जैन का जन्म, ग्राम-प्रभातपट्टन, जिला-बैतूल (म०प्र०)



के एक गरीब परिवार में हुआ। आपकी माता का नाम श्रीमती सकुबाई था। पन्द्रह वर्ष की अल्पायु में ही आपको शिक्षक की नौकरी मिल गई और इसी के साथ शुरू हो गया स्वतंत्रता पाने की दीवानगी का आलम। गाँव के महान् स्वतंत्रता सेनानी श्री बिहारी लाल पटेल के निर्देशन में स्वआत्मा की आवाज पर आपने लोगों को अंग्रेजों की खिलाफत करने के लिए उकसाया, फलस्वरूप आपको छः माह के कठोर कारावास की सजा दी गई। इसी बीच आपके दोनों बड़े भाई भी स्वतंत्रता आंदोलन में कूद पड़े, जिससे घर की माली-हालत बिगड़ गई एवं पूरा परिवार दाने-दाने को मोहताज हो गया।

अपनी जेलयात्रा के सन्दर्भ में आपने अतीत की यादें करते हुए लिखा है- 'मुझे याद है एक अंग्रेज भक्त भारतीय अधिकारी की मेरे ऊपर की गई टिप्पणी- "यह 15-16 साल का लड़का बहुत खतरनाक है इसे सबसे अलग रखो।" और मुझे सतत् 4 दिन एक कालकोठरी में अकेला रखा गया।'

जेल में लोहे के बर्तनों में खाना बनाया जाता था, जिससे सभी खाद्य काला पड़ जाता था। पेट में चूहे दौड़ा करते थे, परन्तु दिल-दिमाग उस खाने से दूर भागता था। इसी बात को लेकर जेल में अनशन शुरू कर दिया साथ ही नारेबाजी भी। इससे ि होकर जेल अधिकारियों ने लाठीचार्ज करवा दिया, मेरी पीठ एवं पैर जख्मी हो गये थे। मेरे बदन पर आज भी यह निशान, जिसमें देश की स्वतंत्रता की भावना छुपी है, जिंदा हैं।

उस सयम हम कई गीत गाया करते थे, दूसरे के रचित भी एवं स्वरचित भी। मुझे एक गीत याद आता है।

'ओ दगावाज, मक्कार, सितमगर, बेईमान ओ हत्यारे दोजख के कुत्ते, खुदगर्जी, बेरहम, बेवफा, बदकारे, बद पिल्ले थोते चश्म हरामी, रह जालिम गद्दारे तुम्हीं हिन्द में बन सौदागर, आये थे टुकड़े खाने!!'

यह बहुत बड़ा गीत था, पूरा याद नहीं है, जेल में ही जब्त कर लिया गया था।

एक गीत और याद आता है, जो मैंने अपनी गिरफ्तारी के बाद गाया था-

'हथकड़ी जो हाथ में डाली गई सरकार है।
देश को आजाद करने का यही हथियार है।
फूंक देगी इस तरह से मिस्ले लंका की तरह।
आह पूरता (?) सिर, यह जंजीर की झंकार है।
देश को आजाद करने का यही हथियार है।'

इसके पश्चात् आपने इंदौर के राजकुमार मिल में श्रमिक की नौकरी की। वहाँ स्वास्थ्य ने साथ नहीं

दिया अतः अपने पैतृक गाँव आना पड़ा। आप 'सेवादल' एवं 'भारत सेवक समाज' जैसे अग्रणी सेवा संगठनों से भी जुड़े रहे। आप पाँच वर्ष तक ग्राम पंचायत प्रभातपट्टन के सदस्य एवं सरपंच भी रहे। वर्तमान स्थिति के सन्दर्भ में आपके विचार हैं-

'मुझे आज यह सोचकर दुःख होता है कि देश में व्याप्त भ्रष्टाचार, आपराधिकता, सच्चाई का दमन किस हद तक हो रहा है। क्या इसीलिये हमने काली दाल एवं लाठियां खाईं, यातनायें सहीं। मैं इस अन्याय एवं दुराचार के खिलाफ लड़ता रहूँगा। सतत संघर्ष करता रहूँगा।'

आ0-(1) प0 जै0 इ0, पृष्ठ-536 (2) बैतूल जिला स्व0 स0 सै0 सूची (3) स्व0 प0 (4) पत्र श्री गुलाब राव जैन

श्री दीपचंद गोठी

पिता ने ब्रिटिश सरकार से सहयोग किया पर पुत्र विद्रोह पर उतर आया। ऐसे विद्रोही श्री दीपचंद गोठी का जन्म 1897 में बैतूल (म0प्र0) में हुआ। आपके पिता का नाम श्री लक्ष्मीचंद था। आपके पूर्वज श्री शेर सिंह जी 1846 में रासबाबरा (जोधपुर) से बैतूल आकर बस गये थे। लक्ष्मीचंद जी प्रसिद्ध उद्योगपति एवं जमींदार थे। प्रथम विश्व युद्ध के दौरान उन्होंने अंग्रेजों की अनेक तरह से सहायता की थी, किन्तु पुत्र दीपचंद बचपन से ही दयावान एवं सेवाभावी थे। युवा होकर आप बैतूल सेवा समिति के नायक बने। ब्रिटिश शासन के प्रति विद्रोह आपकी नस-नस में समाया हुआ था। 1930 में आप राष्ट्रीय कांग्रेस के सदस्य बने एवं स्वतंत्रता-यज्ञ में भरपूर योगदान दिया। समस्त वैभव को ठुकरा कर नङ्गे पांवों राष्ट्रीयता का अलख जगाने के लिए पद यात्रायें कीं। 1934 के जंगल सत्याग्रह में आपको गिरफ्तार कर लिया गया। 1936 में जब प्रांतीय धारासभाओं के चुनाव हुए तो आप कांग्रेस की तरफ से एम0 एल0 ए0 चुने गए। अनेक समाज हितकारी प्रवृत्तियों एवं संस्थाओं से जुड़े रहकर आप सदैव गरीबों की सेवा में जुटे रहे।

आ0-(1) इ0 अ0 ओ0, भाग-2, पृष्ठ-395

श्री दीपचंद जैन

श्री दीपचंद जैन, पुत्र-श्री धरमचन्द जैन का जन्म 1917 में जबलपुर (म0प्र0) में हुआ। 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में 9 माह के कारावास की सजा आपने काटी।

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-1, पृष्ठ-59 (2) स्व0 स0 ज0, पृष्ठ-118

श्री दीपचंद जैन

जबलपुर (म0प्र0) के श्री दीपचंद जैन, पुत्र-श्री बन्शीलाल का जन्म 1919 में हुआ। आप 'चर्खा संघ सेवाग्राम' में काफी समय तक रहे। 1940 के व्यक्तिगत सत्याग्रह में नौ माह, आन्ध्र प्रदेश की महबूब नगर जेल में तथा नौ माह खंडवा तथा अकोला की जेलों में आपने बिताये। 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में आप पुनः गिरफ्तार हुए और 11 माह 20 दिन का कारावास भोगा। खादी प्रचार में विशेष योगदान देने वाले श्री जैन जातिवाद के सख्त विरोधी थे।

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-1, पृष्ठ-59

श्री दीपचंद बख्शी

जागीरदारों के परिवार में दिनांक 24 अगस्त 1920 को जन्मे श्री दीपचंद बख्शी, पुत्र-श्री चिरंजीलाल को सरकार का वफादार होना चाहिये था, लेकिन बख्शी जी ने स्वतन्त्रता संग्राम में कूदने को अधिक श्रेयस्कर समझा और 8 वर्ष की आयु में ही राजनीति में सक्रिय कार्य करने लगे। आप मित्र-मंडल, प्रेम-मंडल जैसी संस्थाओं के सदस्य बन गये। जयपुर में राज्य प्रजामंडल के आंदोलन में आपने सक्रिय योगदान के साथ ही आंदोलनकारियों की आर्थिक सहायता भी की। तत्कालीन राजनीति

के प्रमुख श्री जमनालाल बजाज, श्री हीरालाल शास्त्री, श्री कपूरचन्द पाटनी, बाबा हरिचन्द्र एवं श्री हरिभाऊ उपाध्याय के आप विश्वस्त सहयोगी रहे हैं। 1937, 38, 40 व 42 में जेल यात्रायें करके देश के स्वतंत्रता सेनानियों में आपने अपना प्रमुख स्थान बना लिया। आपने विदेशी वस्त्रों की होली जलाने के आन्दोलन में भी भाग लिया था। 1939 में आप मोहनपुरा कैम्प जेल में रखे गये थे। बख्शी जी बहुत शांत एवं सरल परिणामी व्यक्ति हैं। प्रतिदिन अभिषेक एवं पूजा करने का आपका नियम है।

आ0-(1) जै0 स0 बृ0 इ0, पृष्ठ-249 (2) रा0 स्व0 से0, पृष्ठ-609

श्री दीपचंद मलैया

गढ़ाकोटा, जिला-सागर (म0प्र0) निवासी श्री दीपचंद मलैया (जैन), पुत्र-श्री सज्जन कुमार का जन्म 1914 में हुआ । आपने 1932 के सविनय अवज्ञा आन्दोलन में भाग लिया। फलत: 6 माह का कारावास भोगा। 1971 में आपका निधन हो गया।

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-2, पृष्ठ-30 (2) आ0 दी0, पृष्ठ-48

श्री दुलीचंद ओसवाल

रायपुर (म0प्र0) के श्री दुलीचंद ओसवाल, पुत्र-श्री कन्हैयालाल का जन्म 1918 में हुआ। 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में आपने भाग लिया तथा तीन माह पच्चीस दिन का कारावास भोगा।

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-3, पृष्ठ-35

श्री दुलीचंद जैन

श्री दुलीचंद जैन, पुत्र-श्री मल्थूराम जैन तालबेहट, जिला-झाँसी (उ0 प्र0) के निवासी थे। आपने क्षेत्रीय नेताओं के साथ आन्दोलन में भाग लेकर भारत को आजाद कराने में अपना योगदान दिया था और 1941 में 6 माह की सजा काटकर जैन समाज को इस पवित्र महायज्ञ में आहुति देने की प्रेरणा दी थी।

आ0-(1) रा0 नी0 पृष्ठ-88 (2) जै0 स0 रा0 अ0

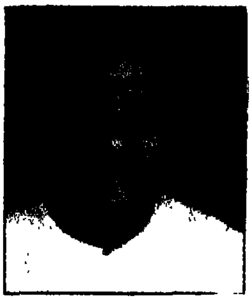
श्री दुलीचंद जैन

ग्राम-कारी, जिला-टीकमगढ़, (म0प्र0) के श्री दुलीचंद जैन, पुत्र-श्री मूलचन्द जैन का जन्म 1922 में हुआ। ओरछा राज्य के उत्तरदायी शासन हेतु चलाये गये आन्दोलन के अन्तर्गत जंगल (महुआ) आन्दोलन में आपने भाग लिया तथा एक माह से अधिक का कारावास टीकमगढ़ जेल में भोगा।

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-2, पृष्ठ-128 (2) वि0 स्व0 स0 इ0, पृष्ठ-214

श्री दुलीचंद जैन

'कौशल कविराय' उपनाम से विख्यात, बुन्देली भाषा के प्रसिद्ध कवि श्री दुलीचंद जैन, पुत्र-श्री



रनजीत लाल जैन का जन्म 18-6-1925 को देवरी कलां, जिला-सागर (म0प्र0) में हुआ। आपकी प्रारम्भिक शिक्षा देवरी के हिन्दी मिडिल हाई स्कूल में हुई। बी0 ए0 पास कर आप अध्यापन कार्य में संलग्न हो गये। 1939 से ही आपने खादी पहिनना एवं सूत कातना प्रारम्भ कर दिया था।

1942 के आन्दोलन में आप गिरफ्तार कर लिये गये और 5-9-42 से 8-4-43 तक सागर जेल में रहे। आपको 15 दिन की गुनाहखाना की सजा दी गई थी, आपने लिखा है कि -'जेल में रहकर गेंहू नुकाना, (साफ करना) रस्सी कातना आदि कार्य करने पड़ते थे। हफ्ते में 2 दिन रद्दी किस्म की ज्वार खाने को मिलती थी। जेल में हम सब एक दूसरे से स्नेह रखते

थे। तथा सीखने और सिखलाने की इच्छा बलवती थी। संगठित थे।'

जेल से आने के बाद आप राष्ट्र हित के कार्यों में लगे रहे, विनोबा जी के भूदान आन्दोलन में भाग लिया और सर्वोदय संस्था से जुड़े रहे। आज भी देश के एवं समाज के लिए कुछ करने और मर मिटने की लालसा है। आप अच्छे कवि भी हैं। आपके सन्दर्भ में -'बुंदेलखण्ड में स्थित देवरी (सागर) के साहित्यकारों का साहित्यानुशीलन' शोध प्रबन्ध में लिखा गया है-

'देवरी के नवीन साहित्यसेवियों में श्री दुलीचंद जैन "कौशल कविराय" का नाम उल्लेखनीय है।आप अपनी व्यंग्य कविताओं व कुण्डलियों के लिए प्रसिद्ध हैं। आपकी रचनाओं में स्थानीयता की प्रवृत्ति विशेष रूप से देखने को मिलती है। बुन्देली भाषा को आपने अपनी अभिव्यक्ति का प्रधान माध्यम बनाया है। खड़ी बोली हिन्दी में भी आपने अनेक कविताएं लिखी हैं।'

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-2; पृष्ठ-31 (2) आ0 दी0, पृष्ठ-49 (3) 'बुन्लेदखण्ड में स्थित देवरी के साहित्यकारों का साहित्यानुशीलन (टंकित शोधप्रबंध) पृष्ठ-569-70 (4) स्व0 प0

श्री दुलीचंद भाई मेहता

श्री दुलीचंद भाई मेहता आत्मज श्री खेमचंद का जन्म 1890 में कच्छ (गुजरात) में हुआ। आपका संबंध एक सम्पन्न परिवार से था। 1903 में आपके पिता व्यवसाय की खोज में पांदुरना (जिला-छिंदबाड़ा) म0प्र0 आ गये। गाँधी जी के विचारों से प्रभावित होने के कारण आपका मन व्यापार में नहीं लगता था, अत: विचार विमर्श के पश्चात् आप राष्ट्रीय संघर्ष में सक्रिय हो गये। नागपुर जैसे उच्च राजनैतिक केन्द्र के अत्यन्त निकट होने के बावजूद पांदुरना क्षेत्र के लोग राष्ट्रीय चेतना की दृष्टि से कुछ शिथिल ही थे, अत: आपने सर्वप्रथम इस क्षेत्र में राष्ट्रीय जागृति उत्पन्न करने का बीड़ा उठाया। आपने ग्रामीण क्षेत्रों में घूम-घूम कर कांग्रेस की नीतियों एवं सिद्धान्तों का प्रचार किया और स्वातंत्र्य महायुद्ध हेतु अनेक स्वयंसेवकों को तैयार किया।

1941 में बापू ने व्यक्तिगत सत्याग्रह में भाग लेने हेतु छिन्दबाड़ा जिले के सत्याग्रहियों की जो सूची जारी की थी, उसमें दुलीचंद भाई मेहता भी एक थे। फलस्वरूप आपको 6 माह का कारावास दिया गया । इस दौरान आप छिंदबाड़ा और नागपुर के बंदीगृहों में रखे गए। 1942 में आपका स्वास्थ्य अत्यधिक खराब हो जाने के कारण आप भारत छोड़ो आंदोलन में भाग न ले सके। इसका आपको जीवनपर्यन्त खेद रहा। स्वाधीनता आन्दोलन के दौरान आपको महात्मा गाँध ी और अहमदाबाद में लौहपुरुष सरदार बल्लभभाई पटेल का प्रेरणास्पद सान्निध्य प्राप्त हुआ था। 20 अगस्त 1974 को आपका निधन हो गया ।

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-1, पृष्ठ-9 (2) स्वाध ीनता आन्दोलन में छिन्दबाड़ा जिले का योगदान, (टंकित शोध-प्रबन्ध) पृष्ठ-294-295

श्री दूनीचंद जैन

जयपुर (राजस्थान) के श्री दूनीचंद जैन का जन्म संवत् 1961 (1904 ई0) में वर्तमान पाकिस्तान के बहालपुर में हुआ। देश के बटवारे के बाद वे जयपुर आ गये। नशाबंदी और समाजोत्थान को समर्पित श्री जैन ने राष्ट्रीय आन्दोलन में भाग लिया और अनेक बार अनेक दिन पुलिस की हिरासत में रहे।

आ0-(1) रा0 स्व0 से0, पृष्ठ-611

श्री देवराज सिंघी

राजस्थान के क्रान्तिकारियों में श्री देवराज सिंघी का नाम बहुत ही आदर और सम्मान से लिया जाता है। आपका जन्म 1922 में हुआ। बचपन से ही क्रांति का विचार आपके मानस को आन्दोलित करने लगा। छात्र जीवन से ही आपने खादी के वस्त्र पहनना शुरू कर दिया था।

1942 में भारत छोड़ो आन्दोलन के समय जोध पुर में बम बनाने का काम आपके सुपुर्द किया गया। उस समय जोधपुर के हवाई अड्डे पर अंग्रेजी वायुसेना की एक पूरी बटालियन थी, जो मनोविनोद के लिए हर शनिवार को शहर के सिनेमागृह में आया करती थी। देवराजजी ने अध्ययन कर टाइम बम बनाया और उसे थैले में रखकर बड़े भाई लालचन्द जी के हाथों हाल में कुर्सी के नीचे रखवा दिया। विस्फोट हुआ, पर कोई आहत नहीं हुआ, किन्तु सरकार दहल गई। धर-पकड़ शुरू हुई। दुर्भाग्य से दल का एक सदस्य मुखबिर बन गया। दोनों भाई पकड़े गए। जेल में आपको यातनाएें दी गईं। सजा के दिन लालचन्द अदालत से फरार हो गए एवं अनेक दिन साधु बनकर रहे। दल के अन्य सभी अभियुक्तों को सजाऐं हुईं। देवराजजी को दस साल की कैद हो गई। सिंघी जी ने अनेक स्थानों पर घूमने के बाद कलकत्ता में अपना कारखाना स्थापित किया। सामाजिक एवं रचनात्मक कार्यक्रमों में आप भाग लेते रहे हैं।

आ0-(1) इ0 अ0 ओ0, भाग-2, पृष्ठ-396, 397

बाबू देवेन्द्रकुमार जैन

'बाबूजी' उपनाम नाम से विख्यात, इन्दौर (म0प्र0) के श्री बाबू देवेन्द्रकुमार जैन, पुत्र-श्री कंवर लाल का जन्म 1898 में हुआ। तत्कालीन राष्ट्रकार्यकर्ताओं में आपका सर्वोपरि स्थान था। 1924 में सहारनपुर जैन पाठशाला में आपने प्रधानाध्यापक का काम किया। उसके बाद आपने अपना समस्त जीवन इन्दौर की नागरिक जागृति और राष्ट्रसेवा में अर्पण कर दिया। 1930 में नमक कानून तोड़ने के लिए इन्दौर से बाबू जी के नायकत्व में एक जत्था अजमेर गया। 62 आदमियों की गिरफ्तारियां हुईं। उनमें 36 व्यक्ति जेल भेज दिये गये। बाकी को छोड़ दिया गया। बाबू जी को तीन माह की सजा हुई और कोड़ों की मार पड़ी।

1932 में पं0 जवाहरलाल नेहरू की गिरफ्तारी के बाद पुनः अजमेर 'बाबूजी' के नायकत्व में एक जत्था गया, वहाँ आप अपने साथियों के साथ गिरफ्तार हुये और जेल में बंद कर दिये गये। 1934 में बढ़े हुये करों के खिलाफ इन्दौर की जनता ने आठ रोज की अभूतपूर्व हड़ताल की, उसमें 'बाबूजी' गिरफ्तार हुये और बन्द कर दिये गये। इन्दौर में इसके बाद दीनानाथ शाही का दमन प्रारम्भ हुआ। प्रजापक्ष ने दीनानाथ शाही को चुनौती देकर कानून भंग करना शुरू किया। सभाबन्दी और जुलूसबन्दी के कानून बाबूजी द्वारा तोडे गये। गौसीबाई की गिरफ्तारी के दिन थाने तोड़े गये, शहरों में मजदूरों का राज्य था। गौसीबाई की गिरफ्तारी ने बतला दिया कि इस हड़ताल का कारण क्रान्तिकारी नेता नारायण सिंह हैं, जो देवेन्द्र कुमार जी के 'अनाथ-सदन' में छिपे हुए हैं। फ़िर क्या था, बाबूजी समेत नारायण सिंह पकड़े गये और जेल में बन्द कर दिये गये।

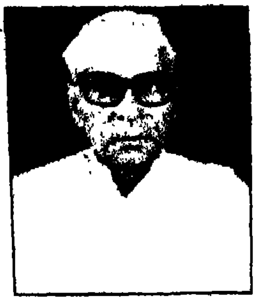
अगस्त 1942 में कांग्रेस महासमिति की बैठक में भारत छोड़ो आन्दोलन का प्रस्ताव पास होते ही दमन प्रारम्भ हुआ। बाबूजी बम्बई से इन्दौर लौटते हुए रास्ते में गिरफ्तार कर लिये गये और अजमेर जेल में बंद कर दिये गये। जेल से छूटने के बाद ही आपने शहर की तमाम लाइब्रेरियों के बाहर प्रचारक बोर्ड लगवाये जिसने नवीन जाग्रति पैदा की।

आ0-(1) म0 प्र0 स्वा0 सै0, भाग-4, पृष्ठ-24 (2) जै0 स0 रा0 अ0, पृष्ठ-64

श्री देशदीपक जैन

'वीरों की रगों में बहता खून कठिन समय में भी ठण्डा नहीं पड़ता' इस कहावत को चरितार्थ करने वाले, कुरावली, जिला-मैनपुरी (उ0प्र0) के श्री देशदीपक जैन, पुत्र-श्री गुणधर लाल का जन्म 3 अक्टूबर 1919 को कायमगंज, जिला-फर्रुखाबाद (उ0प्र0) में हुआ। आपके पिताश्री ने 1930 के नमक

आन्दोलन में एक वर्ष की जेल यात्रा और 100/- रु0 का जुर्माना भोगा था। गरीबी के कारण उन्हें अपना मकान भी बेचना पड़ा और 4 साल सपरिवार बम्बई जीवनयापन के लिए रहना पड़ा था।



देशदीपक जी ने अपना परिचय देते हुए लिखा है-'1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में मैं कूद पड़ा और सक्रिय रूप से भाग लेने लगा। कुरावली का दायित्व मेरे कंधों पर आ पड़ा। मेरी सक्रियता के कारण जिला स्तरीय नेतृत्व प्रसन्न हुआ। इस समय कुरावली में भी हड़ताल एवं कुरावली बंद का आह्वान तथा गल्ला मण्डी में एक मीटिंग का आयोजन किया गया। स्कूल-कॉलेज बंद कराने के पश्चात् जैसे ही मण्डी में जनता ने एकत्र होना प्रारम्भ किया, मुझे बन्दी बना लिया गया। मुकदमा चलाया गया, जिसमें मुझे 6+8= 14 माह का सश्रम कारावास तथा 150/-रु0 जुर्माना की सजा दी गई। कारावास के दरम्यान तन्हाई, बेड़ी, अनशन इत्यादि के कार्यक्रम भी चलते रहते थे।

जेल से छूटने के बाद बन्दी जीवन की अनुभूतियों को संजोयं हुए मैं कुरावली आया ही था कि मैनपुरी में एक कवि सम्मेलन में भाग लेने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। लब्धप्रतिष्ठित कवियों के कवित्व-पाठ के पश्चात् मेरा नम्बर आया तो मंचासीन अध्यक्ष ने कुछ उपेक्षित मुस्कान के साथ मेरा परिचय पूछा। मैंने कविता में ही अपना परिचय इस प्रकार दिया था-

पापी नराधम अनाचारियों के,
सिर पे गिरे वह गाज हूं मैं,
जो वीरों के मन में उत्साह भरे,
रण ही में बजे, वह साज हूं मैं।
जो पर्दे की ओट शिकार करे,
उन पापियों का बना राज हूं मैं।
जो देश की सेवा में लीन रहे,
वह 'दीपक' ऐसा समाज हूं मैं।
स्वतंत्रता के जो हैं रोड़ा बने,
उन्हीं के लिए हुआ शूल हूं मैं।
हो जिसमें शहीदों का रक्त बहा,
उन वीरों की पावनी गूल हूँ मैं।
गनों से जो 'दीपक' तोड़ा गया,
मुरझाया हुआ वह फूल हूं मैं,
जिस पथ पर पूज्य सुभाष चले,
उस राज की पावन धूल हूं मैं।'

आपके संदर्भ में जैन संदेश लिखता है- 'सन् 42 का तेजी का जमाना और घर में छः प्राणी, छोटे भाई का इण्टर क्लास में पढ़ने का खर्च यह सब इनके ही ऊपर था। इनकी एक कपड़े की दुकान है जो कि इनके पश्चात् बंद रही।'

आ0-(1) जै0 स0 रा0 अ0 (2) उ0 प्र0 जै0 ध0, पृष्ठ-93 (3) स्व0 प0

श्री दौलतमल भंडारी

जयपुर (राज0) से लोकसभा सदस्य तथा राजस्थान हाईकोर्ट के मुख्य न्यायाधीश रहे श्री दौलतमल भंडारी का जन्म 16 दिसम्बर 1907 को जयपुर में हुआ। आपने महाराजा कालेज, जयपुर से बी0ए0 तथा लखनऊ वि0वि0 से एम0ए0 (गणित) एवं एल0एल0बी0 की परीक्षायें पास कीं और वकालत करने लगे। 1939 में जयपुर में पहली बार मौलिक अधिकारों की प्राप्ति के लिए प्रजामण्डल का संघर्ष राज्य सरकार से हुआ। जब सभी नेता गिरफ्तार कर लिये गये तब भंडारी जी ने आन्दोलन का संचालन किया।

1942 में आपने आजाद मोर्चे की स्थापना की और सूझबूझ से उसका संचालन किया। सरकार विरोधी कार्यवाही के कारण 1942 में ही आप गिरफ्तार कर लिये गये और 1943 के आरम्भ में रिहा हुए।

जेल से मुक्त होने के बाद आप जयपुर राज्य में प्रजातंत्रात्मक सरकार की स्थापना के लिए प्रयत्नशील रहे। 1945 में भंडारी जी विधान सभा के लिए चुने गये और वहां प्रजामण्डल दल का कुशल नेतृत्व किया। 1947 में तत्कालीन जयपुर सरकार के मंत्रिमण्डल में सदस्य के रूप में विकास एवं रसद विभाग का कार्य संभाला। 1952 में वे जयपुर निर्वाचन क्षेत्र से लोकसभा के लिए कांग्रेस के टिकट पर भारी बहुमत से चुने गये। 1955 में आप वकील से न्यायाधीश बने और 1968 में राजस्थान हाईकोर्ट के मुख्य न्यायाधीश नियुक्त हुए। 1969 में भारत सरकार द्वारा कृष्णा गोदावरी ट्रिब्यूनल में न्यायाधीश बने। भूमि सुधार कानून में सुधार करने के लिए राजस्थान सरकार ने आपकी अध्यक्षता में एक समिति का गठन किया था। आपके विचार सदैव क्रान्तिकारी रहे हैं।

आ0-(1) रा0 स्व0 से0, पृष्ठ-566

श्री धनवन्त सिंह जैन

'सरदार' नाम से विख्यात फिरोजाबाद (उ0प्र0) के श्री धनवन्त सिंह जैन, फिरोजाबाद नगर में आन्दोलन के प्रमुख नेता पं0 रामचन्द्र पालीवाल के अनन्य सहयोगी थे। श्री जैन कांग्रेस के जुलूसों का नेतृत्व घोड़ी पर बैठकर, झण्डा फहराते हुए करते थे। 1941 के व्यक्तिगत सत्याग्रह में आप होली की पूर्णिमा के दिन गिरफ्तार किये गये और एक वर्ष दो माह जेल में रखे गये।

9 अगस्त 1942 को जब सारा देश 'भारत छोड़ो आन्दोलन' में कूद पड़ा तब फिरोजाबाद अछूता कैसे रहता, उस दिन एस0 आर0 के0 कालेज के विद्यार्थियों का जुलूस सिनेमा के सामने होता हुआ गढैया पहुंचा। जुलूस पर पुलिस ने लाठीचार्ज कर दिया। श्री जैन डिक्टेटर थे, उन्होंने अनाज की मण्डी मे बनी प्याऊ पर चढ़कर झण्डा फहरा दिया। एंग्लो इण्डियन मजिस्ट्रेट ने श्री जैन की ओर पिस्तौल तान दी, इस पर कालेज के छात्र सीना तानकर सामने आ गये और कहा कि 'पहले हमारी छाती पर गोली मारो फिर हमारे डिक्टेटर को मारना।' इस पर पुलिस व अधिकारियों के पैर उखड़ गये और सभा में 'भारत छोड़ो' का प्रस्ताव पास हुआ। किन्तु 23 अगस्त 1942 को आपको गिरफ्तार कर लिया गया व 6 माह के कारावास की सजा दी गई। 1943 में भी श्री जैन ने हथगोला फेंककर डाक बंगला जला दिया था और इस केस में भी ढाई वर्ष नजरबंद रहना पड़ा था।

देश की आजादी के बाद आप विनोबा जी के भूदान व सर्वोदय से जुड़ गये। आपके अनुज श्री राजकुमार जैन भी डाक बंगला जलाने के अभियोग में लगभग 5 माह सेन्ट्रल जेल आगरा में रहे।

आ0-(1) जै0 स0 रा0 अ0 (2) उ0 प्र0 जै0 ध0, पृष्ठ-91 (3) 'अमृत' स्मारिका, पृष्ठ-24 (4) जै0 से0 ना0 अ0, पृष्ठ-3

श्री धन्नालाल गुढ़ा

श्री धन्नालाल गुढ़ा, पुत्र-श्री मूलचंद गुढ़ा का जन्म 25-1-1914 को ललितपुर (उ0 प्र0) में हुआ। अपने ओजस्वी भाषणों से जनता में आजादी की भावना फैलाने वाले गुढ़ा जी हड़तालें करवाने में अगुआ रहे थे, विद्रोहात्मक गतिविधियों के कारण आप शासन के सिर दर्द बन गये थे। 1942 के आन्दोलन में आपकी गिरफ्तारी डी0 आई0 आर0 के अन्तर्गत हुई, जिसमें 1 वर्ष का कठोर कारावास तथा 100 रुपया का अर्थ दण्ड हुआ। आजादी के उपरान्त आप समाजवादी पार्टी के सक्रिय कार्यकर्ता बन गये थे। साथ ही अनेक धार्मिक एवं सामाजिक संस्थाओं के भी सक्रिय कार्यकर्ता हो गये थे।

आ0-(1) र0 नी0, पृष्ठ-33 (2) जै0 स0 रा0 अ0 (3) डॉ0 बाहुबली कुमार जैन द्वारा प्रेषित परिचय

श्री धन्नालाल जैन

ग्राम-बकौरी, पोस्ट-फूलसागर, जिला-मण्डला (म0प्र0) के श्री धन्नालाल जैन, पुत्र-श्री बलदेव

लाल का जन्म 5 जनवरी 1906 को बरगी ग्राम में हुआ। 1930 के जंगल सत्याग्रह में 1 माह की सजा एवं 20 रु0 का अर्थदण्ड आपको भोगना पड़ा।

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-1, पृष्ठ-208

श्री धन्नालाल जैन

इटारसी, जिला-होशंगाबाद (म0प्र0) के श्री धन्नालाल जैन, पुत्र-श्री मन्नूलाल जैन का जन्म 1923 में हुआ। 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में आपने 6 माह का कठोर कारावास भोगा।

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-5, पृष्ठ-330

श्री धन्नालाल जैन

स्वतंत्रता संग्राम सैनिक संघ की गतिविधियों में निरन्तर रुचि रखने वाले तथा 'मोतीवाले' उपनाम से विख्यात जबलपुर (म0प्र0) के श्री धन्नालाल जैन, पुत्र-श्री गुलाब चंद मोतीवाले का जन्म 1915 में हुआ। 1930 के सत्याग्रह आन्दोलन में भाग लेने के कारण तिलक भूमि तलैया पर आपको गिरफ्तार कर लिया गया और छ: माह की जेल तथा 50 रुपया अर्थ दण्ड की सजा दी गई। राष्ट्रीय गतिविधियों के कारण 1932 में गन केरिज फैक्ट्री की नौकरी से भी आपको निष्कासित होना पड़ा। 1939 के त्रिपुरी कांग्रेस अधिवेशन में सूचना एवं प्रकाशन के कार्यों से आप सम्बद्ध रहे। 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में पुन: गिरफ्तार कर लिए गये तथा 1 वर्ष 3 माह तक नजरबंद रखे गये। राष्ट्रीय कार्यक्रमों में आप सदैव सक्रिय रहे।

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-1, पृष्ठ-62 (2) स्व0 स0 ज0, पृष्ठ-125

श्री धन्नालाल जैन

विदिशा (म0प्र0) के श्री धन्नालाल जैन, पुत्र-श्री रूपचन्द का जन्म 1922 में हुआ। माध्यमिक तक शिक्षा प्राप्त श्री जैन ने 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में विदिशा के नवयुवकों को स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने के लिए प्रेरित किया, फलत: 19 सितम्बर 1942 को गिरफ्तार किये गये और लगभग 9 माह का कारावास आपने भोगा।

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-5, पृष्ठ-96

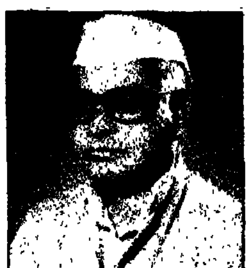
श्री धन्नालाल शाह

इन्दौर (म0प्र0) के श्री धन्नालाल शाह का राष्ट्रीय आन्दोलन में अवतरण अखबार नवीसी से हुआ। आपने अनेक हिन्दी पत्रों के सम्पादकीय विभाग में तथा अनेक दैनिक अंग्रेजी पत्रों के संवाददाता के रूप में कार्य किया। त्रिपुरी कांग्रेस के अवसर पर आपने श्री घनश्याम सिंह गुप्त, स्पीकर, मध्यप्रान्तीय धारासभा और सेठ गोविन्द दास, एम0एल0ए0 के प्राइवेट सेक्रेट्री का भी कार्य किया था। 1942 के आन्दोलन में राष्ट्रीय प्रवृत्तियों के कारण आप गिरफ्तार कर लिये गये और खंडवा तथा नागपुर जेलों में रहे।

आ0-(1) जै0 स0 रा0 अ0, पृष्ठ-63

श्री धन्यकुमार जैन

इस सदी के जैन दर्शन और न्याय के विख्यात विद्वान् स्व0 डॉ0 महेन्द्र कुमार जैन न्यायाचार्य के



अनुज श्री धन्यकुमार जैन, पुत्र-श्री जवाहर लाल जैन का जन्म 15 जुलाई 1924 को खुरई, जिला-सागर (म0प्र0) में हुआ। 8-9 वर्ष की अवस्था में ही आप सविनय अवज्ञा आंदोलन में जंगल कानून तोड़ने वाले सत्याग्रहियों के साथ मीलों 'महात्मा गांधी की जय' बोलते जाते थे। कक्षा 8 पास करने के बाद आप वाराणसी के प्रसिद्ध स्याद्वाद महाविद्यालय में संस्कृत पढ़ने के लिये बड़े भाई डॉ0 महेन्द्र कुमार

न्यायाचार्य के पास आ गये। यहीं राष्ट्रीयता का खुला वातावरण पाकर आजीवन खादी पहिनने एवं देश को स्वतंत्र कराने की प्रतिज्ञा ली।

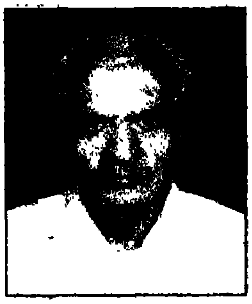
अगस्त 1942 की जनक्रान्ति में दमनचक्र अपनी चरम सीमा पर था। अखबार बन्द कर दिये गये थे। 16 अगस्त के 'सोनारपुरा गोलीकांड', जिसमें स्याद्वाद महाविद्यालय के सभी छात्र मौजूद थे, के उपरान्त सभी कार्यकर्ता अलग -अलग जिम्मेदारी लेकर गाँवों में फैल गये। क्रान्ति का अलख जगाने के लिये हाथ के प्रेस द्वारा 'रणभेरी', 'शंखनाद' जैसे परचे छापने एवं वितरण करने की जिम्मेदारी आपने अपने साथियों के साथ ली। जन्माष्टमी के दिन 3 सितम्बर 1942 को रात्रि में निशात सिनेमा हाल, गोदौलिया में एकत्रित जन समूह का आपने लाभ उठाया, फलत: परचे बांटते समय अनेक साथियों के साथ गिरफ्तार कर जेल भेज दिये गये। आपको 3 सितम्बर 1942 से 7 अक्टूबर 1942 तक अन्डर ट्रायल, 8 अक्टूबर 42 से 6 फरवरी 1943 तक सश्रम कारावास की सजा हुई।

स्वतंत्रता आन्दोलन के सन्दर्भ में आपसे अनेक बार चर्चा हुई। आपने बताया कि-'फरवरी 1943 में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय स्थित एम0जी0 ऑफिस को बम से उड़ाने के बाद, साथियों से शस्त्रास्त्र एवं अप्रयुक्त सामान लेकर उन्हें सामने गंगाघाट की बालू में छिपाने का कार्य मैंने व अन्य साथियों ने सफलता पूर्वक किया था। स्याद्वाद महाविद्यालय से संघर्ष जारी रखने की खबर सरकार को निरन्तर मिलती रही। जब 1944 में आन्दोलन समाप्तप्राय: था तब श्री टीकाराम डी0आई0जी0 (गुप्तचर) लखनऊ के नेतृत्व में जैन विद्यालय एवं निकटस्थ जैन मंदिर में छापा मारा गया। बड़ी संख्या में गंगा जी को भेंट चढ़ाने के बावजूद भारी मात्रा में शस्त्र बरामद हुये। तीन साथी अमृतलाल जैन, गुलाबचन्द जैन और घनश्यामदास गिरफ्तार हुये। मैं व अन्य साथी वहाँ से हटकर भूमिगत हो गये। आन्दोलन में भाग लेने के कारण क्वींस कालेज वाराणसी से मेरा पृथक्करण पहले ही हो चुका था।'

आ0-(1)जै0 स0 रा0 अ0 (2) स्व0 प0

श्री धर्मचंद जैन

श्री धर्मचंद जैन, पुत्र-श्री गोपाल चंद का जन्म 1920 में ग्राम-दाहोद, जिला-रायसेन (म0प्र0) में



हुआ। 1942 के आन्दोलन में आपने लगभग तीन माह का कारावास भोगा। म0प्र0 के मुख्यमंत्री श्री प्रकाशचंद सेठी द्वारा आपको प्रशस्तिपत्र भेंट कर सम्मानित किया गया था।

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-5, पृ0-73 (2) स्व0 प0

श्री धर्मचंद जैन

श्री धर्मचन्द जैन का जन्म 1924 में पन्ना (म0प्र0) जिले के ककरहटी गांव में हुआ। आपके पिता का नाम श्री फदालीलाल जैन था। बाद में धर्मचंद



जी सागर (म0प्र0) में आकर रहने लगे और 'मस्त' उपनाम से विख्यात हो गये। आजादी के आन्दोलन में तन-मन-धन से अंग्रेजों के खिलाफ लड़ने वाले धर्मचंद जी ने आजादी की लड़ाई के दिनों की यादों को ताजा करते हुए बताया '16 वर्ष की उम्र में ही पढ़ना छोड़कर मैंने सक्रिय रूप से आंदोलन में भाग लिया और अंग्रेजों और पुलिस से छिप-छिप कर जनता में आजादी की लहर फूंकने के लिए पर्चे बांटता रहा. ....'

1942 में गांधी जी के 'करो या मरो' के आह्वान पर चकराघाट पर आयोजित आम सभा के दौरान

नारेबाजी और धारा 144 का उल्लघंन करने पर साथियों सहित आप गिरफ्तार कर लिये गये और कुछ दिन जेल में रहे। 2 अक्टूबर 1942 को आप मजिस्ट्रेट के सामने उपस्थित हुए। इनसे माफी मांगने को कहा गया लेकिन धरमचंद जी ने माफी मांगने से साफ मना कर दिया, फलस्वरूप आपको 6 माह की सजा हुई। 2 माह डिटेशन में भी रखा गया जब यह जेल में थे तो इनकी माता जी का निधन हो गया पर जेल से नहीं छोड़ा गया और मां के निधन का दुख भी आप देश की खातिर हंसते-हंसते सह गये।

'जिला स्वतंत्रता संग्राम सेनानी संगठन' के मंत्री धर्मचन्द जी कहते हैं 'आज के दौर में समाज सेवा के नाम पर नेता पदों के लिये भाग-दौड़ और दांव-पेंच में उलझे रहते हैं। जनसेवा की भावना पहले जैसी किसी में दिखाई नहीं देती। बिना पैसे के जरा सा काम नहीं होता। अधिकारी, कर्मचारी और तथाकथित नेता भ्रष्टाचार में डूबे हुए हैं। आज चारों ओर भ्रष्टाचार और भाई-भतीजाबाद का बोलवाला है, अधिकांश युवा पीढ़ी स्वतंत्रता सेनानियों को सम्मान नहीं देती।'

धर्मचंद जी कहते हैं- 'आज की पीढी आजादी के महत्त्व को नहीं समझ रही है। कितनी कुर्बानियों के बाद अंग्रेजों के दमन से मुक्ति मिली थी।' आपने जनता से भाई-चारे, शांति और जनसेवा के लिए काम करने का आह्वान किया।

श्री धर्मचन्द 'मस्त' को म0प्र0 सरकार ने ताम्रपत्र भेंट कर सम्मानित किया था, आप कांग्रेस सहित अनेक समाजसेवी संस्थाओं से जुड़े हुए थे। 1999 में आपका निधन हो गया।

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-2, पृष्ठ-32 (2) दैनिक भास्कर, भोपाल 22-8-94 (3) आ0 दी0, पृष्ठ-50

सवाई सिंघई श्री धर्मचंद जैन

शहडोल जिला कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष रहे श्री धर्मचंद जैन, पुत्र-श्री रामचंद जैन का जन्म 1913 में बुढार, जिला-शहडोल (म0प्र0) में हुआ। अपने समय के बुढ़ार के सबसे शिक्षित व्यक्ति श्री जैन ने बी0 ए0 तक शिक्षा प्राप्तकर एक शिक्षक के रूप में अपना जीवन प्रारम्भ किया। (पारिवारिक परिचय हेतु धर्मचंद जी के अग्रज श्री रतनचंद जैन का परिचय इसी ग्रन्थ में देखें) पर भारत माता की बेडियों के कारण शिक्षक पद से त्यागपत्र देकर आप आजादी के आन्दोलन में कूद पड़े। बड़े भाई रतनचंद पहले से ही आन्दोलन में सक्रिय थे। 1942 के आन्दोलन में 20-8-1942 को आप गिरफ्तार कर सेन्ट्रल जेल रीवां भेज दिये गये, जहाँ 22-2-1943 तक अन्डरट्रायल रहे। बाद में 22-2-1943 को 200/-रुपये जुर्माना और छह माह कठोर कारावास की सजा आपको सुनाई गई। यह सजा भी आपने सेन्ट्रल जेल रीवां में काटी।

श्री जैन शहडोल जिला कांग्रेस कमेटी तथा कुछ समय धनपुरी कालरी मजदूर संघ के अध्यक्ष रहे थे। 1944 के बाद आप मजदूरों के नेता कहे जाने लगे थे। मजदूरों की आर्थिक स्थिति उन्नत करने में आपने महती भूमिका निभाई थी। 16-12-1987 को भोपाल में आपका देहावसान हुआ।

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-5, पृष्ठ-312 (2) जै0 स0 रा0 अ0 (3) स्वा0 आ0 श0, पृष्ठ-103

श्री धीरजमल के० तुरखिया

ब्यावर (राजस्थान) के श्री धीरजमल के0 तुरखिया विद्यार्थी जीवन में ही राष्ट्रीय आन्दोलन में कूद पड़े। 1912 में जब आप जैन ट्रेनिंग कालेज रतलाम में पढ़ रहे थे तब गांधी जी ने साबरमती के तट पर सत्याग्रह शुरू किया था, उसमें आपने भर्ती होना चाहा। आश्रम में कुछ दिन रहे भी, चूंकि वहाँ पिताजी की बिना आज्ञा के भर्ती नहीं किया जाता था, अत: आज्ञा न मिलने से पुन: रतलाम में पढ़ाई

प्रारम्भ की। 1920 में बम्बई गये, उस समय चर्खा-खादी-खिलाफत की गूंज थी, तिलक स्वराज्य फण्ड का आन्दोलन चल रहा था, आपने वहाँ सभाओं में भाग लिया। आपने 'जागृति' मासिक प्रारम्भ किया और घर पर ही खादी प्रचार के लिए भंडार खोल दिया।

गांधी जी के पक्के अनुयायी तुरखिया जी किसी दिन गेंहू की भूसी, किसी दिन मूंगफली, केला, बाजरा, मूंग, चना आदि एक-एक चीज पर निकालने का अभ्यास करते रहे। मनुष्य 4 पैसे में भी अपना दिन काट सकता है, इसका अनुभव किया। जब गांधी जी गिरफ्तार हुए तब उनके मुक्त होने तक घी छोड़ दिया। जैन समाज में राष्ट्रधर्म का प्रचार करने की भावना से 'जैन ट्रेनिंग कालेज, बीकानेर' का संचालन हाथ में लिया। 1925 में ब्यावर (राज्य) में आपने जैन गुरुकुल आरम्भ किया, जिसके छात्रों से खादी प्रचार, राष्ट्रीय जुलूसों और सभाओं में भाग लेना, मद्यनिषेध और राष्ट्रीय विचारों का प्रचार गांव-गांव में कराते रहे।

तुरखिया जी को 1944 के गुरुकुल उत्सव पर मण्डप में नेताजी के फोटो लगाने का अपराध बनाकर गिरफ्तार कर, अजमेर सेन्ट्रल जेल भेजा गया और उत्सव के पश्चात् मुक्त किया गया।

आ0-(1) जै0 स0 रा0 अ0, पृष्ठ-68

श्री नगीनमल जैन

ग्राम रानापुर, जिला-झाबुआ (म0प्र0) के श्री नगीनमल जैन, पुत्र-श्री चंपालाल जैन का जन्म 5-10-1923 को हुआ। आपने 1942 के आन्दोलन में सक्रिय भाग लिया। आपको शासन की ओर से प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया। आपके अग्रज श्री बसन्तीलाल जैन भी स्वाधीनता सेनानी हैं।

आ0-(1) म0 प्र0 स्वा0 सै0, भाग-4, पृष्ठ-141

श्री नत्थू जैन

स्वतंत्रता सेनानी श्री नत्थू जैन (जामला) बैतूल (म0प्र0) निवासी थे। 1942 के देशव्यापी आंदोलन में आप एक सप्ताह तक नजरबंद रहे।

आ0-(1) म0 प्र0 स्वा0 सै0, भाग- 5, पृष्ठ-158

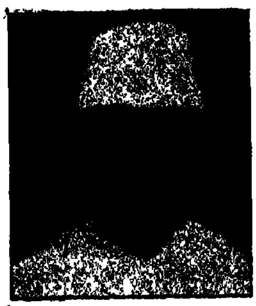
श्री नत्थूलाल नारद

लखनादौन (सिवनी) म0प्र0 के श्री नत्थूलाल नारद, पुत्र-श्री दुलीचंद का जन्म 1913 में हुआ। 1939 में जबलपुर त्रिपुरी कांग्रस में आपने मैस इन्सपेक्टर का कार्य बहुत संलग्नता से किया। 1941 में आपने व्यक्तिगत सत्याग्रह दिनांक 19-4-1941 को लखनादौन तहसील के 'आदेगांव' ग्राम से शुरू किया। आप वहाँ से करीब 15 दिन पैदल चलने के बाद होशंगाबाद जिला के डोगी ग्राम में गिरफ्तार कर छिंदबाड़ा जेल लाये गये। वहाँ लगभग 6 माह रखकर रिहा कर दिये गये।

आ0-(1) म0 प्र0 स्वा0 सै0, भाग-1, पृष्ठ-235 (2) जै0 स0 रा0 अ0, पृष्ठ-55

श्री नथमल चोरड़िया

राष्ट्रभक्त एवं प्रमुख समाजसेवी श्री नथमल चोरड़िया का जन्म वि0सं0 1932 (सन् 1876) में



नीमच (म0प्र0) में हुआ। आपके पिता का नाम श्री हेमराज था। आपके पूर्वजों का निवास डीडवाना था। विक्रम संवत् 1775 के आसपास वे नीमच आकर बस गये थे। चोरड़िया जी तन-मन और धन तीनों से तो सम्पन्न थे ही, वे राष्ट्रप्रेम, निष्कलंक छवि, निर्भीक व्यक्तित्व, दृढ़ संकल्प एवं कुशल नेतृत्व क्षमता से भी सम्पन्न थे। अपनी समूची सम्पन्नता

का उपयोग उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम की सफलता के लिए किया।

नीमच क्षेत्र में सबसे पहले चोरड़िया जी ने ही स्वराज्य प्राप्ति के लिए जयघोष किया। आपने 1920 में नागपुर कांग्रेस में भाग लिया। यहीं आपका सम्पर्क राजस्थान में राष्ट्रीयता के जन्मदाता पं0 अर्जुन लाल सेठी से हुआ। जयपुर के श्री रामनारायण चौधरी, श्री दुर्गाप्रसाद चौधरी, सीकर के श्री लादूराम जोशी आदि से सम्पर्क भी नागपुर सम्मेलन में ही हुआ। इन सब की सलाह पर चोरड़िया जी अपने अनेक साथियों को लेकर 1922 में 'बिजोलिया किसान आंदोलन' में शामिल होने पहुंचे। वहाँ इनकी भेंट जब बिजोलिया केसरी विजयसिंह पथिक से हुई तब पथिक जी ने इन्हें अपनी सारी योजना समझाकर वापिस नीमच यह कहकर भेज दिया कि, 'यह आंदोलन लम्बा चलेगा। मुझे निश्चित ही गिरफ्तार कर लिया जायेगा। यदि ऐसा हो जाये तब आप तत्काल बिजोलिया पहुंचकर नेतृत्व सम्हाल लेना। यहाँ रहने से तो दोनों को ही गिरफ्तार कर लिया जायेगा।'

1929 में नीमच में विधिवत् कांग्रेस की स्थापना की गई और चोरड़िया जी को नीमच में कांग्रेस का प्रथम अध्यक्ष बनाया गया। नीमच छावनी में कांग्रेस की इस प्रकार घोषणा व स्थापना, कमांडिंग आफिसर के लिए एक बहुत बड़ी चुनौती थी। चुनौती कांग्रेस के लिए भी बहुत बड़ी थी। संघर्ष शुरू हो गया। पहले दिन, पहली सभा से ही।

इसी बीच नमक सत्याग्रह का आह्वान हो गया। निर्देश पाते ही चोरड़िया जी अजमेर चले गये। श्री छोटेलाल यादव, श्री दौलतराम, श्री प्रेमचंद व श्री बिहारी लाल आदि सभी इनके साथ थे। चोरड़िया जी ने जिस निर्भीकता एवं कुशलता से सत्याग्रह आंदोलन का नेतृत्व किया उससे प्रभावित होकर पंडित हरिभाऊ उपाध्याय के गिरफ्तार होते ही तत्काल चोरड़िया जी को डिक्टेटर चुन लिया गया।

आपके नेतृत्व में सत्याग्रह और भी सबल हो उठा। आपके उत्तेजक भाषणों से परेशान होकर 1930 में दफा 118 A के अन्तर्गत एक वर्ष की सजा सुनाई गई। जेल में हथकड़ी पहनाकर कालकोठरी में रखा गया। जब आप अजमेर की सेन्ट्रल जेल में कारावास भुगत रहे थे उसी दौरान 30 अक्टूबर 1930 को आपके युवा पुत्र माधवसिंह की मृत्यु हो गई।

जेलर ने इन्हें यह दुखद सूचना देते हुए कहा कि 'यदि आप अपने कार्यों के लिए क्षमा याचना कर लें व भविष्य में राजनीति में भाग न लेने का लिखित आश्वासन दे दें तो आपको रिहा कर दिया जायेगा।' चोरड़िया जी ने अपना हृदय मजबूत किया व दृढ़ वाणी में उन्होंने जेलर को उत्तर देते हुए कहा 'माधवसिंह अब जीवित नहीं हो सकता। मेरी एक पुत्री केसर पहले ही विधवा है। अब माधवसिंह की पत्नी भी मेरी बेटी बनकर रहेगी। मैं परिवार के लिए देश का हित नहीं त्याग सकता।' उन्होंने क्षमा नहीं मांगी। बाद में वृद्धावस्था के कारण छः माह पूर्व ही उन्हें मुक्त कर दिया गया।

हरिजन उत्थान के लिए आपने पाठशालायें शुरू की थीं। सत्तर हजार रुपये का अवदान देकर प्रदेश में कन्या गुरुकुल की स्थापना की थी। आपके तपस्वी जीवन ने आपको लोकप्रिय बना दिया था। अखिल भारतीय श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कांफ्रेंस ने आपको, 'समाज भूषण' की पदवी से सम्मानित किया था। 1936 में आपका निधन हो गया।

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-4, पृष्ठ 215 (2) स्व0 स0 म0, पृष्ठ 75-77 (3) इ0 अ0 ओ0, भाग-2, पृष्ठ-399 (4) राजस्थानी आजादी के दीवाने, पृष्ठ-125-127 (5) दैनिक भास्कर, इन्दौर, 15 अगस्त 1997

श्री नथमल लोढ़ा

जयपुर (राज.) के श्री नथमल लोढ़ा का जन्म भाद्रपद शुक्ल 14 संवत् 1975 (1918 ई0) को हुआ। जयपुर में प्रजामण्डल के पुनर्गठन के बाद वे

उसमें सम्बद्ध हो गये। 1939 के प्रजामण्डल आन्दोलन में वे सक्रिय रहे, अनेक बार गिरफ्तार हुए (पर अपराध प्रमाणित न हो पाने के कारण) और छोड़ दिये गये। ऐसी अवस्था में उन्हें बौखलायी पुलिस की अमानुषिक क्रूरताओं का शिकार होना पड़ता था। पुलिस उन्हें बिना अपराध के ही 1-2 दिनों तक कोतवाली में रखती थी।

आ0-(1) रा0 स्व0 सं0, पृष्ठ-216

श्री नन्दलाल पारख

आजादी के दीवाने श्री नंदलाल पारख का जन्म राजस्थान में हुआ। आप बचपन से ही भारत मां को अंग्रेजों की पराधीनता से मुक्त कराने की सोचा करते थे। 1942 में जब पारख जी 12 वीं कक्षा के छात्र थे तब 'भारत छोड़ो आन्दोलन' में छात्रों का नेतृत्व करते हुये अन्य छात्रों एवं प्रजामंडल नेताओं के साथ 16 सितम्बर 1942 को 'भारत सुरक्षा अधिनियम' के अन्तर्गत गिरफ्तार करके नजरबंद कर दिये गये। जहां से ये सबके साथ 5 नवंबर 1942 को रिहा किये गये। रिहाई के बाद भी आप स्वाधीनता संग्राम से जुड़े रहे। बी0 ए0 एल0 एल0 बी0 पास करके पारख जी ने वकालत शुरू कर दी। करीब 50 वर्ष की अवस्था में इनका देहावसान हो गया। इनकी पत्नी श्रीमती प्रेमबाई को 'राजस्थान सरकार स्वतंत्रता संग्राम सेनानी सम्मान पेंशन' प्राप्त हो रही है।

आ0-(1) श्री बागमल बांठिया, कोटा द्वारा प्रेषित परिचय

श्रीमती नन्हीबाई जैन

देश की आजादी के लिए चलाये गये आन्दोलन में जबलपुर (म0प्र0) से महिलायें भी पीछे नहीं रहीं। ग्राम-लथकाना (सिहोरा), जिला-जबलपुर (म0प्र0) की श्रीमती नन्हीबाई जैन ने 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में भाग लिया तथा 8 माह 18 दिन जबलपुर जेल में गुजारे।

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-1, पृष्ठ-63

श्री नन्हेलाल जैन

श्री नन्हेलाल, पुत्र-श्री कुन्दनलाल ग्राम-कर्रापुर, जिला-सागर (म0प्र0) के निवासी थे। आपने 1942 के आन्दोलन में थाना जलाया, फलत: लगभग 15 माह का कारावास आपको भोगना पड़ा

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-2, पृष्ठ-34 (2) प0 जै0 इ0, पृष्ठ-526 (3) आ0 दी0, पृष्ठ-52

श्री नन्हेलाल जैन

सागर (म0प्र0) के श्री नन्हेलाल जैन, पुत्र-श्री परमानन्द ने 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में भाग लिया, फलत: 10 अक्टूबर 1942 से 9 अप्रैल 1943 तक का कारावास भोगा।

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-2, पृष्ठ-34 (2) प0 जै0 इ0, पृष्ठ-527 (3) आ0 दी0, पृष्ठ-87

श्री नन्हेलाल जैन

कटंगी, तहसील-पाटन, जिला-जबलपुर (म0प्र0) के श्री नन्हेलाल जैन, पुत्र-श्री भदईलाल जैन का जन्म पाटन में हुआ। 1942 के अगस्त क्रान्ति आन्दोलन में आप 'आजादी के मतवाले' दल में शामिल हो गये और पुलिस थाने पर ही राष्ट्रीय ध्वज फहराने चल पड़े, फलत: गिरफ्तार कर लिये गये और केंद्रीय कारागार जबलपुर में 11 माह का बन्दी जीवन बिताया। रोगग्रस्त हो जाने पर कुछ समय बाद ही आपका निधन हो गया। आपको शहीद कहा जाये तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी।

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-1, पृष्ठ-63 (2) स्वा0 आ0 पा0, पृष्ठ-118

श्री नन्हेलाल बुखारिया

बीना (सागर) म0प्र0 के श्री नन्हेलाल बुखारिया की बचपन से ही देश सेवा में रुचि रही। अनेक वर्षों तक बीना नगर में गांधी जी द्वारा चलाये गये सत्याग्रह व असहयोग आन्दोलन में आपने सक्रिय

भाग लिया। 1942 के आन्दोलन में छह माह के कारावास की सजा आपने भोगी। आप बीना के सुप्रसिद्ध कार्यकर्ता रहे हैं। अनेक वर्षों तक नाभिनंदन दि0 जैन सभा के मंत्री रहे हैं।

आ0-(1)म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-2, पृष्ठ-34 (2) प0 जै0 इ0, पृष्ठ-458

श्री नरहर कोठारी

विधि स्नातक, इन्दौर (म0प्र0) के श्री नरहर कोठारी, पुत्र-श्री गणेश कोठारी का जन्म 1895 में हुआ। 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में आपने सक्रिय भाग लिया तथा दिनांक 22-8-42 से 19-6-43 तक का कारावास भोगा। 1949 में आपका स्वर्गवास हो गया।

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-4, पृष्ठ-25

श्री नरेन्द्रकुमार जैन

समाजसेवा, सहृदयता, न्यायप्रियता, दानशीलता आदि के कारण पूरे उत्तराखंड में 'नरेन्द्र भाई' के



नाम से विख्यात श्री नरेन्द्रकुमार का जन्म 19 जुलाई 1923 को सहारनपुर (उ0प्र0), जिले के कस्बे देवबन्द में हुआ। बाल्यावस्था में देवबन्द और मुजफ्फरनगर में शिक्षा प्राप्त करने के बाद नरेन्द्र भाई ने अपनी उच्च शिक्षा मेरठ में ग्रहण की।

मुजफ्फरनगर में अपनी पढ़ाई के दौरान नरेन्द्र भाई ने 'स्टूडेन्ट फेडरेशन' की स्थापना की और स्वतंत्रता की लड़ाई के लिए जन सभाएं आयोजित करनी शुरू कीं। 1939 में मुजफ्फरनगर की 'स्टूडेन्ट फेडरेशन' की ओर से आयोजित एक जनसभा में अंग्रेजों के विरुद्ध जब बोलना शुरू किया और आजादी की मांग उठाई तो तत्कालीन अंग्रेज कलेक्टर ने पुलिस से आक्रमण कराकर तितर-बितर करने की कोशिश की, नरेन्द्र भाई पर भी कलेक्टर ने मंच पर चढ़कर बेंतों के कई प्रहार किए। इस घटना ने आग में घी का काम किया। विरोध और विद्रोह की भावना बढ़ती चली गई। 1939-40 में अमृतसर जाकर उस समय के महान् नेता पण्डित जवाहरलाल नेहरू का अखिल भारतीय स्काऊट जम्बूरी में स्वागत किया। पण्डित जी के विचारों ने नरेन्द्र भाई के हृदय में उत्पन्न विरोध और विद्रोह की भावना को मूर्तरूप दे दिया।

1942 का स्वतंत्रता आन्दोलन छिड़ गया था। महात्मा गांधी के नेतृत्व में देश के स्त्री, पुरुष, बच्चे और बूढ़े सभी अपनी आजादी के लिए संगठित हो रहे थे। नरेन्द्र जी जैसे देशभक्त के हृदय में क्रान्ति की चिंगारी फूटकर शोला बन गई। अपने कालेज में उन्होंने 'स्टूडेण्ट कांग्रेस' का संगठन किया। देखते-देखते कालेज के अनेक छात्र स्टूडेन्ट कांग्रेस के सदस्य बन गये और स्वतंत्रता संग्राम में कूद पड़े। हिन्दुस्तान के इतिहास में मेरठ क्रांति का गढ़ रहा है। ऐसे नगर में नौजवानों के हृदय में क्रांति की फूंक भरते हुए नरेन्द्र भाई ने अनेक स्थानों पर जनसभाओं और आंदोलनों में भाग लेकर छात्र वर्ग को प्रोत्साहन देते हुए स्वतंत्रता संग्राम को तीव्र किया। फिल्म उद्योग के लोकप्रिय कलाकार शेखर नरेन्द्र भाई के सहपाठी थे, जिन्होंने नरेन्द्र भाई के साथ आन्दोलन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। 1942 के आंदोलन में अपने अनेक साथियों के साथ नरेन्द्र भाई मेरठ में गिरफ्तार कर जेल भेज दिये गये। उ0 प्र0 के भूतपूर्व शिक्षा मंत्री श्री कैलाश प्रकाश एवं अन्य नेता नरेन्द्र भाई के साथ जेल में थे।

जेल से छूटने के बाद नरेन्द्र जी फिर छात्र आन्दोलन को संगठित करने में जुट गये किन्तु प्रशासन की शख्ती के कारण इनको मेरठ छोड़कर कुछ समय के लिए उदयपुर जाना पड़ा। उदयपुर उस समय तक एक रियासत थी। वहां पहुंचकर नरेन्द्र भाई ने 'भील

आन्दोलन' आरम्भ किया और अंग्रेजों के खिलाफ जनता में आग फैलाते रहे। कांग्रेस पार्टी के सक्रिय कार्यकर्ता के रूप में कार्य करते हुए कुछ समय बाद नरेन्द्र जी पुन: मेरठ लौट आये।

मेरठ में पुराने साथियों की टोली फिर जुड़ने लगी। किन्तु आर्थिक कठिनाईयों के कारण छात्रों को पुनर्गठित करने की समस्या और स्वयं अपना खर्चा उठाने की समस्या ने नरेन्द्र भाई को चिन्तित कर दिया। अन्तत: प्रयास करने पर उनको एक बैंक में नौकरी मिल गई। बैंक से मिलने वाले वेतन का अधिकांश भाग तो युवक साथियों के संगठन पर व्यय हो जाता था और इधर होटल वालों का उधार बढ़ता रहता। इसी प्रकार जीवन चक्र चलता रहा। नरेन्द्र भाई दिन में बैंक की नौकरी करते और सुबह शाम कांग्रेस व स्वतंत्रता आंदोलन के चक्कर में लगे रहते।

1946 में युवकों की एक बैठक के सम्बन्ध में नरेन्द्र भाई देहरादून आये। यहां आकर नरेन्द्र भाई ने यहीं रहने का निश्चय किया, क्योंकि वह बैंक की नौकरी से भी परेशान थे और बैंक वाले इनकी क्रांतिकारी गतिविधियों से।

1946 में ही नरेन्द्र जी देहरादून शिफ्ट कर गये। चूँकि विवाह के बाद जिम्मेदारियाँ बढ़ जाती हैं, विशेष रूप से तब जबकि परिवार बढ़ने लगे। इसी कारण उन्होंने अपना छोटा सा व्यापार शुरू कर दिया, किन्तु राजनैतिक और सामाजिक कार्य यहां भी चालू रहा। अच्छा वक्ता और परिश्रमी होने के नाते अल्प समय में ही वे यहां भी लोकप्रिय हो गये और अपने जन-सेवी कार्यों के कारण सम्मान प्राप्त करने लगे।

15 अगस्त 1947 को भारतवर्ष का विभाजन हुआ और देश आजाद हो गया। देहरादून में हिन्दु-मुस्लिम फिसाद न बढ़े इसलिए नरेन्द्र जी जगह-जगह स्थिति को काबू में रखने के लिए प्रयास करते रहे। इधर पाकिस्तान से शरणार्थी भाई बहुत बड़ी संख्या में भारत के विभिन्न स्थानों पर आकर बस गये। देहरादून आने वाले शरणार्थियों की संख्या बहुत-अधिक थी, नरेंद्र जी ने शरणार्थियों की कठिनाई को देखते हुए तेजी से दौड़धूप शुरू की और नगर के विभिन्न लोगों को एकत्रित कर सहायता कार्य प्रारम्भ कर दिया। अपने व्यापार को छोड़कर वे जन-सेवा में जुट गये। उनकी लगन, परिश्रम और अटूट सेवा को देखते हुए शासन ने इनको देहरादून में शरणार्थी सहायता और पुनर्वास समिति का मन्त्री और स्पेशल मजिस्ट्रेट नियुक्त किया। नरेन्द्र भाई ने जितनी लगन और तपस्या के साथ पुनर्वास के लिए प्रयास किया, वह आज भी तत्कालीन शरणार्थी भाईयों के हृदय में है।

3 जनवरी 1959 को भूतपूर्व राष्ट्रपति श्री वी0वी0गिरी ने रेडक्रास में महत्त्वपूर्ण सेवाओं के लिए नरेन्द्र भाई जैसे मित्र की बहुत प्रशंसा की थी।

समाज सेवी संस्थाओं के माध्यम से नरेन्द्र जी निरन्तर महत्त्वपूर्ण आयोजन करते रहे। 1965 के भारत-पाक युद्ध के दौरान उन्होंने कई महत्त्वपूर्ण कार्य किये। राष्ट्रीय सुरक्षा कोष में काफी बड़ी धनराशि एकत्रित कराने में उन्होंने अथक परिश्रम किया। 1968 में उ0प्र0 सरकार द्वारा नरेन्द्र जी को गैर सरकारी जेल निरीक्षक नियुक्त किया गया। 1968 में ही उ0प्र0 के राज्यपाल महोदय ने इन्हें जिला स्वास्थ्य सलाहकार समिति का सदस्य मनोनीत किया।

23 अक्तूबर 1972 को उ0प्र0 स्काउट्स एवं गाईड के अन्तर्राष्ट्रीय मामलों के कार्यालय आयुक्त पद पर नरेन्द्र भाई की नियुक्ति हुई जो कि काफी गरिमा का विषय थी। 1973 में नरेन्द्र जी उ0प्र0 अपराध निरोधक समिति के चेयरमैन चुने गये। माननीय राष्ट्रपति श्री फखरूद्दीन अहमद ने 6-12-66 को राष्ट्र का स्काउटिंग का सर्वोच्च पदक Silver- Elephant प्रदान किया एवं 23-2-78 को कार्यवाहक राष्ट्रपति श्री वी0डी0 जत्ती ने नरेन्द्र भाई को उद्योग पत्र प्रदान किया।

सदैव प्रसन्नचित रहने वाले नरेन्द्र भाई केवल सामाजिक कार्यकर्ता ही नहीं बल्कि एक लेखक भी हैं। इन्होंने धार्मिक तथा सामाजिक विषयों पर अनेक पुस्तकें लिखी हैं। आपकी 'अपराधी' पुस्तक का विमोचन, माननीय राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह जी ने किया था।

उ0प्र0 में स्काउट्स एवं गाइड्स आन्दोलन को समृद्ध बनाने में जितना योगदान आपका रहा, शायद ही उतना किसी अन्य का रहा हो। व्यापारी वर्ग में भी आप बड़े लोकप्रिय हैं। आप चेम्बर आफ कॉमर्स एण्ड इण्डस्ट्री के प्रधान रह चुके हैं, आपने विश्व के अधिकांश देशों की यात्रायें की हैं।

धार्मिक क्षेत्र में भी आप पीछे नहीं रहे, आप उत्तराखण्ड भ0 महावीर समारोह समिति के अध्यक्ष रहे। अनेक जैन संस्थाओं को आपने समृद्ध बनाया है। आपकी धार्मिक एवं सामाजिक सेवाओं के उपलक्ष्य में 'अ0भा0 नरेन्द्र भाई अभिनन्दन समारोह समिति' ने 1983 में आपकी षष्ठीपूर्ति के अवसर पर आपका अभिनन्दन ग्रन्थ निकालकर आपको सम्मानित किया था। इस ग्रन्थ में विस्तार से आपके व्यक्तित्व और कृतित्व की चर्चा है।

आ0-(1) जै0 स0 रा0 अ0 (2) नरेन्द्र भाई अभिनन्दन ग्रन्थ (3) स0 स0 (4) रीजनल एक्सप्रेस 5-8-94 समाचार पत्र अनेक परिचय फोल्डर आदि

श्री नरेन्द्र गोयल

जैन दर्शन के सुप्रसिद्ध विद्वान् श्री दयाचन्द गोयलीय के पुत्र श्री नरेन्द्र गोयल का जन्म 26 फरवरी 1925 को लखनऊ (उ0प्र0) में हुआ। आपने काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से दर्शन शास्त्र में एम0ए0 करने के उपरान्त पत्रकारिता तथा स्वतंत्र लेखन प्रारम्भ कर दिया था। छात्रावस्था में ही 1942 के अगस्त आन्दोलन में सक्रिय रूप से भाग लेकर आपने जेल-यात्रा की।

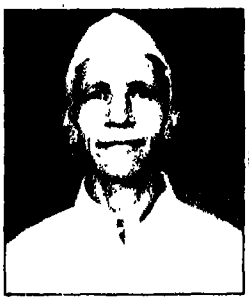
प्रारम्भ के कुछ दिनों में आप राज्य-सभा-सचिवालय में अनुवादक तथा सहायक सम्पादक रहे फिर 'नवभारत टाइम्स' (नई दिल्ली) के संपादकीय विभाग से पूर्ण रूप से जुड गए थे। 'नवभारत टाइम्स' की सेवा में आने से पूर्व आपने स्वतंत्र रूप से एक अंग्रेजी मासिक पत्र 'कण्टेम्पोरेरी' का सम्पादन-प्रकाशन भी 1956 और 1958 बीच किया था। आपका हिन्दी, अंग्रेजी और उर्दू आदि कई भाषाओं पर समान अधिकार था। आपके द्वारा लिखित साहित्य 'दरीचा और आईना' (1969) (उपन्यास), 'गुरु मेहमान, चेला मेजबान' (1970) कहानी-संकलन आदि प्रमुख हैं।

17 फरवरी 1975 को नई दिल्ली में आपका निधन हो गया।

आ0-(1) दिवगंत हिन्दी सेवी, भाग-2, पृष्ठ-456

डॉ० नरेन्द्र विद्यार्थी

स्वच्छ-श्वेत मोटी खादी का धोती-कुर्ता और टोपी, स्वाभिमान, सादगी एवं सरलता की प्रतिमूर्ति,



दबंग तथा निर्भीक व्यक्तित्व, 'कौन बलिहारी न जाये इस रूप पर' यह रूप था डॉ0 नरेन्द्र कुमार का, जो जनसामान्य में 'विद्यार्थी जी' के नाम से लोकप्रिय रहे हैं और अब हमारे बीच नहीं हैं किन्तु उनके अविस्मरणीय सेवा कार्यों, साहित्य लेखन एवं परोपकारी धर्मनिष्ठ जीवन की स्मृतियाँ सामाजिक चेतना का पर्याय बनकर मानसपटल पर सदैव अंकित रहेंगीं। आपका सम्पूर्ण जीवन सामाजिक एवं राजनैतिक सेवाओं का अनूठा संगम रहा है। आज भी वे अपने यश: शरीर से समग्र जैन समाज के हृदय में बसे हुए हैं।

विद्यार्थी जी का जन्म छतरपुर (म0प्र0) जिले के लघु सम्मेद शिखर नाम से विख्यात 'द्रोणगिरि'

अचंल के गांव धनगुवाँ में 15 अगस्त 1924 को हुआ था। आपने बचपन से ही अभाव, और समस्याओं से जूझकर स्वयं ही अपना मार्ग प्रशस्त किया। आप जब गुरुदत्त दिगम्बर जैन संस्कृत विद्यालय, द्रोणगिरि में प्राथमिक शिक्षा प्राप्त कर रहे थे, तभी आपको प्रात: स्मरणीय सन्त श्री गणेश प्रसाद जी 'वर्णी' के सान्निध्य का सौभाग्य प्राप्त हुआ। वर्णी जी के पारस स्पर्श से धनगुवां का यह अनपढ़ बालक 'कुंदन' बनने गणेश प्रसाद वर्णी दिगम्बर जैन संस्कृत विद्यालय, सागर, स्याद्वाद महाविद्यालय, बनारस और इलाहाबाद विश्वविद्यालय गया। जहां वर्णी जी के मार्गदर्शन से शास्त्री, साहित्याचार्य, काव्यतीर्थ एवं बी0ए0 आदि को उच्चतम परीक्षाएं उत्तीर्ण कर एक नया कीर्तिमान स्थापित किया और आर्थिक विपन्नता में भी स्व-अर्जित साधनों से अपना ज्ञान आगे बढ़ाते रहे। विद्यार्थी जी अल्पायु में ही दृढ़निश्चयी, निस्पृही, लगनशील तथा मेधावी छात्र के रूप में विख्यात हो गए थे।

विद्यार्थी जी ने गांवों में व्याप्त अभाव, गरीबी, छुआछूत, अन्याय, डाकुओं का आतंक और निरीह जनता का शोषण निकट से देखा था, अत: यहां की जनता को खुशहाल, आत्मनिर्भर एवं शोषणमुक्त बनाने की जो आग अध्ययनकाल से उनके अन्तर्मन में सुलग रही थी, उसे साकार रूप देने की प्रतिज्ञा की। जैसे ही 1942 में 'भारत छोड़ो आन्दोलन' का बिगुल बजा, विद्यार्थी जी अपनी परीक्षा छोड़कर स्वतंत्रता संग्राम की ज्वाला में कूद पड़े और विदेशी शासन की बेड़ियो को तोड़ने के लिए जनमानस तैयार करने में लग गए। उस समय गांव की जनता से ब्रिटिश सरकार अवैध एवं अनुचित कर वसूली करती थी। आपने इस कर का जमकर विरोध किया एवं ब्रिटिश सरकार से टक्कर लेने हेतु ग्रामवासियों को उकसाया। फलस्वरूप उन्हें 'राजद्रोही' एवं 'राजविरोधी' मानकर गांव छोड़कर जाने का आदेश मिला।

ग्राम निष्कासन की इस कार्यवाही से उन्हें और उनके परिवार के सदस्यों को हीरापुर (जिला-सागर) में रहकर घोर संकट का सामना करना पड़ा। विद्यार्थी जी यहाँ भी शान्त न रहे और राजनैतिक गतिविधि यों में लग जाने के कारण पुलिस द्वारा प्रताड़ित होते रहे, पुलिस लाठी चार्ज में हाथ टूटा, लेकिन उत्साह फिर भी कम न हुआ और न ही पुलिस की पकड़ में आसानी से आए।

अगस्त 1942 से अक्टूबर 1943 तक विद्यार्थी जी ने भूमिगत रहकर मुक्ति आंदोलन में सक्रिय कार्य किया एवं गुपचुप ढंग से जनसमूह को ब्रिटिश शासन के अत्याचार न सहने के लिये उत्तेजक और भड़काने वाले ओजस्वी भाषण देते रहे। अपनी नई सूझबूझ से मातृभूमि पर मर मिटने का संदेश चारों ओर फैलाते रहे, जिससे ब्रिटिश शासन के विरुद्ध असंतोष का वातावरण निर्मित हुआ। आपने जेल यातनाएं सहीं, लेकिन देशसेवा और देशभक्ति से विमुख नहीं हुए।

1945 में जब नेताजी सुभाष चंद बोस की 'आजाद हिन्द सेना' के सेनानी, स्वतंत्रता के पुजारी, देशभक्त सहगल, ढिल्लन, शाहनबाज आदि को ब्रिटिश सरकार ने लाल किले में बंद कर दिया था, तब सभी देशवासी तिलमिला उठे। विद्यार्थी जी से भी शान्त न बैठा गया और उन्होंने 'जैन भ्रातृसंघ' जबलपुर में जाकर सभाएं कीं। देश की रक्षा हेतु चन्दा इकट्ठा कर 'आजाद हिन्द फौज' के सेनानियों के लिए भेजा। उस समय जबलपुर की जैन समाज ने बनारस से अध्ययन छोड़कर आये नरेन्द्र जी को सम्मानित किया था। स्वाधीनता आंदोलन में सक्रिय भूमिका निभाने के उपलक्ष्य में स्वतंत्रता की 25वीं वर्षगांठ पर 15 अगस्त 1973 को मध्यप्रदेश शासन ने आपको 'प्रशस्ति पत्र' भेंटकर सम्मानित किया था।

विद्यार्थी जी की कर्मठता, निस्वार्थ सेवाओं एवं देशप्रेम से प्रभावित होकर कांग्रेस ने 1954 के

बड़ामलहरा विधानसभा उपचुनाव में आपको पार्टी का टिकट प्रदान किया और आप बहुमत से विजयी भी हुए। विधायक रहकर विद्यार्थी जी ने अपने विधानसभा क्षेत्र में अनेक प्राइमरी स्कूल, मिडिल स्कूल और तीन हायर सेकेण्डरी स्कूल स्थापित कराए तथा इनके भवनों का निर्माण कराया।

विद्यार्थी जी सामाजिक एवं धार्मिक अंधविश्वासों, कुरीतियों और विकृतियों के उन्मूलन का निरंतर प्रयास करते रहे। मृत्यु-भोज, दहेजप्रथा, अस्पृश्यता, बालविवाह, वृद्ध-विवाह एवं कन्या-विक्रय जैसी कुरीतियों के विरोध में ओजपूर्ण लेख लिखकर जनजागृति का अभियान छेड़ा। साधनहीन एवं अभावग्रस्त उदीयमान युवा प्रतिभाओं को सदैव आगे बढ़ने की प्रेरणा तथा प्रोत्साहन दिया। आप कभी अवसरवादी बन कर समय की लहर में नहीं बहे। कट्टर गांधीवादी विचारधारा से जुड़े रहकर संकट की घड़ी में भी अपने कार्य में अडिग रहे। आपका सम्पूर्ण जीवन एक खुली पुस्तक की भांति 'कथनी और करनी' को चरितार्थ करता रहा।

विद्यार्थी जी ने धार्मिक क्षेत्र में अविरल योगदान दिया। जहाँ आपने नई प्रतिष्ठाओं एवं गजरथ महोत्सवों में उल्लेखनीय सहयोग दिया वहीं प्राचीन मंदिरों के जीर्णोद्धार एवं ज्ञान प्रचार हेतु विद्यालयों की स्थापना पर जोर दिया। आपने बड़ामलहरा में जनता हायर सेकेण्डरी स्कूल का शुभारंभ कराया तथा 1960 से 1965 तक इस स्कूल के प्राचार्य भी रहे और कुशल प्रशासन के द्वारा संस्था का संवर्धन किया। भगवान् महावीर के 2500वें निर्वाण महोत्सव के पावन अवसर पर बुन्देलखण्ड के अनेक स्थानों पर नेत्र शिविरों के सफल आयोजन में विद्यार्थी जी ने अपना अमूल्य योगदान दिया था। इस स्मरणीय भूमिका के लिए 'द्रोण प्रान्तीय नवयुवक सेवा संघ', द्रोणगिरि (जिला छतरपुर) ने 1 जून 76 को एक गरिमामय समारोह में आपको 'ताम्र प्रशस्ति-पत्र' से सम्मानित किया था।

विद्यार्थी जी म0प्र0 स्वतंत्रता संग्राम सेनानी संघ के कार्यकारिणी सदस्य, छतरपुर जिला स्वतंत्रता संग्राम सेनानी संघ के वरिष्ठ उपाध्यक्ष, म0प्र0 ग्रामीण मजदूर कांग्रेस, जिला छतरपुर के अध्यक्ष, म0प्र0 कांग्रेस कमेटी, भोपाल के सदस्य एवं जिला कांग्रेस कमेटी के दो बार महामंत्री रहे। आप डॉ0 हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर की एफिलिएटिंग कमेटी के सदस्य भी रहे थे।

समाज सुधार के साथ ही साहित्यिक क्षेत्र में भी विद्यार्थी जी का योगदान अविस्मरणीय है। आपने लगभग 25 पुस्तकों का लेखन एवं संपादन किया। 1949 से आपने अस्पृश्यता निवारण पर कार्य शुरू किया एवं कौमी एकता को बढ़ावा देने, साम्प्रदायिक भेदभाव और छूआछूत को मिटाने के उद्देश्य से 'छुआछूत कलंक है' तथा 'अछूत कोई नहीं' पुस्तकें लिखीं। इन दोनों पुस्तकों पर आपको शासन द्वारा 'छत्रसाल पुरस्कार' एवं 'प्रशस्ति-पत्र' से सम्मानित किया गया। उस समय 'हरिजन मंदिर प्रवेश' को लेकर आंदोलन चल रहा था। इस जटिल समस्या को सुलझाने हेतु विद्यार्थी जी ने शास्त्रीय तर्क एवं प्रमाण देकर 'हरिजन मंदिर प्रवेश' पुस्तक लिखी, जिसने एक क्रांति पैदा कर दी थी। द्रोणगिरि दर्शन, रेशंदीगिरि, बापू की अनोखी खोज आदि आपकी अन्य पुस्तकें हैं।

विद्यार्थी जी ने प्रात: स्मरणीय सन्त गणेश प्रसाद जी वर्णी की डायरी, पत्रों, प्रवचन एवं लेखों से प्राप्त सामग्री द्वारा 'वर्णी साहित्य' का विद्वत्तापूर्ण सम्पादन कर वर्णी भक्तों में अग्रगण्य बनने का सौभाग्य प्राप्त किया। आप 'वर्णी-साहित्य-विशेषज्ञ' माने जाते थे। आपके द्वारा सम्पादित 'वर्णी वाणी' चार भाग, 'वर्णी पत्र पारिजात', 'वर्णी जी का दिव्यदान' एवं

'जीवन-यात्रा' आदि पुस्तकें आज भी पाठकों को सही दिशाबोध करा रही हैं। अपने जीवन के अंतिम समय में भी आप वर्णी जी के पत्रों पर आधारित महत्त्वपूर्ण पुस्तक के सम्पादन एवं प्रकाशन के कार्य में संलग्न थे।

विद्यार्थी जी ने डॉ0 हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर से सन् 1965 में 'महापुराण के आधार पर ऋषभ तथा भरत के जीवन चरित्रों का अध्ययन' विषय पर शोध-प्रबन्ध लिखकर पी-एच0डी0 की उपाधि प्राप्त की। आप रीवां एवं छतरपुर से प्रकाशित 'साप्ताहिक विंध्याचल' के अनेक वर्षों तक सम्पादक रहे थे।

सामाजिक उत्थान के प्रति जागरूक विद्यार्थी जी ने जीवन में अनेक उतार-चढ़ाव देखे, लेकिन कभी धैर्य नहीं खोया। जो भी दायित्व संभाला उसे पूरी निष्ठा, जिम्मेदारी और कुशलता से निभाया। जैन समाज में व्याप्त उपजाति-बन्धन और रूढ़िगत परम्पराओं को तोड़कर सम्पूर्ण दिगम्बर जैन समाज को एकता के सूत्र में पिरोने की सार्थक पहल भी आपने की। इसी भावना से प्रेरित हो आपने गोलापूर्व होकर भी कट्टर परम्परावादी 'परवार जैन' परिवार में विवाह कर एक अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत कियाा था। चार मई 1992 को आपका देहावसान हो गया।

आ0- (1) जै0 स0 रा0 अ0 (2) विद्वत् अभिनन्दन ग्रन्थ, (3) तीर्थङ्करवाणी, जून 1995, (4) वीरवाणी, जयपुर (5) विद्यार्थी जी के पुत्र श्री सुमति प्रकाश द्वारा प्रेषित सामग्री

श्री नाथमल मेहता

ग्राम-उमरकोट, जिला-झाबुआ (म0प्र0) के श्री नाथमल मेहता, पुत्र-श्री बच्छराज मेहता का जन्म 1912 में हुआ। 1928 से 1947 तक के सभी आन्दोलनों में आपने भाग लिया। एक बार आप पकड़े गये पर 2 दिन ही हिरासत में रखकर छोड़ दिया गया। शासन ने प्रशस्ति पत्र प्रदान कर आपको सम्मानित किया है।

आ0 (1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-4, पृष्ठ-141

श्री नाथूराम

श्री नाथूराम, पुत्र-श्री शान्तिराम जैन आमला जिला-बैतूल (म0 प्र0) निवासी रहे हैं, जिन्होंने जीवन का कर्तव्य समझकर देश सेवा की और 1942 के देशव्यापी आंदोलन में सक्रिय सहयोग दिया, फलस्वरूप आपको दिनांक 19-8-42 से 4 माह तक के कठोर कारावास की सजा सुनाई गई।

आ0 (1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-5, पृष्ठ-160

श्री नाथूराम पुजारी

बीना (म0प्र0) के 'पुजारी' उपनाम से प्रख्यात श्री नाथूराम, पुत्र-श्री रामलाल 'आजाद सेवा-दल' के प्रमुख कार्यकर्ता थे। 1940 के आंदोलन में आपने सक्रिय भाग लिया और जेल गये। 1942 के आन्दोलन में आप 18-8-42 से 20-4-43 तक जेल में रहे।

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-2, पृष्ठ 35 (2) जै0 स0 रा0 अ0 (3) आ0 दी0, पृष्ठ 28 (4) प0 जै0 इ0, पृष्ठ-528 (5) पं0 वंशीधर जी शास्त्री, बीना द्वारा प्रेषित परिचय

श्री नाथूलाल जैन

'राजस्थान लोक सेवा आयोग' के सदस्य रहे कोटा (राजस्थान) के श्री नाथूलाल जैन का जन्म 29 दिसम्बर 1919 को हुआ। एम0 ए0, एल0 एल0 बी0 तक शिक्षा प्राप्त श्री जैन ने विद्यार्थी जीवन से ही राष्ट्रीय आन्दोलनों में भाग लेना प्रारम्भ कर दिया था और 16 वर्ष की आयु में ही 1 अगस्त 1935 को तिलक दिवस पर कांग्रेस की सक्रिय सदस्यता ग्रहण की थी। 1938 में मगरोल में आयोजित प्रजा मण्डल के पहले अधिवेशन में स्वयं-सेवकों के दलपति के रूप में आप सम्मिलित हुए थे।

अगस्त 1942 में कांग्रेस महासमिति की बैठक में 'कोटा राज्य प्रजामण्डल' के प्रतिनिधि के रूप में

आपने भाग लिया परिणामस्वरूप इन्दौर के होल्कर महाविद्यालय, जहाँ आप एल0 एल0 बी0 की फाईनल परीक्षा दे रहे थे, से ही नहीं होल्कर राज्य से भी निष्कासित होना पड़ा।

इन्दौर से लौटने पर अगस्त आन्दोलन की बागडोर आपने संभाली और युवा शक्ति को जागृत कर नगर का शासन अपने हाथ में लिया। उस समय कोटा ही भारत का एकमात्र वह नगर था, जहाँ जनता ने सेना एवं पुलिस को बाहर निकालकर शासन अपने हाथ में ले लिया था। श्री जैन के नेतृत्व में लगभग 15 दिन तक कोटा की कोतवाली पर तिरंगा ध्वज फहराता रहा। भूमिगत साथियों को सहायता देना आपका प्रमुख कार्य था।

1942-43 में अवैध पत्रिकाओं एवं बुलेटिनों के प्रकाशन व उनके प्रचार-प्रसार का कार्य आपने किया, परिणामस्वरूप फरवरी 1943 में अजमेर की पुलिस ने गिरफ्तार किया और कोटा में 'भारत सुरक्षा कानून' के अन्तर्गत नजरबंद रखा। भारत छोड़ो आन्दोलन के बाद एक निर्भीक पत्रकार के रूप में आपने कोटा से प्रकाशित 'लोक सेवक' का सम्पादन किया और कुछ समय बाद ही अपना निजी साप्ताहिक पत्र 'दीन-बन्धु' प्रकाशित किया। दीन-बन्धु के प्रकाशन में सरकार द्वारा बाधाएँ उपस्थित करने पर 1945 में 'जयहिन्द' नाम से एक नया पत्र निकाला और जन-आन्दोलन का समर्थन किया तथा साम्प्रदायिक शक्तियों से जमकर लोहा लिया और अनेक बार जमानतें दीं।

कोटा राज्य में विधान बनाने के निमित्त गठित परिषद् में 'प्रजामण्डल' के प्रतिनिधि के रूप में आप सदस्य सचिव बनाये गये। राजस्थान निर्माण के बाद प्रदेश में पहली बार कांग्रेस का गठन कोटा में ही हुआ और आप उसके अध्यक्ष बनाये गये। 1948 तक कांग्रेस महासमिति के सदस्य रहे श्री जैन ने महासमिति में राज-प्रमुखों का पद समाप्त करने का प्रस्ताव रखा था। 1961 में प्रदेश कांग्रेस के अधिवेशन में राजाओं के प्रिविपर्स समाप्त करने का प्रस्ताव भी आपके द्वारा रखा गया था।

कोटा के सुप्रसिद्ध अभिभाषकों में रहे श्री जैन 'कोटा नगर सुधार न्यास' के अध्यक्ष रह चुके हैं। आप भारत सरकार के विधि मन्त्रालय द्वारा गठित 'राजभाषा विधायी आयोग' के सदस्य भी रहे। 1974 में अजमेर में आप 'राजस्थान लोक सेवा आयोग' के सदस्य के रूप में रहे। बांग्ला सांस्कृतिक समारोह और अजमेर सांस्कृतिक समारोह का सफल आयोजन आपके संरक्षण और कुशल नेतृत्व में हुआ था। अजमेर में 'भगवान् महावीर निर्वाणोत्सव वर्ष' में श्रेष्ठ सेवाओं के लिए 'अखिल भारतीय दिगम्बर जैन सोसाइटी' द्वारा स्वर्ण पदक से आप सम्मानित किये जा चुके हैं।

आ0- (1) रा0 स्वा0 स0, पृष्ठ 533 (2) अ0 वा0, पृष्ठ-66 (3) जैन संस्कृति और राजस्थान, पृष्ठ 343 (4) नई दुनिया, इन्दौर, 9 अगस्त 1997

श्री नाथूसाव जैन

श्री नाथूसाव जैन, पुत्र-श्री नारायण जैन का जन्म 1915 में लोधीखेड़ा, जिला-छिन्दवाड़ा (म0प्र0) में हुआ। आपने इण्डियन स्कूल, लोधीखेड़ा में कक्षा 7वीं तक शिक्षा प्राप्त की। बाल्यकाल से ही आपके मानस में स्वातन्त्र्य प्रेम का उद्रेक हो गया था, परन्तु पारिवारिक कारणों से आप प्रत्यक्ष रूप से स्वतंत्रता आन्दोलन में आगे न आ सके। आप गाँव के सम्पन्न व्यक्तियों में से एक थे, इसलिए आप अपने गाँव के आन्दोलनकारियों और सत्याग्रहियों को अप्रत्यक्ष रूप से आर्थिक एवं अन्य सहयोग प्रदान करते रहे। आपने लोधीखेड़ा के स्वतंत्रता अनुरागियों के लिए राष्ट्रीय दस्तावेजों एवं साहित्य का उत्कृष्ट पुस्तकालय स्थापित किया था। इसके अतिरिक्त आप उनके

भोजन, आवास और आवागमन का भी प्रबंध किया करते थे।

1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में जो आन्दोलनकारी जेल गये, उनका अभिनन्दन करने के लिए एक सभा का आयोजन आपने किया, परन्तु आपको गाँव की शांति भंग करने के संदेह में गिरफ्तार कर 15 दिन के लिए छिन्दबाड़ा जेल भेज दिया गया। इस प्रकार आपको स्वातन्त्र्य महायुद्ध में प्रत्यक्ष रूप से भाग लेने एवं जेल जाने का सौभाग्य मिल गया। स्वतंत्रता प्राप्ति के उपरान्त 'मध्यप्रदेश कांग्रेस कमेटी के द्वारा प्रशस्ति-पत्र से आपको सम्मानित किया गया। दिनांक 28-4-1978 को आपका स्वर्गवास हो गया।

आ0 (1) म0 प्र0 स्वा0 सै0, भाग-1, पृष्ठ-9 (2) स्वा0 आ0 में छिन्दबाड़ा जिले का योगदान, (टंकित शोध-प्रबन्ध) पृष्ठ 297

सिंघई नानकचंद जैन

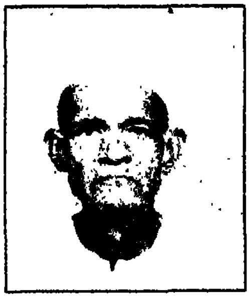
'मस्ताना' उपनाम से विख्यात तथा अपनी शेरो शायरी से मनोरंजन के साथ देशप्रेम की भावना फूंकने वाले श्री सिंघई नानकचंद जैन, पुत्र-श्री फूलचंद जैन का जन्म 1910 में एक सम्पन्न परिवार में उमरिया (शहडोल) म0 प्र0 में हुआ। 1927 में जब उमरिया में प्लेग फैला तो आप परिवार के साथ ही उमरिया से बुढ़ार, जिला-शहडोल (म0 प्र0) आ गये। साहित्यिक अभिरुचि सम्पन्न नानक चंद जी को गालिब के अनेक शेर कण्ठस्थ थे। विन्ध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री रहे तथा नानकचंद जी के राजनीतिक गुरू पं0 शम्भूनाथ शुक्ल ने आपको 'मस्ताना' नाम दिया था।

बुढ़ार में विदेशी वस्त्रों की दुकानों पर धरना देने के कारण आपको 2-5-1932 को गिरफ्तार कर लिया गया और 5-5-1932 को 3 माह का कठोर कारावास व 500/- रुपये जुर्माना की सजा सुनाई गयी। सजा आपने अमरपाटन कैम्प जेल में काटी थी। जुर्माना न देने के कारण डेढ़ माह और कैद में रहना पड़ा तथा सरकार ने जबरन घर से माल उठाकर जुर्माना भी वसूल कर लिया। 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में आप भूमिगत रहकर कार्य करते रहे। शासन द्वारा दी जा रही सम्मान निधि को आपने स्वीकार नहीं किया। स्वार्थपरता एवं भाई भतीजावाद के कारण आप राजनीति से उदासीन हो गये थे। एक दिसम्बर 1987 को आपका देहावसान हो गया।

आ0-(1) जै0 स0 रा0 अ0, पृष्ठ-65 (2) प0 जै0 इ0, पृष्ठ-459 (3) स्वा0 आ0 श0, पृष्ठ-126

श्री नारायणदास

होशंगाबाद (म0प्र0) में 1913 में जन्मे श्री नारायणदास, पुत्र-श्री मुन्नूलाल जैन ने प्राथमिक स्कूल



तक शिक्षा ग्रहण की और राष्ट्र को स्वाधीन कराने में हमेशा संलग्न रहे। आपने 1930 के जंगल सत्याग्रह में सक्रिय भाग लिया। 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में भी भाग लिया जिसमें आपको 7 माह की सजा सुनायी गयी थी।

आ0-(1) म0 प्र0 स्वा0 सै0, भाग-5, पृष्ठ-332

श्री नारायणदास जैन

कटनी, जिला-जबलपुर (म0प्र0) के श्री नारायण दास जैन 1930 के जंगल सत्याग्रह में सक्रिय रहे और 3 माह का कारावास तथा 25 रु0 का अर्थदण्ड भोगा।

आ0-(1) म0 प्र0 स्वा0 सै0, भाग-1, पृष्ठ-67

श्री नारायणदास जैन

श्री नारायणदास जैन का जन्म सागर (म0प्र0) में हुआ। आपके पिता का नाम श्री झुन्नूलाल था। देशव्यापी कांग्रेस आंदोलन में आप सक्रिय रहे। सत्याग्रह

आंदोलन में भाग लेने के कारण आपको गिरफ्तार किया गया। 1942 के देशव्यापी आंदोलन में आपने व्यक्तिगत एवं पारिवारिक सुख का त्याग करते हुए भाग लिया। सिद्धदोष कैदी के रूप में आपको 7 माह के कठोर कारावास की सजा सुनाई गई, जिसे आपने खुशी-खुशी अपने घनिष्ठ जेल साथी श्रीमान् ताराचंद जैन (जिला जेल, सागर में) के साथ काटी। 26-6-91 को आपका स्वर्गवास हो गया। वर्तमान में आपका परिवार होशंगाबाद में है।

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-5, पृष्ठ-332

श्री नारायणदास जैन

श्री नारायणदास जैन, पुत्र-श्री मन्नूलाल जैन का जन्म 1907 में जबलपुर (म0प्र0) में हुआ। 1942 के आन्दोलन में जब पुलिस आपके पुत्र प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी श्री प्रेमचंद 'आजाद' को गिरफ्तार न कर सकी तो आपको पकड़ कर ले गई, कठोर यातनायें दी गईं और 4 माह सैंट्रल जेल में रखा गया। 1982 में आपका निधन हो गया। आपके पुत्र का अल्पायु में ही निधन हो गया था।

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-1, पृष्ठ-67 (2) स्व0 स0 ज0, पृष्ठ-128 (3) श्री सिंघई रतनचंद द्वारा प्रेषित विवरण

श्री निर्मलकुमार जैन

प्राचार्य पद से सेवानिवृत्त और अपने गीतों से जन-जन में स्वतंत्रता की ज्वाला फूंकने वाले श्री



निर्मलकुमार जैन, पुत्र-श्री जुगलकिशोर का जन्म 10 फरवरी 1929 को बरेली, जिला-रायसेन (म0प्र0) में हुआ। स्नातकोत्तर शिक्षा प्राप्त श्री जैन ने अपने गीतों से ग्रामीण अंचलों में स्वाधीनता के अनुकूल वातावरण बनाया। तत्कालीन पत्र-पत्रिकाओं में आपके काफी गीत छपे। भोपाल बिलीनीकरण आन्दोलन में आपने सक्रिय भाग लिया और 12 दिसम्बर 1948 से 23 अप्रैल 1949 तक भोपाल सेन्ट्रल जेल में बन्द रहे। इस बीच आपकी पत्नी भयंकर बीमार पड़ गईं, किसी तरह उन्हें जेल से छूटने के बाद बचाया।

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-5, पृष्ठ-74 (2) वीर हृदय, पुस्तिका (3) स्व0 प0

श्री निर्मलकुमार जैन

होशंगाबाद (म0 प्र0) के श्री निर्मलकुमार जैन, पुत्र-श्री बाबूलाल जैन का जन्म 1927 में हुआ। जब आप मैट्रिक में अध्ययनरत थे तभी स्कूल छोड़कर राजनीति में कूद पड़े। 1942 के आन्दोलन में आपने 9 माह के कठोर कारावास की सजा भोगी थी। 1975 में अल्प आयु में ही आपका देहावसान हो गया।

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 स0, भाग-5, पृष्ठ-348 (2) स्व0 सं0 हो0, पृष्ठ-117

श्री निर्मलचंद जैन

आगरा (उ0 प्र0) के श्री निर्मलचंद जैन, पुत्र-श्री बंगालचंद जैन ने 1942 के आन्दोलन में अपने



क्रान्तिकारी कार्यों से देश की आजादी का मार्ग प्रशस्त किया था।

जैन होते हुए भी श्री जैन को देश की आजादी के लिए अहिंसा का मार्ग पसन्द नहीं आ रहा था, फलत: उन्होंने क्रान्ति का मार्ग अपनाया। श्री जैन को यह पसन्द नहीं था कि एक ओर आजादी के दीवाने जेलों में बन्द हो रहे हों, दूसरी ओर लोग मनोरंजन के लिए सिनेमा देखें ? उन्होंने नगर के तमाम सिनेमाघरों को पत्र लिखे और गोराशाही के जुल्मों का स्मरण कराया। इन गुमनाम पत्रों का जब कोई प्रभाव नहीं पड़ा तो श्री जैन ने किसी तरह बम हासिल किया और उसे स्थानीय राक्सी

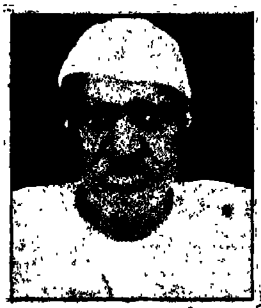
सिनेमा हाल में रख दिया। 12 बजे रात ज्यों ही बम फटा, भगदड़ मच गई। परन्तु सादा वर्दी वाले पुलिस कर्मियों ने आपको तथा अन्य अनेक दर्शकों को पकड़ लिया। 5 नवम्बर 1942 को कोतवाली पुलिस ने अभियुक्तों को अनेक यातनायें दीं और जिला-जेल भेज दिया। मुकदमा चला। निचली अदालत ने श्री जैन को सेशन सुपुर्द कर दिया।

13 माह कारावास में रहने के बाद सैशन जज श्री के0 एम0 बान्चू ने साक्ष्यों के अभाव में श्री जैन को मुक्त कर दिया। कांग्रेस के क्रिया-कलापों से जुड़े श्री जैन से हम आगरा में मिले। अपनी अन्तर्वेदना व्यक्त करते हुए आपने कहा था कि 'स्वतंत्रता संग्राम में हमने जो स्वप्न संजोये थे वह धूल-धूसरित होते जा रहे हैं। कुछ मुट्ठीभर लोग आतंकवाद-अलगाववाद की घिनोनीं हरकतें करके हमारी एकता-अखण्डता को चुनौती दे रहे हैं। हमारा विश्वास है कि भारतमाता के उज्ज्वल माथे पर कोई कालिख नहीं पोत सकेगा।'

आ0-(1) जै0 स0 रा0 अ0 (2) उ0 प्र0 जै0 ध0, पृष्ठ-90 (3) गो0 अ0 ग्र0, पृष्ठ-222

श्री नेमचंद जैन

खेकड़ा, जिला-मेरठ (उ0प्र0) के श्री नेमचंद जैन, पुत्र-श्री भरतसिंह का जन्म 1903 में हुआ। अपने



गृहनगर से ही आप आन्दोलन में सक्रिय हुए। 1930 के नमक आन्दोलन में आपने 6 माह की सश्रम कारावास की सजा भोगी। आप 11-8-30 से 12-9-30 तक मेरठ तथा 13-9-30 से 13-1-31 तक फैजाबाद जेल में रहे। आपने अमीनगर में गोली खाई थी व गोला सार्जेन्ट के सामने सत्याग्रह किया था। देहली कांफ्रेन्स में भी लाठियों के प्रहार सहे थे। बाद में आप दिल्ली प्रवासी हो गये और वहीं आपका निधन हुआ।

आ0-(1) दिल्ली के स्वतंत्रता सेनानी, भाग-2, पृष्ठ-82 (2) अनेक प्रमाण पत्र (3) पत्नी श्रीमती चमेली देवी द्वारा प्रदत्त जानकारी।

श्री १०८ आचार्य नेमिसागर जी महाराज

अपने गृहस्थ जीवन में 'गांधी की आंधी' में 11 माह लाहौर जेल में रहे पूज्य आचार्य नेमिसागर जी



महाराज का जन्म वर्तमान हरियाणा के अकेडा, जिला-गुडगावां में 1907 में हुआ। अल्पायु में माता-पिता का देहावसान हो जाने से आप 3 वर्ष की आयु में देहली के जौहरी लाला रणजीत सिंह जैन के यहाँ दत्तक पुत्र के रूप में आये, जहाँ आपकी बुआ श्रीमती रिक्खी बाई (लाला रणजीत सिंह की बहिन) ने आपका लालन-पालन किया। जब आप सिद्धक्षेत्र शिखर जी की यात्रा पर गये थे तब वहीं बुआ के देहावसान का तार मिला। इस घटना से आपकी वैराग्य भावना बढ़ गई और आप घर नहीं लौटे।

आपने 1940 में ब्रह्मचर्य व्रत, 1944 में क्षुल्लक दीक्षा और 1956 में आचार्य जयसागर महाराज से टाकाटोका (गुजरात) में मुनिदीक्षा ली थी।

अपने गृहस्थ जीवन में आप सादा जीवन उच्च विचार और स्वाधीनता के पक्षधर थे। 1931 में गांधी जी के आह्वान पर आप स्वाधीनता आन्दोलन में कूद पड़े और 11 माह लाहौर जेल में रहे। आप सदैव शुद्ध भोजन लेते थे, अत: जेल की रोटी नहीं खाई। कई दिनों तक उपवास किया। अन्त में जेल में ही शुद्ध भोजन की व्यवस्था हुई। 1982 में आपका चातुर्मास सिकन्द्राबाद (बुलन्दशहर) उ0प्र0 में हुआ था, इस अवसर पर एक पुस्तक भी प्रकाशित हुई थी।

आ0-(1) परिचय पुस्तक, (2)जैन गजट, 23 फरवरी 1989, पृष्ठ-7

श्री नेमीचंद आंचलिया

श्री नेमीचंद आंचलिया का जन्म तत्कालीन बीकानेर रियासत के सरदार शहर (वर्तमान-राजस्थान)

में एक सम्पन्न ओसवाल जैन परिवार में हुआ। सम्पन्न होते हुए भी जनता के अभाव और दु:ख उनसे देखे नहीं गये, विशेषत: बीकानेर के राजा द्वारा जनता को दिये जाने वाले दुखों से वे दुखी रहते थे।

आंचलिया जी निर्भीकता के साथ बीकानेर महाराजा की निरकुंशता और शासनाधिकार की कटु आलोचना किया करते थे। उन्होंने बीकानेर महाराजा की स्वेच्छाचारिता के विरुद्ध जनमत को जागृत और संगठित करने का साहस भरा कार्य किया था। बीकानेर महाराजा गंगासिंह श्री आंचलिया की इस निर्भीकता से अत्यंत सशंकित थे और उन्हें उचित सबक सिखाने का अवसर ढूंढ रहे थे।

इसी बीच 1942 की क्रांति के समय अजमेर से प्रकाशित होने वाले 'साप्ताहिक राजस्थान' में बीकानेर शासन की अंधेरगर्दी को बेनकाब करने वाला एक तथ्यपूर्ण लेख प्रकाशित हुआ। बीकानेर महाराज ने उस राजद्रोहात्मक लेख के लिए आंचलिया जी को अपराधी ठहराया और राजद्रोह के अपराध में उन्हें गिरफ्तार करके 7 वर्ष के कठोर कारावास की सजा दी। सारे सरदार शहर में और बीकानेर में आतंक पैदा करने के लिए श्री आंचलिया के हाथों में हथकड़ी लगाकर सरदार शहर और बीकानेर में उनका प्रदर्शन किया गया।

श्री नेमीचंद आंचलिया को जेल में खूनी, हत्यारे और डकैतों के साथ रखा गया और उनसे कठोर शारीरिक श्रम करवाया गया। उन्होंने राजनैतिक कैदियों जैसे व्यवहार की जेल अधिकारियों से मांग की। परंतु उनकी मांग पर कोई ध्यान नहीं दिया गया, उल्टे उनके पैरों में बेड़ियां डाल दी गईं और उन्हें चौबीसों घंटे कालकोठरी में बंद रखा जाने लगा।

2 फरवरी 1943 को बीकानेर के महाराजा गंगासिंह का निधन हो गया और नए महाराजा शार्दूल सिंह ने गद्दी पर बैठते ही राजनैतिक वातावरण को सुधारने की दृष्टि से राजनैतिक बंदियों की रिहाई का आदेश दिया, जिसके परिणामस्वरूप श्री रघुवर दयाल गोयल, गंगादास कौशिक और दाऊदयाल आचार्य तो जेल से रिहा कर दिए गए परंतु श्री नेमीचंद आंचलिया को रिहा नहीं किया गया। आंचलिया जी ने जेल में भूख हड़ताल शुरू कर दी। अन्त में बीकानेर राज्य प्रजा परिषद् के प्रयत्नों से आंचलिया जी जेल से रिहा हो सके। जेल से रिहा होने के बाद वे अधिक दिन नहीं जी सके।

आ० (1) रा० स्व० स०, पृष्ठ-765

श्री नेमीचंद जैन

जबलपुर (म०प्र०) कांग्रेस कमेटी के उपाध्यक्ष रहे श्री नेमीचंद जैन, पुत्र-श्री इमरत लाल का जन्म नरसिंहपुर (म०प्र०) में हुआ। आपके पिताजी शासकीय सेवा में थे, उनका स्वर्गवास होने पर आपके मामा जी आपको व आपके तीन भाईयों को जबलपुर ले आये थे, क्योंकि सभी छोटे थे। नेमीचंद जी सबसे बड़े थे।

आपका विवाह जबलपुर के प्रसिद्ध सामाजिक कार्यकर्ता व काँग्रेसी नेता श्री शुभचन्द जी की पुत्री के साथ हुआ था। शुभचंद जी विख्यात स्वतंत्रता सेनानी भी थे, जो 30,32,41एवं 42 के आन्दोलनों में जेल गये थे।

नेमीचंद जी उत्साही युवक थे, आप 42 के आन्दोलन में पकड़े गये थे तथा सेन्ट्रल जेल जबलपुर में एक वर्ष रहे थे

आ०-(1) म० प्र० स्व० सै०, भाग-1, पृष्ठ-68 (2) स्व० स० ज०, पृष्ठ-132 (3) सिंघई रतनचंद जी द्वारा प्रेषित परिचय।

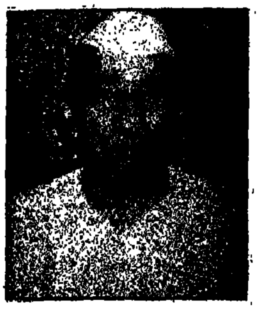
श्री नेमीचंद जैन

श्री नेमीचंद जैन, पुत्र-श्री उदयचंद का जन्म 21 अगस्त 1926 को जबलपुर (म०प्र०) में हुआ। 1942 के आन्दोलन में 1 वर्ष 1 माह के कारावास की सजा आपने काटी।

आ०-(1) म० प्र० स्व० सै०, भाग-1, पृष्ठ-68 (2) स्व० स० ज०, पृष्ठ-132

श्री नेमीचंद जैन

डिंडोरी, जिला-मण्डला (म0प्र0) के श्री नेमीचंद जैन का जन्म 1913 में हुआ। आपके पिता का नाम



श्री कन्हैया लाल जैन था। धार्मिक विचार और आचार आपको वंश परम्परा से मिले। प्राथमिक तक शिक्षा ग्रहण कर आप राष्ट्रीय आन्दोलन में कूद पड़े। 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में आपने ७ माह की सजा तथा 200/- रु0 का अर्थ दण्ड भोगा। डिन्डोरी के प्रसिद्ध स्वाधीनता सेनानी स्व0 श्री दालचंद जैन, श्री प्रभाचंद उर्फ भद्‌दू भैया, श्री रघुनाथ वर्मन आदि आपके साथ जेल में थे। देश की आजादी के बाद कृतज्ञ राष्ट्र ने जब स्वतंत्रता सेनानियों को सम्मानित किया, तब आपका नाम अभिलेखों से गायब पाया गया। पुनः- पुनः अभिलेखों के अन्वेषण से आपका नाम प्रकाश में आया।

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-1, पृष्ठ-209 (2) स्व0 प0 (3) जै0 स0 रा0 अ0

श्री नेमीचंद जैन

छिन्दवाड़ा (म0प्र0) के श्री नेमीचंद जैन, पुत्र-श्री खुशालचंद ने 1923 के 'झण्डा सत्याग्रह' में भाग लिया फलस्वरूप इन्हें जबलपुर में 3 माह का सश्रम कारावास दिया गया।

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-1, पृष्ठ-10 (2) आन्दोलन में छिन्दवाडा जिले का योगदान, (टंकित शोध -प्रबन्ध), पृष्ठ-300

श्री नेमीचंद जैन

व्यवसाय से होम्योपैथिक चिकित्सक एवं नगर कांग्रेस अध्यक्ष आदि अनेक पदों पर रहे श्री नेमीचंद जैन, पुत्र-श्री जमुना प्रसाद जैन का जन्म 1925 में कुर्रीचित्तरपुर, जिला- आगरा (उ0प्र0) में हुआ, बाद में आप जौरा, जिला-मोरेना (म0प्र0) में आ बसे। 1938 से आप रा0आ0 में सक्रिय हुए। 1942 के आन्दोलन में भूमिगत रहकर आपने आन्दोलन को गति दी। आप उपमंत्री गांधी वाचनालय, मंत्री हाईस्कूल शिक्षा समिति,* जौरा, उपसंयोजक अ0 भा0 खेत मजदूर किसान परिषद्, व्यवस्थापक महात्मा गांधी सेवाश्रम, जौरा आदि अनेक पदों पर रहे। 23 मार्च 1990 को आपका देहावसान हो गया।

आ0-(1)श्री राम जीत जैन, एडवोकेट द्वारा प्रेषित परिचय एवं प्रमाण पत्र।

श्री नेमीचंद जैन

जोतराज वसैया, जिला-आगरा (उ0प्र0) निवासी श्री बाबू नेमीचंद जैन, पुत्र-श्री जुगल किशोर जैन धुन के पक्के और कर्मठ कार्यकर्ता थे। 1930 से ही आपने राष्ट्रीय आन्दोलनों में भाग लेना प्रारम्भ कर दिया था, परिणामस्वरूप गिरफ्तार हुए और एक वर्ष कारावास की सजा काटी। मंडल कांग्रेस कमेटी के आप प्रमुख कार्यकर्ता थे। 1940 में आप नजरबंद रहे। 1942 में भी कागारोल का डाक बंगला जलाने के जुर्म में आप 2 वर्ष नजरबंद रखे गये थे। इतने पर भी पुलिस अपराध साबित नहीं कर सकी थी।

आ0-(1) प0 इ0, पृष्ठ-139 (2) जै0 स0 रा0 अ0 (3) उ0 प्र0 जै0 ध0, पृष्ठ-92 (4) श्री महावीर प्रसाद, अलवर द्वारा प्रेषित परिचय। (5) गो0 अ0 ग्र0, पृष्ठ-222

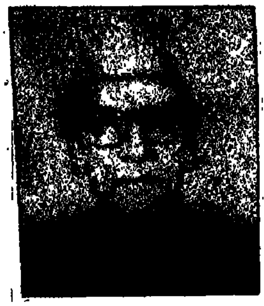
श्री नेमीचंद जैन

वारासिवनी, जिला-बालाघाट (म0प्र0) के श्री नेमीचंद जैन, पुत्र-श्री डालचंद 1932 के 'सविनय अवज्ञा आन्दोलन' में जबलपुर में गिरफ्तार हुए तथा लगभग साढे सात माह कारावास की सजा आपने भोगी।

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-1, पृष्ठ-182

सिंघई नेमीचंद जैन

जिला कांग्रेस कमेटी के उपाध्यक्ष तथा लोकल बोर्ड के चेयरमैन रहे सिंघई नेमीचंद जैन, पुत्र-श्री



मोहनलाल का जन्म 13 जुलाई 1913 को पिण्डरई, जिला-मण्डला (म0प्र0) में हुआ। आपके पूर्वज वहाँ के जमींदार थे। 1930 के व्यक्तिगत सत्याग्रह से आपने राष्ट्रीय आन्दोलनों में भाग लेना प्रारम्भ कर दिया था। स्वतंत्रता संग्राम में पिण्डरई जैन समाज के योगदान को रेखांकित करते हुए आपने अपने परिचय में लिखा है कि 'तात्कालिक लगभग तीन हजार की आबादी वाले पिण्डरई ग्राम मे चौदह लोगों ने आन्दोलन में सक्रिय भाग लिया, जिनमें लगभग सभी जैन थे। झण्डा सत्याग्रह के समय सिंघई भुवनचंद जैन के मकान में तिरंगा झण्डा फहराये जाने के अभियोग में उनकी बन्दूकें (जो जमींदार होने के कारण सुरक्षार्थ उन्हें मिली थीं) जब्त कर ली गईं। विदेशी वस्त्र बहिष्कार के समय सेठ मुलायम चंद जैन, श्री पेमीलाल बजाज एवं सिंघई भुवनचंद जैन के नाम गिरफ्तारी वारण्ट निकले, बाद में वे न्यायालय से बरी कर दिये गये।

1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में 16 अगस्त को यहाँ के सेठ केवलचंद जैन, श्री उत्तमचंद जैन, श्री चुन्नीलाल जैन, सिंघई शिखरचंद जैन, श्री मुलायमचंद जैन हलवाई तथा मैं गिरफ्तार कर लिए गये। मेरे अनुज सिंघई सुगमचंद का भी वारण्ट था। हम सभी सशस्त्र पुलिस बल के 20 जवानों के बीच में करके डिप्टी कलेक्टर श्री सरैया सा0 मण्डला के संरक्षण में स्टेशन तक ले जाये गये, वहाँ सुगमचंद को छोड़ दिया गया बाकी को मण्डला जेल भेज दिया गया। इसी समय श्री छोटेलाल एवं श्री मिट्ठूलाल जैन ने जबलपुर में गिरफ्तारी दी, उन्हें जेल की सजा हो गई, इससे पिण्डरई के सत्याग्रही और भड़क उठे। पुलिस आफिस तथा ग्राम पंचायत के रिकार्ड जला दिये गये। इस काण्ड में शासन ने दो झूठे गवाह बनाकर श्री खेमचंद ठेकेदार और श्री गुलाबचंद हलवाई को ढाई-ढाई साल की सजा दी।'

आपने आगे लिखा है कि 'मण्डला सब जेल में प्रथम श्रेणी नजरबंद के लिए उचित व्यवस्था नहीं होने के कारण मुझे केन्द्रीय जेल जबलपुर भेज दिया गया। वहाँ मुझे सेठ गोविन्ददास, काका कालेलकर आदि महापुरुषों का सत्संग मिला। मैं 13 माह वहाँ रहा, इस अवधि में मुझे अनेक आघात सहने पड़े। मेरे अनुज सुगमचंद की पत्नी प्रसव के चार घण्टे बाद ही चिकित्सा के अभाव में चल बसी, क्योंकि सुगमचंद भी भूमिगत था। नवजात शिशु का लालन-पालन उसके नाना-नानी के यहाँ हुआ।

मेरे एक मात्र पुत्र का स्वर्गवास हो गया, जिस कारण से मेरी पत्नी विक्षिप्त सी हो गई। उसे देखने उसके पिता (मेरे श्वसुर) डॉ0 भैयालाल जैन, साहित्यरत्न, पी-एच0डी0 गाडरवारा से आये, उनका पिण्डरई में ही देहान्त हो गया।

दिनांक 19-9-43 को मुझे जबलपुर जेल से जब छोड़ा गया तो जेल के फाटक पर ही एक आदेश पत्र मिला, जिसमें लिखा था कि "एक साल की अवधि तक जब भी आप पिण्डरई से बाहर जावें, पुलिस को सूचना देकर जावें।"

आजादी के बाद सिंघई जी उपाध्यक्ष-जिला कांग्रेस कमेटी, चेयरमैन मण्डला लोकल बोर्ड, जनपद सदस्य, सरपंच-चेयमैन पिण्डरई न्याय पंचायत आदि पदों पर रहे। आपके परिवार में से अनेक लोगों ने जेलयात्रायें कीं, जिनमें अनुज सिंघई सुगमचंद एवं श्री शिखरचंद आदि के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं।

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-1, पृष्ठ-215 (2) जै0 स0 रा0 अ0 (3) स्व0 प0

श्री नेमीचंद जैन

श्री नेमीचंद जैन, पुत्र-श्री रतीराम जैन का जन्म 1921 में बिलहरी, तहसील-कटनी, जिला-

जबलपुर (म0प्र0) में हुआ। आपने मैट्रिक तक शिक्षा प्राप्त की। भारत छोड़ो आन्दोलन में आपने सक्रिय भाग लिया और 12 अगस्त 1942 से 20 सितम्बर 1943 तक कारावास में रहे। 26 जनवरी 1947 को आपका स्वर्गवास हो गया।

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-1, पृष्ठ-68

श्री नेमीचंद जैन

श्री नेमीचंद जैन का जन्म 1929 में हुआ था, आप ग्राम-चारूवा, तहसील-हरदा, जिला-होशंगाबाद (म0प्र0) के मूल निवासी थे। आपके पिता का नाम श्री लालचंद जैन था। 1942 में पूरे देश में राष्ट्रीय प्रेम की भावना जोर पकड़ रही थी। गांधी जी के 'करो या मरो' नारे ने जनता को आंदोलित कर दिया था। गांव-गांव में क्रांतिकारी क्रांति की ज्वाला को सुलगा रहे थे। सभी जगह जनता अपने-अपने ढंग से अंग्रेजी सरकार का विरोध कर रही थी। तब श्री नेमीचंद जैन ने स्वतंत्रता संग्राम में भाग लिया। आंदोलन में भाग लेने के कारण उन्हें जेल जाना पड़ा। आजादी की इस लड़ाई में वह हमेशा अंग्रेजी सरकार का विरोध करते रहे। वे क्रांतिकारियों का साथ देते हुए तोड़-फोड़ की कार्यवाही में भी हिस्सा लेते रहे। मार्च 1985 में श्री नेमीचंद जैन का स्वर्गवास हो गया।

मध्य प्रदेश शासन द्वारा स्वतंत्रता सेनानियों का सम्मान किया गया। श्री नेमीचंद जैन को ताम्रपत्र प्रदान किया गया एवं ग्राम टेमलावाड़ी में 8-10 एकड़ भूमि प्रदान की गयी।

आ0-(1) श्री शोभाचंद जैन द्वारा प्रेषित परिचय। (2) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-5, पृष्ठ-332

श्री नेमीचंद जैन कासलीवाल

स्वतंत्रता के महासागर में महिदपुर, जिला-उज्जैन (म0प्र0) से हिस्सेदारी निभाने वाले श्री नेमीचंद जैन कासलीवाल का जन्म 1903 के लगभग हुआ। 1938-39 के आते-आते नेमीचंद जी प्रजामण्डल की गतिविधियों में सक्रिय हो गये। तत्कालीन होल्कर रियासत के जिला मुख्यालय महिदपुर में जिला प्रजामण्डल का प्रधान कार्यालय था। प्रजामण्डल के अधिवेशन के लिये नेमीचंद जी के निवास पर 1941 में एक गुप्त बैठक में महिदपुर में अधिवेशन करने का निर्णय लिया गया। लेकिन तत्कालीन होल्कर राज्य के प्रधानमंत्री कर्नल दीनानाथ ने अधिवेशन प्रतिबंधित कर दिया, जिसका जमकर विरोध किया गया। फलस्वरूप बड़ी संख्या में गिरफ्तारियां हुईं और महिदपुर जेल कार्यकर्ताओं से खचाखच भर गई। दिल्ली से राजकुमारी अमृत कौर महिदपुर आईं तथा 22 दिन के बाद सत्याग्रहियों को बिना शर्त शासन ने मुक्त किया। निरंतर प्रयास से 1942 में इन्दौर राज्य प्रजामण्डल का पहला अधिवेशन महिदपुर में सम्पन्न हुआ।

1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन की याद करते हुए श्री जैन ने अपने एक साक्षात्कार में प्रसिद्ध पत्रकार श्री मौहम्मद आदिल खान को जो बताया था उसके अनुसार उन्हीं दिनों कासलीवाल जी ने स्थानीय न्यायालय परिसर में लोगों को एकत्रित कर अंग्रेज हुकूमत के खिलाफ आंदोलन में कूदने हेतु भाषण दे दिया। उस समय उन्हें गिरफ्तार नहीं किया गया लेकिन तीन चार दिन बाद उनके नाम वारण्ट जारी किया गया। गिरफ्तारी के लिये पुलिस घर पहुंची तो पत्नी श्रीमती ताराबाई भी साथ जाने के लिये अड़ गईं। उस समय वे गर्भवती थीं। जब उन्हें गिरफ्तार कर पुलिस वाहन में ले जाया जा रहा था तब रास्ते में कई साथियों ने उनसे मुलाकात करना चाही। साथ में उपस्थित डी0आई0जी0 श्री दातरे से कासलीवाल जी ने निवेदन किया कि वे 'उन्हें वाहन से उतरकर साथियों से मिलने दें', लेकिन उन्होंने इंकार करते हुए ड्राइवर से वाहन बढ़ाने को कहा। इतना सुनते ही नेमीचंद जी ने वाहन की चाभी खींच ली।

पुलिस और उनके बीच हाथापाई की नौबत आ गई, वे वर्षा के दिन थे। वहां उपस्थित लोगों की भीड़ ने अचानक डी0आई0जी0 दातरे को कीचड़ में सान दिया। वे तत्काल कलेक्टर कर्णिकर के पास पहुंचे व सख्त कार्रवाई करने के आदेश मांगे, लेकिन कलेक्टर ने इंकार करते हुए स्वयं सत्याग्रहियों से चर्चा कर स्थिति को संभाला। पुलिस स्टेशन पर थानेदार ने श्री नेमीचंद को तो जेल में रखना स्वीकार किया लेकिन पत्नी को वापस जाने को कहा। पत्नी श्रीमती ताराबाई गिरफ्तार होने के लिये थाने में ही अनशन पर बैठ गईं तब उन्हें भी गिरफ्तार कर जेल में रखा गया। बाद में उन्हें कोर्ट उठने तक की सजा दी गई। नेमीचंद जी व तीन अन्य साथियों, श्री कन्हैयालाल मपाटे, श्री मिश्रीलाल व श्री राजमल को तराना तथा इंदौर जेल में रखा गया। तीन माह की सजा भुगत कर नेमीचंद जी और साथी छूटे। नेमीचंद जी उस समय अपनी सक्रियता के कारण शासन की आंखों में खटकते रहे और बार-बार जेल जाते रहे।

आ0- (1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-4, पृष्ठ-165 (2) म0 स0, पृष्ठ ब-52

लाला नेमीचंद मीतल

आगरा दि0 जैन परिषद् के प्रधानमंत्री रहे नमक मण्डी, आगरा (उ0प्र0) निवासी लाला नेमीचंद जैन मीतल, पुत्र-श्री मंगूलाल 1930 के आन्दोलन में आगरा के प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी तथा साहित्यकार स्व0 महेन्द्र जी के साथ कांग्रेस विज्ञप्ति के प्रकाशन का कार्य करते थे। 'आगरापंच' के प्रकाशक रहे मीतल जी बार्ड कांग्रेस कमेटी के अनेकों बार अधिकारी रहे और 1945 से 47 तक नगर कांग्रेस कमेटी के सदस्य रहे थे।

1942 के आंदोलन में आपने सरकारी रिपोर्ट के अनुसार 'आजाद हिन्दुस्तान' और कांग्रेस विज्ञप्तियां प्रकाशित की थीं। आप उन 14 व्यक्तियों में से एक थे, जिन पर 'आगरा षडयंत्र बम केस' चलाया गया था। सरकार के बहुत प्रयत्न करने पर भी आप सेशन जज की अदालत से निर्दोष साबित हुए। परन्तु नजरबन्द रहे। आप दिसम्बर 1942 में गिरफ्तार किये गये थे। आपको खतरनाक मानकर सरकार ने फतहगढ़ जेल भेज दिया था। आप दो वर्ष के लगभग कारावास में रहे। आपके कोई सन्तान नहीं थी, अत: पूरा जीवन देशसेवा व जैन समाज की सेवा में बीता।

आ0-(1) जै0 स0 रा0 अ0 (2) उ0 प्र0 जै0 ध0, पृष्ठ-90 (3) श्री महावीर प्रसाद जैन, अलवर द्वारा प्रेषित परिचय (4) गो0 अ0 ग्र0, पृ0-222

श्री पंचमलाल जैन

दिगम्बर जैन ट्रस्ट, रीवां के कोषाध्यक्ष एवं मंत्री रहे श्री पंचमलाल जैन, पुत्र-श्री शिकरीलाल जैन



का जन्म 1916 में रीवां (म0 प्र0) में हुआ। 1932 में आप रा0 आ0 से जुड़े। 1942 के आन्दोलन में आपने सक्रियता से भाग लिया। कुछ दिन इधर-उधर छिपते रहे, अन्तत: 24 सितम्बर 1942 को आप गिरफ्तार कर लिये गये। 15 दिसम्बर 1942 तक आप फलकनुमा कैम्प में नजरबंद रखे गये। रीवां के 'चावल-आन्दोलन' में भी आपने भाग लिया था। आप 1941 से 1951 तक रीवां नगर के पार्षद रहे थे।

आ0-(1) स्व0 प0 (2) डॉ0 नन्दलाल जैन रीवां द्वारा प्रेषित परिचय (3) सूची क्रमांक 445 (4) अनेक प्रमाणपत्र

श्री पंचमलाल जैन

श्री पंचमलाल जैन का जन्म तत्कालीन बंकापहाडी स्टेट (वर्तमान, उत्तर प्रदेश) में जनवरी 1897 में हुआ। आपके पिता का नाम श्री जानकी प्रसाद जैन था। 1911 में अपने मामा के यहाँ ग्राम सकरार

में रहकर आपने अध्ययन किया। 1912 में ग्राम भिटौरा में इमदादी स्कूल में अध्यापन कार्य किया। 1913 में अपनी जन्म भूमि बंका पहाड़ी में लौट गये और 1916-17 में राज्य की नौकरी कोठादारी के पद पर रहकर की।

गाँधी जी के उपदेशों से प्रभावित होकर 1927 में आपने राज्य की कोठादारी से त्यागपत्र दे दिया और देश व जनता की सेवा में लग गये। 1928 से राज्य की नीतियों तथा अत्याचारों का विरोध करने लगे, आन्दोलन किया, 14 किसानों को लेकर 1929 में पोलीटिकल एजेण्ट नौगाँव के पास जाकर राज्य के अत्याचारों तथा नीतियों का दिग्दर्शन कराया और किसानों को पट्टे दिलाने तथा बेगार बन्द करने के लिए राजा को आदेश दिलाये। 1930 में आप अपनी पत्नी सहित झांसी आ गये और श्री आत्माराम खेर, श्री गोविन्द खेर की कांग्रेस के सदस्य बने। 1930 में मऊरानीपुर आन्दोलन में आपने भाग लिया। 1931 में आप ललितपुर गये, वहाँ आन्दोलन में शामिल हुए व सत्याग्रह किया। वारडोरी सत्याग्रह में जुलूस निकालने पर गिरफ्तार हुए और 3 माह की सजा पाई। अस्वस्थता के कारण समयावधि से पूर्व ही जेल से छोड़ दिया गया। चंदनसिंह व नन्दन शर्मा के साथ धरना देने पर संयुक्त मजिस्ट्रेट द्वारा 15 वेंतो की पिटाई हुई। पुन: अंग्रेज सुप्रिंटेण्डेण्ट द्वारा गिरफ्तार हुए और 29-1-31 को 6 माह की कैद व 50 रु0 जुर्माना की सजा हुई।

जेल से छूटकर आप पुन: बंकापहाडी गये। 1934 से 1937 तक आपने रियासतों में बेगार प्रथा बन्द कराने हेतु आंदोलन चलाया। राज्य से कई प्रकार के दबाव आये, अत्याचार किये गये और लाठीचार्ज किया गया, बलवानसिंह तथा जैपालसिंह आदि साथियों के साथ पाशविक व्यवहार किया गया और राज्य से बाहर निकलवाने के आदेश पोलीटिकल एजेण्ट से कराये गये। इन सभी की जमीनें जब्त कर लीं गईं। फिर भी आप नहीं झुके।

टीकमगढ़ के नेता श्री लालाराम वाजपेयी, श्री श्यामलाल साहू, श्री चतुर्भुज पाठक श्री नारायण दास खरे, श्री लक्ष्मीनारायण नायक आदि से सम्पर्क होने के कारण आपने अपने घर में ही कांग्रेस का दफ्तर बना लिया था। 1940 में बंगापहाड़ी के शासक ने आपको पीटा तथा घायल अवस्था में चुम्बक में पैर देकर एक माह की सजा व 20/- रु0 जुर्माना किया। 1941 में बंकापहाड़ी के शासक ने भुमकलाल कामदार से, इनके घर कांग्रेस दफ्तर से, कागजात जब्त कराये। 1942 में रामदीन चौकीदार से धोखा देकर राजा ने आपको बुलाया और कचहरी में हाथ पैर बंधवाकर खूब पिटाई कराई, खून से लथपथ होने पर बेहोशी की हालत में छोड़ दिया गया।

आ0-(1) वि0 स्वा0 स0 इ0, पृ0 233-235 एवं अन्य अनेक पृष्ठ

श्री पंचमलाल बैसाखिया

रहली, जिला-सागर (म0प्र0) निवासी श्री पंचमलाल बैसाखिया, पुत्र-श्री मोतीलाल ने 1932 के आन्दोलन में पांच माह का कारावास तथा 50/-रु0 का अर्थदण्ड भोगा। 1958 में आपका स्वर्गवास हो गया।

आ0-(1) म0 प्र0 स्वा0 सै0, भाग-2, पृष्ठ-41 (2) आ0 दी0, पृ0-59

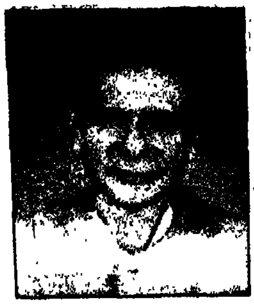
श्री पंचमसिंह जैन

एत्मादपुर (आगरा) उ0प्र0 के निकट 'रटना के बास' नामक ग्राम के निवासी श्री पंचमसिंह जैन ने 1942 के आन्दोलन में सक्रिय हिस्सा लिया तथा एक वर्ष की सजा भोगी। आपने क्षेत्रीय जनता को आन्दोलन के लिए संगठित करने में महती भूमिका निभाई थी।

आ0- (1) प0 इ0, पृष्ठ-140 (2) श्री महावीर प्रसाद जैन द्वारा प्रेषित परिचय (स्मारिका, पृष्ठ-92) (3) गो0 अ0 ग्र0, पृ0 222-223

श्री पदमकुमार जैन

19 नवम्बर 1924 को सागर निवासी श्री पूरन चंद जैन के आंगन में एक फूल खिला, पिता ने इस



बालक का नाम पदम कुमार रख दिया। पदम कुमार का राजनैतिक जीवन बालकाल से ही प्रारम्भ हो चुका था। आपके पिता कांग्रेस के सक्रिय कार्यकर्ता थे। वे 1932 से ही जिला कांग्रेस कमेटी के कोषाध्यक्ष रहे। 1930-32 में जब विदेशी कपड़े का बहिष्कार प्रारंभ हुआ उस समय उनकी कपड़े की दुकान थी।

उसी समय से पूरनचंद जी ने आजीवन विदेशी कपड़े न बेचने की प्रतिज्ञा की। इसके परिणामस्वरूप दुकान का कारोबार बंद-सा हो गया और लगभग पचास हजार रुपये की हानि उठानी पड़ी।

जून 1995 में हम श्री जैन के गांधी बार्ड, सागर स्थित आवास पर उनसे मिले। आन्दोलन में भाग लेने के सम्बन्ध में आपनें विस्तार से चर्चा की। आ० दी०, पृष्ठ - 11 पर भी विस्तार से आपका परिचय दिया गया है।

1940 में महात्मा गांधी ने अंग्रेजों के खिलाफ सविनय अवज्ञा आंदोलन शुरू कर दिया था। अन्य जिलों से सत्याग्रही सागर होते हुए देहली की ओर जाते थे। उन सत्याग्रहियों को देखकर श्री जैन का इस आंदोलन में कूदने का मन हो रहा था। श्री जैन ने अपनी इच्छा तत्कालीन जिला कांग्रेस अध्यक्ष स्वामी कृष्णानंद जी से जाहिर की, स्वामी जी ने कहा कि 'अभी तुम्हारी उमर बहुत छोटी है और इस आंदोलन में वही भाग ले सकता है जिसे पूज्य गांधी जी इजाजत देते हैं। फिर भी तुम्हारी लगन देखकर तुम्हें देहातों में जाकर रचनात्मक कार्य करने की इजाजत देता हूँ।' बस फिर क्या था। उन्होंने कुछ साथियों को इकट्ठा किया, जिनमें सिंघई स्वरूप चंद, राधेलाल समैया, नारायण राव हार्डीकर, मिट्ठू लाल जैन प्रमुख थे। इन सबके साथ श्री पदम कुमार जैन पैदल ही सागर से भापेल, जैसीनगर, वांसा, राहतगढ़, सीहोरा, नरयावली, जरुआखेड़ा, खुरई, बीना, मालथौन, खिमलासा, बांदरी आदि होते हुए सागर वापिस आये। इस प्रकार लगभग 150 मील पैदल भ्रमण किया व जनता में सभाएँ कर अंग्रेजों को मदद न करने हेतु जनता में प्रचार किया।

8 जुलाई 1941 को श्री जैन को गिरफ्तार किया गया तथा 2 माह की सजा व 20/- रु० जुर्माना किया गया। उन्हें जेल में बी श्रेणी में रखा गया। 11-7-41 को उन्हें नागपुर जेल स्थानांतरित कर दिया गया। जेल में अ श्रेणी व ब श्रेणी साथ-साथ थी। प्रान्त के सभी चोटी के नेता वहाँ थे। सागर के श्री स्वामी कृष्णानंद, श्री कृष्ण सेलंट आदि कई लोग वहाँ थे।

1942 के आन्दोलन में लक्ष्मीबाई के चौपड़ा से 100 व्यक्तियों का जुलूस इनके नेतृत्व में निकाला गया। इनके साथ बाबूलाल तिवारी, सुरेश चंद सिंघई एवं सेठ डालचंद (पूर्व सांसद) थे। जुलूस पुलिस नाकों से बचता हुआ लगभग डेढ़ घंटा बाद कटरा मोटर स्टेण्ड पहुँचा, वहाँ मंच बनाकर सभा की। आधे भाषण के दौरान पुलिस लगभग तीन लारियों में जवानों को भरकर आ पहुँची। सर्वप्रथम श्री पदमकुमार को गिरफ्तार किया गया। उनके गिरफ्तार होते ही दूसरे भाषण देने आने लगे और गिरफ्तार होते गये।

इसके बाद पुलिस ने लाठी चार्ज करके बाकी जनता को वहाँ से हटने के लिये बाध्य किया। डालचंद जी को अवस्थी इंस्पेक्टर ने रास्ते में ही गाड़ी से उतार दिया। बाकी तीनों को पुलिस सिटी कोतवाली ले गई, जहाँ रात भर इन्हें हवालात में बंद करके रखा गया। सुबह तीनों को जिला पुलिस कप्तान के समक्ष पेश किया गया। पुलिस कप्तान एक अंग्रेज था 'आइंदा इस तरह की हरकत न करने की जमानत देने पर छोड़ देने को कहा। इन तीनों ने कहा-पुनः इस प्रकार की

सभाओं और जुलूसों का आयोजन करेंगे चाहे आप छोड़ें या बंद करें।'

इसके बाद इन्हें सागर जिला जेल भेज दिया गया। 25-9-42 को तीनों को सजायें हो गईं। श्री पदम कुमार को नौ माह की सजा हुई, जो आपने सागर तथा जबलपुर जेलों में काटी।

जेल से वापिस आने के बाद अनेक वर्षों तक आप जिला कांग्रेस प्रबंध समिति के सदस्य एवं कोषाध्यक्ष रहे साथ ही सागर ब्लाक कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष भी रहे।

आ0- (1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-2, पृष्ठ-36 (2) आ0 दी0, पृष्ठ-11 (3) सा0

श्री पदमचंद जैन

बालाघाट (म0प्र0) के श्री पदमचंद जैन, पुत्र-श्री पन्नालाल का जन्म 1930 में हुआ। 1942 के आन्दोलन में नारे लगाने के कारण आप पकड़े गये पर अल्पवय होने के कारण हवालात में ही रखे गये। 1944 के गोवा सत्याग्रह में भी आपने भाग लिया और गिरफ्तार हुए।

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-1, पृष्ठ-182

क्षुल्लक पदमसागर जी महाराज

राष्ट्रसेवा और धर्मसेवा दोनों को ही अपना मिशन बनाने वाले क्षुल्लक पदमसागर जी महाराज का दीक्षा पूर्व नाम श्री पन्नालाल जैन था। आपका जन्म 1894 में ग्राम-गढीरामवल (कुर्राचित्तरपुर) जिला-आगरा (उ0प्र0) में हुआ। आपके पिता का नाम श्री चुन्नीलाल एवं बाबा का नाम श्री हीरालाल था। आपने कक्षा 4 तक शिक्षा ग्रहण की और कपड़े एवं साहूकारी का पैतृक व्यापार करने लगे। आप कांग्रेस के सक्रिय सदस्य बन गये और आंदोलनों में भाग लिया। बड़ौदा में धारा 144 को आपने तोड़ा था। नूरीदरवाला (आगरा) में 1942 में आपने जेल यात्रा की।

गृहस्थ अवस्था में रहते हुए भी आपकी रुचि सदा धार्मिक रही। जिनदर्शन, पूजा व स्वाध्याय आपका नित्य-नियम था। खान-पान, आचार-विचार का पूरा ध्यान रखते थे। आपने आचार्य श्री सूर्यसागर जी महाराज से उज्जैन में दसवीं प्रतिमा एवं 1965 में श्री नेमसागर जी महाराज से देवगढ़ में क्षुल्लक पद की दीक्षा ली। आपका नाम 'पदमसागर' रखा गया।

आपकी प्रकृति अत्यन्त शान्त व सरल थी। आपका निधन 1979 में कुर्राचित्तरपुर में हुआ।

आ0- (1) श्री दि0 जैन वरैया समाज इतिहास, पृष्ठ-49

श्री पन्नालाल जैन

श्री पन्नालाल जैन, पुत्र-श्री खेमचन्द का जन्म 1917 में हुआ। आप ग्राम हल्दीबाड़ी, पोस्ट-चिरमिरी, जिला-सरगुजा (म0प्र0) के निवासी हैं। अपने समय के सक्रिय और कर्मठ कार्यकर्ता रहे श्री जैन को 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में भाग लेने के कारण 9 माह के कठोर कारावास की सजा भोगनी पड़ी। कारावास की अवधि में आप गुनहखाने में भी रखे गये थे।

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-3, पृ0-214

श्री पन्नालाल जैन

खादी और गांधी साहित्य के प्रचार-प्रसार को समर्पित श्री पन्नालाल जैन का जन्म 31 दिसम्बर 1900 ई० को सनावद, जिला-पश्चिम निमाड़ (म0प्र0) में हुआ। आपके पिता का नाम श्री पद्मसा था। बाल्यावस्था में घर के नौकर ने आपको प्रसिद्ध क्रान्तिकारी श्री खुशीराम बोस की फाँसी की रोमाँचक कहानी सुनाई। तभी से आपके मन में अंग्रेजों के प्रति विद्रोह की भावना पनपने लगी। 1918 में इन्दौर में अ०भा० हिन्दी साहित्य सम्मेलन का अधिवेशन हुआ, जिसकी अध्यक्षता पूज्य बापू ने की थी। आपने उसमें स्वयंसेवक के रूप में कार्य किया, आपने तिलक स्वराज्य फण्ड में धन एकत्रित करने का भी काम

किया। प्रसिद्ध क्रान्तिकारी श्री अर्जुनलाल सेठी के भाषण से प्रभावित होकर आपने विदेशी टोपियों की होली जलाई, जिसमें अपनी टोपी भी होम कर दी और खादी पहनने का नियम लिया, जिसे अन्त समय तक निभाया।

1930 में आपने चर्खा चलाना सीखा और घर-घर जाकर खादी का प्रचार-प्रसार किया। नमक सत्याग्रह में भी आपने भाग लिया। खादी के प्रचार-प्रसार में आप सदैव समर्पित रहे। 1936 में इन्दौर नगर कांग्रेस कमेटी के मंत्री और बाद में एक साल तक उसके अध्यक्ष रहे। आप प्रदेश कांग्रेस कमेटी की कार्यकारिणी के सदस्य और उसके वित्तमंत्री भी रहे। आपने त्रिपुरी, जयपुर, मेरठ आदि के कांग्रेस अधिवेशनों में भाग लिया और कांग्रेस का प्रचार किया। इन्दौर राज्य में प्रचार की सख्त पाबंदी होने पर भी आपने गांधी जी की 'सत्य के प्रयोग अथवा आत्मकथा,' पं0 सुन्दरलाल जी की 'भारत में अंग्रेजी राज' आदि पुस्तकों को घर-घर जाकर बेचने का काम किया। समय-समय पर अखण्ड चर्खा चलाने का आन्दोलन भी आपने किया।

दूसरे विश्व युद्ध में जब गांधी जी ने - 'एक भी पैसा और एक भी आदमी देना पाप है' का नारा बुलन्द किया तब श्री कन्हैयालाल खादीवाला, श्री मिश्रीलाल गंगवाल ने निमाड़ आदि शहरों में पैदल ही व्यक्तिगत सत्याग्रह हेतु भ्रमण किया, तब दोनों का सारा प्रबन्ध आपने ही किया था। अजमेर में हरिजनों की हड़ताल होने पर आपने स्वयं अपने हाथों सफाई की। इन्दौर में भी ऐसी सफाई आपने की थी।

1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में आपने भाग लिया। इन्दौर में होने वाली आम सभा को पुलिस नाकाम करना चाहती थी, उसने जनता पर घोड़े दौड़ाये, पानी की बौछार की, लाठियां बरसाईं, आपको भी चोट आई। 16 अगस्त को रात्रि में एक बजे पुलिस ने आपको घर से गिरफ्तार कर लिया। आप इन्दौर, मंडलेश्वर और मानपुर की जेलों मं रहे।

मंडलेश्वर जेल में मागें न मानी जाने पर आपने अपने साथियों सहित सत्याग्रह किया। सत्याग्रहियों को मारा पीटा गया। यह अक्टूबर का महीना था। 51 सत्याग्रही जेल तोड़कर बाहर निकल गये और शहर में गांधी जयन्ती 2 अक्टूबर को मनाई। आप भी उनमें थे। दूसरे दिन कोर्ट में जेल लगी, सत्याग्रहियों ने उसमें भाग लिया, फलत: सबको दो-दो साल की कठोर कारवास की सजा दी गई।

श्री जैन का निधन 7-1-1986 को हो गया। आपके पुत्र श्री एन0पी0जैन (नरेन्द्र जैन) विदेश सेवा में रहे। वे बेल्जियम में भारत के राजदूत भी रहे।

आ0- (1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-4, पृष्ठ-88 (2) पौत्र श्री रूप किशोर जैन द्वारा प्रेषित परिचय (3) जै0 स0 रा0 अ0, पृष्ठ-74

श्री पन्नालाल जैन

बरेली, जिला-रायसेन (म0प्र0) के श्री पन्नालाल जैन, पुत्र-श्री नन्हेलाल जैन का जन्म 1901 में हुआ। 1948 के भोपाल राज्य विलीनीकरण आन्दोलन में आपने भाग लिया तथा कारावास की सजा भोगी।

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-5, पृष्ठ-74

श्री पन्नालाल जैन (सेठ)

ग्राम-चन्देरा, जिला-टीकमगढ़ (म0प्र0) के श्री पन्नालाल जैन, पुत्र-श्री भगवानदास का जन्म 1904 में हुआ। 1947 के चंदेरा काण्ड में आपने भाग लिया। म0प्र0 शासन ने सम्मान पत्र प्रदान कर आपको सम्मानित किया है।

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-2, पृष्ठ-129 (2) प0 जै0 इ0, पृष्ठ-533 (3) वि0 स्व0 स0 इ0, पृष्ठ-111

वैद्य पन्नालाल जैन 'सरल'

सदैव मंच से नीचे और प्रचार से पीछे रहने वाले, फिरोजाबाद (उ0प्र0) के वैद्य पन्नालाल जैन



का जन्म तत्कालीन आगरा जिले के गढ़ी हंसराम, नारखी में हुआ। 1942 के आन्दोलन में आपने जेल यात्रा की। आपने बताया कि -'मेरा राजनैतिक जीवन 1937 से प्रारम्भ हुआ जब मुझे मंडल कांग्रेस कमेटी, नारखी का कोषाध्यक्ष बनाया गया। सन् 1942 में मंत्री बना और 'करो या मरो' आन्दोलन में एक माह भूमिगत रहकर सितम्बर 1942 में गिरफ्तार हुआ तथा 2 माह जेल की यात्रा की।'

वैद्य जी के सम्बन्ध में जै0 स0 रा0 अ0 लिखता है 'अपनी लोकप्रियता के कारण 1946 में भी सर्वसम्मति से मंडल के प्रधानमंत्री निर्वाचित हुए। सन् 42 में निर्धन सेवा सदन स्थापित करके गांवों में फैली हुई गल्ले की कमी को अपने खर्चे से मंगाकर पूरा किया। बाजारी के सिद्धान्तत: विरोधी होने के कारण कपड़े के सुचारू रूप से चलते हुए व्यवसाय को समाप्त कर दिया।' आपने औषधालय, खादी केन्द्र, हिन्दी साहित्य विद्यालय आदि के माध्यम से राष्ट्र की सेवा की है। आज तक शासन से किसी भी प्रकार की सहायता या लाइसेंस नहीं लिया। आजादी के बाद आप अनेक पदों पर रहे। आपने साप्ताहिक पत्र 'ग्राम्य जीवन' का सम्पादन किया। 'जैन मित्र,' 'जैन सन्देश', 'वीर', 'वीरभारत', 'युग परिवर्तन' आदि में आपकी रचनायें छपती रहीं हैं। सब कुछ करने के बाद भी प्रचार से सदा पीछे रहने वाले वैद्य जी फिरोजाबाद के प्रसिद्ध सामाजिक कार्यकर्ता हैं।

आ0- (1) जै0 स0 रा0 अ0 (2) अमृत, पृष्ठ-25-26, (3) उ0 प्र0 जै0 ध0, पृष्ठ-92 (4) जै0 से0 ना0 अ0, पृष्ठ-5

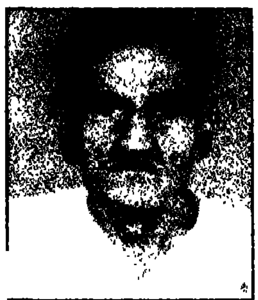
श्री पन्नालाल डेरिया

बाबई, जिला-होशंगाबाद (म0 प्र0) के श्री पन्नालाल डेरिया, पुत्र-श्री कन्छेदीलाल डेरिया का जन्म 1 अप्रैल 1921 को हुआ। 1938 से आप आंदोलन में सक्रिय हो गये और रचनात्मक कार्यों में भाग लिया। समय-समय पर आप लोगों की आर्थिक मदद भी करते रहे। 1942 के आन्दोलन में आपने 6 माह का कारावास भोगा। आप होशंगाबाद और अकोला जेलों में रहे थे। आपके पिता श्री कन्छेदीलाल और चाचा श्री बाबूलाल भी जेल यात्री रहे हैं।

आ0-(1)म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-5, पृष्ठ-33 (2) स्व0 स0 हो0, पृष्ठ-115

श्री पन्नालाल पाईया

श्री पन्नालाल पाईया का जन्म 1912 में बुढ़ार, जिला-शहडोल (म0प्र0) में हुआ था।आपके



पिता का नाम श्री गोविन्द दास पाईया था। ज्येष्ठ पुत्र होने के कारण पाईया जी प्राथमिक शिक्षा ग्रहण कर पिता के व्यवसाय में सहयोग देने लगे। आप धार्मिक, सामाजिक एवं राष्ट्रीय कार्यों में भरपूर रुचि लेते थे। आप 'सादा जीवन उच्च विचार' वाले व्यक्ति थे। आप हर समय लोगों के दु:ख-तकलीफ में काम आने एवं सहायता करने के लिए तैयार रहते थे।

पन्नालाल जी ने 1932 में विदेशी वस्त्र विक्रेता की दुकान पर धरना दिया, जिसके कारण उन्हें गिरफ्तार किया गया और बुढ़ार जेल में 15 दिन तक बंद रखा गया, साथ में काफी यातनायें भी दी गईं। उन्होंने देशहित, समाजहित और परिवारहित को देखते हुए विधुर जीवन जीने की प्रतिज्ञा लेकर अंतिम समय तक अपने को समर्पित रखा। 80 वर्ष की अवस्था में अपने कर्मठ जीवन की छाप छोड़कर, मोह-माया के बंधनों से मुक्त होकर 6/7/1992 को आप अंतिम यात्रा के लिए प्रयाण कर गये। आपने

शासन की ओर से मिलने वाली सम्मान निधि को लेने से इंकार कर दिया था।

आ०- (1) म० प्र० स्व० सै०, भाग-5, पृष्ठ-312 (2) पुत्र-निर्मल कुमार पाईया द्वारा प्रेषित परिचय एवं प्रशस्ति पत्र (3) स्वा० आ० श०, पृ० 136

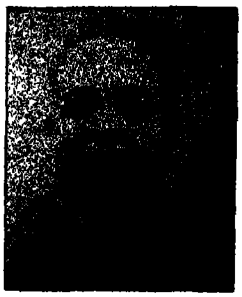
श्री पन्नालाल बासल

मंडी बामोरा, जिला-सागर (म0प्र0) के प्रसिद्ध समाज सुधारक श्री पन्नालाल बासल को 1942 के आन्दोलन में भाग लेने के कारण छह माह का कारावास दिया गया था। आप बामोरा कांग्रेस मण्डल के अधिपति व सागर जिला कांग्रेस कमेटी के सदस्य भी रहे।

आ०- (1) जै० स० रा० अ०, पृष्ठ-53

श्री परमानन्द सिंघई

देवरी कलां, जिला-सागर (म0प्र0) निवासी श्री परमानन्द सिंघई, पुत्र-श्री मूलचन्द सिंघई का जन्म 1914 में हुआ।



विद्यार्थी जीवन से ही आप में राष्ट्रीय भावनाएं पल्लवित हो गईं थीं। 31 दिसम्बर 1933 में जब राष्ट्रपिता बापू देवरी पधारे तब यहाँ के युवकों की स्वागत करने वाली टोली का नेतृत्व श्री परमानन्द सिंघई ने किया था। बापू का आशीर्वाद पाकर आप स्वतंत्रता आन्दोलन में कूद पड़े और जन-जागरण की दिशा में क्रियाशील हुए।

1939-40 में व्यक्तिगत सत्याग्रह के दौरान आप जिला कांग्रेस कमेटी, सागर के मंत्रियों में से एक थे। बापू द्वारा स्वीकृत जिले के 56 व्यक्तिगत सत्याग्रहियों की सूची में आपका नाम था।

1942 के आन्दोलन में सक्रिय भाग लेने के कारण लगभग 6 माह आप बन्दी रहे एवं 6-7 माह शासन द्वारा सागर में नजरबन्द कर दिए गये। आपको देवरी जाने अथवा देवरी से किसी भी तरह का सम्पर्क रखने के लिये रोक लगा दी गई थी। इसके बाद आप कलकत्ता चले गए और वहाँ 'दूध बताशा' नामक बाल पत्रिका का सम्पादन किया, जिसमें अधिकतर राष्ट्रीय लेख एवं कविताएं ही छपती थीं।

'जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी' लोकोक्ति के अनुसार आप पुन: देवरी आ गये और स्वतंत्रता के बाद नगर के विकास में सक्रिय योगदान दिया। आप कई वर्षों तक नगर पालिका के अवैतनिक मंत्री रहे और नगर विकास के लिए जीवन के अन्तिम क्षण तक प्रयासरत रहे। 11 अक्टूबर 1972 को आपका निधन हो गया।

आ०- (1) म० प्र० स्व० सै०, भाग-2, पृष्ठ-38 (2) आ० दी०, पृष्ठ-56, (3) श्री दुलीचंद जैन देवरी द्वारा प्रेषित परिचय।

पं० परमेष्ठीदास जैन

जैन समाज के सुविख्यात विद्वान् प्रसिद्ध समाज सुधारक, राष्ट्रीय भावना से ओतप्रोत, जैन



पत्रकारिता को आधुनिकता का स्पर्श देने वाले पं0 परमेष्ठीदास जैन, पुत्र-श्री मौजीलाल का जन्म 1907 में महरोनी, जिला-ललितपुर (उ0 प्र0) में हुआ। आपके पिता वैद्य थे। जब पं0 जी आठ वर्ष के थे तभी मौजीलाल जी ललितपुर आकर बस गये थे।

पं0 जी की प्रारम्भिक शिक्षा महरौनी में हुई। बाद में ललितपुर, साढूमल, मुरैना, जबलपुर और इंदौर के जैन विद्यालयों में आपने शिक्षा प्राप्त की तथा 'जैन सिद्धान्तशास्त्री' और 'न्यायतीर्थ' जैसी उपाधियां प्राप्त कीं। डॉ0 जयकुमार 'जलज' ने ठीक ही

लिखा है 'बुन्देलखण्ड अपनी प्रतिभाओं को कुछ भी देने में असमर्थ था। जो भी कोई पढ़ना-लिखना और कुछ करना चाहता था उसे दिल्ली, इन्दौर, मुरैना, अहमदाबाद, सूरत, वाराणसी आदि स्थानों पर जाना पड़ता था। ये साधनहीन विद्यार्थी बहुत अल्पायु में ही घर छोड़ देते थे। स्व0 गणेशप्रसाद वर्णी, इन्दौर के स्व0 पं0 वंशीधर, अकलतरा के स्व0 पं0 पन्नालाल और बाद की पीढ़ी में पं0 बाबूलाल जमादार, मगनलाल जैन, पं0 सुखनन्दन जैसे सैकड़ों लोग इसी प्रकार बाहर निकले थे। ये विद्वान् बीसों नगरों और कस्बों में आज आजीविका के लिए संघर्ष करते हुए भी जैन चिन्तन को गतिशील बनाये हुए हैं।

पं0 परमेष्ठीदास ने भी बचपन में घर छोड़ा। पढ़ाई की। अनेक जैन ग्रन्थों का पाठसंशोधन-संपादन किया, कई मौलिक पुस्तकें लिखीं, सैकड़ों मित्र बनाये, पचासों को प्रेरणा और प्रोत्साहन दिया। संस्कृत, प्राकृत, हिन्दी और गुजराती पर अपने असाधारण अधिकार के कारण उन्हें सर्वत्र आदर और आत्मीयता मिली; लेकिन वे शुद्ध उदास पण्डित कभी नहीं रहे। हँसी-मजाक और नोकझोंक के बिना वे अधिक देर नहीं रह सकते। इस मामले में उनकी समानता उनके स्व0 मित्र पं0 नाथूराम 'प्रेमी' से की जा सकती है।'

पं0 जी का विवाह कमलादेवी के साथ हुआ जो सही अर्थों में पं0 जी की सहगामिनी बनीं। जब पं0 जी सूरत में जेल गये तो कमलादेवी भी उनके साथ जेल गईं।

मात्र 22 वर्ष की अवस्था में परमेष्ठीदास जी सूरत (गुजरात) गये और प्रसिद्ध समाचार पत्र 'जैन मित्र' के सम्पादकीय कार्यालय में सहायक बन गये, बाद में वे वर्षों तक जैनमित्र के सम्पादन से जुड़े रहे। 1932 में आपने सूरत में हिन्दी प्रचारक मण्डल की स्थापना की। जिसके अन्तर्गत सूरत में अनेक हिन्दी स्कूल चलते थे। इन स्कूलों में आप सपत्नीक निःशुल्क पढ़ाया करते थे। राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा की स्थापना में भी आप सहयोगी रहे थे।

1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में आप सूरत में गिरफ्तार कर लिये गये। श्रीमती कमलादेवी भी सभाबन्दी कानून भंग करती हुई गिरफ्तार कर ली गईं क्योंकि वे गांधी चौक में भाषण दे रहीं थीं। दोनों का सौभाग्य था कि दोनों को एक साथ साबरमती जेल में रखा गया। पर पण्डितानी जी बाजी मार गईं उन्हें पांच माह जेल में रहना पड़ा और पं0 जी को चार माह। जेल में आपके साथ आपका तीन वर्षीय पुत्र जैनेन्द्र भी था। परन्तु आपके मित्र श्री साकेरचन्द्र सरैया ने बालक को अपने पास जेल से वापिस बुला लिया और भयंकर बीमारी में भी बहुत सेवा करके उसके प्राण बचा लिये थे।

हिन्दीभाषा का प्रचार महात्मा गांधी के रचनात्मक कार्यों में से एक महत्त्वपूर्ण कार्य था। इस कार्य में आप दोनों पूरी तन्मयता से लगे रहे। जेल में आप लगभग 500 साथियों को राष्ट्रभाषा की शिक्षा देते थे। ये सभी गुजराती थे। जेल में ही परीक्षा भी ली और राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा की ओर से प्रमाणपत्र दिलवाये।

1944 में प्रसिद्ध साहित्यकार श्री जैनेन्द्र कुमार के साथ आपने 'लोक जीवन' मासिक पत्र का सम्पादन किया। 1932 से ही आप अ0 भा0 दि0 जैन परिषद् के मुख पत्र 'वीर' से जुड़ गये। पहले सम्पादक रहे और फिर प्रधान सम्पादक। परिषद् के 1938 में सतना तथा 1950 में दिल्ली में सम्पन्न हुए अधिवेशनों में 'मरण भोज विरोधी', 'हरिजन मंदिर प्रवेश' प्रस्तावों को पेश करने के कारण विरोधियों की कटु आलोचना का शिकार आपको होना पड़ा था।

जैन पत्रकारिता के क्षेत्र में पं0 जी का नाम अग्रगण्य है। वे 'वीर' से अन्तिम समय तक जुड़े रहे,

इस सन्दर्भ में डॉ0 जयकुमार 'जलज' का संस्मरण हम यहाँ साभार दे रहे हैं-''मृत्युभोज, दस्सापूजा-निषेध, दहेजप्रथा और पर्दा-प्रथा जैसी बुराइयों के विरुद्ध लोग जमकर आक्रोश व्यक्त करते थे और पं0 परमेष्ठीदास इस आक्रोश के पक्ष में शास्त्रों के उद्धारण देकर इसे शास्त्र-सम्मत सिद्ध करते थे। वे जैनधर्म की उदारता को रेखांकित करते हुए सम्पूर्ण जैन वाङ्मय को प्रमाणस्वरूप रख देते थे। धीरे-धीरे रूढ़िवादियों और प्रतिगामियों ने उनके विरुद्ध गिरोह बना लिया। कुछेक सभाओं में उन्हें अपमानित करने और अदालतों में उनके पक्ष को पराजित करने की कोशिशें भी हुईं। ये समाचार भी वीर में छपते और लोग इन्हें पढ़ने के लिए टूट पड़ते। पर इन समाचारों का तेवर सनसनीखेज कम ही होता था।

जैन पत्रकारों में पं0 परमेष्ठीदास पहले सम्पादक हैं जो लेखकों को निजी पत्र लिखते थे, रचना के लिए आग्रह करते थे और रचना-प्राप्ति पर धन्यवाद देते हुए लेखक को अपनी व्यक्तिगत प्रतिक्रिया भेजते थे। रचना के साथ वे कभी-कभी रचनाकार का परिचय और रचना का अपना आकलन भी छापते थे। सम्पादकीय व्यस्तताओं के बावजूद अपने लेखकों से एक निजी स्तर पर संवाद स्थापित कर लेना सरल नहीं था। उनके पास न टाइपराइटर था, न टाइपिस्ट, न निजी सचिव। उन दिनों की अपेक्षा आज थोडी सुविधायें बढ़ गयी हैं, पर, तीर्थंकर के सम्पादक को छोड़कर अन्य कोई भी जैन सम्पादक अपने लेखकों से निजी रूप में जुड़ा हुआ नहीं है। दिल्ली का उनका (पं जी का) निवासस्थान वीर के कवियों, लेखकों का अड्डा बना हुआ था। उन्हीं दिनों वे एक बार ललितपुर आये थे। सुबह से शाम तक मिलनेवालों का तांता लगा हुआ था। फिर जब वे ललितपुर में ही आ बसे तब भी मिलने वालों की कमी नहीं रही। किसी को उनसे नयी किताबें मिलती, किसी को पुराने चित्र, किसी को कोई बहुत पुरानी चिट्ठी। वे साठेक साल पुरानी डायरियाँ निकालते। किसी पृष्ठ पर हिसाब लिखा हुआ है, तब का जब वे इन्दौर में पढ़ते थे। वे बताते हैं-'दूध कितना सस्ता था, यह एक पैसे की जलेबी खायी थी पेट भर गया था।' जितने क्षण भी लोग उनके साथ रहते हैं उम्र की दूरियाँ भूले रहते हैं। पं0 जी छोटे-छोटे पारिवारिक सुख-दु:ख पूछते हैं और उन्हें याद रखते हैं। उनकी आत्मीयता दिखाऊ नहीं, सहज और भीतरी है।

वीर पाठशालावादी और परीक्षाफल-छापू अखबार नहीं था। उसके संपादक खुद स्वतंत्रता-आन्दोलन में सपत्नीक जेल जा चुके थे। वे गांधीवादी थे। अब भी खद्दर पहनते हैं। उनका पत्र उनके राष्ट्रीय विचारों का वाहक बन गया था। आजादी, देशभक्ति, गांधी, नेहरू और सुभाष पर तथा ढिल्लन, सहगल, शाहनवाज की गिरफ्तारी के विरोध जैसे विषयों पर रचनाएँ छपती थीं। राष्ट्रीय समाचारों, निर्णयों और घटनाओं को प्रमुखता से प्रकाशित किया जाता था। इनके साथ ताजे चित्र भी होते थे; लेकिन वीर राष्ट्रीय पत्र नहीं था। वह मूलत: जैन पत्र ही था। उसके सम्पादक भी मूलत: जैन सुधारवाद से सम्बन्धित थे। एक समय महात्मा गांधी ने दिगम्बर साधुओं के नग्न विचरण पर प्रतिकूल टिप्पणी की थी। तब पं0 परमेष्ठीदास उनसे मिले थे और उनके समक्ष नग्नत्व के सम्बन्ध में जैन दृष्टि को स्पष्ट किया था। परमेष्ठीदास जी के पास ये स्मृतियाँ सुरक्षित हैं-'जैसे ही महात्माजी ने नग्नत्व-सम्बन्धी इस दृष्टि को समझा आश्चर्य से उनका मुंह खुल गया, जीभ कुछ बाहर निकल आयी और उन्होंने सरदार (सरदार बल्लभभाई पटेल) को आवाज दी ताकि वे भी इसे समझ सकें।' बाद में गांधीजी ने अपनी प्रतिकूल टिप्पणी वापस ले ली। स्पष्ट है कि ऐसा व्यक्ति जैन पत्र के मौलिक उद्देश्यों को त्याग नहीं सकता था। उन्होंने त्यागा भी नहीं; लेकिन एक संकीर्ण दायरे में भी उन्होंने अपने-आप को कैद नहीं होने दिया।''

अनेक पुरस्कारों और सम्मानों से सम्मानित श्रद्धेय पं0 जी को 'समाजरत्न' की उपाधि से अलंकृत किया गया था। पं0 जी का निधन 12 जनवरी 1978 को ललितपुर (उ0 प्र0) में हुआ।

आ0- (1) वि0 अ0, पृ0-169 (2) र0 नी0, पृ0 30-31 (3) तीर्थंकर, इन्दौर, अगस्त-सितम्बर 1977 तथा फरवरी 1978(4)जै0 स0 रा0 अ0, पृष्ठ 81-82 (5) वीर, 22 नवम्बर 1992

श्री पांडुरंग गजानन्द राव उमाठे (श्री पी०जी० जैन उमाठे)

रायपुर (म0प्र0) स्वतंत्रता संग्राम सेनानी संघ के संयुक्त मंत्री श्री पी0जी0 जैन उमाठे का जन्म दिनांक



10 अगस्त 1918 को हुआ। आपने 'राष्ट्रीय कांग्रेस संस्था' के अन्तर्गत वानर सेना तैयार की। उस समय हरिजन आदिवासी बच्चों को गांव की शाला में सर्वसाधारण बच्चों के साथ बैठने नहीं दिया जाता था। उक्त घटना का विरोध करके आपने शाला का बहिष्कार किया, उसके पश्चात् अन्य बच्चों के साथ उन्हें भी बैठने दिया गया। यह घटना आपकी जीवन्तता को सूचित करती है। 1930 में आपने जंगल सत्याग्रह में भाग लिया। किन्तु 12 वर्ष की आयु होने के कारण बन्दी नहीं बनाया गया। 1941 के व्यक्तिगत सत्याग्रह में आपने भाग लिया व गिरफ्तार हुए; परन्तु छोड़ दिये गये। 1942 के आन्दोलन में 18 अगस्त 1942 को वारासिवनी गांव में गिरफ्तार करके आपको मुख्यालय रामटेक में लगभग 22 दिन रखा गया। बाद में केन्द्रीय कारागृह नागपुर में स्थानान्तरित कर दिया गया और जून 1943 में रिहा किया गया। आपने नये मध्यप्रदेश में सहकारिता विभाग में अगस्त 76 तक शासकीय सेवा की।

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-3, पृष्ठ-46 (2) स्व0 प0

श्री पीतमचंद जैन

रायभा, जिला-आगरा (उ0प्र0) के श्री पीतम चंद जैन तत्कालीन क्रान्तिकारियों में अग्रगण्य थे। आपने रेल पटरी उखाड़ने, टेलीफोन के तार काटने आदि की ट्रेनिंग ली थी। श्री श्यामलाल जैन के साथ टेलीफोन के तार काटते हुए आप पकड़ लिये गये और कई महीने तक नजरबन्द रहे। पुलिस आप पर अभियोग साबित नहीं कर सकी थी। 1942 में भी आप एक वर्ष आगरा जेल में रहे थे।

आ0-(1) जै0 स0 रा0 अ0 (2) प0 इ0, पृष्ठ-139 (3) उ0 प्र0 जै0 ध0, पृष्ठ-93 (4) गो0 अ0 ग्र0 पृष्ठ-223 (5) श्री महावीर प्रसाद जैन, अलवर द्वारा प्रेषित परिचय

श्री पुखराज सिंघी

राजस्थान जैन संघ, सिरोही के अध्यक्ष रहे श्री पुखराज सिंघी, पुत्र-श्री जुहारमल सिंघी का जन्म सिरोही (राजस्थान) में हुआ। आपने डी0ए0वी0 कालेज, अजमेर से बी0काम0 व डी0ए0वी0 कालेज, कानपुर से एल0एल0बी0 परीक्षायें उत्तीर्ण कीं। 1939 में सिरोही राज्य के जन आन्दोलन में आप गिरफ्तार कर लिये गये। सिरोही में प्रजामण्डल की स्थापना होने पर आप उसके अध्यक्ष बने। 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में आपको दो वर्ष के कठोर कारावास की सजा हुई। वकालत की डिग्री भी छीन ली गई।

बाद में सिरोही राज्य के मंत्रिमंडल में आप मंत्री बने। सिंघी जी दिलवाड़ा जैन मन्दिर, आबू पर्वत की प्रबन्ध समिति के अध्यक्ष रहे हैं। आपने सिरोही में गोशाला, जैन हास्टल आदि की स्थापना में महनीय भूमिका निभाई है।

आ0-(1)-रा0 स्व0 से0, पृ0-828 (2) राजस्थान में रचनात्मक कार्य, पृष्ठ-32

श्री पुखराज उर्फ पुष्पेन्द्रकुमार

श्री पुखराज उर्फ पुष्पेन्द्रकुमार का जन्म बिलाड़ा, जिला-जोधपुर (राज0) के ओसवाल जैन परिवार में असौज कृष्ण 11 संवत् 1969 (1912 ई0) में हुआ। बिलाड़ा, आगरा एवं ब्यावर में आपकी शिक्षा हुई। 1930 के आन्दोलन से, जब आप विद्यार्थी थे, राजनैतिक क्षेत्र में सक्रिय हुए। 1931 में पालीताना और 1932 में मंगलदास मार्केट, बम्बई में विदेशी कपड़ों का बहिष्कार करने के कारण 7 मार्च 1932 को बम्बई में आप पकड़ लिए गये और 6 माह की सजा दी गई। 1938 में बिलाड़ा में लोक परिषद् की स्थापना आपने ही की थी। 1942 में भी आप 4 माह 18 दिन जेल में रहे।

आ0-(1) रा0 स्वा0 से0, पृष्ठ-720

श्रीमती पुष्पादेवी कोटेचा

स्वतंत्रता आन्दोलन में ओसवाल जैन समाज की प्रथम महिला सत्याग्रही होने का श्रेय श्रीमती पुष्पा देवी कोटेचा को प्राप्त है। आप ओसवाल श्रेष्ठि श्री रतनलाल जी कोटेचा की धर्मपत्नी थीं। 1941 में सूरत के जन-सत्याग्रह में भाग लेने के फलस्वरूप आपको गिरफ्तार कर लिया गया। आप पर आर्थिक जुर्माना लगाया गया, परन्तु -'आजादी के दीवानों ने जुर्माना या जेल में से जेल को ही गले लगाया।' इस उक्ति को आपने चरितार्थ किया और जुर्माना अदा नहीं किया बदले में जेल की कठोर यातनाएं सहीं।

आ0-(1) इ0 अ0 ओ0, खण्ड-2, पृष्ठ-373

श्री पूनमचंद नाहर

जागीरदारी अत्याचारों के कट्टर विरोधी श्री पूनमचंद नाहर का जन्म 10 जनवरी 1911 को छोटी सादड़ी (राजस्थान) में हुआ। आपने 1938 और 1942 के आन्दोलन में भाग लिया और 3 माह 6 दिन के कारावास की सजा भोगी।

आ0-(1) रा0 स्वा0 से0, पृष्ठ-508

श्री पूनमचंद पटवा

श्री पूनमचंद पन्नालाल पटवा का जन्म 15 जून 1888 ई0 को कुकड़ेश्वर, जिला-गरोठ (तत्कालीन होल्कर स्टेट, वर्तमान मध्यप्रदेश) में हुआ। पहले आप छिपकर आन्दोलन में भाग लेते रहे। 1934 में आपने खुलकर कांग्रेस का काम करना शुरू कर दिया व क्षेत्र में संगठन मजबूत करने लगे। रामपुरा में प्रजामण्डल की स्थापना के बाद पटवा जी अधिक सक्रिय हो गये। छुआछूत निवारण, बेगार प्रथा तथा महाजनों के शोषण के विरुद्ध आपने अनेक बार प्रदर्शन किये। पुलिस से इनकी अनेक झड़पें हुईं।

श्री सुन्दरलाल आजाद, इन्द्रमल भण्डारी, रतनलाल सोनी तथा कन्हैयालाल महन्त आदि आपके साथी थे। 1940 से 1948 के बीच आप दो बार जेल गये। एक बार कंजाड़ी में तथा दूसरी बार मनासा में। भारत छोड़ो आन्दोलन में पटवा जी ने पूरे क्षेत्र में प्रदर्शन करवाये अत: इन्हें गिरफ्तार कर लिया गया किन्तु मनासा की जेल में रखकर बाद में उन्हें छोड़ दिया गया।

पटवा जी जीवनपर्यन्त पुलिस तथा सामंतों के अत्याचारों के विरुद्ध लड़ते रहे। 30 सितम्बर 1977 को आपका स्वर्गवास हो गया।

आ0- (1) स्व0 स0 म0, पृष्ठ-119-120

ब्र0 पूरणचंद लुहाड़िया

जयपुर (राजस्थान) के जैन दर्शन के प्रसिद्ध विद्वान् ब्रह्मचारी पूरणचन्द लुहाड़िया का जन्म 2 सितम्बर 1906 में हुआ। आपने बी0ए0, एल0एल0बी0 करके वकालत में प्रसिद्धि प्राप्त की। लेकिन शिक्षा प्राप्त करने में कितनी ही कठिनाईयों का सामना आपको करना पड़ा। देशसेवा का व्रत लेने के कारण कॉलेज से आपको निष्कासित कर दिया गया तथा 22-2-1932 को अजमेर में सत्याग्रह करने के कारण 4 माह सख्त कैद की सजा दी गई। जब

आप जेल से छूटकर वापस अपने गाँव लौटे तो सारा गाँव आपके स्वागत में उमड़ पड़ा था।

1945 में फुलेरा तहसील में आयोजित राजनैतिक सम्मेलन के आप महामंत्री थे। आपका जीवन अत्यधिक धार्मिक रहा है। कोल्हापुर में आयोजित पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव में आप माता-पिता के पद पर अलंकृत किये गये। उसी पंचकल्याणक में आचार्य देशभूषण महाराज ने आपको ब्रह्मचर्य व्रत दिया। बाद में आचार्यकल्प श्रुतसागर जी महाराज से सातवीं ब्रह्मचर्य प्रतिमा का व्रत लेकर आपने अपने जीवन की दिशा ही मोड़ दी।

आ0-(1) जै0 स0 बृ0 इ0, पृ-278

श्री पूरनचंद जैन

सागर (म0प्र0) के श्री पूरनचंद जैन, पुत्र-श्री फदालीलाल का जन्म 1920 में हुआ। आपने 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में 15 दिन का कारावास भोगा।

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-2, पृष्ठ-41 (2) आ0 दी0, पृष्ठ-58

श्री पूरनचंद जैन

मूलतः बुढ़ार, जिला-शहडोल (म0 प्र0) निवासी और टिकरापारा, जिला-बिलासपुर (म0 प्र0) प्रवासी श्री पूरनचंद जैन, पुत्र-श्री रामलाल जैन का जन्म 1908 में हुआ। बचपन में ही आप स्वतन्त्रता आंदोलन में कूद पड़े। बुढ़ार के सत्याग्रहियों में आप अग्रणी थे। 1932 में देशद्रोह के अपराध में आप गिरफ्तार हुए और पीली कोठी उमरिया (शहडोल) में चार माह नजरबंद रहे। वहाँ से माधोगढ़ किला जेल (सतना) भेज दिये गये, जहाँ एक वर्ष और नजरबंद रहे। जंगल सत्याग्रह और असहयोग आंदोलन में भी आपने भाग लिया था।

1940 के व्यक्तिगत सत्याग्रह में आपने भाग लिया तथा 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में आप गिरफ्तार कर लिये गये। म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-3, पृष्ठ-184 के अनुसार आपने पाँच वर्ष का कारावास भोगा था।

बुढ़ार में कांग्रेस स्वयंसेवक दल के संचालक श्री जैन निष्णात और उत्साही नवयुवक कार्यकर्ता थे। विषम परिस्थितियों में भी कर्तव्य मार्ग पर डटे रहना आपकी विशेषता थी।

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-3, पृष्ठ-184, (2) स्व0 आ0 श0, पृष्ठ-106

श्री पूरनचंद जैन

श्री पूरनचंद जैन, पुत्र-श्री हजारीलाल का जन्म 1916 में नैनधरा, जिला-दमोह (म0प्र0) में हुआ। बचपन से ही राष्ट्रीय जुलूसों में भाग लेना आपके स्वभाव में शामिल था। आपने 1939 में हुई त्रिपुरी कांग्रेस में समाज के बहुत से युवकों के साथ स्वयंसेवक बनकर दमोह में एक माह ट्रेनिंग ली और तीन सप्ताह त्रिपुरी कांग्रेस में कार्य किया, इसलिए सभी स्वयंसेवकों के समान शासन आपको खतरनाक व्यक्ति समझने लगा। दि0 4-9-42 को रास्ता चलते, नगरपालिका अध्यक्ष श्री द्वारका प्रसाद वकील के मकान के पास से, पकड़कर आपको सागर जेल भेज दिया गया। 7 माह 14 दिन का कारावास भोगकर आप जेल से बाहर आये। देश की आजादी तक आप कांग्रेस का कार्य करते रहे।

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-2, पृष्ठ-84 (2) श्री संतोष सिंघई द्वारा प्रेषित परिचय।

श्री प्रकाशचंद जैन

श्री प्रकाशचंद जैन, पुत्र-श्री रूपकिशोर जैन रामगढ़, जिला-अलवर (राजस्थान) के निवासी हैं। 1946 में जब आप लगभग 15-16 साल के विद्यार्थी थे तब अलवर राज्य प्रजामंडल ने 'गैर जिम्मेदार मिनिस्टरो कुर्सी छोड़ो' आन्दोलन चलाया, जिसमें लगभग 324 व्यक्ति पूरी स्टेट से जेल गये



थे। विद्यार्थी कांग्रेस ने इस आन्दोलन में प्रजामंडल के तत्त्वावधान में पूर्ण रूप से भाग लिया, रामगढ़ भी इस आन्दोलन का केन्द्र बना। इसमें भीषण लाठीचार्ज हुआ था। 15-20 व्यक्तियों को चोटें आई थीं, अनेकों के हाथ-पांव टूट गये व सर फट गये थे। इस आन्दोलन में श्री प्रकाशचद जी भी जेल गये थे। राज्य सरकार के हारने के बाद सभी कार्यकर्ताओं के साथ आप छोड़ दिये गये थे।

आ0–(1) स्वतंत्रता सेनानी श्री महावीर प्रसाद जैन द्वारा प्रेषित परिचय (पत्र 27-12-94)। (2) अनेक प्रमाणपत्र (3) दैनिक भास्कर, अलवर प्लस, दि0 9-8-1997

श्री प्रकाशचंद जैन

सहारनपुर (उ0प्र0) के श्री प्रकाशचंद जैन स्वभाव से सरल और निष्कपट इंसान थे, पर अंग्रेजी शासन ने उन्हें भी नहीं बख्शा, जेल की दारुण यातनाएँ उन्हें भी सहनी पडीं। श्री जैन के सन्दर्भ में प्रसिद्ध साहित्यकार और स्वाधीनता सेनानी श्री कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' ने लिखा है– 'पतला-दुबला वह तरुण 1942 के झकोरे में कांग्रेस में आया। पहले-पहल जेल में ही मैंने उसे देखा। वह बोलता तो बोलता ही रहता और चुप होकर पेड़ के नीचे जा बैठता तो वहीं बैठा रहता। उसमें शक्ति चाहे कम थी, पर इरादे बुलन्द थे। दो दिन के बुखार में वह हमसे हमेशा के लिए अलग हो गया।'

आ0–(1) जै0 स0 रा0 अ0 (2) उ0 प्र0 जै0 ध0, पृष्ठ-86

श्री प्रतापसिंह लूणिया

राष्ट्रीय आन्दोलन में अनेक सेनानी ऐसे रहे, जो सकुटुम्ब जेल गये। ऐसे लोगों में श्री प्रतापसिंह लूणिया का नाम अग्रगण्य है। अजमेर के प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी श्री जीतमल लूणिया (इनका परिचय इसी ग्रन्थ में अन्यत्र देखें) और स्वतंत्रता सेनानी श्रीमती सरदारबाई लूणिया के आप पुत्र थे। मां एवं पिता के साथ 1930-32 के सत्याग्रह आन्दोलन में आपने जेल यात्रा की।

आ0–(1) जै0 स0 रा0 अ0

श्री प्रभाचंद जैन

डिण्डोरी, जिला-मण्डला (म0प्र0) के श्री प्रभाचंद जैन, पुत्र-श्री हरचंद का जन्म 4 अगस्त 1920 को केवलारी (सिवनी) म0प्र0 में हुआ। बाद में आप डिण्डोरी आ गए। 17 वर्ष की उम्र में ही आप आजादी के दीवाने बन गये थे। 1942 के 'भारत छोड़ो आन्दोलन' में आपको 6 माह की सजा हुई। आपको माफी मांगने के लिए डराया, धमकाया गया। आपने कहा-(अंग्रेजों) 'तुम मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकते, नौकरशाही का अन्त करके ही रहूंगा।' आपने माफी नहीं मांगी। 21-8-42 से 19-2-43 तक आप मण्डला जेल में रहे।

आ0-(1)म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-1, पृष्ठ-209 (2) जै0 स0 रा0 अ0

श्री प्रभाषचंद जैन

श्री प्रभाषचंद जैन 1930 से कटनी (जबलपुर) म0प्र0 में स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय हुये। आपने जंगल सत्याग्रह में भाग लिया तथा 10 माह का कारावास व 50 रुपये का अर्थदंड भोगा।

आ0–(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-1, पृष्ठ-71

श्री प्रेमचंद 'उस्ताद'

दमोह (म0प्र0) में 'उस्ताद' नाम से विख्यात सवाई सिंघई श्री प्रेमचंद, जबलपुर निवासी स0सि0 श्री पन्नालाल के सुपुत्र थे। आपका जन्म 1904 ई0 में हुआ था। आपकी जबलपुर में हौजरी की दो दुकानें थीं। दमोह के श्री सुखलाल चौधरी की इकलौती बेटी से विवाह होने के कारण आपने दमोह में रहना प्रारम्भ कर दिया। आपको बन्दूक चलाने तथा फोटोग्राफी का



बहुत शौक था, अत: राष्ट्रीय आन्दोलन के अनेक चित्र आपके पास ही थे। शायद ही कोई कांग्रेस अधिवेशन आपके देखे बिना रहा हो।

1923 में झण्डा सत्याग्रह के अवसर पर आपने जबलपुर विक्टोरिया टाउन हाल की गुम्बज पर बिजली अवरोधक पट्टी पकड़कर झण्डा चढ़ाया। पुलिस यह करिश्मा देखकर हैरान हो गई। पुलिस दल ने गोली से प्रेमचन्द को मार गिराने की इजाजत मांगी, परन्तु अंग्रेज सारजैंट समझ रहा था कि इस अपार जन समूह के क्रोध का शिकार केवल मैं ही बन जाऊँगा, अत: इजाजत नहीं दी। प्रेमचन्द को नीचे उतरने को कहा गया, परन्तु वह ऊपर से ही चिल्ला रहे थे कि 'कोई मुझे उतारो मुझसे उतरते नहीं बनता।' बालक प्रेमचन्द टाउन हाल के पीछे से आकर दीवार की खिडकियों, दरवाजों और कंगूरों का सहारा लेकर ऊपर चढ़ तो गये थे, परन्तु उतर नहीं सके। निदान, सीढ़ियाँ लगाई गईं, रस्सा गुम्बद के कलश से बांधा गया, तब प्रेमचन्द उतरे। पुलिस ने झण्डे को बांस में हंसिया बांधकर निकाला, जिस कारण गुम्बद में लगी छड़ टेड़ी हो गयी, जो आज भी देखी जा सकती है। इनके साथ चार साथी और थे जो गुम्बद के नीचे छत पर से ही इस फुर्तीले नौजवान की हिम्मत और फुर्ती देखते रहे। सत्याग्रह कई दिनों तक चला पर गुम्बद तक कोई नहीं पहुंच सका। प्रेमचंद जी इस कारण गिरफ्तार हुए और 1 वर्ष 6 माह का सी क्लास का कठिन कारावास पाया, जिसमें खड़े-खड़े पाँच सेर गेहूँ पीसना पड़ता था। चक्की चलाने से शरीर पर निखार आ गया। आप बाहुबली व्यायामशाला के सबसे शक्तिशाली पहलवान थे, अत: 'उस्ताद' कहलाने लगे।

आपके प्रयास से दमोह में जैन सेवादल बना, जिससे युवकों में समाज एवं राष्ट्रसेवा की भावना जागृत हुई। इसमें लाठी, लेजिम, तलवार, भाला चलाना सिखलाया जाता था।

1939 में त्रिपुरी कांग्रेस में केप्टिन ट्रेनिंग में आप त्रिपुरी में तीन हफ्ते रहे और फिर दमोह से 110 स्वयंसेवकों को लेकर तीन हफ्ते तक अधिवेशन में काम किया। इसमें बाहुबली व्यायामशाला और जैन सेवादल के ही अधिक सदस्य थे।

1942 के बम्बई कांग्रेस अधिवेशन से करो या मरो का नारा, साइक्लोस्टाइल मशीनें, तार काटने तथा पटरी उखाड़ने के औजार एवं पिस्तौलें आदि लेकर, दाढ़ी-मूंछ लगाकर, भेष बदलकर 'उस्ताद'जी दमोह आये और काम शुरू कर दिया। बुलेटिन छपने लगे, तार कटने लगे तथा रेल पटरियां उखाडी जाने लगीं। अनेक सेनानी गिरफ्तार हुए। नमक आन्दोलन में भी आपने भाग लिया था। 26-11-1980 को आपका निधन हो गया।

आ०-(1) म० प्र० स्व० सै०, भाग-2, पृष्ठ-85 (2) श्री संतोष सिंघई दमोह द्वारा प्रेषित परिचय। (3) प० जै० इ०, पृष्ठ 514 15

श्री प्रेमचंद कापड़िया

श्री प्रेमचंद कापड़िया, पुत्र-श्री फूलचंद का जन्म 1923 में दमोह (म० प्र०) में हुआ। आपके पूर्वज कपड़े का व्यापार करने के कारण 'कापड़िया' कहलाते थे। आपने प्रसिद्ध स्वाधीनता सेनानी श्री रघुवर प्रसाद मोदी के साथ भी वस्त्र-व्यापार किया था। अत: उन्हीं के विचारों के प्रभाव से आप स्वतंत्रता-प्रेमी बन गये और 1939 में त्रिपुरी कांग्रेस में स्वयंसेवक के रूप में तीन हफ्ते कार्य किया। आप कांग्रेस के हर कार्य में भाग लेते रहे।

8 अगस्त 1942 को भारत छोड़ो आन्दोलन के समय आप बम्बई में थे। वहां की आगजनी और लूटमारी

आपने स्वयं देखी, नेताओं को भेष बदलकर बम्बई छोड़ते देखा और टेलीफोन के तार काटते लोगों को आपने देखा था।

बम्बई से आवश्यक जानकारी और सामग्री लेकर आप बीना की तरफ से दमोह आये और दूसरे दिन जबलपुर जाने पर छोटे फुहारा के पास दिनांक 6-9-42 को खुफिया पुलिस द्वारा पकड़कर जेल भेज दिये गये। आवश्यक सामग्री पुलिस की नजर बचाकर आपने ससुराल भेज दी, सिर्फ बुलेटिन पकड़ा गया। 15-2-43 को आप जेल से मुक्त हुए।

मुक्त होने के पश्चात् आजाद हिन्द फौज के कमाण्डर के आदेश से आपने फौजी परेड सीखी और शान्ति सेना का गठन कर आन्दोलन का संचालन किया।

आ0- (1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-2, पृष्ठ-85
(2) श्री संतोष सिंघई दमोह द्वारा प्रेषित परिचय।

श्री प्रेमचंद जैन

श्री प्रेमचंद जैन, पुत्र-श्री उदयचंद का जन्म 1919 में जबलपुर (म0प्र0) में हुआ। 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में 20 दिन का कारावास आपने भोगा।

आ0- (1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-1, पृष्ठ-73
(2) स्व0 स0 ज0, पृष्ठ-136

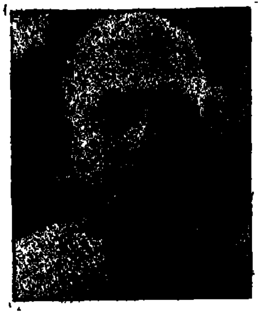
श्री प्रेमचंद जैन

जबलपुर (म0प्र0) के श्री प्रेमचंद जैन, पुत्र-श्री छविलाल ने 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में भाग लिया तथा कारावास की कठोर सजा भोगी।

आ0- (1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-1, पृष्ठ-73
(2) स्व0 स0 ज0, पृष्ठ-138

श्री प्रेमचंद जैन

बहुमुखी प्रतिभा के धनी, दृढ़ निश्चयी, परिश्रमी एवं लगनशील श्री प्रेमचंद जैन, पुत्र-श्री छोटे लाल जैन का जन्म 15 दिसम्बर 1916 को गाडरवारा, जिला-नरसिंहपुर (म0प्र0) में हुआ। आपके पूर्वज



विदिशा के समीप किसी ग्राम के निवासी थे, वे 'दमोडिया' उपनाम से प्रसिद्ध थे। 1857 की गदर के समय वे अपनी सम्पूर्ण सम्पत्ति बागी फौजियों को सौंपकर गाडरवारा आ बसे थे।

आपके राजनैतिक जीवन का प्रारम्भ 1928 में आपके विद्यार्थी जीवन से हुआ, जब आपने गाडरवारा से हावडा बम्बई मेल से निकल रहे पं0 जवाहरलाल नेहरू का स्टेशन पर माल्यार्पण द्वारा स्वागत किया। आपने अपनी अप्रकाशित 'आत्मकथा' में इसका विस्तार से वर्णन किया है। 1929 के आंदोलन में आपने गाडरवारा की राष्ट्रीय कांग्रेस के आमन्त्रण पर एक राष्ट्रीय गीत गाया, आन्दोलनकारियों की इस सभा पर पुलिस ने धावा बोल दिया, श्री जैन भी पुलिस के शिकंजे में फंस गये और अत्याचारों को हंसते-हंसते झेला। 1932 में विदेशी वस्त्रों की होली आपने जलाई, परिणामस्वरूप प्रथम बार गिरफ्तार हुए और बेतों की सजा पाई। पिटते-पिटते जब श्री जैन बेहोश हो गये तो पुलिस उन्हें घर के सामने डालकर चली गई तब आपकी आजी माँ ने सौगन्ध दिलाई- 'प्रण करो कि जब तक जीवित रहूंगा अंग्रेजों के खिलाफ अपना आन्दोलन जारी रखूंगा।' आजी मां की इस सौगन्ध को श्री जैन ने अन्त तक निभाया।

1939 में हुए चुनावों में आपने जोर-शोर से भाग लिया। पुलिस हर तरह से आपको व आपके परिवार वालों को परेशान करने लगी। प्रतिकूल परिस्थितियां देख आप बम्बई भाग गये और भूमिगत रहकर आन्दोलन जारी रखा। 1940-1941 के व्यक्तिगत सत्याग्रह में आपने भाग लिया और पदयात्रा करते हुए देवरी तक गये, जहाँ आपको गिरफ्तार कर सागर जेल भेजा गया, बाद में नागपुर जेल में स्थानान्तरित कर दिया गया। नागपुर जेल से मुक्त होने के बाद आप

महात्मा गांधी से भेंट करने सेवाग्राम गये, गांधी जी का मार्गदर्शन प्राप्त कर पुनः और अधिक दृढ़ता से राष्ट्रीय आन्दोलन में सक्रिय हो गये।

1942 के आन्दोलन में आप पुनः गिरफ्तार हुए और जबलपुर तथा छिन्दवाड़ा की जेलों में 1944 तक रखे गये। जबलपुर जेल तोड़ने का प्रयास करने के कारण ऐसी-ऐसी अमानुषिक यातनायें आपको सहनी पड़ीं, जिन्हें पढ़कर दिल दहल जाता है। इनका उल्लेख आपने अपनी आत्मकथा में किया है।

छिन्दवाडा जेल से छूटने के बाद स्थानीय गोलगंज के निवासियों ने आपका भावभीना स्वागत किया, जिससे अभिभूत होकर आप छिन्दवाड़ा में ही बस गये। राजनैतिक गतिविधियों के कारण आपको आर्थिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा, फिर भी आप निराश नहीं हुए।

आजादी के बाद श्री जैन छिन्दवाड़ा नगरपालिका के अनेक वर्षों तक उपाध्यक्ष रहे। आपके कार्यकाल में नगर ने चहुँमुखी प्रगति की है। आप छिन्दवाड़ा जिला स्वतंत्रता संग्राम सैनिक समिति के अध्यक्ष, अ0 भा0 दिगम्बर जैन महासभा के अध्यक्ष (1974), प्रान्तीय कांग्रेस कार्यकारिणी के सदस्य आदि विभिन्न पदों पर रहे।

1983 में आप पक्षाघात के शिकार हुए, इससे पूर्व चार बार दिल का दौरा पड़ चुका था। अपनी उत्कट जिजीविषा से आप इस अवस्था में भी सक्रिय रहे। 13 जुलाई 1988 को आपका देहावसान हो गया।

आ0- (1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-1, पृष्ठ-10 (2) हस्तलिखित आत्मकथा (3) स्वा0 आन्दोलन में छिन्दवाड़ा जिले का योगदान (टंकित शोध-प्रबन्ध) पृष्ठ 300-301 (4) पुत्र श्री धन्यकुमार गोयल द्वारा प्रेषित परिचय आदि।

श्री प्रेमचंद जैन

श्री प्रेमचंद जैन का जन्म 1930 में ग्राम चन्दला, तत्कालीन चरखारी राज्य, वर्तमान जिला- छतरपुर (म0प्र0) में हुआ। आपके पिता का नाम श्री नाथूराम



जैन था। आपने चरखारी राज्य प्रजामंडल द्वारा चलाये गये आंदोलन में 1946 से 1948 तक सक्रिय भाग लिया। आपके खिलाफ 1946 में चरखारी राज्य शासन द्वारा गिरफ्तारी के लिये वारंट जारी किया गया था। पार्टी के नेताओं के निर्देश पर श्री जैन गिरफ्तार न होकर भूमिगत हो गये और 'चरखारी राज्य प्रजामंडल' द्वारा उत्तरदायी शासन हेतु चलाये जा रहे सत्याग्रह आंदोलन का कार्य किया। भूमिगत आंदोलन चलाते समय अनेक यातनायें सहनी पड़ीं, गांव-गांव जाकर सत्याग्रहियों को चरखारी भेजते रहे ताकि आंदोलन की डोर टूटने न पाये। शासन से आपको स्वतंत्रता सेनानी का सम्मान मिला है।

आ0-(1) श्री सुरेन्द्र कुमार, छतरपुर द्वारा भेजी गई छतरपुर जिले के स्वतंत्रता सेनानियों की सूची (2) स्व0 प0

श्री प्रेमचंद जैन

जबलपुर (म0प्र0) के श्री प्रेमचंद जैन, पुत्र-श्री मुन्नालाल ने 1931 के आन्दोलन में भाग लिया तथा 3 माह के कारावास एवं 25 रुपये के अर्थदण्ड की सजा पाई।

आ0- (1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-1, पृष्ठ-73 (2) स्व0 स0 ज0, पृष्ठ-136

श्री प्रेमचंद जैन

जबलपुर (म0प्र0) के श्री प्रेमचंद जैन, पुत्र-श्री लालचंद जैन को 1932 के आन्दोलन में भाग लेने के कारण 6 माह के कारावास तथा 50 रु0 के अर्थदण्ड की सजा दी गयी थी।

आधार (1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-1, पृष्ठ-74 (2) स्व0 स0 ज0, पृष्ठ-138

श्री प्रेमचंद जैन

जैनदर्शन और राजनीति दोनों में निष्णात श्री प्रेमचंद जैन, पुत्र-श्री लोकमन जैन का जन्म

15-3-1915 को जबलपुर (म0प्र0) में हुआ। आप 1932 में कांग्रेस के डिक्टेटर बने थे अत: जुलूस निकालने में पकड़े गये और 9 माह की सजा तथा 50 रु0 जुर्माना हुआ था। 1942 में पुन: पकड़े गये तथा डिटेन्शन में जबलपुर सेंट्रल जेल में छ: माह रहे। बाद में आप साम्यवादी विचारधारा के हो गये थे। आपकी वक्तृत्व कला अनुपम थी। जीवन के अन्तिम 8-10 वर्षों में आप जैनधर्म के अच्छे विद्वान् हो गये थे। आपके शास्त्र प्रवचन बड़े लोकप्रिय होने लगे थे। 1988 के आसपास आपका निधन हो गया।

आ0- (1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-1, पृष्ठ-146 (2) स्व0 स0 ज0, पृष्ठ-136 (3) सिंघई रतनचंद जी द्वारा प्रेषित विवरण।

श्री प्रेमसुख झांझरिया

इन्दौर (म0 प्र0) के श्री प्रेमसुख झांझरिया, पुत्र-श्री पन्नालाल झांझरिया ने 1942 के स्वाधीनता संग्राम में सक्रियता से भाग लिया, फलत: 21 दिन इन्दौर जेल में रहे। आपके अन्य दो भाइयों ने भी जेल यात्रा की थी।

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-4, पृष्ठ-29

श्री प्यारचंद कासलीवाल

इन्दौर (म0 प्र0) के श्री प्यारचंद कासलीवाल, पुत्र-श्री गुलाबचंद कासलीवाल ने भारत छोड़ो आन्दोलन में भाग लिया था। आप सक्रिय कार्यकर्ता थे। म0प्र0 शासन ने आपको सम्मानित किया है।

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-4, पृष्ठ-55

श्री फकीरचंद जैन उर्फ फणीन्द्रकुमार जैन

अंग्रेजों के लिये सचमुच ही फणीन्द्र (नाग) सिद्ध हुये, सनावद (म0प्र0) के श्री फकीर चंद जैन उर्फ फणीन्द्रकुमार जैन, पुत्र-श्री दशरथ का जन्म 19 अप्रैल 1923 को हुआ। मैट्रिक में अध्ययन के समय 1938 से ही आप स्वतंत्रता आन्दोलन में सक्रिय भाग लेने लगे। 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में भाग लेने के कारण 4 माह 2 दिनों का कारावास आपको भोगना पड़ा।

आ0- (1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-4, पृष्ठ-88 (2) जै0 स0 रा0 अ0, पृष्ठ-76

श्रीमती फूलकुँअरबाई चोरड़िया

श्रीमती फूलकुअरबाई चोरड़िया का जन्म 1914 में हुआ। अपने पति श्री माधोसिंह की प्रेरणा से आप राष्ट्रीय कार्यों में हिस्सा लेने लगी थीं। आंदोलनकारी महिलाओं में वैचारिक चेतना पैदा करने के लिए श्रीमती चोरड़िया का योगदान महत्त्वपूर्ण रहा है। नीमच में अनेक प्रदर्शनों की योजना श्रीमती चोरड़िया ही बनाती थीं। श्रीमती चोरड़िया ऐसी महिला रहीं जिन्हें वर्धा में गाँधीजी के सान्निध्य में रहने का अवसर मिला।

वे वर्धा से लौटने के बाद इन्दौर में स्वतंत्रता संग्राम से जुड़ीं, अंग्रेजों के विरुद्ध मोर्चा लेकर लाठियाँ खाईं, एक माह उन्नीस दिन जेल में रहकर यंत्रणा सही किन्तु हार न मानी। संयम, त्याग व तपस्या की प्रतिमूर्ति श्रीमती फूलकुँवर चोरड़िया का विवाह नीमच के स्वतंत्रता संग्राम के पितृपुरुष श्री नथमल चोरड़िया के पुत्र श्री माधोसिंह के साथ हुआ। मात्र 18 वर्ष की उम्र में ही ये विधवा हो गई थीं। तदन्तर नथमलजी चोरड़िया ने अपनी विधवा बहु को घुटनभरी जिन्दगी जीने के बजाय इनमें देशभक्ति की भावना जागृत की। जब वे 1930 के अजमेर आंदोलन में जेल में रहे तो उन्होंने अपनी पुत्रवधू को वर्धा के आश्रम में भेज दिया जहाँ एक वर्ष तक रहकर उन्होंने नई जिन्दगी की शुरुआत की।

वर्धा में आप जल्दी उठकर एक घंटा गाँधीजी के साथ प्रार्थना करती थीं। इसके बाद विभिन्न विषयों की शिक्षा दी जाती थी। 12 बजे से एक बजे का समय चरखा चलाने व सूत कातने के लिए अनिवार्य था। वर्धा में आटा पीसना, कपड़ा बुनना, शौचालय की

सफाई व अन्य छोटे-बड़े बुनियादी कामों में ड्यूटी लगाई जाती थी। श्रीमती फूलकुँवर चोरड़िया वर्धा में गाँधीजी के सान्निध्य में बीते समय को अपने जीवन की सर्वोत्तम उपलब्धि मानती हैं। यहीं से आपने रचनात्मक कार्यों में अपना झुकाव व्यक्त किया।

ज्ञातव्य है फूलकुँवर चोरड़िया का पूरा परिवार देश के लिए समर्पित था। नथमल जी तो महान् स्वतंत्रता सेनानी थे ही किन्तु उनके पुत्र केशरीमल चोरड़िया, शोभागसिंह चोरड़िया ने भी स्वतंत्रता आंदोलन में बढ़-चढ़कर भाग लिया। इनके श्वसुर नथमल जी इनके पति माधवसिंह की मृत्यु पर भी माफी माँग कर जेल से नहीं आए। इन सभी घटनाओं का फूलकुँवर पर गहरा प्रभाव पड़ा। फलत: स्वतंत्रता की भावना विकसित होने का अवसर वर्धा में इन्हें मिला। वर्धा से लौटकर आपने नीमच से 8 किमी दूर डूंगलावद गांव में अपने श्वसुर नथमल जी की इच्छानुसार जैन कन्या आश्रम खोला, यह कुछ समय तक चला पर नथमल जी की मृत्यु के उपरांत इसे बंद करना पड़ा। एक के बाद एक परिजनों की मृत्यु ने अपको गहरा आघात पहुँचाया पर इस साहसी महिला ने हार नहीं मानी। बापू का ध्येय इनके सामने था। श्री नथमल चोरड़िया के देहावसान के बाद आप इन्दौर चली गईं वहाँ से आपने इलाहाबाद से प्रथमा की परीक्षा उत्तीर्ण करके इन्दौर में 'महिला कला मंडल' की स्थापना की साथ ही बाल मंदिर, सिलाई, कढ़ाई, बुनाई की कक्षाएँ प्रारंभ की, इन कार्यों के संचालन में आपको पग-पग पर कठिनाईयों का सामना करना पड़ा पर हिम्मत न हारी। कितनी बेसहारा महिलाओं को आश्रय दिया, कितने ही को रोजगार उपलब्ध कराया। आपके मार्गदर्शन में अनेक बेसहारा-बेरोजगार महिलाओं ने स्वावलम्बन का गुण सीखा। वर्धा में जो रोल कस्तूरबा जी का था वही इन्दौर में फूलकुँवर बाई का था

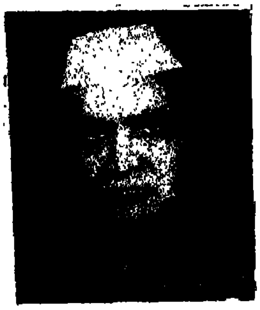
1942 में गांधीजी ने करो या मरो का नारा देकर भारत छोड़ो आंदोलन चलाया तो फूलकुँवरजी इन्दौर में सड़कों पर उतर आईं। कई जलसों में भाग लिया, अंग्रेजों ने आपको जेल में बंद कर दिया, वहां पर भी आपने विरोध किया। जेल में आपको प्रसिद्ध गाँधीवादी नेता कन्हैयालाल खादीवाला, बैजनाथ महोदय, हरिभाऊ उपाध्याय, रुक्मणी देवी, भागीरथी देवी आदि का सान्निध्य प्राप्त रहा था। ज्ञात रहे फूलकुँवरजी को सेठ जमनालाल बजाज का विशेष स्नेह प्राप्त था, नीमच आकर बगैर लाभ-लोभ या पद-लिप्सा के फूलकुँवरजी ने कांग्रेस के लिए कार्य करते हुए स्व0 सीतारामजी जाजू व रघुनंदन प्रसाद वर्मा के चुनाव में सक्रिय भूमिका निभाई। जैन समाज आपकी अमूल्य सेवाओं का ऋणी है। स्थानकवासी जैन महिला संघ की आप अध्यक्षा रहीं साथ ही महिला मंडल की कोषाध्यक्ष का पदभार वहन किया।

नीमच में भी फूलकुँवरजी ने रचनात्मक कार्य किए, श्रीमती चोरड़िया सादा जीवन उच्च विचार में आस्था रखती हैं। युवाओं के प्रति उनका संदेश था कि 'वे बगैर किसी लाभ-लोभ के देश की सेवा करें।' बुनियादी प्रशिक्षण ही उनकी नजर में एकमात्र बेरोजगारी का समाधान था। लड़कियों की फैशनपरस्ती की वे विरोधी थीं।

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-4, पृष्ठ-216 (2) स्व0 स0 म0, पृष्ठ-97 (3) नवभारत, इन्दौर, 18-9-1997

श्री फूलचंद (गोयल) अग्रवाल जैन

भिण्ड (म0प्र0) के श्री फूलचंद लोहिया (गोयल) अग्रवाल जैन का परिवार मूलत: शिवपुरी जिले के मगरौनी कस्बे का है। उनके बाबा नाथूराम मगरौनी में ही रहते थे। किन्तु उनके पिता बट्टोमल गोयल व्यवसाय के सिलसिले में भिण्ड आ बसे। वहीं पुराना गुरहाई मौहल्ला में श्री फूलचंद लोहिया का 1903 में जन्म हुआ।



श्री लोहिया ने हैदराबाद में 1922 में महात्मा गांधी के आशीर्वाद से चलाये जा रहे सत्याग्रह में पूर्ण रूप से सहयोग दिया था। 1928 में महात्मा गांधी पड़ौसी जिला इटावा में आमसभा करने आये तो श्री गोयल हरिकिशन जाधव के साथ वहां गए।

यह लोहिया जी के राजनैतिक जीवन का भी शैशवकाल था। राजनीति की विधिवत् दीक्षा 1936 में गोपीकृष्ण विजयवर्गीय ने भिण्ड आकर दी। उन्होंने पहले श्री जैन को 'गांधीधर्म' में दीक्षित किया तदुपरान्त उन्हें ग्वालियर राज्य सार्वजनिक सभा का सदस्य बना दिया गया। यह भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का ही एक संगठन था। सभा के सम्मेलन ग्वालियर, शिवपुरी, बालाजी, मिहोना एवं भिण्ड में आयोजित किए गए। इनमें डॉ0 पट्टाभिसीतारमैया, कृष्णदत्त पालीवाल, विद्यावती राठोर, आचार्य नरेन्द्र देव, बृजलाल वियाणी व महादेव देसाई मुख्य अतिथि के रूप में पधारे थे और फूलचंद लोहिया इन सबमें मौजूद रहे।

1942 में महात्मागांधी ने 'करो या मरो' के साथ 'अंग्रेजो भारत छोड़ो' का नारा दिया। लोहिया जी के लघुभ्राता संपतराम लोहिया, रघुवीर सिंह कुशवाह व सूबालाल मिहोना ने रेल पटरियां उखाड़कर असहयोग आन्दोलन में जान फूंकी। फूलचंद जी ने इन तीनों की ओर से लम्बे समय तक कानूनी लड़ाई लड़ी और फांसी के फन्दे से बचाया। 1942 में आपने शराब बन्दी को लेकर धरना दिया।

बटेश्वरी दयाल शर्मा तथा आपको पुलिस ने पकड़ लिया। पुलिसिया उत्पीड़न से लोहिया जी की हालत खराब हो गई। एस0पी0पुनू सिंह ने लोहिया जी को रिहा तो कर दिया लेकिन घर में ही नजरबंद कर दिया।

आपने आजादी की लड़ाई के दौरान जबकि इस अंचल में कोई अखबार नहीं था, अंग्रेजों के खिलाफ नियमित साइक्लोस्टाइल पर्चे बांटे जिनमें अंग्रेजों की खिलाफत होती थी।

लोहिया जी भदावर प्रांतिक जैन सभा व दिगम्बर जैन वीर सेवा मंडल के अध्यक्ष, सहकारी बैंक के संचालक, नगरपालिका पार्षद तथा कांग्रेस कमेटी के कार्यकारी अध्यक्ष भी रहे। 13-3-1996 को लोहिया जी का देहावसान हो गया।

आ0- (1) स्व0 प0 (2) पुत्र आनन्द गोयल द्वारा प्रेषित परिचय (3) पेंशन आदि के अनेक प्रमाणपत्र

श्री फूलचंद जैन

21 मार्च 1911 को ग्राम-बोरिया, तहसील-पाटन, जिला-जबलपुर (म0प्र0) के श्री कस्तूरचंद जैन के घर एक फूल खिला बाद में उसका नाम ही 'फूलचंद' पड़ गया। फूलचंद ने अपने नाम को फूल सा ही महकाया । फूलचंद जी ने राष्ट्रीय जागरण काल के प्रारम्भ से ही आजादी के लिए साधना करते हुए त्याग का मार्ग अपनाया।

श्री जैन ग्राम की प्राथमिक शाला से उत्तीर्ण होकर हितकारिणी विद्यालय जबलपुर में प्रविष्ट हुए। अध्ययन के दौरान ही स्वतंत्रता संग्राम के नेता सेठ गोविन्ददास एवं पं0 द्वारकाप्रसाद मिश्र के सम्पर्क में आये। 1930 की 6 अप्रैल को जबलपुर के इतिहास में देशभक्तों का जो अभूतपूर्व जुलूस रानी दुर्गावती की समाधि (बारहा) पर गया और जिसमें भारत की स्वतंत्रता के लिये प्रतिज्ञा की गयी, उसमें श्री फूलचंद भी सम्मिलित थे। इसके उपरान्त आपने जंगल सत्याग्रह में भाग लिया और 5 माह का कारावास पाया। केन्द्रीय कारागार जबलपुर में दिनांक 30-8-1930 से 11-2-1931 तक कैद में रहे। 'रणभेरी', 'रानी झांसी', 'राजगुरु सुखदेव, भगतसिंह' जैसे क्रांतिकारी साहित्य को प्रचारित करना आपका कार्य हो गया।

'भारत में अंग्रेजी राज' पुस्तक का प्रचार तथा 'जो शासन इतने जुल्म करे उससे क्या नाता है' शीर्षक वाली पुस्तिका का प्रचार करने पर आपको एक वर्ष का कारावास मिला, किन्तु गांधी-इरविन समझौते के कारण शीघ्र मुक्त हो गये। राष्ट्रीय कार्यों के सिलसिले में आप घूमते हुए बम्बई पहुंचे, जहाँ 1942 की अगस्त क्रांति में कार्य करते हुए दिनांक 10-8-1942 को गिरफ्तार हुए, आपको 5 माह के कारावास का दण्ड मिला, जो आपने थाना जिला कारागृह में भोगा। जेल से मुक्त होने पर आप राष्ट्रीय गीतों का प्रचार करते रहे। बाद में आप बम्बई प्रवासी हो गये और वहाँ कुटीर उद्योगों का प्रचार-प्रसार करने लगे।

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-1, पृष्ठ-75
(2) स्व0 स0 पा0, पृष्ठ-108

श्री फूलचंद जैन

पिपरोध (कटनी), जिला-जबलपुर (म0प्र0) के श्री फूलचंद जैन, पुत्र-श्री दमड़ीलाल ने 1930 के जंगल सत्याग्रह में 3 माह का कारावास तथा 20 रुपये का अर्थदण्ड भोगा।

आ0- (1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-1, पृष्ठ-75
(2) जै0 स0 रा0 अ0

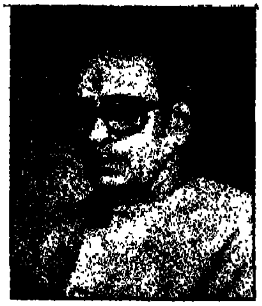
श्री फूलचंद जैन

वारासिवनी, जिला-बालाघाट (म0प्र0) के श्री फूलचंद जैन, पुत्र-श्री पन्नालाल 1942 के आन्दोलन में 22 अगस्त को गिरफ्तार कर लिए गये थे। आप 15 सितम्बर 42 तक नजरबन्दी में रहे।

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-1, पृष्ठ-185

श्री फूलचंद जैन 'मधुर'

'मधुर' उपनाम से हिन्दी साहित्य की 'गीति' विधा को समृद्ध करने वाले, अपनी राष्ट्रीय कविताओं से नवयुवकों में नवस्फूर्ति का संचार करने वाले तथा 'राष्ट्रीय सेवा योजना' व 'लोक अदालत' जैसे



कार्यक्रमों का सुझाव देने वाले श्री फूलचंद जैन 'मधुर' सागर (म0 प्र0) का जन्म 6 अक्टूबर 1922 को चौधरी श्री रामचरण लाल जैन के यहाँ हुआ। श्री रामचरण लाल साधारण आर्थिक स्थिति के होते हुए भी प्रतिष्ठित सामाजिक कार्यकर्ता थे, आप श्री दि0 जैन महिलाश्रम सागर के संस्थापक मंत्री थे तथा स्पष्टवक्ता के रूप में प्रख्यात थे।

'आजादी के आन्दोलन में आप कैसे कूद पड़े?' मेरे यह पूछने पर मधुर जी उन दिनों की संजोयी स्मृतियों को ताजा करते हुए बोले- 'उन दिनों के छोटे-छोटे बालकों का खेल, झंडा लेकर जुलूस निकालना, नारे लगाना, सभाओं जैसे दृश्य बनाना आदि बन गया था। अत: बचपन से ही राष्ट्रीय भावना के संस्कार मुझ में पड़े। प्राइमरी उत्तीर्ण कर मैं मिडिल में जब भर्ती हुआ तब वहाँ के कला के शिक्षक स्वामी कृष्णानन्द जी अवसर मिलते ही बालकों में राष्ट्रीय चेतना जगाने हेतु भारत के पुरातन गौरव की बलिदानी गाथायें तथा क्रान्तिकारियों की गाथायें सुनाया करते थे। उनसे मैं भी प्रभावित हुआ। स्वामी कृष्णानन्द ने स्वयं भी रा0आ0 में खुलकर भाग लिया था।

जब मैं सातवीं कक्षा का विद्यार्थी था, तब मैंने एक राष्ट्रीय गीत लिखा था, जो शाला की हस्तलिखित पत्रिका में प्रकाशित हुआ था। इस गीत पर मुझे खूब सराहना मिली, यत: शाला के हेडमास्टर श्री भावे तथा उक्त पत्रिका के सम्पादक श्री ज्वालाप्रसाद ज्योतिषी दोनों ही राष्ट्रीय विचारों के व्यक्ति थे। दुर्भाग्य कि अगले वर्ष ही श्री भावे सेवानिवृत हो गये। नये हेडमास्टर ने मुझे अपनी कक्षा में उत्तीर्ण होने पर भी अगली कक्षा में उक्त कविता के कारण प्रवेश नहीं दिया और मेरी पढ़ाई पर यहीं पूर्ण विराम लग गया।

जब मैं करेली, जिला-होशंगाबाद (अब, जिला-नरसिंहपुर) में अपनी दुकान सम्हाल रहा था, तब वहाँ के राष्ट्रीय कार्यकर्ताओं से मेरा सम्पर्क हो गया था। 14 अगस्त 1942 को चांवरपाठा की एक महिला सत्याग्रही ने बरेली में सत्याग्रह किया, उसे गिरफ्तार कर लिया गया तथा पुलिस के सिपाहियों, जिनकी संख्या मुश्किल से 10-12 थी, ने पूरी बस्ती में मेन रोड पर मार्च पास्ट किया तथा बस्ती वालों पर आतंक जमाने के लिए दुकानदारों को गंदी-गंदी गालियां दीं, पर किसी ने भी उसका प्रतिवाद नहीं किया। मुझे यह बात अपमानजनक लगी। मैंने अन्य साथियों के साथ मिलकर रात में सभा की, तय हुआ कि कल स्कूल के छात्रों के साथ जूलूस निकाला जाये। रात में ही हमारी दुकान पर पोस्टर बने और रात में ही पुलिस कोतवाली, सर्किल इंस्पेक्टर के निवास तथा बस्ती के प्रमुख 3-4 स्थानों पर चिपका दिये गये। प्रात: ही वहाँ के प्रमुख कार्यकर्ता श्री रामसिंह चौहान 'बेधड़क' को उनके घर से गिरफ्तार कर लिया गया।

मैंने अपने क्रांतिकारी साथियों व विद्यार्थियों के साथ जुलूस निकाला। पुलिस ने हमें तितर-बितर होने की चेतावनी दी, किन्तु विद्यार्थियों ने पत्थरों की बौछार शुरू कर दी। लाठीचार्ज हुआ, मैं अपने तीन साथियों के साथ गिरफ्तार कर लिया गया। यह वाकया 15 अगस्त 1942 का है। पहले हमें होशंगाबाद व नरसिंहपुर की जेलों में रखा गया बाद में 72 बंदियों के साथ जबलपुर जेल भेज दिया गया। जबलपुर जेल में रोटियों में कंकड़ों व सब्जी में घास-पात की बहुतायात थी, अत: सबके साथ भूख हड़ताल मैंने भी की, बैरकों में जाने से इंकार कर दिया, परिणामस्वरूप शहर से डी0एस0पी0 के नेतृत्व में पुलिस दस्ते ने पहुंचकर लाठी चार्ज किया और सभी को बैरकों में बन्द कर दिया। पांच दिन तक भूख हड़ताल चली, अन्त में शासन को हमारी मागें मानने को बाध्य होना पड़ा।

शासन ने माफी मांगने पर रिहाई का प्रस्ताव रखा पर मैंने मना कर दिया। मेरी माता जी के आश्वासन भरे पत्रों से मुझे उस अवस्था में बड़ा आत्मिक बल मिलता था। मैं 9 माह 10 दिन जेल में रहा। इस समय मेरे काका चौ0 भैरों प्रसाद को पुलिस ने इतना परेशान किया कि उन्हें उक्त करेली की दुकान बन्द कर सागर आ जाना पड़ा, परिवार की आर्थिक स्थिति बड़ी दयनीय हो गई।

जेल से मुक्त होने के बाद मैं राष्ट्रीय आन्दोलन में सक्रिय रहा, अपने राष्ट्रीय गीतों के द्वारा जन-जागरण करना मेरा प्रमुख कार्य था।'

आजादी के बाद 'मधुर' जी ने अनेक रचनात्मक सुझाव अपने लेखों के माध्यम से सरकार के पास भेजे। बिक्रीकर के सन्दर्भ में आपका एक लेख 'अमृत बाजार पत्रिका' के हिन्दी संस्करण 'अमृत पत्रिका' इलाहाबाद के 6 सितम्बर 1951 के अंक में छपा। आपने सुझाव दिया था कि 'टैक्स लगाना ही है तो उत्पादन शुल्क के रूप में लगाया जाये'। भोपाल के 'कर्त्तव्यदान'(साप्ताहिक) में पुन: यह लेख 23-10-57 को छपा। तत्कालीन म0प्र0 कांग्रेस अध्यक्ष ने इस पर एक कमेटी बनाई और कपड़ा, केरोसीन आदि कुछ वस्तुओं पर बिक्रीकर हटाकर उत्पादन शुल्क बढ़ाने का निर्णय लिया गया।

अपने एक अन्य लेख- 'चाचा नेहरू की वसीयत और उनका स्मारक' में मधुर जी ने राष्ट्रीय सेवा का रचनात्मक सुझाव दिया था। इस पर तत्कालीन शिक्षामंत्री श्री छागला का पत्र मधुर जी को मिला कि 'आपके सुझाव नोट कर लिये गये हैं।' मधुर जी के अनुसार- 'उक्त सुझावों का कुछ समय परीक्षण कराने के उपरान्त उसे महाविद्यालयीन छात्रों में 'राष्ट्रीय सेवा योजना' के रूप में लागू कर दिया गया।' इसी तरह एक अन्य लेख- 'मुकदमाबाजी देहाती जनता को एक

अभिशाप' में मधुर जी ने कैम्प अदालतों का सुझाव दिया था।

1956 में उ0प्र0 शासन, सूचना विभाग द्वारा आयोजित द्वितीय 'अ0भा0 प्रगतिगीत प्रतियोगिता' में आपके दो गीतों 'आराम हराम है' और 'नींव का पत्थर' ने प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया था। लगभग 20 वर्ष पूर्व पुलिस ट्रेनिंग कालेज, सागर में पुलिस के कर्तव्यों की ओर ध्यान दिलाने वाला जो गीत आपने गाया था आज वह गीत अकादमी के उत्तीर्ण स्नातकों द्वारा वार्षिक परेड में गाया जाता है।

'नई दिशा नये कदम' तथा 'अमृत बरस गया' ये दो राष्ट्रीय कविता संग्रह आपके प्रकाशित हैं। राजुल पर आधारित खाण्डकाव्य 'अपरिणीता' धारावाहिक रूप में छप रहा है। अक्टू0 2000 में आपका निधन हो गया।

आ0-(1) आ0 दी0, पृष्ठ-19 (2) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-2, पृष्ठ-42 (3) अनेक कवितायें, प्रशंसापत्र आदि (4) स्व0 प0 (5) सा0

श्री फूलचंद पोरवाल

नाथद्वारा (राजस्थान) कांग्रेस के अध्यक्ष रहे श्री फूलचंद पोरवाल, पुत्र-श्री नाथूलाल का जन्म 1909 में हुआ। आपने 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में भाग लिया और उदयपुर सेन्ट्रल जेल में छह माह नजरबंद रहे।

आ0-(1) रा0 स्व0 से0, पृष्ठ-497

श्री फूलचंद बाफना

राजस्थान विधानसभा के सदस्य रहे श्री फूलचंद बाफना का जन्म 1915 में पाली (राज0) जिले के सादडी कस्बे में एक ओसवाल जैन परिवार में हुआ। उनकी शिक्षा सादडी और जोधपुर में हुई। जोधपुर में 'मारवाड़ लोक परिषद्' की स्थापना होने पर वे उससे जुड़े गये और सादड़ी आदि अनेक क्षेत्रों में परिषद् की स्थापना की। 1940 में परिषद् के पहले सत्याग्रह में बाफना जी ने सक्रियता से भाग लिया। 1942 में जब परिषद् ने 'जिम्मेवार हुकूमत आन्दोलन' चलाया तब आपको सक्रिय गतिविधियों के कारण, गिरफ्तार कर लिया गया और दो वर्ष की सजा दी गई। 1944 में जेल से छूटने के बाद आप और अधिक सक्रिय हो गये तथा परिषद् के प्रधानमंत्री निर्वाचित हुए। विशाल राजस्थान के निर्माण के समय भी आप परिषद् के प्रधानमंत्री थे, अत: पहले मन्त्रिमंडल में आपने 2 वर्ष तक स्वायत्त शासन मंत्री का कार्य कुशलता पूर्वक सम्हाला।

1951 के बाद आप भूदान और सर्वोदय की ओर झुके। श्री सिद्धराज ढढ्ढा के नेतृत्व में भी आपने कार्य किया। 1967 में आप स्वतंत्र पार्टी के सहयोग से राजस्थान विधानसभा के लिए चुने गये।

आ0-(1) रा0 स्व0 से0, पृष्ठ-846

डॉ० फूलचंद भदौरा

श्री फूलचंद भदौरा, पुत्र-श्री धर्मदास भदौरा का जन्म टीकमगढ़ (म0प्र0) में 1922 में हुआ। मैट्रिक तक शिक्षा प्राप्त कर आप राष्ट्रीय आन्दोलन से जुड़ गये। अपना परिचय देते हुए आपने लिखा है-



'1941 के व्यक्तिगत सत्याग्रह से प्रभावित होकर राजनीति में आया और 'ओरछा सेवा संघ' (स्थानीय कांग्रेस) का सदस्य बना। कुछ समय बाद नगर व राज्य ओरछा सेवा संघ का मंत्री बनाया गया। शोषित पीड़ित तबकों के प्रति विशेष रुझान के कारण हरिजन सेवक संघ का राज्यमंत्री बनाया गया। नगरपालिका परिषद् के हरिजन कर्मचारियों की मांगों हेतु कई बार हड़तालें कराईं व भूमिगत रहकर इन हड़तालों को सफल कराया। एक बार तो 6 दिन की भूख हड़ताल करना पड़ी और

जब दो दिन मुंह से लगातार खून आया तब समझौता हुआ। मैं 1943 से भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी का सदस्य हूँ और उसके साथ आज भी हूँ। हरिजन हड़ताल के समय 7 फरवरी 1947 को ओरछा राज्य कम्युनिस्ट पार्टी गैर कानूनी करार कर दी गई और मैं अन्य साथियों के साथ जेल में नजरबंद कर दिया गया। परन्तु जन आंदोलन व हरिजनों की बहादुरी के कारण 14 फरवरी 47 को हम लोग जेल से रिहा हुये। 1946-47 में हुये साम्प्रदायिक दंगों की हवा टीकमगढ़ में आई परन्तु मैंने अन्य साथियों के साथ मिलकर जिले में जो शांति स्थापित की वह आज तक कायम है। 1946 में विद्यार्थियों की हड़ताल कराने में सक्रिय तौर पर भाग लेने पर जेल में भेजा गया और 19 दिन हवालात में रहने के बाद डेढ़ माह की सजा व 50/- रुपया जुर्माना तथा जुर्माना न देने पर एक माह की सजा और काटी।'

भदौरा जी कम्युनिस्ट आंदोलन से जुड़े रहे हैं और इस कारण आजादी के बाद भी उन्हें कई बार जेल जाना पड़ा। 1972 में दिल्ली में ताम्रपत्र लेने आने पर आपने तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी से बुन्देलखण्ड प्रान्त के संदर्भ में आंकड़े प्रस्तुत करते हुए पृथक् बुंदेलखण्ड राज्य की मांग की थी। आपने महामहिम राष्ट्रपति व्ही0 व्ही0 गिरि से टीकमगढ़ के अमर शहीद कामरेड़ नारायणदास खरे का स्मारक बनाने हेतु भी निवेदन किया था।

टीकमगढ़ की लगभग दो दर्जन संस्थाओं से जुड़े भदौरा जी योग और प्राकृतिक चिकित्सा में गहन आस्था रखते हैं। वे कहते है– 'विगत 59 वर्ष से मैंने किसी दवा का प्रयोग नहीं किया है। प्राकृतिक चिकित्सा और योग की क्रियाओं द्वारा स्वस्थ हूँ।' टीकमगढ़ नगर में एक प्राकृतिक चिकित्सालय 15 वर्षों तक आपने चलाया और अब उसे नगरपालिका को सौंप दिया है।

संतोषस्वभावी भदौराजी एक योगाभ्यास केन्द्र चलाते हैं। सम्प्रति आप टीकमगढ़ में एक वृहद् योग केन्द्र की स्थापना के उपक्रम में लगे हुए हैं।

आ0- (1) वि0 स्व0 स0 इ0, पृष्ठ-90, 124, 183, 444 (2) दैनिक भास्कर, भोपाल 15-9-1972 (3) स्व0 प0

श्री फूलचंद वमोरहा

'वमोरहा' उपनाम से प्रसिद्ध गोटेगांव, जिला-नरसिंहपुर (म0प्र0) के श्री फूलंचद वमोरहा

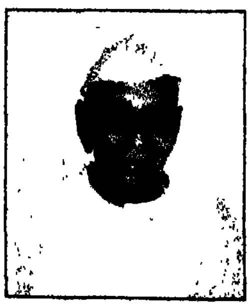


पुत्र-श्री डालचंद का जन्म 1912 में हुआ। आप त्रिपुरी कांग्रेस अधिवेशन में स्वयंसेवक बनकर गये थे। 1940 के व्यक्तिगत सत्याग्रह में आपने दो बार जेल यात्रा की। आप गोटेगांव से झांसी तक अनक आन्दोलनकारियों (जिनमें अधिकांश जैन थे) के साथ पैदल गये थे। झांसी में आप गिरफ्तार हुए थे। आपने सागर, होशंगाबाद, झांसी एवं जबलपुर जेलों में सजायें पूरी की थीं।

आ0- (1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-1, पृष्ठ-146 (2) जै0 स0 रा0 अ0

पं० फूलचंद सिद्धान्ताचार्य

20वीं शताब्दी के दिगम्बर जैन विद्वानों में अग्रगण्य श्रद्धेय पं0 फूलचंद सिद्धान्ताचार्य का जन्म



11 अप्रैल 1901 को ग्राम-सिलावन, जिला-ललितपुर (उ0प्र0) में हुआ। आपके पिता का नाम श्री सिंघई दरयाव लाल था। आर्थिक रूप से कठिन परिस्थितियों में जीवन की विषमताओं को झेलते हुए पूज्य पं0 जी ने जैन दर्शन रूपी आत्मज्ञान की जिन ऊँचाईयों को प्राप्त किया,

उसका दूसरा उदाहरण दुर्लभ है। वे अभिनन्दनीय और अभिवन्दनीय ही नहीं, अनुकरणीय भी हैं। लगभग 91 वर्ष के जीवन काल में उन्होंने जैन दर्शन व साहित्य की अनुपम सेवा की तथा 60 पुस्तकों/ग्रन्थों का प्रणयन/सम्पादन/अनुवाद किया।

अनेक सामाजिक आन्दोलनों के जनक पण्डित जी ने खजुरिया, इन्दौर, सादूमल, मुरैना आदि के प्रसिद्ध जैन विद्यालयों में शिक्षा पाई। दस्सा पूजा अधिकार, हरिजन मंदिर प्रवेश, गजरथ महोत्सवों में धर्म के नाम पर किये जा रहे अपव्यय का विरोध आदि उनके सामाजिक आन्दोलन थे।

पं0 जी का राजनैतिक जीवन 1920 से शुरू हुआ, जब वे सादूमल में विद्यार्थी थे। वहां वे ग्रामीणों को एकत्र कर भाषण देने लगे, अंग्रेज अफसरों की ओर से विद्यालय बन्द कराने की नौबत आ गई। अत: आपने 'मुट्ठी फण्ड' की स्थापना की और अनाज इकट्ठा कर उसे गरीबों में वितरित करते रहने का कार्य प्रारम्भ किया।

1928 के लगभग आप बनारस से बीना (म0प्र0) आ गये और कांग्रेस के आन्दोलनों में सक्रिय सहयोग देने लगे। आपने विदेशी वस्त्रों का बहिष्कार किया, इसके लिए आपने एक युक्ति यह निकाली कि - 'मंदिर में देशी वस्त्रों को रखवा देते हैं, जो भी विदेशी साड़ी पहिनकर आयें यहां उतार कर देशी साड़ी पहिन जायें।'

आप बीना, सागर, सोलापुर तथा अमरावती जिला कांग्रेस के पदाधिकारी रहे। जब आपके साले श्री गोकुलचंद को सत्याग्रह के कारण ललितपुर जेल भेज दिया गया और मुकदमें की सुनवाई हेतु आप बीना से ललितपुर गये तब आपको भी वहाँ गिरफ्तार कर लिया गया। आपको 1 माह की कैद तथा 100/- रु0 जुर्माना किया गया। आप कच्ची कैद में 19 दिन तथा झांसी (उ0प्र0) जेल में 1 माह 11 दिन रहे।

आपके जेल जीवन की एक घटना है। झांसी जेल में रहते हुए आप बीमार हो गये, अत: जेल से अस्पताल भेज दिया गया, वहाँ खाने में दूध व दलिया दिया जाता था। दूध में मिलावट होने से आप उसे पी नहीं पाते थे तथा बगल में पड़े नाई को दे देते थे, अत: आप भूख से पीड़ित रहने लगे। नाई से जब यह दशा नहीं देखी गई तो वह किसी अफसर की सेवा करके दो रोटी व करेले की सब्जी ले आया और आपसे कहा-'आपके लिए ही हम लाये हैं। आप खा लो।' उस अवस्था में भी आपने मना करते हुए कहा- 'तुमने इनको प्राप्त करने में श्रम किया है-- इसलिए तुम ही इन्हें खाओ।' अन्त में वह रोने लगा, तब दोनों ने बांटकर वह खाना खाया। खाते हुए आपने कहा-- 'इस चहार दीवारी के भीतर तो हम-तुम भाई-भाई हैं, किन्तु जेल से बाहर जाने पर हम जैन और तुम नाई। फिर मैं तुम्हारे हाथ की नहीं खाऊँगा।' यह घटना 1941 की है।

इसके बाद आप बनारस चले गये और जैन सिद्धान्त के प्रौढ़ और प्रसिद्ध ग्रन्थ कषायपाहुड़ के सम्पादन में लग गये। आजादी के बाद आपने राजनैतिक जीवन छोड़ दिया और पूर्ण रूप से साहित्य-साधना में लग गये।

प्रसिद्ध पत्रकार डॉ0 नेमीचंद जैन, इंदौर को दिये अपने एक इन्टरव्यू में आपने स्वयं स्वीकार किया है कि - 'मैं शुरू से क्रान्तिकारी हूँ।'

एक विदेशी विद्वान् ने जब आपसे प्रश्न किया कि-'जैन धर्म के साथ ही सभी धर्मों में हिंसा, झूठ, चोरी आदि को निषिद्ध बताया है, फिर ऐसी कौन सी बात है, जिससे जैन धर्म अन्य धर्मों से अलग समझा जाये।' आपने उत्तर दिया- 'व्यक्ति स्वातंत्र्य जैन धर्म का उद्देश्य है और स्वावलम्बन उसकी प्राप्ति का मार्ग है।'

पं0 जी की प्रसिद्ध और क्रान्तिकारी रचना 'वर्ण जाति और धर्म' भारतीय ज्ञानपीठ से प्रकाशित हुई थी। आपने अपने जीवन में अनेक संस्थाओं की स्थापना

की, जिनमें प्रमुख हैं, सन्मति जैन निकेतन, नरिया, वाराणसी, (1946) श्री गणेश वर्णी जैन ग्रन्थमाला, वाराणसी (1944), संस्थापक सदस्य श्री गणेश वर्णी दि0 जैन इंटर कालेज, ललितपुर (1946), श्री गणेश वर्णी दि0 जैन (शोध) संस्थान, वाराणसी (1971) आदि।

आपने 'शान्ति सिन्धु' (सोलापुर) और 'ज्ञानोदय' (वाराणसी) पत्रिकाओं का सम्पादन किया एवं 'जैन तत्त्वमीमांसा', 'जैन तत्त्व समीक्षा का समाधान', 'अकिञ्चितकर-एक अनुशीलन', 'परवार जाति का इतिहास' आदि ग्रन्थरत्न समाज को दिये।

पं0 जी के व्यक्तित्व और सामाजिक, धार्मिक तथा राष्ट्रीय क्षेत्र में उनके अवदान को इस तथ्य से रेखाङ्कित किया जा सकता है, कि पं0 जी के समकालीन स्व0 पं0 कैलाशचंद शास्त्री, स्व0 पं0 जगमोहन लाल शास्त्री एवं स्व0 पं0 जी रत्नत्रयी के नाम से विख्यात रहे हैं। स्व0 पं0 कैलाशचंद शास्त्री ने लिखा है– 'हम तो उन्हीं के अनुवादों को पढ़कर सिद्धान्त ग्रन्थों के ज्ञाता बने हैं।' श्री पं0 जगमोहन लाल जी के शब्दों में 'उम्र में तो वे हमसे चार माह बड़े हैं, परन्तु ज्ञान में तो सैकड़ों वर्ष बड़े हैं।'

भारतीय संविधान के निर्माता डॉ0 भीमराव अम्बेडकर बौद्ध धर्म अपनाने से पूर्व जैन धर्म स्वीकार करना चाहते थे। यह बात स्व0 पं0 जी ने अपने एक साक्षात्कार में बताई थी। यह साक्षात्कार हमने पं0 जी के हस्तिनापुर (उ0 प्र0) स्थित आवास पर जनवरी 1989 में लिया था। इसका कैसेट हमारे पास सुरक्षित है। इस अवसर पर श्री नरेन्द्र भंडारी एडवोकेट, सागर भी उपस्थित थे। पं0 जी ने कहा कि-'अम्बेडकर से हम और महेन्द्र कुमार न्यायाचार्य मिले थे। हम उनके पास गये, बातचीत के बाद हमने प्रश्न किया कि-''आपने बौद्ध धर्म क्यों स्वीकार किया, जैन धर्म स्वीकार क्यों नहीं किया।'' वे बोले-''जैनधर्म में जातिवाद आज मुख्य है। बौद्ध धर्म में जातिवाद की मुख्यता नहीं है। यदि हम जैन बनते और अपने अनुयायियों से कहते कि जैन बन जाओ तो ये जातिवाद आडे आ जाता। हमें बराबरी का दर्जा नहीं मिलता और हम अछूत के अछूत बने रह जाते। इसलिए हमने जैन धर्म को नहीं चुना है, बौद्ध धर्म चुना है, बौद्धधर्म में ये जातिवाद की प्रथा नहीं है। यह अवश्य है कि हमने बम्बई के पास बौद्ध केन्द्र स्थापित किया है, वहाँ पर जैन मंदिर आप बनवा दें तो हम उसको स्वीकार कर लेंगे।'' पं0 जी की महनीय सेवाओं से अभिभूत और उपकृत जैन समाज ने उन्हें 1985 में एक विशाल अभिनन्दन ग्रन्थ भेंटकर सम्मानित किया था। दिनांक 31 अगस्त 1991 को रुड़की में पं0 जी का निधन हो गया।

आ0-(1) जै0 स0 रा0 अ0, (2) र0 नी0, पृष्ठ-66 (3) पं0 फूलचंद शास्त्री अभिनन्दन ग्रन्थ (4) सा0 (5) प0 जै0 इ0

श्री बंगालीमल जैन

अपने साथी ही जिनके मुखविर बन गये, ऐसे आगरा (उ0प्र0) के श्री बंगालीमल जैन को 1942 में पुलिस ने नजरबंद किया था तथा तोड़-फोड़ आदि के मामलों में फँसाया था। इस केस में आपके अन्य तीन साथी मुखविर बन गये थे। बाद में जब अपराध प्रमाणित नहीं हो सका तो आप मुक्त कर दिये गये।

आ0- (1) जै0 स0 रा0 अं0 (2) उ0 प्र0, जै0 ध0, पृष्ठ-90

श्री बंशीधर वैसाखिया

एक बार जेल की जली, कच्ची, मोटी ज्वार की रोटी खाकर तमाम जिंदगी वैसी ही मोटी ज्वार की रोटी खाने का व्रत लेने वाले श्री बंशीधर वैसाखिया का जन्म 1878 में नरसिंहपुर (म0प्र0) में हुआ। आपके पूज्य पिता परमेश्वरदास वैसाखिया साधारण गृहस्थ थे। उस समय अंग्रेजी की चार क्लास पढ़ लेना भी बहुत समझा जाता था। वंशीधर जी इससे अधिक विद्यालाभ न कर सके। स्थानीय स्कूल में एक बार शिक्षक का

काम करने के पश्चात् आप बस्तर स्टेट पुलिस विभाग में भरती हो गये। वहाँ आप अपनी योग्यता व कुशलता के कारण अल्प समय में ही सिपाही के पद से सब इन्सपेक्टर हो गये। कुछ समय बाद आप तीर्थक्षेत्र कमेटी की तरफ से श्री मंदारगिरि जी के उद्धार के लिये वहां चले गये और आपने बड़ी ही योग्यता के साथ उस क्षेत्र को अधिकार में किया और सदैव के लिये जैन समाज को दिला दिया। इससे पहिले यह तीर्थ लुप्तप्राय: सा था और एक पाखंडी साधु उस पर अपना अधिकार जमाये हुए था। जो यात्रियों को बहुत परेशान करता था।

बाद में आप श्री सम्मेद शिखर जी की तेरहपंथी कोठी का कार्यभार, जो उस समय बड़ी दुरवस्था में था, संभालने चले गये। वहां का प्रबन्ध आपने बड़ी योग्यता व दक्षता के साथ किया। आपने वहां की धर्मशालाओं एवं मंदिरों का जीर्णोद्धार करवाया आपकी तीर्थ सेवा आज भी स्मरणीय है।

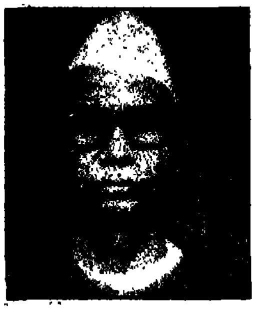
देश की पराधीनता को कोई कर्मठ पुरुष कैसे सहन कर सकता था। फिर बैसाखिया जी तो महाकर्मठ थे, वे असहयोग आंदोलन में कूद पड़े। नागपुर सत्याग्रह के अवसर पर आपको एक वर्ष की कठोर सजा हुई किन्तु आपके क्रियाकलापों को देखते हुए सरकार ने आपको कुछ माह ही जेल में रखकर छोड़ दिया। म0 प्र0 स्व0 सै0 के अनुसार झण्डा सत्याग्रह में भाग लेने के कारण आपने डेढ माह का कारावास नागपुर में भोगा था।

जेल से बाहर आने के बाद भी आप जेल जैसा भोजन करते रहे। आप कहा करते थे कि - 'यदि सरकार ने हमें छोड़ दिया तो क्या ? जब हम इस बात पर तुले हुए हैं तो फिर भी जेल जाना पड़ेगा।' इसलिए रूखी ज्वार की रोटी का ही भोजन करते रहे। सरकार ने पुन: आपको छ: माह की सख्त सजा दी जिसे आपने सहर्ष स्वीकार किया। धर्मनिष्ठ बैसाखिया जी का स्वभाव बड़ा ही मृदु एवं हंसमुख था।

आ0- (1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-1 पृष्ठ-148 (2) प0 जै0 इ0, पृष्ठ-444

पं० बंशीधर व्याकरणाचार्य

जैन दर्शन के उद्भट विद्वान् पं0 बंशीधर जी का जन्म भाद्र शुक्ला 7, वि0सं0 1962 (सन् 1905)



में हुआ। पिता का नाम श्री पं0 मुकुन्दीलाल और माता का नाम श्रीमती राधादेवी था। पिताजी उस क्षेत्र के माने हुए विद्वान्, पंडित, शास्त्रप्रतिलेखक और प्रतिष्ठाचार्य थे। समाज में जहाँ-कहीं जल-यात्रा, सिद्धचक्र विधान, पंचकल्याणक प्रतिष्ठा आदि धार्मिक कार्य होते थे उनमें उन्हें ससम्मान आमंत्रित किया जाता था। दशलक्षण (पर्युषण) पर्व में भी शास्त्र-वचनिका के लिए वे समाज के आमंत्रण पर जाते थे। उनके हाथ के लिखे हुए शास्त्र आज भी कई मंदिरों में उपलब्ध हैं।

बंशीधर जी जब तीन माह के थे, पिताजी को दैव ने उनसे छीन लिया। जैसे-तैसे माता जी शिशु का पालन-पोषण कर रही थीं, किन्तु 12 वर्ष की अवस्था में उनका भी साया पं0 जी पर से उठ गया। वे अभावों में पले-पुसे और आगे बढ़े।

पंडित बंशीधर जी का जन्मस्थान सोंरई है, जो बहुत पहले गढ़ाकोटा (सागर) म0प्र0 की जागीर थी और अब उत्तर प्रदेश के ललितपुर जिले का एक प्रख्यात ग्राम है। यह ग्राम 'जैन जगत के गांधी' नाम से विख्यात प्रसिद्ध संत श्री गणेशप्रसाद वर्णी (मुनि श्री 108 गणेशकीर्ति) की जन्मभूमि हंसेरा ग्राम (ललितपुर) से दो किलोमीटर पूर्व में अवस्थित है।

यह ग्राम है तो छोटा, लेकिन इसकी एक विशेषता है कि यह प्राच्य-विद्या, प्राकृत और संस्कृत विद्वानों की खान है। व्याकरणाचार्य जी, पं0 शोभारामजी

महोपदेशक, विद्याभूषण पं0 रामलाल जी प्रतिष्ठारत्न अशोकनगर, पं0 परमानन्द जी साहित्याचार्य बालाविश्राम आरा, पं0 बालचन्द्र जी सिद्धान्तशास्त्री (सिद्धान्त ग्रन्थों के सम्पादक-अनुवादक) हैदराबाद, पं0 पद्मचन्द्रजी शास्त्री, बड़ा मलहरा, डॉ0 पं0 दरबारीलाल कोठिया न्यायाचार्य, पं0 गुलझारीलाल जी न्यायतीर्थ, सागर, पं0 दुलीचन्द्र शास्त्री बीना अदि विद्वान् यहीं की देन हैं।

पंडित जी की प्राथमिक शिक्षा स्थानीय प्राईमरी स्कूल में कक्षा 4 तक हुई। चौथी कक्षा पास कर आपको पूज्य पं0 गणेशप्रसाद जी वर्णी अपने साथ वाराणसी ले गये। वहाँ स्याद्वाद जैन महाविद्यालय में उनकी छत्र-छाया में 11 वर्ष तक व्याकरण, साहित्य, दर्शन और सिद्धान्त का उच्च अध्ययन किया। आपने प्रथम श्रेणी में ही सभी विषयों में उत्तीर्णता प्राप्त की है। व्याकरणाचार्य परीक्षा में तो प्रावीण्य सूची में द्वितीय स्थान प्राप्त किया है।

1928 में आपका विवाह बीना में शाह मौजीलाल जी की सुपुत्री लक्ष्मीबाई के साथ सम्पन्न हुआ। पण्डित जी की धर्मपत्नी स्वभावत: उनकी समान-गुणधर्मा थीं। उनमें गाम्भीर्य, सहज स्नेह, वात्सल्य, उदारता, दयालुता, सहनशीलता, अक्रोध, अमान, अलोभ जैसे गुण विद्यमान थे। अस्वस्थ होने पर भी वे पण्डित जी की दिनचर्या और आतिथ्य में कभी शैथिल्य नहीं करती थीं। कुटुम्बियों और रिश्तेदारों के प्रति उनके हृदय में अगाध स्नेह एवं आदर रहा। यह दैव की विडम्बना है कि वे 58 वर्ष की आयु में ही कालकवलित हो गयीं। अपने पीछे वे तीन सुयोग्य पुत्रों तथा तीन सुयोग्य पुत्रियों के भरे-पूरे परिवार को छोड़ गईं।

स्वाधीनता संग्राम में पं0 जी का योगदान अविस्मरणीय है। जवानी की तरुणाई अभी प्रस्फुटित हो ही रही थी कि भारत माता के मुक्ति-संग्राम का बिगुल पूरे जोर से बज उठा। गृहस्थी के जिस आकर्षण से वह बनारस का अध्ययन छोड़ बीना आ गये थे, मातृभूमि पुकार के सामने वह आकर्षण भी अशक्त ही सिद्ध हुआ। पच्चीस-छब्बीस साल की युवावस्था में अपनों की सारी चिन्ता छोड़कर बंशीधर जी स्वतंत्रता-संग्राम में कूद पड़े। देश की चिन्ता अपनी सारी चिन्ताओं से ऊपर हो गई और मातृभूमि की पुकार के सामने घर गृहस्थी की सारी मनुहार बिखर कर रह गई। चाहे 1931 का असहयोग आन्दोलन हो या 1937 के एसेम्बली के चुनाव हों, 1941 का व्यक्तिगत सत्याग्रह हो या 1942 का भारत छोड़ो आन्दोलन हो, बंशीधर ने तन, मन और धन सब कुछ उस महायज्ञ में होम करते समय कोई संकोच नहीं किया। जैसी निष्ठा और समर्पण के साथ उन्होंने ज्ञान की आराधना की थी, वैसी ही निष्ठा और समर्पण के साथ मातृभूमि की सेवा में भी उन्होंने अपने आप को नियोजित कर दिया।

नगर कांग्रेस-कमेटी की अध्यक्षता से लेकर प्रान्तीय कांग्रेस-कमेटी की सदस्यता तक उन्हें जब, जहाँ, जो काम सौंपा गया उसे उन्होंने अपने व्यक्तिगत स्वार्थों से परे, एक अनोखी गरिमा के साथ निभाया। 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में पंडित बंशीधर जी की भूमिका इतनी स्पष्ट रही, उनका योगदान ऐसा अनुकरणीय रहा और उनका सेवा-संकल्प इतना दृढ़ रहा कि अपने ही साथियों में उदाहरण बनते चले गए। कितनों ने उन विषम परिस्थितियों में उनसे प्रेरणा प्राप्त की और कितने घरों में उनकी सहायता से मनोबल के दीप जलते रहे, इसकी कोई सूची न कभी बनी, और न बन सकेगी। जहाँ सेवक ही मौन-व्रती हो वहाँ सेवा-कार्यों का लेखा-जोखा हो भी कैसे सकता है। तथापि इस आन्दोलन में आपने म0प्र0 स्व0 सै0 के अनुसार 10 माह का कारावास भोगा था।

आज तो रिवाज बदल गए हैं। देशसेवा एक लाभजनक व्यापार बनकर रह गई है। परन्तु 1921 से 1946 तक के पच्चीस साल स्वाधीनता-संग्राम के

ऐसे साल थे, जब इस यज्ञ में आहुतियाँ तो थीं परन्तु जयकारे नहीं थे। समर्पित करने के लिए तो बहुत कुछ था, परन्तु उसके बदले में आत्म-संतोष ही एक मात्र उपलब्धि मानी जाती थी। सागर और नागपुर की जेलों में बिताया गया बंदी जीवन हो या अमरावती जेल में सही गई दुर्दम यातनाएँ, पंडित जी का अपराजेय व्यक्तित्व कहीं तनिक भी झुका नहीं। जेल की इन यात्राओं ने उन्हें 'बसुधैव कुटुम्बकम्' के नये पाठ पढ़ाये, छुआछूत और दहेज जैसी सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध जूझने का साहस और संकल्प प्रदान किया। यहीं से उनके व्यक्तित्व में एक नया निखार प्रारम्भ हुआ।

श्रद्धेय पं0जी के जीवन का एक चमकदार पहलू यह भी है कि उन्होंने स्वाधीनता-संग्राम की अपनी सेवाओं को भुनाने का कभी विचार तक नहीं किया। उस योगदान के उपलक्ष्य में किसी प्रतिफल के लिये वे अपने प्रमाण पत्र हाथ में लेकर कभी सत्ताधीशों के द्वारपर दण्डवत् करने नहीं गये। उन्होंने यह मान लिया कि स्वतंत्रता प्राप्ति के साथ ही वह लड़ाई समाप्त हो गई है, और यही सोचकर उन्होंने अपने आपको सेवा के दूसरे कार्यों में नियोजित कर लिया।

पूज्य पं0 जी की जैन साहित्य/ समाज सेवा अनुकरणीय है, भारतवर्षीय दिगम्बर जैन विद्वत्परिषद् के इतिहास में पंड़ित बंशीधर जी की अध्यक्षता का काल गरिमा के साथ अंकित है। गुरु गोपालदास बरैया का शताब्दी समारोह उसी बीच आयोजित हुआ और उसकी सफलता में पंडित जी का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा। श्री गणेशप्रसाद वर्णी जैन ग्रन्थमाला के मंत्री के नाते उन्होंने उस संस्था को निरन्तर आगे बढाने का प्रयास किया।

पं0 जी की मौलिक कृतियां उनके गहन चिन्तन को प्रकट करती हैं। बीसवीं सदी के विद्वानों में पं0 जी का स्थान अग्रगण्य है। 'खानिया तत्त्वचर्चा और उसकी समीक्षा' लिखकर उन्होंने आगम का विशुद्ध पक्ष सामने रखा है। 'जैन समाज में निश्चय और व्यवहार' उनकी बहुचर्चित कृति है। पं0 जी की अन्य पुस्तकें हैं– 'जैन दर्शन में कार्यकारणभाव और कारक व्यवस्था', 'पर्यायें क्रमबद्ध भी होती हैं और अक्रमबद्ध भी,' 'भाग्य और पुरुषार्थः एक नया अनुचिन्तन,' 'जैन तत्त्वमीमांसा की मीमांसा' आदि।

1990 में आपकी विशिष्ट सेवाओं का अभिनन्दन करने हेतु सागर (म0प्र0) में एक वृहत् अभिनन्दन ग्रन्थ भेंट कर आपको सम्मानित किया गया था। जीवन का अधिकांश भाग जैन-शासन की सेवा में लगाने के बाद 11 दिसम्बर 1996 को रात्रि 9-10 बजे बीना में शान्त परिणामों के साथ आपका निधन हो गया।

आ0- (1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-2, पृष्ठ-44 (2) आ0 दी0, पृ0-62 (3) पं0 जी के सुपुत्र श्री विभवकुमार द्वारा प्रेषित परिचय (4) बुकलेट, अभिनन्दन ग्रन्थ समर्पण समारोह, सागर, 19-3-1990 (5) प0 जै0 इ0, पृ0-527

श्री बंशीलाल जैन

ग्राम-बिलहरी (कटनी), जिला-जबलपुर (म0प्र0) के श्री बंशीलाल जैन, पुत्र-श्री दसईलाल ने 1930 के जंगल सत्याग्रह में भाग लिया तथा 3 माह का कारावास एवं 25 रु0 का अर्थदण्ड भोगा।

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-1, पृष्ठ-109

श्री बंशीलाल लुहाड़िया

जयपुर से लोकसभा सदस्य, अ0 भा0 स्वतंत्रता सेनानी संगठन, नई दिल्ली के सचिव, राजस्थान भूतपूर्व



सांसद संघ के संयोजक आदि पदों पर रहे श्री बंशीलाल लुहाड़िया का जन्म तत्कालीन जयपुर राज्य के नारायण ग्राम में 4 फरवरी 1910 को हुआ। आपके पिता श्री केशरलाल राष्ट्रीय विचाराधारा के व्यक्ति थे, वे उन दिनों बम्बई से अखबार मंगाकर पढ़ते/पढ़वाते थे। उनके राष्ट्रीय विचारों का प्रभाव

लुहाडिया जी पर पड़ना स्वाभाविक ही था। आरम्भिक शिक्षा गांव के पास सांभर कस्बे में समाप्त कर आप जयपुर आ गये। इस प्रकार विद्यार्थी जीवन में ही आप राजनीति में सक्रिय हो गये।

अपने जयपुर प्रवास के दौरान हमने श्रद्धेय लुहाडिया जी से उनके निवास पर श्री पी0सी0 जैन के साथ 7-11-96 को मुलाकात की। अपने विद्यार्थी जीवन में कालेज से निष्कासन की प्रसिद्ध घटना के सन्दर्भ में पूछे जाने पर लुहाड़िया जी ने बताया कि "विद्यार्थी जीवन से ही मुझे राष्ट्रीय आंदोलनों की गतिविधियों की जानकारी रखने में रुचि थी, हालांकि रियासतों में अंग्रेजों का पूरा दबदबा था, फिर भी हमारे विद्यार्थीकाल में कालेजों में कुछ प्रोफेसर ऐसे थे, जो विद्यार्थियों में राष्ट्रीय भावनाऐं भरा करते थे, इनमें प्रोफेसर वामनकर का नाम मुझे आज भी याद है। जब साइमन कमीशन हिन्दुस्तान आया और लाला लाजपतराय का देहान्त हो गया तब हमने एक शोकसभा का आयोजन रामनिवास बाग में किया, वहाँ विद्यार्थी इकट्ठे हुए और तय हुआ कि राम निवास बाग से चौपड़ तक एक जूलूस निकाला जाय।

इण्टरमीडिएट के बाद मैंने खादी पहनना प्रारम्भ कर दिया था। 1931 में मैं महाराजा कालेज, जयपुर में बी0ए0 फाइनल का छात्र था। प्रिन्सिपल अंग्रेज भक्त थे, उन्होंने हमें बुलाकर कहा कि– 'खादी की टोपी पहिन कर मत आना।' हमने कहा 'ऐसा नहीं' हो सकता, टोपी पहिन कर ही आवेंगे।' उन्हीं दिनों हमने एक मेमोरन्डम 'हिज हाईनेस' जयपुर को दिया, जिसमें जबावदार हुकूमत कायम करने की बात थी और भी अनेक मागें थीं। गांधी टोपी लगाने और इस प्रकार ज्ञापन देने के अपराध में मुझे और मेरे बड़े भाई पूनमचंद जी को कालेज से पृथक् कर दिया गया।"

लुहाड़िया जी सेठ जमनालाल बजाज की प्रेरणा से हिन्दुस्तान टाइम्स में पत्रकारिता का अध्ययन करने गये। पं0 हरिभाऊ जी से सम्पर्क होने पर आप 'सस्ता साहित्य मण्डल' अजमेर में 'त्यागभूमि' के सम्पादकीय विभाग में सह-सम्पादक बन गये।

अजमेर में ही प्रथम बार 1931 में आपने सत्याग्रह में भाग लिया। इस विषय में आपका कहना है कि - 'जहाँ तक याद पड़ता है सातवें नम्बर पर अजमेर मेरवाड़ा कौंसिल कांग्रेस कमेटी के डिक्टेटर के रूप में मैंने सत्याग्रह में भाग लिया था। .... नया बाजार, अजमेर में हमने विदेशी कपड़ों की होली जलाई, गिरफ्तार हुआ और मुकदमा चला, इस समय मेरी आयु 22-23 वर्ष की रही होगी....। मजिस्ट्रेट ने हमसे पूछा कि - 'तुमने कसूर किया है?' मैंने कहा कि 'कसूर तो आप कर रहे हैं।' उन्होंने कहा हम कैसे कर रहे हैं ? तो मैंने कहा- 'हम सत्याग्रह में भाग ले रहे हैं, देश को आजाद कराने के लिए लड़ रहे हैं, जब आप हमको सजा देंगे, तो ये कसूर तो आप कर रहे हैं।' ....इस प्रकार 24-2-1932 से 18-6-1932 तक की सजा आपने सेन्ट्रल जेल अजमेर में काटी।

1933-34 में आपने लखनऊ विश्वविद्यालय से एम0ए0, एल0एल0बी0 की परीक्षायें एक साथ उत्तीर्ण कीं और जयपुर में वकालत करने लगे, आप देशी राज्य लोकपरिषद् और जयपुर राज्य प्रजामण्डल से भी सम्बद्ध रहे हैं। 1949 में आप ए0आई0सी0सी0 के सदस्य निर्वाचित हुए। विधान निर्मातृ परिषद् की सदस्यता के लिए राजस्थान सरकार का प्रस्ताव भी आपको प्राप्त हुआ था। आप अनेक बार जिला कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष/मंत्री आदि पदों पर रहे हैं। 1955 में आप जयपुर क्षेत्र से उपचुनाव में कांग्रेस की ओर से लोकसभा के लिए निर्वाचित हुए थे।

सुप्रीम कोर्ट में वकील रहे लुहाडिया जी जयपुर में हाईकोर्ट बैंच की स्थापना हेतु निरन्तर संघर्षरत रहे थे। जयपुर बार एसोसिएशन एवं

बार-कौंसिल राजस्थान के आप अनेक बार अध्यक्ष/सदस्य आदि पदों पर रहे थे। अनेक गम्भीर विषयों पर आपने पुस्तकें भी लिखी हैं। 17 नव0 2000 को आपका निधन हो गया।

आ0- (1) साक्षात्कार 7-11-96 (2) आकाशवाणी बीकानेर को दिया साक्षात्कार (3) रा0 स्व0 से0, पृष्ठ-574

श्री बरदीचंद जैन

रानापुर, जिला-झाबुआ (म0प्र0) के श्री बरदीचंद जैन, पुत्र-श्री मंगनीराम जैन का जन्म 7 अक्टूबर 1904 को हुआ। मिडिल तक शिक्षा ग्रहण कर आप 1927 से स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय हो गये थे। 1936 के आन्दोलन में भाग लेने के कारण आप गिरफ्तार किये गये तथा 5 माह का कारावास आपने भोगा।

आ0- (1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-4, पृष्ठ-147

श्री बलवंतसिंह मेहता

राजस्थान की संस्कारधानी उदयपुर में हमने 10 सितम्बर 1997 को एक 98 वर्षीय कृषकाय, ओजस्वी, जीवट और जीवन्त व्यक्तित्व के दर्शन



किये। छरहरा शरीर, सौम्य मुखाकृति, भव्य ललाट, आंखों पर चश्मा, हाथ में छड़ी, सिर पर सफेद टोपी, स्वच्छ धवल खादी का कुर्ता-धोती। आज भी वाणी में वही ओज और कुछ कर गुजरने की तमन्ना। यही थे प्रथम लोकसभा के सदस्य, राजस्थान मंत्रिमण्डल में अनेक बार कैबिनेट मंत्री रहे तथा संविधान निर्मातृ सभा के सदस्य मास्टर बलवन्तसिंह मेहता।

मेहता जी का जन्म 8 फरवरी 1900 को उदयपुर के प्रसिद्ध नरवद मेहता जलसी मेहता के खानदान में हुआ। आपके पिता का नाम श्री जालिम सिंह मेहता था। मेहता जी की प्रारम्भिक शिक्षा भीलवाड़ा और उदयपुर में हुई बाद में वे उच्च शिक्षा के लिए फरग्यूसन कालेज, पूना गये। आपके परिवार को राज्य की ओर से जागीर दी गई थी, आपका परिवार एक खानदानी सामन्ती परिवार था, परन्तु मेहता जी अपनी 15 वर्ष की उम्र में एक विद्रोही के रूप में उभरे। उन्होंने सामन्ती जीवन का विरोध ही नहीं, बहिष्कार भी किया।

मेहता जी ने अपने प्रारम्भिक जीवन में जैन विद्यालय में अध्ययन-अध्यापन किया था अतः उदयपुर के लोगों में आप आज भी 'मास्टर जी' उपनाम से विख्यात हैं।

1915 में प्रताप सभा के माध्यम से आप राजनीति में आये। आप वर्षों तक इस सभा के संचालक रहे, इस कारण रियासत की आप पर कड़ी नजर रहने लगी। अजमेर में होने वाली राजनैतिक गतिविधियों में तो आप भाग लेते ही थे 1929 में लाहौर कांग्रेस में उदयपुर से प्रतिनिधि बनकर आप गये थे। पुलिस की कठोर निगाहें अब आप पर और अधिक रहने लगीं थीं। उन्हीं दिनों 'मेरठ षडयंत्र केस' के कुछ क्रान्तिकारी उदयपुर आ गये थे। 'नौजवान भारत-सभा' के कुछ युवकों ने भी उदयपुर में डेरा डाल रखा था। उनके मुखिया राधेश्याम उर्फ श्यामबिहारी ने मेहता जी के सहयोग से क्रान्तिकारियों के लिए उदयपुर से सैकड़ों की तादाद में पिस्तौलें खरीदीं। पिस्तौलों की जांच के लिए राधेश्याम के साथ मेहता जी पहाडियों में जाया करते थे। हल्दीघाटी में उन्होंने एक शिविर भी लगाया था जहाँ बम बनाने की प्रक्रिया समझाई जाती थी।

अप्रैल 1932 में उदयपुर की जनता ने मेहता जी ने नेतृत्व में रियासत द्वारा लगाये गये कुछ नये करों तथा शासनाधिकारियों की निरंकुशता और अभद्र व्यवहार के विरोध में एक विशाल प्रदर्शन किया।

प्रदर्शन करता हुआ एक जुलूस महाराणा के महल की चहारदिवारी में पहुँच गया। पुलिस ने वहाँ भयंकर लाठीचार्ज किया और जुलूस महल की चहारदिवारी में ही घेर लिया गया। जो भी बाहर निकलता उसे बुरी तरह से पीटा जाता था। मेहता जी पर पुलिस की निगाह पहले से ही थी, अत: उनकी जमकर पिटाई हुई व हाथ-पांव तोड़ दिये गये।

इस प्रदर्शन के परिणामस्वरूप शहर में सात दिन तक पूर्ण हड़ताल रही। अन्त में सरकार को झुकना पड़ा और जनता की मांगें स्वीकार कर लीं गईं।

अप्रैल 1938 में मेहता जी के घर पर प्रजामण्डल की स्थापना हुई। पांच-सात दिन बाद ही सरकार ने इसे गैरकानूनी घोषित कर दिया। फलत: माणिक्य लाल वर्मा को उदयपुर रियासत से निर्वासित कर दिया गया। अक्टूबर 1938 में जब प्रजामण्डल आंदोलन उग्र हुआ तो नवम्बर में बलवन्तसिंह जी को गिरफ्तार कर लिया गया। उन्हें कुछ दिन उदयपुर की गिराई की जेल में रखकर फिर ससड़ा जेल भेज दिया गया, जहाँ वे एक वर्ष कैद रहे।

1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में मेहता जी सक्रिय रहे। प्रजामण्डल ने महाराणा को जब 21 अगस्त 1942 को अल्टीमेटम दिया तो उसी रात मेहता जी गिरफ्तार कर लिये गये। वे उदयपुर सेन्ट्रल जेल तथा इसवाल जेल में डेढ़ वर्ष तक नजरबन्द रहे।

प्रसिद्ध भील नेता श्री मोतीलाल तेजावत (जैन) से आप बहुत प्रभावित रहे हैं। भोपट में तेजावत जी का प्रवेश निषिद्ध था और भील आन्दोलन के साथ ए0जी0 जी0 ओगस्वी का जो समझौता हुआ था, उसका पालन नहीं हो रहा था। मेहता जी की अध्यक्षता में भोपट में आदिवासियों का एक बृहद् सम्मेलन हुआ और बैठ-बेगार की शर्तें न मानने पर सम्मेलन ने आन्दोलन करने का निर्णय लिया। परिणाम स्वरूप भोपट के जागीरदार ने शर्तें स्वीकार कर लीं। परन्तु सरकार ने कोटडा भोपट में प्रजामंडल के किसी भी कार्यकर्ता का प्रवेश वर्जित कर दिया। मेहता जी ने अध्यापकों के रूप में अनेक कार्यकर्ताओं को वहाँ बैठा दिया और अन्य क्षेत्रों में भी पाठशालायें खोलीं। 1943 में मेहता जी ने उदयपुर में बनवासी छात्रालय की स्थापना की, जिसकाँ शिलान्यास श्री ठक्करबापा ने किया था। मेहता जी उम्रभर आदिवासियों में नव-जागरण लाने के लिए कार्य करते रहे हैं। 'रैन-बसेरा' के संस्थापक आप ही हैं।

आजादी के बाद आप प्रथम लोकसभा के सदस्य चुने गये। राजस्थान मंत्रिमण्डल में अनेक बार कैबिनेट मंत्री रहे। आप राजस्थान भारत सेवक समाज, सरस्वती पुस्तकालय, नगर विकास न्यास के अध्यक्ष तथा संसदीय लेखा समिति, राजस्थान विद्युत मण्डल, भारत साधु समाज, आदि के संयोजक/सदस्य रहे हैं। प्राकृत और जैन विद्या के अध्ययन-अध्यापन की व्यवस्था आपने अनेक स्थानों पर कराई। आप प्रताप स्मारक मोतीनगरी, वनवासी सेवा संघ, शास्त्री कालेज जयपुर, गांधी स्मृति मंदिर आदि के संस्थापक हैं। भामाशाह की मूर्ति तथा भामाशाह मार्केट की स्थापना भी आपके प्रयासों से हुई है।

मेहता जी का उक्त परिचय प्राप्तकर हम उनके प्रति नतमस्तक हो गये। आते-आते हमने पूंछा कि-'संविधान सभा में आपका क्या योगदान रहा है।' मेहता जी बोले 'मैंने अनेक कानूनों पर चर्चा की थी पर जब आबू पर्वत गुजरात को दिया जाने लगा तो मैंने उसका सख्त विरोध किया था। बताइये माउण्ट आबू को अगर राजस्थान से निकाल दिया जाय तो क्या राजस्थान-राजस्थान कहा जायेगा?'

मेहता जी का विचार है कि-'बिना जागृति और संघर्ष के अधिकारों का मिलना मुश्किल है।' मेहता जी बढ़ते भ्रष्टाचार को समाज और देश के लिए खतरनाक मानते हैं।

भारतीय संविधान सभा में आपने गहन चर्चा की थी। लगभग पांच पृष्ठ का आपका वक्तव्य संविधान सभा की कार्यवाही में पृष्ठ 4030-4034 पर दर्ज है।

मेहता जी को अनेक सम्मान और पुरस्कार मिले। आजादी की स्वर्ण जयन्ती के अवसर पर आपको संसद के केन्द्रीय कक्ष में सम्मानित किया गया था।

आ०- (1) रा० स्वा० से०, पृष्ठ-463-465 (2) जैन संस्कृति और राजस्थान, पृष्ठ-342 (3) जनसत्ता, दिल्ली, 8-2-1999 तथा 10-2-1999 (4) राष्ट्रदूत, उदयपुर, 29-12-1996 (5) राजस्थान पत्रिका, उदयपुर, 7-8-1994 (6) टाइम्स आफ इण्डिया, 21-5-1997 आदि

श्री बलीराम जैन

श्री बलीराम जैन का जन्म 1902 में प्रभातपट्टन, जिला-बैतूल (म०प्र०) में हुआ। आपके पिता का नाम श्री नागोबा जैन था। गांधीवादी विचारधारा के अनुयायी, कर्मठ कार्यकर्ता श्री जैन को 1942 के देशव्यापी भारत छोड़ो आन्दोलन में सक्रिय भाग लेने पर 2 वर्ष के कठोर कारावास की सजा सुनाई गई थी।

आ०-(1) म० प्र० स्वा० सै०, भाग-5, पृष्ठ-162

श्री बसन्तलाल जैन

फिरोजाबाद (उ०प्र०) के श्री बसन्तलाल जैन ने 1942 के आन्दोलन में सक्रिय भाग लिया था। 20 अगस्त 1942 को फिरोजाबाद में एक जुलूस निकाला गया जो बड़े चौराहे पर एक सभा के रूप में परिणत हो गया। कोतवाल इम्दाद अली खाँ ने तभी घेरा डालकर आपको गिरफ्तार कर लिया। आप पर आरोप था कि आपने श्री सन्तलाल जैन एवं श्री रामबाबू जैन के साथ डाक बंगला जलाया है। जब अपराध साबित नहीं हो सका तो इस शर्त पर कि 'आप प्रतिदिन थाने में हाजिरी दिया करें' 1943 में रिहा कर दिया गया। आपने शर्त नहीं मानी फलतः कुछ दिनों बाद ही पुनः गिरफ्तार कर लिये गये।

आ०-(1)जै० स० रा० अ० (2) उ० प्र० जै० ध०, पृष्ठ-91 (3) अमृत, पृष्ठ-24 (4) जै० से० ना० अ०, पृष्ठ-4

श्री बसन्तीलाल जैन

रानापुर, जिला- झाबुआ (म०प्र०) के श्री बसन्तीलाल जैन, पुत्र-श्री चम्पालाल जैन का जन्म दिसम्बर 1920 में हुआ। आप राष्ट्रीय आन्दोलन में सक्रिय रहे। म०प्र० शासन ने प्रशस्ति पत्र प्रदान कर आपको सम्मानित किया है। आपके अनुज श्री नगीन मल जैन भी स्वाधीनता सेनानी हैं।

आ०-(1) म० प्र० स्वा० सै०, भाग-4, पृष्ठ-142

श्री बागमल जैन

भोपाल (म०प्र०) के श्री बागमल जैन, पुत्र-श्री गुलाबचन्द्र जैन का जन्म 1920 में हुआ। 1940-41 के असहयोग आन्दोलन में आपने भाग लिया तथा 1949 के भोपाल राज्य विलीनीकरण आन्दोलन में सक्रिय रहे। कुल 22 दिन का कारावास आपने भोगा।

आ०-(1) म० प्र० स्वा० सै०, भाग-5, पृष्ठ-18

श्री बागमल बांठिया

श्री बागमल बांठिया का जन्म 6 अक्टूबर 1924 को कोटा के मध्यमवर्गीय प्रतिष्ठित जैन



परिवार में हुआ। उनके पिता श्री कल्याणमल बांठिया राज्य सरकार के कार्यकर्ता थे व सेवानिवृत्त होते समय वे राज्य के एकाउण्टेन्ट जनरल थे। बागमल जी के ताऊ श्री कस्तूरमल बांठिया का जैन समाज में तो अच्छा स्थान था ही वे हिन्दी के प्रसिद्ध लेखकों में से एक थे। जैन धर्म पर अनेक पुस्तकें उन्होंने लिखीं।

सार्वजनिक जीवन में बागमल जी की अन्य

परिवार के सदस्यों की भाँति प्रारम्भ से ही दिलचस्पी थी। पिता ने सरकारी नौकरी करने से पहले कोटा में खादी भंडार खोलने का प्रयास किया था। बागमल जी के बड़े भाई राजमल बाँठिया को 1942 में इंदौर मेडिकल कालेज से स्वाधीनता संग्राम में भाग लेने के कारण निष्कासित कर दिया गया था, जिससे डेढ़ साल की पढ़ाई के बाद उनका मेडिकल कैरियर समाप्त हो गया। उन्हें कालेज में दुबारा दाखिला नहीं मिला।

उस समय बागमल जी की आयु मात्र 14 वर्ष की थी जब एक सहपाठी की हैड मास्टर द्वारा बिना कारण डंडे से पिटाई कर देने के कारण वह कक्षा से बाहर आ गये। उनके उकसाने पर 5-6 अन्य छात्रों ने भी कक्षाओं का बहिष्कार कर दिया। यह चीज कोटा के लिए उन दिनों अनहोनी सी थी और इसकी खबर अजमेर के एक साप्ताहिक में बागमल जी का नाम लेते हुए प्रकाशित हुई थी।

कोटा से 1941 में मैट्रिक करने के बाद वे कॉमर्स की पढ़ाई के लिए वर्धा गए। वर्धा जाने का मुख्य कारण पास ही सेवाग्राम आश्रम में गांधी जी का निवास था। गांधी जी के प्रति श्रद्धा स्कूल के दिनों से ही शुरू हो गई थी। वर्धा जाने के बाद हर सप्ताह सेवाग्राम आश्रम जाना, गांधी जी की प्रार्थना सभा में हिस्सा लेना बाँठिया जी का एक नियम सा बन गया था। दो तीन माह में एक बार पवनार आश्रम भी चले जाते थे जहां विनोबा जी रह रहे थे।

बाँठिया जी ने 1942 के अखिल भारतीय कांग्रेस के बम्बई अधिवेशन को प्रेस-पास हासिल करके निकट से देखा था। 9 अगस्त को जब श्रीमती अरुणा आसफअली ने सभी प्रमुख नेताओं के गिरफ्तार कर लिए जाने के बाद ग्वालियर टैंक पर झंडारोहण किया तब वे भी ग्वालियर टैंक पर उपस्थित थे। बम्बई में वे तीन-चार दिन और रुके रहे जहां जुलूस में भाग लेने पर उन पर भी पुलिस की एक लाठी पड़ी ओर गोली चलाए जाने के कारण उनके पास ही खड़ा एक व्यक्ति मारा गया।

बम्बई से वर्धा लौट आने पर उन्हें पता चला कि उनका कालेज सरकार ने सील कर दिया है और हास्टल भी खाली करवा लिए हैं। उन्होंने वर्धा में ही ठहरकर स्वाधीनता संग्राम में हिस्सा लेना शुरू कर दिया। वे इस संबंध में हिंगनघाट व पास के कुछ गांवों में एक ग्रुप बनाकर गए। वणी की एक सभा में उनके भाषण के तुरंत बाद उपस्थित भीड ने पुलिस कर्मियों की पिटाई कर दी। गिरफ्तारी से बचने के लिए बाँठिया जी वर्धा जाकर कोटा लौट आए।

अगस्त के अंत में जब वे कोटा पहुंचे तब यहां भी आंदोलन ठंडा पड़ चुका था तब बाँठिया जी अन्य लोगों के साथ इसे पुनरुज्जीवित करने में लग गए। जेल में हड़ताल करवाने और आंदोलन में सक्रिय रहने के कारण पुलिस ने उन्हें 17 सितम्बर को गिरफ्तार कर लिया। जेल में उनके साथ वरिष्ठ प्रजामंडल नेता श्री मोतीलाल जैन, प्रमुख समाजवादी नेता श्री हीरालाल जैन, कालेज यूनियन के अध्यक्ष श्री बृजकिशोर मेहरा, किसान नेता श्री रतनलाल गोठवाल व छात्र नेता श्री टीकमचंद जैन और श्री नंदलाल पारिख थे। 5 नवम्बर 1942 को उन्हें बिना शर्त जेल से रिहा कर दिया गया। बाँठिया जी द्वारा आंदोलन में भाग लेने के कारण उनके पिता की सरकार ने पदावनति कर दी थी। जेल में उन्होंने अपने साथियों के साथ 3 दिन भूख हड़ताल भी की थी।

जेल से छूटने के कुछ समय पश्चात् वे अपने बड़े भाई के साथ करांची के पास स्थित एक शहर मोहतानगर चले गए, जहां उनके ताऊजी श्री कस्तूरमल बाँठिया एक चीनी मिल के मैनेजर थे। यहां 2-3

माह बाद खबर मिली कि वर्धा का कालेज खुल गया है अत: आप फरवरी 1943 में पुन: वर्धा लौट आए। 1945 के मध्य में उन्होंने वर्धा से बी0कॉम0 किया। वर्धा में वे छात्र आन्दोलनों में भी अग्रणी रहे।

एम0कॉम0 करने के लिए उन्होंने 1945 के सत्र के प्रारम्भ में लखनऊ विश्वविद्यालय में दाखिला लिया। वहां उस समय 'यूनिवर्सिटी स्टूडेन्ट्स यूनियन' की पुनर्स्थापना के लिए संघर्ष चल रहा था, इसमें उन्होंने सक्रिय भूमिका निभाई और कुछ ही समय बाद 'लखनऊ स्टूडेन्ट्स कांग्रेस' के अध्यक्ष निर्वाचित हुए। आई0एन0ए0 पर चलने वाले मुकदमों के विरोध में आयोजित छात्र-प्रदर्शन का नेतृत्व करते समय पुलिस लाठी चार्ज में जख्मी हुए व कुछ समय उपचार के लिए मेडिकल कालेज हॉस्पिटल में भर्ती करवाए गए।

स्वतंत्रता आंदोलन की समाप्ति और अपनी पढ़ाई पूरी कर लेने के पश्चात् उन्होंने पत्रकारिता क्षेत्र में प्रवेश किया और रिवोल्यूशनरी कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य बने। 1948 में एक मजदूर आंदोलन में वे लखनऊ में जेल भी गए। 1951 में उन्होंने 'नवजीवन' हिन्दी दैनिक से त्यागपत्र देकर अपना स्वयं का एक साप्ताहिक पत्र 'मशाल' के नाम से निकाला और असेम्बली का चुनाव भी आर0सी0पी0आई0 के प्रत्याशी के रूप में लड़ा। इन दोनों में उन्हें असफलता मिली।

आर्थिक स्थिति बहुत खराब हो जाने के कारण वे लखनऊ छोड़कर 1953 में दिल्ली आ गए। वहां 1959 तक हिन्दी दैनिक 'हिन्दुस्तान' में काम किया। 1959 में 'हिन्दुस्तान' से त्यागपत्र देकर 'इंडियन एक्सप्रेस' अंग्रेजी दैनिक में चले गए जहां 1969 तक कार्यरत रहे। दिल्ली में इसके बाद उन्होंने अपना प्रेस (साझीदारी में) लगाया और 'चाइस' के नाम से एक अंग्रेजी साप्ताहिक निकाला। ये दोनों कार्य भी असफल रहे। वे 1972 में अपने पैतृक स्थान कोटा लौट आए।

तब से आप लगातार कोटा में ही रह रहे हैं। बांठिया जी अविवाहित हैं। उन्हें 1982 से राज्य सरकार से स्वतंत्रता संग्राम सेनानी सम्मान पेंशन मिल रही है और ताम्रपत्र भी सरकार द्वारा भेंट किया जा चुका है।

आ0- (1) स्व0 प0 (2) रा0 स्व0 से0, पृष्ठ-535

श्री बापूलाल चौधरी

श्री बापूलाल चौधरी का जन्म गरोठ जिले (तत्कालीन) के रामपुरा नगर (म0प्र0) में



30 जनवरी 1902 को हुआ। आपके पिता का नाम श्री चम्पालाल चौधरी था। श्री बापूलाल चौधरी ने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से मेट्रिकुलेशन किया। आपने एक निर्भीक, ईमानदार, जुझारू एवं सफल वकील के रूप में न केवल गरोठ जिले में अपितु संपूर्ण होल्कर स्टेट में ख्याति अर्जित की थी। गरोठ उस समय इंदौर स्टेट का जिला मुख्यालय था, स्वराज्य आंदोलन का भी मुख्यालय था, अत: सारी कार्यवाही वहां से संचालित होती थी। श्री चौधरी, श्री चन्दवासकर, श्री आर0डी0 तेंलग सारी कार्यवाही का संचालन करते थे। इन तीनों ने मिलकर सारे जिले में स्वराज्य प्राप्ति आंदोलन की अलख जगाई। गांव-गांव घूमकर पूरे क्षेत्र का सर्वे किया तथा फिर वरिष्ठ नेताओं से चर्चा करके जगह-जगह संगठन स्थापित किये।

श्री बापूलाल चौधरी 1920 में इंदौर गये। यह एक संयोग ही था कि इंदौर में महात्मा गांधी आने वाले थे। उस समय श्री चौधरी की आयु 18 वर्ष थी। मजिस्ट्रेट से सभा के लिए अनुमति मांगी गई थी क्योंकि

बिना अनुमति के सभा करना मना था। अनुमति नहीं मिली, फिर भी हजारों की संख्या में लोग गांधी जी को सुनने व देखने आये हुये थे। पुलिस ने चारों ओर घेरा डाल रखा था। चौधरी जी भी उसी घेरे में घिरे थे। गांधी जी ठीक समय पर सभामंच पर आ गये। चौधरी जी पर उनके व्यक्तित्व का बहुत प्रभाव पड़ा। गांधी जी का भाषण सुनकर सभा में उपस्थित लोगों में भी जोश भर गया। 'महात्मा गांधी जिन्दाबाद' के नारों से सभा-क्षेत्र गूंज उठा। सभा-क्षेत्र में विदेशी कपड़ों की होली जलाई गई और खादी पहनने की शपथ ली गई। श्री चौधरी ने भी खादी पहनने का संकल्प लिया जिसे उन्होंने अंतिम समय तक निभाया।

गरोठ में प्रजामंडल की स्थापना होने पर चौधरी जी उसके अध्यक्ष बने। श्री चौधरी प्रजामंडल की केन्द्रीय समिति के सदस्य भी रहे। इन्होंने सारे गरोठ जिले में घूमकर प्रचार-प्रसार किया तथा प्रजामण्डल का काम सुचारू रूप से चलाते रहे।

आंदोलनकारियों पर चलाये जाने वाले मुकदमों में श्री चौधरी नि:शुल्क पैरवी करते थे। उनकी संगठन क्षमता बड़ी विलक्षण थी जिसे देखकर राष्ट्रीय नेता दांतों तले उंगली दबा लेते थे। श्री चौधरी एक कुशल प्रशासक भी थे, अधिकारी उनसे भय खाते थे। वे अपने सिद्धान्तों पर हमेशा अडिग रहे।

1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में उन्हें शामिल नहीं होने दिया गया। उन्होंने गरोठ में प्रदर्शन किया। सारे प्रमुख आंदोलनकारी गिरफ्तार हो चुके थे किन्तु चौधरी जी को भूमिगत होने के लिये विवश कर दिया गया। कहा गया कि –'आप अन्दर रहेंगे तो आंदोलन समाप्त हो जायेगा', अत: उन्हें भूमिगत होना पड़ा। उन्होंने अपने गिरफ्तार साथियों के परिवारों की सहायतार्थ जिले का सघन दौरा करके पर्याप्त धन इकट्ठा किया। स्वयं ने भी पर्याप्त धन दिया व सारा धन समान रूप से साथियों के परिवारों में बंटवा दिया।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् 1952 से 1957 तक आप गरोठ के विधायक रहे और विधान सभा में कांग्रेस दल के मुख्य सचेतक के रूप में कार्य किया। 60 सालों तक सफलतापूर्वक वकालत करने पर बार एसोसिएशन गरोठ ने आपका अभिनन्दन कर मानपत्र भेंट किया था।

सार्वजनिक कार्यों में भी आप सदैव अग्रणी रहे। आपने जिला प्रौढ़ शिक्षा समिति के अध्यक्ष के रूप में प्रौढ़ शिक्षा का सफल संचालन किया। आपने गरोठ में प्राइवेट हाई स्कूल कमेटी बनाई, उसके अध्यक्ष के रूप में आठ सालों तक इसका कुशलता पूर्वक संचालन किया और बाद में उसे शासकीय घोषित करवाया। अनेक गरीब विद्यार्थी इससे लाभान्वित हुए। आप कई सालों तक नगरपालिका परिषद् गरोठ के अध्यक्ष रहे। आप मृत्युपर्यन्त बार-एसोसिएशन गरोठ के अध्यक्ष रहे। 1988 में आपका देहावसान हो गया।

आ०-(1) स्व० स० म०, पृष्ठ 67-69 (2) श्री पी०सी० चौधरी, एडवोकेट द्वारा प्रेषित परिचय।

श्री बाबू भाई

इन्दौर (म०प्र०) निवासी श्री बाबू भाई, पुत्र-श्री ईश्वर भाई का जन्म 1911 में हुआ। प्राथमिक शिक्षा ग्रहण कर आपने 1930 में राष्ट्रीय आंदोलन में भाग लिया और एक माह सोलह दिन का कारावास भोगा। इन्दौर के सर्राफा बाजार में आपकी जैन कैमिस्ट नाम से दुकान रही है।

आ०-(1) म० प्र० स्व० सै०, भाग-4, पृष्ठ-31

श्री बाबूराम जैन

श्री बाबूराम जैन, पुत्र-श्री बिहारी लाल जैन का जन्म 1918 में पथरिया, जिला-दमोह (म०प्र०) में हुआ। आपने प्राथमिक तक शिक्षा ग्रहण की। आप रसगुल्ला बेचने का काम करते थे। साथ में आपके बड़े भाई श्री राजाराम उर्फ राजेन्द्र कुमार जी भी रहते थे। जंगल सत्याग्रह में आपने भाग लिया था और 42 के भारत छोड़ो आन्दोलन में 2 माह 8 दिन का कारावास भोगा था। राजाराम जी को भी 2 वर्ष 4 माह का कारावास हुआ था।

आ०- (1) म० प्र० स्वा० सै०, भाग-2, पृष्ठ-86 (2) श्री संतोष सिंघई द्वारा प्रेषित परिचय ।

श्री बाबूराम जैन 'कागजी'

'कागजी' उपनाम से विख्यात मैनपुरी (उ0प्र0) के श्री बाबूराम जैन का जन्म 1910 में हुआ। 1930 के स्वदेशी एवं 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में आपने जेल-यात्रायें की थीं। प्रादेशिक कांग्रेस सेवादल से जुड़े श्री जैन को भारत सरकार ने सम्मान पत्र प्रदान कर सम्मानित किया था। धार्मिक कार्यों में उत्साह से भाग लेने वाले श्री जैन का 1983 में निधन हो गया।

आ०-(1) जै० स० वृ० इ०, पृष्ठ-622 (2) स्वतंत्रता सेनानी श्री रामस्वरूप जी खैरगढ़ द्वारा प्रेषित परिचय।

श्री बाबूलाल घी वाले

देश प्रेम में अपना उन्नतशील व्यापार छोड़कर सत्याग्रही बने श्री बाबूलाल जैन का जन्म 1915 में ललितपुर (उ0प्र0) में हुआ। आपके पिता का नाम श्री धरमदास जैन था। 1942 के आंदोलन में करो या मरो की प्रेरणा पाकर दफा 144 का उल्लंघन करने पर आपको 1 वर्ष की सजा तथा 100/- रु0 जुर्माना हुआ।

आ०-(1) जै० स० रा० अ० (2) र० नी०, पृष्ठ-38

श्री बाबूलाल जैन डेरिया

पिता मन्नूलाल एवं माता जानकी बाई की सन्तान 'बाबूलाल' सचमुच ही बाबुओं के लाल थे। उनकी सामाजिक एवं साहित्यिक सेवाओं से समाज आज भी गौरवान्वित है। आपका जन्म 3 मार्च 1907 को बाबई ग्राम, जिला-होशंगाबाद (म0प्र0) में हुआ। विद्यार्थी जीवन से ही राष्ट्रीय आन्दोलन में भाग लेने से आपका अध्ययन नहीं हो सका। आप अपने समय के जाने-माने नेता थे। राजनीति के साथ-साथ धार्मिक क्षेत्र में भी सक्रिय डेरिया जी को हरिजन उद्धार आन्दोलन में भाग लेने के कारण 3 बार जेल यात्रा करनी पड़ी। जेल से लौटने के पश्चात् आप काफी कमजोर हो गये थे, फिर भी आपने गाँव-गाँव की जनता को आजादी के लिये जगाया। जब आप दूसरी बार जेल गये तब आपकी माता जी का स्वर्गवास हो गया। तभी आपने जेल में एक कविता 'बेटों को कारावास माँ का स्वर्गवास' का प्रकाशन कराया था।

होशंगाबाद जिले में खादी प्रचार, शराबबन्दी, राष्ट्रीय एकता आदि कार्यों में आपने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया था। ग्राम सुधार केन्द्र बाबई द्वारा उत्पादित खादी का आपने प्रचार किया व इस केन्द्र के अध्यक्ष रहे। आपके भाई ने भी जेल यात्रा की थी। बाबई में एक सार्वजनिक वाचनालय भी आप चलाते थे। 1932 में एक वर्ष की सजा व 200 रुपये जुर्माना तथा 1941 में तीन माह की सजा आपको हुई थी। 1942 में भी आप जेल गये। स्थिति अच्छी होने के कारण पेंशन लेने से आपने इंकार कर दिया था और पुराने रीति-रिवाजों का जमकर विरोध किया था। आपको एक पुत्र हुआ, उसका नाम संगठन रखा, किन्तु कुछ समय बाद संगठन का देहान्त हो गया, जब दूसरा पुत्र हुआ तो उसका नाम भी संगठन रखा। 'अ0 भा0 दिगम्बर जैन परिषद्' को सफल बनाने में आपका पूरा सहयोग रहा। परिषद् द्वारा आपकी सेवाओं के लिए सम्मान-पत्र भेंट किया गया था।

आपकी मृत्यु 2 नवम्बर 1975 को हो गई। मृत्यु से पूर्व आपने 2 अक्टूबर 1971 को आचार्य रजनीश का सन्यास धारण कर लिया था। आप 'तारण बन्धु' के सम्पादक भी रहे थे। आप साहित्यकार एवं कवि भी थे। आपकी हर कविता राष्ट्रीयता से ओत-प्रोत रहती थी।

आ०-(1)म० प्र० स्वा० सै०, भाग-5, पृष्ठ-334 (2) स्वा० सं० हो०, पृष्ठ 115 (3) वि० अ०, पृष्ठ-393

श्री बाबूलाल जैन

श्री बाबूलाल जैन, पुत्र-श्री इन्दीवर, निवासी गौरझामर, जिला-सागर (म0प्र0) 1931 के आन्दोलन में महात्मा गाँधी के आह्वान पर बी0ए0 की पढ़ाई छोड़कर स्वतत्रंता संग्राम में कूद पडे। आपने धारासणां एव बड़ाला ग्राम के नमक सत्याग्रह के लिये कूच किया, किन्तु पुलिस की कृपा से आप को बम्बई के हास्पिटल में पहुँचना पड़ा। स्वस्थ होने पर फिर बाराडोली की ओर प्रयाण किया और वहाँ गिरफ्तार होकर 5 माह तक जेल में रहे।

आ0-(1) जै0 स0 रा0 अ0 (2) प0 जै0 इ0, पृष्ठ-528

श्री बाबूलाल जैन

छिन्दबाड़ा (म0प्र0) के श्री बाबूलाल जैन ने त्रिपुरी कांग्रेस अधिवेशन में स्वयंसेवक के रूप में कार्य किया तथा भारत छोड़ो आन्दोलन में 9 माह की सजा पाई।

आ0-(1) स्वाधीनता आन्दोलन में छिन्दबाड़ा जिले का योगदान (टंकित शोध-प्रबन्ध), पृष्ठ-337

श्री बाबूलाल जैन

कटनी, जिला-जबलपुर (म0प्र0) के श्री बाबूलाल जैन का जन्म 1912 में हुआ। आप जंगल सत्याग्रह में 11 जुलाई 1930 से 10 सितम्बर 1930 तक कारावास में रहे।

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-1, पृष्ठ-79

श्री बाबूलाल जैन

खुरई, जिला-सागर (म0प्र0) के श्री बाबूलाल



जैन, पुत्र-श्री खुन्नीलाल जैन का जन्म 1916 में हुआ। 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन के समय आपकी आयु 25 वर्ष की थी। आन्दोलन में पिकेटिंग, जुलूसों व सभाओं में सहयोग देने के कारण पुलिस ने आपको दि0 15-9-42 को गिरफ्तार कर लिया और सागर जेल से 5 माह 22 दिन के बाद मुक्त किया।

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-2, पृष्ठ-46 (2) स्व0 प0

श्री बाबूलाल जैन

भोपाल (म0प्र0) के श्री बाबूलाल जैन, पुत्र-श्री गोरेलाल जैन का जन्म 1-1-1927 को हुआ। स्वाधीनता आन्दोलन में आपने सक्रियता से भाग लिया। म0 प्र0 शासन ने आपको सम्माननिधि देकर सम्मानित किया है।

आ0-(1) श्री दीपचंद जैन, भोपाल द्वारा प्रेषित तीन प्रमाण-पत्र

श्री बाबूलाल जैन

मण्डल कांग्रेस कमेटी के मंत्री रहे श्री बाबूलाल जैन, पुत्र-श्री चंदनलाल जैन ग्राम मनेपुर (पुरामना) तहसील-किरावली, जिला-आगरा (उ0प्र0) के निवासी तथा आगरा प्रवासी थे। बचपन से ही देशभक्ति की भावना से ओतप्रोत तथा कर्मठ और साहसी श्री जैन को 1942 के आंदोलन में नजरबंद कर जेल भेज दिया गया था, जहाँ से आप दो माह बाद मुक्त किये गये । बाद में आपका मन त्याग की ओर लग गया फलत: ब्रह्मचारी होकर समाज में जैन धर्म का प्रचार-प्रसार करने में महती भूमिका निभायी।

आ0- (1)-जै0 स0 रा0 अ0 (2) उ0 प्र0 जै0 ध0, पृ0-92 (3) प0 इ0, पृ0-140 (4) गो0 अ0 ग्र0, पृ0-224

श्री बाबूलाल जैन

पतेरी, जिला- सतना (म0प्र0) के श्री बाबूलाल जैन, पुत्र-श्री गुलाबचन्द जैन का जन्म 1910 में हुआ। माध्यमिक तक शिक्षा प्राप्त श्री जैन ने 1930 से स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेना प्रारम्भ किया। प्रतिबन्ध के विरोध में जुलूस निकालने पर 1931 में आप गिरफ्तार कर लिये गये व 6 माह के कारावास की सजा आपको दी गई।

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-5, पृष्ठ-266

श्री बाबूलाल जैन

सीहोर (म0प्र0) के श्री बाबूलाल जैन, पुत्र-श्री छगनलाल का जन्म 1920 में हुआ। भोपाल विलीनीकरण आन्दोलन में भाग लेने के कारण दि0 13-1-49 को आप बंदी बनाये गये तथा 6-2-49 को रिहा हुए।

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-5, पृष्ठ-48

श्री बाबूलाल जैन

श्री बाबूलाल जैन, पुत्र-श्री डौनी लाल शहडोल (म0प्र0) के निवासी थे। श्री जैन का जन्म 1882 में हुआ था। आपने प्राथमिक शिक्षा ही ग्रहण कर पायी। अंग्रेजी हुकूमत को जड़ से उखाड़ फेंकना ही आपका एकमात्र ध्येय था, यही कारण था कि आपने 1942 के आन्दोलन के समय बारफंड की सभा में अवरोध पैदा किया, इस अपराध में आपको 4 माह की सजा मिली। आपने यह सजा रीवां जेल में काटी।

आ0- (1) स्वा0 आ0 श0, पृष्ठ-150 (2) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-5, पृष्ठ-313

श्री बाबूलाल जैन

गाडरवारा, जिला-नरसिंहपुर (म0प्र0) के विधि स्नातक श्री बाबूलाल जैन, पुत्र-श्री दामोदर प्रसाद का जन्म 22 जुलाई 1919 को हुआ। आपने 1937 से स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेना प्रारम्भ कर दिया था। विद्यार्थी कांग्रेस संगठन, किसान समाज, हरिजन उत्थान आदि कार्यक्रमों में आपकी विशेष रुचि थी। 1942 में 1 वर्ष 6 माह का कारावास आपने भोगा।

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-1, पृष्ठ-147

श्री बाबूलाल जैन

जबलपुर (म0प्र0) के श्री बाबूलाल जैन, पुत्र-श्री नन्हेलाल जैन का जन्म 1921 में जबलपुर में हुआ। क्रान्तिकारी साहित्य का वितरण कर राष्ट्रीय कार्य में आपने बड़ा योगदान दिया। भारत छोड़ो आन्दोलन के समय आपत्तिजनक पर्चे वितरित करने पर आप गिरफ्तार हुए तथा साढ़े सात माह के कारावास की सजा आपने काटी।

आ0- (1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-1, पृष्ठ-79 (2) स्व0 स0 ज0, पृष्ठ-142

श्री बाबूलाल जैन

सागर निवासी तथा जबलपुर प्रवासी श्री बाबूलाल जैन, पुत्र-श्री फदालीलाल ने 1932 के आन्दोलन में भाग लिया और 4 माह का कारावास भोगा।

आ0- (1) आ0 दी0, पृष्ठ-64, (2)-म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-2, पृष्ठ-47

श्री बाबूलाल जैन



ग्राम-सिलौड़ी (जबलपुर) म0प्र0 के श्री बाबूलाल जैन, पुत्र-श्री बिहारी लाल का जन्म 1896 ई0 में हुआ। भारत छोड़ो आन्दोलन में 19 दिसम्बर 1942 से 18 फरवरी 1943 तक लगभग 2 माह का कारावास तथा 25 रु0 अर्थ दण्ड आपने भोगा।

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-1, पृष्ठ-79 (2) अनेक प्रमाणपत्र (3) देखें पीछे प्रकाशित सिलौड़ी के शहीद स्तम्भ का चित्र

श्री बाबूलाल जैन

श्री बाबूलाल जैन का जन्म 1920 में सागर (म0प्र0) में हुआ। आपके पिता का नाम श्री सुखराम था। आपने स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय भाग लिया तथा 23 सितम्बर 1942 से 3 जनवरी 1943 तक कारावास में रहे।

आ0- (1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-2, पृष्ठ-47

श्री बाबूलाल जैन (पथरिया वाले)

श्री बाबूलाल जैन के पूर्वज सिंघई वंशीधर जी मैहर रियासत के कोषाध्यक्ष थे। 1857 में रियासत द्वारा अंग्रेजों का साथ दिये जाने के कारण आपने उसका

विरोध किया अतः रियासत द्वारा निकाल दिये जाने से सिंघई जी जबलपुर में रहने लगे थे। विद्रोही होने से जबलपुर में भी अधिक न टिक सके और दमोह में आकर बस गये, जहाँ दि० 25-12-1898 (अथवा 1896) को बाबूलाल जी का जन्म हुआ। पिता का नाम श्री गिरधारी लाल जैन था। पथरिया के श्री कन्छेटीलाल मास्टर की इकलौती पुत्री तुलसी बाई से विवाह होने पर पथरिया आपका स्थायी निवास हो गया, परन्तु रक्त में प्रवाहित देश-प्रेम की भावना उत्ताल तरङ्गे लेती रही, फलतः नमक आन्दोलन में आपने भाग लिया, गिरफ्तार होने से बच गये पर 1930 के जंगल सत्याग्रह में आपको एक दिन की सजा के साथ 40/- रु० जुर्माना हुआ। इसके बाद आन्दोलन का केन्द्र आपका घर बन गया।

1942 में मंडल कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष के रूप में आमसभा में दि० 14-8-42 को भाषण देते समय आपको पकड़कर सागर जेल भेज दिया गया। बुलेटिन, पोस्टर आदि बाँटने के आरोप में आपके ज्येष्ठ पुत्र पदमचन्द को भी पकड़ लिया गया। परन्तु उसे पुलिस थाने से छोड़ दिया गया। सागर से आपको नागपुर जेल भेजा गया, जहाँ सेठ गोविन्द दास, विनोबा भावे, बृजलाल बियाणी, कुमारप्पा आदि महापुरुषों से आपकी भेंट हुई। मुकदमा चलाने के लिए फिर सागर भेजा गया। दि0 4-1-43 को और एक वर्ष की सश्रम कारावास की सजा दी गई। जेल से छूटने पर पथरिया की जनता ने आपका भव्य स्वागत किया। 1945 में आप ध्वज फहराते हुए गिरफ्तार हुए तथा 15 दिन तक हिरासत में रहे।

श्री जैन का शेष जीवन और घर भारत माँ की सेवा का कार्यालय ही बना रहा। देश के हर कार्य में आप आगे रहे। आजादी के बाद आप जनपद एवं ग्राम पंचायत के विभिन्न पदों पर रहे। 85 वर्ष की आयु में दि० 16 3 83 को ममता पूर्वक पद्मासन पर बैठकर तथा सब को हाथ जोड़कर आपने इस नश्वर देह को त्यागा।

आ० (1) म० प्र० स्व० सै०, भाग 2, पृष्ठ 86 (2) श्री गणेश सिंघई, दमोह द्वारा प्रेषित परिचय।

श्री बाबूलाल जैन (मोदी)

पूज्य बापू के साथ दो दिन पैदल यात्रा का सुयोग पाने वाले श्री बाबूलाल जैन, पुत्र-श्री प्यारे लाल

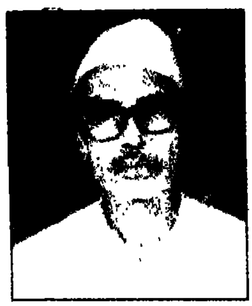


का जन्म 1898 ई0 में पटना बुजुर्ग, तहसील रहली, जिला- सागर (म0प्र0) में हुआ। 1942 के आंदोलन में आपने भाग लिया और 25 दिन नजरबंदी में रहे। आपके परिवारजनों ने लिखा है कि वे दो दिन गांधी जी के साथ पूरे सागर क्षेत्र में घूमे थे। सबसे विकट दशा तो तब हुई थी जब उन्हें रहली से सागर तक पैदल ही हथकड़ी पहनाकर ले जाया गया था। म० प्र० स्व० सै०, भाग-2, पृष्ठ-47 के अनुसार आप सेठ कहलाते थे। 1955 में आपका स्वर्गवास हो गया।

आ०- (1)म० प्र० स्व० सै०, भाग-2, पृष्ठ-47 (2) स्व० प० (3) प० जै० इ०, पृ०-527

श्री बाबूलाल जैन

श्री बाबूलाल जैन, पुत्र-श्री सूरजमल जैन का जन्म 1925 में ग्राम-रुसल्ली, जिला-विदिशा (म०प्र०) में हुआ। बाद में आप ग्राम-दाहौद, तहसील-

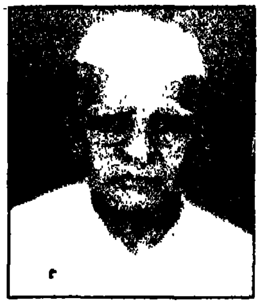


गौहरगंज, जिला-रायसेन (म०प्र०) में रहने लगे। आपने जैन समाज के प्रसिद्ध गुरुकुल, चौरासी, मथुरा में शिक्षा प्राप्त की। 1948-1949 के भोपाल विलीनीकरण आन्दोलन में आपने भाग लिया, गिरफ्तार हुए और सरकारी रिकार्ड के अनुसार तीन दिन जेल की यातनायें सहन कीं। श्री प्रकाश चंद सेठी के मुख्यमंत्रित्व काल में आपको प्रशस्तिपत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया था।

आ० (1) म० प्र० स्व० सै०, भाग-5, पृष्ठ-75 (2) स्व० प०

श्री बाबूलाल जैन 'रत्न'

क्रांतिकारी, धुन के पक्के श्री बाबू लाल जैन का जन्म ग्राम-नैनपुर, जिला-मण्डला (म0प्र0) में



28-12-1912 को हरप्रसाद जी के घर हुआ। जेलर द्वारा माफीनामा लिखकर देने पर छोड़ देने के आश्वासन के बाद भी आपने माफीनामा नहीं लिखा और अवधि पूरी होने तक जेल की यातना झेली। बाबूलाल जी ने अपना राजनैतिक परिचय निम्न पक्तियों में गूंथा है-

"सन् 1926 में श्रीमान् मौ0 अली, श्री सौकत अली एवं कांग्रेस के अन्य कार्यकर्ता कांग्रेस के प्रचार हेतु जब नैनपुर पधारे थे, तब उन्होंने जुलूस में आगे आगे मुझे राष्ट्रीय गीत गाने को बुलाया था। मैंने गाया भी था। उस समय के विशेष गीत की मुझे दो पंक्तियां अब भी याद हैं-

'बोली अम्मा मुहोम्मद अली की,
जान बेटा खिलाफत में दे दो।
साथ तेरे हैं, सौकत अली भी,
जान बेटा खिलाफत में दे दो।।'

इस तरह हाथ में तिरंगा झंडा लेकर राष्ट्रीय गीत गाते हुए जुलूस के आगे-आगे चलता था, उसी समय से मैंने राजनीति में प्रवेश किया।

1930 में मैंने श्री केशवराव इंगले के नेतृत्व में शराब की दुकानों पर धरना दिया था एवं विदेशी वस्त्रों की होली जलाई थी। 1930 में सुभाषचंद बोस को मंडला जेल से सिवनी जेल में रेलवे से ले जाते समय उनके दर्शनार्थ प्लेटफार्म के बाहर हजारों लोगों की भीड़ एकत्रित थी। पुलिस द्वारा प्लेटफार्म पर जाने की मनाही थी। तब मैं पुलिस की निगाह बचाकर हाथ में झंडा लेकर नेता जी के डिब्बे तक पहुंच गया। डिब्बे में प्रवेश करने से पहिले ही पुलिस ने पकड़ लिया। मेरा झंडा छीनकर झंडे के डंडे से मारते हुए बाहर कर दिया। थाने में बंद करके भी मारा, जिससे मेरे दाऐ पैर के घुटने की हड्डी टूट गयी थी जिससे यह पैर अब भी टेढ़ा है।

1939 में त्रिपुरी कांग्रेस अधिवेशन में नैनपुर से 22 दिन की स्वयंसेवक की ट्रेनिंग लेकर जनता की नि:शुल्क सेवा करने हेतु मैं गया था। मेरी सेवा से प्रभावित होकर श्री अब्दुल गफ्फार गांधी ने मंच पर बुलाकर मेरी प्रशंसा की थी। अधिवेशन के अध्यक्ष नेताजी सुभाषचंद बोस थे।

1942 में बापू जी के असहयोग आंदोलन में मैंने भाग लिया। 12-13 अगस्त को तिरंगा झंडा लेकर जुलूस निकाला, तब पुलिस की मार पड़ी। 14 ता0 के सुबह रेलवे प्लेटफार्म पर पुलिस ने मजिस्ट्रेट द्वारा वारंट बताकर गिरफ्तार कर लिया और ट्रेन से अन्य दो साथियों श्री कौशल प्रसाद तिवारी और श्री गणेश नारायण खंडेलवाल के साथ मंडला जेल भेज दिया। डिप्टी कलेक्टर मंडला द्वारा 6 माह की सख्त सजा दी गयी, मेरे भाई पैरवी के लिये एक वकील लाये थे, मैंने पैरवी कराने से इंकार कर दिया था।

जेल से छूटने के एक माह पूर्व श्री एस0सी0 नेहाल जेलर ने आफिस में बुलाकर मुझसे कहा कि- 'आपके पिता की तबियत बहुत खराब है। आपके जेल आने के बाद से ही वे बहुत बीमार हैं। आप एक माफीनामा लिखकर दे दो तो आपको छुट्टी दे दी जायेगी।' मैंने जवाब दिया कि पिताजी तो क्या यदि पूरा परिवार भी समाप्त हो जाये तो भी मैं माफीनामा नहीं दूँगा।

मेरे जेल से आने के 25 दिन पश्चात् पिताजी की मृत्यु हो गई। मेरी जो किराने की दुकान थी, लंबे समय तक बंद रहने के कारण सारा सामान खराब हो गया, दुकान में चोरी भी हो गई, इस कारण दुकान

भी बंद हो गई। इस प्रकार जेल से आने के बाद मुझे बहुत कष्ट उठाने पड़े। देश के आजाद होने के बाद आज भी मैं समाज एवं देशसेवा में संलग्न हूँ। पद की कभी चाह नहीं रही। जैन समाज की सेवा भी यथाशक्ति करता रहा हूँ। पराधीनता के दिनों का स्मरण कर प्रभु से यही प्रार्थना करता हूँ कि किसी देश को कभी पराधीन न बनायें।"

आ0-(1) म0 प्र0 स्वा0 सै0, भाग-1, पृष्ठ-210 (2) जै0 स0 रा0 अ0 (3) स्वा0 प0

श्री बाबूलाल झांझरिया

इन्दौर (म0प्र0) के श्री बाबूलाल झांझरिया, पुत्र-श्री पन्नालाल का जन्म 10 अक्टूबर 1924 को हुआ। आपने बी0एस0सी0, एम0ए0, एल0एल0बी0 की परीक्षायें उत्तीर्ण कीं। 1942 के आन्दोलन में भाग लेने के कारण 3 सप्ताह का कारावास आपने भोगा। विद्यार्थी अवस्था से ही आन्दोलन से सम्बन्धित विभिन्न गतिविधियों में आप संलग्न रहे। आपके अन्य दो भाई भी जेलयात्री रहे हैं।

आ0-(1) म0 प्र0 स्वा0 सै0, भाग-4, पृष्ठ-32

श्री बाबूलाल पलन्दी

दमोह (म0 प्र0) के श्री बाबूलाल पलन्दी का जन्म 4-2-1920 को श्री नाथूराम पलन्दी के घर



हुआ। 1932 में जंगल सत्याग्रह में भाग लेने के कारण न्यायाधीश जगन्नाथ प्रसाद ने पलन्दी जी को अदालत उठने तक की सजा दी थी, फलत: शासकीय विद्यालय से भी आपको निकाल दिया गया।

पलन्दी जी श्री रघुवर प्रसाद मोदी से अत्यधिक प्रभावित रहे। 1939 में त्रिपुरी कांग्रेस में आपने स्वयंसेवक के रूप में भाग लिया था। 1941 में महायुद्ध में अंग्रेजों की मदद न करने का संदेश लेकर आप गांव-गाव घूमे, गिरफ्तार हुए, परन्तु सबूत न मिलने के कारण छोड़ दिये गये। 1942 के आंदोलन में 13 अगस्त को आप गिरफ्तार हुए और पहले सागर फिर नागपुर जेल भेज दिये गये, पुन: मुकदमा के लिए सागर जेल लाये गये। 4 जून 1943 को आप रिहा हुए।

दमोह जिला कांग्रेस कमेटी के महामंत्री रहे पलन्दी जी जैन समाज के प्रत्येक कार्य में अग्रणी रहते थे। अपनी मृत्यु के समय 26-3-1985 तक आप 'कमला नेहरू कालेज' के सचिव एवं 'स्वतंत्रता संग्राम सैनिक संघ' दमोह के उपाध्यक्ष रहे थे।

आ0-(1) म0 प्र0 स्वा0 सै0, भाग-2, पृष्ठ-86 (2) श्री संतोष सिंघई द्वारा प्रेषित परिचय

'पद्मश्री' बाबूलाल पाटोदी

'व्यक्ति नहीं संस्था' के रूप में विख्यात जैन समाज के प्रतिभावान, निर्भीक, कर्मठ, लोकप्रिय नायक,



अमृत पुरुष, 'पद्मश्री' से सम्मानित श्री बाबूलाल पाटोदी का जन्म ग्राम-सूमठा, तहसील-देवालपुर, जिला-इन्दौर (म0प्र0) में 15 जून 1920 को पिता श्री छोगा लाल पाटोदी के घर हुआ। 1936 में अजमेर बोर्ड से मैट्रिकुलेशन परीक्षा पास कर आप कपड़ा मार्केट में फर्म दुलीचंद वीरचंद के यहाँ सेवायोजित हुए। 1940 में नौकरी छोड़कर कपड़ा मार्केट इन्दौर में स्वतंत्र व्यवसाय प्रारम्भ किया।

धार्मिक, सामाजिक एवं राजनैतिक क्षेत्र के सम्यक् अनुशास्ता पाटोदी जी की राजनैतिक क्षेत्र में अविस्मरणीय सेवायें रहीं हैं। आप जीवन के प्रारम्भिक काल से ही कांग्रेस के निष्ठावान एवं सक्रिय सदस्य

रहे हैं। 1938 में वस्त्र व्यवसाय हेतु आपने रंगून की यात्रा की थी। 1939 में तत्कालीन इन्दौर रियासत द्वारा जलकर के विरोध में जनहित में आंदोलन किया एवं हड़तालों में प्रमुख रूप से भाग लिया। प्रजामण्डल आन्दोलन में भी आपने सक्रिय भाग लिया था।

1939 से ही आप स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय हो गये थे। 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में भी आपने सक्रियता से भाग लिया। फलतः गिरफ्तार हुए और 15 माह जेल की दारुण यातनायें सहीं। इससे पूर्व भी लगभग 6 माह की जेल-यात्रायें आप कर चुके थे। आप इन्दौर, महेश्वर, मंडलेश्वर, मानपुर, महिदपुर आदि जेलों में रहे थे। 1947 में तत्कालीन इन्दौर रियासत में 'आजादी दो' आन्दोलन के तार तम्य में आपने राजमहल 'माणिक बाग' का घेराव किया था।

चुंबकीय व्यक्तित्व के धनी पाटोदी जी अपना प्रेरणा स्त्रोत श्री मिश्रीलाल गंगवाल (पूर्व मुख्यमंत्री, मध्यभारत) और बाबू लाभचंद जी को मानते हैं। इस संदर्भ में 18 मई 1995 को डॉ० विक्रम जैन को दिये एक साक्षात्कार में आपने कहा है–

'याद करता हूँ मैं बाबू लाभचंद जी और मिश्रीलाल जी गंगवाल को, जिन्होंने राजनीति में प्रवेश दिलाया। राजनीति में भी मैंने जमकर काम किया। कांग्रेस का जनरल सेकेट्री रहा, प्रजामण्डल का प्रेसीडेन्ट रहा, अ०भा० कांग्रेस के (इन्दौर) महाधिवेशन का जनरल सेकेट्री रहा। .... उसके बाद लोगों ने मुझे म्युनिसीपाल्टी में चुना, विधानसभा में चुना, वहाँ पर भी मैंने अपनी पूरी शक्ति के साथ इन्दौर के एक सही प्रतिनिधि के नाते काम किया। राजनीति के अन्दर रचपच गया।'

तत्कालीन राजनैतिक उठापटक के समय भी आप पूर्णतः ईमानदार रहे, जो आपके जीवन का सबसे उजला पृष्ठ है। राष्ट्रहित को सदैव सर्वोपरि मानने वाले पाटोदी जी के विचार हैं– 'राजनीति में उठापटक होती है, और वह करना आवश्यक भी होता है, लेकिन मैं आपको कह सकता हूँ ईमानदारी के साथ, कि मैंने राजनीति में रहकर भी हमारे जो बड़े नेता थे, उनकी चाटुकारिता नहीं की। बावजूद इस सबके भी मैंने हमेशा राष्ट्रीय हित को ध्यान में रखा और जब कभी भी मेरी पार्टी पर-मेरे पक्ष पर विरुद्ध पक्ष की तरफ से कोई तीखे प्रहार होते थे, तो सरकार या मेरी पार्टी मुझे ही हमेशा खड़ा करती थी कि मैं उनके उत्तर देकर उनकी समझाइस करूँ।'

राजनीति में रहते हुए भी आपने चरित्र को सबसे ऊँचा माना। आपके अनुसार उसी चरित्र के बल पर 'समाज के बढ़े काम' कर सके हैं। आजादी के तत्काल बाद 1948 और फिर 1952 में आप इन्दौर नगरपालिका के अध्यक्ष चुने गये। 1954-56 में म०प्र० कांग्रेस कमेटी के महामंत्री और 1957 में इन्दौर में सम्पन्न हुए अ० भा० कांग्रेस के अधिवेशन के आप स्वागत समिति के महामंत्री थे। 1957 और 1962 में आप म०प्र० विधान सभा के विधायक निर्वाचित हुए। 1957 में आप लोक लेखा समिति तथा परिसीमन आयोग के सदस्य रहे। आप इन्दौर विश्वविद्यालय (वर्तमान नाम-देवी अहिल्या विश्व-विद्यालय) विधेयक प्रबर समिति के भी अध्यक्ष रह चुके हैं।

वर्तमान राजनैतिक परिदृश्य और पुनः राजनीति में आने के प्रश्न पर आपने कहा– 'आज की जो राजनीति है, वह-वह राजनीति नहीं कि जिस वक्त हमने स्वतंत्रता आंदोलन में हिस्सा लिया था। एक स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक बनकर हम स्वराज्य प्राप्ति के लिए इस देश के अन्दर कूदे थे। आज की राजनीति पावर के पीछे है। आज जो व्यक्ति राजनीति में प्रवेश करता है, वह इसलिये करता है कि कल उसे कोई पद मिलेगा और उसके लिए वह उठापटक करता है। यहाँ तक कि हम देखते हैं कि रोज मारपीट-छुरेबाजी भी होती है।

मैं जब तक राजनीति में था, उठापटक भी यदि कोई होती थी, तो बहुत ही मर्यादा के साथ होती थी। कभी राजनीति के अम्दर हमने विरोधी पक्ष वालों से भी संघर्ष नहीं किया। हमारा जो भी संघर्ष रहता था, वह नीतियों का रहता था। द्वन्द-युद्ध नहीं होता था और हम लोग आपस में मिल-जुलकर प्रेम और सद्‌भाव से व्यवहार करते थे। वह राजनीति आज समाप्त हो गई है। इसलिए जीवन में कभी कल्पना भी नहीं कर सकता कि कोई सन्त, यदि वह सन्त है, तो मुझे कभी कहेगा कि तुम पुन: राजनीति में आओ.......... अगर कोई कह भी दे, तो आज की स्थिति में तो मैं राजनीति में प्रवेश नहीं करूंगा।'

सिर पर सदैव गांधी टोपी और खद्दर के कपड़े धारण करने वाले पाटोदी जी ने इसका कारण बताया –'गांधी जी की एक आंधी चली थी। इस गांध ी की आंधी ने देश के नौजवानों के रक्त के अन्दर एक नया प्रवाह दिया था। उस प्रवाह का यह परिणाम था कि हमने बहुत कम उम्र में यानी जब मैं 19 साल का था, तब गांधी जी के आन्दोलन से प्रेरित होकर यह नियम लिया कि हम हथकती खादी ही पहनेंगे। तब से आज तक मुझे याद नहीं आता कि मैंने खादी के सिवाय किसी दूसरे वस्त्र को धारण किया होगा। .... यह टोपी मेरी नहीं, गांधी की टोपी है। इस टोपी को मैं जीवन भर इज्जत के साथ निभाऊँगा, ऐसा मेरा विचार है, प्रण है।'

सक्रिय रचनात्मक ऊर्जा के धनी पाटोदी जी 1971 में राजनीति से हटकर समाजसेवा के कार्य में आये, वहाँ भी आप ऊँचाइयों की चरम सीमा पर पहुंचे। समाज विशेषत: जैन समाज के आप कण्ठहार हैं। समाजसेवा की ओर मोडने का श्रेय आप पूज्य आचार्य विद्यानन्द जी महाराज को देते हैं। 1967 में जब आप विधान सभा चुनाव हार गये तब आचार्य श्री के पास आगरा गये और फिर आचार्य श्री का चातुर्मास इन्दौर में कराया, तभी से आपका जीवन राजनीति से धर्म की ओर मुड़ गया। आपने स्वयं स्वीकार किया है कि -'उसके बाद अनेक अवसर चुनाव लड़ने के आये पर मेरे हृदय ने राजनीति में जाना स्वीकार नहीं किया। उन महाराज (विद्यानन्द जी) के आशीर्वाद स्वरूप मैंने राजनीति के गन्दे नाले को छोड़कर उनके चिन्तन में प्रवेश किया।'

सदैव स्पष्ट और निर्भीक वक्ता पाटोदी जी इन्दौर एवं देश की लगभग 100 संस्थाओं से जुड़े हैं। 1957 में आपने इन्दौर नगर में विभिन्न अशासकीय महाविद्यालयों की स्थापना की और कराई। इन्दौर विश्वविद्यालय की स्थापना हेतु अर्थसंग्रह के आप प्रमुख कर्ता-धर्ता थे। इन्दौर में अशासकीय क्षेत्र में पॉलिटेकनिक की स्थापना आपने ही करवायी थी। अन्य प्रमुख सामाजिक कार्य हैं - कैंसर चिकित्सालय एवं दन्त चिकित्सा महाविद्यालय के निर्माण में योगदान, इन्दौर में नर्मदा लाने का प्रयत्न, 'माता विजासन' की टेकरी के निर्माण हेतु प्रयास, 'श्री बाल विनय मन्दिर', 'देवी अहिल्या शिशु विहार,' 'श्री क्लाथ मार्केट कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय' एवं 'कन्या वाणिज्य महाविद्यालय' की स्थापना एवं संचालन। इन्दौर क्लाथ मार्केट को0आप0बैं0लि0 की स्थापना एवं अध्यक्षता, 'सरूपचंद हुकुमचंद पारमार्थिक ट्रस्ट' एवं 'त्रिलोक चंद कल्याण मल ट्रस्ट' के ट्रस्टी के रूप में अनेक पारमार्थिक संस्थाओं का संचालन। मुक्ताकाश रंगमंच की स्थापना, गुमाश्तानगर एवं नेमीनगर की स्थापना आदि।

जैन समाजसेवी के रूप में पाटोदी जी युगों-युगों तक स्मरण किये जायेंगे। आप अ0भा0 दि0 जैन महासमिति के अनेक वर्षों तक महामंत्री रहे हैं। इन्दौर में गोम्मटगिरि नामक नवीन तीर्थक्षेत्र की स्थापना आपके अथक परिश्रम का मूर्तरूप है। बावनगजा की 84 फुट ऊँची भ0 आदिनाथ की प्रतिमा के जीर्णोद्धार में भी

आपने महती भूमिका निभाई है। स्वयं आपके शब्दों में–

'गोम्मटगिरि तीर्थ की स्थापना मेरे जीवन की अद्‌भुत उपलब्धि है........ बावनगजा की विशाल मूर्ति का जीर्णोद्धार मेरे जीवन की प्रमुख उपलब्धियाँ मानता हूँ' (वीर निकंलक, मई 1995)

'एक साथ, इतनी संस्थाओं का संचालन आप कैसे कर लेते हैं यह पूछे जाने पर आपने एक साक्षात्कार में कहा है–

'सही व्यक्ति का चुनाव, लक्ष्य के प्रति समर्पण और दृढ़ आत्मविश्वास एवं आत्मिक बल मेरी सफलता के कारण हैं। खुली आंख और खुले कान नेतृत्व को रखना चाहिए।'

वाणी के जादूगर श्रद्धेय पाटोदी जी को सम्मान और पुरस्कार देकर राष्ट्र/समाज ने उनकी सेवाओं की सराहना की है। 26 जनवरी 1991 को भारत सरकार ने आपकी नि:स्वार्थ सेवाओं के लिए 'पद्मश्री' प्रदान की। 1993 में श्रवणबेलगोल में भगवान् गोम्मटेश्वर के महामस्तकाभिषेक महोत्सव के अवसर पर लाखों लोगों की उपस्थिति में 'समाजरत्न' की उपाधि से अलंकृत किया गया था। मई 1995 में पचहत्तर वर्ष पूर्ति प्रसंग-(अमृत महोत्सव) पर एक 'अन्तरंग ग्रन्थ 'भेंट कर आपका सम्मान किया गया था। इस ग्रन्थ में जैन समाज के शीर्ष नेता साहू अशोक कुमार जैन ने ठीक ही कहा है–'जब तक गोम्मटगिरि के श्रृंग उन्नत हैं और बावनगजा के आदिनाथ की मनोहारी छवि अंकित है, तब तक अमृत पुरुष पाटोदी जी की कीर्ति पताका फहराती रहेगी।'

आ0- (1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-4, पृष्ठ-31 (2) जै0 स0 वृ0 इ0, पृ0-590 (3) जैन संदेश, 18 अप्रैल 1991 (4) वीर निकलंक, मई 1995 (5) श्री बाबूलाल पाटोदी अन्तरंग ग्रन्थ-1995 (6) दैनिक भास्कर, इन्दौर, 15 अगस्त 1997 (7) चौथा संसार, इन्दौर, 22 अगस्त 1997

श्री बाबूलाल मलैया

गढ़ाकोटा, जिला-सागर (म0प्र0) निवासी श्री बाबूलाल मलैया, पुत्र-श्री दरबारीलाल ने 1932 के स्वतंत्रता संग्राम में 5 माह का कारावास भोगा। 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में भी आप नजरबंद रहे थे।

आ0- (1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-2, पृष्ठ-47 (2) आ0 दी0, पृष्ठ-64

श्री बाबूलाल संघी

गढ़ाकोटा, जिला-सागर (म0प्र0) निवासी और जबलपुर प्रवासी श्री बाबूलाल संघी का जन्म प्रतिष्ठित जैन परिवार में 1908 में हुआ। आपके पिता का नाम श्री मन्नूलाल था। 1930 और 1932 के आन्दोलन में आपने भाग लिया, फलत: गिरफ्तार हुए और सागर जेल में 4 माह का कारावास आपने भोगा। 1985 के आसपास आपका निधन हो गया।

आ0- (1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-1, पृष्ठ-79 (2) सिंघई रतनचंद जी द्वारा प्रेषित विवरण (3) स्व0 स0 ज0, पृष्ठ-143

श्री बाबूलाल सिंघई

आरी, जिला-होशंगाबाद (म0प्र0) के श्री सिंघई बाबूलाल, पुत्र-श्री सुखलाल 1920 से रा0 आ0 में कार्य करते रहे। 1941 में आप नजरबंद रहे। 1942 में गांधी जी के आह्वान पर जब सारा देश 'करो या मरो' की भावना से आंदोलन कर रहा था, तब आप आन्दोलन में कूद पड़े और 18 दिन की जेल यात्रा की। रचनात्मक कार्यों में रुचि रखने वाले सिंघई जी शुद्ध खादी के विक्रेता रहे हैं।

आ0- (1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-5, पृष्ठ-334 (2) स्व0 स0 हो0, पृष्ठ-114

डॉ० बालचंद जैन

राष्ट्रीय आंदोलन की स्मृतियों को अपने हृदय में आज भी संजोकर रखने वाले श्री बालचंद जैन का जन्म 15 अक्टूबर 1919 को सागर (म0प्र0) में



हुआ। आपके पिता का नाम श्री कुन्दन लाल जैन था। आपने पी एच0डी0 की उपाधि प्राप्त की है तथा अनेक पुस्तकों का लेखन और संपादन किया है। अपने राजनैतिक जीवन का परिचय देते हुये आप स्मृतियों में खो जाते हैं। आपने लिखा है-

'पूरा देश देश-प्रेम की भावना से उमड़ रहा था। "मेरा रंग दे बसन्ती चोला मां............." के उद्घोष से पूरा देश गुंजायमान हो रहा था। इस देश की सदियों की दासता से सुप्त पड़ी रागिनी के तार पुनः झंकृत हो रहे थे। स्वदेशी आन्दोलन ने पूरे देश को झकझोर दिया था। विलायती चीजों, विशेषतः वस्त्रों, की होली गांव-गांव तक फैल गई थी। तब मैं गांव के एकमात्र प्राइमरी स्कूल में पढ़ता था। उसी समय से देश-प्रेम के बीज अंकुरित हुए। प्राइमरी की परीक्षा उत्तीर्ण होने के बाद आगे की पढ़ाई के लिये बनारस भेज दिया गया। उस समय गांव से बाहर जाना एक अद्भुत तथा निराली घटना मानी जाती थी। बनारस ने मेरे सामने अध्ययन, (पूर्वीय और पाश्चात्य दोनों) के कपाट खोल दिये। यह एक नक्षत्र ही नहीं, एक समूचा आकाश था। पश्चिमीकरण और पुनर्जागरण की दोनों विचाराधाराओं ने मुझे प्रभावित किया। यह इन परस्पर विरोधी विचारधाराओं के संगम का युग था।

प्रारंभ में मुझे बनारस के भदैनी मुहल्ला में स्थित स्याद्वाद जैन विद्यालय में स्थान मिला। जैन धर्म-दर्शन के अध्ययन के लिये ही मुझे बनारस भेजा गया था। लेकिन वहां रहते हुए ज्ञान-विज्ञान की अन्य विद्याओं के द्वार खुल गये। फलतः मैंने जैनधर्म-दर्शन के अध्ययन के अतिरिक्त संस्कृत के व्याकरण और साहित्य के साथ अंग्रेजी के पढ़ने का पूरा लाभ उठाया।

मैट्रिक पास करने के बाद मैंने बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में कला विषय में प्रवेश लिया। वहीं से स्वाधीनता आन्दोलन से जुड़ा। वहां के मेरे समकालीन साथियों में श्री राजनारायण भी थे। छात्र-आन्दोलन के माध्यम से ही मैं बनारस में पं0 कमलापति त्रिपाठी, डॉ0 सम्पूर्णानन्द, आचार्य नरेन्द्रदेव जी, श्री श्रीप्रकाश जी आदि के सम्पर्क में आया। इन्हीं दिनों मेरे पड़ोस में पं0 जयचंद जी विद्यालंकार रहते थे, जो लाहौर के नेशनल कॉलिज में अमर शहीद भगतसिंह के गुरु रहे थे। इन्हीं की प्रेरणा से मैं तभी से क्रान्तिकारी गतिविधि यों में संलग्न हो गया। सन् 1942 की अगस्त क्रान्ति के समय पं0 जयचन्द जी के आदेशानुसार संदेशों का आदान-प्रदान और उत्तर-पश्चिमी सीमा प्रान्त तथा बर्मा फ्रन्ट से शस्त्रास्त्र लाना तथा उनको संग्रहीत कर उनके उपयोग के समय आदान-प्रदान करने का कार्य मेरी जिम्मेदारी थी। संग्रहीत करने का कार्य भदैनी स्थित एक जैन मन्दिर (छेदी लाल का मंदिर) का तलघर था।

हमारे एक कार्यकर्ता की कमजोरी के कारण पुलिस को पता चल गया। इस प्रकार एक वर्ष तक अगस्त 1942 से अगस्त 1943 तक मैं अन्डर ग्राऊण्ड की गतिविधियों में संलग्न रहा था। 1943 में मैं गिरफ्तार हो गया। गिरफ्तारी के समय मेरे पास से मात्र एक बड़ा चाकू बरामद हुआ था। गिरफ्तार कर मुझे बनारस की चौक में स्थित कोतवाली पुलिस थाना के लॉक-अप में अगस्त-सितम्बर 1943 के दो महीनों के बाद, 4-10-1943 को शस्त्र-अधिनियम के तहत बनारस की जिला जेल भेज दिया गया।

प्रारंभ में विचाराधीन कैदी के रूप में मुझे अन्य कैदियों से अलग एक कोठरी में रखा गया, जहां हथकड़ी और बेड़ियां ही मेरी साथिन थीं। विचाराधीन कैदी के रूप में दो माह तक अलग कोठरी में रखने के बाद पर्याप्त साक्ष्य न मिलने के कारण मुझे

अन्य नजरबन्द कैदियों के साथ बैरक में भेज दिया गया। इस बैरक में हम सभी काशी विश्वविद्यालय के छात्र थे। बैरक के भीतर ही एक अलग काल-कोठरी थी जिसमें फांसी के सजायाफ्ता कैदी रखे जाते थे।

आठ माह बाद मुझे जिला जेल से बनारस के केन्द्रीय कारागार भेज दिया गया। यहाँ मेरे वरिष्ठ सहयोगी श्री खुशालचन्द जी गोरावाला भी थे। विद्यालय के अन्य कनिष्ठ साथियों में श्री रतन पहाड़ी भी थे। बनारस के अन्य क्रान्तिकारी भी यहीं रखे गये थे। इसी जेल में विशुद्ध गांधीवादी और सर्वोदयी भी थे। यहीं मैंने श्री राजनारायण को बैरक के बाहर एक चबूतरे पर रामायण का सस्वर पाठ करते सुना था। यहां समय-समय पर कविता-पाठ, वाद-विवाद, समूह-चिन्तन आदि भी हुआ करते थे। मैं अपने स्वभाव के अनुसार यहां भी एकान्त पसन्द करता था, जिसके कारण लोग मुझे क्रान्तिकारी समझते थे।

उपरोक्त कारागार से एक वर्ष बाद मुझे नैनी (इलाहाबाद) के केन्द्रीय कारागार में स्थानान्तरित कर दिया गया। इस जेल में काकोरी कांड के बंदी भी एक पिंजरे जैसी कोठरी में कैद थे, यहां मुझे नजरबंद कैदियों की बैरक में रखा गया, इस बैरक में श्री लाल बहादुर शास्त्री, श्री कमलापति त्रिपाठी, श्री राजाराम शास्त्री आदि नजरबंद थे। यहीं पं0 जवाहर लाल नेहरू एक दिन के लिये रफी साहब के साथ ही अन्य नेताओं से परामर्श के लिये रुके थे।

नैनी की केन्द्रीय जेल से 1945 में रिहा होने के बाद हम सब सेनानियों का इलाहाबाद में राजर्षि पुरुषोत्तम दास टण्डन की अध्यक्षता में स्वागत किया गया। इधर मुझे पता चला कि मुझे बनारस से जिला-बदर कर दिया गया है, फिर भी मैंने किसी तरह बनारस में ही रहकर अपना अध्ययन पूर्ण किया।'

मध्यप्रदेश के एक महाविद्यालय के प्राचार्य पद से सेवानिवृत डॉ0 साहब का कहना है-'आज तो हम अपने देश के इतिहास की उस दहलीज पर खड़े हैं जहां स्वर्ग से वे लोग हमारे करम-धरम पर हंस रहे हैं मानों क्रान्ति हमसे रूठकर हमें छोड़कर चली गई है। हम राह छोड़कर अंधेरे में भटक रहे हैं। तूफानी और अंधेरी रात में इस नैय्या पार लगाने के लिये अब और एक गांधी की जरूरत है।'

आ0- (1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-3, पृष्ठ-186 (2) प0 जै0 इ0, पृष्ठ-525 (3) स्व0 प0 (4) जै0 स0 रा0 अ0

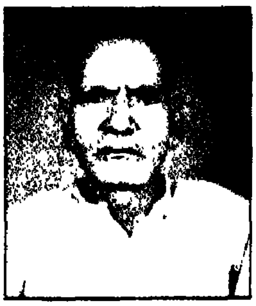
श्री बालचंद जैन

ग्राम-बलेह, जिला-सागर (म0प्र0) के श्री बालचंद जैन, पुत्र-श्री परमानंद जैन ने असहयोग आंदोलन, जंगल सत्याग्रह एवं भारत छोड़ो आन्दोलन में भाग लिया। 16 मई 1941 से 27 मई 1941 तक का कारावास भोगकर आपने देश की आजादी का मार्ग प्रशस्त किया।

आ0- (1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-2, पृष्ठ-46 (2) आ0 दी0, पृष्ठ-63

श्री बालचंद जैन

श्री बालचंद जैन, पुत्र-श्री फूलचंद जैन का जन्म 1912 में खुरई जिला-सागर (म0प्र0) में



हुआ। आपने शिक्षा नाम मात्र की प्राप्त की लेकिन लाखों का हिसाब केवल मुँहजबानी ही करते हैं। शेर की गर्जन जैसी आवाज आज भी बरकरार है। आप चिरकुमार हैं। संयमित जीवन व्यतीत करना आपका दिनचर्या है। भोजन भी आप एक बार लेते हैं।

1930 की बात है, कई दिनों पूर्व से ही चर्चा थी कि फलां दिन सत्याग्रहियों द्वारा नमक कानून का उल्लंघन होगा, कानून तोड़ा जायेगा। अत: एकलौती संतान होने के कारण परिवार जनों द्वारा बालक

बालचंद को विशेष हिदायतें देकर एक कोठे में बंद कर दिया गया, ताकि बालचंद सत्याग्रह में न पहुँच सकें और न ही गिरफ्तार होकर अंग्रेजों की यातनायें सहें। परिवार के लोग जैसे ही दैनिक कार्यों में लगे आप कमरे के ऊपर की लकड़ी एवं पत्थरों से बनी छत उधेड़कर साथी सत्याग्रहियों से जा मिले और नमक बनाकर कानून तोड़ा। तिरंगा झंडा लेकर 'वन्दे मातरम्' 'इंकलाब जिन्दाबाद' आदि नारों का जयघोष करते हुए गिरफ्तारी दी। जब परिवार वालों को खबर लगी कि 'आपके बालचंद गिरफ्तार हो गये हैं' तब उन्हें विश्वास नहीं हुआ क्योंकि वे तो कमरे में बंद थे। बाद में जब कमरे में देखा तो विश्वास हुआ। आपको 7 माह का सश्रम कारावास सागर जेल में मिला।

आ0- (1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-2, पृष्ठ-46 (2) आ0 दी0, पृष्ठ-63 (3) स्व0 प0

डॉ० बाहुबलकुमार जैन

सम्प्रति न्यूयार्क (अमेरिका) प्रवासी प्रसिद्ध हृदय रोग विशेषज्ञ डॉ0 बाहुबलकुमार जैन का जन्म



आषाढ कृष्णा 5 संवत् 1991 (सन् 1934) में बरेली, जिला-रायसेन (म0प्र0) में हुआ। आपके पिता का नाम श्री लक्ष्मीचंद जैन एवं माता का नाम चेनाबाई था। एम0डी0 आदि अनेक चिकित्सक उपाधियों के धारक डॉ0 जैन ने 14 वर्ष की उम्र में 'भोपाल विलीनीकरण आन्दोलन' में भाग लिया, फलत: गिरफ्तार कर 6 जनवरी 1949 को सैन्ट्रल जेल भोपाल में भेज दिये गये, जहाँ लगभग 37 दिन आपको यातनायें भोगनी पड़ीं।

आ0- (1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-5, पृष्ठ-86

पंडित बेचरदास जीवराज डोसी

बीसवीं सदी के जैन दर्शन एवं प्राकृत के प्रख्यात विद्वान् श्रद्धेय पंडित बेचरदास डोसी का जन्म वल्लभीपुर में 1889 ई0 में हुआ। दस वर्ष की आयु में ही पिता का देहांत हो गया। माँ मेहनत-मजदूरी करके घर चलातीं। आप भी माँ का हाथ बंटाने उनके साथ जाते। तभी भाग्य ने पलटा खाया। गुजरात के प्रसिद्ध जैन मुनि श्री विजय धर्म सूरि की नजर आप पर पड़ी और आप जैन दर्शन के शिक्षण के लिये चुन लिये गये। पालीताना में कुछ महीने पढ़ने के बाद आप वाराणसी चले गए, वहां जैन दर्शन एवं प्राकृत का विशद अध्ययन किया। वाराणसी में अध्ययनरत रहते हुए आपने 'श्री यशोविजय जैन सीरीज' का सम्पादन किया। इसके द्वारा प्रकाशित न्याय और व्याकरण की पुस्तकें कलकत्ता संस्कृत कॉलेज के पाठ्यक्रम में सम्मिलित की गयीं। यहीं से आपने 1913 में न्यायतीर्थ और 1914 में व्याकरण तीर्थ की परीक्षायें उत्तीर्ण कीं। इसके बाद आप श्रीलंका गये और पाली भाषा और बुद्धत्व का विशेष अध्ययन किया।

इन्हीं दिनों महात्मा गांधी के क्रान्तिकारी विचारों का प्रभाव आप पर पड़ा। 1919 में बम्बई नगर में 'जैन शास्त्रों के भ्रष्ट रूपान्तरों का समाज पर नुकसानकारक प्रभाव' विषय पर आपके व्याख्यानों ने जैन समाज में हलचल मचा दी। धर्म के नाम पर चल रहे पाखण्ड के भंडाफोड़ से महन्त व आचार्य बौखला गए और आपको समाज बहिष्कृत कर दिया गया तथा 'खतरनाक', 'परम्पराधारी' एवं 'नास्तिक' जैसी गालियां दी गईं। परन्तु आप जैन युवकों एवं विचारकों के चेहते बन गए। बहुतों ने उन व्याख्यानों से प्रेरणा ग्रहण की। परन्तु पंडित जी ने हार नहीं मानी।

1921 में आप गांधी जी द्वारा स्थापित 'पुरातत्त्व मन्दिर' में सम्मिलित हो गये और पं0 सुखलाल संघवी के साथ प्रसिद्ध ग्रन्थ 'टीका सन्मति तर्क' का

सम्पादन किया। इसके बाद आपने गुजराती में अन्य आगमों का अनुवाद किया।

गांधी जी की दाण्डी यात्रा के दौरान आपने प्रसिद्ध समाचार पत्र 'नवजीवन' का सम्पादन किया और 9 महीनों के लिए जेल गये। जेल से बाहर आने के बाद 1936 तक ब्रिटिश शासन के राज्य क्षेत्र में प्रवेश नहीं कर सके। गुजरात में कांग्रेस सरकार के बनने के बाद ही आप वापिस आ सके। वे सभी वर्ष आपने अत्यधिक वित्तीय परेशानियों में गुजारे। बाद में आप अहमदाबाद के एल0डी0 आर्ट्स कॉलेज में प्राकृत के व्याख्याता बने। वहाँ से सेवानिवृत होने के बाद अवैतनिक प्रोफेसर के रूप में एल0 डी0 इंस्टीट्यूट ऑफ इण्डोलॉजी, अहमदाबाद को भी आपने अपनी सेवायें दीं। 1963 में केन्द्रीय सरकार ने संस्कृत के विशिष्ट विद्वान् का प्रशस्ति पत्र एवं 5000 रु0 की वार्षिक पेंशन देकर आपको सम्मानित किया। आपने 50 से अधिक पुस्तकों का सृजन एवं सम्पादन किया है। आपको 1974 में 'वीर निर्वाण भारती' द्वारा 2500/- के पुरस्कार से सम्मानित और अभिनन्दित किया गया था। अक्टूबर 1982 में आपका निधन हो गया।

आ0- (1) Progressive Jains, P. 64 (2) इ0 अ0 ओ0, खण्ड-2, पृष्ठ-410-411

श्री भंवरमल सिंघी

नये समाज के स्वप्नदृष्टा, कवि, चिन्तक, सामाजिक एवं धार्मिक क्रांतियों के प्रणेता एवं कलाकार श्री भंवरमल सिंघी का बहुआयामी संघर्षशील व्यक्तित्व जैनों के लिए ही नहीं, समस्त भारतीय समाज के लिए प्रेरणास्रोत है। सिंघी जी का जन्म 1914 ई0 में जोधपुर (राज0) ने निकट बड़ू ग्राम की एक झोपड़ी में हुआ। मिडिल की परीक्षा में आपको सर्वोच्च अंक मिले किन्तु घर की हालत पतली थी। पहले बिसातखाने की और फिर पान की दुकान पर आपको बैठना पड़ा; परन्तु आप पढ़ते रहे। हाईस्कूल की परीक्षा में जयपुर में आपने सर्वोच्च अङ्क प्राप्त किए। अत: आपको 'ग्लासी गोल्डमेडल' प्रदान किया गया। किन्तु नियति को कुछ और ही मंजूर था। पिता की जब 'अमानत में खयानत' के मुकदमे में गिरफ्तार होने की नौबत आई तो माँ के गहने और अपना गोल्डमेडल बेचकर साहूकार की भरपाई करनी पड़ी।

आपने हिन्दी साहित्य सम्मेलन की विशारद एवं साहित्यरत्न परीक्षाएं उत्तीर्ण कीं। तभी आपका सम्पर्क श्री कंवरलाल बापना से हुआ, जो प्रतिभावान वकील थे एवं आजादी के बाद राजस्थान उच्च न्यायालय के प्रथम मुख्य न्यायाधीश बने थे। उनके सहयोग से सिंघी जी काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में पढ़ने चले गये। यहाँ उनकी भेंट हिन्दी के प्रसिद्ध उपन्यासकार श्री प्रेमचंद से हुई जिनकी प्रेरणा से सिंघी जी ने गद्य गीत लिखने आरम्भ किये जो 'हंस' में प्रकाशित हुए।

प्रेमचन्द की संवदेना एवं उदात्त मूल्यों के प्रति आस्था ने सिंघी जी के जीवन की दिशा निर्धारित कर दी। बनारस से स्नातक परीक्षा उत्तीर्ण कर आप कलकत्ता आ गए। यहाँ आकर आपकी प्रतिभा चमक उठी, क्षेत्र विस्तृत हो गया, अनेक सामाजिक नेताओं और संस्थाओं (विशेषत: मारवाडी सम्मेलन) से आप जुड़े। 1937 में आपके गद्यकाव्यों का संकलन 'वेदना' प्रकाशित हुआ। डॉ0 सुनीति कुमार चटर्जी ने इस काव्य- ग्रंथ की भूमिका लिखी थी। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने अपने ग्रंथ 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' में सिंघी जी को गद्य गीतकार माना है (उनतीसवां संस्करण, पृष्ठ-304)।

पत्रकारिता के क्षेत्र में सिंघी जी अग्रणी रहे, आपने 'तरुण जैन' पत्र का सम्पादन एवं प्रकाशन किया और समाज को नवीन दिशा दी। 'राष्ट्रभाषा प्रचार समिति'

वर्धा की एक बैठक में आप महात्मा गांधी से मिले थे। 1942 में गांधी जी ने 'करो या मरो' एवं 'अंग्रेजो भारत छोड़ो' का नारा दिया। सिंघी जी तनमन से आन्दोलन में कूद पड़े। आन्दोलन के दरम्यान आप अनेक क्रांतिकारियों से मिले एवं भूमिगत राष्ट्रीय नेताओं से आपका घनिष्ठ सम्पर्क रहा। जब नागपुर और बम्बई के बीच रेलवे ट्रेनों को डायनामाइट से उड़ाने की योजना बनी तो सिंघी जी उसके सूत्रधार नियुक्त हुए। आप डायनामाइट प्राप्त करने में सफल भी हुए परन्तु तभी पुलिस को इसकी भनक मिल गई, तलाशी हुई और सिंघी जी गिरफ्तार कर लिये गये। प्रेसिडेंसी जेल में उन्हें वर्षों रखा गया। पेट में दर्द के कारण जब तबीयत बहुत शोचनीय हो गई तब अस्पताल में स्थानान्तरित कर दिया गया। अंतत: 1945 में रिहा किया गया।

सामाजिक क्रान्ति के सूत्रधार सिंघी जी ने 1946 में एक बालविधवा 'सुशीला जैन' से पुनर्विवाह किया जिसे मारवाड़ी समाज के गणमान्य नेताओं का आशीर्वाद प्राप्त हुआ। 1946-47 में बंगाल में साम्प्रदायिक दंगे भड़क उठे तो सिंघी जी एवं सुशीला जी ने 'बड़ा बाजार अमनसभा' के तहत मुसलमानों की सुरक्षा व्यवस्था में अहम् भूमिका निभाई। देश आजाद होने के बाद जब नेतागण अपने राजनैतिक प्रभाव भुनाने में लग गये तब सिंघी जी राजनीति को ठोकर मारकर सामाजिक सुधारों के अभियान पर निकल पड़े।

'नया समाज' के माध्यम से सिंघी जी का लेखन एक बार फिर सक्रिय हुआ। 1949 में आपने कलकत्ता में एक विराट सामाजिक क्रांति सम्मेलन का आयोजन किया जिसका सभापतित्व राजस्थान के तत्कालीन नव नियुक्त उद्योगमंत्री श्री सिद्धराज ढ्ढ़ा ने एवं उद्घाटन श्रीमती अरुणा आसफअली ने किया था।

सिंघी जी के अदम्य साहस, क्षमता और निडरता का एक उदाहरण 1950 में सामने आया। पूर्वी पाकिस्तान में फंसे हजारों हिन्दुओं को पश्चिमी बंगाल में लाने की चुनौती सामने थी। पं0 बंगाल के मुख्यमंत्री डॉ0 विधानचंद्र राय ने बड़े सोच-विचार के बाद सिंघी जी को इस अभियान की कमान सौंपी। बड़ी ही खतरनाक परिस्थिति में 17 विशाल जहाजों का बेडा लेकर सिंघी जी रवाना हुए। जैसे-जैसे पूर्वी पाकिस्तान का किनारा नजदीक आ रहा था, पानी में डूबती उतरातीं लाशें दिख रही थीं। साम्प्रदायिकता ने खुलकर खून की होली खेली थी। खुलना के पास पाकिस्तानी सेना ने आकर जहाजों को घेर लिया। नेहरू, लियाकत अली और डॉ0 विधानचंद्र राय से सम्पर्क किया गया, समझौतों की याद दिलाई गई तब कहीं पाकिस्तानी सेना राजी हुई।

ढ़ाका, नारायणगंज, चाँदपुर, बारीसाल के शरणार्थी शिविरों में घोर दुर्दशा भोगते बीस हजार हिन्दुओं को जहाजों पर लादा गया। पर रसद और ईंधन भला पाकिस्तानी क्यों देतें। रसद खत्म होते देर न लगी और तब शुरू हुआ भूख से तड़पना और दम तोड़ती मौतों का सिलसिला। कलकत्ता पहुँचने तक 150 लाशों को पानी में फेंकने के सिवाय अन्य कोई चारा नहीं था। ज्यों ही कलकत्ता पहुँचे डॉ0 राय ने सिंघी जी को गले लगा लिया। बीस हजार निराश्रितों की आँखों से प्रकट होता आभार पाकर सिंघी जी का सीना गर्व से फूल गया।

सिंघी जी की जिस कार्य के लिए देशभर में राष्ट्रीय स्तर पर सम्माननीय छवि बनी वह था परिवार नियोजन का प्रचार-प्रसार। इस अपूर्व विचार व कार्य को पूर्णत: समर्पित दो चार लोग ही हुए हैं। 1948 में पहली परियोजना क्लीनिक खुली-मातृ सेवा सदन अस्पताल के भवन में। कहते हैं पहले सात महीनों में मात्र दो स्त्रियाँ सलाह लेने आईं। पर सिंघी जी ने हार न मानी, दर्जनों लेख लिखे, पेम्फलेट छपवाकर वितरित किए, घरों और फैक्ट्रियों में जाकर प्रशिक्षण

की व्यवस्था करवाई। उनकी लिखी 'राष्ट्र योजना और परिवार योजना' पुस्तक बेहद लोकप्रिय हुई। नियोजन सम्बन्धी एक पत्रिका का नियमित प्रकाशन आपने किया। परिवार नियोजन संघ की स्थापना आपने ही की थी। पन्द्रह वर्षों तक वे इस संघ के उपाध्यक्ष रहे। इसी हेतु जापान, थाइलैंड, इंग्लैंड, फ्रांस, डेनमार्क, स्वीडन, अमरीका, नाईजीरिया, ट्यूनिशिया, चिली, सूरीनाम आदि देशों की यात्राएं कीं।

शिक्षा प्रसार में सिंघी जी की भूमिका और भी महत्त्वपूर्ण रही। कलकत्ता स्थित नोपानी विद्यालय, बालिका शिक्षा सदन, टांटिया हाई स्कूल, शिक्षायतन कालेज, पारिवारिकी आदि संस्थायें उनके निर्देशन से उपकृत हुईं। सिंघी जी आडम्बरों के कट्टर विरोधी थे। इसी कारण आपको अनेक बार अपमान और प्राणघातक हमले भी सहने पड़े। आपने अपने जीवन में अनेक सम्मान पाये। 1986 में जयपुर में आपका देहावसान हुआ।

आ0-(1) इ0 अ0 ओ0, खण्ड-2, पृष्ठ-440-444

श्री भंवरलाल जैन

श्री भंवरलाल जैन, पुत्र-श्री उत्तमचंद जैन छापीखेडा, जिला-राजगढ़ (म0प्र0)के निवासी थे। आपका जन्म 1909 में हुआ। स्वतंत्रता एवं देशप्रेम की भावना से ओत-प्रोत, गांधी जी के अनुयायी श्री जैन ने हरिजनों की सेवा की एवं प्रजामंडल का कार्य किया। 1936 में आपने आन्दोलन में भाग लेकर छापीखेड़ा का नाम देश-व्यापी बना दिया था।

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-5, पृष्ठ-116

श्री भंवरलाल जैन

रायपुर (म0प्र0) के श्री भंवरलाल जैन, पुत्र-श्री उदयचंद जैन ने सन् 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में भाग लिया तथा एक माह का कारावास भोगा।

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-3, पृष्ठ-54

श्री भंवरलाल जैन

बेगमगंज, जिला- रायसेन (म0प्र0) के श्री भंवरलाल जैन, पुत्र-श्री नवरतनलाल जैन का जन्म 1919 में हुआ। श्री जैन ने 1949 के भोपाल राज्य विलीनीकरण आन्दोलन में भाग लिया तथा 13 दिन के कारावास की सजा पाई।

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-5, पृष्ठ-77

श्री भागचंद जैन

श्री भागचंद जैन ग्राम मलावकी, तहसील लक्ष्मणगढ़ (अलवर) के निवासी थे। अलवर में विद्यार्थी जीवन में ही महावीर प्रसाद जी के सम्पर्क में आने के बाद आपने क्रांतिकारी गतिविधियों में भाग लेना शुरू किया। 1942 के आन्दोलन में रेल के तार काटे व पोस्ट ऑफिस में आग लगाई, जिसके परिणामस्वरूप षडयंत्र केस में मुजरिम रहे। किन्तु पुलिस इनको गिरफ्तार नहीं कर सकी और भूमिगत रह कर कार्य करते रहे। भारत के स्वतंत्र होने के बाद राजस्थान विधानसभा कांग्रेस पार्टी के काफी समय तक आप सचिव रहे। बाद में आपने अलवर में ही वकालत शुरू कर दी थी।

आ0- (1) प0 इ0, पृ0-138 (2) श्री महावीर प्रसाद जैन, अलवर द्वारा प्रेषित परिचय

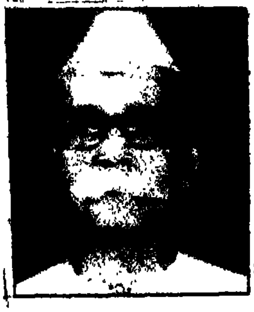
श्री भागचंद जैन

श्री भागचंद जैन, पुत्र-श्री गज्जी जैन का जन्म 1925 में ग्राम कटंगी, तहसील-पाटन, जिला-जबलपुर (म0प्र0) में हुआ। आपने 1942 के आन्दोलन में लगभग 8 माह का कारावास भोगा।

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-1 पृष्ठ-85

श्री भागचंद जैन

श्री भागचंद जैन, पुत्र-श्री दमरूलाल बैसाखिया का जन्म 4-2-1906 को नरसिंहपुर (म0प्र0) में हुआ। आपने मिडिल तक शिक्षा ग्रहण की। अध्ययन के समय ही 1922 में असहयोग आंदोलन



के समय विदेशी वस्त्रों का बहिष्कार करते हुए उनकी होली जलाई। 1931 के सविनय अवज्ञा आंदोलन में आपने विदेशी वस्त्रों की दुकानों पर धरना दिया। 1930 के नमक आंदोलन में भी आपने भाग लिया था। 1939 के त्रिपुरी कांग्रेस अधिवेशन के अवसर पर आप स्वयंसेवक बनाये गये। 1940-41 में गांधी जी के आदेशानुसार सत्याग्रह में ग्राम कमोद (गोटेगांव) जिला-नरसिंहपुर से आपने पद यात्रा प्रारम्भ की। नरसिंहपुर होते हुए आप रहली, जिला-सागर पहुँचे जहाँ 25-5-41 को गिरफ्तार कर लिया गया। 4 दिन सागर जेल में तथा 7 दिन तक होशंगाबाद जेल में रखा गया। आपने श्री फूलचंद जैन बमोरहा के साथ झाँसी तक पैदल यात्रा की, फलत: झाँसी में भी गिरफ्तार हुए; जहाँ 15 दिनों तक जेल में रहे। 20 दिन सेन्ट्रल जेल जबलपुर में धारा डी0आई0 आर0 129 (ए) के तहत बन्द रहे। आप 1920 में नरसिंहपुर से गोटेगाँव आ गये थे यहीं 14-10-78 को आपका निधन हुआ।

आ0- (1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-1, पृष्ठ-149 (2) जै0 स0 रा0 अ0 (3) पौत्र आलोक कुमार जैन द्वारा प्रेषित परिचय।

श्री भागचंद जैन

'सच्चे दादा' उपनाम से प्रसिद्ध श्री भागचंद जैन,



पुत्र-श्री लीलाधर, निवासी तेंदूखेड़ा (सगोनी), तहसील-गाडरवारा, जिला-नरसिंहपुर (म0प्र0) ने 1941 के आन्दोलन में भाग लिया। 1942 के आन्दोलन में भाग लेने पर आप गिरफ्तार हुए और 10 माह जबलपुर जेल में बंद रहे। 1983 में आपका निधन हो गया।

आ0- (1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-1, पृष्ठ-149

वैद्य श्री भानुकुमार जैन

मौ, जिला-भिण्ड (म0प्र0) के वैद्य भानुकुमार जैन, पुत्र-श्री सुखवासी लाल जैन का जन्म



24-9-1917 को हुआ। आपके पिताजी का ग्वालियर राज्य में जमीदारी एवं खेती का कार्य था, फिर भी आप 1931 में कांग्रेस के सदस्य बन गये। 1942 के आन्दोलन में आपने सक्रिय भाग लिया। जिले की कांग्रेस कार्यकारिणी ने प्रस्ताव किया कि 'कुछ कार्यकर्ता जेल जावें और 'कुछ भूमिगत रहकर आन्दोलन का संचालन करें व जेल जाने वालों के परिवारों के भरण-पोषण की व्यवस्था करें।' आपका नाम भूमिगत कार्यकर्ताओं में आ गया। हरिजन पाठशाला का संचालन भी आपने किया था। 1939 में दि0 जैन पार्श्वनाथ मेला (पंचकल्याणक महोत्सव) के आप अध्यक्ष रहे। आपने काफी समय तक 'खरौआ जैन हितैषी' पत्र का सम्पादन किया था।

आ0-(1)ख0 इ0, पृष्ठ-166 (2)स्व0 प0 एवं अनेक प्रमाणपत्र

श्री भीकमचंद जैन

अपने जीवन के मात्र 38 बसन्त देखने वाले



श्री भीकमचंद जैन का जन्म 1922 में सिरसा (हरियाणा) में हुआ। आपके पिता का नाम श्री कालूराम नोलखा था। जन्म के कुछ समय बाद आप अपने मामा श्री लक्ष्मीचंद छाजेड़ के यहाँ ग्वालियर आ

गये। मामा नि:सन्तान थे। यहीं आपका लालन-पालन हुआ। 1942 के आन्दोलन में आपने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया और 11 माह की जेल काटी। आप कांग्रेस के कर्मठ कार्यकर्ता थे। 1946 से 1948 तक आप ग्वालियर कांग्रेस कमेटी के मंत्री रहे। इस दौरान आपके नेतृत्व में ग्राम बिलौआ जागीर के किसानों का एक बड़ा आन्दोलन हुआ, जिसमें भारी सफलता मिली और मांगें मंजूर कर ली गईं।

1946 में कांग्रेस का 'अखिल भारतीय देशी राज्य लोक परिषद्' का अधिवेशन ग्वालियर में आयोजित किया गया, जिसमें सक्रिय रूप से भाग लेकर उसे सफल बनाने का श्रेय आपको है। देश की आजादी के बाद 1948 में समाजवादी विचारधारा से जुड़े लोगों का कांग्रेस से सैद्धांतिक मतभेद हुआ तो आप उससे अछूते नहीं रहे और कांग्रेस छोड़कर समाजवादी दल में शामिल हो गए।

ग्वालियर में 1950 में जब विद्यार्थी आंदोलन प्रारम्भ हुआ तो श्री भीकमचंद भी इससे अलग न रह सके। पुलिस की गोली से मारे गए छात्र हरीसिंह व दर्शनसिंह की मौत के विरोध में आरम्भ हुए आन्दोलन में आप गिरफ्तार कर लिये गये। 42 के भारत छोड़ो आन्दोलन से शुरू हुआ जेल जाने का क्रम आजीवन चलता रहा।

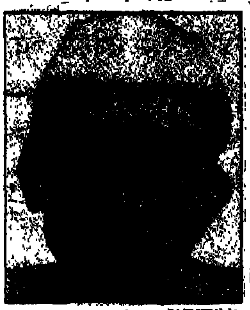
आप ग्वालियर जिले के ग्रामों में जाकर सभा व सम्मेलन कर वहाँ के कृषक-मजदूरों, हरिजन एवं शोषितों की कठिनाइयों को सुनते थे और शासन तक पहुंचा कर हल कराने हेतु सतत प्रयत्नशील रहते थे। यह आपकी जिन्दगी का हिस्सा बन गया था। श्री जैन ने अपने जीवन में भेदभाव और छुआछूत को कभी स्थान नहीं दिया, वे मानव मात्र को समान मानते थे और कहते थे-'जातिगत भेदभाव तो मानव ने निर्मित किये हैं।'

आपका निधन 23 जनवरी 1960 में हुआ। आपकी स्मृति में ग्वालियर में 'श्री भीकम चंद जैन स्मारक न्यास' की स्थापना की गई है।

आ0- (1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-4, पृष्ठ-246
(2) न्यास विधान पुस्तिका

श्री भीकमचंद सिंघवी

गोटेगांव, जिला-नरसिंहपुर (म0प्र0) के प्रमुख शिक्षाविद् श्री भीकमचंद सिंघवी का जन्म एक



संभ्रात एवं सम्पन्न मारवाड़ी परिवार में 24-7-1915 को हुआ। आपके पिता का नाम श्री मंगलचंद सिंघवी था, जो स्वतंत्रता सेनानी थे। आपने देशभक्ति का गुण अपने पिता से विरासत में पाया, साथ में आपको व्यापारिक बुद्धि भी उनके संरक्षण से ही प्राप्त हुई। अत: आपके मानस पटल पर दोनों विचारधाराओं का अद्भुत संगम दिखाई देता है। एक तरफ आपकी राजनैतिक विचारधारा से गोटेगांव की जनता आप्लावित है तो दूसरी तरफ व्यापारिक विचारधारा से जन-जन सुपरिचित है।

आपका राजनैतिक जीवन अध्ययन की समाप्ति के पश्चात् ही प्रारम्भ हो गया। 8 अगस्त 1934 को आपके पिता श्री मंगलचंद सिंघवी जेल में थे। तब आपको गिरफ्तार कर लिया गया और जेल की इस छोटी अवधि में आपको अमर शहीद श्री रुद्रप्रताप सिंह के साथ रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। उनकी देशभक्ति से आपको प्रेरणा मिली।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् आपने राजनैतिक एवं सामाजिक कार्यों में विशेष रूप से भाग लिया। अनेक शैक्षणिक एवं सामाजिक संस्थाओं को आपने आर्थिक सहायता देकर अपने कर्तव्य का निर्वाह किया। आप स्थानीय नगरपालिका के उपाध्यक्ष एवं मंत्री रहे। उच्च शिक्षा के लिये आपने गोटेगांव में ठाकुर निरंजन सिंह महाविद्यालय की स्थापना 1968 में की। 1984 में इस महाविद्यालय के शासनाधीन

होने तक आप इसके अध्यक्ष रहे।

आ0- (1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-1, पृष्ठ-149, (2) स्व0 प0

श्री पं० भुवनेन्द्रकुमार शास्त्री

आगम ग्रन्थों के तलस्पर्शी विद्वान् श्री पं0 भुवनेन्द्रकुमार शास्त्री का जन्म 1911 में सेवारा, जिला-सागर (म0प्र0) में हुआ। दुर्दैव के कारण जब आप गर्भ में ही थे तभी पिता जी का देहावसान हो गया, फलतः मामा ने बांदरी लाकर आपका पालन पोषण किया और आपने पूज्य वर्णी जी के विद्यालय (सागर) में शिक्षा ग्रहण की, बीना में अध्यापन कार्य किया और बाद में लखनऊ, इन्दौर, जबलपुर आदि स्थानों में रहकर जैनधर्म, साहित्य, समाज की सेवा करते रहे। सागर के अपने विद्यार्थी जीवन में आपने स्वदेशी प्रचार का महनीय कार्य किया। असहयोग आन्दोलन में भाग लेने के कारण 6 माह का कठोर कारावास आपको सागर जेल में भोगना पड़ा। आपके साथी पं0 वंशीधर जी बीना, श्री नन्हें लाल बुखारिया (जैन), श्री रामलाल सराफ आदि थे।



अपनी निर्धनता के कारण आपको अनेक बार एक समय भोजन करना पड़ा, पर विचलित नहीं हुए। आपने अपनी धर्मपत्नी के सन्दर्भ में लिखा है- 'सन् 1942 में जब मैं गिरफ्तार होकर जेल चला गया तो उन्होंने महीनों दाल या चावल आदि एक-एक अनाज एक समय खाकर कभी दुःख का अनुभव नहीं किया, न कभी कोई शिकायत मुझसे की।' धन्य हैं ऐसी गृहिणी।

प्रतिदिन स्वाध्याय, सामायिक, चारों अनुयोगों का अध्ययन/लेखन आप करते थे। प्रवचन भी आप करते थे। सागर में दि0 20-1-95 को जब हम आपसे मिले, तो आपकी शालीनता/सौजन्यता/स्नेह से गद्गद् हो गये। फरवरी 1997 में आपको तिजारा में 31000 रु0 के पुरस्कार से सम्मानित किया गया था, यह राशि भी आपने गरीब छात्रों की सहायतार्थ दे दी थी। आपका निधन सागर में हुआ।

आ0- (1) जै0 स0 रा0 अ0 (2) प0 जै0 इ0, पृष्ठ-229 (3) स्व0 प0 (4) सा0

श्री भूरेलाल बया

स्वतंत्रता सेनानियों और राजस्थान के रचनात्मक राजनीतिक कार्यकर्ताओं में श्री भूरेलाल बया का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। साइमन कमीशन के विरोध में उठ खड़े हुये श्री बया ने बम्बई में नमक सत्याग्रह में भाग लिया और आर्थर रोड तथा यरवदा जेल में सजायें काटीं। बम्बई कांग्रेस के सक्रिय कार्यकर्ता तथा 'संदेश' मासिक के सम्पादक श्री बया वर्षों गांधी जी के सान्निध्य में रहे और उसके बाद मेवाड़ प्रजामण्डल के आन्दोलनों में भागीदार बने। आदिवासियों और किसानों के सत्याग्रहों में आपने भाग लिया और आजादी के पश्चात् श्री माणिक्यलाल वर्मा तथा श्री हीरालाल शास्त्री के साथ मंत्री बने।

आ0- (1) जैन संस्कृति और राजस्थान, पृष्ठ-342 (2) रा0 स्व0 से0, पृष्ठ-467

श्री भेरूलाल वेदमूथा

श्री भेरूलाल वेदमूथा का जन्म 7 नवम्बर 1910 को ग्राम-चीताखेड़ा, जिला-मन्दसौर (म0प्र0) में श्री चुन्नीलाल वेदमूथा के घर हुआ। नवीं कक्षा उत्तीर्ण कर श्री वेदमूथा ने स्कूल की पढ़ाई छोड़ दी और आंदोलनकारियों के साथ मिलकर स्वराज्य लाने की होड़ में शामिल हो गये।

इन्दौर में भारत छोड़ो आन्दोलन में आप शामिल हुए। तराना में भी आपने आन्दोलन किया। होल्कर

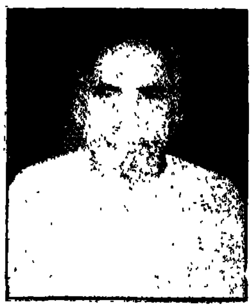
स्टेट के होम मिनिस्टर हर्डन के समक्ष प्रदर्शन किया व नारे लगाये -'हर्टनशाही नहीं चलेगी', 'जालिम हर्टन वापिस जाओ।' आदि।

श्री वेदमूथा एक माह तराना में, एक वर्ष दो माह सेण्ट्रल जेल इन्दौर में, एक माह महिदपुर में तथा एक वर्ष एक माह गरोठ की जेल में रहे। इनका सम्पर्क जेलवास में अनेक वरिष्ठ नेताओं व कार्यकर्ताओं से हुआ। फलस्वरूप आपका कार्यक्षेत्र व कार्यशैली विकसित होती गई। आजादी के बाद आप महिदपुर में व्यवसाय करने लगे। आप राष्ट्र चेतना के कार्यों में संलग्न रहे हैं।

आ0- (1) स्वा0 स0 म0, पृष्ठ-82-83 (2) म0 प्र0 स्वा0 सै0, भाग-4; पृष्ठ-217

श्री भैयालाल गणपति देशकर

कुश्ती के शौक ने जिन्हें अंग्रेजों से भी दो-दो हाथ करने के लिए विवश कर दिया, ऐसे श्री



भैयालाल गणपति देशकर (जैन) का जन्म लोधीखेड़ा, जिला- छिन्दवाड़ा (म0प्र0) में 1924 में हुआ। परिवार की दयनीय आर्थिक दशा होने पर भी अत्याचारी अंग्रेजी शासन की गुलामी की जंजीरे तोड़ने के लिए आप स्वाधीनता संग्राम में कूद पड़े। बाल्यकाल से ही आपके ग्राम में राष्ट्रीय माहौल छाया हुआ था, परिणामस्वरूप 13 वर्ष की अल्पायु में ही आप राष्ट्रीय गतिविधियों में सक्रिय हो गए। आप अपने बाल साथियों सहित ग्राम के अन्य स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों हेतु सभायें आयोजित कराने में वांछित सहयोग प्रदान करते थे। झण्डे लेकर दौड़ना तथा घंटियाँ बजाना आपके नित्य-प्रति के कार्य थे। गाँव के कर्मठ स्वातंत्र्य प्रेमी श्री छोटेलाल छवरे आपकी प्रेरणा के प्रमुख स्तंभ थे।

युवावस्था में आपने अपने ग्राम में विभिन्न साथियों सहित नागपुर के कांग्रेस सेवादल का प्रशिक्षण प्राप्त किया। भारत छोड़ो आन्दोलन के अवसर पर गाँव की सरकारी सम्पत्ति नष्ट करने की क्रांतिकारी योजना में आप सम्मिलित थे। परन्तु आप पुलिस की दृष्टि से बचकर निकल गये। अंततः गिरफ्तार किये गये और आपको 15 दिनों का कारावास दिया गया। इस दौरान आप छिन्दवाड़ा के बन्दीगृह में रखे गए।

स्वतंत्रता के पश्चात् सरदार बल्लभभाई पटेल ने देशी रियासतों के विलीनीकरण के विराट कार्य का सूत्रपात किया। उनके आदेशानुसार आप हैदराबाद रियासत के भारत में विलीनीकरण के समय सेवादल में एक स्वयंसेवक के रूप में सम्मिलित हुए। राजनैतिक, सामाजिक कार्यों के साथ आप कुश्ती प्रेमी भी रहे। अनेक प्रसिद्ध पहलवान आपके शिष्य हैं। स्वतंत्रता की 25वीं वर्षगांठ पर मध्यप्रदेश शासन ने आपको एक प्रशस्तिपत्र प्रदान कर सम्मानित किया था।

आ0-(1) म0 प्र0 स्वा0 सै0, भाग-1, पृष्ठ-11 (2) स्वा0 आ0 में छिन्दवाड़ा जिले का योगदान, (टंकित शोध -प्रबन्ध), पृष्ठ-308,309 (3) अनेक सम्मान/प्रमाण पत्र (4) पुत्र संजय द्वारा प्रेषित जानकारी।

श्री भैयालाल जैन

मध्य प्रदेश विधानसभा में बण्डा, जिला-सागर (म0प्र0) से विधायक रहे श्री भैयालाल जैन, पुत्र-श्री कन्हैयालाल का जन्म 1909 में हुआ। आप 1931-32 में जिला कांग्रेस कमेटी के सदस्य थे। राज्य कांग्रेस कमेटी में अनेक बार सागर का प्रतिनिधित्व आपने किया। आप जिला कांग्रेस कमेटी के 1941 से 47 तक कोषाध्यक्ष भी रहे। 1941 के व्यक्तिगत सत्याग्रह में आपने भाग लिया था। सागर से दिल्ली सत्याग्रह में जाने वाले सत्याग्रहियों की व्यवस्था का भार आपने ही बड़ी कुशलता से सम्हाला था। 1942 के आन्दोलन में आप पहले भूमिगत होकर कार्य करते रहे फिर 23

सितम्बर को गिरफ्तार कर लिये गये। सागर व नागपुर की जेलों में आपने यातनाऐं सहीं। 26 नवम्बर 1943 को आप जेल से मुक्त हुए। 1985 के आसपास आपका निधन हो गया।

आ0- (1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-1, पृष्ठ-51 (2) जै0 स0 रा0 अ0, पृष्ठ-96 (3) श्री डालचंद जैन, पूर्व सांसद, सागर द्वारा प्रेषित विवरण।

श्री भैयालाल जैन 'नेताजी'

'नेताजी' उपनाम से विख्यात ग्राम-कटंगी, तहसील-पाटन, जिला-जबलपुर (म0प्र0) के श्री भैयालाल जैन, पुत्र-श्री मुन्नालाल जैन ने 5 बार जेल यात्रायें कीं। 1930 में जंगल सत्याग्रह के दौरान आप गीत गाते हुये गिरफ्तार कर लिये गये और 4 माह की कैद तथा 50/- रु0 अर्थदण्ड पाया। दण्ड जमा न करने पर डेढ़ माह की कैद और भुगतनी पड़ी।

1932 में आप ग्राम-ग्राम भ्रमण करते हुए किसानों को लगान अदा न करने के लिए भड़काने के आरोप में पकड़े गये और 6 माह के सश्रम कारावास की सजा पाई। रेलवे सत्याग्रह (जबलपुर में) में चलती ट्रेन की जंजीर खींचकर आपने उस पर तिरंगा झण्डा फहराकर ब्रिटिश साम्राज्य को चुनौती दी और 15 दिन की कैद पाई। 1941 में व्यक्तिगत आंदोलन के दौरान अंग्रेजी सरकार को उखाड़ फेंकने और द्वितीय विश्वयुद्ध में मदद न करने का प्रचार करने पर रीठी में गिरफ्तार कर लिये गये और तीन माह का कारावास पाया। 1942 की जनक्रान्ति में अपने जत्थे के साथ पुलिस थाने पर झण्डा फहराने के प्रयास में 'नेताजी' पुन: गिरफ्तार कर लिये गये और केन्द्रीय कारागार जबलपुर में 8 माह का बन्दी जीवन बिताया। जेल से छूटने के बाद भी आप सदैव राष्ट्रीय कार्यों में संलग्न रहे।

आ0- (1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-1, पृष्ठ-83 (2) स्व0 स0 पा0, पृष्ठ-104

श्री भैयालाल परवार

साहूकार परिवार में जन्मे श्री परवार ने स्वतंत्रता संग्राम के महायज्ञ में जो आहुति दी उसे भुलाया नहीं जा सकता। आपके पिता का नाम श्री मन्थूलाल परवार था। आप सैदपुर, जिला-ललितपुर (उ0प्र0) के निवासी थे। 1941 में आपने 1 माह की सजा तथा 100 रुपये का अर्थदण्ड भोगा था।

आ0-(1) र0 नी0, पृष्ठ-99

श्री भोलानाथ जैन

गौरझामर, जिला-सागर (म0प्र0) के श्री भोलानाथ जैन, पुत्र-श्री राम रतन का जन्म 1909 में हुआ। 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में 6 माह का कारावास एवं 1 माह नजरबन्दी की सजा आपने भोगी।

आ0- (1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-2, पृष्ठ-51 (2) आ0 दी0, पृष्ठ-69

श्री मंगलचंद जैन

नरसिंहपुर (म0प्र0) निवासी और नागपुर प्रवासी श्री मंगलचंद जैन, पुत्र-श्री कन्हैयालाल ने 1930 में पिकेटिंग एवं सत्याग्रह किया तथा 17 अगस्त 1930 से 17 नवम्बर 1930 तक का कारावास भोगा।

आ0-(1)-म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-1, पृष्ठ-151

श्री मंगलचंद सिंघवी

गोटेगाँव, जिला-नरसिंहपुर (म0प्र0) के प्रसिद्ध शिक्षाविद् श्री मंगलचंद सिंघवी, पुत्र-श्री दयाचंद का



जन्म 14-9-1890 ई0 को डीडवाना, जिला-नागौर (राजस्थान) में हुआ। बाद में आप गोटेगाँव आकर बस गये। 1928 में कांग्रेस द्वारा घोषित दो दिन की हड़ताल में आपने पूर्ण सहयोग दिया, अत: तत्कालीन डिप्टी कमिश्नर 'बोर्न' के हृदय में

प्रतिशोध की भावना का उदय हुआ और उसने आपको घोड़े से कुचलना चाहा किन्तु वह असफल रहा।

1940-41 को आपके राजनीतिक जीवन का 'उत्सर्ग-वर्ष' कहा जा सकता है। इस वर्ष कांग्रेस ने द्वितीय विश्व युद्ध के समय सरकार को सहयोग देना अस्वीकार कर दिया था तथा महात्मा गाँधी के आदेश पर समस्त देश में व्यक्तिगत सत्याग्रह का सूत्रपात हुआ। इस आंदोलन में सिंघवी जी इस क्षेत्र में कार्यरत रहे जिससे आपको पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया और 4 माह तक नागपुर जेल में बन्द रखा।

1942 में कांग्रेस ने करो या मरो का नारा बुलंद किया तब सिंघवी जी को पुन: पुलिस ने गिरफ्तार कर एक वर्ष दस माह का कारावास दिया। इस अवधि को आपने नरसिंहपुर, जबलपुर और होशंगाबाद के कारागृहों में बिताया। आपको इस जेल जीवन में पूज्य विनोबा भावे, पं0 द्वारका प्रसाद जी मिश्र और श्री बृजलाल बियाणी के साथ रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् आप नरसिंहपुर जनपद सभा के अर्थ सदस्य एवं नगरपालिका गोटेगाँव के अध्यक्ष पद पर आसीन रहे।

शिक्षा के प्रति अपनी असीम रुचि के कारण आपने ठा0 निरंजन सिंह महाविद्यालय में रु0 1500 की निधि अर्पित की थी जिसके ब्याज से डिग्री कोर्स के अंतिम वर्ष में प्रथम श्रेणी में उच्चतम अंक प्राप्त करने वाले विद्यार्थी को स्वर्णपदक प्रदान किया जाता है। आपने रु0 10,000 की निधि से एक ट्रस्ट की स्थापना भी की थी जिसके ब्याज से उच्चतर माध्यमिक शाला के निर्धन एवं प्रतिभावान छात्रों को प्रतिवर्ष छात्रवृत्ति दी जाती है। आपका निधन 22-4-73 को हो गया। आपके पुत्र श्री भीकमचंद जी भी स्वतन्त्रता सेनानी हैं।

आ0- (1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-1, पृष्ठ-151 (2) जै0 स0 रा0 अ0 (3) पुत्र श्री भीकमचंद सिंघवी द्वारा प्रेषित परिचय

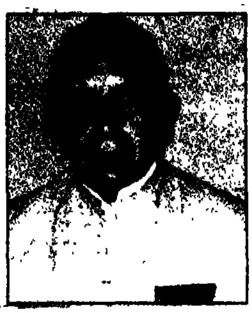
श्री मगनलाल कोठारी

विधि स्नातक श्री मगनलाल कोठारी, पुत्र-श्री कन्हैया लाल कोठारी का जन्म 1916 में हरदा, जिला-होशंगाबाद (म0प्र0) में हुआ। 1932 में पिकेटिंग करने पर 6 माह की सजा एवं 100/- रु0 जुर्माना आपको भोगना पड़ा। 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में पहले तो आप भूमिगत रहे परन्तु बाद में गिरफ्तार कर 18 माह नागपुर जेल में नजरबंद रखे गये। 50 रु0 का अर्थदण्ड भी इस समय आपने भोगा। शहर के प्रतिष्ठित वकील एवं पत्रकार कोठारी जी जनपद सभा के उपसभापति/सभापति आदि पदों पर रहे हैं।

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-5, पृष्ठ-336 (2) हरदा और स्वतन्त्रता संग्राम, पृष्ठ-79

श्री मगनलाल गोइल

दो बार टीकमगढ़ विधान सभा क्षेत्र से म0प्र0 विधानसभा के सदस्य (विधायक) रहे तथा लगभग



16 वर्ष तक नगरपालिका परिषद् टीकमगढ़ के सदस्य, उपाध्यक्ष व अध्यक्ष आदि पदों पर रहे श्री मगनलाल गोइल, पुत्र-श्री चुन्नी लाल गोइल का जन्म 11-11-1927 को टीकमगढ़ (म0प्र0) में हुआ। व्याकरण की मध्यमा और जैन सिद्धांत शास्त्री जैसी महत्त्वपूर्ण परीक्षाएं आपने उत्तीर्ण कीं।

1942 में आप टीकमगढ़ जिले की एक मात्र राजनैतिक संस्था 'स्टेट कांग्रेस' (ओरछा सेवा संघ) के प्लेटफार्म से राजनैतिक गतिविधियों में संलग्न व संघर्षरत हुए। राज्य शासन के विरुद्ध छात्र आन्दोलन में भूमिगत रहे। बाद में राज्यशासन के कर विरोधी आंदोलन में भी आपको भूमिगत रहना पड़ा। अथक प्रयत्न करने पर भी पुलिस आपको गिरफ्तार नहीं

कर सकी। 1945 से 1947 तक स्टेट कांग्रेस के नगर महामंत्री रहे। 1951 से 1980 तक समाजवादी आन्दोलन से जुड़े एवं पार्टी के विभिन्न उत्तरदायी पदों पर रहे श्री जैन ने आजादी के बाद भी जेल यात्राएं कीं, भूमिगत रहे व आर्थिक प्रताड़नायें सहीं। 5 जुलाई 1975 से आपातकाल के दौरान 19 माह की जेल यात्रा आपने की।

श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र पपोरा जी के आप दो बार अध्यक्ष निर्वाचित हुये। आप अनेक राजनैतिक एवं सामाजिक संस्थाओं के विभिन्न पदों पर रहे व हैं। म0प्र0 शासन ने आपको सम्मान निधि प्रदान कर सम्मानित किया है। वर्तमान में आप राजनैतिक रूप से 1980 से आज तक भारतीय जनता पार्टी से सम्बद्ध हैं। दो बार उसके जिला अध्यक्ष तथा दो बार प्रदेश कार्य समिति के सदस्य रह चुके हैं। 1998 में भी आप टीकमगढ़ से म0 प्र0 विधानसभा के सदस्य (विधायक) चुने गये हैं।

आ0- (1) स्वा0 प0 (2) वि0 स्वा0 स0 इ0, पृष्ठ-203 (3) श्री जय निशान्त द्वारा प्रेषित परिचय (4) शा0 प0 बुलेटिन, मार्च 1999

श्री मथुराप्रसाद वैद्य

श्री मथुराप्रसाद वैद्य का जन्म 1894 में महरौनी (ललितपुर) उ0प्र0 में हुआ। आपके पिता का नाम श्री दौलत राम जैन था।



वेंकटेश्वर समाचार का सम्पादन करते हुए आप बापू के सम्पर्क में आये, उनके आह्वान पर 1930 के सत्याग्रह की ओर उन्मुख हुये। नन्द किशोर किलेदार के प्रभाव में राष्ट्रीय जन आन्दोलन में पूर्णरूपेण संलग्न वैद्य जी 1930 में ही शराबबंदी के लिये पिकेटिंग करते हुये गिरफ्तार हुये तथा ललितपुर व उरई जेलों में रहे। जेल में राष्ट्रीय झंडा स्वतंत्रता दिवस पर निकालने पर खड़ी हथकड़ी की कठोरतम सजा को आपने भोगा।

एक से एक पारिवारिक भीषण कठिनाइयों से न डिगने वाले मथुरा प्रसाद जी 1942 के आन्दोलन में और अधिक सक्रिय हो उठे। कांग्रेस कमेटी, ललितपुर के अध्यक्ष रहते हुए झांसी जेल में 10 माह नजरबंद रहे। 15 अगस्त स्वतंत्रता दिवस 1947 के समय आप मंडल कांग्रेस के अध्यक्ष पद पर थे। आप ललितपुर नगरपालिका के लगभग 14 वर्ष तक सदस्य रहे थे।

आ0- (1) जै0 स0 रा0 अ0 (2) र0 नी, पृष्ठ-15

विद्यार्थी मथुरालाल

'भगतजी', 'महात्माजी' जैसे उपनामों से सम्बोधित होने वाले झाबुआ (म0प्र0) के विद्यार्थी मथुरालाल विद्यार्थी जीवन से ही राष्ट्रीय आन्दोलन में सक्रिय हो गये थे। आप गुजरात केसरी श्री वामन राव के साले के साथ गोधरा 'लॉकप' में रहे। हिन्दुस्तानी सैनिकों की रक्षा और गवर्नर का निषेध करने के लिए विद्यार्थी जी पर्चे बांटते हुए गोधरा शहर में सैनिकों के बीच जा धंसे थे, उन्हें प्राणों की परवाह न थी। अंग्रेजी की पढ़ाई की अपेक्षा आपने देश सेवा को उचित समझा। आपने प्रतिज्ञा की थी कि 'मैं स्वत: किसी दुकान से विदेशी कपड़ा या अन्य विदेशी वस्तु नहीं खरीदूंगा, जब तक स्वतंत्रता नहीं होगी, स्कूल में कोट पहनकर नहीं जाऊँगा, मैं अंग्रेजी पुस्तक खरीद कर नहीं पढूंगा, व्यर्थ पोस्ट और ट्रेन का खर्चा नही करूंगा।'

आ0- (1) जै0 स0 रा0 अ0, पृष्ठ-69

श्री मदनलाल जैन

श्री मदनलाल जैन तलैन, जिला-राजगढ़ (म0प्र0) निवासी थे। आपने कक्षा 8 तक शिक्षा ग्रहण की और स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय भागीदारी

निभाई। स्वतंत्रता की अलख जगाने का काम करते हुए अनेक यातनायें झेलीं और आर्थिक हानि भी उठाई।

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-5, पृष्ठ-117

श्री मन्नालाल जैन पंचोलिया

जागीरदार से अचानक कांग्रेसी बन बैठे श्री मन्नालाल जैन पंचोलिया, पुत्र-श्री पदमसा का जन्म 1896 में सनावद (म0प्र0) में हुआ। पहले पंचायत के मुखिया के नाते आपका अपना एक खास प्रभाव था। बारीक मलमल के कुरते, इन्दौरी चौंच पर पगड़ी और बगुले सी सफेद महीन धोती के नीचे पावों में पेटेण्टपम्प शू पहिने जब आप 'जागीरदार' (प्रचलित सर्वश्रुत नाम) को कोई देखता तो किसी का रौब के कारण, किसी का प्रतिष्ठा और प्रतिभा के कारण हाथ अपने आप अभिवादन करने उठ जाता था। पर देश की आजादी की ऐसी लगन लगी कि आप किसानी पूरी बांह की बंडी (वस्त्र विशेष) घुटनों तक खादी की धोती, खादी की टोपी और वर्षों से बिना बदला फ्रेम का चश्मा पहनने लगे और प्रजामण्डल के कार्यों में सदैव संलग्न रहने लगे।

1942 में आपने लगभग डेढ़ वर्ष तक जेल-यातनायें सहीं। नवभारत, इन्दौर, 4 सितम्बर 1997 के अनुसार आपको जेल तोड़ने के आरोप में सात वर्ष की सजा हुई थी। पत्र लिखता है-'पांच जेलयात्री सर्वश्री मयाचंद जटाले, मन्नालाल पंचोलिया, नारायण दास जायसवाल, कमलचंद जैन और सुमेर चंद को जेल में हो रही ज्यादतियों के खिलाफ बगावत करके 2 अक्टूबर को मंडलेश्वर जेल तोड़ने, नगर में जाकर गांधी जयन्ती की सभा में भाग लेने के आरोप में सात-सात वर्ष की सजायें हुईं और उन्हें इन्दौर के 51 सत्याग्रहियों के साथ सेंन्ट्रल जेल भिजवा दिया गया।' कर्तव्य के कठोर और स्पष्टवादी पंचोलिया जी राज्य प्रजामण्डल के प्राणवान् कार्यकर्ता रहे। आप सनावद प्रजामण्डल के प्रेसीडेंट रहे। आपके भाई श्री पन्नालाल जी तथा परिवार के अन्य सदस्य भी जेल गये। नवभारत ही लिखता है-'फरवरी 1943 में अपने मुखविरों से सुराग मिलने के बाद पुलिस ने कुछ घरों पर ऐन सुबह छापे मारे। श्री चितरंजन पंचोलिया (जिनके पिता श्री मन्नालाल पंचोलिया मंडलेश्वर जेल में बन्दी थे) और श्री फकीरचंद (फणीन्द्रकुमार) जैन पकड़े गये और उन्हें एक-एक माह की सजाऐं हुईं। उनके तीन अन्य साथी रूपचंद पारनी, सुमेरचंद जटाले और कुबेरचंद पंचोलिया चेतावनी देकर छोड़ दिये गये, ये सभी उस समय श्री दिगम्बर जैन हाईस्कूल में पढ़ते थे।'

आ0- (1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-4, पृष्ठ-90 (2) जै0 स0 रा0 अ0, पृष्ठ-75 (3) नवभारत, इन्दौर, 4 सित0 1997

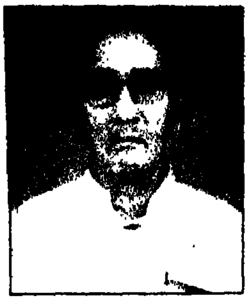
श्री मयाचंद जटाले

सनावद (म0प्र0) के प्रसिद्ध गांधीवादी नेता श्री मयाचंद जटाले, पुत्र-श्री रतनसा का जन्म 21 दिसम्बर 1915 को हुआ। 1940 से आप रा0आ0 में शामिल हो गये थे। आपने अपने जीवन का प्रत्येक क्षण देशसेवा के लिए अर्पित कर दिया था। आप प्रजामण्डल के ठोस कार्यकर्ता रहे और निमाड़ जिले के बड़वाह परगने में खोडे सा0 के बाद उत्तरदायी शासन प्राप्ति के आन्दोलन में जेल जाने वाले समाज के प्रथम व्यक्ति थे। आपको रचनात्मक कार्यक्रमों में पूर्ण विश्वास था। आपने सक्रिय रूप से सनावद में शुद्ध खादी व तेल भण्डार का सहकारिता के सिद्धांत पर संचालन किया था। 1942 में आप दूसरी बार गिरफ्तार किये गये व एक वर्ष एक माह अट्ठाईस दिन बाद छोड़ दिये गये। मंडलेश्वर जेल तोड़कर गांधी जयन्ती मनाने के कारण भी आपको सात वर्ष की कैद हुई। आपका निधन 13 दिसम्बर 1988 को हो गया।

आ0- (1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-4, पृष्ठ-91 (2) जै0 स0 रा0 अ0 (3) नवभारत, इन्दौर, 4 सितम्बर 1997

श्री महावीरप्रसाद जैन

श्री महावीरप्रसाद जैन, पुत्र-श्री कान्तिचन्द्र का जन्म 10 जुलाई 1922 को ग्राम गोविन्दगढ़ (राजस्थान) में हुआ। आपने 1933 तक गांव में ही शिक्षा ग्रहण की। बाद में आप अलवर आ गये। आपने अपनें क्रान्तिकारी जीवन के सन्दर्भ में बताया कि '1938 में मुझे क्रान्तिकारी साहित्य पढ़ने की रुचि उत्पन्न हुई, फलत: साहित्य पढ़ने वालों का एक सर्किल बनाया। राज्य व जागीरदारों के विरुद्ध एक संगठन की नींव डालीं, जिसका उद्‌देश्य था कि राज्य व जागीरदारों द्वारा जो अत्याचार/ लगान/ बेगार व सामाजिक अत्याचार किये जाते हैं, उनका विरोध करना।



संगठन का नाम पहले 'अजरदल' रखा फिर एक साल बाद 'नवहिन्द पार्टी' व 1941 में 'रेवल्यूशनरी पार्टी ऑफ इण्डिया' रखा। संगठन में इस समय तक 40-50 व्यक्ति हो गये थे। चूंकि हमारा सम्पर्क आगरा हो गया था जहाँ हम प्रोफेसर जंगबहादुर के सम्पर्क में आ गये थे, अत: उन्होंने अलवर में आकर हमें बम, बारूद, आदि बनाना सिखा दिया। हमारा कार्यालय पहाड़ों की गुफा में था, जहां रात को ही कार्य होता था। हमारा संगठन चैन टाईप में था। केवल हम तीन व्यक्ति थे जो सबको जानते थे। सदस्य एक दूसरे को जानते भी नहीं थे, पहचानते भी नहीं थे। हमारे सामने पैसों की बड़ी समस्या थी, कार्य बढ़ गया था, अत: जब कार्य ठप्प होता नजर आने लगा तो मैं अपने घर से 5 तोला सोने की जंजीर ले आया और हथियारों के लिए साथी हीरालाल व किशन के द्वारा लक्ष्मणस्वरूप त्रिपाठी, जो क्रान्तिकारी विचारधारा के अलवर में अग्रणी नेता थे, को रिवॉल्वर खरीदने के लिए दे दी।'

आगे आपने बताया कि '1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में अलवर प्रजामंडल ने मूक रहकर ही आन्दोलन को देखने का तय किया, अत: हमने 17-18 अक्टू0 42 की रात्रि को गुप्त बैठक में रेल के तार काटने व पोस्ट आफिस में आग लगाने का निर्णय किया, फलत: 20-10-42 की रात्रि को विजय मंदिर रोड की रेलवे लाइन के तार काटे गये। 6-7 नवम्बर 1942 की रात को तमाम पोस्ट ऑफिस व लैटर बॉक्सेज में आग लगा दी गई।

हमारा एक साथी अपनी गलती से 10-11-42 को गिरफ्तार कर लिया गया। उसने अपने दूसरे साथी का भी नाम बता दिया, वह भी गिरफ्तार हो गया। तब तक हमें सूचना मिल गयी थी, अत: हीरालाल व मैंने अपने सभी साथियों को कुछ दिन के लिए भूमिगत कर दिया व तय किया कि दोनों को कन्ट्रोल करने के लिए अपना गिरफ्तार होना जरूरी है, अत: 11-11-42 को हम दोनों अपने-अपने घर से गिरफ्तार होकर कोतवाली पहुँच गये। तीन रोज तक हमें खड़ा रखकर सोने न देकर यातनायें दी गई। हमसे जब कोई भेद मालूम नहीं हुआ तो हथकड़ी लगाकर पीटते हुए ट्रक तक ले गये और ट्रक में फेंक दिया।

दिनांक 14-12-42 को हमें 2 साल 9 माह की कैद सुना दी गयी। जेल में 3 रोज की भूख हड़ताल जेल मैन्यूएल न दिखाने पर की। फिर 10-10 बेतों की सजा दी गई व कालकोठरी में 15 दिन तक रखा गया। मास्टर भोलानाथ जी का हमसे पूर्ण सम्पर्क जेल में भी बना रहा। मैं तब दसवीं कक्षा में पढ़ता था। अन्य साथी भी विद्यार्थी थे। अत: मास्टर भोलानाथ जी ने प्राईमिनिस्टर से मिलकर हमारे विद्यार्थी जीवन के आधार पर हमें 5 माह बाद छुड़वा दिया।

जेल से आते ही मैंने प्रजामंडल में विद्यार्थी मंच पर कार्य करना आरम्भ किया। प्रारम्भ में मैं विद्यार्थी कांग्रेस का संयोजक हुआ, उसके बाद 1944 में अलवर

राज्य विद्यार्थी कांग्रेस का अध्यक्ष चुन लिया गया। इसी बीच राज्य के सभी हाईस्कूलों व मिडिलस्कूलों में विद्यार्थी कांग्रेस की शाखायें खोली गयीं साथ ही 'राजस्थान विद्यार्थी कांग्रेस' की स्थापना के लिये जयपुर, उदयपुर, भरतपुर, जोधपुर, भीलवाड़ा, शहपुरा, कोटा, बीकानेर आदि स्थानों पर मैंने सम्पर्क बढ़ाया।

1945 में 'ऑल इण्डिया स्टेट्स पीपुल' की कान्फ्रेंस पं0 जवाहरलाल नेहरू जी की अध्यक्षता में हो रही थी अत: यह तय किया गया कि उसी समय विद्यार्थी कांग्रेस का उद्घाटन कराया जाये। फलस्वरूप वहां राजस्थान के विद्यार्थी प्रतिनिधि इकट्ठे हुए और नेहरू जी के आदेश पर शेख अब्दुल्ला ने विद्यार्थी कांग्रेस का उद्घाटन किया। चुनाव में कु0 सुशीला जी (श्री हीरालाल शास्त्री की साली) को अध्यक्ष बनाया गया, मैं उपाध्यक्ष हुआ व श्री शिवचरण माथुर मंत्री हुए। इस प्रकार राजस्थान विद्यार्थी कांग्रेस का संगठन बन गया।

जैसे-जैसे अलवर रियायत में जागीरदारों के अत्याचार बढ़ते गये विद्यार्थियों का संगठन भी मजबूत होता गया। इसको शक्ति प्रदान करने के लिए मैं पहली बार डॉ0 श्रीप्रकाश जी को देहली से कॉलेज पार्लियामेंट का उद्घाटन कराने अलवर लाया किन्तु तत्कालीन प्रिंसिपल श्री जयपाल सिंह राजपूत ने उनको कॉलेज में उद्घाटन करने की स्वीकृति नहीं दी तो कम्पनी बाग में ही उद्घाटन कराया गया। कुछ दिन बाद आगरा से श्री कृष्ण दत्त पालीवाल को विद्यार्थी कांग्रेस के तत्त्वावधान में बुलाया गया। बड़ी शानदार सभा हुई। इसके बाद प्रजामंडल के तत्त्वावधान में मेजर शाहनवाब आई0एन0ए0 को बुलाया गया।

2-2-46 को खेड़ा मंगन सिंह में किसान सम्मेलन प्रजामंडल ने आयोजित किया। इस समय सरकार पूर्णरूप से झल्ला चुकी थी। उसने प्रजामंडल को गैरकानूनी घोषित कर दिया व सारे कार्यकर्ताओं को राज्य भर में गिरफ्तार कर लिया। हम 1-2-46 की रात को खेड़ा पहुंच गये थे, हमें वहां पता चला तो मैं मंडावर रेलवे स्टेशन पर गया क्योंकि मास्टर भोलानाथ जी जयपुर से आ रहे थे, उन्हें वहीं रोका और हम उनके साथ दौसा (जयपुर) चले गये जहाँ अलवर राज्य प्रजामंडल का कार्यालय स्थापित किया गया और आन्दोलन का संचालन वहीं से किया गया। एक माह बाद नेहरू जी के हस्तक्षेप पर जयनारायण जी व्यास आये और समझौता हो गया व प्रजामंडल के गैरकानूनी होने का आदेश वापिस ले लिया गया।

प्रजामंडल ने आखिरी लड़ाई लड़ने का फैसला किया व 'गैरजिम्मेदार मिनिस्टरो कुर्सी छोड़ो' आन्दोलन शुरू करने का निर्णय ले लिया। राज्य सरकार ने झल्लाकर 24-8-46 को धारा 144 लगा दी। विद्यार्थी कांग्रेस ने चैलेंज स्वीकार कर 144 धारा तोड़ने का निश्चय किया।

हम लोगों ने नंगली के चौराहे से जुलूस शुरू किया। राज्यभर के स्कूल बन्द थे। करीब 20 हजार विद्यार्थी जुलूस में अनुशासन में तीन-तीन की कतार में चल रहे थे। जुलूस करीब एक मील लम्बा था। चारों ओर बाजारों में मुख्य-मुख्य स्थानों पर फौज खड़ी हुई थी। अपनी विजय की जयघोष करता हुआ जुलूस सुभाष चौक पहुँचा, जहाँ सभा में बदल गया। मेरी अध्यक्षता में ही सभा हुई, जो 12 बजे तक चली। वहां किसी को भी किसी के गिरफ्तार करने की हिम्मत नहीं हुई।

करीब 2 बजे मैं अपने साथियों के साथ होप सर्कस आ रहा था। होप सर्कस में घुसने से पहले 10-15 सिपाही, कोतवाल, मजिस्ट्रेट ने आकर मुझे घेर लिया और गिरफ्तार कर लिया। आन्दोलन 26-8-46 से होना था मुझे पकड़कर उसी रोज जेल में बन्द कर दिया। आन्दोलन ता0 2-9-46 तक चला और राज्य सरकार ने अपनी पूर्ण रूप से हार

स्वीकार कर ली। सभी कार्यकर्ताओं को, जो करीब 400 थे, छोड़ दिया गया।

आजादी के बाद मैंने राजनीति छोड़ दी और पुलिस में भर्ती हो गया, जहाँ से 24 फरवरी 1982 को सेवामुक्त हुआ हूँ।' अपने पुलिस जीवन के संस्मरण बताते हुए आपने कहा कि - 'मैं पुलिस में उपनिरीक्षक के पद पर नियुक्त हुआ था। 1971 में एस0एच0ओ0 ब्यावरा सिटी था। उस समय अफीम का अन्तरदेशीय नाजायज व्यापार करने वाले गिरोह को पकड़ा जिसके कब्जे से 319 किलो अफीम पकड़कर मैंने अपना विश्व रिकार्ड बनाया जो अभी तक कायम है'। आपने अपने जीवन में लगभग 250 प्रमाणपत्र व अवार्ड प्राप्त किये। धार्मिक भावना सम्पन्न श्री जैन ने लगभग सभी जैन तीर्थों के दर्शन किये हैं आपने 'पं0 दौलतराम व्यक्तित्व व कृतित्व' तथा 'जैनधर्म में द्रव्य-अवस्था' आदि पुस्तकें भी लिखी हैं।

आ0- (1) प0 इ0, पृष्ठ-136 (2) जै0 स0 बृ0 इ0, पृष्ठ-372 (3) स्वा0 प0 (4) सा0, तिजारा, 1 नव0 1998

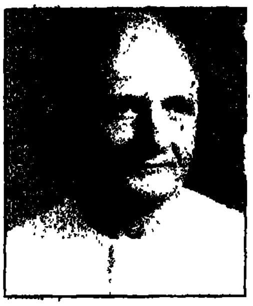
श्री महावीरप्रसाद जैन

फिरोजाबाद (उ0प्र0) के श्री महावीरप्रसाद जैन 1930 में कांग्रेस के सक्रिय कार्यकर्ता थे। नमक सत्याग्रह, शराब बन्दी, विदेशी वस्त्र बहिष्कार आदि आन्दोलनों में आपने खुलकर भाग लिया था। 26 जनवरी 1932 को जुलूस निकालते समय अनेक महिलाओं को पुलिस ने गिरफ्तार किया और जुलूस पर डण्डे बरसाये। उसके विरोध में शाम को होने वाली सभा का ऐलान करते हुए आपको गिरफ्तार कर लिया गया और 3 माह की कैद व 100 रु0 जुर्माना की सजा दी गई, जुर्माना न देने पर घर के सारे सामान की कुर्की की गई थी।

आ0-(1) जै0 से0 ना0 अ0, पृष्ठ-04 (2) अमृत, पृष्ठ 25

श्री महेन्द्रकुमार मानव

मध्य प्रदेश के प्रख्यात राजनेता, कुशल पत्रकार, सजग साहित्यकार, सहृदय समाज सेवी और राष्ट्रीय



आन्दोलन के कर्मठ सिपहसालार श्री महेन्द्रकुमार मानव, पुत्र-श्री ब्रजलाल जैन का जन्म मध्य प्रदेश के छतरपुर में फाल्गुन शुक्ल 13 संवत् 1977 (1921 ई0) को हुआ। अल्पवय में ही पिता का साया उठ गया एवं 9 वर्ष बाद 1930 में विवाहिता बहिन व सबसे छोटे भाई की मृत्यु भी इन्हें अपने पथ से डिगा नहीं सकी। अपितु उसने भी इन्हें कर्मठता ही प्रदान की। संस्कृत पाठशाला के बाद महाराजा हाईस्कूल से हाईस्कूल की परीक्षा पास की जिसमें सर्वोच्च स्थान मिला। 1939 में छतरपुर में नवयुग पुस्तकालय की स्थापना इनका साहसिक कदम था। 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में 'मानव' जी ने हिस्सा लिया और दस माह होशंगाबाद व जबलपुर की जेलों में बंद रहे।

'मानव' जी ने संस्कृत विषय में एम0 ए0 की परीक्षा प्रयाग वि0 वि0 से पासकर भारतीय विद्याभवन में रिसर्च फैलो और बाद में बम्बई के ही सिडनहम कालेज में अध्यापन का कार्य किया। 1949 में वे रीवां में संस्कृत के व्याख्याता बने। इसी बीच 'विन्ध्य प्रादेशिक हिन्दी साहित्य सम्मेलन' की स्थापना की और ठक्कर वापा तथा प्रसिद्ध साहित्यकार श्री वियोगी हरि के साथ सम्पूर्ण बुन्देलखण्ड का दौरा किया। एल0 एल0 बी0 की परीक्षा भी आपने पास की थी।

देश की स्वाधीनता के बाद आप सर्वप्रथम छतरपुर नगर पालिका के सदस्य चुने गये। 1952 में लौंडी (छतरपुर) से विन्ध्य प्रदेश विधानसभा के सदस्य चुने गये और विन्ध्य प्रदेश के पहले शिक्षा व

बाद में वित्त एवं समाजसेवा मंत्री बने। उन दिनों आप पूरे भारत में सबसे छोटी उम्र के मंत्री थे। आपने छतरपुर से साप्ताहिक 'विन्ध्याचल' पत्र निकाला। आपने ही बुन्देलखण्ड की पंचवर्षीय योजना बनाई थी व खजुराहो के विकास में भारी योगदान दिया। विन्ध्य प्रदेश जब मध्यप्रदेश बना तो उसमें आप सहयोगी रहे। 1967 एवं 72 में पुन: म0प्र0 विधानसभा के सदस्य निर्वाचित हुए। कई देशों का दौरा किया और म0प्र0 की अनेक कमेटियों, बोर्डों, संघों के अध्यक्ष/मंत्री रहे। म0प्र0 स्वतंत्रता संग्राम सैनिक संघ के भी आप मंत्री रहे।

आचार्य रजनीश के दर्शन से भी आप कुछ दिनों प्रभावित रहे। रजनीश के साथ अनेक शहरों की यात्रायें आपने कीं, शिविरों का संचालन किया और उनकी प्रारम्भिक पुस्तक 'पथ के प्रदीप' का प्रकाशन तथा मासिक पत्रिका 'सम्बोधि' का सम्पादन भी किया।

आपने मारीशस के द्वितीय हिन्दी विश्व सम्मेलन में भाग लिया था। नेपाल आदि अनेक देशों की यात्रा की थी, पृथक् बुन्देलखण्ड राज्य के निर्माण के लिए आप संघर्षरत रहे। 1952 से ही 'पंचायत राज' मासिक का सम्पादन/प्रकाशन कर रहे हैं। आपकी कृतियों में 'मुझे मनुष्य की गन्ध आती है' (कविता संग्रह), 'कलातीर्थ खजुराहो' आदि प्रमुख हैं। अनेक लेख, कवितायें, कहानियाँ, यात्रावर्णन भी विविध पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके हैं। हाल ही में आपके अभिनन्दन ग्रन्थ का प्रथम खण्ड 'THE GLORY THAT WAS BUNDELKHAND' के नाम से प्रकाशित हुआ है जो लगभग 650 पृष्ठ का है। जैन समाज के कार्यक्रमों में भी आप समय-समय पर भाग लेते रहे हैं। विशेषत: जैन विद्वानों की संस्थाओं से आप जुड़े रहे हैं। विद्वत्सम्मेलनों के अवसर पर हमें अनेकों बार 'मानव' जी के दर्शनों का सौभाग्य मिला है। एक साक्षात्कार में आपने 1942 के आन्दोलन तथा अपनी जेलयात्रा के सन्दर्भ में बताया था कि-

'दिनांक 9 अगस्त 1942 को कांग्रेस के बम्बई अधिवेशन में 'भारत छोड़ो आन्दोलन' का प्रस्ताव पास किया गया। उसी दिन अंग्रेजी सरकार ने कांग्रेस के सभी बड़े नेताओं को बन्दी बना लिया। इसकी खबर सारे देश में बिजली की तरह फैल गई। उन दिनों मैं इलाहाबाद यूनिवर्सिटी में एल0एल0बी0 प्रीवियस का विद्यार्थी था और जैन होस्टल में रहता था। मेरी माँ और मेरा अनुज सुरेन्द्र कुमार भी इलाहाबाद में रहते थे। नेताओं के जेल में बन्द हो जाने पर जनता ने आन्दोलन अपने हाथ में ले लिया। गांधी जी का आदेश था ही 'डू एण्ड डाई'। इलाहाबाद के छात्रों ने भी आन्दोलन बढ़ाने का निश्चय किया।

दिनांक 12 अगस्त 1942 को विश्वविद्यालय प्रांगण में छात्रों की सभा हुई, जिसमें निश्चय किया गया कि छात्रों के दो दल बनाये जायेंगे। एक दल चौक जाकर टावर पर तिरंगा झंडा फहराएगा और दूसरा दल जिला कचहरी जाकर कचहरी की इमारत पर तिरंगा झंडा फहराएगा। चौक पर जाने वाले छात्रों के दल में मैं था और जिला कचहरी जाने वाले दल में मेरा अनुज सुरेन्द्र कुमार। दोनों दल नारे लगाते, गीत गाते, तोड़-फोड़ करते अपने पथ पर अग्रसर हुए। कचहरी जाने वाले दल में मेरे भाई के अलावा छतरपुर के श्री जंगबहादुर सिंह भी थे। माधवगढ़ के लाल पद्मधार सिंह ने कचहरी की इमारत पर चढ़कर तिरंगा फहरा दिया। वे गोली के शिकार हुए और शहीद हो गए। छात्रों की भीड़ को तितर-बितर करने के लिए घोड़े दौड़ाए गए और लाठी चार्ज किया गया।

विश्वविद्यालय और शिक्षण संस्थायें बंद कर दी गईं। होस्टल खाली कराने के आदेश हो गए। शहर में मुर्दनी छा गई, 'शूट एट साइट' का आर्डर

हो गया। सड़कें सुनसान हो गईं। शहर की ऐसी दशा में मैं 18 अगस्त तक इलाहाबाद में रहा। 18 अगस्त को हम तीनों इलाहाबाद छोड़कर अमरपाटन पहुंच गए। अमरपाटन में भी आंदोलन शुरू हो गया था। राष्ट्रीय आंदोलन के साथ एक मांग और जोड़ ली गई थी। महाराज गुलाबसिंह को वापस करो।

हम दोनों भाई वहाँ आन्दोलन में शरीक हो गए। कुछ दिन बाद ही हम दोनों भाइयों के खिलाफ रीवां स्टेट का वारंट निकल गया। जब मामा ने यह सुना तब वे बहुत घबड़ा गए। 26 अगस्त को रक्षा बंधन था। 25 अगस्त को हम दोनों माँ को रोती बिलखती छोड़कर अज्ञात की ओर बढ़ गए। मैंने अपनी माँ से वादा किया कि मैं ऐसी जगह काम करुंगा कि यदि मैं वहां गिरफ्तार हो गया तो आपको सूचना मिल जाएगी। हम दोनों मैहर पहुंचे। मैहर से मैं होशंगाबाद चला गया, जहां मेरे मौसा मस्ते जी रहते थे और सुरेन्द्र बांदा चला गया, जहाँ मां के मामा रहते थे।

होशंगाबाद पहुंचकर मैंने आंदोलन में हिस्सा लेना शुरू किया। हम लोग ट्रेनों में पर्चा चिपकाते और प्रचार कार्य करते। उन्हीं दिनों मैं नागपुर गया और शहर को जलते देखा। पोस्टआफिस जलाए जा रहे थे। सरकारी कार्यालयों पर धरना दिया जा रहा था। सरकार का काम-काज ठप्प किया जा रहा था और अंग्रेजों से भारत छोड़ने के लिए कहा जा रहा था।

उन्हीं दिनों मैं बम्बई गया, 8 दिन रहा और आंदोलन की गर्मी और तेजी का प्रत्यक्षदर्शी रहा। फिर मैं होशंगाबाद लौट आया। 9 अक्टूबर 1942 को नर्मदा तट पर विशाल जनसभा को संबोधित कर रहा था। मैंने अपने भाषण में कहा था कि अंग्रेज भारतीयों पर 39 डी0आई0आर0 डिफेंस आफ इंडिया रूल्स लगा रहे हैं और भारतीयों को भारत के लिए खतरा बता रहे हैं। जबकि डी0आई0आर0 अंग्रेजों के खिलाफ लगाया जाना चाहिये क्योंकि वे भारत के लिए खतरा हैं। पुलिस ने उपस्थित जनसमूह पर लाठीचार्ज किया। मुझे गिरफ्तार कर लिया गया और दो महीने होशंगाबाद जेल में विचाराधीन बंदी के रूप में रखा गया। मेरे साथ जेल में माखनलाल चतुर्वेदी के भाई रामकुमार चतुर्वेदी, हरीप्रसाद चतुर्वेदी, एन0कुमार, हजारीलाल मस्ते, हरदा के दादा भाई नायक, बन्धे गुरू, रामेश्वर अग्निभोज आदि अनेक नेता थे।

मजिस्ट्रेट सुंदरलाल वर्मा ने मुझे छः महीने की कठोर कारावास की सजा दी और मैं 7 दिसम्बर 1942 को सेन्ट्रल जेल भेज दिया गया। वहाँ मेरा कैदी नं0 7305 था। मेरे बैरक में प्रोफेसर बी0एस0 अधोलिया, ठाकुरदास बंग, जनरल आवारी,हातेकर, मोहगांवकर, ऋषभदास काले, हेमराज पांडे आदि अनेक नेता थे। चूंकि मैं जेल के कपड़े नहीं पहन रहा था इसलिए मुझे एक हफ्ते गुनाहखाने तन्हाई में रखा गया। तन्हाई में समय काटना एक समस्या थी। पहली रात मैंने, जो कुछ मुझे याद था, उसका पाठ करके बिताई। दिन में कमरे के एक कोने से दूसरे कोने तक सात कदम रखकर जाता और लौटता था जैसे शेर अपने पिंजरे में चक्कर लगाता है।

दूसरी कोठरी के एक बंदी ने मेरे पास एक अंग्रेजी उपन्यास भिजवाया जिसका नाम 'टेन मिनिट एलीबी' था। एक दो दिन उसे पढ़ने से काटे फिर बैरक में भेज दिया गया। बैरक में हम लोग गेहूं बीनते, निवाड़ बुनते, और इसी तरह के, दूसरे साधारण काम करते। क्योंकि मैं बी0ए0 पास हो गया था इसलिए मुझे बी0क्लास में रखा गया था। नाश्ता और दोनों टाइम खाना मिलता था। नाश्ते में छह छटाक दूध, दो तोला शक्कर और डबल रोटी के दो टुकड़े मिलते थे। जनरल आवारी और मैंने 'सिविल प्रोसीजर कोड' और 'इंडियन पीनल कोड' की प्रत्येक दफा

में संशोधन किया। यह सोचकर कि जब भारत स्वतंत्र होगा तब इन कानूनों में क्या परिवर्तन किया जाएगा।

हम लोग जेल के नियम नहीं मानते थे। इसलिए हमारी सारी सुविधाएं-पत्र लिखना, संबंधियों से मिलना आदि बन्द कर दी गई थीं। मैंने कारावास में लगभग 100 पुस्तकें पढ़ी थीं। गुनहखाने में क्रांतिकारी सुरेन्द्र नाथ सर्किल थे। उन्होंने मेरे पास पढ़ने के लिए एक पुस्तक भिजवाई थी जिसका नाम था 'दी वायेज आफ कोमागाटा मारु'। उन्हीं दिनों मैंने मोपासा का कहानी संग्रह पढ़ा था। जैन कट्टरता के खिलाफ बोलने से एक जैन कैदी ने मुझ पर चाकू से वार कर दिया था।

जब मेरी सजा की अवधि पूरी हो गई तब 22 अप्रैल सन् 1943 को मुझे छोड़ा जाना था लेकिन छोड़ते वक्त सुपरिंटेंडेंट दाते ने पूछा कि 'क्या कैदी पिछली परेड में खड़ा हुआ था' जब उन्हें बताया गया कि नहीं खड़ा हुआ था तब उन्होंने नया वारंट मंगाने को कहा और प्रिजन्स एक्ट की दफा 52 के अन्तर्गत मुझे पुन: बंदी बना लिया गया। मैं जेल के बड़े चक्कर से छोटे चक्कर में भेज दिया गया। इस समय मेरे कमरे में जबलपुर के प्रसिद्ध पत्रकार हुकमचंद नारद (जैन) थे। मेरे ऊपर मुकदमा चलने लगा। दो महीने विचाराधीन बंदी रहा। इस प्रकार कुल दस माह जेल में बंदी रहकर बाहर आया। एक बात और बतला दूं राष्ट्रप्रेम के कारण मैं जेल में गया लेकिन एक साहित्यकार होने के नाते मेरे मन में यह इच्छा थी कि मैं जेल में जाकर कैदियों की जिंदगी का भी अध्ययन करूं।----आदि।'

आ0- (1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-2, पृष्ठ-112 (2) प0 जै0 इ0, पृ0-387 (3) स्व0 प0 (4) सा0 (5) वि0 स्व0 स0 इ0, पृष्ठ-294

श्री महेन्द्र जी

अपने मित्रों और प्रशंसकों में महेन्द्र कुमार से 'महेन्द्र जी' कहलाने लगे आगरा (उ0प्र0) के प्रसिद्ध स्वाधीनता सेनानी, साहित्यकार, पत्रकार, जैन साहित्योद्धारक, प्रकाशक और श्री बनारसी दास चतुर्वेदी के शब्दों में 'अखिल भारत के चोटी के हिन्दी सेवक' महेन्द्र जी के नाम से आगरावासी अपरिचित नहीं हैं।



महेन्द्र जी का जन्म 19 जनवरी 1900 को जारौली ग्राम में श्री भगवती प्रसाद जी के घर द्वितीय पुत्र के रूप में हुआ। आपका लालन-पालन नाना के घर आगरा में हुआ। हाईस्कूल परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद आप स्वाधीनता संग्राम में शामिल हो गये।

1930 में आप 'सैनिक' के प्रकाशन के दौरान प्रथम बार नजरबंद हुए और छ: माह की सजा सेन्ट्रल जेल आगरा में काटी। 'सैनिक' का प्रकाशन बंद होने के बाद आपने 'सत्याग्रह समाचार' निकाला। जुलाई 1930 में महेन्द्र जी ने 'हिन्दुस्तान समाचार' पत्र प्रकाशित किया। जिसे अंग्रेजी सरकार ने 10 अंकों के प्रकाशन के बाद ही बंद करा दिया। दिसम्बर 1930 तक आपके घर की 5 बार तलाशी ली गयी। पांचवीं तलाशी में उनके घर से 'सिंहनाद' के मेटर का कार्बन पेपर मिला, उन्हें छ: माह की सजा तथा 250 रु0 का जुर्माना भुगतना पड़ा और प्रतापगढ़ जेल भेज दिया गया।

1934 में आगरा में 'आरती-नमाज' के सन्दर्भ में आपकी सेवाओं की सर्वत्र सराहना हुई थी। आगरा में नूरी दरवाजे तथा फुलट्टी में होकर जैन रथयात्रा नहीं निकल पाती थी आपने आगरा दिगम्बर जैन परिषद् के सभापति के नाते प्रयत्न किया और सफलता पाई।

1937 में कांग्रेस मंत्रिमण्डल बनने पर आपने ऐसे महत्त्वपूर्ण कार्य किये जिनकी प्रशंसा संबंधित

अधिकारियों ने की थी। 1940 के आंदोलन में आपको जेल में बंद कर दिया गया और आंदोलन समाप्त होने पर छोड़ा गया। 1941 में आप अप्रैल से नवम्बर तक नजरबन्द रहे।

1942 के आंदोलन के समय आप पुन: प्रकाशन के कार्य में लग गये और 'लाल पर्चा' ऐसा छापा जिसने भारतवर्ष के कोने-कोने में तहलका मचा दिया। 'आजाद हिन्दुस्तान' नाम से एक समाचार पत्र भी आपने प्रकाशित किया। इस प्रकाशन से अंग्रेजी सरकार परेशान हो गयी। महेन्द्र जी व उनके साथियों ने इन्कम टैक्स के कागज जलाये व तोड़फोड़ आंदोलन में भाग लिया।

1942 के आंदोलन में 9 सितम्बर को गिरफ्तार कर आपको जेल भेज दिया गया तथा एक जेल में नहीं रखा गया, बार-बार स्थान बदले गये। महेन्द्र जी आगरा, उन्नाव, एटा, फर्रूखाबाद, प्रतापगढ़ आदि की जेलों में बंद रहे। जेल में उन्हें अनेक प्रकार की यातनाऐं दी गयीं और दो दिन के लिये काल कोठरी में रखा गया, तब उनके साथियों ने अनशन और आंदोलन किया, जिससे सरकार ने आपको 11 दिसम्बर 1942 को पेरोल पर छोड़ दिया था। इस समय आपका 'साहित्य' प्रेस तथा मासिक 'साहित्य संदेश' बंद करा दिया गया था।

उन्नाव जेल से जब महेन्द्र जी को छोड़ा गया तब ब्रिटिश सरकार से गांधी जी का समझौता हो चुका था। महेन्द्र जी का स्वास्थ्य जेल में बहुत बिगड़ गया था। जेल से छूटने के बाद उनका इलाज कराया गया। धीरे-धीरे उनका स्वास्थ्य ठीक हुआ उसके बाद आप पुन: राजनैतिक एवं सामाजिक कार्यों में लग गये।

साहित्य और प्रकाशन के क्षेत्र में महेन्द्रजी का विशेष योगदान है। आपने जैन समाज के सुधार के लिये अनेक कार्य किये। आप अनेक वर्षों तक महावीर दिगम्बर कॉलेज के मैंनेजर रहे। आगरा में एक जैन शोध संस्थान है। महेन्द्र जी इसके संस्थापकों में एक थे। इस संस्थान में लगभग 5 हजार जैन ग्रंथों की पाण्डुलिपियाँ संग्रहीत हैं। इस संस्थान को हमें देखने का अवसर मिला है।

आगरा कॉलेज एवं नागरी प्रचारणी सभा में अनेक पदों पर रहकर आपने महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। नगर महापालिका के शिक्षा-अध्यक्ष पद पर भी रहे। महेन्द्र जी के बड़े पुत्र श्री भारतेन्दु जैन भी आगरा नगर महापालिका के सदस्य रहे, उन्होंने चीन आक्रमण के समय स्टेशनों पर जाकर जवानों का स्वागत किया था। आपकी धर्मपत्नी श्रीमती अंगूरीदेवी ने भी स्वाधीनता संग्राम में आगे बढ़ कर हिस्सा लिया। (इनका परिचय पीछे दिया जा चुका है)

महेन्द्र जी के निधन पर प्रसिद्ध साहित्यकार श्री बनारसीदास चतुर्वेदी ने उन्हें जो श्रृद्धांजलि अर्पित की थी वह महेन्द्र जी के व्यक्तित्व को पूर्णत: रेखांकित करती है। विशेषत: उनके हिन्दी साहित्य सेवी रूप को। श्रृद्धांजलि के कुछ अंश हम साभार यहाँ दे रहे हैं–

'बन्धुवर' महेन्द्र जी के चले जाने से हृदय को धक्का लगा। उनसे मेरा पचास वर्ष से संबंध था और वह कौटुम्बिक धरातल तक पहुँच गया था। उनके पूज्य पिताजी को शमसाबाद में हमारे कक्का ने पढ़ाया था और हम मजाक में कभी-कभी महेन्द्र जी से कहते थे– 'तुम तो हमारे परम्परागत शिष्य हो' और महेन्द्र जी इसे सहर्ष स्वीकार कर लेते थे।

जब हमारे अनुज स्व0 रामनारायण को आगरा कॉलेज में अध्यापन कार्य मिला और वह गोकुल पुरा में मकान किराये पर लेकर रहने लगा तो हमारे कक्का भी वहीं पहुँच गये और तब महेन्द्र जी का हम लोगों से और भी घनिष्ठ संबंध हो गया। महेन्द्र जी ने अपने पिताजी के गुरु की सेवा करने का कोई मौका हाथ से नहीं जाने दिया।

कक्का साहित्य रत्न भंडार जाते और कहते 'बेटा महेन्द्र' महेन्द्र जी तुरन्त कहते 'आज्ञा दीजिये' कक्का जी उनसे आवश्यकतानुसार 20-25 रु0 उधार ले आते और अपनी सुविधानुसार लौटा भी देते।

एक बार हमारे घर में मेज की जरूरत आ पड़ी। कक्का ने महेन्द्र जी के पास जाकर कहा 'हमें एक छोटी मेज चाहिये' उसी समय महेन्द्र जी ने मेज खरीदकर हमारे घर भिजवा दी। वह वर्षों तक हमारे घर की शोभा बढ़ाती रही और उसका नाम पड़ गया 'महेन्द्र जी की मेज।'

महेन्द्र जी बड़े विनयसंपन्न व्यक्ति थे और हमारी कई साहित्यिक योजनाओं में उन्होंने भरपूर सहायता भी दी थी। जब राजा लक्ष्मण सिंह की शताब्दी मनाने की बात हमें सूझी तो महेन्द्र जी ने तुरन्त उसके लिये आर्थिक व्यवस्था कर दी।

बेशुमार पत्र व्यवहार की बीमारी तब तक मुझे लग चुकी थी और न मालूम कितने पत्र इस समय मैंने लिखे पर पोस्टेज का समस्त व्यय महेन्द्र जी ने नागरी प्रचारिणी सभा से मुझे दिलवा दिया। उन दिनों मेरी आर्थिक स्थिति ठीक नहीं थी। इसलिए फिरोजाबाद से आगरा आने-जाने का खर्च भी महेन्द्र जी ही देते थे। मैंने यह नियम बना लिया था कि प्रत्येक यात्रा में तीन रुपये मैं महेन्द्र जी से वसूल कर लूंगा। वे मेरा आतिथ्य भी करना चाहते थे पर बन्धुवर हरीशंकर जी कभी यह सहन नहीं कर सकते थे कि मैं कहीं अन्यत्र ठहरूं।

वे भी क्या दिन थे! महेन्द्र जी मिशनरी भावना से ओतप्रोत होकर नागरी प्रचारिणी सभा के लिये चंदा करते थे और कभी-कभी गलतफहमी के शिकार हो जाते थे। हमारे देश में ऐसे आदमियों की कभी कमी नहीं रही जो 'बिन काज दाहिने बाऐं' पर महेन्द्र जी ने ऐसे निराधार विरोध की कभी चिन्ता नहीं की।

जब सत्यनारायण 'कविरत्न' की कविताओं के संग्रह के प्रकाशन का सवाल मेरे सामने आया तो मुझे फिर महेन्द्र जी की शरण लेनी पड़ी। इस शुभ कार्य को भी उन्होंने सम्पन्न कराया। 'हृदयतरंग' के दो संस्करण उन्हीं की देखरेख में छपे।

दिगम्बर जैन इण्टर कॉलेज के लिये महेन्द्र जी ने जो कार्य किया वह आगरे की शिक्षा के इतिहास में चिरस्मरणीय रहेगा। नागरी प्रचारिणी सभा की उन्नति में महेन्द्र जी का योगदान सर्वोच्च स्थान रखता है।

मैंने महेन्द्र जी से कहा 'अगर आपका पूरा-पूरा सहयोग मिले तो मैं आगरे को अपना कार्यक्षेत्र बनाने को तैयार हूँ' इस पर वे बोले 'चौबे जी! अब मेरा स्वास्थ्य इस काबिल नहीं कि मैं कोई सक्रिय सहयोग दे सकूं।'

उनके उस समय के थके थकाए चेहरे तथा क्षीण वाणी का मुझे अब भी स्मरण है। वे अपना काम कर चुके थे और पूर्ण विश्राम चाहते थे।

वैसे तो महेन्द्र जी की गणना अखिल भारत के चोटी के हिन्दी सेवकों में की जा सकती है पर वे ब्रज की विभूति थे और आगरे के साहित्यिक तथा सांस्कृतिक जीवन के प्राण।

आ0- (1) स्व0 महेन्द्रजी की धर्मपत्नी श्रीमती अंगूरी देवी द्वारा प्रदत्त परिचय, (2) श्रद्धेय पं0 बनारसीदास चतुर्वेदी की श्रद्धांजलि आदि। (3) जै0 स0 रा0 अ0 (4) उ0 प्र0 जै0 ध0, पृष्ठ-89 (5) गो0 अ0 ग्र0, पृष्ठ-224-225

श्री महेशचंद जैन आयुर्वेदाचार्य

कानपुर (उ0प्र0) के श्री महेशचंद जैन प्रसिद्ध स्वाधीनता सेनानी व देशभक्त वैद्य कन्हैयालाल के पुत्र थे। आपके पिता-माता व भाई सुन्दरलाल जी जेल यात्री रहे हैं। कानपुर का चांद औषधालय आपके तत्त्वावधान में शुरू हुआ था। नव-युवकों में स्वाधीनता आन्दोलन हेतु स्फूर्ति का संचार करने

वाले श्री जैन को 1940 में 2 माह का कारावास भुगतना पड़ा था।

आ0– (1) जै0 स0 रा0 अ0 (2) पं0 बच्चूलाल जी द्वारा प्रदत्त परिचय

श्री मांगीलाल उर्फ महेन्द्रकुमार बड़जात्या 'आजाद'

'आजाद' उपनाम से विख्यात इन्दौर (म0प्र0) के श्री मांगीलाल उर्फ महेन्द्र कुमार बड़जात्या, पुत्र-श्री पूनमचंद जैन का जन्म 1915 में हुआ। 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में आप सक्रिय रहे तथा 5 माह से अधिक का कारावास आपने भोगा।

आ0–(1) म0 प्र0 स्व0 सै, भाग-4, पृष्ठ-36

श्री मांगीलाल जैन

झाबुआ (म0प्र0) के श्री मांगीलाल जैन, पुत्र-श्री वेणीचन्द जैन का जन्म 1927 में हुआ। 1944 से 48 तक पिपलौढ़ा, जिला-रतलाम में आपने विभिन्न आन्दोलनों में भाग लिया, फलत: गिरफ्तार कर 12 दिन जेल में रखा गया पर नाबालिग होने के कारण छोड़ दिया गया।

आ0–(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-4, पृष्ठ-144

श्री मांगीलाल सदासुख पाटनी

श्री मांगीलाल पाटनी, पुत्र-श्री सदासुख पाटनी का जन्म 1906 में कुचामन (राजस्थान) में हुआ।



1917 में माता-पिता के निधन के पश्चात् आप अपने काका रिखवदास जी के पास सनावद (म0प्र0) आकर रहने लगे। मिडिल परीक्षा उत्तीर्ण कर आपने 1930 में विदेशी वस्त्रों की होली जलाने के आंदोलन से सार्वजनिक जीवन में कदम रखा। इन्दौर राज्य प्रजामण्डल के नेतृत्व में राजनीतिक गतिविधियों में सक्रिय रहे। 1940 के व्यक्तिगत सत्याग्रह में आपने भाग लिया। भारत छोड़ो आंदोलन 1942 में 14 माह की जेल यात्रा आपने काटी।

नवभारत, इन्दौर (दिनांक 4 सितम्बर 1997) आपकी गिरफ्तारी के सन्दर्भ में लिखता है-(19 अगस्त से सत्याग्रह के बाद) 'सत्याग्रह करते हुए एक के बाद एक प्रजामण्डल के नेता गिरफ्तार होते रहे। पहले जत्थे में मयाचंद जटाले, मन्नालाल पंचोलिया और नारायणदास जायसवाल पकड़े गये। फिर तीसरे दिन बारी आई अध्यक्ष कमलचंद जैन, मांगीलाल पाटनी, सुमेरचंद जैन और छात्र नेता जगदीश चन्द्र विद्यार्थी की...।' आप जड़ी बूटी विशेषज्ञ हैं और नि:शुल्क आयुर्वेदिक उपचार करते हैं। धर्म ग्रंन्थो का अध्ययन, शास्त्र प्रवचन, मुनिसेवा में आपकी अभिरुचि है।

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-4, पृष्ठ-91 (2) स्व0 प0 (3) नवभारत, इन्दौर, 4-9-1997

श्री माखनलाल जैन 'बन्दी'

'बन्दी' उपनाम से प्रसिद्ध श्री माखनलाल जैन, पुत्र-श्री फदालीलाल का जन्म 1920 में सागर (म0प्र0) में हुआ। आपने संस्कृत विशारद तक शिक्षा प्राप्त की। 1941 के व्यक्तिगत सत्याग्रह में 2 माह तथा 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में लगभग नौ माह का कारावास आपने भोगा।

आ0- (1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-2, पृष्ठ-53 (2) आ0 दी0, पृष्ठ-71

श्री माणकलाल जैन

शाजापुर (म0 प्र0) के श्री माणकलाल जैन, पुत्र-श्री मौजीलाल जैन का जन्म 1916 में हुआ। विद्यार्थी जीवन से ही आप रा0 आ0 में सक्रिय हो गये। आपने अनेक बार जेलयात्रायें कीं पर कर्तव्य पथ से हटे नहीं। लेखन तथा पत्रकारिता से सदैव जुड़े रहे

श्री जैन जिला एवं नगर कांग्रेस के पदाधिकारी रहे हैं।

आ0-(1) स्वतंत्रता संग्राम और राष्ट्रीय जनजागरण में शाजापुर जिले का योगदान (टंकित शोध-प्रबन्ध, 1996)

श्री माणकलाल जैन

झाबुआ (म0प्र0) के श्री माणकलाल जैन, पुत्र-श्री गुलाबचंद जैन ने राष्ट्रीय आन्दोलन में भाग लिया। आजादी के बाद शासन ने प्रशस्ति पत्र प्रदान कर आपको सम्मानित किया है।

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-4, पृष्ठ-144

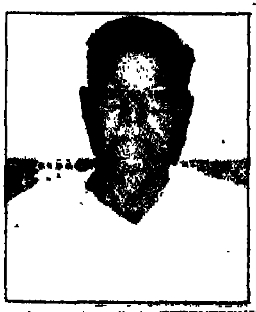
श्री माणकलाल जैन

इन्दौर (म0प्र0) के श्री माणकलाल जैन, पुत्र-श्री दीपचन्द का जन्म 1927 में हुआ। 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में दि0 11-10-42 से 29-11-43 तक का कारावास आपने भोगा।

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-4, पृष्ठ-36

श्री माणिकचंद जैन पाटनी

हरदा, जिला-होशंगाबाद (म0प्र0) के श्री माणिक चन्द जैन पाटनी, पुत्र-श्री बल्देव पाटनी का जन्म



22 अक्टूबर 1922 को हुआ। पाटनी जी ने भारत छोड़ो आन्दोलन में भाग लिया और 14 अगस्त 1942 को गिरफ्तार कर होशंगाबाद जेल में भेजे गये। कुछ दिनों बाद जबलपुर जेल भेज दिये गये। आपने चार माह की सजा काटी। आपने शासकीय पेंशन लेने से इंकार कर दिया क्योंकि आपका विचार है कि-'हमने देशहित के लिये काम किया है, किसी लाभ के लिये नहीं।'

सम्प्रति आप निर्वाण कांड गाथा में उल्लिखित -'रावण के सुत आदि कुमार मुक्ति गये रेवा तटसार' के आधार पर नेमावर, जिला-देवास को सिद्धक्षेत्र के रूप में विकसित करने के कार्य में सलंग्न हैं।

आ0- (1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-5, पृष्ठ-345 (2) स्व0 स0 हो0, पृष्ठ-132 (3) हरदा और स्वतंत्रता संग्राम, पृष्ठ-79 (4) स्व0 प0

श्री माधवसिंह जैन 'संत'

श्री माधवसिंह जैन का जन्म मंदसौर (म0 प्र0) में 3 जून 1906 में हुआ था। आपके पिता श्री पन्नालाल जैन मंदसौर में ही एक साधारण व्यवसायी थे। स्वतंत्रता आंदोलन में श्री जैन ने 1924 के लगभग प्रवेश किया। श्री जैन, जिन्हें कालान्तर में 'संत' कहा जाने लगा था श्री हरिभाऊ उपाध्याय से बहुत प्रभावित थे। उनके भाषणों से ही प्रभावित होकर श्री जैन आंदोलनकारियों के लिये महत्त्वपूर्ण आवश्कयता हो गये थे। 'जो काम किसी से न हो उसे माधव करेगा' ऐसी उक्ति उस समय प्रचलित थी। प्रचार साहित्य बांटना हो, दीवारों पर पोस्टर चिपकाना हों, सूचनाएं लाना-ले जाना हों अथवा नारे लगाना हों, सब में श्री जैन सबसे आगे रहते थे।

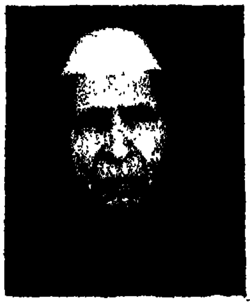
माधवसिंह जी कुछ समय राजस्थान भी रहे और फिर बंगाल चले गये। कलकत्ता में रहकर आपका सम्पर्क वहां के अनेक क्रांतिकारियों से हुआ। कलकत्ता उस समय क्रान्तिकारियों का प्रमुख केन्द्र था। इन्हें अनेक बार गिरफ्तार किया गया व फिर कुछ दिनों बाद छोड़ भी दिया गया। नवभारत टाइम्स, बम्बई के कार्यालय में भी आपने सेवा की व बम्बई रहकर आंदोलन में भाग लेते रहे। आप एक सतर्क पत्रकार भी थे।

1942 के भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान आपको कलकत्ता में गिरफ्तार कर लगभग 7 माह कारावास में रखा गया। वहां से मुक्त होकर आप वापिस मंदसौर आ गये व जीवनपर्यन्त राष्ट्रीय चेतना के कार्य में लगे रहे। श्री जैन का देहावसान 1971 में जावरा में हुआ।

आ0- (1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-4, पृष्ठ-217 (2) स्व0 स0 म0, पृष्ठ-50-51

श्री मानकचंद 'मुल्ला' जैन

श्री मानकचंद जैन (मुल्ला जी) का जन्म मिती माघ वदी 14 शुक्रवार संवत् 1958 (सन् 1901)



को खुरई, जिला-सागर (म0 प्र0) में हुआ था। आपके पिता का नाम श्री रामचंद मुल्ला जैन एवं माता का नाम गौरी बहू था।

जलियांवाला काण्ड के कारण आपके हृदय में देश-प्रेम की आग पैदा हुई और आप 'वन्देमातरम्' के उद्घोष में शामिल हो गये। तब से आप लगातार 1947 तक आजादी की लड़ाई में सक्रिय रहे और आजादी का बाद भी जीवन पर्यन्त समाज उत्थान का कार्य एक कट्टर कांग्रेसी कार्यकर्ता के रूप में करते रहे।

खुरई शहर से आपको हार्दिक लगाव रहा तथा संपूर्ण सागर जिला आपका कार्यक्षेत्र रहा। आजादी से पहिले भारत के कई प्रमुख शहरों में आप कांग्रेस के अधिवेशनों में भाग लेने गये।आपने जीवन भर खादी पहिनने का व्रत लिया था, जिसका पूर्णत: निर्वाह किया। महात्मा गांधी के आह्वान पर नमक कानून तथा जंगल कानून तोड़ने, रतौना (सागर) के कसाई घर (पशुवध गृह) को बंद करवाने में आपने सक्रिय रूप से कार्य किया। सत्याग्रह, शराबबंदी, विदेशी वस्त्रों की होली जलाना, तथा 1942 के 'करो या मरो' आंदोलन में भी आपने भाग लिया और दिनांक 20-8-42 से 14-7-43 तक लगभग 11 माह सागर, जबलपुर और नागपुर की सेन्ट्रल जेलों में कठोर यातनायें सहीं।

सागर के भाई अब्दुल गनी तथा मुंशी सुन्दरलाल जी जैन और खुरई के निम्न सेनानी आपके साथी रहे-भाई दयाचंद वीर, श्री नन्हा जी समनापुर वाले, श्री मानक लाल, श्री बाबूलाल वजनकस, श्री कैलाशचंद जैन, श्री धन्नालाल जैन, श्री लालचंद जैन, श्री हेमराज पांडे, श्री हरीशचंद जैन तथा श्री चुन्नालाल जैन। दक्षिण भारत के प्रसिद्ध संत श्री तुकड़ों जी महाराज आपके परम मित्र थे।

आजादी के बाद खुरई शहर के कई प्रमुख विकास कार्यों में आपने महत्त्वपूर्ण सहयोग दिया। आपने अपने मकान में कांग्रेस कार्यालय को जगह भी दी थी। आपको प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी के द्वारा एवं सेठ गोविन्ददास जी के द्वारा ताम्रपत्र प्रदान किया गया था। खुरई शहर में पॉलीटेकनिक कॉलेज तथा डिग्री कॉलेज की स्थापना में, म्युनिसिपल कमेटी, कृषि उपज मंडी समिति, तहसील कांग्रेस कमेटी तथा सागर जिला स्वतंत्रता संग्राम सैनिक संघ के कार्यों में आप हमेशा सक्रिय रहे तथा कभी किसी पद पर रहने की अभिलाषा नहीं की। आपके मस्तिष्क में ही यह विचार सबसे पहिले आया था कि खुरई में श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन गुरुकुल की स्थापना होना चाहिए। इसके लिए कमेटी बनाई गई। गुरुकुल कमेटी के आप प्रथम अध्यक्ष थे। समाज के सहयोग से 1946 में यह गुरुकुल स्थापित हुआ था।

आपने लगभग सभी धर्मों का अध्ययन किया था। 'शेरो-शायरी' में भी काफी रुचि रखते थे। खुरई की राजनीति में आपका महत्त्वपूर्ण स्थान था तथा प्रत्येक राजनीतिक दल के लोग आपसे सलाह लिया करते थे। एक बार आपने स्वयं के बारे में लिखा था-

'अलग मैं सबसे रहता हूँ मिसाले तार तम्बूरा।
मिलाने से मैं मिलता हूँ मिलाले जिसका जी चाहे।।'

आपकी पत्नी का देहांत लगभग 1939 में हो गया था। कोई संतान नहीं थी। घर में अकेले होने के कारण आपने अपने बहनोई श्री केशरीमल ठेकेदार एवं बहिन श्रीमती बेटीबाई को सिरोंज से खुरई अपने पास बुला लिया था तथा आजीवन उन्हीं के

साथ रहते रहे। उनकी एक मात्र छोटी बहिन श्रीमति बेटीबाई ही उनकी उत्तराधिकारी बनीं। वर्तमान में श्रीमती बेटीबाई के पुत्र श्री विजयकुमार व्याख्याता एवं श्री जयकुमार उनके उत्तराधिकारी हैं।

मानकचंद जी का देहान्त दिनांक 31-05-1975 को लगभग 75 वर्ष की आयु में हुआ। जिस समय आपका देहान्त हुआ उस समय आप पूर्ण स्वस्थ थे। कहा जाता है कि मृत्यु का आभास आपको पहले से ही हो गया था। अत: आपने स्वयं ही अपने वस्त्र त्याग दिये थे और जमीन पर सो गये थे। जीवन पर्यन्त आप प्रतिदिन मंदिर जी गये तथा प्रतिदिन भगवान के 'सहस्रनाम' का पाठ किया करते थे। जीवन के अंतिम दिनों में आपने अपनी डायरी के अंतिम पृष्ठ पर लिखा है–

'नक्शा उठाकर अब कोई नया शहर देखिये
अपनी तो इस शहर में सबसे मुलाकात हो चुकी।।'

आ0- (1) श्री विजयकुमार जैन व्याख्याता द्वारा प्रदत परिचय (2) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-2, पृष्ठ 53 (3) आ0 दी0, पृष्ठ-71

श्री मानमल जैन

जोधपुर (राज0) के श्री मानमल जैन का जन्म 1907 में एक सम्पन्न ओसवाल जैन परिवार में हुआ। अपने विद्यार्थी जीवन से ही रा0 आ0 में सक्रिय रहे श्री जैन ने 1931-32 के सविनय अवज्ञा आन्दोलन में डिक्टेटर के रूप में भाग लिया, वे ब्यावर में गिरफ्तार किये गये और जेल भेज दिये गये। श्री अभयमल जैन आपके साथी थे।

1933 में श्री जैन ने मित्रों के सहयोग से जोधपुर में हरिजन संघ की स्थापना की। 1934 में उन्होंने जैन समाज में पर्दाप्रथा के विरोध में आन्दोलन किया। 1931 में मानमल जी द्वारा स्थापित 'यूथलीग' जब 1934 में गैरकानूनी घोषित हो गई तो उन्होंने समान उद्देश्य और विधान वाली 'बाल भारत सभा' की स्थापना की। 1935 में वे 'जोधपुर प्रजामंडल' की स्थापना होने पर उसके मंत्री चुने गये। 1935 में ही श्री जैन को 'गणगौर काण्ड' में गिरफ्तार कर कठोर शारीरिक यातनायें दी गईं। प्रजामंडल के गैरकानूनी घोषित होने पर 1936 में उन्होंने अपने मित्रों के सहयोग से 'सिविल लिबर्टीज यूनियन' की स्थापना की। 1936 में ही मानमल जी 'राजपूताना देशी राज्य प्रजापरिषद्' के मंत्री बनाये गये। इन सब राजनैतिक प्रवृत्तियों के कारण श्री जैन को एक वर्ष के लिए दौलतपुरा-किले में नजरबन्द कर दिया गया।

जोधपुर कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष तथा मंत्री एवं वर्षों तक प्रदेश कांग्रेस कमेटी के सदस्य रहे श्री जैन गहन बीमारी के कारण 1942 के आन्दोलन में भाग नहीं ले सके। उन दिनों वे रोग शय्या पर ही रहे थे।

आ0- (1) रा0 स्व0 से0, पृष्ठ-692 (2) जैन संस्कृति और राजस्थान, पृष्ठ-344

श्री मानमल जैन

'मारवाड लोक परिषद्' के कर्मठ कार्यकर्ता रहे श्री मानमल जैन का जन्म 1912 में लाडनूँ (राजस्थान) के एक सम्पन्न ओसवाल जैन कुल में हुआ। उनके परिवार के लोग कलकत्ता के प्रसिद्ध व्यवसायी हैं, पर मानमल जी ने राजनैतिक प्रवृत्तियों को अपनाया और देश की आजादी का मार्ग प्रशस्त किया। लोक परिषद् द्वारा जागीरदारी प्रथा को समाप्त करने के आन्दोलन में उन्होंने उत्साह से भाग लिया था। 1942 के आन्दोलन में वे जिम्मेदार हुकूमत आन्दोलन में लाडनूँ से सत्याग्रहियों का जत्था लेकर जोधपुर गये और 12 अगस्त 1942 को गिरफ्तार कर लिये गये तथा लगभग सवा वर्ष जेल में रहने के बाद 11 नवम्बर 1943 को रिहा किये गये।

आ0-(1) रा0 स्व0 से0, पृष्ठ-849

श्री मानमल मार्तण्ड

मदनगंज (राजस्थान) के प्रमुख राष्ट्रीय कार्यकर्ता और 'ओसवाल' पत्र के भूतपूर्व सम्पादक श्री मानमल मार्तण्ड 1942 के आन्दोलन में जेल गये। जेल जाने से पहले आपने गुप्त रूप से काफी कार्य किया था।

आ0-(1) जै0 स0 रा0 अ0, पृष्ठ-69

हकीम मानिकचंद जैन

फिरोजाबाद (उ0प्र0) के हकीम मानिकचंद जैन को आयुर्वेदिक चिकित्सा का व्यवसाय अपने



पिता से मिला। 1942 के आंदोलन में राष्ट्रीयता की लहर दौड़ रही थी और फिरोजाबाद नगर में सैकड़ों व्यक्ति आन्दोलन में भाग ले रहे थे। महेन्द्र जी, आगरा (जिनका परिचय इसी ग्रन्थ में है) के संरक्षण में एक बुलेटिन गुप्त रूप से प्रकाशित होकर जगह-जगह भेजा जाता था। हकीम जी के औषध ालय से उसका गुप्त वितरण होता था। आखिर गुप्तचर विभाग ने पता लगाकर हकीम जी को गिरफ्तार कर लिया। आप चार माह कारावास में रहे। आप पी0डी0 जैन इण्टर कॉलेज, फिरोजाबाद के वर्षों तक अध्यक्ष रहे हैं।

आ0- (1) जै0 स0 रा0 अ0 (2) उ0 प्र0 जै0 ध0, पृष्ठ-91 (3) जै0 से0 ना0 अ0 (4) अमृत, पृष्ठ-25

बाबू मानिकचंद जैन

आगरा (उ0 प्र0) के बा0 मानिकचंद जैन को 1930 के आन्दोलन में छः माह की सजा हुई थी। 1942 के आंदोलन में आपको सरकार ने इस जुर्म में नजरबंद किया था कि आप 'आजाद हिन्दुस्तान' के काम में सहयोग देते हैं। आपको 11 माह तक नजरबंद रखा गया था। आप वार्ड कांग्रेस कमेटी के सहायक मंत्री भी रहे थे। 80 वर्ष की उम्र में आपका निधन हो गया।

आ0- (1) जै0 स0 रा0 अ0 (2) उ0 प्र0 जै0 ध0, पृष्ठ-90 (3) श्री महावीर प्रसाद द्वारा प्रेषित परिचय (4) गो0 अ0 ग्र0, पृ0-225

श्री मामचंद जैन

श्री मामचंद जैन का जन्म देवबन्द, जिला-सहारनपुर (उ0प्र0) में श्री मित्रसेन जैन के यहाँ हुआ। 1930 में आप गम्भीर ऐलान के साथ राजनीति में आये। श्री कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर ने लिखा है-'बड़ों के प्रति नम्रता और वाणी की स्पष्टता उनकी अपनी चीज है। शीघ्र ही उन्हें जिले के नेताओं का स्नेह मिल गया और सरकार का प्यार भी।'

1930 में नमक आन्दोलन के समय 2 से 4 सित0 1930 को देवबन्द में एक कांफ्रेंस का आयोजन किया गया जिसकी अध्यक्षता आचार्य जुगलकिशोर जी की धर्मपत्नी शान्ति देवी ने की थी। इस कांफ्रेंस की समाप्ति के बाद पहले श्री कन्हैयालाल मिश्र, बाबू आनन्द प्रकाश बी0ए0 तथा बाद में आपको व हरद्वारी लाल को गिरफ्तार किया गया। श्री हुलाशराय जैन भी इसी समय गिरफ्तार हुए थे। 5-3-1931 को देवबन्द के अन्य राजनैतिक बन्दियों के साथ आप रिहा कर दिये गये।

आ0- (1) स0 स0, भाग-1, पृ0-179 (2) जै0 स0 रा0 अ0 (3) जैन प्रदीप, जून 1994 (4) उ0 प्र0 जै0 ध0, पृ0-86

श्री मिट्ठूलाल जैन

सैंधवा, जिला-खरगौन (म0प्र0) के श्री मिट्ठू लाल जैन, पुत्र-श्री नेनसी भाई का जन्म 10 फरवरी 1922 को हुआ, आपने मैट्रिक तक शिक्षा पाई और युवावस्था में ही स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय हो गये। 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में भाग लेने के कारण 7 माह 27 दिन का कारावास आपने भोगा।

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-2, पृष्ठ-91

श्री मिट्ठूलाल जैन

पिण्डरई, जिला-मण्डला (म0प्र0) के श्री मिट्ठूलाल जैन, पुत्र-श्री बंशीलाल का जन्म 1898 ई0 में हुआ । 1930 की क्रान्ति की लहर ने आपके हृदय में हलचल मचा दी, आप आजादी के लिए मचल उठे और तभी से आन्दोलन में भाग लेने लगे। 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में आप तोड़-फोड़ की कार्यवाही तथा जबलपुर में जुलूस निकालने के कारण पकड़े गये फलतः लाठियों से पिटाई हुई और एक वर्ष के कठोर कारावास की सजा आपको भोगनी पड़ी।

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-1, पृष्ठ-212 (2) जै0 स0 रा0 अ0

श्री मिट्ठूलाल जैन

सागर (म0 प्र0) के श्री मिट्ठूलाल जैन, पुत्र-श्री हजारीलाल जैन का जन्म 4 मार्च 1918 को हुआ।



आपने पूज्य गणेश प्रसाद जी वर्णी द्वारा स्थापित सागर के मोराजी विद्यालय में लौकिक शिक्षा के साथ ही जैनधर्म की शिक्षा प्राप्त की। 1941 में आपने व्यक्तिगत सत्याग्रह में भाग लिया। 1942 में आपने चार माह का कारावास भोगा। आपने लिखा है कि-'1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में अपने साथी श्री मन्नूलाल के साथ मैंने गढ़ाकोटा तक पैदल यात्रा की। वहाँ आठ दिन तक बुलेटिन बांटे, परन्तु झण्डा चढ़ाते हुए गिरफ्तार कर लिया गया। मुझे चार माह की सजा हुई। डेढ़ माह सागर जेल में बगैर केस के नजरबंद रहा। जेल में चक्की चलाना..... आदि कार्य करना पड़ते थे। पर्युषण पर्व में जेल में करीब 100 की संख्या में जैन बन्धु थे, सभी अलग कमरे में पूजन व शास्त्र स्वाध्याय करते थे।'

आ0- (1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-2 पृष्ठ-54 (2) आ0 दी0, पृष्ठ-71 (3) स्व0 प0

श्री मिट्ठूलाल नायक

नरसिंहपुर (म0प्र0) के श्री मिट्ठूलाल नायक का जन्म 1 जनवरी 1900 ई0 को हुआ। 1920 में



पूज्य बापू के असहयोग आन्दोलन में आप कूद पड़े फलतः स्कूल छोड़ देना पड़ा। तीन वर्ष तक आप कांग्रेस के प्रचार एवं संगठनात्मक कार्यों में लगे रहे। बाद में आप विभिन्न पदों पर रहे। आजादी के बाद म0प्र0 शासन ने स्वतंत्रता संग्राम में स्मरणीय योगदान के लिए प्रशस्ति पत्र प्रदान कर आपको सम्मानित किया। 10 जनवरी 1995 को आपका निधन हो गया।

आ0- (1) प्रशस्ति पत्र (2) श्री मुकेश जैन, द्वारा प्रेषित परिचय

श्री मिश्रीलाल गंगवाल

तत्कालीन मध्यभारत (अब मध्य प्रदेश) के मुख्यमंत्री रहे, 'मालवा के गांधी' नाम से विख्यात,



अपने स्नेहिल व्यवहार से 'भैय्या जी' उपनाम से प्रसिद्ध, नैतिक मूल्यों के देवदूत, महावीर ट्रस्ट के पितृपुरुष, जैन जाति भूषण, स्वयंसेवक रत्न, जैनवीर, जैनरत्न जैसी उपाधियों के धारक श्री मिश्रीलाल गंगवाल, पुत्र-श्री बालचंद गंगवाल का जन्म देवास (म0प्र0) के सोनकच्छ गांव में 7 अक्टूबर 1902 को हुआ। 5 वर्ष की आयु में आप मातृविहीन हो गये।

14 वर्ष की अल्पवय में भैय्या जी ने विद्यार्थी सहायक समिति के सभापति के रूप में सार्वजनिक सेवा कार्य की दीक्षा ली। 1918 में अ0भा0 हिन्दी

साहित्य सम्मेलन, इन्दौर के स्वयंसेवक बने। 1931 में अ0भा0 खादी प्रदर्शनी के प्रमुख कार्यकर्ता के रूप में तथा 1938 में पूज्य बापू के सभापतित्व में आयोजित अ0भा0 हिन्दी साहित्य सम्मेलन, इन्दौर के अर्थमंत्री के रूप में आपकी सेवायें सराहनीय रहीं।

गंगवाल जी ने 1939 में इन्दौर राज्य प्रजामण्डल द्वारा नवीन टैक्स विरोधी (इन्दौर नगर में आयोजित 9 दिनों की हड़ताल के अवसर पर) हड़ताल संचालन समिति के तृतीय डिक्टेटर के रूप में सत्याग्रह जत्थे का नेतृत्व किया। 1941 में व्यक्तिगत सत्याग्रह आन्दोलन के सन्दर्भ में खण्डवा, हरदा, इटारसी, होशंगाबाद, ललितपुर व झांसी की यात्रा की तथा झांसी जेल में तीन माह का कारावास भोगा। 19 अगस्त 1942 को उत्तरदायित्वपूर्ण शासन प्राप्त करने के लिए इन्दौर राज्यमण्डल के आह्वान पर संगठित सत्याग्रह आन्दोलन में गिरफ्तार हुए और 15 माह के कठोर कारावास की सजा पाई। 23 मई 1947 को पुन: सत्याग्रह करते हुए गिरफ्तार कर लिये गये और 1 माह के कारावास की सजा भोगी।

1945 में रामपुरा में सम्पन्न हुए इन्दौर राज्य प्रजामण्डल अधिवेशन में आप अध्यक्ष निर्वाचित हुए थे। 1956 में भी अ0भा0 कांग्रेस कमेटी की ओर से आसाम राज्य के निर्वाचन प्रतिनिधि नियुक्त किये गये थे।

गंगवाल सा0 ने 1944 में सर्वप्रथम सत्ता में प्रवेश किया, जब आप इन्दौर राज्य विधानसभा में जनता की ओर से निर्विरोध प्रतिनिधि निर्वाचित हुए। नवम्बर 1947 में होल्कर नरेश द्वारा उत्तरदायित्वपूर्ण शासन प्रदान किये जाने पर मंत्री बनाये गये। 1948 में मध्य भारत के निर्माण पर प्रान्त के प्रथम मंत्रि मण्डल में खाद्यमंत्री के रूप में सम्मिलित हुए। 1951-52 में भारत के प्रथम आम चुनाव में धारा सभा हेतु बागली क्षेत्र से निर्वाचित होकर मध्यभारत के मुख्यमंत्री का पद सम्भाला। अप्रैल 55 तक वे मुख्यमंत्री रहे। इसके बाद श्री तख्तमल जैन के मुख्यमंत्री चुने जाने पर आप कांग्रेस विधानदल के उपनेता तथा वित्तमंत्री बनाये गये। 1956 में नवीन मध्यप्रदेश बनने पर पं0 रविशंकर शुक्ल के मंत्रि मंडल में वित्तमंत्री, 1956 में ही डॉ0 कैलाश नाथ काटजू के मंत्रिमण्डल में भी वित्तमंत्री और 1962 में श्री भगवंत राव मण्डलोई के मंत्रिमण्डल में भी वित्तमंत्री रहे। पं0 द्वारका प्रसाद मिश्र के मुख्यमंत्री बनने पर भी उसमें आप वित्तमंत्री बनाये गये। इसका मूल कारण यह था कि जैसे आप अपने जीवन में मितव्ययी थे वैसे ही शासन में भी थे।

गंगवाल सा0 के मितव्ययी स्वभाव के सन्दर्भ में उनके पुत्र श्री निर्मल गंगवाल ने लिखा है- 'हम जिस भी सरकारी बंगले में रहते, क्या मजाल है कि कहीं भी बिजली के बल्ब फालतू जलें। इसलिए बिजली और टेलीफोन का बिल पूरे मंत्रिकाल में मंत्रिपरिषद् की अपेक्षा सबसे कम आता था। कई बार पिता जी स्वयं उठकर फालतू जलती लाइट बंद करते। पिक्चर आदि जाने के लिए भोपाली तांगे में जाते थे, गाड़ी में नहीं। इसी कारण आवंटित पेट्रोल भी हर महीने वापस होता था। कभी-कभी स्वयं पत्र लिखते तो आने वाले लिफाफे को खोलकर, पीछे की तरफ में पत्र लिखते।.... एक होलडाल और एक सूटकेस ही हमने उनके पास जीवन भर देखा।..... कभी हमने उन्हें साबुन का इस्तेमाल करते नहीं देखा, स्नान भी तीन या चार लोटे पानी में कर लेते। पानी के उपयोग पर बड़ी पाबन्दी थी।..... इस सबके बावजूद उनकी काया कंचन थी।'

होल्कर नरेश द्वारा राज्य में उत्तरदायित्वपूर्ण शासन घोषित करने के समय से लगातार मध्यभारत के निर्माण तथा विलय और नवीन मध्यप्रदेश को साकार रूप प्रदान करने की सुखद वेला में 'यत्र-तत्र सर्वत्र प्रशासक' गंगवाल जी की सुस्पष्ट छाप विशेष रूप से दृष्टिगोचर होती है।

गंगवाल जी के करीबी प्रसिद्ध पत्रकार श्री 'मायाराम सुरजन' ने गंगवाल जी की निस्पृहता के सन्दर्भ में जो संस्मरण (देशबन्धु, 15/10/87) लिखा है वह सचमुच अनुकरणीय है। संस्मरण का सारांश

यह है कि 1952 में जब बाबू तख्तमल जैन चुनाव हार गये, श्री जैन मध्यभारत के मुख्यमंत्री थे और कुशल मुख्यमंत्रियों में उनकी गणना होती थी, तब भी नेहरू जी के करीबी होने के कारण उन्हें मुख्यमंत्री बनाने की कोशिशें हुईं। परन्तु कांग्रेस हाई कमान तैयार नहीं हुआ, फलत: गंगवाल जी ही मुख्यमंत्री बने। पुन: तख्तमल जी जब तीसरी बार चुनाव जीतकर आये तो गंगवाल जी ने बिना 'ननु न च' कियें अपना त्यागपत्र दे दिया और कहा कि वे भरत की तरह विरक्त होकर राजकाज चला रहे थे, अब राम की अयोध्या वापसी पर तख्तमल जी के लिए सिंहासन खाली करने में सुख का अनुभव कर रहे हैं।

1967 में उन्होंने बागली से विधानसभा का चुनाव लड़ा, जिसमें वे पराजित हो गये। इस पराजय के बाद भैय्या जी ने संसदीय राजनीति छोड़ दी। उन्होंने फिर विधानसभा का कोई चुनाव नहीं लड़ा, किन्तु राजनीति में जीवनपर्यन्त बने रहे और कांग्रेस के अनेक युवा नेताओं का मार्गदर्शन किया। 1968-71 में वे मध्य प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष रहे।

आर्थिक मसलों पर उनकी सूझबूझ और वित्त एवं योजना विकास मंत्री के रूप में उनके दीर्घकालीन अनुभवों को मद्देनजर रखकर श्री प्रकाशचंद सेठी ने 1975 में गंगवाल जी को राज्य योजना मंडल का सदस्य मनोनीत किया था।

व्यायाम और संगीत भैय्या जी को विशेष प्रिय थे। इतने ऊँचे पद पर आसीन होने के बाद भी वे सभाओं में भजन गाने में संकोच नहीं करते थे। उनके प्रिय भजनों में 'उठ जाग मुसाफिर भोर भई अब रैन कहाँ तूँ सोवत है', 'तुम प्रभु दीन दयाल मैं दुखिया संसारी', 'अब समकित सावन आयो रे' आदि थे। फुटबाल, हॉकी, क्रिकेट, टेनिस में भी उनकी विशेष दिलचस्पी थी।

राजनीति के साथ सामाजिक व धार्मिक जगत के आप केन्द्र बिन्दु रहे। प्रत्येक व्यक्ति के साथ अंतरंग आत्मीयता, निश्छल स्नेह आपके गुण थे। सेवापरायणता और विनम्रता तो जैसे आपके रक्त में मिली थी। जो भी आपके सम्पर्क में एक बार आया वह आपका होकर ही रह गया।

शैक्षणिक और साहित्यिक गतिविधियों से गंगवाल सा0 सदैव जुड़े रहे। गरीब विद्यार्थियों को विद्या अध्ययन हेतु सहायता करना उन्हें अत्यन्त प्रिय था। इन्दौर के कितने ही विद्यालयों/पुस्तकालयों के वे संस्थापक/अध्यक्ष/मंत्री आदि थे।

नामानुरूप ही मिश्री की मिठास जिह्वा तथा जीवन में उन्हें प्रिय थी। स्वादिष्ट भोजन और मिष्ठान्न उनके प्रिय थे।

गंगवाल सा0 जीवनपर्यन्त कट्टर शाकाहारी रहे। उनकी दृढ़ता का एक उदाहरण दृष्टव्य है। वे जब मध्यभारत के मुख्यमंत्री थे तब भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पं0 जवाहरलाल नेहरू का भैय्या के पास एक पत्र आया था, जिसमें भारत आये युगोस्लाविया के राष्ट्रपति मार्शल टीटो का मध्यभारत के कुछ स्थल देखने का कार्यक्रम था। विशिष्ट व्यक्तियों के दौरे के कार्यक्रम के साथ उनके दिनभर की समय सारणी भी संलग्न थी। इसमें उनके भोजन में मांसाहार भी सम्मिलित था। गंगवाल जी ने निडर होकर पंडित जी को विनम्र निवेदन करते हुए पत्र लिखा कि-'मैं राजकीय अतिथि को शुद्ध जल व शाकाहारी भोजन ही उपलब्ध करा सकूंगा। मांसाहार उपलब्ध कराने में असमर्थ हूँ। कृपया मुझे क्षमा करें।' आज के युग में तो प्रधानमंत्री को नाखुश करने की कल्पना भी नहीं की जा सकती।

'जिनमें धर्म के प्रति आस्था होती है वे राजनीति के लिए अनुपयुक्त होते हैं और राजनीति में जिनकी गति/ स्थिति/ रुचि होती है उनकी धर्म में अभिरुचि नहीं होती' ऐसा सामान्य सिद्धान्त है, पर गंगवाल सा0 इसके अपवाद थे। प्रतिदिन दर्शन का नियम

उनका आजीवन चलता रहा। राजनीति की काली कोठरी में से भैय्या जी उजले ही उजले निकले, यह सचमुच आश्चर्य की बात है। तभी तो उनके निधन पर श्रद्धांजलि व्यक्त करते हुए श्री सुन्दरलाल पटवा ने कहा था- '1957 और उसके बाद हम और वे राज्य विधानसभा में काफी समय तक आमने-सामने बैठे। हम आंखों में अंजन डालकर उनकी कमियाँ खोजते रहे, लेकिन उनके खिलाफ कुछ भी हाथ नहीं लगा। राजनीति में ऐसे बहुत ही कम लोग मिलते हैं, जो काजल की कोठरी में रहकर भी अपने ऊपर कालिख की एक लकीर लगाए बिना साफ-सुथरे बाहर निकल आते हैं।'

भगवान् महावीर के 2500 वें निर्वाण महोत्सव, (1974) धर्मचक्र प्रवर्तन, इन्दौर के समोशरण मंदिर का पंच कल्याणक (1981), भगवान् बाहुबलि प्रतिष्ठापना सहस्राब्दि एवं महामस्तकाभिषेक के अवसर पर जनमंगल महाकलश (1980-81), महावीर ट्रस्ट का संगठन आदि आयोजनों में उनकी कर्मठता एवं धार्मिकता अभिव्यक्त हुई थी।

उनके निस्पृही जीवन का अनुमान उनके द्वारा अपनी मृत्यु (4/9/81) से 2 दिन पूर्व (2/9/81) लिखित उनकी वसीयत, जो पत्र रूप में है, से लगाया जा सकता है। वे लिखते हैं- 'मेरे जीवन का संध्याकाल है, अत: जीवन का अन्त किसी क्षण, किसी रूप में भी हो सकता है। मेरी जीवन दृष्टि बाल्यकाल से ही सेवा की रही। धन्धे आदि में रुचि स्वल्पतम रही। केवल गृहस्थ का उत्तदायित्व निभाने के लिये आजीविका उपार्जन करता रहा, जीवन सार्वजनिक सेवा और राजनीति में ही बीता।

आंजीविका उपार्जन भी सद्वृत्ति और सद्बुद्धि से किया। लोभ-लालच की भावना मन में नहीं जगी, धनसंग्रह की लालसा नहीं रही। विचार और आचार की पवित्रता का पूरा ध्यान रखा। कभी लोकमार्ग और धर्ममार्ग को छोड़ा नहीं। सादगी से जिया तथा स्वभाव में मितव्यता मूलत: रही।

मेरा विश्वास स्वावलंबन और स्व-आश्रय में रहा अत: बचत करके वृद्धावस्था के लिये कुछ संग्रह रखा जो हुण्डियों में ब्याज पर नियोजित है। मेरे नाम पर कोई मकान और जमीन नहीं है, अन्य भी कुछ नहीं है। अभी-अभी स्वतंत्रता संग्राम सेनानी के रूप में केवल नाम भर को एक मकान एम.आई.जी. ग्रुप में मेरे नाम पर लिया गया है। स्वामित्व के नाते मेरा उससे कोई संबंध नहीं है।

कुटुम्ब के लिए मेरा जीवन में जो योगदान रहा, उसको लेकर मुझे कुछ कहना नहीं है। सब कुटुम्बीजन जानते हैं।

रुपये 25,000 का ब्याज दु:खी-दर्दियों के तथा पारमार्थिक कार्यों के लिये है। इसमें जातिभेद नहीं रहेगा। यह राशि घर के ही लोग कमेटी बनाकर खर्च करें। मुझे किसी का 1 रुपया भी देना नहीं है।

मैंने जीवन में अनीति या अपवित्र प्रकार से एक रुपया भी घर में नहीं आने दिया। सदा धर्म और जन्म-कुल तथा कांग्रेस-कुल की प्रतिष्ठा और शोभा का ध्यान रखा। यह मेरे लम्बे जीवन की कहानी है। मेरी मृत्यु के बाद मेरे नाम पर कोई सामाजिक क्रिया काण्ड न किया जावे।

राष्ट्रहित तथा समाजहित, सबसे स्नेह और ममता मेरे जीवन के संगीत रहे हैं, इसको गाता हुआ समताभाव से इस लोक से विदा होऊँ। यह मेरी भावना है। मेरा उपादान और ज्ञान इसमें सहायक हो, यही चाह है।'

किसी भी व्यक्ति द्वारा लिखे गये पत्र उसके जीवन-दर्शन की स्पष्ट कर देते हैं यहाँ हम गंगवाल सा0 के अपने पुत्र विमलचंद और निर्मल बाबू के नाम लिखे कुछ पत्र साभार दे रहे हैं। जिनसे गंगवाल सा0 के जीवन-दर्शन को भली-भाँति समझा जा सकता है।

विमलचंद को लिखे 12 फरवरी 1958 के पत्र में वे लिखते हैं-'.....मैं चाहता हूँ तुम इन्दौर लौट आवो। जो कुछ रूखी-सूखी भगवान् देगा, उसे उसका प्रसाद मानकर संतोष कर लेंगे।.....'

★ ★ ★ ★

21 दिसम्बर 1958 के पत्र में विमलचंद जी को वे लिखते है-'.....पैसे को पूर्व से अधिक महत्त्व देने लगे हो। दुनियाई चीजों को आवश्यकतानुसार महत्त्व दिया जाना चाहिए। लेकिन वे मनुष्य के सिर पर चढ़कर नाचने लगें, उसके मन का सुख हर लें। इससे तो सदा मनुष्य को सावधान रहना है। तुम्हें भी इस दोष से बचना है......'

★ ★ ★ ★

28 जुलाई 1959 के पत्र में गंगवाल जी ने लिखा है-'....मैंने जीवन में किसी के सहारे की अपेक्षा ही नहीं की, सिवा भगवान् के। आखिर मुनष्य स्वयं एक खुदगर्ज निर्बल प्राणी है, वह क्या किसी को सहारा दे सकता है। इसी विश्वास के बल पर मैं सदा जिन्दा रहा हूँ और आज भी उसी का भरोसा कर निश्चिन्त हूँ।'

★ ★ ★ ★

विमलचंद को ही लिखे 11 अगस्त 1959 के पत्र में उन्होंने लिखा है- '...निर्दोष और अच्छे से अच्छे काम के भी टीकाकार होते ही हैं। ...प्रभाव का उपयोग बुरा नहीं और न वह पाप ही है फिर भी वह राजमार्ग नहीं। जो राजमार्ग नहीं, वह दीनों और असमर्थों का मार्ग है। हमें जहाँ तक सम्भव हो उससे बचना है। फिर भी स्वाभिमान से जीने के लिए कुछ करना तो पड़ेगा। उसका जरिया जनमार्ग ही होना चाहिए।....'

★ ★ ★ ★

श्री निर्मलबाबू को लिखा 28 जनवरी 1965 का पत्र निम्न प्रकार है

'.... मनुष्य को निराश और हतोत्साहित नहीं होना चाहिए। जीवन में सफलतायें और असफलतायें आती ही हैं। आती भी रहेंगी किन्तु हमारे पुरुषार्थ और कर्म में निर्बलता नहीं रहनी चाहिए।

मैंने यह देखा है कि तुम हिसाब ठीक से सिलसिलेवार नहीं रख पाते। यह कमजोरी है, इसे दूर करना चाहिए।.....'

इसी विषय में 24 मार्च 1965 के पत्र में वे लिखते हैं-'पिछले महीने से तुम्हारी मांग अधिक हो रही है। व्यय आवश्यकतानुसार ही रहे तो ठीक है। फिजूलखर्च की गुंजाइश कम ही है। यों भी तुमने हिसाब नहीं भेजा है। आशा है व्यय में अतिरेक नहीं हुआ होगा।.....'

★ ★ ★ ★

11 अगस्त 1965 के पत्र में निर्मलबाबू को गंगवाल सा0 ने लिखा था-

'.... धर्म सदाचार तो जीवन का सार ही नहीं, स्वयं जीवन है। जिसके हाथ में उसकी ध्वजा है, वह डूबेगा नहीं, सदा उभरेगा और सम्पन्न रहेगा। तुमने पूजन प्रारम्भ किया है, यह अधिक सुख देने वाली बात है।...'

★ ★ ★ ★

जीवन के अवसान से लगभग 3 वर्ष पूर्व 22 मार्च 1978 को निर्मल बाबू के नाम लिखा पत्र कितना मार्मिक है। कुछ अंश देखें-

'.... क्रियाशीलता भी प्रतिदिन घट रही है। शरीर-शक्ति में कमी आने लगी है। चलने-फिरने में बहुत कठिनाई होती है। यह सब अवस्था के परिणाम हैं। इनसे न चिन्तित हूँ न दुःखी। दुःख-सुख का जो अनुभव होता है, उसको विवेक के सहारे आनन्दपूर्वक भुलाकर सब क्रियायें उत्साह और प्रमोद भाव से करता रहता हूँ। मुझे न बंगला और न अन्य भौतिक चीजें जीवन में लुभा सकीं। मैं अपने साधारण ढंग से जीया हूँ और जीऊंगा...'

4 सितम्बर 1981 को इन्दौर में आपका निधन हो गया। तत्काल सभी सरकारी कार्यालय व बाजार बन्द हो गये। भोपाल समाचार पहुंचते ही सभी सरकारी कार्यालय बन्द कर दिये गये। 5 सित0 को इन्दौर के सभी सरकारी कार्यालय व बाजार बंद रहे। उसी दिन आपकी अन्त्येष्टि त्रिलोकचंद हाईस्कूल में हुई। अन्त्येष्टि में भाग लेने उपमुख्यमंत्री श्री शिवभानु सिंह सोलंकी आदि शताधिक मंत्री/ विधायक/ नेता/ अधिकारी उपस्थित थे। लगभग बीस हजार लोगों ने अपने 'प्रिय भैय्या' को उस दिन अंतिम विदाई दी।

उन्हें श्रद्धाञ्जलि अर्पित करते हुए श्री बालकवि वैरागी ने कहा- 'वे जो कुछ थे आचरण में थे। कथनी और करनी में कोई विभेद इस व्यक्ति के जीवन में कभी नहीं आया.... उनका कोई दुश्मन नहीं था, विरोधी और आलोचक हजार थे।'

श्री कन्हैया लाल खादीवाला ने कहा था- 'सक्रिय राजनीति में रहते हुए भी उनकी प्रकृति साधु के समान थी। .....पं0 नेहरू और श्रीमती इन्दिरा गांधी जब भी उनसे मिलते भजन सुनाये बिना नहीं जाने देते। वे एक मितव्ययी मंत्री थे।'

म0प्र0 के पूर्वमंत्री श्री दशरथ जैन ने कहा-- 'एक निष्ठावान, सरल, सहृदय इंसान हमने खो दिया। वे सच्चे शब्दों में 'अजातशत्रु' थे।'

समाजसेवी श्री बाबूलाल पाटोदी ने कहा था- 'भैय्या एक सन्त पुरुष थे। मेरे जैसे अनेक कार्यकर्ताओं के पिता और मार्गदर्शक अब नहीं रहे।'

नई दुनियां (इन्दौर) ने 5-9-81 के अपने सम्पादकीय में लिखा है-'....उनकी सफलता की जड़ में उनका अजातशत्रु स्वभाव रहा है। यह बात वे सब लोग अच्छी तरह जानते हैं, जिन्हें उनके साथ ही नहीं, खिलाफ भी काम करने का अवसर मिला है।' उनकी स्मृति में गोम्मटगिरि में गंगवाल विद्या निकेतन की स्थापना की गई है। इन्दौर के एक विशाल बस स्टैण्ड का नाम 'गंगवाल बस स्टैण्ड' रखा गया है।

आ0- (1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-4, पृष्ठ-37 (2) जै0 स0 रा0 अ0, पृष्ठ-63 (3) वीर निकलंक, अगस्त 1995 (4) स्वदेश, इन्दौर 5/9/81 (5) नई दुनिया, इन्दौर 1-10-81, 5-9-81, 6-9-81, 3-9-82 (6) सन्मति वाणी, अक्टूबर 1981 (7) शताब्दी सन्देश, इन्दौर, (पाक्षिक) 15 सित0 81 (8) नवभारत, भोपाल, 5-9-81 (9) इन्दौर समाचार, 5-9-81 (10) लगभग बीस अभिनन्दन पत्र (11) साप्ताहिक देशबन्धु 15-10-1987 (12) स्व0 श्री भैया मिश्रीलाल गंगवाल स्मृति ग्रन्थ

श्री मिश्रीलाल जैन

जयपुर (राजस्थान) के श्री मिश्रीलाल जैन का जन्म हरमाड़ा, जिला-अजमेर (राजस्थान) में 1917 में हुआ। श्री जैन ने रचनात्मक कार्यों का प्रशिक्षण श्री हरिभाउ उपाध्याय से प्राप्त किया। इसी कारण तत्कालीन रचनात्मक कार्यों में श्री जैन की महती भूमिका रही थी। बहुत समय तक उन्होंने डिग्गी ठिकाने की जनता के बीच कार्य किया। 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन के समय मिश्रीलाल जी सत्याग्रह करते हुये अजमेर में गिरफ्तार कर लिये गये और उन्हें एक वर्ष की सजा दी गयी। स्वाधीनता के बाद श्री जैन खादी ग्रामोद्योग से जुड़ गये और सदैव हरिजन सेवा आदि रचनात्मक कार्यों में लगे रहे।

आ0- (1) रा0 स्व0 से0, पृष्ठ-619 (2) जै0 स0 रा0 अ0, पृष्ठ-69

श्री मुकुन्दीलाल बघेरवाल

श्री मुकुन्दीलाल, पुत्र-श्री हजारी लाल बघेरवाल का जन्म गरोठ, जिला-मन्दसौर (म0प्र0) के चचावदा गांव में 1917 में हुआ। आपने इण्टरमीडिएट तक शिक्षा प्राप्त की थी।

श्री बापूलाल चौधरी व श्री चन्दवासकर की प्रेरणा से श्री बघेरवाल स्वतंत्रता संग्राम में शामिल हुए, प्रजामण्डल में आप सक्रिय रूप से सदस्य रहे व पूरे क्षेत्र में घूम-फिर कर उन्होंने प्रजामण्डल के लिए कार्य

किया। महिदपुर में 1934 में होने वाले प्रजामण्डल के अधिवेशन में इन्हें क्षेत्र का विशेष प्रतिनिधि बनाकर भेजा गया। गरोठ से और भी लोग इनके साथ वहाँ गये। श्री सर्वटे सा0, श्री गंगवाल जी, श्री तोतला जी व श्री खादीवाला से इनका निकट सम्पर्क रहा।

1942 के आंदोलन में शामिल होने के लिए आपने गांव-गांव जाकर लोगों को तैयार किया। पुलिस की हिरासत में आप अनेक बार रहे। हर्टन के विरुद्ध उनके सामने ही 'हर्टन मुर्दाबाद', 'पुलिस के अत्याचार बन्द हों' आदि नारे लगाने पर आपको खूब पीटा गया व बन्द कर दिया गया। बाद में छोड़ दिया गया।

1943-44 में आप राज्य लेजिसलेटिव कौंसिल के सदस्य रहे। 1944 में रामपुरा के प्रजामण्डल अधिवेशन में आप कोषाध्यक्ष बनाये गये थे।

आ0-(1) स्व0 स0 म0, पृष्ठ-69-70

श्री मुन्नालाल जैन

सागर (म0प्र0) के श्री मुन्नालाल जैन, पुत्र-श्री फदाली लाल ने 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में 4 माह का कारावास भोगा यत: आपने सागर के पुलिस कप्तान के सिर पर डंडे से प्रहार किया था।

आ0- (1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-2, पृष्ठ-54 (2) आ0 दी0, पृष्ठ-7।

श्री मुन्नालाल जैन

छिन्दबाड़ा (म0प्र0) के श्री मुन्नालाल जैन, पुत्र-श्री बाबूलाल (या कालूराम जैन) को भारत छोड़ो आन्दोलन में भाग लेने के कारण 12-11-42 से 11-8-1943 तक का कारावास देकर जबलपुर जेल में रखा गया था। आपका कार्यक्षेत्र जबलपुर ही था। स्वतंत्रता के पश्चात् आप छिन्दबाड़ा जिले में बस गये।

आ0- (1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-1, पृष्ठ-12 (2) स्वा0 आ0 में छिन्दबाड़ा जिले का योगदान, (टंकित शोध-प्रबन्ध) पृष्ठ-314

श्री मुलायमचंद जैन

श्री मुलायमचंद जैन, निवासी ग्राम-कान्हीवाड़ा, जिला-सिवनी (म0प्र0) ने 1930 में जंगल सत्याग्रह में भाग लिया। फलत: सिवनी व छिंदवाड़ा में 6 माह का कारावास भोगा।

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-1, पृष्ठ-24।

श्री मुलामचंद जैन (या मुलायमचंद जैन)

पिण्डरई, जिला-मण्डला (म0प्र0) के श्री मुलायमचंद जैन, पुत्र-श्री जसकरणलाल जैन ने 1942 के आन्दोलन में सक्रियता से भाग लिया। पहले आप भूमिगत रहे किन्तु 3-2-1943 को गिरफ्तार कर लिए गये। आपको श्री के0सी0 श्रीवास्तव दण्डाधिकारी प्रथम श्रेणी, मण्डला द्वारा तीन माह के सश्रम कारावास तथा 500/- जुर्माना की सजा दी गई थी। जुर्माना न देने पर तीन माह की सजा और भुगतनी पड़ी। पहले आप मण्डला जेल में रहे फिर 21-4-43 को जबलपुर सेन्ट्रल जेल भेज दिये गये। देश प्रेम के कारण आपने किसी तरह की पेन्शन आदि को स्वीकार नहीं किया था।

आ0-(1) अनेक प्रमाण पत्र

श्री मुलायमचंद जैन

जबलपुर नगर निगम के महापौर और महाकौशल चैम्बर ऑफ कॉमर्स एवं म0प्र0 लघु उद्योग संगठन के अध्यक्ष रहे श्री मुलायमचंद जैन का जन्म 19 जनवरी 1920 को जबलपुर (म0प्र0) में हुआ। आपके पिता का नाम श्री दालचंद जैन था। मुलायम चंद जी की शिक्षा जबलपुर, नागपुर और बनारस में हुई। 1942 में आप बनारस में इंजीनियरिंग के विद्यार्थी थे, वहाँ क्रान्तिकारियों से आपका सम्पर्क हुआ। आप बम काण्ड में गिरफ्तार हुए तथा जबलपुर और बनारस की जेलों में रखे गये।

आपने अपने साथियों के साथ डायनामाइट लगाकर हवाई जहाज को उड़ा दिया था। इस सन्दर्भ

में अपने एक संस्मरण में आपने श्री तपन मुखर्जी को बताया था कि– '1939 में मैंने साईंस कालेज नागपुर से इंटरमीडियट किया था। तीन साल वहां रहा। गांधी जी का सेवा ग्राम वर्धा पास ही था। गांधी जी का और अन्य नेताओं का नागपुर आना-जाना लगा रहता था। मैं सभाओं में जाया करता था। मेरी रुचि शुरू से ही आजादी की लड़ाई में थी। 1939 में त्रिपुरी कांग्रेस का अधिवेशन जबलपुर में हुआ। इसका मेरे किशोर मन पर काफी प्रभाव पड़ा। फिर मैं बनारस में इंजीनियरिंग का अध्ययन करने चला गया। 1942 में मैं प्रशिक्षण के सिलसिले में गन कैरज फैक्ट्री से संबद्ध हुआ। तब जबलपुर में रहा। हम फुहारे में रहते थे जो उन दिनों स्वतंत्रता आंदोलन की गतिविधियों का केन्द्र था। 14 अगस्त 1942 को मेरे घर के पास घमंडी चौराहे पर ठाकुर गुलाब सिंह की शहादत हुई।

उन्हीं दिनों फुहारे और आसपास के क्षेत्र में अंग्रेज सैनिकों की टुकड़ियाँ तैनात कर दी गईं थीं। उन्होंने जो अत्याचार ढाये उन्हें भी मैंने नजदीक से देखा था। इसी बीच श्री सीताराम जाधव और श्री सत्येन्द्र प्रसाद मिश्र, जो कि भूमिगत रहकर नगर में आंदोलन चला रहे थे, उनसे भी मेरा सम्पर्क बना।'

आपने बताया था कि–'इन्हीं सब बातों से प्रेरणा लेकर जब मैं अक्टूबर 42 में बनारस इंजीनियरिंग कॉलेज वापस लौटा तब मेरे भीतर यह इच्छा बलवती हो गई थी कि मैं गांधी जी के भारत छोड़ो आन्दोलन में किसी न किसी रूप में सक्रिय भाग लूं। मेरा इंजीनियरिंग का फाइनल इयर था। फिर भी मैं विश्वविद्यालय में भूमिगत रहकर तोड़फोड़ करने वाले छात्रों के दल में शामिल हो गया। दल के साथ मैंने रेलवे यार्ड में इंजिनों के तोड़फोड़ का प्रशिक्षण प्राप्त किया।

इसी बीच सरकार की ओर से कॉलेज में एरोनाटिक्स (हवाई जहाज इंजीनियरिंग) का प्रशिक्षण देने के लिए एक हवाई जहाज रखा गया। एक रात मैंने तथा मेरे साथियों ने डायनामाइट लगाकर उस हवाई जहाज को उड़ा दिया। घटना नवम्बर 42 के आसपास की है।

इस कांड की जांच कई महीनों तक चलती रही। हमारे साथी एक के बाद एक पकड़े गये। मैं अंतिम वर्ष की परीक्षा देकर जबलपुर आ गया। मुझे जुलाई 43 में बनारस कलेक्टर के वारंट पर जबलपुर में गिरफ्तार किया गया तथा जबलपुर सेंट्रल जेल में एक माह रखने के बाद बनारस जिला जेल भेज दिया गया। जहां से मुझे बनारस के सेंट्रल जेल स्थानान्तरित किया गया। जनवरी 45 में जब गांधी जी का ब्रिटिश सरकार के साथ समझौता हुआ तब हमें छोड़ा गया। रिहा होने के बाद मैं जबलपुर वापस आ गया।'

आजादी के बाद आप प्रदेश की राजनीति में सक्रिय रहे। गांधीवादी विचारधारा होने के कारण आप श्री जयप्रकाश नारायण के आह्वान पर प्रजा सोशलिस्ट पार्टी के सदस्य बने। आप नगर निगम की स्थायी समिति के अध्यक्ष, महापौर, म0प्र0 लघु उद्योग संघ के संस्थापक-अध्यक्ष (आजीवन), जबलपुर नगर स्वतंत्रता संग्राम सैनिक संघ के अध्यक्ष आदि अनेक पदों पर रहे।

आ0- (1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-1, पृष्ठ-92 (2) म0 स0, पृष्ठ ब-24 (3) स्व0 स0 ज0, पृष्ठ-156 (4) गजरथ महोत्सव स्मारिका, 1993, पृष्ठ-41

श्री मुलायमचंद जैन

श्री मुलायमचंद जैन का जन्म 1921 में टड़ा (सागर) म0प्र0 में हुआ। आपके पिता का नाम श्री



नन्हाईलाल जैन था। देश को स्वतंत्रता दिलाने के लिये 1942 में आप कांग्रेस के सदस्य बने और देशव्यापी आंदोलन में भाग लिया। जुलूस में तोड़फोड की कार्यवाही करने से

आपको गिरफ्तार किया गया। आपको 12 माह की सजा मिली, जिसे 6 माह सागर जेल में और 6 माह दमोह जेल में काटी। इस घटना के बाद आपके पिता जी स्वर्गवासी हो गये। श्री जैन के साथी अमर शहीद साबूलाल जैन गढ़ाकोटा में पुलिस की गोली से मारे गये थे। आजादी की लड़ाई में श्री जैन अपने साथियों के साथ गाते थे-

हार गयी सरकार, जालिम हार गयी
पकड़ पकड़ कर छोड़ रही है
टूटे नाते जोड़ रही है
लूटे बेशुमार
हार गई सरकार जालिम हार गई

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-2, पृष्ठ-55 (2) स्व0 प0

श्री मुलायमचंद जैन

श्री मुलायमचंद जैन, पुत्र-श्री वंशीधर का जन्म 1918 में जबलपुर (म0प्र) में हुआ। 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में आप सक्रिय रहे और 6 माह की सजा भोगी। इससे पूर्व 1932 में आप रेल की जंजीर खींचकर सत्याग्रह के जुल्म में भी पकड़े गये थे।

आ0- (1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-1, पृष्ठ-91 (2) स्व0 स0 ज0, पृष्ठ-156

श्री मुलायमचंद जैन

आज के नुक्कड़ नाटकों की तरह 1942 के आंदोलन के दिनों में एक 14 वर्ष का लड़का जहाँ भी 20-40 लोगों का जन-समूह देखता जोर-जोर से राष्ट्रीय भावना से ओत-प्रोत गीत गाने लगता। गीत के बोल कुछ यूँ हुआ करते थे-

अंग्रेज के बच्चे को दुनियां से हटा देंगे।
गोरी सी इसकी सूरत मिट्टी में मिला देंगे।।
हम शेर के बच्चे हैं मरने से नहीं डरते।
वह एक को मारेगा हम दस को गिरा देंगें।
पानी की जगह अपना हम खून बहा देंगे।
अंग्रेज के बच्चे को, दुनिया से हटा देंगे।।
अहा, भारत पियारा है वह जग से नियारा है।

★ ★ ★ ★

गांधी जी दूल्हा बने, और दुल्हन बनी सरकार।
सब कांग्रेस बने बराती और नाई बना थानेदार।।
गांधी जी जेवन को बैठे, नेगन में मांगे स्वराज।
लार्ड इर्विन कहत हैं जीजा, गउने में देंगे स्वराज।।
अहा, भारत पियारा है वह जग से नियारा है।

यह लड़का था मुलायमचंद जैन। मुलायमचंद का जन्म शहडोल (म0 प्र0) में 1928 में हुआ। पिता का नाम श्री मूलचंद था, जो कपड़े के व्यापारी थे। मूलचंद जी के पिताजी 1882 के आसपास पनागर से आकर शहडोल में बसे थे।

श्री मुलायमचंद विद्यार्थी जीवन से ही पं0 शम्भूनाथ शुक्ल आदि नेताओं के सम्पर्क में रहने से तिरंगा लेकर जुलूस निकालते थे और गीत गाते चलते थे। वे भावुक, गर्म मिजाज, लगनशील व निर्भीक कार्यकर्ता थे।

1942 के आंदोलन में आप पढ़ाई छोड़कर आंदोलन में कूद पड़े। शहडोल में जब 'बार-फण्ड' की मीटिंग चल रही थी तो आपने तिरंगा ऊंचा करके 'भारत माता की जय' उद्घोष कर दिया। तत्काल आपको गिरफ्तार कर लिया गया और सेन्ट्रल जेल रीवां भेज दिया गया, जहाँ आप पांच माह (11 अप्रैल 1942 से 11 सितम्बर 1942) कैद रहे। आपकी धर्मपत्नी भी राष्ट्रीय भावनाओं से ओतप्रोत थीं। अपने छात्र जीवन में उन्होंने भी जुलूसों में सोत्साह भाग लिया था।

आ0- (1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-5, पृष्ठ-313 (2) स्व0 आ0 श0, पृष्ठ-151-152

श्री मुलायमचंद जैन 'हलवाई'

'हलवाई' उपनाम से विख्यात पिण्डरई, जिला-मण्डला (म0प्र0) के श्री मुलायमचंद जैन, पुत्र-श्री वृन्दावन का जन्म 1916 में हुआ। आप गाने

गा-गा कर जनता में स्वतंत्रता का अलख जगाते थे। 1940 के व्यक्तिगत सत्यागह में आपने खुलकर भाग लिया। 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में तोड़-फोड़ की कार्यवाही में आप पकड़े गये, फलत: 2 सितम्बर 1942 से 1 मार्च 1943 तक मण्डला जेल में कारावास की सजा भुगतनी पड़ी। आपके अनुज गुलाबचंद जी भी जेलयात्री रहे हैं।

आ०- (1) म० प्र० स्व० सै०, भाग-1, पृष्ठ-213 (2) जै० स० रा० अ०

साव मूलचंद जैन

देश के निवासियों को अपमानित, उत्पीड़ित और पराधीनता के जीवन से उबारने के लिये जिन्होंने स्वतंत्रता संग्राम में कष्ट उठाये और स्वतंत्र भारत के सपने सजाये- 'जहाँ सब सुखी होंगे, सब समान होंगे, कोई भूख से नहीं मरेगा, जहाँ न्याय का राज्य होगा'- वे ही स्वतंत्रता रूपी भवन के निर्माता सैनिक अभावग्रस्त जीवन व्यतीत करने को बाध्य हुए। कटंगी के श्री साव मूलचंद जैन ऐसे ही दुखी सेनानियों के एक उदाहरण रहे हैं। आपके पिता का नाम श्री फूलचंद जैन था। आपका जन्म 1902 में कटंगी, तहसील- पाटन, जिला-जबलपुर (म0प्र0) में हुआ।

गांधी जी के सविनय अवज्ञा के दौरान कटंगी में अग्रणी कार्यकर्ता के रूप में साव जी आन्दोलन में सक्रिय हो गये। जंगल कानून भंग किया, फलत: पुलिस ने लाठियों से शरीर छलनी बना दिया, आजीवन वह शारीरिक दौर्बल्य गया नहीं । चार माह की कठोर कारावास की सजा और 50 रुपये जुर्माना किया गया, जुर्माना न देने पर डेढ़ माह की सजा और भोगनी पड़ी। जबलपुर जेल में 5 1/2 माह भीषण यातनायें सहते हुए सजा पूरी की।

1942 के आन्दोलन में भी आपने भाग लिया और 6 माह के कारावास की सजा भोगी।

आ०- (1) म० प्र० स्व० सै०, भाग-1, पृष्ठ-123 (2) स्व० स० पा०, पृष्ठ-102

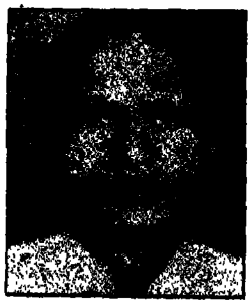
श्री मूलचंद सिंघई

बाबई, जिला-होशंगाबाद (म0प्र0) के श्री मूलचंद सिंघई, पुत्र-श्री परमानन्द का जन्म 1910 में हुआ। माध्यमिक शिक्षा प्राप्त सिंघई जी ने 1940-41 के व्यक्तिगत सत्याग्रह में भाग लिया। 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में भी आपने सक्रिय भाग लिया एवं एक वर्ष का कारावास भोगा। सिंघई जी मण्डल तथा तहसील कांग्रेस कमेटी के लगातार 15 वर्ष अध्यक्ष रहे। खादी ग्रामोद्योग संघ के भी आप अवैतनिक मंत्री रहे।

आ०-(1) म० प्र० स्व० सै०, भाग-5, पृष्ठ-337 (2) स्व० स० हो०, पृ०-112

श्री मेघराज जैन

श्री मेघराज जैन, पुत्र-श्री गणेशीलाल जैन का जन्म 10 जून 1921 को ग्राम-डीकेन, तहसील-जावद,



जिला-मन्दसौर (म0 प्र0) में हुआ। अपने विद्यार्थी जीवन में मात्र 19 वर्ष की आयु में आप गांधी जी की विचारधारा से प्रभावित होकर आजादी के आन्दोलन में कूद पड़े। आपने 1939 में हैदराबाद आर्य सत्याग्रह में भाग लिया। इस कारण 18 माह के कारावास की सजा हुई तथा दिनांक 22 जून को गुलबर्गा सेन्ट्रल जेल भेज दिया गया किन्तु इसी बीच नबाब हैदराबाद व आन्दोलनकारियों में समझौता हो जाने से श्री जैन 17 अगस्त को अन्य आंदोलनकारियों के साथ छोड़ दिये गये।

वापस लौटने पर मेघराज जी ने सार्वजनिक सभा की स्थानीय कमेटी के मंत्री पद का कार्य हाथ में लिया और इसके साथ-साथ हरिजन सभा के अध्यक्ष पद का कार्यभार सम्भाला। 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान डीकेन स्थित श्री जैन के

मकान की तलाशी पुलिस द्वारा ली गई तथा पुलिस सभी कागजात तिरंगा व सीलें जब्त करके चली गई। पुलिस श्री जैन को व उनके साथियों को गिरफ्तार करना चाहती थी किन्तु आप किसी प्रकार पुलिस को चकमा देने में सफल हो गये और गिरफ्तारी से बच गये। बाद में रतनगढ़ पुलिस ने श्री जैन का नाम हिस्ट्रीशीटर की सूची में जोड़ दिया। इस प्रकार श्री जैन पर पुलिस हर समय कड़ी निगरानी रखने लगी। यह क्रम लगभग 6 माह तक चला। अन्त में तत्कालीन पुलिस अधीक्षक श्री चन्द्रकान्त तिवारी ने निगरानी आदेश निरस्त किया।

आ0- (1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-4, पृष्ठ-217 (2) स्व0 स0 म0, पृष्ठ-105

श्री मेरुलाल जैन

ग्राम-भाभरा, जिला-झाबुआ (म0प्र0) के श्री मेरुलाल जैन, पुत्र-श्री पृथ्वीराज जैन का जन्म 4 जून 1918 को हुआ। 1930 में विद्यार्थी जीवन से ही आप राष्ट्रीय आन्दोलन में सक्रिय हो गये तथा बन्दी बनाये गये। म0प्र0 शासन ने सम्मानपत्र प्रदान कर आपको सम्मानित किया है।

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग 4, पृष्ठ-143

मास्टर मोतीलाल

आगरा (उ0प्र0) के मास्टर मोतीलाल जी कांग्रेस के प्रसिद्ध कार्यकर्ता रहे हैं। 1942 के आन्दोलन में 'आजाद हिन्दुस्तान' पर्चे बांटने के सन्देह में आपको छः माह की सजा हुई थी, लेकिन अपील में आप छोड़ दिये गये थे।

आ0- (1) जै0 स0, रा0 अ0 (2) उ0 प्र0 जै0 ध0, पृष्ठ-91

श्री मोतीलाल जैन

श्री मोतीलाल जैन, पुत्र-श्री उमराव लाल का जन्म 1904 में जबलपुर (म0प्र0) में हुआ। 1930 के आन्दोलन में भाग लेने के कारण 9 माह का कारावास आपको भोगना पड़ा था।

आ0- (1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-1, पृष्ठ-93 (2) स्व0 स0 ज0, पृष्ठ-158

श्री मोतीलाल जैन

कटनी, जिला-जबलपुर (म0प्र0) के श्री मोतीलाल जैन, पुत्र-श्री कन्छेदी लाल का जन्म 1924 में हुआ। 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में भाग लेने पर 6 माह का कारावास आपने भोगा।

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-1, पृष्ठ-93

श्री मोतीलाल जैन

बरेली, जिला-रायसेन (म0प्र0) के श्री मोतीलाल जैन, पुत्र-श्री खरगराम जैन का जन्म 1898 में हुआ। 1948 के भोपाल राज्य विलीनीकरण आन्दोलन में आपने भाग लिया तथा एक माह के कारावास की सजा भोगी।

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-5, पृष्ठ-79

श्री मोतीलाल जैन

कटंगी, जिला-जबलपुर (म0प्र0) निवासी श्री गुलाबचंद जैन के सुपुत्र श्री मोतीलाल का जन्म 1923 में हुआ। 1942 की अगस्त क्रांति में आप कूद पड़े। थाने पर तिरंगा झंडा फहराने के लिये जिन नवयुवकों का दल चल पड़ा था उनमें श्री मोतीलाल भी थे, वे निर्भीक रूप से थाने में बढ़ते ही गये, बन्दूकें आपको भयभीत नहीं कर सकीं। फलतः आप पकड़े गये, हथकडी डाली गयी और बन्दी बनाकर केन्द्रीय कारागार जबलपुर ले जाये गये जहाँ भारत रक्षा कानून की धारा 129 के अन्तर्गत दिनांक 8 सितम्बर 1942 से 31 मई 1943 तक अपने सहयोगी बंधुओं के साथ कैद रहे। जेल से मुक्त होने पर रचनात्मक कार्यों में लगे रहे।

आ0- (1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-1, पृष्ठ-93 (2) स्व0 स0 प0, पृष्ठ-106

श्री मोतीलाल जैन

श्री मोतीलाल जैन, पुत्र-श्री टोडरमल का जन्म 1912 में जबलपुर (म0प्र0) में हुआ। 1930 के नमक सत्याग्रह में आपने भाग लिया। 1932 के आन्दोलन में जेल यात्रा की। 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में भूमिगत रहकर आन्दोलन को जागृत बनाये रखने के लिए अन्य कार्यकर्ताओं से सम्पर्क स्थापित कर रा0आ0 में उल्लेखनीय योगदान आपने दिया। आप कुल मिलाकर लगभग 2 वर्ष कारावास में रहे। श्री जैन राष्ट्रीय कार्यों में सदैव अग्रणी रहे थे।

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-1, पृष्ठ-93
(2) स्व0 स0 ज0, पृष्ठ-158

श्री मोतीलाल जैन

कटनी, जिला- जबलपुर (म0प्र0) के श्री मोतीलाल जैन, पुत्र-श्री राजवट को 1930 के जंगल सत्याग्रह में भाग लेने पर गिरफ्तार कर लिया गया और 4 माह 20 दिन के कारावास तथा 15 रु0 के अर्थदण्ड की सजा दी गई।

आ0-(1) म0प्र0 स्व0 सै0, भाग-1, पृ0-93

पं० मोतीलाल जैन शास्त्री

श्री पं0 मोतीलाल जैन शास्त्री का जन्म 1-1-1924 को ग्राम बगरोदा, तहसील- बंडा, जिला-



सागर (म0प्र0) में हुआ। आपके पिता का नाम श्री बट्टूलाल जैन था। आपके सन्दर्भ में स्वाधीनता सेनानी और पूर्व लोकसभा सदस्य श्री राम सहाय तिवारी ने लिखा है कि 'इन्होंने छतरपुर व पन्ना राज्य में भूमिगत रहते हुए कार्य किया। विशेषत: चिट्ठी-पत्री बांटने का काम ये करते रहे, अत: स्वतंत्रता सेनानी की कैटिगरी में आते हैं। ये पन्ना राज्य की डी0एफ0 ओ0 में 2 माह (20-8-42 से 20-10-42 तक) रहे। परन्तु सजा नहीं दी गई।'

आ0-(1) स्व0 प0 एवं प्रमाण पत्र।

सेठ श्री मोतीलाल जैन

हाडोती के सपूत श्री मोतीलाल जैन ने राष्ट्रीय स्वाधीनता आन्दोलन की ज्वाला में तन-मन-धन



समर्पित कर देश की आजादी में अप्रतिम योगदान दिया है। श्री मोतीलाल जैन जिन्हें लोग आदर से 'सेठ साहब' कहकर पुकारते हैं, का जन्म जोधपुर (राज0) के श्वेताम्बर जैन परिवार में श्री जयचंद लुणावत के यहाँ 5 दिसम्बर 1908 को हुआ। माता का नाम राजबाई था। इनकी माता धर्मपरायण महिला थीं, जिसका असर सेठ साहब पर पड़ा। श्री जैन की प्रारम्भिक शिक्षा जोधपुर में हुयी और ग्यारह वर्ष की अल्पायु में ही वे माँगरोल के सेठ धनराज वैद्य के यहाँ गोद आये, जिनका मुख्य व्यवसाय लेन-देन का था।

श्री जैन की आगे की पढ़ाई माँगरोल में ही हुयी। उन्होंने 1925 में एडवांस हिन्दी परीक्षा तथा 1935 में हिन्दी साहित्य सम्मेलन इलाहाबाद से विशारद परीक्षा उत्तीर्ण की।

सेठ साहब को राजनीति में आने की प्रेरणा सर्वप्रथम 1930 में महान् क्रान्तिकारी विजय सिंह 'पथिक' से मिली। श्री ऋषिदत्त मेहता व पण्डित नयनूराम शर्मा भी इनके राजनैतिक प्रेरणास्रोत रहे। 1938 में कोटा राज्य प्रजामण्डल के अध्यक्ष पं0 नयनूराम ने इन्हें मण्डल का सदस्य मनोनीत कर दिया। 1939 के मई माह में माँगरोल में प्रजामण्डल के सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसमें आप स्वागताध्यक्ष थे। बाद में आप सैक्रेटरी चुने गये। इसी

वर्ष से आप माँगरोल में खादी का कढ़ाई-बुनाई का कारखाना खोलकर खादी के प्रचार में लग गये। 1940 में कोटा रियासत के उत्तरी भाग में अकाल पड़ने पर आपने अकाल पीड़ित सहायता कमेटी खोली। इसी वर्ष आपको डी0आई0आर0 में पकड़ा गया और चेतावनी देकर छोड़ दिया गया।

जून 1941 में सेठ साहब ने कोटा में प्रजामण्डल का फिर सम्मेलन आयोजित किया। दिसम्बर में आप एक शिष्टमण्डल लेकर महात्मा गांधी के पास सेवाग्राम (वर्धा) गये।

जनसत्ता, दिल्ली (14 जुलाई 1997) को दिये गये एक साक्षात्कार में अपनी गिरफ्तारी और कार्यकलाप के सन्दर्भ में आपने कहा था कि- 'मैंने 1938 में राज्य प्रजामण्डल का सदस्य बनकर जन-चेतना फैलाने का कार्य शुरू कर दिया था। इस दौरान माँगरोल में दो अधिवेशन भी किये थे। पदयात्रा भी की लेकिन यह सब शुरूआत थी।.........हमें इस क्षेत्र से हटने के लिए कई प्रलोभन मिलते थे। धमकियाँ और यातनाएँ भी मिलती थीं, लेकिन हमारे सिर पर एक ही जुनून था देश को आजाद कराने का।'

1942 के आन्दोलन में अपनी गिरफ्तारी के सन्दर्भ में आपने कहा था- '1942 की अगस्त क्रांति के दौरान महात्मा गांधी की गिरफ्तारी के बाद इस आन्दोलन में प्रजामण्डल द्वारा जमकर हिस्सा लेने के कारण मुझे पहली बार 22 सितम्बर 1942 को माँगरोल में गिरफ्तार किया गया तथा कोटा लाकर 15 दिसम्बर तक जरायमपेशा घर में बंदी बनाकर नजरबंद रखा गया। इस दौरान हमने चार दिन भूख हड़ताल भी की थी।'

दूसरी बार श्री जैन को बम्बई से कोटा आते समय कोटा स्टेशन पर उतरते ही गिरफ्तार कर लिया गया और हथकड़ी डालकर अजमेर ले जाया गया। अजमेर में आपको आठ दिन जेल में रखा गया। बाद में न्यायालय के आदेश से रिहा किया गया।

पत्रकारिता के क्षेत्र में भी सेठ साहब अग्रणी थे। अप्रैल 1947 में कोटा से आपने 'जयहिन्द' साप्ताहिक पत्र निकाला था, जिसके सम्पादक भी आप स्वयं ही थे। इस पत्र के 26 अंक ही निकल पाये थे कि 30 सितम्बर 1947 के अंक में 'भरतपुर व अलवर रियासत की नेहरू सरकार के खिलाफ हथियारबन्द साजिश' शीर्षक से प्रकाशित समाचार पढ़कर सरकार ने उस अंक की प्रतियां व प्रेस की जमानत 450/- रु0 जब्त कर ली।

1944 में श्री जैन को 'कस्तूरबा गांधी मेमोरियल ट्रस्ट' कोटा मंडल का संयोजक बनाया गया था। वे 1940 से 1950 तक कोटा केन्द्रीय सहकारी बैंक के संचालक सदस्य व 1943 से 1950 तक अध्यक्ष रहे। स्वतंत्रता के पश्चात् 1949 में बनी वृहद् राजस्थान सरकार के प्रधानमंत्री श्री हीरालाल शास्त्री ने उन्हें मन्त्रिपरिषद् में शामिल करना चाहा था पर श्री जैन ने मनोनीत सदस्य के रूप में मंत्री बनने से मना कर दिया था।

समाजसेवा के कार्यों में सक्रिय रूप से जुड़े सेठ साहब ने अनेक छात्रों को छात्रवृत्तियाँ दीं, रोजगार दिलाये व निःशुल्क आयुर्वेदिक औषधालय चलाया। आज भी वे सरकार से प्राप्त स्वतंत्रता सेनानी पेंशन जनहित के कार्यों में लगाते हैं पेंशन के रूप में एकमुश्त प्राप्त लगभग साठ हजार रुपये की धनराशि उन्होंने सार्वजनिक संस्थानों को अनुदान के रूप में दे दी थी। श्री जैन के विचार हैं- 'स्वतंत्रता से पहले किसानों, श्रमिकों को डराया जाता था, धमकाया जाता था। शासक वर्ग द्वारा उन पर अत्याचार किये जाते थे। सोचा था आजादी के बाद यह सब खत्म हो जाएगा, बेरोजगारी मिट जाएगी, किसानों की हालत सुधर जाएगी, पर हालात और बदतर होते जा रहे हैं।......आज स्वतंत्रता सेनानियों को पूछता कौन

है? उनकी इज्जत क्या है? कोई भी इज्जत नहीं करता। आज देश को मौजूदा हालात से उबारने के लिए सबसे पहले व्यापक स्तर पर फैले भ्रष्टाचार का उन्मूलन करना होगा।'

आ0-(1) रा0 स्वा0 से0, पृ0-538 (2) जनसत्ता, दिल्ली, दिनांक 14 जुलाई 1997 (3) अनेक प्रमाण-पत्र (4) श्री महेश कुमार जैन (बरमुण्डा) द्वारा प्रेषित परिचय।

श्री मोतीलाल टडैया

साहूकार परिवार में जन्म लेने वाले टडैया जी को अर्थ-संयम की भावना ग्रसित नहीं कर सकी। आपका जन्म 10-10-1905 को ललितपुर (उ0प्र0) में श्री किशोरी लाल टडैया के यहाँ हुआ। आप कांग्रेस के कर्मठ कार्यकर्ता के रूप में जाने जाते थे। 1942 में देश हितार्थ आंदोलनों में कांग्रेस कार्यकर्ताओं की गुप्त सहायता करने से पुलिस ने कुपित होकर भारत रक्षा कानून की दफा 38 में गिरफ्तार करके 1 वर्ष की सजा और 100) के दंड से आपको दंडित किया। अर्थदंड अदा न करनेपर 3 माह का अतिरिक्त कारावास मिला। जीवन भर अदम्य उत्साह से कांग्रेस के कार्य करते रहने वाले टडैया जी ने सामाजिक संस्थाओं की स्थापना में तन-मन-धन से सहयोग दिया। आपका निधन 15-5-60 को हुआ।

आ0-(1) जै0 स0 रा0 अ0 (2) र0 नी0, पृष्ठ-87 (3) डा0 बाहुबलि कुमार द्वारा प्रेषित परिचय (4) पुत्र श्री जिनेन्द्र कुमार द्वारा प्रेषित पत्र।

श्री मोतीलाल तेजावत

'राजस्थान के जलियांवाला काण्ड' नाम से विख्यात उदयपुर के भीलकाण्ड, जिसमें 1200 निहत्थे भील एक साथ मारे गये थे, के सूत्रधार श्री मोतीलाल तेजावत की चर्चा के बिना भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास अधूरा ही रहेगा। श्री अर्जुनलाल सेठी ने जिस क्रान्ति का सूत्रपात किया था, विशेषत: राजस्थान में उसी की अगली कड़ी थे श्री मोतीलाल तेजावत।

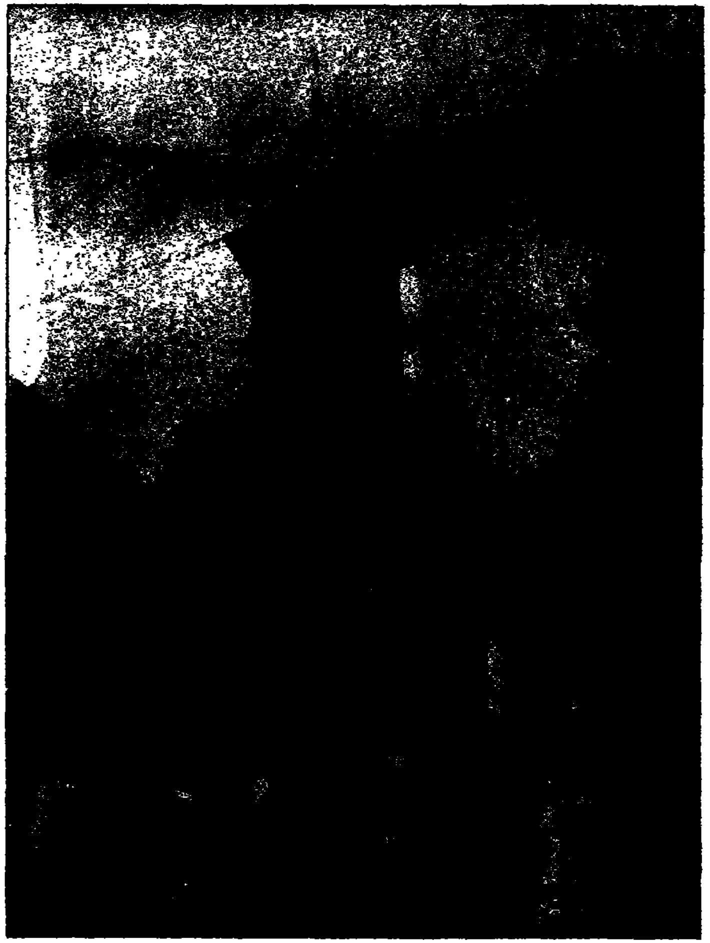
तेजावत जी का जन्म ज्येष्ठ शुक्ल 1 संवत् 1944 (1886 ई0) को उदयपुर (राज0) जिले के एक छोटे से ग्राम कोलियारी में हुआ। उर्दू, हिन्दी एवं गुजराती तीनों भाषाओं पर उनका समान अधिकार था। विवाह से पूर्व ही वे झाडोल आकर स्थानीय जागीरदार के यहाँ कामदार का कार्य करने लगे। यहीं आपने जागीरदारों द्वारा किसानों एवं गरीबों पर किये जाने वाले क्रूर अत्याचारों के वीभत्स रूप के दर्शन किये। अन्तत: उन्होंने ठिकाने की नौकरी छोड़ दी और मात्रीकुण्डिया (चित्तौड़गढ़) जाकर सर्वप्रथम मेवाड़ राज्य के जुल्मों के खिलाफ 'एकी' नामक आन्दोलन का सूत्रपात किया।

यहीं पर श्री तेजावत ने एक किसान मेले में हजारों किसान भाईयों का राज्य के जुल्म के खिलाफ खड़े होने के लिए आह्वान किया और हजारों की तादाद में किसान काश्तकारों के साथ उदयपुर आकर महाराणा श्री फतेहसिंह को एक ज्ञापन दिया जिसमें मेवाड़ की जनता पर लगान बेगार की 21 कलमें पेश कर यह निवेदन किया कि ये कलमें माफ होनी चाहिए। दरबार ने उनमें से 18 कलमें माफ कर दीं, तीन कलमें जिनमें जंगलात, सूअर बैठ-बेगार थी, माफ नहीं कीं, इन्होंने उदयपुर के जगदीश मंदिर की सीढ़ियों पर खड़े होकर यह ऐलान कर दिया कि 18 शर्तें महाराणा साहब ने छोड़ दी हैं और 3 मेवाड़ के पंचों ने। इस प्रकार अपनी शर्तें मंजूर हो चुकी हैं।

इसके पश्चात् उदयपुर से रवाना होकर तेजावत जी नाई कोटड़ा, आगपुरा, मादड़ी, झाडोल आदि स्थानों से भ्रमण करते हुये सैकड़ों भीलों के साथ आकड़ गांव में पहुंचे। वहां पर झाडोल के राजा सा0 कुबेरसिंह व कोलियारी का कमालखां सिपाही उन्हें मारने हेतु आये, वहां थोर की बाढ़ में इनसे उनका मुकाबला भी हुआ। वे गोली चलाने ही वाले थे कि एकदम हल्ला हो जाने से भाग गये। इस प्रकार तेजावत जी शहीद



भारतीय संविधान निर्मातृ सभा के सदस्य, सांसद, स्वतंत्रता सेनानी श्री बलवन्त सिंह मेहता जैनोलॉजीकल रिसर्च सोसायटी में भाषण देते हुए



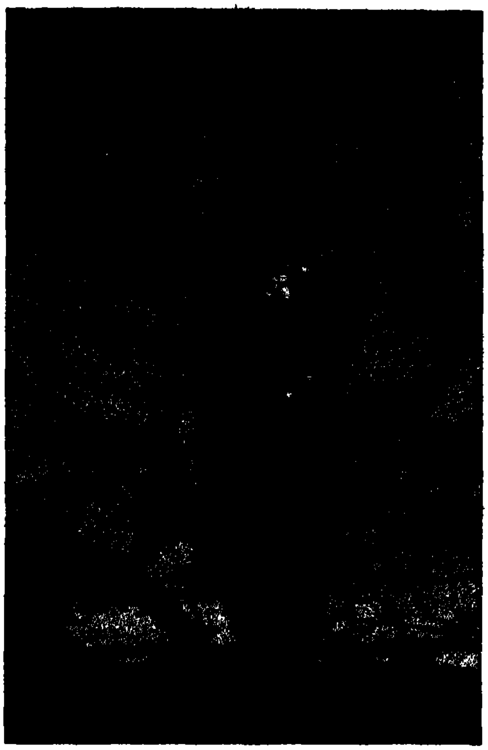
1938 ई. में त्रिपुरी कांग्रेस अधिवेशन का प्रतीक चिन्ह कमानिया गेट, जबलपुर (म॰प्र॰) (इस अधिवेशन में सैकड़ों जैन बन्धु स्वयंसेवक के रूप में सम्मिलित हुए थे)



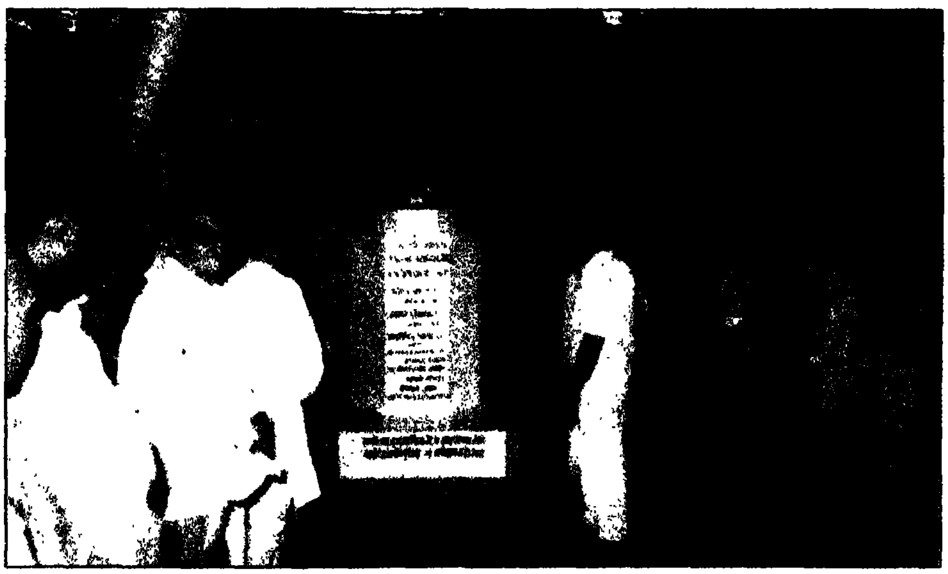
स्वतंत्रता सेनानी, विधायक बाबू रतनलाल जैन, बिजनौर (उ०प्र०) अपने निवास पर तत्कालीन प्रधानमंत्री माननीय श्री मोरारजी देसाई के साथ



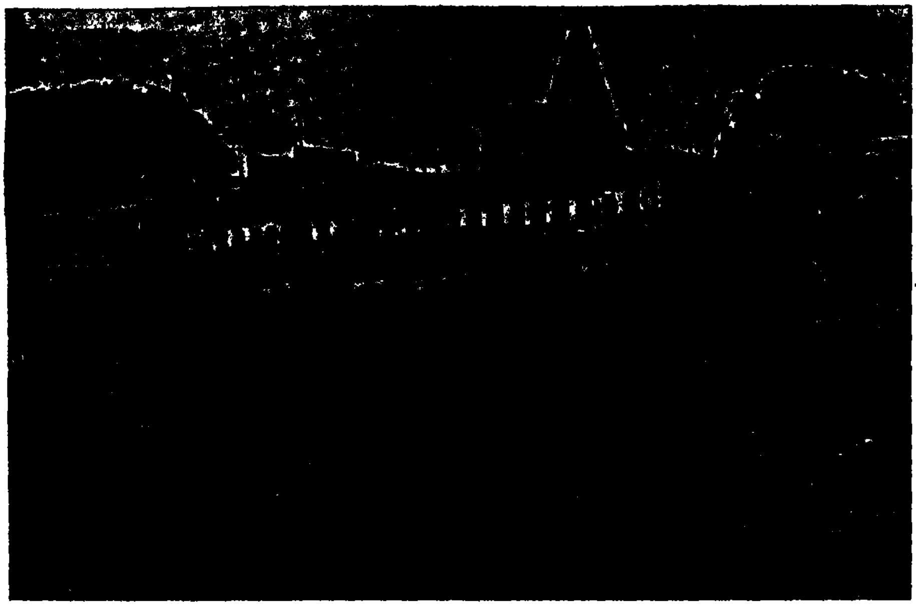
भारत की आजादी की पच्चीसवीं सालगिरह पर महामहिम राष्ट्रपति श्री व्ही० व्ही० गिरि के साथ एक मुलाकात में स्वतंत्रता सेनानी श्री रतनचंद जैन, जबलपुर (म०प्र०) बायें से दूसरे



सिविक सेन्टर, जबलपुर (म॰प्र॰) में म॰प्र॰ शासन द्वारा स्थापित, पत्रकार एवं स्वतंत्रता सेनानी श्री हुक्मचंद 'नारद' का स्टेच्यू



महावीर वाल संस्कार केन्द्र, टीकमगढ़ (म॰प्र॰) में स्थित स्वतंत्रता सेनानी एवं पूर्व मुख्यमंत्री भैया मिश्रीलाल जी गंगवाल का स्टेच्यू



1942 में जैन क्रान्तिकारियों का गढ़ रहा श्री स्याद्वाद महाविद्यालय, वाराणसी (उ०प्र०)



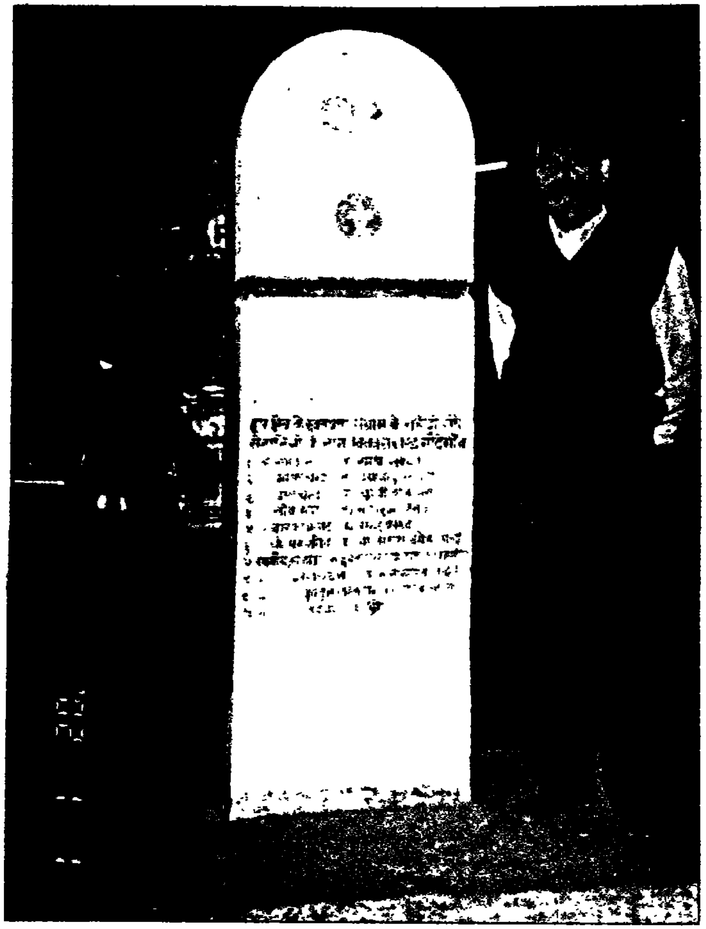
जबलपुर (म०प्र०) का तत्कालीन टाउन हाल (वर्तमान गांधी भवन) जहाँ क्रान्तिकारी श्री प्रेमचंद जैन 'उस्ताद' ने ध्वजारोहण किया था



गांधी चौक, दमोह (म०प्र०) जहाँ 1942 में श्री रघुवर प्रसाद मोदी को जूतों की ठोकरों से इतना पीटा गया था कि सारा प्रांगण लहूलुहान हो गया था

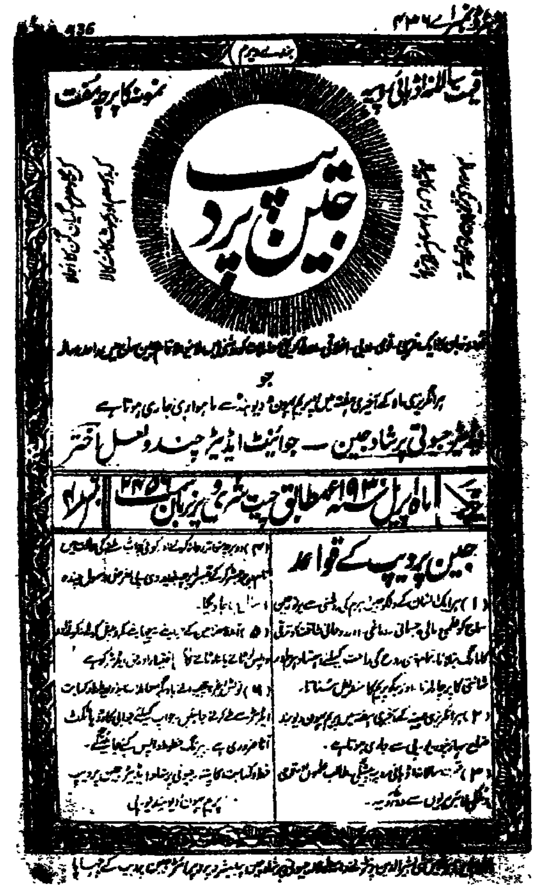


भारतीय संविधान निर्मातृ सभा के सदस्य (संविधान निर्माता) श्री बलवन्त सिंह मेहता उदयपुर (राज०) से साक्षात्कार लेते हुए लेखक डॉ० कपूर चन्द जैन



गोटेगांव, जिला-नरसिंहपुर (म०प्र०) का स्वतंत्रता सेनानी कीर्ति स्तम्भ जिस पर वहाँ के सेनानियों के नाम अंकित हैं। साथ में खड़े हैं लेखक डॉ० कपूर चन्द जैन

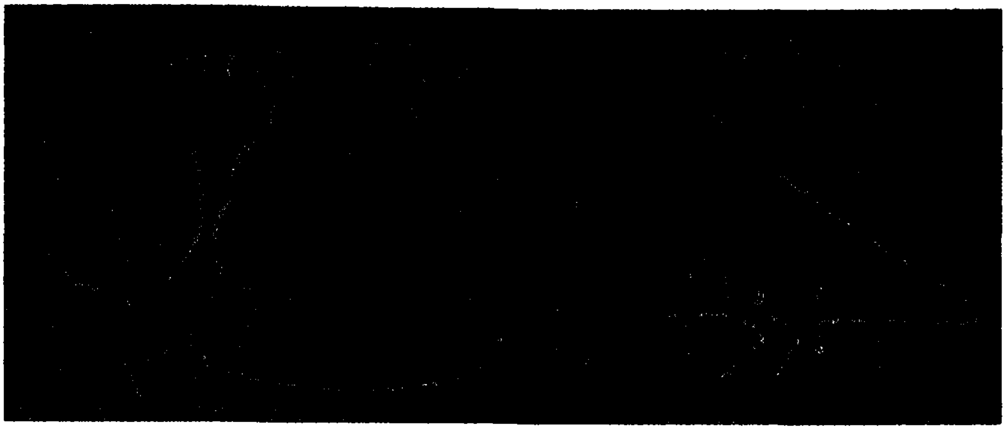
चित्र सौजन्य - श्री शशांक जैन, गोटेगांव



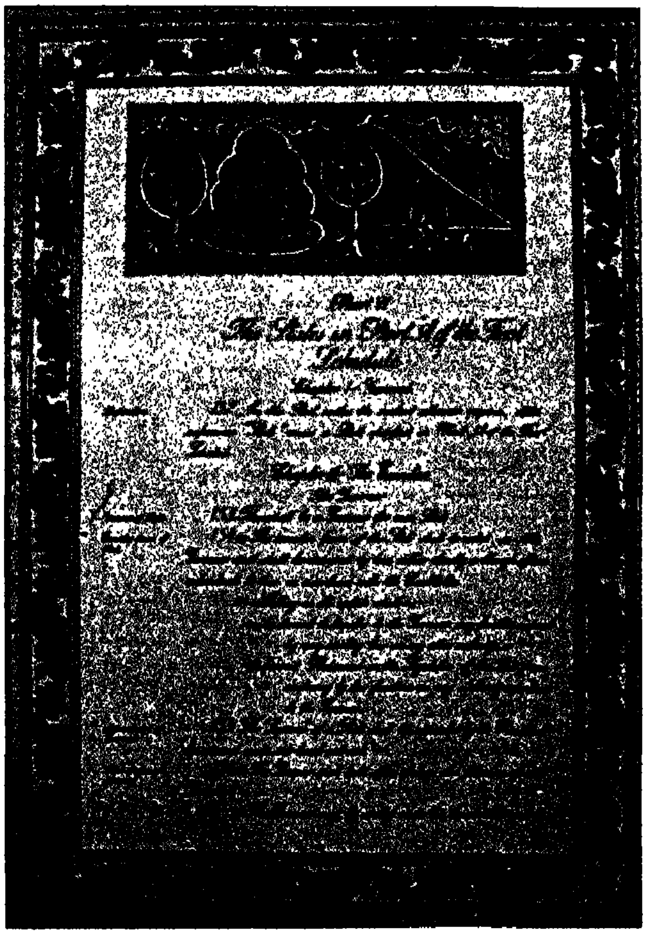
جین پردیپ

جین پردیپ کے قواعد

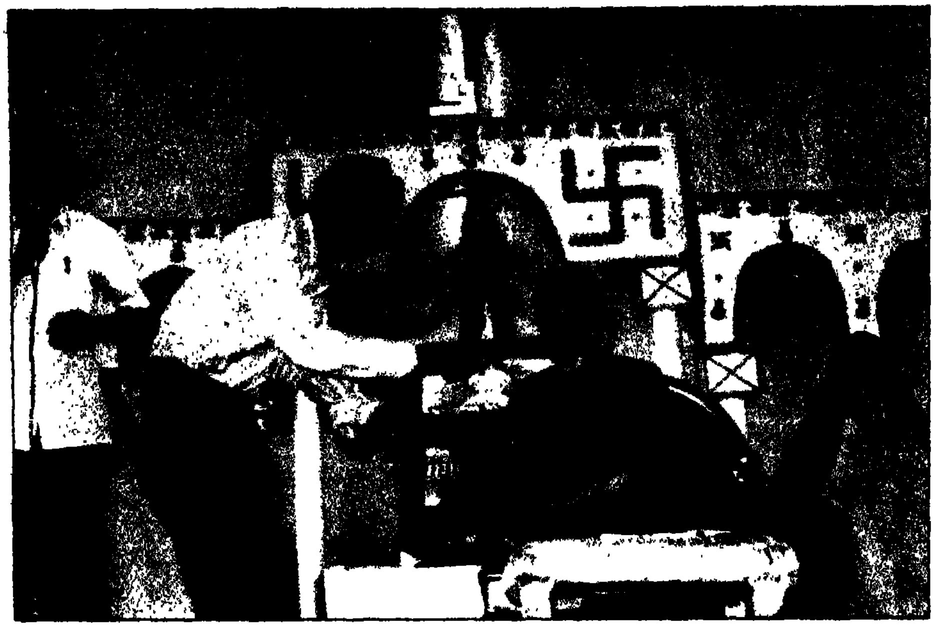
जैन प्रदीप,, देवबन्द के अप्रैल 1930 के अंक का मुख पृष्ठ, जिसमें प्रकाशित श्री ज्योति प्रसाद जैन के लेख 'भ० महावीर और महात्मा गांधी' के कारण यह और इसके बाद का अंक (जिसमें उक्त लेख का अवशिष्ट अंश छपा था) सरकार द्वारा जब्त कर लिया गया था। इसके बाद जैन प्रदीप का प्रकाशन बन्द हो गया था। जैन प्रदीप तब उर्दू में छपता था।



भारतीय संविधान की मूल प्रति में भगवान् महावीर का चित्र



भारतीय संविधान की मूलप्रति का पृष्ठ 63 जिस पर भगवान् महावीर का चित्र अंकित है



परम पूज्य आचार्य विद्यानन्द जी महाराज से 'अमर जैन शहीद' पुस्तक का लोकार्पण करने हेतु निवेदन करते लेखक डॉ० कपूर चंद जैन



डॉ० (श्रीमती) ज्योति जैन की पुस्तक 'स्वराज्य और जैन महिलायें' का लोकार्पण करते हुए श्री अरविन्द कुमार जैन, तत्कालीन स्वास्थ्य राज्यमंत्री, उत्तर प्रदेश, लखनऊ

होते-होते बचे। इस आन्दोलन की जानकारी हर गांव व आस-पास की रियासतों में तेजी के साथ फैल गयी। भील तेजावत जी के साथ सैकड़ों की तादाद में इकट्ठे होकर आते-जाते रहते थे।

धीरे-धीरे यह आंदोलन सिरोही, दांता, पालनपुर, ईडर, विजयनगर आदि रियासतों की जनता में भी फैल गया। इस प्रकार आदिवासी जनता के साथ भील नेता विजयनगर रियासत के नीमड़ा गांव के पास पहुंच गये। वहां मेवाड़ रियासत की मिलेट्री व अन्य रियासतों की पुलिस अपने-अपने अधिकारियों के साथ मौजूद थी। वहां अन्य रियासतों की सरकारों व जनता के बीच लगान व बेगार को लेकर सुलह की बात चल रही थी। इस कारण जनता शान्त थी।

अचानक मिलेट्री ने निहत्थी जनता पर मशीनगनों से फायरिंग प्रारम्भ कर दी। वहीं पर लगभग एक हजार दो सौ से अधिक व्यक्ति शहीद हो गये। श्री तेजावत के भी पांव में गोली व छर्रे लगे थे। भील उसी समय उन्हें उठाकर भूमिगत (गुप्त) हो गये, वे 1929 तक यानि 8 वर्ष तक गुप्त रहे। वह जगह जहां हत्याकांड हुआ था वे दरख्त आज भी उन गोलियों की गवाही दे रहे हैं।

इस बीच सरकार ने किसी व्यक्ति का सिर काटकर जनता में यह भ्रम फैला दिया कि मोतीलाल को मार दिया गया है और यह उनका सिर है। यह इनके आन्दोलन को कमजोर करने की एक चाल थी। तेजावत जी की खोज में उदयपुर, सिरोही, ईडर आदि राज्यों की सरकारों ने कई गांवों में आग लगा दी। इसमें अनेक जानवर भी जलकर मरे, गरीबों का जो नुकसान हुआ सो अलग। मेवाड़ राज्य की सेना छह माह सिरोही में डेरा डाले रही पर तेजावत जी को गिरफ्तार नहीं किया जा सका।

इस आंदोलन का पूरा पता पूज्य बापू को श्री मणीलाल कोठारी, अहमदाबाद के जरिये समय-समय पर मिलता रहता था। अत: पूज्य बापू के आदेशानुसार 1929 में ईडर रियासत के खेड़ ब्रह्मा गांव में तेजावत जी ने स्वयं अपने आपको गिरफ्तार करवाया। वहां से उन्हें ईडर भिजवाया गया। ईडर रियासत ने आबू ए0जी0जी0 को यह सूचना देते हुए लिखा कि हमारी रियासत इन्हें नहीं रखना चाहती है, अत: आप जहां उचित समझें वहां भिजवा दें। इसी प्रकार दूसरी रियासतों ने भी उन्हें रखने से साफ इंकार कर दिया। अन्तत: वे उदयपुर में 6 अगस्त 1929 से लेकर 23 अप्रैल 1936 तक लगभग सात वर्ष जेल में रहे। जेल से रिहा होने के बाद भी उन्हें उदयपुर शहर में नजरबंद रखा गया।

1936 में प्रजामण्डल आन्दोलन में तेजावत जी पुन: गिरफ्तार हुये। 1940 में जब उन्हें पता चला कि भोमट के भील दुष्काल के कारण जानवरों को मारकर खाने लगे हैं तो वे वहां राज्य सरकार की आज्ञा के बिना चले गये। अन्तत: सरकार ने उन्हें गिरफ्तार कर उदयपुर लाकर उनके मकान पर पहरा बैठा दिया जो 1947 तक रहा।

1951-52 में आप साहड़ा निर्वाचन क्षेत्र से विधानसभा के लिए खड़े हुये थे पर नेहरू जी के समझाने पर कि आप वृद्ध हैं, एक कर्मठ कांग्रेस सिपाही के नाते आप कांग्रेसी उम्मीदवार के पक्ष में अपना नाम उठा लीजिए, आप चुनाव मैदान से हट गये थे। 5 नवम्बर 1963 को आदिवासियों का यह मसीहा सदा-सदा के लिए इस संसार से चला गया।

आपके पुत्र मोहनलाल तेजावत भी आपके कदमों पर चले और उन्होंने भी जेल की दारुण यातनायें झेलीं।

आ0 (1) रा0 स्वा0 सै0, पृ0-176-179 (2) इ0 अ0 ओ0, भाग-2, पृ0-401 (3) राजस्थान और जैन संस्कृति, पृ0-341 (4) राजस्थान में स्वतंत्रता संघर्ष, पृ0-144

श्री मोहनलाल जैन

'देशप्रेम उम्र पर नहीं भावना पर आधारित होता है' इस उक्ति को चरितार्थ करने वाले श्री मोहनलाल



का जन्म 1927 में रीवां (म0प्र0) में हुआ। आपके पिता का नाम श्री लक्ष्मी चंद जैन था। आपने मैट्रिक तक शिक्षा प्राप्त की। बचपन से ही श्री जैन राजनैतिक कार्यों में रुचि लेने लगे थे। अंग्रेजी सरकार का तख्ता उलटने के लिए उसकी शासन प्रणाली में व्यवधान डालना हर आंदोलनकारी का उस समय कर्तव्य था। 1942 के देशव्यापी आन्दोलन की गतिविधियों जैसे जुलूस निकालना, झंडा फहराना आदि जोखिम भरे कार्यों का नेतृत्व आपने किया। फलस्वरूप 19 माह जेल में रहे।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद आप शासकीय सेवा में ग्राम सेवक के रूप में रहे। सेवानिवृत होने के पश्चात् आप धार्मिक एवं सामाजिक कार्यों में संलग्न रहे। रीवां में 1993 में विशाल इन्द्रध्वज विधान आपने ही कराया था। स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों से सम्बन्धित सारी सुविधायें आपको प्राप्त हो रही हैं।

आ0- (1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-5, पृ0-220 (2) डा0 नन्दलाल जैन, रीवां द्वारा प्रेषित परिचय (3) वि0 स्व0 स0 इ0, पृ0-413

श्री मोहनलाल बाकलीवाल

दुर्ग (म0 प्र0) के श्री मोहनलाल बाकलीबाल का जन्म 4-11-1901 को हुआ। आपके पिता का नाम श्री प्रेमसुख बाकलीवाल था। राष्ट्रीय भावनाओं से ओत-प्रोत होने के कारण आप बचपन से ही राष्ट्रीय आन्दोलन से जुड़ गये। सर्वप्रथम 1932 के आन्दोलन में आप 16-2-32 से 14-4-32 तक जेल में रहे। 26-12-40 को आप पुनः गिरफ्तार हुए और 6 माह का कारावास भोगा। 42 के आन्दोलन में भी 9-8-42 से 5-9-44 तक लम्बी अवधि का कारावास आपने भोगा।

आ0- (1) म0प्र0 स्व0 सै0, भाग 3, पृष्ठ-128

श्री मौजीलाल जैन

मनेन्द्रगढ़, जिला- सरगुजा (म0प्र0) के श्री मौजीलाल जैन, पुत्र-श्री राजधन जैन ने 1930 के नमक सत्याग्रह में भाग लिया तथा 9 दिन का कारावास एवं 3 माह 9 दिन नजरबंद रहने की सजा भोगी।

आ0 (1) म0प्र0 स्व0 सै0, भाग 3, पृ0 215

श्री यादवचंद जैन

श्री यादवचंद जैन, पुत्र-श्री बुद्धि लाल जैन ने 1942 में सिवनी (म0प्र0) जिले के ग्राम-पीठ में आन्दोलन के समय प्रचार सामग्री वितरित की, जुलूस में भाग लिया और पिकेटिंग की। फलत: आप गिरफ्तार कर लिये गये और 6 माह का कारावास आपने भोगा।

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-1, पृष्ठ 152

श्री रंगलाल जैन (बोकाड़िया)

मन्दसौर (म0प्र0) के श्री रंगलाल जैन (बोकाड़िया), पुत्र- श्री चौथमल का जन्म 20 नवम्बर 1902 को मंदसौर में हुआ। आप 1932 से ही स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय हो गये थे, 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में भाग लेने पर 1 माह का कारावास आपको भोगना पड़ा।

आ0 (1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग 4, पृष्ठ 217

श्री रघुवर दयाल जैन

श्री रघुवर दयाल जैन, पुत्र-श्री राम दयाल जैन का जन्म 28-10-1889 को मउ (इन्दौर) में हुआ। आपने 1911 में इन्दौर से एम0ए0 व 1913 में इलाहाबाद से एल0एल0बी0 परीक्षायें उत्तीर्ण कीं। और मिशन कॉलेज में प्राध्यापक रहे किन्तु श्री अर्जुन लाल

सेठी के स्वतंत्रता संग्राम में गिरफ्तार हो जाने के बाद आप त्रिलोक चन्द जैन हाई स्कूल इन्दौर के हैड मास्टर हो गये। आपने लाहौर में रेलवे में नौकरी की, जहाँ एक अंग्रेज ऑफीसर के किसी भारतीय से यह कह देने पर कि 'Your India Blady' उसको पीट दिया। फलत: आप 1936 में Personal Officer के पद से सेवामुक्त कर दिये गये। आप महात्मा गांधी के साथ प्रसिद्ध दांडी मार्च में भी गये थे और जेल यात्रा की थी।

बचपन में ही आपने चमड़े का प्रयोग जीवन भर के लिए त्याग दिया था। आप अखिल भारतीय दिगम्बर जैन परिषद् के महामंत्री भी रहे। आपने करीब एक लाख रुपये से 'रघुवर दयाल रामदयाल जैन चेरिटेबिल ट्रस्ट' की स्थापना की, जिसके द्वारा बहुत से जैन धर्मावलम्बियों को शिक्षा एवं अन्य धार्मिक कार्यों में सहयोग दिया जाता है।

श्री जैन महात्मा गांधी के काफी सम्पर्क में रहे और 1948 में गांधी जी की भस्मी को लेकर कैलाश पर्वत व मानसरोवर झील गये थे। आप अपने अन्तिम समय तक विनोबाजी के व्यक्तिगत सचिव रहे। आपका निधन 9 जून 1969 को देहली में हुआ।

आ०-(1) प० इ०, पृष्ठ-135

श्री रघुवर प्रसाद मोदी

पं० रविशंकर शुक्ल ने एक बार कहा था



कि-'मैं दमोह को श्री रघुवर प्रसाद मोदी के नाम से जानता हूँ।' ऐसे व्यक्तित्व, अनेक शैक्षणिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक संस्थाओं के संस्थापक, निर्भीक जन नेता श्री रघुवर प्रसाद मोदी का जन्म दमोह (म0प्र0) के निकटवर्ती ग्राम खोजाखेड़ी में 1902 (या 1894) ई० में हुआ। आपके पिता श्री गोरे लाल गल्ले के व्यापारी थे तथा माता सुखरानी धर्म परायण महिला थीं। मोदी जी अपने माँ बाप के इकलौते बेटे थे।

1918 में आपने मैट्रिक पास किया ही था कि देश में रौलेट एक्ट की गूँज थी, उसी समय जलियांवाला बाग की भयानक मर्मस्पर्शी घटना हुई थी। अंग्रेजों की पाशविक दमन नीति से देश की जनता का खून खौल उठा था, परिणामस्वरूप बच्चा-बच्चा कुर्बान होने को उमड़ पड़ा था। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी से प्रभावित होकर मोदी जी भी आजादी की लड़ाई में स्कूल छोड़कर कूद पड़े। आपके साथी प्रेमशंकर धगट, सिंघई गोकलचन्द वकील, दामोदर राव श्रीखण्डे, देवकी नन्दन श्रीवास्तव, लक्ष्मीशंकर धगट आदि नौकरी व स्कूल छोड़कर आजादी के दीवाने बन गये और दमोह जिले में स्वतंत्रता आन्दोलन ने विराट रूप ले लिया।

1930 में आपने खादी का कार्य प्रारम्भ किया। उस समय महात्मा गांधी के सत्याग्रह आन्दोलन ने जोर पकड़ा था, अंग्रेजों के अत्याचार पराकाष्ठा पर थे। उनके अत्याचारों का दमन करने के लिए मोदी जी के नेतृत्व में ग्राम रोड़ में कॉन्फ्रेंस हुई, जिसकी अध्यक्षता पं० सुन्दरलाल तपस्वी, जिन्होंने 'भारत में अंग्रेजी राज' नामक ग्रंथ लिखा था, और जिसे बाद में अंग्रेजों ने जब्त कर लिया था, ने की थी।

1930 में ही आपने स्थानीय गांधी चौक में स्वदेशी कपड़ों की दुकान खोली, जिसे शासन ने जला दिया और आपको गिरफ्तार कर लिया। इसी समय आपके नेतृत्व में दमोह से नमक सत्याग्रह प्रारम्भ हुआ, शासन द्वारा भारी जुल्म ढाये गये। बाद में आपने बनवारी लाल श्रीवास्तव, सुन्दरलाल स्वर्णकार आदि अनेक साथियों सहित जंगल सत्याग्रह प्रारम्भ किया। आपने जंगल कानून तोड़ने की योजना बनायी, जो मड़ियादो के जंगल काटने की थी। दमोह के एक

गद्दार ठेकेदार ने गुप्त सूचना सरकार को दे दी। नागपञ्चमी के दिन ज्यों ही आप जंगल कानून तोड़ने को कटिबद्ध हुए त्यों ही तत्कालीन कलेक्टर डब्ल्यू0जे0एन0 लीo तथा एस0पी0 हुर्र ने आपको और साथियों को गिरफ्तार कर लिया। मोदी जी को दो दिन जेल में रखकर छोड़ दिया गया।

इस गिरफ्तारी से जनता में और अधिक जागृति आई जिसे अंग्रेज शासक सहन न कर सके। अमानुषिक अत्याचार आजादी के दीवानों पर किये जाने लगे। स्कूलों और टाउनहाल में तिरंगा झण्डा फहराने के अभियोग में मोदी जी को गिरफ्तार कर लिया गया और निर्ममता से पीटा गया।-इस सन्दर्भ में 'म0प्र0 के स्वतंत्रता संग्राम सैनिक- भाग-2,' पृष्ठ 77 पर लिखा है- 'दमोह नगर के मध्य में निर्मित गांधी चौक आजादी के संघर्ष का जीता-जागता स्मारक है, जो आजादी के लिए प्राणों की आहुति देने वालों की स्मृति ताजा करता है। इसी स्थान पर 1942 में पुलिस ने स्वतंत्रता सेनानी श्री रघुवर प्रसाद मोदी को जूतों की ठोकरों से इतना पीटा था कि सारा प्रांगण लहूलुहान हो गया था।'

मोदी जी की ऐसी पिटाई से जनता भड़क उठी। आन्दोलन तीव्र होने की आशंका से प्रशासन ने इन्हें मुक्त कर दिया, किन्तु स्वस्थ होते ही पुनः गिरफ्तार कर लिया। मुकदमा चला और 6 माह की जेल तथा 500/- रु0 जुर्माना की सजा आपको दी गई। इतने अत्याचारों के बाद भी आप घबड़ाये नहीं। इसी बीच क्रान्तिकारी श्री प्रेमचंद जैन 'आजाद' ने आपका उत्साह बढ़ाया। आपके नेतृत्व में दमोह से भारी तादाद में सेनानी जेल गये।

15 अगस्त 1947 को देश आजाद हुआ। मोदी जी के नेतृत्व में विशाल मशाल जुलूस शहर में आजाद भारत का शंखनाद करता हुआ निकाला गया।

देश की आजादी के बाद आप 1952 से 1957 तक दमोह से विधायक रहे। दमोह में शासकीय महाविद्यालय आपकी ही देन है। आपने राष्ट्रीय जैन उच्चतर माध्यमिक कमला नेहरू महिला विद्यालय, जैन औषधालय के साथ ही अनेक संस्थाओं की स्थापना की। 1957 में कलेक्टर द्वारा कम्युनिस्ट घोषित किये जाने पर आप पुनः गिरफ्तार हुए। आपातकाल में भी आपको अस्वस्थ अवस्था में गिरफ्तार किया गया था। 17 दिसम्बर 1976 में आपने इस नश्वर शरीर को त्यागा। आपकी स्मृति में शासन ने दमोह की राष्ट्रीय जैन उच्चतर माध्यमिक शाला का नाम 'श्री रघुवर प्रसाद मोदी राष्ट्रीय जैन उच्चतर माध्यमिक' शाला रखा है।

आ0- (1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-2, पृष्ठ-88 (2) युवक क्रान्ति संगठन दमोह, स्मारिका, पृष्ठ-66 (3) प0 जै0 इ0, पृष्ठ-431 (4) श्री संतोष सिंघई, दमोह द्वारा प्रेषित परिचय (5) श्री खेमचंद कोमलचंद बजाज द्वारा प्रेषित परिचय

प्रो० रघुवीरसिंह जैन

अ0 भा0 दि0 जैन परिषद् परीक्षा बोर्ड के मंत्री रहे प्रो0 रघुवीरसिंह जैन का जन्म 1909 में मेरठ



(उ0प्र0) के एक सम्पन्न जैन परिवार में हुआ। आपके पिताजी बड़ौत के रहने वाले थे परन्तु वकालत के कारण मेरठ में रहने लगे थे। आपने 1929 में बी0एससी0 की परीक्षा प्रथम श्रेणी में तथा विश्व-विद्यालय में द्वितीय स्थान के साथ मेरठ कॉलेज, मेरठ से पास की और आगरा कालेज, आगरा के भौतिक विभाग में एम0एससी0 में प्रवेश लिया। वहाँ अभी एक वर्ष ही बीता था कि गांधी जी ने नमक सत्याग्रह आरम्भ कर दिया। देश की पुकार पर आप पढ़ाई को अधूरा ही छोड़कर सत्याग्रह में कूद पड़े। मित्रों ने बहुत समझाया कि 'वह अपनी सरकारी नौकरी का भविष्य बिगाड़ रहे हैं' परन्तु गांधी जी की पुकार पर आपने

अपनी चिन्ता नहीं की। नमक सत्याग्रह में आपको कारावास का दण्ड हुआ और कारावास काल मेरठ जेल में ही बीता। इस काल में आपको स्वर्गीय मौलाना आजाद, चौधरी चरणसिंह आदि मुख्य व्यक्तियों के साथ रहने का अवसर मिला। प्रो0 साहब का कहना था कि- 'इन छ: महीनों में जेल में जितना वह सीख पाये उतना जीवन में सीखने का अवसर प्राप्त नहीं हुआ।'

एक वर्ष बाद गांधी इर्विन समझौता होने पर आप एम0एससी0 का अध्ययन पूरा करने के लिए पुन: आगरा चले गये और वहाँ से 1932 में उपाधि प्राप्त कर ली। एम0एससी0 करते ही सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक श्री शान्ति स्वरूप भटनागर आपको लाहौर विश्व-विद्यालय में अनुसंधान के लिए ले गए। वहाँ आपने अनुसंधान कार्य किया; परन्तु राष्ट्रीय कार्यों में भाग लेने के कारण लाहौर की पुलिस पीछे पड़ी रहती थी। अत: प्रो0 भटनागर ने आपको भौतिकी में अनुसंधान करने के लिए सर सी0वी0 रमन के पास बंगलौर भेज दिया।

बंगलौर में आप अधिक दिन नहीं रह सके। 1934 में राजाराम कॉलेज, कोल्हापुर में प्रवक्ता पद पर कार्य करने के लिए आ गए। कोल्हापुर में आठ वर्ष तक रहे। यह काल अधिकतर पढ़ने-पढ़ाने में व्यतीत हुआ। बचा हुआ समय हिन्दी प्रचार में समस्त महाराष्ट्र, कर्नाटक तथा कोंकण में लगता था। कोल्हापुर में आपको सुप्रसिद्ध जैन साहित्यकार प्रो0 ए0एन0 उपाध्ये के सम्पर्क से बहुत लाभ हुआ क्योंकि वे भी उसी कॉलेज में कार्य करते थे।

1942 में आप कोल्हापुर छोड़कर मेरठ कॉलेज, मेरठ में आ गए और वहाँ 1961 तक रहे। आप कॉलेज के प्रमुख कार्यकर्ताओं में थे। वहाँ यूनियन के चेयरमैन तथा प्रोक्टर इत्यादि पदों पर कार्यरत रहे।

कॉलेज के अलावा आप शहर में प्रमुख सार्वजनिक कार्यकर्ता माने जाते थे। आप जैन बोर्डिंग के उप-मंत्री, उपभोक्ता समिति के प्रधान तथा मंत्री, देवनागरी कॉलेज की प्रबंधकारिणी के सदस्य, राष्ट्रीय कांग्रेस की प्रबंधकारिणी के सदस्य तथा मंत्री, अखिल भारतीय हिन्दी सम्मेलन के मेरठ अधिवेशन के स्वागत मंत्री आदि अनेक पदों पर रहे थे।

नवम्बर 1946 में कांग्रेस का वार्षिक अधिवेशन मेरठ में हुआ था। उसकी स्वागत समिति में आप छपाई विभाग के मंत्री थे। उसी अवसर पर स्व0 चन्द्रकुमार जैन शास्त्री तथा अन्य से मिलकर आपने मेरठ में जैन राष्ट्रीय कार्यकर्ताओं के एक विशाल सम्मेलन का आयोजन किया था। अखिल भारत में कांग्रेस में काम करने वाले जैनों का एक संगठन बनाने की भी आपकी योजना थी परन्तु गढ़मुक्तेश्वर में हिन्दू-मुस्लिम दंगा होने के कारण यह सम्मेलन नहीं हो पाया। उसी समय दंगे में एक गुण्डे ने आप पर प्रहार किया, प्रहार बहुत गम्भीर था; परन्तु अपनी वीरता के कारण आप मृत्यु से बच गए।

1961 में आप मेरठ कॉलेज छोड़कर विदिशा (म0प्र0) में सेठ शिताबराय लक्ष्मी चन्द्र जैन स्नातकोत्तर महाविद्यालय के प्राचार्य पद पर चले गए और वहाँ जून 1968 तक कार्य किया। बाद में आप मेरठ में रहने लगे। 1971 में आप परिषद् परीक्षा बोर्ड के मंत्री रहे थे। 7 सितम्बर 1980 को मेरठ में आपका निधन हो गया।

आ0- (1) स्वाधीनता आन्दोलन और मेरठ, पृष्ठ-305 (2) सन्मति संदेश, जून-1971 (3) पुत्री द्वारा प्रेषित तिथियाँ

श्री रतनचंद काष्ठिया

विस्फोटक बम बनाने के लिए बाजार में अनुपलब्ध रसायनों को महाराजा कॉलेज की प्रयोगशाला से पार करने वाले श्री रतनचंद काष्ठिया का जन्म 12 दिसम्बर 1922 को जयपुर (राज0) में हुआ। आप प्रजामंडल से जुड़े रहे। 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में आजाद मोर्चे की सभाओं में भाषण देने

के कारण आप गिरफ्तार कर लिये गये और 1-2 दिन बाद ही छोड़ दिये गये। जयपुर में तोड़-फोड़ के कामों में आपने सक्रिय भूमिका निभाई थी।

आ0-(1) रा0 स्व0 से0, पृष्ठ-627

श्री रतनचंद गोटिया (जैन)

पनागर, जिला-जबलपुर (म0प्र0) के श्री रतनचंद गोटिया, पुत्र-श्री नत्थूलाल का जन्म 1920 में हुआ। विज्ञान स्नातक गोटिया जी ने हटा, पटेरा, मझौली, हनुमना, दमोह आदि के राजकीय विद्यालयों में शिक्षण कार्य किया। वे अनेक वर्षों तक प्राचार्य भी रहे। 1936 में आपने माडल हाईस्कूल पर तिरंगा फहराया। 1942 के आंदोलन में आप गिरफ्तार हुए और 1 वर्ष 5 माह जेल में रहे। 1973 में आपका स्वर्गवास हो गया।



आ0- (1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-1, पृष्ठ-95 (2) पुत्री सौ0 विमला जैन, नागपुर द्वारा प्रेषित परिचय। (3) प0 जै0 इ0, पृष्ठ-522

सिंघई रतनचंद जैन

दमोह (म0प्र0) जिले में 'शान्ति युवक दल' का गठन करने वाले सिंघई रतनचंद जैन का कुटुम्ब राष्ट्रीय सेवा में अग्रणी रहा है। आपके पिता सि0 गुलाबचंद अनेक सामाजिक संस्थाओं के संचालक रहे। इनका मूल निवास बांदकपुर था और बनवार में मालगुजारी थी। रतनचंद जी का जन्म 1918 में हुआ आपने माध्यमिक तक शिक्षा ग्रहण की। आपके पिता सि0 गुलाबचंद और भाई शिव प्रसाद जी भी जेल जा चुके हैं।

सि0 रतनचंद का राजनैतिक जीवन 1939 में त्रिपुरी कांग्रेस अधिवेशन में स्वयंसेवक बनकर कार्य करने से प्रारम्भ हुआ। 11 अगस्त 1942 को मधुर और ओजस्वी गायक श्री राजाराम शुक्ल को लेने, जुलूस का नेतृत्व करते हुए, स्टेशन की ओर जाने पर आपको गिरफ्तार कर दमोह थाने भेज दिया गया। दूसरे दिन सागर जेल भेजा गया, सागर से नागपुर जेल भेजा गया और मुकदमा चलाने के लिए पुन: सागर लाया गया। आपको 10 माह 20 दिन के कारावास की सजा मिली, जो आपने अमरावती जेल में मासूम अली जेलर के दुष्ट शासन में काटी।

आ0- (1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-2, पृष्ठ-88 (2) श्री सन्तोष सिंघई, दमोह द्वारा प्रेषित परिचय

सेठ रतनचंद जैन

छोटा कद, इकहरा बदन और 'रन्तू सेठ' के नाम से विख्यात नरसिंहपुर (म0 प्र0) के तत्कालीन मालगुजार सेठ रतनचंद, पुत्र-श्री छोटेलाल का जन्म उनके ननिहाल कटनी, जिला-जबलपुर (म0प्र0) में नाना श्री डेवड़िया दमड़ी लाल के घर 25-1-1913 में हुआ। सेठ रतनचंद का मन अपने पैतृक कार्य खेती-किसानी में न लगा और वे स्वतंत्रता संग्राम में कूद पड़े। अनेक आमसभाओं में भाग लिया, असहयोग आन्दोलन में सक्रिय भूमिका निभायी और जेल यात्रा की। ठाकुर रुद्रप्रताप सिंह, श्यामसुन्दर मुशरान, डेवड़िया रतनचंद, चौधरी नेतराज सिंह आदि के विचारों से आप प्रभावित रहे। सेठ जी अनेक बार जेल गये और आन्दोलन में पूर्ण रूपेण तन-मन-धन से भाग लिया। आप जबलपुर तथा नरसिंहपुर जेल में अनेक बार बंदी रहे। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर हो गई, क्योंकि अंग्रेजी सरकार ने आपकी सारी संपत्ति 1942 में ही जब्त कर ली थी। सम्प्रति आप मूक सेनानी के रूप में जीवन यापन कर रहे हैं।



आ0- (1) श्री मुकेश जैन एवं श्री सुरेन्द्र जैन नरसिंहपुर द्वारा प्रेषित परिचय एवं प्रमाण-पत्र

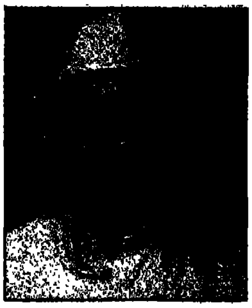
श्री रतनचंद जैन

श्री रतनचंद जैन, पुत्र-श्री दुलीचंद जैन निवासी-सिहोरा (म0प्र0) ने 1931 के आन्दोलन में भाग लिया, गिरफ्तार हुये और एक वर्ष का कारावास तथा 10 रुपये का अर्थदण्ड भोगा।

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-1, पृष्ठ-95

श्री रतनचंद जैन

जबलपुर, 19 जून 1994; मैं रिक्शे से 42 कोतवाली वार्ड पहुंचा, दरवाजा खटखटाया, सहसा



एक कृशकाय, शरीर से वृद्ध किन्तु चेहरे पर देदीप्यमान वीररसोचित आभा वाले व्यक्ति ने दरवाजा खोला, मुझे समझते देर न लगी कि यही श्री रतनचंद जी हैं, जिनसे मिलने मैं लगभग 1000 किमी0 दूर से आया हूँ। परिचयोपरान्त मैंने अपने आने का मकसद बताया कि मुझे मध्यप्रदेश के जैन स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के परिचय चाहिए। जो सामग्री उनके पास थी सहर्ष मुझे दिखा दी।

श्री जैन मध्यप्रदेश स्वतंत्रता संग्राम सैनिक संघ के संस्थापक-महामंत्री, अ0 भा0 स्वतंत्रता संग्राम सेनानी समिति, नई दिल्ली के सचिव, जिला कांग्रेस कमेटी, जबलपुर के महामंत्री आदि अनेक पदों पर रहे। उनके सरल हृदय, साधारण वेशभूषा से लग ही नहीं रहा था कि यह व्यक्ति इतने बड़े पदों पर रहा होगा। पर 80 वर्ष की उम्र में भी उनकी बातचीत के जोश से यह जरूर लग रहा था कि इन्होंने भारत मां को परतंत्रता की बेड़ियों से मुक्त कराने में अपना तो सर्वस्व न्यौछावर किया ही होगा, साथ ही अपने ओजपूर्ण भाषणों से अन्य सपूतों को आजादी की लड़ाई लड़ने के लिये प्रेरित किया होगा। साधारणतया लोग नहीं जानते कि श्री जैन ने 'स्वतंत्रता संग्राम सैनिक संघ' को जन्म दिया और देश सेवकों को 'स्वतंत्रता सेनानी' शब्द दिया। इससे पूर्व उन्हें 'राजनैतिक पीड़ित (POLITICAL SUFFERER) कहा जाता था।

अपना परिचय देने का निवेदन करने पर उन्होंने कहा-"मेरे पिता का नाम श्री बट्टीलाल जैन था, जो दिगम्बर जैन सम्प्रदाय के परवार जैन थे। वे 1932 में कलेक्टर कार्यालय में क्लर्क थे, पर मेरे स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने के कारण उन्हें नौकरी छोड़नी पड़ी थी।" आगे उन्होंने बताया कि "पैतृक सम्पत्ति कुछ नहीं होने से मुझे बिना पूंजी के व्यवसाय करना पड़ा। मैं साइकिल पर कपड़ा बांध कर गांवों के बाजार में ले जाता था, उन्हें बेचता व अपने कुटुम्ब का भरण पोषण करता था। परिवार में 5 भाई, 4 बहनें, माता, पिता, मेरे पिता के बड़े भाई की बाल विधवा पत्नी अर्थात् बड़ी माँ थीं। पिताजी का विछोह पहिले हुआ, मां का 20 वर्ष बाद।

17 नवम्बर 1928 को लाला लाजपत राय अंग्रेजों की मार से शहीद हो गये। सारे देश की जनता शोक में डूब गयी। मैंने सुबह झंडे की सलामी के समय प्रस्ताव रखा कि 'देश के नेता लाला लाजपत राय शहीद हो गये हैं, अत: झंडा आधा झुकाया जायं।' मेरी बातें सुनकर सब दंग रह गये, चाहते तो सभी थे पर किसी की हिम्मत नहीं हो रही थी, क्योंकि अंग्रेजी शासन का यूनियन जेक झंडा था। इतने में रैली आयोजन के अध्यक्ष श्री दुर्गाशंकर मेहता 'वकील' आए और मेरे प्रस्ताव पर प्रसन्नता जाहिर करते हुए स्वयं जाकर झंडा आधा झुका दिया। बाद में सलामी हुई। डिप्टी कमिश्नर अंग्रेज था श्री पी0सी0 बोर्न। वह रैली का संयोजक और फील्ड मार्शल था। यह देखकर गुस्से में तमतमा गया। बोला कुछ नहीं पर सलामी न लेकर अपनी मोटर लेकर चला गया।

1931 में क्रान्तिकारी गतिविधियों में संलग्न होने के कारण पिताजी को नौकरी छोड़कर घर बैठने को मजबूर होना पड़ा। मैं गांवों में बाजार करके घर चलाता, साथ में पढ़ाई भी करने लगा। फिर मैं बनारस गया, मैट्रिक की परीक्षा देने, परन्तु वहां परीक्षा व्यवस्था अधिकारी ने मुझे बुलाया। नाम-पता पूछा और कहा 'कि पुलिस तुम्हारी तलाश कर रही है,' मैं परीक्षा अधूरी छोड़कर भाग आया।

1932 में जबलपुर में एक राजनैतिक कांग्रेस परिषद् हुई, मैं उसमें शामिल हुआ, पकड़ा गया, पर पुलिस की गाड़ी में बैठते समय भाग गया, पकड़ में नहीं आया।

14 अगस्त 1942 को धारा 144 तोड़ते हुए जुलूस निकला। फुहारे के समीप का डाकखाना तोड़ा गया, पैसा लूटा गया, कागज जलाये गये, लाठी चार्ज हुआ गोली चली। 14 वर्षीय बालक गुलाब सिंह पटेल शहीद हो गया। रात्रि में पुलिस ने मेरे घर छापा मारा। मैं जानता था कि पुलिस जरूर आयेगी अत: मैं घर पर नहीं गया था। पुलिस ने घर छान डाला और वापिस हो गयी।

मैं 4 माह भूमिगत रहा और अनेक तोड़फोड़ के कार्यों में संलग्न रहा। फिर जबलपुर आया, वहां 4-5 दिन छिपा रहा, परन्तु एक गली में पकड़ लिया गया। कोतवाली में पुलिसिया तरीके से पूछताछ की गई, फिर जेल भेज दिया गया और दो वर्ष बाद जेल से छूटा। जेल के बाहर दरवाजे पर ही नया आदेश शासन का मिला- 'आप जबलपुर म्युनिसपल सीमा के बाहर बगैर अनुमति लिये नहीं जा सकेंगे।' एक माह घर मैं कैद सा रहा परन्तु शासकीय आदेश तोड़ने की इच्छा बलवती हो गयी और सागर जिले के बण्डा ग्राम में एक राजनैतिक सम्मेलन में शामिल होने चल दिया। सागर से बस निकल जाने के कारण साइकिल से बण्डा चला। रास्ते में एक्सीडेंट हो गया। राहगीरों ने मुझे मरा समझकर थाने में रिपोर्ट की तब एक अस्पताली कैम्प में मेरी जांच कराई गई। मुझे जीवित पाकर भरती कर दिया गया। एक सप्ताह अस्पताल में रहा किंतु शासन को पता चलने पर मुझे कैम्प से निकलवा दिया गया। एक वर्ष तक घर पड़ा इलाज करवाता रहा।

1945-46 में कांग्रेस के चुनाव हुए। मैं जिला कांग्रेस का महामंत्री मनोनीत हुआ और लगातार 7 वर्षों तक मंत्री रहा। 1949 में अपना संविधान बनकर पूरा हुआ, इस बार के कांग्रेस चुनाव बड़े कशमकश में हुए, मैं जबलपुर का अध्यक्ष चुन लिया गया और 26 जनवरी का गणतंत्र समारोह अभूतपूर्व रूप से मनाया गया, ऐसा कि आज भी लोग याद करते हैं।

1955 में कांग्रेस की एक बैठक में, जिसमें देश के बड़े नेता आमन्त्रित थे, मैंने आजादी के महासागर में जूझने वाले और अपना जीवन सौंप देने वाले देशभक्तों विशेषकर जिन्होंने जेल भोगी, यातनाऐं सहीं, को शासन की ओर से सम्मान व सहायता दिये जाने का प्रस्ताव किया। मेरे इस प्रस्ताव पर अनेक सदस्यों ने सहमति प्रकट की परन्तु एक 'नेताजी' ने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि- 'यदि इन सबको शासकीय सहायता देशसेवा के रूप में दी जायगी तो ये 'सुपर पार्टी कांप्लेक्स' फील करने लगेंगे, अर्थात् इनमें अहंभावना जागृत हो जायेगी।

नेताजी की इस बात ने मेरे मानस को मथ डाला। मुझे ऐसा लगा कि 'मेरे देश के नेता और नुमाइन्दे ही जब अपने ही लोगों के प्रति ऐसी भावना बना लेंगे तो देशसेवा की भावना ही मर जायेगी और इन जीवनदानी देशभक्तों का क्या होगा ?' इस विचार मंथन ने मेरे मानस को मथ डाला और दूसरे दिन ही मैंने कांग्रेस के सभी पदों से त्याग पत्र दे दिया और अब आगे के जीवन में केवल देश के लिये अपनी आहुति देने वालों, जेल जाने वालों, यातानाएं भोगने वालों की सेवा का संकल्प ले लिया।

मैंने अपने नगर के जेल यात्रियों की एक बैठक बुलाई, अपने विचार रखे, सभी ने समर्थन दिया। 'स्वतंत्रता संग्राम सैनिक संघ' नाम का संगठन बनाया। शहर के बाद जिला का संगठन बनाया, जिले की बैठक की। फिर मैंने मध्यप्रदेश का दौरा किया और 1956-57 में 'मध्यप्रदेश स्वतंत्रता संग्राम सैनिक संघ' की नींव डाली। इसकी प्रथम बैठक इटारसी में हुई, इसके मुख्य अतिथि तत्कालीन वित्त मंत्री श्री मिश्रीलाल जी गंगवाल (जैन) थे।

दौड़-धूप, निरंतर श्रम और भगीरथ प्रयत्न करने के बाद मैं प्रांतीय सम्मेलन करने में सफल हो गया। 19 एवं 20 सितम्बर 1957 का दो दिवसीय सम्मेलन भोपाल के नवाब शाही के दरबार हाल कक्ष में हुआ। इस सम्मेलन का उद्घाटन वित्त मंत्री श्री मिश्रीलाल गंगवाल ने किया। मुख्यअतिथि मुख्यमंत्री डॉ0 कैलाशनाथ काटजू का उद्बोधन हुआ व अध्यक्षता सेठ गोविन्द दास जी ने की। सम्मेलन की सफलता के लिये तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ0 राजेन्द्रप्रसाद जी 'देशरत्न' ने अपना संदेश आशीर्वाद रूप में भेजा था।

मध्यप्रदेश के बाद मैंने सभी प्रांतों का दौरा किया। सभी प्रदेशों में संगठन बनवाये। 1958 का बंगाल प्रांतीय सम्मेलन कलकत्ते के म्यूनिसपल हाल में हुआ, जिसमें 10 से 20 साल की सजा वाले, फांसी की सजा, कालेपानी की सजा वाली महान् विभूतियां आईं, उसमें बड़े ही उत्तेजनापूर्ण भाषण हुए, मेरा सम्मान भी किया गया। मैंने वहाँ अपने भाषण में कहा- 'मैं आज आप देशभक्तों और महान् विभूतियों के दर्शन पाकर कृतार्थ हो गया।' मैं तो आप जैसी महान् मूर्तियों की पैरों की धूल भी नहीं हूँ। मेरी अभिलाषा है कि बंगाल प्रान्त आगे आवे और इस संगठन को सम्हाले।'

प्रांतों के संगठन बनाने के बाद मैं राष्ट्रीय स्तर के संगठन बनाने पर सोचने लगा और इसके लिये सरल उपाय यह सोचा कि राष्ट्रीय स्तर पर एक सम्मेलन राजधानी दिल्ली में हो। अब मैं पुन: अखिल भारतीय सम्मेलन बुलाने पर गंभीरता से सोचने लगा और दूसरे भगीरथ प्रयत्न में लग गया।

यद्यपि मुझे अत्यधिक श्रम करना पड़ा, परन्तु अधिकतर प्रांतों में जाकर संगठन बनवाने के प्रत्यन से देशभर के नेताओं, संसद सदस्यों आदि से परिचित हो चुका था। मुझे लोग मेरे नाम से जानने लगे थे। एक वर्ष के निरंतर प्रयास के बाद उड़ीसा प्रदेश के सांसद सामान्त सिन्हयार को राजी करने में सफल हुआ। वे संयोजक बने और 1959 के 20-21 अक्टूबर को दिल्ली के टाउन हाल में देश का 'प्रथम राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम सैनिक सम्मेलन' बाबू जगजीवन राम जी केन्द्रीय मंत्री की अध्यक्षता में हुआ।

सम्मेलन अभूतपूर्व रहा। सम्मेलन के अंत में चुनाव हुआ। सर्व सम्मति से महान् क्रांतिकारी राजा महेन्द्र प्रताप जी को अध्यक्ष चुना गया, उन्होंने बड़े स्नेह से मुझे मंत्री बनने का आदेश किया, परन्तु मैंने उन्हें अपनी असमर्थता बताते हुए दिल्ली के ही उपसभापति व मंत्री आदि विशेषकर सांसदों को ही बनाने का निवेदन किया। समिति भी बन गई, मैं राष्ट्रीय मुख्य समिति (वर्किंग कमेटी) का सदस्य हो गया।

मैं लोकसभा में स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों को सम्मानजनक राहत व सुविधायें दिये जाने का प्रस्ताव लाना चाहता था। मैं लोकसभा के अवसर पर दिल्ली आता, धर्मशाला में ठहरता और प्रत्येक प्रांत के सांसदों से चर्चा करता कि इस विषय का प्रस्ताव आप संसद में रखें। पर दो वर्ष तक दिल्ली में सांसदों के चक्कर लगाये। किसी से कुछ भी सहायता न मिली। अपने हाथ से भोजन धर्मशाला में बनाता और सांसदो के चक्कर लगाता, यही क्रम काम का रहा। श्रम का फल मिला। प्रसिद्ध वयोवृद्ध श्रमिक नेता श्री शिन्ननलाल सक्सेना, वरिष्ठ सांसद से जब मैं तीसरी बार अपना निवेदन करने गया, तो उन्होंने

बड़े स्नेह से मुझे पास बिठाया और बोले मुझे तुम्हारी इस लगन को देखकर बड़ी खुशी होती है और तुम्हारे ऊपर दया भी आती है, मेरा मन्तव्य पूछा, दिल्ली में किसके यहां रुकते हो? मैंने कहा धर्मशाला बदलते रहना, हाथ से स्टोव पर भोजन बनाना, पैदल सांसदों के बंगलों पर अपना निवेदन करना आदि। सभी बातें सुनकर वे द्रवित हो उठे और उन्होंने कहा 'बेटे तुम्हारा प्रस्ताव पार्लियामेन्ट में मैं रखूगां अगले सत्र में आना। अब तुम निराश मत हो।' अगला सत्र शुरू होते ही मैं दिल्ली गया शिन्नन दादा से मिला तो उन्होंने कहा -'तुम्हारा प्रस्ताव मैंने बनाकर दे दिया है वह पटल पर आ रहा है।'

प्रस्ताव निर्धारित तिथि में रखा गया ज्यों ही प्रस्ताव पटल पर रखा गया देश के सभी पार्टियों के सांसदों ने अपनी मेजों पर हाथ थपथपाकर उसका स्वागत किया ऐसा लगा कि सारा देश इस प्रस्ताव पर एकमत है। इस विषय पर प्राय: सभी पार्टियों के सदस्यों ने समर्थन में अपने विचार प्रकट किये, शासन पर रोष भी व्यक्त किया तथा समर्थन में अच्छी तकरीरें दीं, उस समय की वार्ता ऐतिहासिक थी। किन्तु इस विषय का समय हो जाने पर विषय अगले सत्र के लिये चला गया।

सत्र के पूर्व ही प्रधान मंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने 15 अगस्त 1972 को लालकिले में प्रदेशों से सीमित संख्या में विशिष्ट सेनानियों को आमंत्रित कर ताम्रपत्र से सम्मानित करने, 200/- माहवार पेंशन देने तथा देश भर में ब्लाक स्तर पर शिलालेख लगवाने का कार्यक्रम प्रस्तुत किया। मध्यप्रदेश के 41 सेनानियों को आमंत्रित किया गया, जिसका नेतृत्व मुझे सौंपा गया।

अपनी छत्तीस वर्षों की सेनानियों की सेवा के दौरान अनेक रोचक और रोमांचक प्रंसग हैं पर एक ही का उल्लेख यहां कर देना पर्याप्त समझता हूँ। केन्द्रीय शासन व राज्य शासन ने स्वतंत्रता सेनानियों को 'राजनीतिक पीड़ित' की संज्ञा दी थी।

मैंने एक प्रस्ताव प्रांतीय सम्मेलन में रखा कि- 'हम लोग देश-सेवक हैं और आजादी की लडाई के सेनानी हैं अत: हम 'राजनीतिक पीड़ित' नहीं 'स्वतंत्रता संग्राम सेनानी' हैं। हम POLITICAL SUFFERER नहीं हम FREEDOM FIGHTER हैं, अत: शासन अब हमारे लिये इसी नाम का उपयोग करे।' परन्तु । वर्ष तक शासन के कान में जूँ तक नहीं रेंगी। अत: मैंने प्रधानमंत्री पं० जवाहरलाल नेहरू को पत्र लिखा कि यदि 2 माह के भीतर हमारे नाम का उपयोग नहीं सुधारा गया तो हम देश भर में केन्द्रीय व राज्य के मंत्रियों, सांसदों और विधायकों का स्वागत बड़े-बड़े साइन बोर्डो से करेंगे, जिसमें लिखा रहेगा -WELCOME POLITICAL GAINER

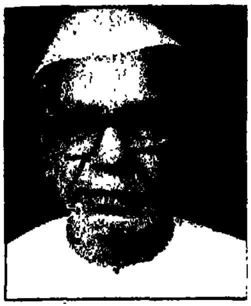
मेरे इस पत्र से प्रधानमंत्री के मंत्रालय में सनसनी फैल गयी। पं० जवाहरलाल जी की जानकारी में यह बात लाई गयी तो उन्होंने तत्काल यह नाम परिवर्तित करने का आदेश दिया। राज्य सरकारों को भी आदेश प्रसारित कर दिये गये।

अब मैं 80 वर्ष में पहुंच चुका हूँ और एक काम हाथ में लिया है। उसे पूरा करने में जुटा हूँ वह है 'राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम में मध्यप्रदेश जैन समाज का योगदान ।' मुझे आशा है कि वीर प्रभु की कृपा से उसे शीघ्र ही पूर्ण कर संकूगा।'' श्री जैन का 27 नवंबर 1999 को देहवसान हो गया।

आ०-(1) म० प्र० स्व० सै०, भाग-1, पृष्ठ-95 (2) सा० 19 जून 1994 (3) प० जै० इ०, अनेक पृष्ठ

श्री रतनचंद जैन 'चंदेरा'

श्री रतनचंद जैन, पुत्र-श्री बुद्धलाल जैन का जन्म 16-5-1924 को तत्कालीन ओरछा राज्य (वर्तमान टीकमगढ़ जिला) में ग्राम-चन्देरा, तहसील-जतारा में हुआ। आपने 1946 में चंदेरा में हुए आंदोलन में भाग



लिया। लाठी चार्ज में चोटे खायीं और 15 दिन तक थाने में बंद रहे। सामंतवादी तत्त्वों का उत्पीड़न बढ़ने से आपको पैतृक ग्राम छोड़कर टीकमगढ़ में शरण लेनी पड़ी। आपने राजनैतिक स्वतंत्रता के बाद समाज सेवा का कार्य चुना। 1965 से 1972 तक टीकमगढ़ नगरपालिका के पार्षद चुने गये और उपाध्यक्ष पद पर रहे। 1964 से 1982 तक श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र पपौरा जी के महामंत्री रहे। नन्दीश्वर जैन मंदिर के निर्माण में आपने महती भूमिका निभाई थी। 16 जुलाई 1998 को आपका निधन हो गया।

आ0- (1) वि0 स्व0 स0 इ0, पृष्ठ-212, (2) स्व0 प0 (3) जैनमत दर्पण, सितम्बर 1998

सवाई सिंघई श्री रतनचंद जैन

जैन समाज में सिंघई की उपाधि उसे प्रदान की जाती है जो अकेले ही पंचकल्याणक प्रतिष्ठा करवाकर गजरथ चलवाता है। जो एक से अधिक वार गजरथ चलवाता है उसे सवाई सिंघई की उपाधि से नवाजा जाता है। अपने पूर्वजों द्वारा प्राप्त सवाई सिंघई उपाधि धारक श्री रतनचंद जैन ने धार्मिक क्षेत्र में ही नहीं राजनैतिक क्षेत्र में भी ऐसी ख्याति अर्जित की थी, जो आज भी उनकी यशः कौमुदी को दिग्-दिगन्त व्यापिनी बनाये हुए है। रतनचंद जी का जन्म बुढ़ार, जिला-शहडोल (म0 प्र0) में 1911 में हुआ। आपके पूर्वज राजस्थान से नागौद, वहाँ से खैरा (सीधी) और खैरा से व्यापार के सिलसिले में 1890 के आसपास बुढ़ार आये थे। पितामह श्री माधव प्रसाद को बुढ़ार में धन और यश दोनों मिले। माधव प्रसाद के तीन पुत्रों में छोटे पुत्र रामचन्द्र के यहाँ रतनचंद और धर्मचंद दो पुत्र हुए और दोनों ही स्वाधीनता आन्दोलन में सक्रिय रहे।

1932 में विदेशी वस्त्रों की दुकान पर धरना देने के कारण 2-5-1932 को आप गिरफ्तार हुए और 300/- रुपये का जुर्माना तथा 3 माह का कठोर कारावास आपको अमरपाटन कैम्प जेल में काटना पड़ा।

पं0 शम्भुनाथ शुक्ल के साथ आप गांव-गांव में कांग्रेस और गांधीजी का संदेश लेकर लोगों में अलख जागते रहे। 1942 के आन्दोलन में पुलिस आपके पीछे लगी रही। एक दिन मकान को चारों ओर से घेर लेने पर आप वेश बदलकर भाग निकले और कटनी पहुंचे। कटनी में आपको दरोगा रमाशंकर दिखा जो क्रान्तिकारियों के साथ अमानवीय और पशुवत् व्यवहार करता था। रतनचंद जी ने भरे बाजार में उसको 5-7 चप्पल मारी और भाग निकले, अन्त तक पुलिस आपको गिरफ्तार नहीं कर सकी। आप अदम्य साहसी, ईमानदार, दूरदर्शी और परोपकार वृत्ति के व्यक्ति थे। अपने पैसे से आपने बुढ़ार में एक विद्यालय की स्थापना की थी व जैन मन्दिर के ऊपरी भाग का निर्माण कराकर उसमें भगवान् पार्श्वनाथ की मूर्ति स्थापित कराई थी। समाज ने आपको अनेक अलंकरणों से अलंकृत किया था।

म0 प्र0 शासन द्वारा प्रदत्त 'सम्मान निधि' को आपने स्वीकार नहीं किया था। 15-3-1986 को आपका देहावसान हो गया।

आ0- (1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-5, पृष्ठ-314 (2) जै0 स0 रा0 अ0 (3) स्वा0 आ0 श0, पृष्ठ 127-128

वैद्य रतनचंद जैन

देशी औषधियों के व्यवसायी वैद्य रतनचंद जैन, पुत्र-श्री मुन्नालाल जैन का जन्म 24 अक्टूबर 1919 को खनियांधाना, जिला-शिवपुरी (म0प्र0) में हुआ। आपने माध्यमिक तक शिक्षा ग्रहण की और आजादी के आन्दोलन में कूद पड़े। 1940 में आपने महाराष्ट्र चर्खा संघ द्वारा संचालित वस्त्र विद्यालय में



10 माह चर्खा चलाने की ट्रेनिंग ली। आप सेवाग्राम में गौ संवर्धन की ट्रेनिंग हेतु गये जहाँ आपको पूज्य बापू के सान्निध्य में प्रार्थना सभा तथा उनके साथ घूमने का सौभाग्य मिला। इसे आप अपने जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि मानते हैं। जुलाई 1941 में आप अपने गृहनगर खनियांधाना लौट आये, जहाँ 1942 के आन्दोलन में भाग लिया, फलस्वरूप राज्य से एक वर्ष के लिए निष्कासित कर दिये गये।

25 फरवरी 1943 को जब लौटे तो उसी दिन एक वर्ष की जेल की सजा दे दी गई। 20 मार्च 1945 को पुन: अनिश्चितकाल के लिए राज्य से निर्वासित कर दिया गया। आप हार मानने वाले नहीं थे, उत्कट जिजीविषा आप में थी अत: 13-10-1946 को कानून भंग कर आपने राज्य में प्रवेश किया, फलत: 13-10-46 से 9-12-46 तक आपको नजरबन्द किया गया।

श्री जैन के राजनैतिक कार्यों का विस्तार से उल्लेख करते हुए श्री श्यामलाल साहू ने 'विन्ध्य प्रदेश के राज्यों का स्व0 स0 का इतिहास' ग्रन्थ में लिखा है-'यहाँ (खनियांधाना) पर स्वतंत्रता संग्राम का कार्य श्री रतनचन्द जैन ने शुरू किया, यद्यपि खनियांधाना उन सौभाग्यशाली रियासतों में है जहाँ देशभक्त राजा हुये। यहाँ के नरेश श्री खलकसिंह ने 1922 में श्री रामेश्वर प्रसाद शर्मा द्वारा झांसी से जन जागृति करने वाले राष्ट्रीय पत्र 'साहस' के प्रकाश में अपूर्व सहयोग तो दिया ही काकोरी काण्ड के पश्चात् छद्म वेश में रहने वाले चन्दशेखर आजाद को अपने शस्त्रागार से ही प्रशिक्षण हेतु अस्त्रशस्त्र प्रदान किये। इस प्रकार की कार्यवाहियों का पता जब ब्रिटिश हुकूमत को चला तो उन्होंने 1935 ई0 में राजगद्दी से उतार दिया। परन्तु वास्तविक जन जागृति का कार्य इस राज्य में सन् 1938 में श्री रतनचंद जैन द्वारा प्रारम्भ हुआ। कानून भंग आंदोलन 13 अक्टूबर 1946 को प्रारम्भ हुआ जिसका वर्णन श्री लालाराम वाजपेयी ने 'मध्य भारत देशी राज्य लोक परिषद् लश्कर' को भेजी अपनी रिपोर्ट में निम्न प्रकार किया था:-"रतनचन्द्र जी जैन जो खनियांधाना के एक मात्र कार्यकर्ता हैं, रियासत ने हिन्दू जैन का संघर्ष रचवाया और उन्हें इसका कारण बताकर निर्वासित कर दिया था। मैं दो तीन बार रियासत के दीवान से जाकर मिला। उसने एक भी न सुनी और उनके घरवालों को तरह-तरह के कष्ट पहुंचाने शुरू कर दिये। इस पर मैंने उन्हें इस पाबन्दी के तोड़ने की सलाह दी और इनकी इमदाद के लिये श्री प्रेमनारायण जी तिवारी समथर, लक्ष्मीनारायण जी नायक, गुजारीलाल जैन पृथ्वीपुर, कामताप्रसाद जी समेले (गङ्गापुर) को भेजा। श्री जैन अपने घर (खनियांधाना) गये तो उन्हें गिरफ्तार कर लिया। श्री प्रेमनारायन जी तिवारी समथर ने आकर मुझे सारी हालत सुनाई। मैंने उन लोगों को स्टेट खनियांधाना में प्रजामण्डल के प्रचारार्थ कुछ दिन रहने को कह दिया। मैं इस ओर कुछ विशेष कारणवश 15 दिन तक वहां न पहुंच सका तो यह लोग भी वहाँ से रियासत द्वारा तंग कराने से रियासत से निकलने को मजबूर कर दिये गये।

इसके बाद मैंने श्री वीरसिंह जी धमना, लक्ष्मणप्रसाद जी दुबे मुड़ारा (ओरछा) को भेजा। इन्होंने रिपोर्ट दी कि श्री वैद्य बीमार हैं और उन्हें बहुत बुरी तरह तंग किया जा रहा है। भोजन और दवा व बिस्तर (कपड़े) ठीक नहीं दिये जा रहे हैं। मैंने श्री पं0 परमानन्द जी को साथ ले चलने की प्रार्थना की। वह बुन्देलखण्ड की रियासतों में अच्छा प्रभाव रखते हैं। बबीना से एक गाड़ी (कार) ली और खनियांधाना गया। दीवान साहब स्टेट से भेंट की और उनसे निर्दोष

श्री वैद्य को छोड़ने की प्रार्थना की तो उन्होंने कानून की मजबूरी बताकर छोड़ने से इन्कार किया। मैंने मुलाकात के लिये निवेदन किया तो उन्होंने इससे भी इन्कार कर दिया। लाचार होकर हमें उनको यह कहना पड़ा कि दीवान साहब हमें आप लड़ने की चुनौती दे रहे हैं हम इसके लिए अब मजबूर हैं कि तुम्हारे यहां से श्री वैद्य जी को छुड़ाने के लिये बुन्देलखण्ड स्टेट के कार्यकर्ता इकट्ठे करें। बस मैं इतना कह कर पंडित जी के साथ चला आया। दीवान साहब खनियांधाना पर जो भी असर हुआ हो वह दूसरे ही दिन श्री वैद्य को मोटर में बिठाकर झांसी बाजार में छोड़ गये और कहा कि आपके लिये खनियांधाना स्टेट पहले ही की तरह बन्द है। मैं इधर टीकमगढ़ के उस लाठी चार्ज के किस्से में फंसा था, वैद्य जी भी उसी में आकर लग गये। उससे फुरसत पाकर मैंने पुन: वैद्य जी को खनियांधाना भेज दिया है। वह अब अपने घर रहने लगे हैं। रियासत प्रगट में कुछ नहीं कर पा रही है, क्योंकि जनता पर इतना अच्छा प्रभाव पड़ा कि वह अब इनका (श्री वैद्य जी का) साथ देने और राजनैतिक हलचल में दिलचस्पी लेने लगी है।''

वैद्य जी राज्य के राजा से हमेशा लोहा लेते रहे। आजादी के बाद आप शिवपुरी जाकर बस गये। प्रस्तुत ग्रन्थ लेखकों का परम सौभाग्य है कि उनके पिता जी के चाचा स्व0 श्री मूलचंद जैन बरधुवाँ (तत्कालीन खनियांधाना स्टेट), जिला-दतिया (म0 प्र0) वैद्य जी के परम सहयोगी रहे। श्री मूलचंद जी भी अनेक बार खनियांधाना स्टेट से निष्काषित किये गये थे। जुलाई 1995 में वैद्य जी का निधन हो गया।

आ0- (1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-4, पृष्ठ-300 (2) वि0 स्व0 स0 इ0, पृष्ठ-270-71 (3) जैन सन्देश, 26 जुलाई 1995 (4) स्व0 प0

श्री रतनचंद जैन

इटारसी (म0 प्र0) के श्री रतनचंद जैन, पुत्र-श्री मूलचंद जैन का जन्म 1924 में हुआ। 1942 के आन्दोलन में भाग लेने के कारण आपको नौ माह का कारावास भोगना पड़ा। 1944 में अल्पायु में ही आपका देहावसान हो गया।

आ0- (1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-5, पृष्ठ-348 (2) स्व0 स0 हो0, पृष्ठ-123

श्री रतनचंद जैन

जबलपुर (म0प्र0) के श्री रतनचंद जैन, पुत्र-श्री मूलचन्द का जन्म 1913 में हुआ। जबलपुर के नार्मल स्कूल से शिक्षा समाप्त कर कर्मक्षेत्र में पैर रखते ही 1932 के सत्याग्रह में आप सम्मिलित हुए तथा 6 माह की सजा पाई। आप पर 20/- रु0 जुर्माना भी किया गया। न देने पर डेढ़ माह की सजा और भुगतनी पड़ी। आपने लिखा है 'जेल में 20 किलो पिसाई का काम प्रतिदिन करना पड़ता था। जेल का सिपाही हरहर नारायण मेरा प्रेम व स्नेह के साथ पालन करता था क्योंकि उसके कोई सन्तान न थी। वह रात को 2-4 पूड़ियाँ भी ले आता था। उस समय जेल में सेठ गोविन्ददास भी थे।' आपने जबलपुर नगरपालिका में शिक्षण कार्य किया। नगर निगम द्वारा आप सम्मानित हुए। 1978 में श्रीमती इंदिरागाँधी की गिरफ्तारी पर विरोध प्रदर्शन करने पर अल्पावधि जेल-प्रवास भी आपने किया।

आ0- (1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-1, पृष्ठ-95 (2) स्व0 स0 ज0, पृष्ठ-159 (3) स्व0 प0

श्री रतनचंद जैन

पनागर, जिला-जबलपुर (म0प्र0) के श्री रतनचंद जैन, पुत्र-श्री हजारीलाल का जन्म 1912 में हुआ। 1930 के जंगल सत्याग्रह में लगभग 3 माह का कारावास आपने भोगा।

आ0- (1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-1, पृष्ठ-95

श्री रतनलाल कर्णावट जैन

नाथद्वारा (उदयपुर) राजस्थान, कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष रहे श्री रतनलाल कर्णावट का जन्म 1906 के आसपास हुआ। भारत छोड़ो आन्दोलन में आप भारत रक्षा कानून के अन्तर्गत 13 महीने उदयपुर जेल में नजरबन्द रहे।

आ० (1) रा० स्व० से०, पृष्ठ-500

सेठ रतनलाल जैन

नगर कांग्रेस कमेटी के कोषाध्यक्ष रहे आगरा (उ०प्र०) के श्री सेठ रतनलाल जैन, पुत्र-श्री छोटे लाल आगरा के बहुत बड़े लोहे के व्यापारी थे। 1936 से ही आप स्वाधीनता संग्राम में सक्रिय भाग लेने लगे थे। 1942 के आन्दोलन में सरकार द्वारा नजरबंद कर कारागृह में भेज दिये गये और 6 माह बाद छोड़े गये। आप बार्ड कांग्रेस कमेटी के सदस्य तथा अधिकारी एवं नगर कांग्रेस कमेटी के कोषाध्यक्ष रहे थे। आपने साप्ताहिक 'नव संदेश' एवं मासिक 'अग्रवाल लोहिया' पत्र भी निकाला था।

आ०- (1) जै० स० रा० अ० (2) उ० प्र० जै० ध०, पृष्ठ 89 (3) श्री महावीर प्रसाद द्वारा प्रेषित परिचय (4) गो० आ० ग्र०, पृष्ठ-225-226

श्री रतनलाल जैन

स्थानीय कांग्रेस संवादल के संचालक रेवाडी (हरियाणा) के श्री रतनलाल जैन, पुत्र-श्री फूलचंद जैन का जन्म 1926 के आसपास हुआ। विद्यार्थी जीवन में ही पूज्य गांधी जी के प्रभाव से आप आन्दोलन में आये। श्री प्रेम स्वरूप डाटा के संसर्ग में 1930 में आपने खादी पहनना प्रारम्भ किया। 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में आपको दो माह को नजरबन्द किया गया परन्तु उपायुक्त महोदय ने 14 दिन बाद ही आपको छोड़ दिया। 10-8 1948 को 21 वर्ष की अल्पवय में ही आपका निधन हो गया।

आ० (1) रिवाड़ी सेनानी सूची, क्र०-43

बाबू रतनलाल जैन

उत्तरप्रदेश विधानसभा के सदस्य रहे, 'बाबूजी' उपनाम से विख्यात श्री रतनलाल जैन का



जन्म 20 अगस्त 1892 को अफजलगढ़, जिला- बिजनौर (उ० प्र०) के एक सम्पन्न परिवार में लाला छज्जूमल जैन के यहाँ हुआ। गांव में ही प्रारम्भिक शिक्षा समाप्त कर रतनलाल जी उच्च-शिक्षार्थ अपने फूफा श्री हीरालाल जी के यहाँ बिजनौर चले आये। बाद में हीरालाल जी ने रतनलाल जी को विधिवत गोद ले लिया। बिजनौर से मैट्रिक परीक्षा पास कर रतनलाल जी इलाहाबाद विश्वविद्यालय चले गये, जहाँ से बी०-एससी० और एल० एल० बी० परीक्षायें पास कीं।

रतनलाल जी ने पहले नगीना और फिर मुरादाबाद में वकालत प्रारम्भ की, किन्तु इस कार्य को उन्होंने धर्म और नैतिकता के विरुद्ध पाया। इधर गांधी जी का असहयोग आन्दोलन प्रारम्भ हो गया था। गांधी जी ने वकीलों को वकालत छोड़कर आन्दोलन में भाग लेने के लिए आमन्त्रित किया। फलत: रतनलाल जी अपनी मुरादाबाद की जमी-जमाई वकालत छोड़कर बिजनौर आ गये और अपने जीवन को राष्ट्र और समाज की सेवा में पूरी तरह से लगा दिया। बाबू जी ने कांग्रेस के असहयोग आन्दोलन के अन्तर्गत चार बार जेल यात्रायें कीं। 1930 में वे गोंडा जेल में एक वर्ष, 1932 में बरेली तथा फैजाबाद कारागृहों में 18 मास तथा बिजनौर के कारागृह में 1941 में 9 माह तथा 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में सवा साल रहे। स्वतन्त्रता सम्बन्धी सभी आन्दोलनों में उनकी भूमिका अग्रगण्य रही। बिजनौर जनपद के सत्याग्रह आन्दोलनों के वे प्राण थे। वे 1937 से 1940 तक उत्तर प्रदेश की

विधान परिषद् के सदस्य तथा 1952 से 1957 तक विधान सभा के सदस्य रहे। बाबूजी जैन समाज की सुप्रसिद्ध सुधारक संस्था भारतवर्षीय दि0 जैन परिषद् के प्रमुख संस्थापकों में एक थे। इस संस्था के पौध को उन्होंने बड़े परिश्रम और लगन से सींचा, जिसके फलस्वरूप यह संस्था पल्लवित और पुष्पित हुई तथा इसके माध्यम से जैन समाज में व्याप्त अन्धविश्वास और रूढ़ियाँ दूर हुईं। बाबूजी बड़े अध्ययन प्रिय थे। कारागृह के एकान्त जीवन का सदुपयोग उन्होंने जैन दर्शन तथा अन्य भारतीय दर्शनों के अध्ययन के कार्य में किया। उनके द्वारा लिखे गये 'आत्मरहस्य' तथा 'जैन धर्म' ग्रन्थ उनके प्रगाढ़ अध्ययन के परिचायक हैं तथा उनकी वैज्ञानिक एवं तुलनात्मक शैली का परिचय देते हैं। बाबूजी का ग्रन्थ 'आत्म रहस्य' तो इतना लोकप्रिय हुआ कि उसके तीन संस्करण पाठकों तक पहुंच चुके हैं। उक्त ग्रन्थों के अतिरिक्त विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित अपने निबन्धों आदि के द्वारा आपने समाज का मार्गदर्शन किया।

'सादा जीवन उच्च विचार' उनका मूल मन्त्र था। संयम और सात्विकता उनके जीवन के आदर्श थे। उनका अधिकांश जीवन राष्ट्र सेवा, समाज सेवा और धर्म सेवा में व्यतीत हुआ। राष्ट्र सेवा के उपलक्ष में भारत सरकार ने उन्हें 15 अगस्त 1972 में ताम्रपत्र भेंट किया। 2500 वाँ भगवान् महावीर निर्वाणोत्सव पर किए जाने वाले कार्यों के उपलक्ष्य में समाज ने उन्हें स्वर्ण पदक से सम्मानित किया, इसके अतिरिक्त अनेक सार्वजनिक और धार्मिक संस्थाओं ने समय-समय पर उनका सम्मान कर अपने को गौरवान्वित अनुभव किया।

बाबूजी सामाजिक कुरीतियों के घोर विरोधी थे। अ0भा0दि0 जैन परिषद् के माध्यम से उन्होंने जैन जातियों में अन्तर्जातीय विवाह करने, मरणभोज बन्द करने, मध्यप्रदेश में गजरथों की बाहुल्यता को अनुपयोगी ठहराने, विधवा विवाह का समर्थन करने आदि के महत्त्वपूर्ण कार्य किये थे। दस्साओं के पूजा अधिकार प्रसंग में भी उन्होंने महती भूमिका निभाई थी।

नमक आन्दोलन में आपकी भूमिका के सन्दर्भ में जैन सन्देश, राष्ट्रीय अंक (23 जनवरी 1947) लिखता है-'बाबू रतन लाल जी के घर पर नमक बनाया गया था। बिजनौर जिले के सभी कार्यकर्ता उपस्थित थे। नमक बनाने को बाबू राजेन्द्र कुमार जी लकड़ी ला रहे थे कि एक पुलिस के कांस्टेबल ने कहा कि "यदि तुमने इस काम में भाग लिया तो तुम्हें भी हथकड़ी डाल दी जायगी।" किन्तु उसी समय नमक तैयार किया गया और बाबू राजेन्द्रकुमार की माता जी ने 1200/- रुपये की बोली लगाकर उसे खरीद लिया और उसी समय बा0 रतनलाल जी अपने साथियों के साथ गिरफ्तार हो गये। लगभग तीन वर्ष की सजा पाकर वह शेर का सा बच्चा प्रफुल्लित घर पर आ गया।'

इसी प्रकार जैनमित्र (वैशाख सुदी 15, 1970 ई0) लिखता है-'उस जमाने में वकालत करना पैसा कमाने का एक बड़ा माध्यम माना जाता था। बाबूजी ने वकालत करना शुरू भी किया लेकिन यह देखकर कि वकालत का व्यवसाय झूठ का प्रयोग किये बगैर नहीं चलता है, कुछ ही समय बाद वकालत छोड़ दी। नैतिक जीवन का यह बहुत बड़ा उदाहरण है।

कोई व्यक्ति विद्वान् हो, धनिक हो और उदार भी हो यह बहुत ही कम देखने में आता है। बाबूजी में इन सभी चीजों का समावेश पाया जाने के कारण निश्चय ही सोने में सुगन्ध की बात चरितार्थ हो जाती है।'

बाबू रतनलाल जी की पुत्री डॉ0 (श्रीमती) सुधा जैन ने अपने एक संस्मरण में लिखा है-'बाबू जी कहा करते थे कि जेल मेरा घर है और घर मेरी ससुराल है।' इसी प्रकार उनकी दूसरी पुत्री डॉ0 (श्रीमती) ऊषा जैन ने लिखा है-'उनका जीवन अत्यधिक सरल था। खान-पान में सादगी, रहन-सहन में

सादगी, 'सादा जीवन उच्च विचार' उनके जीवन का मूल मंत्र था। अपरिग्रह के सिद्धान्त को उन्होंने जीवन में उतार लिया था। वे बहुत ही सीमित वस्त्र रखते थे। 5-6 कुर्ते और इतने ही धोती व पाजामे।' बाबूजी के दत्तक पुत्र श्री प्रदीप कुमार जैन ने अपने संस्मरणों में एक महत्त्वपूर्ण तथ्य उजागर किया है। वे लिखते हैं-'बाबूजी अकसर कहा करते थे कि मैं समाधिमरण लूंगा और उन्होंने यह चरितार्थ भी कर दिखाया। 4 मई 1976 को उन्होंने अन्तिम बार अन्न ग्रहण किया, उसके बाद केवल दूध और मौसमी का रस लेते रहे। 18 मई को दूध लेना भी बन्द कर दिया और 24 मई के प्रातः से पानी की बूंद तक नहीं ली। अपना मुंह कसकर बन्द कर लेते थे। शाम 6 बजकर 20 मिनट पर अपने नश्वर शरीर का त्याग कर दिया।'

बाबूजी के संस्मरण उनकी प्रथम पुण्यतिथि पर प्रकाशित 'पुण्य स्मरण' में प्रकाशित हुए हैं। गोंडा जेल का एक रोचक संस्मरण हम यहाँ दे रहे हैं-

'1930 में गोंडा जेल में कितने ही साथी थे। उनमें एक बिजनौर जिले के ही 'मदीना' अखबार के सम्पादक नसरुल्ला खां और मेरठ जिले के लक्ष्मीनारायण जी थे। इन दोनों में आपस में बहस हो गई कि अगर लक्ष्मीनारायण अपनी चोटी कटवा लें तो नसरुल्ला खां अपनी दाढ़ी मुंडवा लेंगे। लक्ष्मीनारायण ने अपनी चोटी कटा दी और नसरुल्ला खां से कहा कि अब मुंडवाओ दाढ़ी। वे हिचकिचाने लगे। तब मामला मौलाना आजाद के पास पहुँचा, उन्होंने कहा "जब तुमने वचन दिया है तो पूरा करना होगा।" और नसरुल्ला खां को दाढ़ी मुंडानी पड़ी। उसके बाद उन्हें पहचानना भी कठिन होने लगा।'

आ0- (1) पुण्य स्मरण (स्मारिका) (2) जै0 स0 रा0 अ0 (3) जैन सन्देश, 1 जुलाई 1976 (4) जैन मित्र, वैशाख सुदी 15 वीर नि0 संवत् 2596 (1970 ई0) (5) वि0 अ0, पृ0-462 (6) दिवंगत हिन्दी सेवी, प्रथम खण्ड, पृष्ठ-410 (7) रा0 कु0 डा0, पृष्ठ-52

श्री रतनलाल बंसल

अपनी लेखनी से राष्ट्रीय साहित्य की अभिवृद्धि करने वाले तथा 'दिल्ली चलो' जैसी महनीय कृति के लेखक, फिरोजाबाद (उ0प्र0) के श्री रतनलाल बंसल बचपन से ही राजनैतिक गतिविधियों में भाग लेते रहे और 1942 में डी0आई0आर0 में तीन माह तक सेन्ट्रल जेल, आगरा में नजरबंद रहे। स्व0 दादाजी बनारसी दास जी चतुर्वेदी के बाद फिरोजाबाद नगर के साहित्यकारों में आपका महत्त्वपूर्ण स्थान था। आपके द्वारा लिखित खोजपूर्ण ग्रन्थ 'चन्द्रवार का इतिहास' भी प्रकाशित हुआ है।

आ0- (1) जै0 स0 रा0 अ0 (2) उ0 प्र0 जै0 ध0 पृष्ठ-91 (3) अमृत, पृष्ठ-25 (4) जै0 से0 ना0 अ0, पृष्ठ 3-4

श्री रतनलाल मालवीय

भारतीय संविधान निर्मातृ सभा के सदस्य तथा केन्द्रीय उपश्रममंत्री रहे श्री रतनलाल मालवीय का



जन्म 6 नवम्बर 1907 को मध्यप्रदेश के हृदय स्थल सागर में एक मध्यमवर्गीय जैन परिवार में श्री किशोरीलाल मलैया के घर हुआ। आपका वंश 'मलैया' के नाम से विख्यात है। परन्तु रतनलाल जी मलैया से 'मालवीय' कैसे बन गये इस सन्दर्भ में स्वयं रतनलाल जी ने लिखा है "सन् 1927 में जब मैं इलाहाबाद विश्वविद्यालय में बी0 ए0 का विद्यार्थी था तब मेरे अर्थशास्त्र के प्रोफेसर ताराचन्द अग्रवाल ने यह प्रश्न पूछा 'मैं मलैया क्यों कहलाता हूँ'............ मैंने माँ से पूछकर बताया कि 'कुरवाई को मालव कहने पर और हमारे कुरवाई निवासी होने से हम मलैया कहलाये।' हमारे प्रोफेसर ने कहा-'तब तो हमें मालवीय कहलाना चाहिए था।' उन्होंने हाजिरी का रजिस्टर उठाकर मलैया की जगह मालवीय लिख दिया। तभी से मैं मालवीय हो गया।"

"सन् 1948 में कान्सटीट्यूशनल असेम्बली और पार्लियामेन्ट का सदस्य बन जाने के बाद 'मलैया' शब्द प्रयोग करने का प्रयत्न मैंने किया पर सम्पूर्ण रिकार्ड, जिसमें यूनिवर्सिटी की डिग्रियाँ भी शामिल हैं, में मालवीय था इसलिए गवर्नमेन्ट के सेक्रेटेरिएट ने मालवीय ही कायम रखा। इससे कुछ विषमता होने पर भी मलैया शब्द का उपयोग नहीं कर सका। मुझे जगह-जगह मालवीय शब्द के उपयोग का स्पष्टीकरण करना पड़ता।"

मालवीय जी का परिवार कट्टर जैन है। इस सन्दर्भ में श्री मालवीय जी ने लिखा है-"माँ कट्टर जैन धर्मावलम्बी थीं, गीता अध्ययन से उनका माथा ठनकता, गीता क्यों? अपने धर्म का अध्ययन क्यों नहीं? और इसी स्पर्धा में माँ ने सांध्यशाला जैन बच्चों के लिए शुरू कर ली-अपने ही घर में। अब हमें गीता के साथ भक्तामर स्तोत्र भी कण्ठस्थ कराया जाने लगा। जब तक भक्तामर का एक श्लोक सुना न देते सुबह का दूध न मिलता...... मुझे भक्तामर कण्ठस्थ है। उसके 48 श्लोक बोलते समय किस श्लोक पर कितने आंसू टपके थे आज भी याद आ जाता है।"

असहयोग आन्दोलन के दौरान आप कक्षा 8 में पढ़ते थे, प्रधानाध्यापक के लाख समझाने पर भी आपने स्कूल का बहिष्कार कर दिया, बाद में प्रधानाध्यापक श्री खूबचन्द सोधिया महोदय ने भी स्कूल से त्यागपत्र दे दिया। अपनी देशभक्ति के कारण सोधिया जी बाद में भारतीय संसद के लिए चुने गये थे। मालवीय जी वानर सेना में भी रहे, वे राष्ट्रीय शाला के विद्यार्थी रहे। 1925 में आप काशी हिन्दू विश्वविद्यालय और 1926 में इलाहाबाद विश्वविद्यालय में प्रविष्ट हुए, वहीं से कानून की पढ़ाई की और स्वतन्त्रता आन्दोलन में भी सक्रिय रहे। आपने चांद के सम्पादकीय विभाग में 40/-रुपये मासिक पर नौकरी की। 'सरस्वती' में भी आपके कई लेख छपे हैं।

अध्ययन के बाद आप सागर में वकालत करने लगे और हरिजन सेवक संघ के मन्त्री बन गये। 1934 में महात्मा गांधी जब सागर पधारे और उनका भाषण वर्णी जी द्वारा स्थापित श्री दि० जैन संस्कृत विद्यालय मोराजी, सागर में हुआ तब उसकी व्यवस्था हरिजन सेवक संघ के नाते आपने ही की थी। गाँधी जी की अपील पर महिलाओं ने अपने गहने उतार कर दे दिये थे। अपने मजदूर नेता होने के सम्बन्ध में आपने लिखा है कि-'कुछ सालों बाद मेरा सम्बन्ध स्टेट प्यूपिल कांग्रेस की उड़ीसा और छत्तीसगढ़ रीजनल काउन्सिल से हो गया। सन् 1947 के बाद तो कांग्रेस के साथ मजदूर आन्दोलन में डूब सा गया।' 1948 में आप संविधान सभा के लिए चुने गये। आप मध्यप्रान्तों के राज्यों की ओर से चुने गये थे। सभा में आपने मजदूरों के हितों पर जोरदार बहस की थी। मालवीय जी के अनुसार-'सन् 1948 में संविधान सभा का सदस्य बनते ही मैंने कोयला खानों के बारे में पार्लियामेन्ट में प्रश्न करना प्रारम्भ कर दिये थे। देश के संविधान पर दस्तखत होना मेरे जीवन का सबसे बड़ा सौभाग्य है।' बाद में आप 'कोलयारी इक्यवायरी कमेटी' के भी सदस्य रहे। 'नेशनल कोल डवलपमेन्ट कॉरपोरेशन' की स्थापना का सुझाव आपका ही था। मजदूरों के नेता के रूप में विख्यात मालवीय जी 1954 और 1960 में राज्यसभा के लिए चुने गये। 1962 में नेहरू जी के मंत्रिमण्डल में पार्लियामेन्टरी सचिव नियुक्त हुए और डिप्टी मिनिस्टर भी। शास्त्री मंत्रिमण्डल में भी आप डिप्टी मिनिस्टर रहे। 1966 में लेबर कमीशन के सदस्य और लेबर आर्गनाइजेशन (आई०एल०ओ०) से भी आप जुड़े रहे और जर्मनी, हालैण्ड, इंगलैंड, रूस आदि देशों की यात्रा आपने की थी। मनीला में सम्पन्न आई० एल० ओ० के एशियन राउण्ड टेबुल काफ्रेंस (2 सितम्बर से 18 सितम्बर 1969) के चेयरमैन बनने का सौभाग्य भी आपको प्राप्त हुआ था।

मालवीय जी की संविधान के प्रति अटूट आस्था थी। वे स्वयं सदैव संविधान के दायरे में देश सेवा में संलग्न रहे। उनकी सुपुत्री श्रीमती सुधा पटोरिया ने उनकी स्मृतियाँ संजोते हुए लिखा है-'वह संविधान की सुनहरी जिल्दवाली वृहदाकार प्रति को शास्त्रों की तरह कपड़े में लपेटकर अपनी गोदरेज की अलमारी में इतने प्यार और श्रद्धा से रखते थे जैसे कोई अपने जन्म भर की जमा पूंजी सहेज रहा हो। दीपावली की लक्ष्मी पूजा के समय भी वह संविधान की पुस्तक को वहाँ आदरपूर्वक रखते, उसकी पूजा करते, वही उनकी लक्ष्मी थी वही सरस्वती। दीपावली की डायरी में उनका यह महत्त्वपूर्ण अभिलेख मिला, जिसे पढ़कर मैं अभिभूत हो गई- "लक्ष्मी पूजन के नाम पर मैं सदैव ही भारत के विधान की पूजा करता रहा हूँ। मेरे लिए यह गौरव की बात है कि मैं संविधान सभा का सदस्य रहा हूँ तथा उस पर मेरे दस्तखत हैं। विधान निर्माता के रूप में उस पर श्रद्धा रखना तथा उसके अनुसार काम करना मेरा प्रथम कर्तव्य है......संविधान में पूरे देश का हित निहित है।"

निरन्तर चिन्तनशील और अध्ययनशील मालवीय जी सदैव अध्ययन और लेखन में संलग्न रहा करते थे। उनकी डायरी के कुछ अंश प्रेरणास्पद होने से हम यहाँ प्रस्तुत कर रहे हैं।

मेरा जीवन एक क्षणिक मोमबत्ती की तरह नहीं होगा। वह उस मशाल की तरह होगा, जिसे मैं भावी पीढ़ियों के हाथ में थमा कर जा सकूँ और वह मशाल उनके पथ को आलोकित कर सके।

★ ★ ★ ★

पढ़ना लिखना तथा चिन्तन करना मुझे सदैव से पसंद है। कितना ही शरीर थका हो कुछ देर अवकाश निकाल कर यदि मैं पढ़ने बैठ जाता हूँ तो सारी थकान उतर जाती है। शरीर में पुन: ऊर्जा प्रवाहित होने लगती है, ऐसा महसूस करता हूँ।

★ ★ ★ ★

राजनीति और क्षेत्र के कामों में अक्सर इतना डूब जाता हूँ कि पढ़ नहीं पाता और मन इस कारण उद्विग्न हो उठता है, बेचैनी होने लगती है। तब रात के समय पढ़ना अनिवार्य हो जाता है इस समय मैं कुछ सैद्धांतिक या महान् लेखकों की पुस्तकें पढ़ना पसंद करता हूँ जो राजनीति से बिल्कुल दूर हो।

★ ★ ★ ★

सफर करते हुए भी मैं काफी पढ़ने और लिखने का कार्य कर लेता हूँ। काँग्रेस व क्षेत्र के कार्य से संबंधित पत्र, घर पर राजी खुशी का पत्र अक्सर रेल के डिब्बे में ही लिखता हूँ। अत: स्थान की जगह लिखना पड़ता है 'दौड़ती हुई रेलगाड़ी अमुक से अमुक स्टेशन के बीच', कभी-कभी अधिक हिलने के कारण हस्ताक्षर बिगड़ जाते हैं। कुछ दिनों से मुझे रेल में लिखने में तकलीफ होने लगी है आंखों से भी कम दिखने लगा है। शायद यह बढ़ती हुई उम्र का कारण है।

★ ★ ★ ★

यदि मनुष्य सदा प्रयत्नशील रहा तो हिमालय को उसके सामने झुकना ही पड़ेगा। क्यों कि उसके दुबले-पतले शरीर में मस्तिष्क जैसी चीज है, जो किसी बंधन को नहीं मानती। उसमें ऐसी भावना है जो पराजय को कभी स्वीकार नहीं करती। पर आज के युग में साहसिकता धीरे-धीरे विदा होती जा रही है। अभी भी यह विशाल संसार उन्हीं का साथ देता है, जिनमें भावुकता और साहसिकता होती है। तारे समुद्र के पार उन्हीं का आवाहन करते हैं। वैसे साहस दिखाने के लिए ध्रुवों पर या रेगिस्तान में जाने की जरूरत नहीं होती। जीवन के छोटे-छोटे मोड़ों पर ही साहस की असली परीक्षा होती है। किसी लेखक ने कहा है 'बिना निराश हुए पराजय को सह लेना पृथ्वी पर साहस की सबसे बड़ी विजय है'। अत: जीवन में स्थितियों का सामना धैर्य, हिम्मत व साहस से

करना चाहिए। इस सिद्धांत ने जीवन भर मुझे सहायता और आत्मविश्वास दिया है।

★ ★ ★ ★

खेद होता यह देख कर कि स्वतंत्र भारत में मानव भावना की स्वतंत्र वृद्धि और आनंद एवं बहुलता के होते हुए भी जिस समाज की परिकल्पना हमने की थी वह नहीं बन सका। स्वार्थ, भ्रष्टाचार आदि ने घुसपैठियें की तरह समाज की जड़ों तक अपने पंजे फैला दिये हैं।

★ ★ ★ ★

मुझे इन्सान की निजी आजादी और उसके हकों को जकड़ने पर भी एतराज है। अपनी इसी मान्यता के आधार पर मैं पूरी उम्र मजदूरों को उनके हक दिलाने के लिए लड़ता रहा। इन्सान के मानव-अधिकार पर आक्षेप करना मैं गलत समझता हूँ, परन्तु देश में कायदे, कानून मानना और देशवासियों में एकता और एक दूसरे के दु:खदर्द में सहायता देना भी जरूरी है।

★ ★ ★ ★

हमारे देश में जितने प्रदेश हैं उतनी प्रादेशिक भाषाएँ भी हैं परंतु एक राष्ट्रभाषा तो होनी ही चाहिए। यह क्या तरीका है कि हम चार-छह भारतवासी कोई बंगाल का, कोई मद्रास का, कोई महाराष्ट्र का जब साथ बैठते हैं, तो आपस में अंग्रेजी में बात करते हैं। और देशों में जैसे फ्रांस, इटली, जापान या अरब देशों में सब अपनी मातृभाषा में बातचीत करते हैं।

★ ★ ★ ★

एक राष्ट्रभाषा सारे देश को, जो आज टुकड़ियों में है-हमारे महान् देश को एक विशाल नक्शे में जोड़ देगी। बाबा आमटे का नारा सही है 'भारत जोड़ो'। एकता में सामूहिक शक्ति है। बिखरी चीज हमेशा कमजोर रहती है। जैसे बिजली के छोटे-छोटे कई बल्ब उतनी रोशनी और प्रकाश नहीं दे पाते जितना 100 कैन्डिल पावर का बल्ब देता है। हम सभी संसार के देशों को एक दूसरे से अच्छी चीजें सीखनी होंगी। अगर साम्यवादी देशों में कुछ अच्छे कानून हैं यथा शहर को साफ सुथरा रखने, अस्पतालों में अमीर-गरीब की एक सी देखभाल या मंहगाई पर रोकथाम तो हमें वह तरीके भी अपनाने चाहिए। किसी भी उपाय से हमें अपने देश में आजादी के नाम पर जो अनुशासनहीनता हो रही है उसे रोकना होगा।

X X X

जब एक नदी शान्ति से बहती है तो कैसा सुहावना समा होता है। वही नदी जब सैलाब (बाढ़) लाती है तो कितनी तबाही कर देती है। गांव के गांव उजड़ जाते हैं। खेती बरबाद हो जाती है और इन्सान भूख के मारे भीख मांगने पर विवश हो जाता है। हमारे देश में एकता और अखंडता का नारा आज बहुत आवश्यक है। आपस में भाईचारा, जहाँ प्रदेश का भेद न हो, रंगरूप का भेद न हो, जहाँ भाषा का भेद न हो, जहाँ धार्मिक भावना एक दूसरे के बीच एक दीवार न बन जाए। हमें ऐसा भारत बनाना है। जहाँ हम सब देशवासी घुल मिल कर रहें, एक दूसरे की बात समझें, एक दूसरे के दु:खदर्द में साथ दें यही तो हमारी परंपरा रही है। कितने ही दूर-दूर देशों के लोग आए, भारत पर हमले हुए, खून भी बहे परंतु ज्यादातर लोग यहीं के हो गए। हमारा प्राचीन और मध्यकालीन इतिहास इसकी झाँकी प्रस्तुत करता है।

★ ★ ★ ★

अपने लिए तो सभी जीते हैं पर दूसरों का दु:ख कैसे मिटे ऐसा उपाय हमेशा अपने जीवन में खोजना चाहिए। हर मनुष्य का यह कर्तव्य है कि अपनी शक्ति के अनुसार जरूरतमंद या दीन-दु:खी प्राणियों के कष्ट निवारण में सहयोग दे। नहीं तो मनुष्यजन्म पाना ही निरर्थक है। फिर मनुष्य और पशु में क्या फर्क? अपना जीवन तो पशु भी जी लेते हैं।

★ ★ ★ ★

भले बनने की आकांक्षा तो सभी में होती है। पर बिना दूसरों की भलाई किये मनुष्य भला कैसे बन सकता है। अत: हर मनुष्य का कर्तव्य है कि जहाँ तक बने असहायों की सहायता तथा परोपकार करते रहना चाहिए। जो समर्थ नहीं हैं, उन्हें अपनी शक्ति और सहयोग देना चाहिए। जब हम दूसरों की भलाई करेंगे तभी हमें यश प्राप्त होगा।

8 दिसम्बर 1984 को जबलपुर में आपका देहावसान हो गया। रतनलाल जी की स्मृति को चिरस्थायी बनाने के लिए चिरमिरी (म0 प्र0) में 'मालवीय नगर' की स्थापना की गई है, जिसमें श्रमिकों व नागरिकों के लिए सुव्यवस्थित गृहों का निर्माण किया गया है। मालवीय जी पर दो पुस्तकें भी प्रकाशित हो चुकी हैं। प्रथम 'काले हीरे का खम्भा' जो न्यायमूर्ति श्री गुलाब गुप्ता ने लिखी है तथा जिसका सम्पादन मालवीय जी की पुत्री श्रीमती सुधा पटोरिया ने किया है। द्वितीय 'श्री रतनलाल मालवीय स्मृति ग्रन्थ' जिसका सम्पादन श्रीमती सुधा पटोरिया तथा श्री राजेन्द्र पटोरिया ने किया है।

आ0- (1) श्री रतनलाल मालवीय स्मृति ग्रन्थ (2) भारत का संविधानिक विकास और स्वाधीनता संघर्ष

श्री रमेशचंद जैन

वारासिवनी, जिला-बालाघाट (म0प्र0) के श्री रमेशचंद जैन, पुत्र-श्री पन्नालाल जैन का जन्म 1926 में हुआ। विद्यार्थी जीवन में आपने शासकीय स्कूल का बहिष्कार किया एवं 1942 में 20 अगस्त को धारा 144 का उल्लंघन कर विशाल जुलूस निकाला, फलत: पुलिस की गोली से आपका दाहिना पैर जख्मी हो गया। फिर भी पुलिस आपको पकड़ नहीं सकी। आजादी के बाद शासन ने सम्मान पत्र देकर आपका सम्मान किया।

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-1, पृष्ठ-189

श्री रमेशचंद जैन घोड़ावत

थांदला, जिला-झाबुआ (म0प्र0) निवासी श्री रमेशचंद जैन घोड़ावत, पुत्र-श्री रखबचंद जैन का जन्म 1922 में हुआ। 1942 के आन्दोलन में आप सक्रिय रहे। फलत: गिरफ्तार किये गये और देश निकाले की सजा आपको दी गई।

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-4, पृष्ठ-146

श्री रवीन्द्रनाथ जैन

अध्यापन, पत्रकारिता और गैस वितरक जैसे व्यवसायों से जुड़े, मूलत: महाराष्ट्र निवासी और



भोपाल (म0प्र0), प्रवासी श्री रवीन्द्रनाथ जैन, पुत्र-श्री रतन साह जैन का जन्म देऊलगांव राजा, जिला-बुलढ़ाना (महाराष्ट्र) में 15-4-1917 को हुआ। बाद में आप कारंजा आकर रहने लगे। आपने कारंजा, वाराणसी व पूना में शिक्षा पाई। कुछ समय आपने सोलापुर गुरुकुल में अध्यापन कार्य किया। आप 1945 से 1452 तक 'लोकशक्ति' (दैनिक) पुणे के उपसम्पादक, 'मातृभूमि' (अकोला) तथा 'राष्ट्रसेवा' (नाशिक) के सम्पादक रहे।

आपने सागारधर्मामृत का मराठी भाषा में अनुवाद किया है। कुछ समय शोध कार्यों एवं जिला गजेटियर के सम्पादन का काम भी आपने किया। स्वतंत्रता सेनानी होने के कारण सेवानिवृत्ति के पश्चात् आपको गैस वितरक का कार्य मिला है।

1942 के आन्दोलन के समय आप सोलापुर में एम0ए0 द्वितीय वर्ष के छात्र थे। वहीं आपने आन्दोलन में हिस्सा लिया। फलत: गिरफ्तार हुए और 6 माह का सश्रम कारावास आपने भोगा। अपनी जेलयात्रा की यादें ताजा करते हुए आपने लिखा है कि -"बन्दी बनते ही जेल में पुलिस अधीक्षक ने मुझसे

फरार नेताओं के पते पूछे, न बताने पर उन्होंने मेरी खूब पिटाई की। विजापुर (कर्णाटक) जेल के जेलर द्वारा स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के सम्बन्ध में अभद्र शब्द का प्रयोग करने के कारण मैं 'भूख हड़ताल' पर बैठ गया। हड़ताल तोड़ने हेतु काफी प्रलोभन दिये गये, मैं न उठा, अपितु अन्य बन्दी भी मेरे समर्थन में हड़ताल पर बैठ गये। अन्त में जेलर द्वारा बिना शर्त अपने शब्द वापिस लेने और खेद प्रदर्शन के बाद भूख हड़ताल समाप्त हुई। फलस्वरूप मेरा स्थानांतरण शीघ्र ही विसापुर (अहमदनगर) जेल में कर दिया गया।''

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-5, पृष्ठ-23 (2) स्व0 प0 (3) अनेक प्रमाण पत्र

श्री राजकुमार जैन

फिरोजाबाद (उ0प्र0) के श्री राजकुमार जैन पर 1942 के आन्दोलन में अग्रज श्री धनवन्त सिंह के साथ ही पुलिस ने यह अभियोग लगाया कि इन्होंने डाक बंगला जलाया है। परन्तु वह उसको साबित करने में असमर्थ रही। फिर भी आपको अक्टूबर 1943 तक नजरबन्द रहना पड़ा। आप सेन्ट्रल जेल आगरा में रहे।

आ0- (1) उ0 प्र0 जै0 ध0, पृष्ठ-91 (2) जै0 स0 रा0 अ0, पृष्ठ-4 (3) अमृत, पृष्ठ-28 (4) जै0 स0 रा0 अ0

श्री राजधर जैन

ग्राम लौंड़ी भड़ोकर (तत्कालीन-विन्ध्य प्रदेश) के श्री राजधर जैन, पुत्र-श्री दौलत जैन 1937 से ही कांग्रेस के कार्यकर्ता हो गये थे। 1939 के थौना लुहारी झण्डा आन्दोलन के समय अपने गाँव में झण्डा फहराने के कारण 22-2-1939 को आप गिरफ्तार कर लिये गये। ओरछा अदालत ने 3-3-1939 को तीन माह की सजा व 50/-रुपये का अर्थदण्ड दिया फिर भी आप 2-9-1939 को जेल से रिहा हो सके। आपके भाई श्री छक्कीलाल जैन भी आपके साथ जेल में रहे।

आ0-(1) वि0 स्व0 स0 इ0, पृष्ठ-187

श्री राजधर जैन

शाहपुर, जिला-सागर (म0प्र0) निवासी श्री राजधर जैन, पुत्र-श्री प्यारे लाल 1921 से ही स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय हो गये थे। 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में आपने 6 माह का कारावास भोगा। आप शाहपुर ग्राम के मंडलेश्वर भी रहे थे।

आ0-(1) जै0 स0 रा0 अ0 (2) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-2, पृष्ठ-57

भाई राजधरलाल जैन

जाखलोन, जिला-ललितपुर (उ0प्र0) के अमर सेनानी श्री राजधरलाल ने 1932 में कांग्रेस की नींव जाखलोन में डाली और अनेक वर्षों तक उसके मंत्री पद को सुशोभित करते रहे। 1942 के आन्दोलन में आप बाबू शिवप्रसाद (इनका परिचय इसी ग्रन्थ में अन्यत्र देखें) के साथ जेल गये तथा 11 माह झाँसी जेल में रहे।

आ0- (1) जै0 स0 रा0 अ0

डॉ० राजमल कासलीवाल

'नेताजी' सुभाषचंद बोस के निजी चिकित्सक रहे तथा Whos who in the world में उल्लिखित



एवं देश में चिकित्सा के उत्कृष्ट पुरस्कार 'बी0 सी0 राय अवार्ड' से सम्मानित डॉ0 राजमल कासलीवाल, पुत्र-श्री मुंशी प्यारेलाल कासलीवाल का जन्म 20 नवम्बर 1906 को जयपुर (राजस्थान) में हुआ। 1929 में लखनऊ विश्वविद्यालय से एम0बी0बी0एस0 पास करने के बाद आप उच्चशिक्षार्थ इंग्लैंड चले गये जहाँ से 1931 में डी0टी0एम0 एण्ड एच0 तथा 1932 में लंदन से एम0आर0सी0सी0 की उपाधियाँ प्राप्त कीं। 1935

में 'इन्डियन मेडीकल सर्विसेज' के अन्तर्गत आप भारतीय सेना में सम्मिलित हुए, जहाँ लेफ्टिनेंट कर्नल तक के विभिन्न पदों पर कार्य किया।

द्वितीय विश्वयुद्ध में आपको मलाया भेजा गया, जहाँ नेताजी सुभाषचन्द्र बोस से आपकी भेंट हुई। नेताजी की देशभक्ति से आप में देशभक्ति की भावना हिलोरें लेने लगी। इधर नेताजी भी आपकी सेवाओं से इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने अपनी 'आजाद हिन्द फौज' में सम्मिलित होने का आग्रह किया। कासलीवाल जी तत्काल 'आजाद हिन्द फौज' में सम्मिलित हो गये, जहाँ 1945 तक आप निदेशक 'चिकित्सा एवं स्वास्थ्य सेवा' के पद पर रहे। आप नेताजी के निजी चिकित्सक भी थे।

कासलीवाल जी के सन्दर्भ में 'जैन संदेश' राष्ट्रीय अंक (जनवरी 1947) लिखता है-'आप डाक्टरी की सर्वोच्च डिग्री पास करने के बाद सरकार द्वारा फौज को डाक्टरी सहायता देने के लिए विशेष पद पर भेजे गये थे। किन्तु स्वतंत्रता का दीवाना कब तक इस प्रकार गुलाम फौजों की चिकित्सा करता रह सकता था। आजाद हिन्द फौज के निर्माण होते ही आप सरकारी नौकरी छोड़कर उसमें जा मिले और नेता जी सुभाषचन्द बोस के साथ उनके एक विश्वस्त सहयोगी के रूप में भारत की मुक्ति के लिए अनवरत प्रयत्न करते रहे। आप आजाद हिन्द फौज सरकार के मंत्रिमंडल के एक सदस्य, डायरेक्टर आफ मेडीकल्स तथा नेताजी के पर्सनल डाक्टर की हैसियत से सम्मानपूर्ण और दायित्वपूर्ण पदों पर रहे।'

आजादी के बाद आप आगरा मेडीकल कालेज के प्राचार्य, जयपुर मेडीकल कालेज के संस्थापक प्राचार्य, अन्तर्राष्ट्रीय चिकित्सा विज्ञान अकादमी के अध्यक्ष, अ0 भा0 कांग्रेस कमेटी के सदस्य आदि अनेक पदों पर रहे। चिकित्सा शास्त्र से सम्बन्धित अनेक पुस्तकें तथा अनेक लेख देश-विदेश की पत्रिकाओं में आपके प्रकाशित हुए हैं। अनेक देशों की यात्रा भी आपने की थी। प्रसिद्ध तीर्थ श्री महावीर जी के आप वर्षों तक अध्यक्ष/मंत्री रहे।

आ0- (1) जै0 स0 रा0 अ0 (2) जैन गजट, 6 मार्च 1967 (3) डॉ0 राजमल कासलीवाल पर प्रकाशित लघु पुस्तिका, सौजन्य-श्री ज्ञानचंद जी सा0 खिन्दूका, जयपुर।

श्री राजमल कोठरी

महिदपुर, जिला-उज्जैन (म0प्र0) के श्री राजमल कोठारी, पुत्र-श्री चांदमल कोठारी ने महिदपुर जेल में 30-3-1941 से 20-4-1941 तक का कारावास भोगा। 1942 में भी 50/- रुपये का अर्थदण्ड आपने भोगा था

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-4, पृष्ठ-17।

श्री राजमल कोठारी

इंदौर (म0प्र0) के श्री राजमल कोठारी, पुत्र-श्री भेरूलाल कोठारी 1932 में 'विदेशी वस्त्रों का बहिष्कार' आंदोलन में सक्रिय रहे। 6 माह का कारावास तथा 50 रु0 का अर्थदण्ड भोगकर आपने आंदोलन में सक्रियता का परिचय दिया।

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-4, पृष्ठ-39

श्री राजमल जालोरी

मध्यभारत के पूर्व मुख्यमंत्री श्री तख्तमल जैन के सुपुत्र श्री राजमल जालोरी का जन्म 15-9-1914



को हुआ। व्यवसाय से वकील श्री जालोरी के पूर्वज मूलत: राजस्थान के जोधपुर जिलान्तर्गत अरटिया (सेठों की रियां) के निवासी थे। वहां से ओसवालों का यह कुटुम्ब व्यवसाय के लिए उपयुक्त नई जगह तलाश करता हुआ तत्कालीन ग्वालियर रियासत के भेलसा (वर्तमान विदिशा)

जिले के गंजवासौदा कस्बे में आकर बस गया था। इस परिवार के प्रथम व्यक्ति थे सेठ संतोषचंद उनके पुत्र ताराचंद → पूनमचंद → लूणकरण → तख्तमल → राजमल हुए।

जालोरी जी ने बी0ए0, एल0एल0बी0 कर वकालत का व्यवसाय अपनाया। स्वतंत्रता संग्राम में आपने सक्रिय भागीदारी निभाई। फलतः डिफेन्स इण्डिया एक्ट के तहत 10 माह तक नजरबन्द रहे। आप विदिशा नगर पालिका के अध्यक्ष (4 वर्ष), मध्य प्रदेश योजना मण्डल के सदस्य (1963 व 1965), सम्राट् अशोक इंजीनियरिंग कालेज के उपाध्यक्ष (3 वर्ष), स0अ0 पोलीटेक्निक कालेज के उपाध्यक्ष (3 वर्ष), म0प्र0 स्व0 सं0 सैनिक संघ के कार्यकारिणी सदस्य, विदिशा जिला स्व0सं0 सै0संघ के अध्यक्ष, जिला कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष आदि पदों पर रहे हैं। शासन की ओर से अनेक बार आपका सम्मान हुआ है।

आ0-(1) स्व0 श्री तख्तमल जैन स्मृति ग्रन्थ (2) स्व0 प0

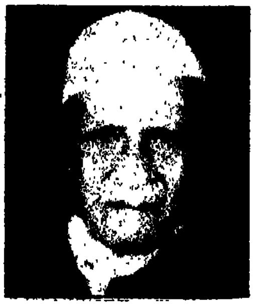
श्री राजमल जैन

उज्जैन (म0प्र0) के श्री राजमल जैन, पुत्र श्री मोतीलाल जैन 1932 से राष्ट्रीय आन्दोलन में सक्रिय हो गये थे। 1933 में बदनावर पोस्ट आफिस में तोड़-फोड़ करने पर आप गिरफ्तार हुए तथा डेढ़ माह का कारावास भोगा। 1941 के आन्दोलन में भी उज्जैन कोठी पर आप गिरफ्तार हुए व जेल की यातनायें सहीं।

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-4, पृष्ठ-171

श्री राजमल जैन

भोपाल (म0प्र0) के श्री राजमल जैन, पुत्र-श्री हजारी लाल जैन का जन्म 26 नवम्बर 1919 में हुआ। जैन समाज में स्पष्ट विचारधारा और समाज सुधारों के लिए प्रसिद्ध श्री जैन जीवनपर्यन्त गांधीवादी



रहे। श्री जैन ने 1949 के भोपाल राज्य विलीनीकरण आंदोलन में भाग लिया तथा 21 दिन कारावास में बिताये। 9 दिसम्बर 1992 को आपका देहावसान हो गया।

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-5, पृष्ठ-24

श्री राजाराम उर्फ राजेन्द्रकुमार जैन

श्री राजाराम, पुत्र-श्री बिहारीलाल जैन का जन्म 1906 में ग्राम पथरिया, जिला-दमोह (म0प्र0) में हुआ। आपने प्राथमिक तक ही शिक्षा ग्रहण की। आप अपने छोटे भाई श्री बाबूराम जैन के साथ दमोह में रहकर झोली में 'चना जोर गरम' की आवाज लगाकर चना बेचते थे। 1942 के आन्दोलन में अपना देशप्रेम न रोक सके तथा नारे लगाते हुए पकड़े गये और दो वर्ष 4 माह का कारावास पाया। 1939 के आन्दोलन में भी आपने भाग लिया था। 1973 में आपका निधन हो गया।

आ0 (1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-2, पृष्ठ-89 (2) श्री संतोष सिंघई, दमोह द्वारा प्रेषित परिचय

श्री राजाराम बजाज

दमोह के प्रसिद्ध बजाज परिवार में श्री राजाराम बजाज का जन्म 1900 में श्री लोकमन बजाज के चौथे पुत्र के रूप में हुआ। युवावस्था से ही समाज और देश-प्रेम की भावना जागृत करने का श्रेय पड़ोसी श्री गोकुलचंद जी वकील को है। आपने प्रभात फेरियों और गौ-रक्षा आन्दोलन में भाग लेना, विदेशी माल का बहिष्कार करना, शराब की दुकानों पर पिकेटिंग करना आदि कार्य प्रारम्भ कर दिये थे। उसी समय विदेशी शिक्षा बहिष्कार आन्दोलन चला तथा दमोह में राष्ट्रीय पाठशाला खोली गई जिसमें बजाज जी ने अपने भतीजे श्री रूपचन्द (इनका परिचय इसी ग्रन्थ

में देखें) बजाज को भर्ती कराया; जिसके अध्यापक श्री गौरीशङ्कर पाराशर और बाद में श्री आयुप्रसाद जी रहे।

श्री बजाज ने श्री भैयालाल चौधरी के चर्खा प्रचार आन्दोलन को सम्भाला और इस कार्य में लगभग 15000/- का नुकसान भी उठाया।

बजाज जी को व्यायाम का अधिक शौक था, इन्होंने भिन्न-भिन्न मोहल्लों में व्यायाम शालाएं खुलवाईं तथा श्री दि0 जैन नन्हें मन्दिर जी और जैन धर्मशाला के बगल के आंगन में अपने खर्च से ही बाहुबलि व्यायामशाला बनवाई, जिसने 1942 के आन्दोलन में आशातीत सहयोग दिया। इस व्यायामशाला में जैन-अजैन सभी लाठी आदि चलाने की शिक्षा लेते थे और जुलूसों व सभाओं का प्रबंध करते थे।

1930 के आन्दोलन में आपने भाग लिया फलत: 4 माह की सजा तथा 80 रु0 का अर्थदण्ड पाया। 1942 के आन्दोलन में आपने-अपने भतीजे रूपचंद जी बजाज को जेल भेजा, जो 9 माह 15 दिन तक जेल में रहे। आप स्वयं भूमिगत रहे तथा श्री लीलाधर जी सर्राफ के सहयोग से जेलवासियों के घरों को आर्थिक सहायता जुटाते रहे, बुलेटिन छपवाकर बटवाते रहे।

श्री बजाज सम्पन्न घराने के होने के कारण अभी तक समाज के हर कार्य में अग्रसर रहते हैं। आप लगातार 30 वर्ष तक श्री दि0 जैन अतिशय क्षेत्र कुण्डलपुर कमेटी के अध्यक्ष रहे हैं।

आ0- (1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-2, पृष्ठ-89 (2) श्री संतोष सिंघई, दमोह द्वारा प्रेषित परिचय।

श्री राजेन्द्रकुमार महनोत

उज्जैन (म0प्र0) के स्वाधीनता सेनानी दम्पती श्री सरदारसिंह महनोत और श्रीमती सज्जनदेवी महनोत के ज्येष्ठ पुत्र श्री राजेन्द्रकुमार महनोत अपनी शिक्षा बीच में ही छोड़कर 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में कूद पड़े, फलत: गिरफ्तार हुए और 1946 में छूटे।

आ0- (1) जै0 स0 रा0 अ0, पृष्ठ-90

श्री रामचंद जैन

ललितपुर (उ0प्र0) निवासी श्री रामचंद जैन के पिता का नाम श्री प्रभुदास जैन था। आपका जन्म



24-9-1927 को हुआ। क्रांतिकारियों को सहयोग प्रदान करते-करते 'करो या मरो' की भावना के वशीभूत होकर 1942 के आन्दोलन में 1 वर्ष का कठोर कारावास तथा 100/- रुपये जुर्माना अदा न करने पर 2 माह की और कठोर कारावास की सजा आपने भोगी।

आ0-र0 नी0, पृष्ठ-28 (2) डा0 बाहुबलि जैन द्वारा प्रेषित परिचय

श्री रामचंद जैन कर्नावट

उज्जैन (म0 प्र0) के श्री रामचंद जैन, पुत्र-श्री रघुनाथ का जन्म 1901 में हुआ। आपने माध्यमिक शिक्षा ग्रहण की। देश पराधीन था अत: आप विद्यार्थी जीवन से ही राष्ट्रीय कार्यों में सक्रिय हो गये। 1930 के नमक सत्याग्रह में आपने भाग लिया तथा 3 माह का कारावास भोगा। डौंगरगांव में जंगल सत्याग्रह में भी 3 माह की सजा आपने काटी। प्रजामण्डल द्वारा तराना, महिदपुर में आयोजित एक सभा में भाषण देने पर आप पुन: गिरफ्तार कर लिये गये और 1 वर्ष 6 माह के कारावास का दण्ड भोगा।

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-4, पृष्ठ-172

श्री रामचंद भाई शाह

छिन्दबाड़ा (म0प्र0) से सांसद और विधायक रहे श्री रामचंद भाई शाह, पुत्र-श्री नरहरि भाई शाह का जन्म 17 अक्टूबर 1917 को गांगवा, जिला-जामनगर (गुजरात) में हुआ। अपने छात्र जीवन से ही आप राष्ट्रीय आंदोलन में रुचि लेने लगे थे। श्री दुलीचंद भाई मेहता आपके मुख्य प्रेरणास्रोत थे। उनकी प्रेरणा से ही आपने स्वतंत्रता आंदोलन में भाग

लिया। 1941 में आपने श्री दुलीचंद भाई मेहता और श्री नीलकण्ठराव झलके के साथ व्यक्तिगत सत्याग्रह किया था। सत्याग्रह में भाग लेने के फलस्वरूप 1941 में 6 माह के कारावास का दण्ड आपको दिया गया; जो आपने नागपुर जेल में भोगा। भारत छोड़ो आन्दोलन में आप पुन: गिरफ्तार किए गए, फलत: 14 माह तक नजरबंद रखे गये।

स्वराज्य प्राप्ति के पश्चात् आप अनेक राजनीतिक एवं सामाजिक संस्थाओं से जुड़े रहे। 1952 में प्रथम लोकसभा चुनाव हुए। आप छिन्दबाड़ा जिले से लोकसभा प्रत्याशी बनाए गए और निर्वाचित भी हुए। इस प्रकार आपको छिन्दवाड़ा जिले के प्रथम सांसद बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। आप विधानसभा सदस्य भी रहे। आप पांढुर्ना नगरपालिका के अध्यक्ष, प्रदेश कांग्रेस कमेटी के सदस्य तथा जिला कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष आदि पदों पर रहे। 1972 में स्वतंत्रता की 25वीं वर्षगांठ पर तत्कालीन प्रधानमंत्री स्वर्गीय श्रीमती इंदिरा गांधी द्वारा ताम्रपत्र प्रदान कर आपको सम्मानित किया गया था।

आ0- (1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-1, पृष्ठ-13 (2) स्वाधीनता आन्दोलन में छिन्दवाड़ा जिले का योगदान, (टंकित शोध-प्रबन्ध) पृष्ठ-321-322 (3) स्मारिका

श्री रामचंद सिंगल

'सिंगल साहब' उपनाम से विख्यात श्री रामचंद सिंगल, पुत्र-श्री तोताराम हलवाई का जन्म वर्तमान हरियाणा के सोनीपत में संवत् 1960 (1903 ई0) में हुआ। गौरवर्ण, पतला शरीर सदैव खद्दर पहनने वाले सिंगल सा0 धार्मिक नाटकों में विशेषकर मैना सुन्दरी नाटक में मैना सुन्दरी का अभिनय अपने साथियों के विरोध के बाद भी किया करते थे। श्री माईदयाल जैन ने जैन सन्देश, अक्टू0 1971 में अपने संस्मरण में जो लिखा है, उसका सार यह है कि श्री सिंगल 1930 में गांधी जी की प्रेरणा से राष्ट्रीय युद्ध में एक सैनिक के रूप में कूद पड़े, वे अहिंसात्मक आन्दोलन मे सक्रियता से भाग लेने लगे और अनेक बार जेल गये। वे भारतीय कांग्रेस कमेटी, सोनीपत कांग्रेस कमेटी आदि के सदस्य रहे। गुटबाजी से दूर रहने वाले सिंगल साहब की धर्मपत्नी श्रीमती लीला जी भी इस आन्दोलन में कदम से कदम मिलाकर चलीं, लाठियों की मार सही और जेल गईं।

सिंगल साहब दस्सा अग्रवाल जैन थे। जब दिगम्बर जैन समाज ने उनके मंदिर-पूजन पर रोक लगाई तो वहाँ दस्सा समाज स्थानकवासी बन गई पर सिंगल साहब का सभी से समान प्रेमभाव और मेल-जोल रहा। सिंगल सा0 का 18 अप्रैल 1970 को दिल्ली में अपने पुत्र वीरेन्द्र कुमार के निवास पर स्वर्गवास हो गया।

आ0- (1) जैन सन्देश, अक्टू0 1971

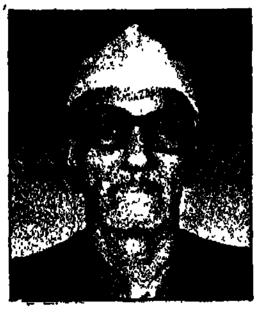
श्री रामचरण जैन

दमोह (म0प्र0) के श्री रामचरण जैन, पुत्र-श्री नन्हे लाल का जन्म 1923 में हुआ। 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में आपने भाग लिया, जेल यात्रा की तथा पराधीनता की कठोर यातनायें सहीं। शासन ने सम्मान पत्र प्रदान कर आपको सम्मानित किया है।

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग 2, पृष्ठ-89

श्री रामचरण लाल जैन कुलैथ

पिता की छह सन्तानों में से मात्र एक ही देश की आजादी पर मर-मिटने के लिए बची। ऐसे व्यक्तित्व श्री रामचरण जैन कुलैथ का जन्म 10 अक्टूबर 1913 को ग्राम कुलैथ में एछिया परिवार में हुआ। आपके पिता जी का नाम श्री कल्याण प्रसाद एवं माता का नाम श्रीमती जावित्री था। आपके पांच भाई और थे जो अल्प अवस्था में



ही स्वर्गवासी हो गये। यत: आप पिता के इकलौते पुत्र थे, इस कारण गांव से बाहर कहीं अध्ययन को नहीं भेजा गया और गांव में ही आपने माध्यमिक तक शिक्षा ग्रहण की। आपके जीवन पर माता के उपदेशों का अत्यधिक प्रभाव पड़ा।

उन दिनों राजनैतिक हलचल के कारण थोड़े बहुत समाचार पत्र ही गांव में पहुंचते थे। जिन्हें पढ़कर आपके मन में देशप्रेम और गुलामी के बन्धनों को तोड़ने की ललक जागी।

1938 में ग्वालियर राज्य में स्थापित 'राज्य सार्वजनिक सभा' का अधिवेशन उज्जैन में हुआ। ग्वालियर में भी राजनैतिक चेतना जागृत हुई। फलस्वरूप 1939 में श्री शिवशंकर रावत की अध्यक्षता में अधिवेशन हुआ, जिसका उद्घाटन डॉ0 पट्टाभिसीतारमैया ने किया। जगह-जगह तिरंगे झण्डे लहराने लगे। जिन्हें देखकर आपने देश की आजादी पर मर-मिटने की कसम खाई। इस अधिवेशन के दो माह पश्चात् श्री मुरलीधर धुले कुलैथ गये, जिनसे प्रभावित होकर आप स्वतंत्रता आंदोलन में निर्भय होकर कूद पड़े। 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में आप गिरफ्तार हुए और आपको 9 माह 10 दिन का कारावास हुआ, जो आपने सबलगढ़ तथा मुंगावली जेल में काटा। आप ग्वालियर राज्य, राज्यसभा के सदस्य रहे और तत्कालीन ग्वालियर राज्य में स्वदेशी की भावना और आजादी की अलख जगाने में निरन्तर ग्राम अंचलों से जुड़े रहे।

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-4, पृष्ठ-249 (2)व0 स0 इ0, पृष्ठ-103

श्री रामजीलाल जैन

स्वाधीनता आन्दोलन के साथ बलिप्रथा रोकने में महनीय भूमिका निभाने वाले रेवाड़ी के श्री रामजी लाल जैन का जन्म 1905 के आसपास हुआ, पिता का नाम श्री रामप्रसाद उर्फ सुखदेव जैन था। 1929 में आप कांग्रेस के सदस्य बने, खादी पहनना प्रारम्भ



किया और श्री भगवानदास, फूलचंद अग्रवाल आदि के मार्गदर्शन में काम किया। 1930 में श्री हरसहाय मल चुन्नीलाल बजाजा बाजार की कपड़े की दुकान पर पिकेटिंग में जो 14 सत्याग्रही गिरफ्तार किये गये उनमें आप भी थे। सबके साथ आपको भी 50/-रु0 का जुर्माना या एक माह की कैद की सजा सुनाई गई, आपने जेल जाना उचित समझा।

सत्याग्रह आन्दोलन में आप आसपास के गांवों भूड़पुर, भड़ावास, धारुहेड़ा आदि से सत्याग्रहियों को दिल्ली लाते थे अत: पुलिस ने पुन: गिरफ्तार कर लिया और दो वर्ष की सजा तथा 100/- रु0 जुर्माना या चार माह की और कैद की सजा दी गई। आपको ताम्रपत्र से सम्मानित किया गया। 20-2-1991 को आपका निधन हो गया।

आ0 (1) रेवाड़ी सेनानी सूची, क्रमाङ्क- 5

श्री रामबाबू जैन

फिरोजाबाद (उ0प्र0) के श्री रामबाबू जैन, पुत्र-श्री धूरी लाल जैन 1942 के आन्दोलन में सक्रिय रहे और 13 मार्च 1943 को डाक बङ्गला जलाने के आरोप में श्री धनवन्त सिंह जैन व श्री संत लाल जैन के साथ गिरफ्तार होकर सेन्ट्रल जेल आगरा में 6 माह तक नजरबंद रहे। आपके चाचा श्री महावीर प्रसाद जैन भी जेल यात्री रहे हैं।

आ0 (1) जै0 स0 रा0 अ0 (2) जै0 से0 ना0 अ0, पृष्ठ-5 (3) अमृत, पृष्ठ-25 (4) उ0 प्र0 जै0 ध0, पृष्ठ-91

श्री रामराव जैन

इन्दौर (म0प्र0) निवासी श्री रामराव जैन, पुत्र-श्री आत्माराम जैन का जन्म 5-4-1913 को आबनेर, जिला-इन्दौर में हुआ। अपना परिचय देते हुए आपने लिखा है कि 'मेरे माता-पिता बहुत ही गरीब



थे। हमारे भरण-पोषण के लिए हमें मजदूरी करनी पड़ती थी, क्योंकि हमारे पास कोई व्यवसाय या खेती-बाड़ी नहीं थी। रोजगार की तलाश में हम लोग जगह-जगह भटकते हुए म0प्र0 के सबसे बड़े शहर इन्दौर आये तथा यहाँ राजकुमार कपड़ा मिल में काम करने लगे।

महात्मा गांधी ने जब अंग्रेजो भारत छोड़ो का नारा दिया तब हम उस आंधी में बह चले तथा इन्दौर में आन्दोलन के तहत गिरफ्तार हुए। हमें 20-8-42 को इन्दौर तथा दिनांक 22-8-42 को मंडलेश्वर जेल भेजा गया। मुझे 1 वर्ष सश्रम कारावास तथा 1 माह साधारण कारावास की सजा दी गयी थी। मंडलेश्वर जेल में इन्दौर के श्री मिश्रीलाल गंगवाल जी हमारे साथ थे। जेल में हमें जो खाना दिया जाता था, वह बहुत ही निम्न स्तर का होता था। इसके विरोध में हम लोग जेल से कच्चा सामान लेकर स्वयं खाना पकाकर खाते थे। एक बार हमारे एक साथी ने कमरे में बंद होने से इंकार किया तब जेल के कर्मचारी ने जबर्दस्ती की। इसके विरोध में सभी साथियों ने तोड़-फोड़ करते हुए जेल का फाटक तोड़कर, जेल से निकलकर मंडलेश्वर बाजार में शांतिपूर्वक प्रदर्शन करते हुए एक सभा की तथा जेलर को आश्वासन दिया कि हम शान्ति से विरोध प्रकट कर वापस जेल में आ जायेंगे। यह भारतीय क्रांतिकारियों की ईमानदारी का बड़ा उदाहरण था। हम सभी बड़ी ईमानदारी से जेल वापस पहुंच गये। दूसरे दिन हम सभी को हाथों में हथकड़ी तथा पैरों में बेड़ियां डाल दी गईं।' आपके अग्रज श्री लक्ष्मण जी भी जेलयात्री रहे हैं।

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-4, पृष्ठ-42 (2) स्व0 प0

श्री रामलाल नायक

खुरई, जिला- सागर (म0प्र0) कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष रहे श्री रामलाल नायक, पुत्र-श्री बाला चन्द जैन, 1938 से ही राष्ट्रीय आन्दोलनों में सक्रिय हो गये। आपको 1942 के आन्दोलन में छह माह के कारावास की सजा हुई थी, जिससे आपका स्वास्थ्य बिगड़ गया था। आप त्रिपुरी कांग्रेस में सागर जिले से प्रतिनिधि बनकर गये थे। महाकौशल प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी के सदस्य, जिला कांग्रेस कार्यकारिणी के सदस्य तथा तहसील (खुरई) कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष भी आप रहे।

आ0- (1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-2, पृष्ठ-61 (2) आ0 दी0, पृष्ठ-78 (3) जै0 स0 रा0 अ0

श्री रामलाल पोखरना

श्री रामलाल पोखरना का जन्म रामपुरा (मन्दसौर) म0प्र0 में 15 मार्च 1913 को एक सामान्य



परिवार में हुआ। आपके पिता का नाम श्री रखबचंद पोखरना था। किशोर अवस्था से ही आपके हृदय में अंग्रेजों के अत्याचारों तथा दमनपूर्ण नीतियों के विरुद्ध पर्याप्त आक्रोश था। गांधी जी द्वारा चलाए गये अहिंसक आन्दोलन ने प्रभावित किया तथा पूरे समर्पण भाव से आप स्वतंत्रता आंदोलन में कूद पड़े। 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में पोखरना जी का नेतृत्व प्रखर होकर सामने आया। प्रजामण्डल के माध्यम से आपने अपने संकल्प को सार्थक करने का प्राण-प्रण से प्रयत्न शुरू किया। उस समय पोखरना जी इन्दौर की भंडारी मिल में 'डिजाइन मास्टर' थे।

आपके पास अनेक आन्दोलनकारी आया करते थे तथा आपके निर्देशों पर कार्य करते थे।

प्रचार-साहित्य के प्रकाशन एवं प्रसारण का कार्य भी आपके माध्यम से होता था। इन्हीं कार्यवाहियों के कारण आपको गिरफ्तार कर लिया गया और मण्डलेश्वर जेल भेज दिया गया। 2 अक्टूबर को गांधी जयन्ती मनाने हेतु जेल के आन्दोलनकारियों ने योजना बनाई। जेल अधिकारियों को जब इस योजना की सूचना मिली तो उन्होंने इसे पोखरना जी की खुराफात मानकर इन्हें खूब यातनाएं दीं। इस पर शेष आन्दोलनकारी क्रुद्ध हो उठे और 'भारत माता की जय', 'महात्मा गांधी जिंदाबाद' तथा 'अंग्रेजों की दमन नीति मुर्दाबाद' जैसे अनेक नारे लगाते हुए जेल का फाटक तोड़कर बाहर आ गये और उन्मुक्त वातावरण में गांधी जयन्ती मनाई गई।

पोखरना जी की इस कार्यवाही से क्रुद्ध होकर जेल अधिकारियों ने उन्हें फिर गिरफ्तार कर लिया और बदले में उन्हें 12 वर्ष की कठोर सजा दी गई और पुन: जेल की सीखचों में बंद कर दिया गया। बाद में जेल की अवधि घटा दी गई व उन्हें मुक्त कर दिया गया।

जेल से मुक्त होने के पश्चात् श्री पोखरना अपने गृहनगर रामपुरा लौट आये। रामपुरा में प्रजामण्डल के पंचम सम्मेलन का सूत्रपात पोखरना जी की ही पहल पर हुआ। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् पोखरना जी को नगरपालिका अध्यक्ष चुना गया। 1952-57 तक पोखरना जी विधानसभा सदस्य रहे। जिला मजदूर कांग्रेस के अध्यक्ष एवं जिला कांग्रेस के उपाध्यक्ष पद पर भी आपने पूरी निष्ठा एवं सक्रियता से कार्य किया। पोखरना जी सरल, स्वाभिमानी एवं गाँधीवादी विचारधारा से प्रभावित व्यक्तित्व के धनी थे। वे सदा गरीबों एवं मजदूरों के पक्षधर रहे। उन्हें स्वतंत्रता संग्राम सेनानी के नाते राष्ट्र द्वारा सम्मानित किया गया।

अपनी सामान्य आर्थिक स्थिति एवं पक्षाघात की बीमारी से असहाय स्थिति के बावजूद भी पोखरना जी ने कभी भी किसी सहायता या सहयोग की न याचना की न कामना। यहां तक कि स्वतंत्रता संग्राम के रूप में स्वीकृत पेन्शन राशि उन्होंने यह कहकर नकार दी कि 'मैं अपने देश के प्रति की गई अपनी अकिंचन सेवाओं का मूल्य लेकर अपने भावों को मारना नहीं चाहता। मैंने जो कुछ भी किया माँ-सेवा मानकर किया। बालक के लिए तो माँ की सेवा अनिवार्य दायित्व होता है। उसका मूल्य लेकर मां के मातृत्व और दूध का अपमान मैं नहीं करना चाहता।' इस हेतु दिया जाने वाला ताम्रपत्र भी इन्होंने अपने हाथों में लेने के बजाए नगरपालिका को भेंट करवा दिया जो नगरपालिका की अमूल्य निधि के रूप में आज भी सुरक्षित है।

पोखरना जी का जीवन-दर्शन रामपुरा वालों तथा सम्पूर्ण देशवासियों के लिए प्रेरणास्रोत है। 27 अगस्त 1980 को आपका स्वर्गवास आपके गृहनगर रामपुरा में हो गया।

आ०- (1) म० प्र० स्व० सै०, भाग-4, पृष्ठ-217 (2) स्व० रा० म०, पृष्ठ-124-125

शाह श्री रामलाल मास्टर

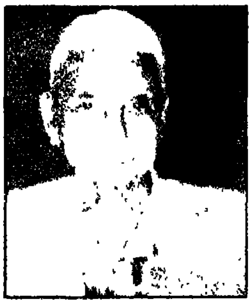
स्वदेशी वस्तुओं के कट्टर समर्थक, प्रतापगढ़ (राजस्थान) के शाह श्री रामलाल मास्टर ने प्रतिज्ञा की थी-'जो भाई कन्या का दहेज लेगा उसके यहाँ जीमने नहीं जाऊंगा।' आपने 1930 में प्रतापगढ प्रजामण्डल और तिरंगे झण्डे की स्थापना की थी, इस पर सरकार ने आपको अन्य व्यक्तियों के साथ जेल में ठूंस दिया। आपने 1 माह तक जेल की हवा खाई। सरकार ने प्रजामण्डल को भी खत्म कर दिया और आदेश निकाला कि 'जो इस झण्डे को अपनायेगा उसे जेल की सैर करनी पड़ेगी।' जब आप जेल से छूटे तब आपने यह प्रण किया कि- 'जब तक प्रतापगढ़ में प्रजामण्डल तथा तिरंगे झण्डे नहीं लगेंगे तब तक प्रतापगढ़ में कदम नहीं रखूँगा।'

इसके बाद आप इन्दौर चले गये। 1946 में प्रतापगढ़ में प्रजामण्डल की स्थापना हुई और तिरंगा झण्डा हर घर पर लहराने लगा। जब आपने सुना कि 'प्रजामण्डल की स्थापना हो गई है' तब आप 16 वर्ष के बाद प्रतापगढ़ वापिस गये। जनता ने आपका जोरदार स्वागत किया और जुलूस निकाला। रात्रि को एक विराट सभा हुई जिसमें सभापति पद से आपने घोषणा की कि 'मैंने जो प्रण किया था वह आज पूरा हो गया।' 2 अक्टूबर 1943 को आपके सभापतित्व में आजाद मैदान में गाँधी जयन्ती मनायी गयी थी।'

आ0-(1) जै0 स0 रा0 अ0, पृष्ठ-67

श्री रामस्वरूप जैन

खैरगढ़, जिला-मैनपुरी (उ0प्र0) के श्री रामस्वरूप जैन, पुत्र-श्री छोटे लाल, जैन का जन्म 11

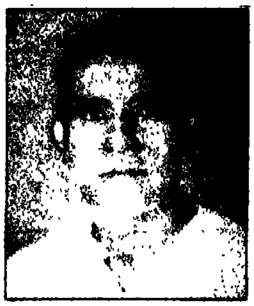


अक्टूबर 1917 को हुआ। भारत छोड़ो आन्दोलन के समय आप अपने मण्डल के मंत्री थे। उस समय आप फरार हो गये और इधर-उधर घूमते रहे, पुलिस आपकी तलाश में रही अन्त में जनवरी 1943 में आपको फिरोजाबाद में गिरफ्तार कर लगभग एक वर्ष 6 माह नजरबंद रखा गया। जेल में ही आपने 'मानव जीवन की सफलता' पुस्तक का लेखन किया जो बाद में प्रकाशित भी हुई। आजादी के बाद आप ग्राम पंचायत के सरपंच आदि अनेक पदों पर रहे। 1963 में आपने विशाल सिद्धचक्र मण्डल विधान का आयोजन कराया था।

आ0- (1) जै0 स0 रा0 अ0 (2) उ0 प्र0 जै0 ध0, पृष्ठ-92 (3) जै0 स0 वृ0 इ0, पृष्ठ-627 (4) स्व0 प0

श्री रामस्वरूप 'भारतीय'

'भारतीय' उपनाम से विख्यात, राष्ट्रभक्ति और पत्रकारिता को ही अपने जीवन का ध्येय बनाने वाले



रामस्वरूप जी जारखी, जिला-आगरा (उ0 प्र0) के निवासी थे। आपका जन्म एक जमींदार परिवार में हुआ था। परन्तु बचपन से ही राष्ट्रीय भावनायें कूट-कूट कर भरी हुई थीं। हिन्दी उर्दू व अंग्रेजी में आपकी समान योग्यता थी। आप कवि-लेखक के साथ पत्रकारिता से जुड़े रहे। 'भारतीय' जी ने 'पद्मावती संदेश' (आगरा), 'वीरभारत' (अलीगढ़ व जलेसर), 'ग्राम्य जीवन' (आगरा), 'अग्रवाल हितैषी' (देहली), 'देवेन्द्र' (अजिताश्रम लखनऊ) आदि पत्रों का सम्पादन किया था। स्व0 पं0 कृष्णदत्त जी पालीवाल ने लखनऊ से 'दैनिक केसरी' का प्रकाशन किया था, तब आपको प्रबन्ध सम्पादक नियुक्त किया था।

1942 के आन्दोलन में सहयोग देने की शङ्का के कारण आपको गिरफ्तार कर दो माह सेन्ट्रल जेल आगरा में नजरबंद रखा गया था। आप बेसवां किला (अलीगढ़) रियासत के वर्षों मैंनेजर रहे थे।

आ0-(1) जै0 स0 रा0 अ0 (2) उ0 प्र0 जै0 ध0, पृष्ठ-92 (3) अमृत, पृष्ठ-25 (4) श्री पन्नालाल जी 'सरल' द्वारा प्रेषित परिचय

श्री रायचंद नागड़ा

'खण्डवा जिले के गांधी' कहे जाने वाले तथा 'भाईजी' उपनाम से विख्यात श्री रायचंद नागड़ा का



जन्म अपने ननिहाल पाचोरा में 23 जून 1904 को हुआ। वहीं रहकर आपने गुजराती का अभ्यास किया। आपके पूर्वजों के सन्दर्भ में कहा जाता है कि 1880 के आसपास सुदूर कच्छ प्रान्त से दो किशोर वय के भाई पदमसी एवं पीताम्बर अपनी

विमाता से परेशान होकर एक दिन चुपचाप जेब में कुछ सिक्के रखकर जहाज में बैठकर बम्बई पहुँचे और मजदूरी कर अपना जीवन यापन करने लगे। बम्बई रास नहीं आया तो एक दिन ट्रेन में बैठ गये। गन्तव्य तो कोई था नहीं सो खण्डवा स्टेशन पर उतर गये और यहीं के होकर रह गये। पहले मजदूरी की फिर फटे पुराने बारदाने का काम किया। काम चल निकला, भाग्य ने साथ दिया और कुछ ही दिनों में वे एक प्रतिष्ठित व्यापारी बन गये।

पीताम्बर जी के यहाँ पुत्र हुआ जिसका नाम 'रायचंद' रखा गया। रायचंद के नाना केशव जी तेजपार पाचोरा के प्रतिष्ठित व्यापारी थे। नाना के घर लगभग 10 वर्ष बिताकर रायचंद खण्डवा आ गये और यहीं उनकी आगे की शिक्षा-दीक्षा हुई।

1917 में लोकमान्य तिलक खण्डवा पधारे उन्हीं की प्रेरणा से अ0 भा0 कांग्रेस कमेटी की स्थापना खण्डवा में हुई। 1923 में रायचंद जी उसके सक्रिय सदस्य बने तथा आजीवन खादी पहनने का व्रत लिया, जिसे अन्त तक निभाया। 1929 में क्रान्तिकारी, राष्ट्रकवि माखनलाल चतुर्वेदी जिला कांग्रेस के अध्यक्ष चुने गये तो उन्होंने नागड़ा जी को प्रधानमंत्री नियुक्त किया। 1939 से 1945 तक तथा 1952 से 1957 तक नागड़ा जी जिला कांग्रेस के अध्यक्ष रहे। 1929 में म्युनिसिपल कांऊसिल के चुनाव में विजयी हुए और उपाध्यक्ष नियुक्त हुए। 1956 से 1966 तक आप नगर पालिका खण्डवा के सफल व लोकप्रिय अध्यक्ष रहे।

1959 में नागड़ा जी ने खण्डवा गुजराती समाज की स्थापना की और अन्त तक उसके अध्यक्ष रहे। 1954 से 1962 तक आप काटन मर्चेण्ट एसोसिएशन, 1956 से 1972 तक ग्रेन मर्चेन्ट एसोसिएशन, 1963 से 1972 तक चेम्बर आफ कॉमर्स के अध्यक्ष रहे।

नागड़ा जी राजनीति की काली कोठरी में रहकर भी सदा शुभ्र चादर के धनी रहे। 1933 में जब महात्मा गांधी खण्डवा पधारे तो आपके निवास 'नागड़ा विला' में ही रुके थे।

आजादी की लड़ाई में जब सरकार ने सभी को जेलों में ठूंसना शुरू किया तो आपके पिता ने बहुत समझाया और धमकी दी कि-'यदि तुम गिरफ्तार हुए तो मैं जेल की दीवार से माथा ठोककर मर जाउंगा।' पर आजादी के दीवानों को ऐसी धमकियां रोक सकीं हैं क्या?

13 अगस्त 1930 को सरकारी हाईस्कूल पर कांग्रेस का ध्वज फहराते हुए आप गिरफ्तार कर लिये गये और छह माह की कैद तथा 500/- रु0 जुर्माना की सजा सुनाकर आपको रायपुर जेल भेज दिया गया।

जेल जाते हुए आपने कहा था-'कमिश्नर मि0 टर्नर को मेरी ओर से बधाई दीजियेगा कि उन्होंने मुझे जिले में पहली गिरफ्तारी का सौभाग्य प्रदान किया।'

31-3-1941 को अंग्रेजी साम्राज्य के विरुद्ध जनता को भड़काने के अपराध में नागड़ा जी को पुन: छह माह की सजा हुई, जिसे आपने नागपुर जेल में काटा। 1942 के आन्दोलन में वे पुन: गिरफ्तार कर लिये गये और 1944 में मुक्त हुए।

प्रसिद्ध साहित्यकार पद्मश्री रामनारायण उपाध्याय ने 'सबके अपने भाई रायचंद नागड़ा' नाम से नागड़ा जी के संस्मरण लिखे हैं। नागड़ा जी के व्यक्तित्व को रेखांकित करने वाले संस्मरणों के कुछ अंश देना यहाँ असमीचीन नहीं होगा।

वे (नागड़ा जी) नियम से चर्खा कातते, हाथ से अपना सब काम करते, जो बोलते उसे पूरा करते और जो करते उसका श्रेय कभी नहीं लेते थे।

★ ★ ★ ★

'भाई पहले व्यक्ति थे, जिन्होंने आजादी की लड़ाई में भाग लेने पर भी अपने आपको कभी विधायक या सांसद पद का दावेदार नहीं माना

★ ★ ★ ★

उन्होंने तो स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों को दी जाने वाली पेंशन लेने से भी इंकार कर दिया था। कहा था-'हमने कुछ पाने के लिए आजादी की लड़ाई नहीं लड़ी। देश आजाद हो गया, यही उसका सबसे बड़ा मूल्य है।'

★ ★ ★ ★

1940 में जब वे जेल गये, तो वहाँ पर जाने कहाँ से मोची का सामान जुटा लिया। फिर तो आपकी आखें लोगों के पावों पर लगी रहतीं। (आज की तरह कुर्सी पर नहीं) वे जिसके पांव में भी फटा जूता देखते अत्यन्त ही विनम्रता से उससे उतरवा लेते और फिर उसे सुधारकर उसके पांव में पहना देते।

★ ★ ★ ★

मुझे राजनीति में लाने और राजनीति से दूर साहित्यिक क्षेत्र में पूरी ताकत से काम करने की प्रेरणा सदा रायचंद भाई से मिलती रही। उनसे मैंने पिता की तरह आशीर्वाद पाया और भाई की तरह उन्होंने मुझे अन्त तक अपनाये रखा था। आज के युग में ऐसे तपोनिष्ठ गांधीवादी दुर्लभ होते जा रहे हैं।

★ ★ ★ ★

स्वतंत्रता की 25वीं रजत जयन्ती के अवसर पर प्रधानमंत्री के द्वारा देश के जिन चुने हुए सेनानियों को दिल्ली में सम्मानित करने का आयोजन किया गया, उनमें से एक रायचंद भाई भी थे। लेकिन आपने दिल्ली जाने से इन्कार करते हुए कहा कि-'मैंने किसी सम्मान या पुरस्कार की आशा में स्वतंत्रता संग्राम में भाग नहीं लिया था। देश की आजादी ही मेरा सबसे बड़ा पुरस्कार और सम्मान है।'

★ ★ ★ ★

भैयाजी अक्सर अपनी डायरी लिखा करते थे, जिसमें उन्होंने अपने सामाजिक और राजनैतिक जीवन के संस्मरण लिखे हैं।

अपने जेल जीवन के अनुभव सुनाते हुये आपने कहा था-'जब मुझे पहली बार छह महीने की जेल हुई तब खिस्ती सुपरिन्टेण्डेट थे। 7-8 दिन खण्डवा जेल में रखा, फिर एक दिन फोर्ड गाड़ी में बैठाकर बड़े पुल के पास ले गये। वहाँ पर मेल को खड़ा किया और गाड़ी चल दी। रास्ते में मैंने पुलिस वाले से पूछा कि-"कहाँ ले जा रहे हो" तो वह बोला "मुझे खुद भी नहीं मालूम है" जब भुसावल पहुँकर नागपुर गाड़ी में बैठे तो पूछा "कहाँ ले जा रहे हो" तो वह बोला "मालमू नहीं" जब गोंदिया निकल गया तो उसकी झपकी लग गई। मैंने पता लगा लिया था कि रायपुर ले जा रहं हैं। जब रायपुर स्टेशन आया और गाड़ी चलने लगी तो मैंने उसे जगाकर कहा "यह रायपुर है, यहाँ भी उतरना है या तुम्हें मालूम नहीं" वह हडबडा कर उठा और बोला "कूदो" मैंने कहा "मैं चलती गाड़ी से नहीं कूद सकता।" उसने चैन खींची और हम उतर गये। वह रास्ते भर माफी मांगता रहा और बोला-"आज मेरी लाज रख ली। अगर हम आगे निकल जाते तो सब जगह तार हो जाते और मेरी नौकरी चली जाती।" मैंने कहा-"भले आदमी, हम सत्याग्रही हैं, झूठ नहीं बोलते। हमने मुकदमा भी नहीं लड़ा, मैं तो तुमसे कब से पूछ रहा था पर तुम बतलाते ही नहीं थे।"

'सादा जीवन उच्च विचार' के सूत्र को अपने जीवन में उतारने वाले नागड़ा जी स्नान के बाद प्रतिदिन मंदिर जाते थे, चाहे खण्डवा शहर हो या अन्य कोई शहर। नागड़ा जी के पुत्र श्री प्रफुल्ल नागड़ा ने लिखा है कि 'वे सदैव चरखा कातते रहते थे, उनका भोजन बड़ा सादा था, वे समय के बहुत पाबंद थे। फोटोग्राफी, अभिनय, घुड़सवारी के वे शौकीन थे। कभी साइकिल, मोटरसाइकिल, कार चलाते तो कभी सिलाई मशीन भी चलाने लगते थे। उनके कमरे में पूज्य बापू और श्रीमद् राजचंद का ही चित्र था। जैन धार्मिक पुस्तकों के अतिरिक्त अन्य धर्मों की पुस्तकें वे प्राय: पढ़ा करते

थे। टी0 बी0 के मरीज कृष्णा को वे रक्तदान करने कई मास तक नियमित बम्बई गये। वे दो समय के भोजन के बीच में पानी के सिवा कुछ नहीं लेते थे।' 25 जून 1979 को नागड़ा जी का देहावसान हो गया।

आ0- (1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-4, पृष्ठ-111 (2) श्री रायचंद नागड़ा, पुण्य स्मरण (स्मारिका) (3) नई दुनिया, 7 अक्टूबर 1997 (4) नवभारत, भोपाल 18 सितम्बर 1997

श्री रूपचंद जैन

जबलपुर (म0प्र0) के श्री रूपचंद जैन, पुत्र-श्री नेमीचंद जैन का जन्म 1911 में हुआ। 1932 के आन्दोलन में आप गिरफ्तार हुए और जबलपुर जेल में 6 माह बन्द रहे।

आ0-(1) स्व0 स0 ज0, पृष्ठ-192

श्री रूपचंद जैन

सागर (म0प्र0) के श्री रूपचंद , पुत्र-श्री वृजलाल जैन का जन्म 1910 में हुआ। आपने माध्यमिक तक शिक्षा ग्रहण की 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में आपने भाग लिया तथा 6 माह का कारावास भोगा।

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-2, पृष्ठ-62

सेठ श्री रूपचंद जैन

श्री रूपचंद जैन, पुत्र-श्री लक्ष्मीचंद जैन का जन्म 1927 में जबलपुर (म0प्र0) में हुआ। 1942 के आन्दोलन में आपने भाग लिया और 6 माह का



कारावास भोगा। आप कुछ समय गुना जेल में भी रहे। आपने अंग्रेजों के विरुद्ध परचे छपवा कर ट्रेन में वितरित किये थे। आप सेन्ट्रल जेल जबलपुर के नीचे गिरफ्तार हो गये थे। आपका निधन 30-3-1977 को हो गया।

आ0- (1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-1, पृष्ठ-102 (2) स्व0 स0 ज0, पृष्ठ-161 (3)अनेक प्रमाण पत्र

श्री रूपचंद जैन

सहारनपुर (उ0प्र0) के श्री रूपचंद जैन 1930 से ही स्वाधीनता संग्राम में सक्रिय हो गये थे। सहारनपुर में 25 मार्च 1932 को धारा 144 तोड़ने के आरोप में वैद्य रतन लाल चातक, श्री रामरतन वर्मा तथा आपको गिरफ्तार कर लिया गया था। इस सन्दर्भ में वैद्य जी ने एक साक्षात्कार में बताया था कि- "(भाषण करने पर) श्री चन्द्रधर जियाल मजिस्ट्रेट ने आकर मुझसे कहा कि - 'आपको गिरफ्तार कर लिया गया है।' उसी समय रामरतन और रूपचंद मुझे माला पहनाने आये अत: उन्हें भी गिरफ्तार कर लिया गया"

तीनों की गिरफ्तारी पर बाहर खड़ी जनता ने नारे लगाये तो उन पर लाठी चार्ज किया गया। जेल में सुनवाई के बाद इन तीनों को सजा हुई और बरेली जेल भेज दिया गया। बरेली जेल की एक रोचक घटना है। जेल के फाटक पर जब ये तीनों पहुंचे तो उनके अनुसार- "हमने देखा कि वहाँ राजनैतिक बन्दियों को पीले वस्त्र पहना रखे थे। उनमें से किसी की आंख और किसी का मुंह सूजा हुआ था। इस प्रकार ऐसी लम्बी कतार दिखाकर हमें कहा गया कि - 'यह बरेली जेल है, यहाँ यही हाल होता है।' और एक बड़ा जूता दिखाया गया कि इससे पिटाई होती है। फिर हमारा मुण्डन संस्कार किया गया और उसके बाद हमें बैरक में भेजा गया।" रूपचंद जी ने एक साक्षात्कार में कहा था कि- "वहाँ कैदियों से चक्की पिसवायी जाती थी, कोल्हू चलवाया जाता था और पानी की हौज में आदमी को डालकर बेतों से पिटाई की जाती थी। जो माफी नहीं मांगता था, उसके साथ ऐसा (उपरोक्त) व्यवहार होता था।" आपने बताया था कि – "माफी न मांगने पर हमारी भी खूब जमकर पिटाई हुई। पैरों पर लाठियाँ

बरसायी गईं, पर हम टस से मस नहीं हुए। मेरी एक आंख और एक टांग खराब हो गयी थी।"

बरेली जेल में इस प्रकार दी गई यातनाओं की जांच के लिए सर सीताराम, अध्यक्ष विधान परिषद् को नियुक्त किया गया था।

1942 में अपनी गिरफ्तारी के सन्दर्भ में विस्तार से बताते हुए एक साक्षात्कार में आपने कहा था-"मैंने और मेरे साथियों ने तार काटने, इमारतें तथा डाकखाना आदि जलाने का काम किया। मनानी स्टेशन को आग लगा दी। उस समय काशीराम, बनारसीदास और इन्द्रसेन (अम्बेहटा शेख) भी हमारे साथ थे। वहाँ से हम भाग गये......... मैंने कांग्रेस की डाक का काम सम्भाल लिया। डाक लेकर दिल्ली से आगरा गया। आगरे में मैंने डाक विलायतीराम को दे दी। उन्होंने मुझे 1200 रुपये और कुछ सामान अम्बाला पहुंचाने के लिए दिया। वहाँ भी विलायतीराम ही थे। उन्हें सामान सौंप दिया। वहाँ से उन्होंने एक पिस्तौल और दो कैंचियाँ दिल्ली कांग्रेस कमेटी में देने को दीं। वहाँ से सहारनपुर आया और सिनेमा देख रहा था तो सी0आई0डी0 इन्सपेक्टर तनखा साहब ने इन्टरवल में कन्धे पर हाथ रखकर कहा, 'मैं नौजवान को गिरफ्तार करना नहीं चाहता। तुम मेरा स्टेशन तुरन्त खली कर दो।' .... वहाँ से पैदल नागल आया और दिल्ली पहुँचकर सामान आफिस में जमनादास कायस्थ को सौंप दिया। ....

उनका सामान और रुपये लेकर आगरा गया .... आगरा से फिर 1200 रुपये और डाक गंगापुर सिटी के लिए लेकर चला परन्तु बाहर निकलते ही पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया। 1200 रुपये जुर्माना और साढे चार महीने की सजा हो गयी। थैले के 1230 रुपये पुलिस ने ले लिये।"

आ0-(1) स0 स0, भाग-1, पृष्ठ 162, 63, 192 (2) स्वाधीनता आन्दोलन और मेरठ, पृष्ठ-37।

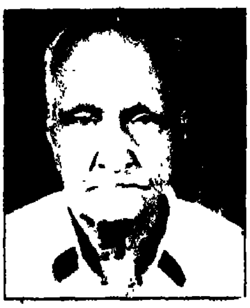
श्री रूपचंद जैन

अपने भाषणों से नवयुवकों में क्रान्ति की ज्वाला फूंकने वाले श्री रूपचंद जैन, पुत्र-श्री रतनचंद जैन का जन्म 1911 में शहडोल (म0प्र0) में हुआ। श्री रतनचंद सम्पन्न व सफल व्यवसायी थे, पर पुत्र को देशप्रेम की लौ लग गई। झंडा सत्याग्रह में रूपचंद जी ने भाग लिया। 1932 में कलकत्ता में भी आपने आंदोलन में भाग लिया। 1942 के आंदोलन में सरकार ने आपको विद्रोहात्मक भाषण देने के जुर्म में गिरफ्तार कर लिया और सेन्ट्रल जेल रीवां भेज दिया। सजा सुनाये जाने तक आप अन्डरट्रायल रहे। रीवां ट्रिब्यूनल द्वारा 100/- रु0 जुर्माना और छह माह के कठोर कारावास की सजा आपको सुनाई गई। जेल की विषम परिस्थितियों के कारण आपका स्वास्थ्य खराब हो गया था। पत्रकारिता से विशेष रूप से जुड़े रहे श्री जैन का 1973 में देहावसान हो गया।

आ0- (1) म0 प्र0 स्वा0 सै0, भाग-5, पृष्ठ-315, (2) स्वा0 आ0 श0, पृष्ठ-110

श्री रूपचंद पाटणी (जैन)

रायपुर (म0प्र0) के श्री रूपचंद पाटणी, पुत्र-श्री उदेलाल जैन का जन्म 1904 में हुआ आप



आरम्भ से ही राष्ट्रीय विचारधारा से जुड़े व्यक्ति थे, अत: 1930 के आन्दोलन में आपने खुलकर भाग लिया, परिणामस्वरुप 13-10-1930 को गिरफ्तार कर लिये गये और 5 माह के सश्रम कारावास एवं 10 रु0 अर्थदण्ड की सजा दी गई। रुपया जमा न करने पर एक माह और सजा भोगनी पड़ी। आपका निधन 3-1-1995 को हो गया।

आ0-(1) श्री पी0 जी0 उमाठे द्वारा प्रेषित परिचय एवं प्रमाणपत्र।

श्री रूपचंद बजाज

दमोह (म०प्र०) के बहुआयामी व्यक्तित्व श्री रूपचंद बजाज का जन्म प्रसिद्ध बजाज परिवार में 4 अप्रैल 1912 को हुआ।



आपके पिता श्री दुलीचंद बजाज दमोह के प्रतिष्ठित नागरिक थे, वे जैन धर्म और दर्शन में गहरी आस्था रखने वाले समाजसेवी भी थे। रूपचंद जी बचपन में बहुत कमजोर थे और प्राय: बीमार रहते थे, अत: श्री दुलीचंद के मित्र अखाड़ेबाज श्री रम्मू उस्ताद की सलाह पर रूपचंद जी को व्यायाम का शौक उत्पन्न करने के लिए उनके चाचा प्रसिद्ध स्वाधीनता सेनानी श्री राजाराम बजाज ने जैनधर्मशाला के पास बाहुबली व्यायामशाला स्वयं के खर्च से बनवाई, जिसमें लाठी, लेजिम, तलवार, भाला आदि चलाने का प्रशिक्षण दिया जाता था। इस व्यायामशाला में जैन-अजैन का भेद नहीं था और इसके पहलवान आजादी की लड़ाई में सदैव आगे रहे। इस व्यायामशाला से सम्बद्ध अनेक सेनानियों का परिचय इस ग्रन्थ में दिया गया है।

व्यायाम के बल पर रूपचंद जी इतने स्वस्थ हो गये कि जब 1942 में सागर जेल पहुंचे तो जेलर की प्रतिक्रिया थी– 'आज हमारी जेल में सबसे वजनदार कैदी आया है।'

आपने प्राथमिक शिक्षा राष्ट्रीय पाठशाला में पाई, जहाँ महापुरुषों की कहानियाँ सुनना और सूत कातना अनिवार्य था। बाद में इस शाला के बन्द होने पर आपने नगर परिषद् की पाठशाला में पढ़ाई पूरी की। युवावस्था में ही आप स्वतंत्रता आन्दोलन में कूद पड़े। खादी का प्रचार, विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार एवं शराबबन्दी आन्दोलनों में भागीदारी आपके प्रमुख कार्य थे। 1930 से आपने सिर्फ खादी पहनने का व्रत लिया। त्रिपुरी कांग्रेस में आपने स्वयंसेवक के रूप में भाग लिया था तथा तीन सप्ताह तक अपनी सेवायें अर्पित की थीं।

1942 में 13 अगस्त को दमोह के गांधी चौक में एक सार्वजनिक सभा को सम्बोधित करते हुये तथा दिल्ली का आंखों देखा हाल सुनाते हुये आपको गिरफ्तार कर लिया गया तथा उसी रात्रि सागर जेल भेज दिया गया। 17-8-42 को नागपुर जेल में आपको स्थानान्तरित कर दिया गया तथा 6-1-43 को मुकदमा चलाने हेतु फिर सागर जेल लाया गया और 16-3-43 को तीन माह के कठोर कारावास की सजा सुनाकर 25-3-43 को अमरावती जेल भेज दिया गया।

अमरावती जेल का जेलर मासूम अली अपनी क्रूरता के लिए भारतभर में प्रसिद्ध था। उसने कैदियों को 1941 में अनशन करने पर पानी देना बंद कर दिया था और उन्हें पेशाब पीने पर मजबूर किया था। बजाज जी ने मासूम अली के स्वभाव पर निम्न कविता लिखी थी।

आज हम मासूम सैंया से मिलेगें।
इस मिलन पर देखना क्या गुल खिलेंगे।।
तनी भौहें चुस्त कद सर लाल टोपी।
डिसीप्लिन के नाम पर क्या शान रोपी।।
झूमते बल खाये से वे क्या गजब की चाल चलते।
कोट के खोले बटन घबराये से आते टहलते।।
जो सलामी दागने से बनाये कोई बहाना।
रूठकर सैंया उसे झट भेज देते गुनाहखाना।।
हैं बड़े चुहली मजाकी सैंया हमारे।
अब न जाने कब मिलें सैंया हमारे।।

रात्रि अपनी बैरक में साथियों को सुनाते समय बाहर खड़े जेलर ने भी यह कविता सुन ली। दूसरे दिन दोपहर में बजाज जी को दफ्तर में बुलवाया गया तथा रात्रि वाली गजल इस शर्त पर सुनाने का आग्रह

किया गया कि वे इसकी शिकायत किसी से नहीं करेंगे तथा अपने मित्रों को ही सुनायेंगे। आखिर जेलर का आग्रह बजाज जी को पूरा करना पड़ा।

दिनांक 24-6-43 को जेल से रिहा होने पर बजाज जी सर्वप्रथम अमरावती के पास ही जैन तीर्थ मुक्तागिरी के दर्शन करने गये और बाद में घर दमोह आये। घर आते ही बजाज जी को पुलिस का नोटिस मिला कि वे सुबह शाम पुलिस स्टेशन पर आकर हाजिरी दिया करें तथा बिना आदेश प्राप्त किये दमोह से बाहर न जावें। दिनांक 15-9-43 तक बजाज जी को इस आदेश का पालन करना पड़ा।

स्वतंत्रता के बाद बजाज जी ने राजनीति से अपने को अलग कर लिया और जैन समाज के उत्थान के कार्यों में जुट गये। आपने अनेक सामाजिक संस्थाओं की स्थापना की और उनके विकास में योगदान दिया। महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने के लिए अपने स्वयं के व्यय से 'उषा सिलाई कला महिला विद्यालय' की स्थापना की। 1974 में भगवान् महावीर के 2500वें निर्वाण महोत्सव के अवसर पर आपके सक्रिय सहयोग के उपलक्ष्य में केन्द्रीय समिति ने आपको स्वर्ण पदक से सम्मानित किया था। आप तीर्थभक्त की उपाधि से विभूषित थे। आपने दमोह जिले के भूले बिसरे स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों का इतिहास लिखना व उनके चित्रों का संग्रह करना प्रारम्भ किया था। पर सम्भवत: यह प्रकाशित नहीं हो सका। 7-1-1988 को आपका निधन हो गया।

आ0- (1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-2, पृष्ठ-90 (2) प0 जै0 इ0, पृष्ठ-429 (3) 'समर्पित सुमन' लघु पुस्तिका

श्री रूपचंद सौगानी, एडवोकेट

अस्पृश्यता निवारण और हरिजन शिक्षा के लिए समर्पित श्री रूपचंद सौगानी, पुत्र-श्री जौहरी लाल का जन्म जयपुर (राजस्थान) में 14 जून 1907 को हुआ। एल0एल0बी0 की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद सौगानी



जी ने जयपुर में ही वकालत प्रारम्भ कर दी। हिन्दी, उर्दू, अरबी, फारसी, अंग्रेजी आदि अनेक भाषाओं पर आपका समान अधिकार है। 1932 से आप राजनीति में सक्रिय हो गये थे। सौगानी जी ने 1937 में 'नागरिक संघ' की स्थापना की। 1939 से 1951 तक आप 'जयपुर शहर प्रजामंडल' के मंत्री रहे। 'जयपुर शहर कांग्रेस' के मंत्री पद का दायित्व भी आपने सम्हाला था।

1939 में जयपुर राज्य प्रजामण्डल ने नागरिक अधिकारों के लिए जो आन्दोलन छेड़ा था, उसमें सौगानी जी ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया था। 12 फरवरी 1939 को एक सत्याग्रही जत्थे का नेतृत्व करते हुए आप गिरफ्तार कर लिए गये और छह मास के कारावास की सजा आपको भोगनी पड़ी।

सौगानी जी जयपुर राज्य प्रतिनिधि सभा के लिए जयपुर शहर से निर्वाचित हुए और 1944 से 1949 तक प्रजामंडल पार्टी के उपनेता और सचेतक रहे। आपने प्रतिनिधि सभा जयपुर के पहले बजट पर (प्रमुख वक्ता होने के कारण) पूरे सात घंटे तक लगातार भाषण दिया था। आपने इस संसदीय जीवन में सौगानी जी को सर वी0टी0 कृष्णमाचारी और सर मिर्जा इस्माइल जैसे कुशल प्रशासकों के साथ काम करने का अवसर मिला था।

आ0- (1) रा0 स्व0 से0, पृष्ठ-587 (2) जै0 स0 वृ0 इ0, पृष्ठ-310

श्री रोशनलाल बोर्दिया

मेवाड़ प्रजामण्डल व कांग्रेस के कोषाध्यक्ष रहे, उदयपुर (राजस्थान) के श्री रोशनलाल बोर्दिया का जन्म 1903 में हुआ। उदयपुर में सूखे मेवे का व्यवसाय करने वाले बोर्दिया जी 1932 में राजनीति में आये।

उदयपुर के तत्कालीन शासन ने जब राजस्व सम्बन्धी नये कर लगाये तब पूरा उदयपुर इसके विरोध में उठ खड़ा हुआ, लगभग दस हजार लोगों का विशाल जुलूस ज्ञापन देने राजमहल की सीमा में प्रवेश ही कर रहा था कि भयंकर लाठी चार्ज प्रारम्भ हो गया। अनेकों के सिर फटे और अनेकों के हाथ पैर टूटे पर विरोध रुका नहीं। श्री बोर्दिया उस प्रदर्शन के संयोजकों में एक थे । बोर्दिया जी के साथ 64 और व्यक्तियों को गिरफ्तार कर नजरबंद रखा गया। मेवाड़ प्रजामण्डल की स्थापना के बाद 1938 में नाथद्वारा में जो आन्दोलन हुआ उसमें बोर्दिया जी 8 दिन पुलिस कस्टडी में रहे। 1939 से 1954 तक वे मेवाड़ प्रजामण्डल व कांग्रेस के कोषाध्यक्ष रहे।

1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में भी बोर्दिया जी को एक वर्ष उदयपुर व इसवाल की जेलों में रहना पड़ा, उनके मेवे का व्यापार चौपट हो गया, पर इसकी परवाह उन्होंने नहीं की। 1948 में पुलिस की गोली से उनके पैर में भयानक चोट लगी। समाजसेवी के रूप में विख्यात बोर्दिया जी महिला विद्यापीठ, कस्तूरबा मातृमण्डल, हरिजन सेवक संघ, आदिवासी संघ आदि संस्थाओं से सम्बद्ध रहे हैं।

आ0- (1) इ0 अ0 ओ0, 2/400 (2) रा0 स्व0 से0, पृ0 480

श्री लक्ष्मण जैन

इन्दौर (म0प्र0) के श्री लक्ष्मण जैन, पुत्र-श्री आत्माराम जैन का जन्म 1910 में हुआ। 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में आपने भाग लिया, फलत: 1 माह 8 दिन का कारावास आपको भोगना पड़ा। आपके अनुज श्री रामराव जैन ने भी जेल यात्रा की।

आ0- (1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-4, पृष्ठ-43

श्री लक्ष्मीचंद जैन

श्री लक्ष्मीचंद जैन, पुत्र-श्री टीकाराम का जन्म 1912 में जबलपुर (म0प्र0) में हुआ। मिडिल तक शिक्षा प्राप्त कर आप 1930 के स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय हो गये। 1932 में वेयर हाउस पिकेटिंग के समय हुये लाठीचार्ज में आप घायल तथा गिरफ्तार हुये और साढ़े नौ माह का कारावास भोगा। त्रिपुरी कांग्रेस में भी आप स्वयंसेवक बनकर गये थे।

आ0- (1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-1, पृष्ठ-104 (2) स्व0 स0 ज0, पृष्ठ-168

श्री लक्ष्मीचंद जैन

जबलपुर (म0प्र0) के श्री लक्ष्मीचंद जैन, पुत्र-श्री दमरूलाल जैन ने 1921 के आन्दोलन में भाग लिया तथा जबलपुर जेल में 1 वर्ष का कारावास भोगा।

आ0- (1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-1, पृष्ठ-104 (2) स्व0 स0 ज0, पृष्ठ-168

श्री लक्ष्मीचंद जैन

जबलपुर (म0प्र0) के श्री लक्ष्मीचंद जैन, पुत्र-श्री दुलीचन्द ने 1930 और 1932 के आन्दोलन में भाग लिया, गिरफ्तार हुए और लगभग 1 वर्ष का कारावास भोगा।

आ0- (1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-1, पृष्ठ-105 (2) स्व0 स0 ज0, पृष्ठ-168

श्री लक्ष्मीचंद जैन

श्री लक्ष्मीचंद जैन, पुत्र-श्री रज्जीलाल का जन्म 1914 में सागर (म0प्र0) में हुआ। विद्यार्थी जीवन से ही विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार आन्दोलन में आपने भाग लिया तथा रचनात्मक कार्यों में संलग्न रहे। भारत छोड़ो आन्दोलन में आप गिरफ्तार हुये तथा एक वर्ष का कारावास भोगा।

आ0- (1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-2, पृष्ठ-63 (2) आ0 दी0, पृष्ठ-79

श्री लक्ष्मीचंद जैन

सागर (म0प्र0) निवासी और विदिशा प्रवासी श्री लक्ष्मीचंद जैन, पुत्र-श्री हल्के लाल जैन ने 1942

के भारत छोड़ो आन्दोलन में भाग लिया तथा 18 सित0 1942 से 6 मार्च 1943 तक का कारावास भोगा।

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-2, पृष्ठ-63 (2) आ0 दी0, पृष्ठ-79

श्री लक्ष्मीचंद नारद

सतना (म0प्र0) के श्री लक्ष्मीचंद नारद, पुत्र-श्री मुन्नालाल जैन ने 1931 के स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय रूप से भाग लिया व 15 दिन की सजा भोगी।

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-5, पृष्ठ-275

श्री लक्ष्मीचंद समैया

जबलपुर (म0प्र0) नगर निगम के पार्षद रहे श्री लक्ष्मीचंद समैया, पुत्र-श्री बाबूलाल का जन्म 1906 में जबलपुर में हुआ। 1942 के आन्दोलन में 1 वर्ष 1 माह 8 दिन का कारावास आपने काटा। साम्प्रदायिक मेल-जोल बढ़ाने में आपका सक्रिय योगदान रहा था। आपने 'हरिजन सेवक संघ' में अपनी सक्रिय भूमिका निभाकर अस्पृश्यता निवारण का प्रयोगात्मक रूप प्रस्तुत किया था।

आ0- (1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-1, पृष्ठ-105 (2) स्व0 स0 ज0, पृष्ठ-168

श्री लक्ष्मीचंद सोधिया

पिताश्री का देहावसान होने पर सहानुभूति में जेलर द्वारा दिये गये अवकाश को भी स्वीकार न करने वाले सुरखी, जिला-सागर (म0प्र0)निवासी श्री लक्ष्मीचंद सोधिया 1941 में जेल गये तथा 1942 में 20 अगस्त को पुन: गिरफ्तार कर लिये गये। आपके जेल जाने के दो माह बाद आपके पिताश्री का देहान्त हो गया था। आपके घर में आपके सिवा कोई भी आदमी कमाने वाला नहीं था, ऐसी दशा होते हुए भी आपने जेल की 15 दिन की छुट्टी डी0 सी0 के कहने पर मंजूर नहीं की। आपके ऊपर पुलिस ने 6 केस चलाये थे, जिनमें 2 साल 6 माह की सजा हुई थी।

आ0- (1) जै0 स0 रा0 अ0

श्रीमती लक्ष्मीदेवी जैन

सहारनपुर (उ0प्र0) की श्रीमती लक्ष्मीदेवी जैन ने 1941-42 में जेल यात्रा की थी। आपके पति बाबू अजितप्रसाद जैन भारतीय संविधान निर्मातृ सभा के सदस्य रहे थे। वे केन्द्र में पुनर्वास, खाद्य एवं कृषिमंत्री, उ0प्र0 कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष, राज्यसभा सदस्य, केरल के राज्यपाल आदि अनेक पदों पर रहे थे। श्री जैन 1926 से भारत के स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय हो गये थे उन्होंने अनेक बार जेल यात्रायें कीं। आप उनकी सहधर्मिणी होते हुए भी स्वतंत्र विचारक थीं। 1935 में जब स्वतंत्रता संग्राम के लिए सहारनपुर में 'स्त्री समाज' की स्थापना हुई तो आप इसकी प्रमुख कार्यकर्त्री थीं।

1941-42 में जब आपने जेल यात्रा की तो आपकी कुछ महीने की पुत्री आपके साथ थी। भगवान् महावीर की साधना और पूज्य बापू की सहनवृत्ति से प्रेरणा लेने वाली श्रीमती लक्ष्मीदेवी जैन के सन्दर्भ में प्रसिद्ध साहित्यकार एवं स्वतंत्रता सेनानी श्री कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' ने जैन संदेश में लिखा है-'आपका बाहरी परिचय यह कहकर दिया जा सकता है कि आप श्रीमती अजित प्रसाद जैन हैं पर सच यह है कि यह आपका कोई परिचय ही नहीं है। निश्चय ही यदि श्रीमती लक्ष्मीदेवी का विवाह किसी गरीब, अशिक्षित से हुआ होता, तब भी वे उतनी ही आदरणीय होतीं, जितनी आज हैं। पर यदि भाई अजितप्रसाद जी के साथ किसी इंग्लैण्ड रिटर्न बीबी का विवाह हुआ होता तो आज उनका जीवन कुछ और तरह का होता। यही नहीं कि वे उनकी सब प्रकार की चिन्ताओं का बीमा हैं, उनका बल भी हैं। प्रतिदिन जितने और जितने प्रकार के अतिथियों का स्वागत उन्हें करना पड़ता है, और उसमें जो सफलता उन्हें मिलती है उस पर ताजमहल होटल का मैनेजर भी ईर्ष्या कर

सकता है। फिर वह बेचारा वैसी ममता कहाँ से लायेगा।'

आ0- (1) स0 स0, भाग-1, पृष्ठ-189, 544 (2) जै0 स0 रा0 अ0 (3) उ0 प्र0 जै0 ध0, पृष्ठ-86 (4) स्वाधीनता आन्दोलन और मेरठ, पृष्ठ-371

श्री लक्ष्मीलाल जैन

श्री लक्ष्मीलाल जैन का जन्म 1910 में गड़वेडा (रायपुर) म0प्र0 में हुआ था। आपके पिता का नाम श्री ज्ञानमल जैन था। 1942 का राष्ट्रीय आंदोलन, जो कि गांव-गांव में फैल चुका था, गांधी जी के 'करो या मरो' नारे ने जनता को घर से बाहर निकलकर, सड़क पर आंदोलन करने को प्रेरित कर दिया था। तब श्री लक्ष्मीलाल जैन भी सब कुछ भूलकर राष्ट्र की सेवा में आगे आये और आंदोलन में सक्रिय हो गये। आंदोलन में भाग लेने के कारण श्री जैन को 3 माह 15 दिन का कारावास मिला था।

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-3, पृष्ठ-78

श्री लाजपतराय जैन

सहारनपुर (उ0प्र0) के मौहल्ला कायस्थान निवासी श्री लापजतराय जैन को 26 मार्च 1932 को साइक्लोस्टाइल पेपर छापकर बांटने के अपराध में गिरफ्तार कर तीन माह का दण्ड दिया गया था।

आ0-(1) स0 स0, भाग-1, पृष्ठ-163 एवं 544

श्री बाबू लाभचंद छजलानी

'बाबूजी' उपनाम से विख्यात, चुंबकीय व्यक्तित्व के धनी, श्री लाभचंद छजलानी का जन्म 31 जुलाई



1909 को वाराणसी में हुआ। आपके पिता श्री हरकचंद छजलानी जौहरी थे और हीरे जवाहरात के मामले में वे इन्दौर के होल्करों के सलाहकार थे। लाभचंद जी 1922 में इन्दौर आये और बहुत कम वेतन पर राजकुमार मिल में नौकरी करने लगे। इन्हीं दिनों स्वाधीनता आन्दोलन के सन्दर्भ में वे कांग्रेस और प्रजामण्डल की गतिविधियों में भाग लेने लगे, फलत: यह नौकरी भी छोड़नी पड़ी, जो उनकी आजीविका का मुख्य स्रोत थी। प्रजामंडल में संगठन की सर्वोच्च जिम्मेदारियों कर निर्वहन करने के बाद भी वे प्रचार से सदैव दूर रहे, कभी किसी पद को नहीं स्वीकारा। प्रजामंडल की पत्रिका के अंकों को गुपचुप साइक्लोस्टाइल करवाकर बंटवाने का इन्तजाम लाभचंद जी ही करते थे।

युवावस्था में ही वे खादी प्रेमी बने। खादी की धोती, कुर्ता और सफेद टोपी, गौर वर्ण, स्वस्थ शरीर और स्मित मुस्कान, यही उनका व्यक्तित्व था। दाढ़ी नियमित बनाने का शौक उन्हें नहीं था, जो उनकी कर्मठता को प्रतिपादित करता है।

उन्होंने अपने लिए कभी विलासिता नहीं चाही। अपने जीवन के पचास वर्ष उन्होंने साइकिल पर दफ्तर जाते हुए गुजारे थे। मनोरंजन के नाम पर उन्हें सिर्फ एक ही शौक था, ब्रिज खेलना, वह भी रात साढ़े नौ बजे तक। अपने अंतिम दिनों में वे परिवार के युवा और नन्हें सदस्यों के साथ मंदिर जाया करते थे।

1931-34 के मध्य के उनके राजनैतिक कार्यों के सन्दर्भ में प्रसिद्ध पत्रकार श्री नरेन्द्र तिवारी ने लिखा है-

'स्वाधीनता संग्राम के दौरान हम लोगों की एक क्रांतिकारी टोली थी। भाई नारायणसिंह सपूत, महावीरसिंह आदि उसमें अग्रणी थे। उस टोली में और भी कई लोग शामिल थे। यह बातें 1931 से 1934 के बीच की हैं।

भाई नारायणसिंह वैसे तो दूधिया ग्राम के थे, परन्तु उन्होंने जूनी कसेरा वाखल में एक मकान किराए पर ले रखा था। हम अक्सर उसी मकान में इकट्ठे हुआ करते थे। बाबूजी (लाभचंद जी) से मेरी पहली

मुलाकात उसी मकान पर हुई थी। वे सुबह बड़ी जल्दी साइकिल पर घर से निकल पड़ते और कार्यकर्ताओं के घर जाकर उनकी खैर-खबर लेते, उनकी जरूरतों की पूर्ति करवाते, हर तरह की मदद करते। यह उनका रोज का एक नियम जैसा था। इसी कारण वे भाई नारायणसिंह के घर भी अक्सर सुबह-सुबह आ जाते। कार्यकर्ताओं की क्या समस्याएं हैं, कैसी तबियत है, उनके घर की क्या परिस्थिति है, आदि सब बातों की जानकारी वे पूछते और मदद करते, हौसला बढ़ाते। उनकी बातचीत सिर्फ भाई नारायणसिंह से होती। अन्य साथियों के नाम पते गुप्त रखे जाते। लाभचंद जी को भी उनके नाम पते नहीं मालूम थे। फिर भी, वे आते और सब की खैर-खबर पूछ जाते। पूछते कि सब ठीक-ठाक तो है। भाई नारायणसिंह व हमको ऐसा लगता मानो अपने परिवार का ही कोई बड़ा व्यक्ति हमारी खैर-खबर रखता है। कार्यकर्ताओं में वे कोई भेद नहीं करते। क्रांतिकारी हो या गांधीवादी या व्यवसायी, वे सबके पास साइकिल पर सुबह-सुबह जाते, मिलते, पूछताछ करते, जरूरत के मुताबिक समानत: सबकी मदद करते। एक तरफ हम पिस्तौल-बंदूक- हथगोले-बम वालों का क्रांति दल था, तो दूसरी ओर प्रजामंडल में कम्युनिस्ट कार्यकर्ता दिवाकर, सरमंडल और खंडकर आदि भी थे, जिनकी विचारधारा और काम करने का तरीका गांधीवादियों से मेल नहीं खाता था। तीसरी तरफ सेठ ब्रदी भोला जैसे व्यवसायी भी कार्यकर्ता, हमदर्द व मददगार थे। लाभचंद जी सब से समानत: मिलते थे। यह उनका एक शौक कहिए या स्वयं का कर्तव्य बोध कहिए जो भी था, था।'

1942 के आन्दोलन में छजलानी जी ने खुलकर भाग लिया। वे गिरफ्तार कर लिये गये, जेल में उनके साथ श्री नरेन्द्र तिवारी, श्री बाबूलाल पाटोदी, श्री बसन्तीलाल सेठिया, श्री राहुल बारपुते आदि थे। वे लगभग एक साल जेल में रहे।

आजादी के बाद छजलानी जी ने 1947 की अंतिम तिमाही में श्री कृष्णकान्त व्यास से 'नई दुनिया' समाचार पत्र ले लिया। व्यास जी इसे चला नहीं पा रहे थे। आज 'नई दुनिया' मध्य प्रदेश का सर्वाधिक प्रसार संख्या वाला दैनिक है। यह देश के भाषायी समाचार पत्रों में भी बहुत आगे है। अखबार को प्रभावशाली बनाने के लिए 'बाबूजी' ने कितने कष्ट झेले, कितनी रातों तक जागरण किया यह बताना असम्भव नहीं तो कठिन अवश्य है। इस समाचार पत्र ने एक लम्बी यात्रा अपने वर्तमान स्वरूप को पाने में की है। अपने साथियों से बाबूजी का जो मृदुल व्यवहार रहा है वह भी इस समाचार पत्र की प्रगति में एक कारण है।

छजलानी जी के व्यक्तित्व का एक महत्त्वपूर्ण पहलू है 'पर्दे के पीछे रहना'। उन्होंने जो किया, जो दिया उसके बदले में कभी कुछ नहीं चाहा। 'जो व्यक्ति एक बार राजनीति में प्रवेश कर जाता है, वह प्राय: जिन्दगी भर उससे लौट नहीं पाता।' छजलानी जी ने इसे झूठा साबित कर दिया। रियासतों के विलय के बाद जन्मा 'मध्यभारत' आठ वर्षों तक कायम रहा। इस पूरे समय में लाभचंद जी 'किंगमेकर' कहलाते रहे। मंत्रिमंडल उनकी राय से बनते और बदलते रहे, लेकिन उन दिनों भी मंच पर या मंत्रिमंडल में या कैमरे के सामने आने की वासना छजलानी जी में कभी पैदा नहीं हुई। 1957 के आरम्भ में कांग्रेस के वार्षिक अधिवेशन का सारा इन्तजाम उन्होंने किया, लेकिन दस्तावेजों में कहीं इसका उल्लेख नहीं मिलता। 19 जनवरी 1981 को छजलानी जी का देहावसान हो गया, पर यश:शरीर से वे आज भी हमारे बीच हैं।

आ०-(1) जै० स० रा० अ० (2) नई दुनिया, 20-1-81 एवं 15-8-81 तथा 10-10-97

श्री लालचंद चोरड़िया

'मन्दसौर जिला स्वतंत्रता संग्राम सैनिक संघ' के अध्यक्ष श्री लालचंद चोरड़िया का जन्म मन्दसौर



(म0प्र0) जिले के भानपुरा कस्बे में 30-12-1920 को हुआ। आपके पिता श्री मन्नालाल चोरड़िया राष्ट्रीय विचारधारा सम्पन्न सम्भ्रान्त नागरिक थे। 1938 में श्री वैजनाथ जी ने भानपुरा में प्रजामंडल की शाखा स्थापित की और श्री मन्नालाल चोरड़िया को अध्यक्ष बनाया। उस समय लालचंद जी 18 वर्ष के नवयुवक थे, अपने अनुज श्री विमल कुमार चोरड़िया (जो बाद में राज्यसभा के सदस्य रहे, जिनका परिचय इसी ग्रन्थ में दिया गया है) के साथ आप आन्दोलन में सक्रिय हो गये। 1941 में आप होल्कर महाविद्यालय, इन्दौर के छात्र बने और वहाँ क्रान्तिकारी गतिविधियों में भाग लेने लगे। अपने समग्र राजनैतिक जीवन को रेखांकित करता हुआ जो संस्मरण आपने श्री रविशर्मा को दिया था उसे हम साभार यहाँ प्रस्तुत कर रहे हैं। आपने बताया था-

"सन् 1938-39 में जब मैं पिलानी पढ़ता था, तब श्री बैजनाथ महोदय और उनके साथ तोतलाजी भानपुरा आये और हमारे घर ठहरे। उनसे हमारी बड़ी आत्मीयता हो गयी और हम इसी कारण प्रजामण्डल की राजनीति में आये। हमारे पिताश्री मन्नालाल जी चोरड़िया प्रजामण्डल के अध्यक्ष थे। हमारा सारा परिवार धीरे-धीरे इस आजादी की लड़ाई में शामिल हो गया। मेरे छोटे भाई श्री विमल कुमार चोरड़िया सभाओं में वन्दे मातरम् गाते थे तथा सभा का संचालन करते थे।

मेरे मन में बचपन से ही विद्रोह के संस्कार रहे। घर में भी मैं विद्रोही था, प्रजामण्डल के नेताओं ने उस समय इस विद्रोह को रचनात्मक दिशा दी। आज भी अन्याय सहन नहीं हो सकता, असत्य सहन नहीं हो सकता। गरीब और अमीर का भेद सहन नहीं हो सकता। मैं पहले मानवतावादी हूं और फिर राष्ट्रवादी।

1942 के आन्दोलन के समय हम होल्कर कालेज में थे। कालेज के अधिकारी वन्दे मातरम् गाने को पसन्द नहीं करते थे। सर तेजबहादुर सप्रू और एक नामी वकील जयकर, होल्कर कालेज में पधारे। मैं उस समय शायद होल्कर कालेज यूनियन का वाइस प्रेसिडेंट था। हमने बैठक के शुरू में ही यह मांग रखी कि 'वन्दे मातरम्' होगा तो ही मीटिंग होगी। हमारी यह मांग नहीं मानी गयी। हम लोगों ने बैठक नहीं होने दी। सर सप्रू और श्री जयकर नहीं बोल सके। जब हम बाहर मिले तो हमने उनसे कहा कि इसको आपका अपमान न मानिये, भारत माता के सम्मान में हम लड़ रहे हैं और आपको तो हम सुनना चाहते हैं। आप यही कहिये वन्दे मातरम् होगा फिर आप मीटिंग करिये। सर सप्रू ने इस बात को बहुत सराहा।

होल्कर कालेज में हम लोगों का एक ग्रुप था। पढ़ना लिखना एक तरफ, हमेशा यही सोचते रहते थे, कि किसी तरह राष्ट्र का सम्मान बढ़े। हमारे ग्रुप में उस समय न्यायमूर्ति श्री गोवर्धन लाल ओझा, श्री होमीदाजी, नन्दकिशोर भट्ट, कन्हैयालाल डूंगरवाला आदि लोग शामिल थे। तो उस वक्त यह सवाल उठा कि होल्कर कालेज पर तिरंगा झण्डा कौन फहराये। इस बात में कोई सन्देह नहीं था कि यदि ऐसा किया, तो मार डाले जायेंगे। पर हम करीब दस छात्र एक दिन अचानक झण्डा फहराने के लिए चढ़ गये। कालेज प्रशासन के लोग बाद में हू-हां ही करते रहे।

9 अगस्त 1942 को इन्दौर राज्यप्रजामण्डल ने आन्दोलन छेड़ा। करो या मरो। इसके पहले एक घटना और हो चुकी थी। उस समय अश्रुगैस के गोले नहीं थे। तो सरकार क्या करती थी कि सभाओं और जुलूसों को विसर्जित करने के लिए गर्म पानी फायर ब्रिगेड से डलवाती थी, घोड़े दौड़ाती थी। राजवाड़ा चौक पर हमारी एक मीटिंग होने वाली थी। सरकार ने उस बैठक को समाप्त करने के लिए गर्म पानी बरसाया, घोड़े

दौड़ाये। मैं घायल होकर बेहोश हो गया। एक मित्र हमें उठाकर होल्कर स्टेट के रेवेन्यू मिनिस्टर श्री हीराचन्द जी कोठारी के घर मोरसली गली में ले गये। रात भर उनकी पत्नी ने हमें सेंका- सांका। सबेरे जब होश आया तो मालूम हुआ कि हम होल्कर स्टेट के रेवेन्यू मिनिस्टर के घर पर हैं। यह बात श्री कोठारी के लिये खतरनाक हो सकती थी। अतः तत्काल उसी वक्त हम होल्कर कालेज आ गये।

होल्कर कालेज आने पर हमें प्रजामण्डल की ओर से आदेश मिले कि मैं और प्रद्युम्न कुमार त्रिपाठी गरोठ और भानपुरा सर्कल सम्हालें। 20 या 22 अगस्त 1942 को हम लोग यहां पर आ गये। गांवों में प्रजामण्डल की गतिविधियों की वजह से सरकार को लगा कि यहां भी कुछ गड़बड़ हो सकती है। एक रोज हम लोग भानपुरा में बहुत बड़ा जुलूस लेकर निकले। मैं घोड़े पर था। जब बाजार में होता हुआ जुलूस तम्बोलियों के मन्दिर पहुंचा तो पुलिस ने बैरिकेड्स लगा दिये थे। वहीं पर पुलिस ने हमें गिरफ्तार कर लिया, घोड़ा भी जब्त कर लिया और यहां से पैदल गरोठ तक लेकर गये। (गरोठ भानपुरा से 26 किमी0 दूर है)। वहां ले जाकर लाकअप में बंद कर दिया। चौबीस घण्टे तक खाना नहीं दिया। उस समय इन्दौर स्टेट की एक पालिसी थी कि प्रजामण्डल में भाग लेने वाले युवकों को इतना तंग किया जाय कि वे आन्दोलन से दूर ही रहें।

इस नीति के तहत पहले तो हमें काफी यातनाएं दी गयीं। फिर होल्कर स्टेट के तत्कालीन होम मिनिस्टर श्री हर्टन स्वयं गरोठ आये। उस समय मैं अकेला बन्दी था। गरोठ का अनुभव बड़ा दुःखद था। पता नहीं क्यों, जनता में उन दिनों घट रही इन घटनाओं के प्रति कोई चेतना नहीं थी। अधिकारियों से किसी ने इस घटना के बारे में पूछताछ नहीं की। तो श्री हर्टन ने सब हथकड़ी वगैरह हटवाईं। हथकड़ियां आदि हटवाकर वे मुझे अपनी कार से रामपुरा पुलिस स्टेशन ले गये। अपने पास बैठाकर मुझे प्रलोभन दिये 'तुम्हें अच्छी नौकरी दे देते हैं। तुम अपनी जिन्दगी क्यों बरबाद कर रहे हो।' मैंने उत्तर दिया कि 'आप हमारा देश छोड़ दो, हम आन्दोलन छोड़ देते हैं।'

इसके बाद हमें भानपुरा वापस ले आये। यहाँ पर मुकदमें चले और ढाई साल की सजा हुई। बाद में समझौता हुआ और जेल से छोड़ दिया गया। 29 जून 43 को उन्होंने हमें छोड़ा।

आजादी की लड़ाई में बार-बार जेल आने जाने में बहुत सी चीजें सीखने को मिलीं। संस्कार और मजबूत हुए। सबसे बड़ी बात कि न मैं किसी का शोषण करूं और न ही मेरा कोई शोषण करे और जहां चाह है वहां राह है।

एक बार इन्दौर सेंट्रल जेल में बहुत बड़ा वाकया हुआ, जन्माष्टमी थी। जेल के जिस बैरक में हम लोग बन्द थे, उस बैरक में करीब दो सौ लोगों के ठहरने की व्यवस्था थी। चौथी बैरक में कीर्तन हो रहा था, जन्माष्टमी के उपलक्ष्य में। रात को करीब साढ़े ग्यारह बजे का समय होगा कि चौथी बैरक के लालटेन और कण्डील अचानक बुझ गये। इस पर चौथी बैरक वालों ने हल्ला कर दिया। हम समझे कि जेल टूट गयी। हमने भी अपने-अपने टामलोट और थालियां इस आशा के साथ उहालनी शुरू कर दीं कि शायद छत की खपरैल टूट जाय और हम लोग यहां से भागें। जेल के पहरेदार भी यही समझे कि जेल टूट गयी है, वे भाग खड़े हुए। आनन-फानन में यह बात सब ओर फैल गयी कि जेल टूट गयी। फोन खड़खड़ाये गये। आधे घण्टे में प्राइम मिनिस्टर, होम मिनिस्टर को खबर लग गयी। मिलिट्री आ गयी। पूछताछ चालू हुई। पहली बैरक में आकर पूछा, कि क्या बात है, हमने कहा कि दूसरी बैरक वालों से पूछो, दूसरी बैरक वालों ने कहा कि हम तो मजे में हैं, तीसरी बैरक वालों से

पूछो। तीसरी बैरक वालों ने कहा कि यहां तो सब ठीक है, चौथी बैरक वालों से पूछो। चौथी बैरक वालों से पूछा, उन्होंने कहा कि कण्डील गिर गया था इसी से हो हल्ला हुआ था। सबेरे पूरे शहर में पेम्पलेट्स बंटे कि सरकार कैसे बेवकूफ बनी।

जेल में हमारे पत्रों का आना-जाना निरन्तर चलता रहता। घर से जो भोजन आता था, उसमें रोटियों के भीतर संदेश आते थे। रोटी इस ढंग से बनाई जाती थी कि उसके पुड़ में संदेश होता था। उस जमाने में भी ऐसी कलाकारियां चलती थीं। हम तीन-चार महीने तो इन्दौर सेन्ट्रल जेल में रहे, दो-तीन महीने गरोठ जेल में रहे और फिर भानपुरा जेल में, इस तरह कुल मिलाकर आठ महीने 6 दिन जेल में रहे।

गरोठ में उस समय डी0 आई0 जी0 दांतरे थे। उसी समय के आसपास की बात है कि एक जुलूस हम लोगों ने निकाला। हमने अपने मकान पर तिरंगा झण्डा फहरा दिया। इसकी खबर डी0आई0जी0 दांतरे को मिल गयी। वे सदल-बल गरोठ से भानपुरा आये। उन्होंने अपने साथ आये जवानों से तिरंगा झण्डा उतारने के लिये कहा। उस समय सैकड़ों लोग बाहर खड़े झण्डा उतारने के दृश्य को देख रहे थे। जैसे ही वे लोग झण्डे तक पहुंचे, झण्डे को अचानक तब एक चील लेकर उड़ गयी। सारे लोग तालियां बजाने लगे। सिटपिटाये डी0आई0जी0 ने तब हुक्म दिया कि-'झण्डा ही नहीं है तो जिस डण्डे पर झण्डा था, उसी को सबूत के तौर पर जब्त करो।'

हमें किसी तरह कॉलेज में प्रवेश मिला। सन् 43 की बात है यह। हमने कॉलेज की सोशल गैदरिंग शुरू की, यह गैदरिंग 41 के बाद बन्द हो गयी थी। इसके लिये हमने महान् वैज्ञानिक सर सी0वी0रमन को आमंत्रित किया। सर सी0वी0रमन के आने की खबर पाकर महाराजा होल्कर भी इसमें आने को सहमत हो गये। उन्होंने कॉलेज में एक स्वीमिंग पूल के लिये 41 हजार रुपये का दान भी दिया था। उसी का उद्घाटन करना था। तो सोशल गैदरिंग के पहले दिन स्वीमिंग पूल का उद्घाटन हुआ। इसमें हमने भारतमाता की वन्दना के नाम से बड़ी तरकीब से 'वन्दे मातरम्' शुरू करवा दिया। हम कॉलेज के यूनियन अध्यक्ष और प्रिंसिपल साहब यह कार्यक्रम शुरू कराकर एक कमरे में आकर बैठ गये। इससे महाराजा होल्कर चिढ़ गये। कार्यक्रम छोड़कर बाहर आये। हमें ढुंढवाया। मिलने पर बड़े गुस्से से बोले कि आपने बगावत की है। हमने कहा कि हम लोग तो इन्तजाम में लगे थे, हमें मालूम ही नहीं कि क्या हुआ। उन्होंने कहा कि 'वन्दे मारतम्' का गायन हुआ और आपको पता नहीं। हमने कहा कि हमने कहीं लिखा नहीं कि 'वन्दे मातरम्' होगा फिर भी हम इसकी पूरी जांच करवा लेते हैं, पता लगा लेते हैं। किसी प्रकार महाराज साहब को शान्त किया। वे चल दिये हम लोग वापस आ गये।

सन् 46 में आल इण्डिया स्टेट्स पीपुल्स कांफ्रेंस थी, प्रजामण्डल की, उदयपुर में। इसमें पं0 जवाहरलाल नेहरू, शेख अब्दुल्ला आये थे। इस कांफ्रेंस से लौटकर आ रहे थे, हम लोग रतलाम में रेलवे के एक डिब्बे में जाकर बैठ गये। गाड़ी चलने के पांच सात मिनिट पहले ही एक व्यक्ति ने इस डिब्बे पर 'रिझर्व फार पोस्ट ऑफिस' चॉक से लिख दिया और कहा कि उतरो। हमने कहा कि हम नहीं उतरेंगे, आखिरकार डेढ़ घण्टा गाड़ी लेट होने के बाद हम सबको गिरफ्तार करके थाने में ले जाकर बन्द कर दिया। जैसे ही रतलाम में लोगों को खबर लगी वैसे ही डॉ0 देवी सिंह आदि आये। उन्होंने हमारी जमानत ली तथा शाम को सात बजे हम लोग इन्दौर पहुंचे। मुकदमा चला। यह मुकदमा रेसीडेंसी में 9-10 महीने चला पर रेलवे को बाद में माफी मांगनी पड़ी।

हमारे आन्दोलन में भाग लेने की वजह से हमारे परिवारजनों को काफी परेशानी उठानी पड़ी। काफी आर्थिक संकटों का सामना करना पड़ा।"

1948 में आपने एल0एल0बी0 की परीक्षा उत्तीर्ण की, किन्तु सजायाफ्ता होने से वकालत की सनद नहीं मिली। 27-10-72 को प्रसारित रेड़ियोवार्ता में जब आपसे प्रश्न किया गया कि - 'आजादी प्राप्ति के समय आपको कैसा महसूस हुआ' तब आपने कहा था कि- 'आजादी प्राप्त करना जीवन का लक्ष्य बन चुका था, अत: इस लक्ष्य की प्राप्ति पर आनन्दातिरेक हुआ और मैं अनुभव करने लगा कि मेरी व मेरे देशवासिसों की प्रत्येक श्वास अब स्वतंत्र है।'

आ0- (1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-4, पृष्ठ-218 (2) स्व0 स0 म0, पृष्ठ-62 (3) रेडियो वार्ता (4) म0 स0, पृष्ठ-ब 53 (5) नई दुनिया, (इन्दौर) अगस्त 1987 तथा 9 अगस्त 1997 (6) चिन्तन सुधा (7) जिनवाणी

नगर सेठ श्री लालचंद जैन

राष्ट्रीय आन्दोलन में भाग लेने वाले 'पहले देश फिर समाज' के सिद्धांत को अपनाने वाले थे। श्री लालचंद जैन ऐसे ही व्यक्तित्व थे, वे जहाँ राष्ट्रीय आन्दोलन में जेल गये वहीं उन्होंने जैन संस्थाओं को भी भरपूर दान दिया। शुभ्र खादी का कुर्ता, बंद गले का कोट और ऊँची पट्टी की खादी की टोपी लगाये सेठ लालचंद जी प्राय: दमोह की हर सामाजिक सभा में सभापति बने दिखायी देते थे। जब जनता कांग्रेस की सभाओं में आने से भी डरती थी और मजाक उड़ाती थी तब भी सेठ साहब तखत पर बैठे भाषण देते रहते थे।

आपका जन्म दमोह (म0प्र0) के सुप्रसिद्ध सेठ घराने में पिता श्री नाथूराम जी के यहाँ हुआ था। धार्मिक, सामाजिक एवं राजनीतिक सभी क्षेत्रों में आप निपुण थे और सिद्धान्त के पक्के थे। 1932 में सरकार के खिलाफ महात्मा गांधी ने जब असहयोग आन्दोलन चलाया, तब उसमें आपका विशेष योगदान रहा, तभी आप जेल भी गये। बाद में आप जिला कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष बने। आपके पूर्वजों ने श्री कुण्डलपुर जी, श्री नैनागिरि जी एवं दमोह में मन्दिरों का निर्माण कराकर पञ्चकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव के साथ गजरथ भी चलवाये थे।

सेठ लालचंद जी धार्मिक अनुष्ठानों में नियम से भाग लेते थे। श्री सिद्धक्षेत्र कुण्डलपुर के अध्यक्ष पद पर 15 वर्षों तक रहकर आपने क्षेत्र की सेवा की थी। आपके सहयोग से दमोह जिला में कई संस्थायें चल रही हैं। आपने श्री वर्णी दि0 जैन पाठशाला को 60 एकड़ भूमि देकर उसके सञ्चालन में लाखों रुपयों का दान दिया था।

पूज्य श्री वर्णी जी महाराज, 'जिन्होंने आजादी के लिए अपनी चादर भी दे दी थी,' के दमोह पदार्पण के समय आपने उनके उपदेशों से प्रभावित होकर उस समय एक मुस्त 50 हजार रुपये का दान दिया था। आपकी धर्मपत्नी भी उदार एवं दानशीला थीं। श्री सिद्धक्षेत्र कुण्डलपुर की 20 एकड़ जमीन, जो फतेपुर के बगीचे के नाम से जानी जाती है, को आपने ही दान में दिया था। उस बगीचे से क्षेत्र को आज भी हजारों रुपयों की वार्षिक आमदनी है।

आ0- (1) प0 जै0 इ0, पृष्ठ-367 (2) श्री संतोष सिंघई द्वारा प्रेषित परिचय

श्री लालचंद सोनी

मदनगंज (किशनगढ़) राजस्थान के श्री लालचंद सोनी नागरिक अधिकारों के लिए आर्य समाज के हैदराबाद सत्याग्रह में किशनगढ़ से सर्वप्रथम सत्याग्रही बनकर गये थे। स्थानीय 'उपकारक मण्डल' के द्वारा आपने राजपूताना के भंयकर अकाल में जो सराहनीय सेवा की थी, वह इतिहास में सदैव स्मरणीय रहेगी। आपने ही बाद में इस 'उपकारक मण्डल' का रूप परिवर्तन करके उसे प्रजामण्डल का रूप दे दिया था।

1939 में आपको राजनैतिक प्रवृत्तियों के कारण डेढ़ वर्ष की कैद तथा जुर्माने की सजा हुई थी, जुर्माना अदा न करने के कारण आपको 6 माह जेल में और रहना पड़ा। 1942 के आन्दोलन में आप अजमेर में सत्याग्रह करने पर गिरफ्तार कर लिये गये और डेढ़ वर्ष की सजा हुई, लेकिन बीमारी के कारण आपको सजा पूरी होने से पहले ही छोड़ दिया गया। जेल में आपको बहुत यातनायें और मार तक सहनी पड़ी थी।

आपने हरिजन पाठशाला का संचालन भी किया। 1946 ई0 के फाल्गुन मास में आपके पिता सेठ नेमीचंद जी सोनी ने मन्दिर निर्माण करके विशाल आयोजन के साथ पञ्चकल्याणक प्रतिष्ठा भी कराई थी।

आ0-(1) जै0 स0 रा0 अ0, पृष्ठ-69

श्री लीलाधर सराफ

व्यायाम के शौक ने जिन्हें आजादी का दीवाना बना दिया, ऐसे श्री लीलाधर सराफ, पुत्र-श्री मल्थूराम सराफ का जन्म दमोह (म0प्र0) में 1895 में हुआ। आपने जैन और अजैन सभी को श्री बाहुबली व्यायामशाला का सदस्य बनाया। यहाँ तक कि श्री गजाधर प्रसाद मास्टर को प्रेरणा देकर लाठी, लेजिम, तलवार, भाला, पटा, बनेटी और मलखम्भ के खेल सीखने के लिए श्री हनुमान व्यायामशाला, अमरावती भिजवाया और लौटने पर बाहुबली व्यायामशाला के सभी सदस्यों और अपनी लड़की सहित बहुत सी लड़कियों को लेजिम आदि की ट्रेनिंग दिलवायी।

1942 के आन्दोलन में आपने बाहुबली व्यायामशाला के सदस्यों को झौंक दिया। बहुत से पकड़े गये और बहुत से छिपकर बुलेटिन छापने का काम इनके निवासस्थान पर करते रहे। परन्तु पुलिस को इसकी अंत तक भनक भी न हुई। दमोह में होने वाले अनेक क्रांतिकारी कार्यों का सञ्चालन आपके निवासस्थान से ही होता था। आपका कार्य पुलिस से मिलकर रहना और यह पता लगाना था कि आज किसके पकड़े जाने की आशा है व कहाँ तलाशी होने वाली है।

जो सेनानी जेल चले जाते उनके घरों की खान-पान सहायता की जिम्मेदारी श्री प्रेमचंद 'उस्ताद' के साथ श्री लीलधर सराफ और श्री राजाराम बजाज की ही रहती थी। क्रान्तिकारी गतिविधियों के कारण म0प्र0 शासन ने आपको स्वतंत्रता सैनानी का ताम्रपत्रादि प्रदान कर सम्मानित किया था। 2-8-80 को आपका निधन हो गया।

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 स0 सै0, भाग-2, पृष्ठ-90
(2) श्री संतोष सिंघई, दमोह द्वारा प्रेषित परिचय

पंडित लोकमणि जैन

बहुमुखी प्रतिभा के धनी, जैन दर्शन के विद्वान् और समाज सुधारक पं0 लोकमणि जैन का जन्म



ग्राम-हिनौतिया (म0प्र0) में पिता आशाराम जी के घर 1890 में हुआ। आपका प्रारम्भिक अध्ययन जैन बोर्डिंग हाऊस, जबलपुर में हुआ। बाद में आपको वाराणसी के प्रसिद्ध श्री स्याद्वाद महाविद्यालय में भेज दिया गया, जहाँ से आपने मध्यमा, शास्त्री, आयुर्वेदरत्न और वैद्यविशारद की उपाधियाँ प्राप्त कीं। जैन दर्शन के गहन अध्ययन से स्याद्वाद विद्यालय ने इन्हें खतौली, दिल्ली, मेरठ एवं मोरेना आदि स्थानों पर भेजा।

मोरेना में पं0 गोपालदास जी बरैया आपके गुरु थे। उन्हीं दिनों गोटेगांव निवासी मुलायमचंद जी चौधरी और दरबारी लाल जी बमोरहा मोरेना पहुँचे। वहाँ पं0 जी की विलक्षण प्रतिभा को देखकर इन दोनों महानुभावों ने पं0 जी को गोटेगांव की पाठशाला

में अध्यापन हेतु आग्रह किया। पं0 जी ने उनका आग्रह स्वीकार कर गोटेगांव की पाठशाला में 1942 तक अध्यापन किया।

आप 1921 से ही स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय हो गये थे। 1941 के व्यक्तिगत सत्याग्रह में आपने भाग लिया तथा 4 माह का कारावास काटा। कांग्रेस में अपनी बढ़ती हुई गतिविधियों के कारण ही इन्हें पाठशाला का कार्य छोड़ना पड़ा। 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में अपनी नेतृत्वशील भूमिका के कारण इन्हें दो वर्ष का कारावास हुआ, जो आपने जबलपुर जेल में काटा। पंडित जी अपनी स्पष्टवादिता के लिए प्रसिद्ध रहे हैं। एक बार आप अपने बड़े पुत्र को गोद में लिए तख्त पर बैठे थे, तभी घोड़े पर सवार होकर नरसिंहपुर जिले का तत्कालीन अंग्रेज कलेक्टर मि0 बोर्न सामने से गुजरा, पं0 जी ने शिष्टाचारवश उसे अभिवादन किया, मगर उनका बड़ा पुत्र निश्चिंत मन से बैठा रहा। इस पर अंग्रेज कलेक्टर ने किंचित् व्यंग्य से कहा, 'क्यों पंडित तुमने अपने लड़के को नमस्ते करना नहीं सिखाया।' इस पर पं0 जी ने बिना हतप्रभ हुए कहा 'सिखाया तो है पर वह उचित व्यक्ति को ही नमस्ते करता है।' और कलेक्टर भन्नाता हुआ चला गया।

आजादी के बाद पं0 जी कांग्रेस पार्टी से जुड़े रहे, किन्तु चुनावी राजनीति से दूर रहे। आप कई बार जिला कांग्रेस कमेटी के उपाध्यक्ष रहे और 85 वर्ष की उम्र में जनता शासन में इंदिरा गांधी की गिरफ्तारी के विरोध में चल रहे आन्दोलन के संदर्भ में जेल गये।

विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में जैन धर्म विषयक पं0 जी के लेख प्रकाशित होते रहे हैं। जैन समाज की कुरीतियों पर भी आपने साहसपूर्ण ढंग से कठोर प्रहार किया। कुछ समय तक आपने जैन गजट में सम्पादन का कार्य भी किया। अपने समय के राजनीतिक नेता डॉ0 निरंजन सिंह, पं0 द्वारका प्रसाद मिश्र और रघुनाथ सिंह किलेदार से आपका निकट सम्पर्क था।

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-1, पृष्ठ-154 (2) जै0 स0 रा0 अ0 (3) प्रभावना-स्मारिका (श्री पंचकल्याणक एवं गजरथ महोत्सव, गोटेगांव, वर्ष 1989 के अवसर पर प्रकाशित)

श्री वृन्दावन इमलिया

प्रथम पंक्ति के जिन रणबाँकुरों ने आजादी के संघर्ष में सब कुछ होम कर दिया था, उनमें श्री वृन्दावन इमलिया का नाम विशेष श्रद्धा और सहानुभूति के साथ लिया जाता है। आपका जन्म 1912 में ललितपुर (उ0प्र0) में हुआ। आपके पिता का नाम श्री परमानंद जैन था। 1930 में नमक सत्याग्रह तथा नशाबंदी एवं विदेशी वस्त्र बहिष्कार आंदोलन में आपने भाग लिया और 1 वर्ष की कैद पाई। सत्याग्रह में शामिल हो आप देहली जैसे केन्द्रीय स्थल में भी सतत संघर्षरत रहे।

जुलूस और हड़तालों से अपना जीवन-चरित रचने के कारण देहली, उन्नाव व ललितपुर आदि की जेलों में इमलिया जी को रहना पड़ा । 1932 में जेल में आप 6 माह रहे। कांग्रेस के वीर सिपाही इमलिया जी बयालीस के आंदोलन के सहयोगी रहे हैं। घोर आर्थिक कष्टों में भी आपने अपना संपूर्ण जीवन साम्प्रदायिक सद्भाव, खादी प्रचार तथा सामाजिक कुरीतियों के विरोध में आवाज उठाने में लगा दिया। आप जिला कांग्रेस के सदस्य और मंत्री भी रहे हैं। आपके अनुज श्री सुखलाल इमलिया (इनका परिचय इसी ग्रन्थ में अन्यत्र देखें) भी जेल गये।

आ0- (1) जै0 स0 रा0 अ0 (2) र0 नी0, पृष्ठ-16 (2) डॉ0 बाहुबलि जैन द्वारा प्रेषित परिचय

श्री वामनराव जैन (खड़के)

श्री वामनराव खड़के का जन्म एक जुलाई 1921 को प्रभातपट्टन (म0प्र0) में हुआ था। आपके पिता का नाम श्री राजाराम जैन था। आपकी माता जी ने



बचपन से ही आपको जैनधर्म के आदर्श सत्य, अहिंसा, अस्तेय की शिक्षा प्रदान की थी। आप बाल्यकाल से ही कांग्रेस के प्रति आकर्षित रहे हैं। क्योंकि आपके पिताजी भी निष्ठावान् कांग्रेसी थे।

आपकी शिक्षक के रूप में प्रथम नियुक्ति दिनांक 3-7-1939 में तिवरखेड़ ग्राम में हुई थी। लेकिन कुछ समय के पश्चात् ही पूज्य महात्मा गांधी के आह्वान पर स्वतंत्रता संग्राम में कूद पड़े। आपने शिक्षण कार्य से त्याग पत्र देकर दिनांक 22-5-1941 को व्यक्तिगत सत्याग्रह तिवरखेड़ ग्राम से किया था। अनेक स्थानों पर आजादी का शंखनाद करते हुए जनजागृति करने तथा ब्रिटिश-शासन को बदलने के अभियोग में इन्हें दिनांक 25-9-1941 से नौ माह का कारावास हुआ था।

आजादी के बाद दिनांक 23-8-1948 से पुन: आपकी नियुक्ति शासकीय बुनियादी माध्यमिक शाला, आमला में हुई। तब से आपका शिक्षकीय जीवन पुन: प्रारम्भ हुआ, आपने आमला, भैंसदेही, रेलवे जनपदशाला आमला और मुलताई में शिक्षकीय कार्य किया है। दिनांक 17-12-1972 को महामहिम माननीय राष्ट्रपति जी द्वारा आपको "राष्ट्रीय-पुरस्कार" प्राप्त हुआ था। आप दिनांक 30-6-1979 को सेवानिवृत हुए हैं।

आपने जिन संस्थाओं में कार्य किया उनमें सामान्य सुधार लाने के लिए अपने-आपको समर्पित कर दिया। आपने अपने निजी आदर्श द्वारा बच्चों के चरित्र निर्माण तथा स्वास्थ्य विकास के लिए एक आदर्श वातावरण बनाया था। 15-11-92 को माननीय दिग्विजय सिंह, अध्यक्ष, म0प्र0 कांग्रेस कमेटी (इ) वर्तमान मुख्यमंत्री म0प्र0 ने शाल ओढ़ाकर, तिलक लगाकर आपका सम्मान किया था।

आ0- (1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-5, पृ0-175 (2) स्व0 प0 (3) महामहिम राष्ट्रपति जी द्वारा प्रदत्त प्रमाणपत्र एवं अन्य (4) अनेक प्रमाणपत्र

श्री विजयकुमार जैन

राष्ट्रसेवा और सामाजिक कार्यों में गहरी अभिरुचि वाले श्री विजयकुमार जैन, पुत्र-श्री दलीपचंद जैन का जन्म 25 जून 1923 को हुआ। आपके पिता भी जेल यात्री रह हैं। 1942 में विजयकुमार जी एस0 एन0 जी0 हाईस्कूल, होशंगाबाद में ग्यारहवीं के छात्र थे, तभी आन्दोलन में सक्रिय हो गये और स्कूल छोड़ दिया। 15 अगस्त 1942 को आप हरदा में गिरफ्तार कर लिये गये। पहले आप अन्डर ट्रायल कैदी के रूप में रहे फिर 6 माह की सजा आपको सुनाई गई। 15-3-1943 को आप जेल से रिहा हुए।

आ0- (1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-5, पृष्ठ-27 तथा 348 (2) स्व0 स0 हो0, पृष्ठ-118

श्री विजयचंद जैन

विधि स्नातक श्री विजयचंद जैन का जन्म 1916 में जयपुर (राज0) के एक सम्पन्न जैन परिवार में श्री नाथूलाल जैन के घर हुआ। 1935 से वे राष्ट्रीय प्रवृत्तियों में भाग लेने लगे तथा प्रजामण्डल के स्वयंसेवक और बाद में कमाण्डर बने। 1939 में उन्हें इस कारण अपनी रेलवे की नौकरी छोड़नी पड़ी। 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन के समय प्रजामण्डल की नीतियों से असन्तोष होने पर कार्यकर्ताओं ने 'आजाद मोर्चा' बनाया। श्री जैन उसके कार्यकारिणी सदस्य थे। 9 दिसम्बर 1942 को मोर्चे की कार्यकारिणी के सभी सदस्यों के साथ आप गिरफ्तार कर लिए गये और भारत सुरक्षा कानून के अन्तर्गत आपको एक वर्ष की सजा हुई, परन्तु हाईकोर्ट के निर्णयानुसार 9 माह बाद ही छोड़ दिया गया। श्री जैन प्रदेश कांग्रेस कमेटी तथा जिला कांग्रेस की कार्यकारिणी के सदस्य रहे। 1955 में आप राजस्थान वित्त निगम में सचिव के पद पर रहे।

आ0-(1) रा0 स्व0 सं0, पृष्ठ-588

श्री विमलकुमार चोरड़िया

पूर्व राज्यसभा सदस्य श्री विमलकुमार चोरड़िया का जन्म 15 अक्टूबर 1924 को भानपुरा (म0प्र0)



में हुआ। आपके पिता श्री मन्नालाल जी चोरड़िया व जयेष्ठ भ्राता श्री लालचन्द जी चोरड़िया (इनका परिचय इसी ग्रन्थ में अन्यत्र देखें) भी स्वतंत्रता आंदोलन से जुड़े हुए थे।

होल्कर स्टेट में कांग्रेस की प्रजामण्डल संस्था सक्रियता से कार्य कर रही थी व सारी स्टेट में जगह-जगह प्रजामण्डल की शाखाएं खोली जा रही थीं। गरोठ जिले में प्रजामण्डल की स्थापना करने के लिए माननीय बैजनाथ महोदय, श्री हजारीलाल जी जड़िया, श्री रामेश्वर दयाल तोतला आदि भानपुरा आये व भानपुरा में श्री मन्नालाल जी चोरड़िया को अध्यक्ष बनाकर प्रजामण्डल की शाखा स्थापित की। उस समय श्री विमलकुमार की आयु 14 वर्ष की थी। इनके घर पर सदा प्रजामण्डल की बैठकें होती थीं व अनेक वरिष्ठ नेतागण इनके यहां ठहरते थे। इस कारण श्री चोरड़िया भी आंदोलन में जुड़ते गये। आपका अध्ययन इन्दौर के प्रसिद्ध होल्कर कालेज में हुआ।

1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में श्री विमल कुमार चोरड़िया, श्री लालचन्द चोरड़िया, श्री प्रद्युम्न कुमार त्रिपाठी, श्री डी0ओ0 जोशी आदि इन्दौर से भानपुरा आये व प्रजामण्डल के निर्देशानुसार प्रदर्शन किया। बाजार में जुलूस निकाला जा रहा था। श्री लालचंद चोरड़िया नेतृत्व कर रहे थे। लुहारों की कुइया के निकट पुलिस ने सबको घेर लिया। सब इंसपेक्टर श्री मिश्रा ने दलबल सहित जुलूस को रोककर 'डिस्पर्स' (बिखर जाओ) का आदेश दिया। आंदोलनकारी डटे रहे। श्री लालचंद चोरड़िया को गिरफ्तार कर लिया गया तथा आंदोलनकारियों पर लाठी प्रहार कर जुलूस बिखेर दिया गया। उसमें अनेक लोग घायल हुए। बाद में लालचंद जी रिहा हो गये। सब लोग इन्दौर गये व वहां सुभाष चौक में प्रदर्शन किया। श्री विमलकुमार चोरड़िया भी उसमें शामिल हुए।

1944 में प्रजामण्डल के 5वें अधिवेशन में चोरड़िया जी शामिल हुए। आप 1946 में उदयपुर के आल इण्डिया स्टेट पीपल्स कान्फ्रेन्स में भी शामिल हुए तथा वहां राष्ट्रीय स्तर के अनेक नेताओं से आपका परिचय हुआ। उदयपुर से लौटते हुए (इन्दौर जाते समय) रतलाम रेलवे स्टेशन पर श्री बी0व्ही द्रविड़, श्री शांतिलाल चेलावत, श्री नेमीचन्द चौधरी तथा श्री लालचन्द चोरड़िया सहित इन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। इन्दौर रेसीडेन्सी मजिस्ट्रेट की अदालत में मुकदमा चला। श्री भरूचा व श्री चितले ने पैरवी की। गरोठ से श्री बापूलाल चौधरी (इनका परिचय इसी ग्रन्थ में देखें), जो जिला अध्यक्ष थे, इन्दौर आये तथा सारी व्यवस्थाएं जुटाईं। बाद में इस मुकदमे में सब बरी हो गये।

श्री विमलकुमार चोरड़िया स्वतंत्रता प्राप्ति हेतु सदा प्रयत्नशील रहे तथा सदा राष्ट्रीय धारा से जुड़े रहे। आपने अभिभाषक का व्यवसाय अपनाया। 1952 से 62 तक आप म0प्र0 विधानसभा में विधायक रहे।

1962 से 1968 तक आप राज्यसभा के सदस्य रहे। वहाँ पब्लिक अन्डरटेकिंग व अन्य महत्त्वपूर्ण कमेटियों के सदस्य रहे। बाद में आप राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से जुड़ गये। धार्मिक क्रियाकलापों में आपकी गहरी रुचि है। संगीत और सत्संग में भी आपकी अभिरुचि है। आपने जैन धर्म पर लगभग 10 पुस्तकें लिखी हैं। सम्प्रति आप राजनीति से सन्यास लेकर साहित्य सृजन में संलग्न हैं।

आ0-(1) स्वा0 स0 म0, पृष्ठ-64-66 (2) Rajya Sabha-Who's who, 1966 (3) अनेक प्रमाण पत्र।

श्री विरधीचंद गोयल

पेशे से वकील श्री विरधीचंद गोयल का जन्म 5 जुलाई 1923 को ग्राम धूमा (सिवनी) म0 प्र0 में



हुआ। आपके पिता का नाम श्री हजारी लाल था। आपने जबलपुर में विधि स्नातक तक शिक्षा ग्रहण की। विद्यार्थी जीवन से ही आप स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय हो गये थे। विद्यार्थी कांग्रेस के संगठन में आपने सहयोग किया था। 1941 में तिलक भूमि तलैया, जबलपुर में आपने सर रिजनाल्ड मैक्सवे का पुतला जलाया था। 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में आप भूमिगत रहकर जबलपुर, मण्डला, छिन्दबाडा आदि में तोड़-फोड़ का कार्य करते रहे, अन्तत: 26 सितम्बर 1942 को गिरफ्तार कर लिये गये और 4 मई 1943 तक मण्डला, दमोह एवं जबलपुर में नजरबंद रहे। सिवनी तहसील भूदान समिति के आप संयोजक थे। आपका स्वभाव बड़ा सरल एवं मृदु था। अल्प बीमारी के कारण 5 सितम्बर 1993 को आपका सिवनी में निधन हो गया।

आ0- (1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-1, पृष्ठ-239 (2) श्री नरेश दिवाकर द्वारा प्रेषित परिचय।

श्री विश्वराम जैन

श्री विश्वराम जैन का जन्म 30 अक्टूबर 1924



को ग्राम पिपरिया (छतरपुर) म0प्र0 में हुआ। आपके पिता का नाम श्री महोले जैन था। आपके पिता लोक संगीत के गायक थे। रात में जब गांव के लोग फाग भजन आदि का आनंद उठाते थे, तब वहीं सभी लोगों के बीच में गांधी जी के स्वराज्य पर भी चर्चा होती थी, इस कारण विश्वराम जी को बचपन से ही देशप्रेम की बातें सुनने को मिलीं।

आपकी प्रारम्भिक शिक्षा अपने गांव से 1 किलोमीटर दूर धनगुवां गांव के स्कूल में हुई, उसी स्कूल में आपकी मित्रता श्री नरेन्द्र कुमार विद्यार्थी (इनका विस्तृत परिचय इसी ग्रन्थ में अन्यत्र देखें।) से हुई। श्री विश्वराम जैन ने लिखा है कि 'मैं तो आगे न पढ़ सका पर विद्यार्थी जी विभिन्न विद्यालयों में पढ़ते हुये बनारस पहुंच गये। जब भी वह छुट्टियों में घर आते या मैं उनसे मिलने जाता, देश की आजादी के संबंध में हम ढेर सारी बातें करते। उनकी बातों से एवं जो किताबें उन्होंने मुझे पढ़ाई इन सबसे लगने लगा कि 'देश की आजादी के लिये प्राण देना पड़े या जेल में मरना पड़े तो भी जीवन सार्थक है।''

परिणामत: आपने अपने साथियों रामसहाय तिवारी, श्री बाबूलाल चतुर्वेदी, रामशिकन जी आदि के साथ आन्दोलन में भाग लिया। देशप्रेम की भावना मन में तो बचपन से ही थी लेकिन आंदोलन के माध्यम से सक्रियता आई। अनेक बार अंग्रेजी सरकार का विरोध करने पर पुलिस द्वारा प्रताड़ना भोगनी पड़ी, जेल में रहना पड़ा। प्रजामंडल आंदोलन से भी आप जुड़े रहे। अनेक बार भूमिगत भी होना पड़ा।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद आपकी देश सेवा में कोई कमी नहीं आई। जनसेवा आपका धर्म बन गया। अपने क्षेत्र में आपके प्रति जनता में एक सम्मान की भावना है। आयुर्वेद के प्रेमी होने के कारण आप अपने नुस्खों से हजारों लोगों की प्रतिवर्ष नि:शुल्क सेवा करते हैं। आप संगीत प्रेमी हैं, साथ ही ज्योतिष के भी जानकर हैं। अपने ग्राम में सैकड़ों वृक्षों को लगाना आपके प्रकृति प्रेम का परिचायक है। 1975 से 90 तक बीस सूत्रीय

समिति के माध्यम से अनेक-विकास कार्य व गरीबों की सहायता आपने की।

आ0- (1) श्री सुरेन्द्र कुमार द्वारा प्रदत्त छतरपुर जिले के स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों की सूची (2) स्व0 प0

श्री वीरचंद जैन

दो बार जेल यात्रा करने वाले कटनी, जिला-जबलपुर (म0प्र0) के श्री वीरचंद जैन, पुत्र-श्री वंशगोपाल का जन्म 1917 में शहडोल (म0प्र0) में हुआ। मिडिल तक शिक्षा प्राप्त श्री जैन 1932 से ही स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय हो गये थे। 1941 के व्यक्तिगत सत्याग्रह में आप गिरफ्तार हुए तथा नागपुर में 4 माह का कारावास भोगा। 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में आप पुनः गिरफ्तार हुए एवं 1 वर्ष 3 माह का कारावास जबलपुर जेल में भोगा। दुकान बंद हो जाने से आर्थिक कठिनाइयों का सामना भी आपको करना पड़ा।

आ0- (1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-1, पृष्ठ-108 (2) जै0 स0 रा0 अ0

श्री शंकरलाल कटलाना

शंकर के समान प्रचण्ड शक्ति-सम्पन्न श्री शंकरलाल कटलाना का जन्म 1907 में सीतामऊ स्टेट [मन्दसौर (म0प्र0)] में हुआ। इनके पिता श्री मोतीलाल कटलाना स्वयं राष्ट्रीय विचारधारा के व्यक्ति थे, अतः उनके दोनों पुत्र श्री शंकरलाल कटलाना तथा श्री कन्हैयालाल कटलाना (इनका परिचय अन्यत्र दिया गया है) भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस से प्रभावित होकर स्वतंत्रता प्राप्ति हेतु आंदोलन के मार्ग पर चल पड़े। कटलाना जी व इनके सहयोगीगण पूरे जोश के साथ जुलूस निकालते थे। नेतृत्व क्षमता के लिए श्री कटलाना प्रसिद्ध थे। राजमहलों पर तथा सरकारी भवनों पर तिरंगा लगाना, नारे लगाना, प्रभातफेरियां निकालकर जनजागृति करना इस समय आंदोलनकारियों के प्रमुख कार्य थे।

प्रजामण्डल की स्थापना में श्री कटलाना का महत्त्वपूर्ण योगदान था। श्री गौतम शर्मा, डॉ0 मिलिन्द, श्री हरिभाऊ उपाध्याय आदि को अनेक बार सीतामऊ लाकर उनकी सभाएं आपने ही करवाईं थीं।

कटलाना जी ने हरिभाऊ उपाध्याय के समक्ष अनेक स्थानों पर रहकर सेवाकार्य एवं आंदोलन-प्रदर्शन में शामिल होकर अपनी निष्ठा व कर्मशीलता का परिचय दिया। सीतामऊ स्टेट में इनकी गतिविधियां जब अधिक तेज हो गईं तब इन्हें अपने भाई श्री कन्हैयालाल कटलाना सहित स्टेट से निर्वासित कर दिया गया। सीतामऊ से निर्वासित होकर कटलाना बन्धु मन्दसौर आ गये व मन्दसौर के आन्दोलन से जुड़ गयं। आर्थिक रूप से आपकी स्थिति बिगड़ती गई, जो अन्त तक सुधार पर नहीं आ सकी। फिर भी आप निराश नहीं हुए। 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में 18 माह का कारावास आपको मुंगावली जेल में भोगना पड़ा। जेल से आने के बाद भी आप आन्दोलन में सक्रिय रहे।

4 जुलाई 1982 को कटलाना जी का देहावसान हो गया।

आ0- (1) स्व0 स0 म0, पृष्ठ-138,139 (2) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-4, पृष्ठ-219

श्री शंकरलाल जैन

श्री शंकरलाल जैन, पुत्र-श्री गुलाबचंद जैन का जन्म 1915 में ग्वालियार (म0 प्र0) में हुआ। आपने माध्यमिक तक शिक्षा ग्रहण की और 1937 से राष्ट्रीय आन्दोलन में सक्रिय हो गये। 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में आपने भाग लिया, गिरफ्तार हुए और 30 अगस्त 1942 से 29 जून 1943 तक करीब 11 माह की सजा ग्वालियर और सबलगढ़ जेल में काटी।

आ0- (1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-4, पृष्ठ-253 (2) जै0 इ0, पृष्ठ-85 (3) जै0जै0यु0, पृष्ठ-228

श्री शंकरलाल उर्फ ज्ञानचंद जैन

श्री शंकरलाल उर्फ ज्ञानचंद जैन, पुत्र-श्री दुलीचंद का जन्म 14 जनवरी 1910 को सिहोरा (म0प्र0) में हुआ। 1930 के जंगल सत्याग्रह में आप सिहोरा से गिरफ्तार होकर जबलपुर केन्द्रीय जेल में रहे। जेल में आपके साथी श्री कन्हैयालाल, नन्ही लाल



तिवारी व फूलचन्द बढ़ई आदि थे। आप 11-8-1930 से 10-11-1930 तक जेल में रहे। 1932 में अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की मीटिंग धर्मतल्ला में थी जिसमें आप सिहोरा से गये थे, सभा की अध्यक्षा श्रीमती नलनी सेनगुप्ता थीं। अंग्रेज सरकार ने इस सभा को गैर कानूनी घोषित कर दिया, इस कारण आप सभा स्थल से गिरफ्तार कर लिये गये एवं न्यू प्रेसीडेंसी जेल, कलकत्ता में 20 दिन बंद रहे।

सिहोरा में आपका मकान झण्डा बाजार के पास था, घर पर कांग्रेस की बैठकें होती थीं। आपने स्वर्गीय काशी प्रसाद पांडे, भूतपूर्व विधानसभा अध्यक्ष म0प्र0 के साथ कांग्रेस का कार्य किया। महात्मा गांधी का जब देश का दौरा हुआ उस समय वे सिहोरा भी गये थे तब आपने हरिजन फंड हेतु चंदा एकत्र किया था एवं रुपया 1100/- की थैली भेंट की थी एवं उनके द्वारा सभा स्थल पर नीलाम किए सामान में से मानपत्र रखने का चाँदी का डिब्बा खरीदा था। सम्प्रति आप अपने पुत्रों के पास जबलपुर में रह रहे हैं।

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-1, पृष्ठ-126
(2)स्व0 प0

श्री शंकरलाल जैन

दमोह (म0प्र0) के श्री शंकरलाल जैन का जन्म 1921 में हुआ। आपके पिता का नाम श्री भैयालाल था। आपने प्राथमिक तक शिक्षा ग्रहण की। त्रिपुरी कांग्रेस अधिवेशन में स्वयंसेवक के रूप में तथा 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में आपने भाग लिया एवं अर्थदण्ड पाया।

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-2, पृष्ठ-90

श्री शंकरलाल जैन

गाडरवारा, जिला- नरसिंहपुर (म0प्र0) के श्री शंकरलाल जैन, पुत्र-श्री मानकलाल का जन्म



1919 में हुआ। 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में 6 माह का कारावास आपने भोगा। आप मूलतः गौरझामर, तहसील- रहली, जिला-सागर के निवासी हैं। आप 16-10-42 से 31-3-43 तक सागर जेल में रहे और अपने अच्छे आचरण के कारण 15 दिन पूर्व ही मुक्त कर दिये गये।

आ0- (1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-1, पृष्ठ-159
(2) प्रमाण पत्र

श्री शांतिलाल आजाद

श्री शांतिलाल आजाद का जन्म 4 मई 1926 को रामपुरा, जिला-मन्दसौर (म0प्र0) में हुआ। इनके पिता मोतीलाल जी अग्रवाल स्वयं भी राष्ट्रीय विचारधारा के व्यक्ति थे। यही कारण था कि उनका पूरा घर राष्ट्रीय भावनाओं से ओतप्रोत होता गया।

आजाद जी प्रारम्भ से ही उग्र स्वभाव के आंदोलनकारी थे। अनेक बार इन्होंने पुलिस के समक्ष प्रदर्शन आदि भी किये। पुलिस ने आपको अनेक बार हिरासत में लिया किन्तु बाद में छोड़ दिया।

9 अगस्त 1942 को जिले के प्रमुख आंदोलनकारी व संगठक श्री चन्दवासकर को चचावदा में गिरफ्तार किया गया। पुलिस की इस कार्यवाही के विरुद्ध रामपुरा में एक विशाल प्रदर्शन रैली निकाली गई। श्री आजाद व इनके जयेष्ठ भ्राता श्री माणकलाल

अग्रवाल को उनके प्रमुख सहयोगीगण श्री मथुरालाल सारू व श्री जोशी सहित गिरफ्तार कर लिया गया। पुलिस इन्हें गरोठ ले जाना चाहती थी। सम्भव न हो सकने पर हिंगलाजगढ़ के जंगल में छोड़ने की योजना बनी वह भी सफल न हो सकी। फिर तीन दिन तक श्री केशूराम ठेकेदार की बगीची में रखकर मनासा न्यायालय में पेश किया गया, जहां इन्हें साथियों सहित रिहा कर दिया गया। श्री आजाद सदा न्याय व निष्पक्षता के लिए जूझते रहे।

आ0- (1) स्व0 स0 म0, पृष्ठ-134

श्री शांतिलाल जैन

श्री शांतिलाल, पुत्र-श्री दीपचंद जैन का जन्म 1915 में बखेड, जिला-राजगढ़ (म0प्र0) में हुआ। आपने कक्षा 6 तक शिक्षा ग्रहण की। 1938 से 1947 तक प्रजामंडल में प्रचारमंत्री के पद पर कार्य किया। 1937 से ही मातृभूमि से अंग्रेजों को भगाने के लिये सक्रियता पूर्वक शासन विरोधी कार्यवाहियों में हिस्सा लेते रहे। इसी कारण रियासती जोर ज्यादतियों के शिकार रहे।

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-5, पृष्ठ-125

श्री शांतिलाल जैन (जब्हेरी)

इन्दौर (म0प्र0) के श्री शांतिलाल जैन, पुत्र-श्री मोतीलाल ने जी0 डी0 फाइन आर्ट तक शिक्षा ग्रहण की। 1926 से ही आप राष्ट्रीय आन्दोलन के सक्रिय कार्यकर्ता हो गये। 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में डेढ़ वर्ष का कारावास आपने भोगा। समाज में छुआछूत का विरोध करने पर आप समाज से वर्षों बहिष्कृत रहे।

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-4, पृष्ठ-46

श्री शांतिलाल जैन

सीहोर (म0प्र0) निवासी श्री शांतिलाल जैन का जन्म 1929 में हुआ। आपके पिता का नाम श्री



राजमल जैन था। देशसेवा की भावना से ओतप्रोत श्री जैन 1942 से कांग्रेस प्रजामंडल के कर्मठ सदस्य रहे और देश की स्वतंत्रता के लिये महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते रहे। 1949 में भोपाल विलीनीकरण आंदोलन में आपने भाग लिया और 2 माह की सजा तथा 50/- रु0 जुर्माना न देने पर 1 माह की और सख्त सजा के तहत जेल गये। स्वतंत्रता की 25वीं वर्षगांठ के अवसर पर स्वतंत्रता संग्राम में स्मरणीय योगदान के लिए म0प्र0 शासन की ओर से आपको प्रशस्ति पत्र भेंट किया गया।

आ0- (1) स्वप्रेषित परिचय, प्रशस्ति एवं सम्मान पत्र (2) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-5, पृष्ठ-58

श्री शांतिलाल जैन

म0प्र0 विधान सभा के सदस्य एवं वारासिवनी नगरपालिका के अध्यक्ष रहे श्री शांतिलाल जैन, पुत्र-श्री सबसुखलाल का जन्म 1920 में वारासिवनी जिला-बालाघाट (म0प्र0) में हुआ। हरिजन दौरे के समय गांधी जी के आगमन से आपको स्वाधीनता संग्राम में कूदने की प्रेरणा मिली। 1941 में आपने वानरसेना का नेतृत्व किया। 1942 के आन्दोलन में 17 मास की नजरबंदी और एक हजार रुपये का जुर्माना आपने भोगा। 1968 में आपका स्वर्गवास हो गया।

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-1, पृष्ठ-192

श्री शांतिस्वरूप 'कुसुम'

कवि, लेखक एवं क्रान्तिकारी श्री शांतिस्वरूप जैन 'कुसुम', पुत्र-श्री सभाचन्द्र का जन्म 24 अक्टूबर 1923 को घनौरा, सिलवर नगर, मेरठ (उ0प्र0) में हुआ। सम्प्रति आप बड़ौत प्रवासी हैं। आपने अपने गीतों से नवयुवकों में जो क्रान्ति का मंत्र फूंका,



उससे सैकड़ों नवयुवकों ने आजादी के आन्दोलन में लड़ने की प्रेरणा पाई। आपने 2 महाकाव्यों, 5 खण्डकाव्यों व 6 अन्य ग्रन्थों को लिखकर माँ वाग्देवी का श्रृंगार किया है। शताधिक कवितायें आपकी विभिन्न स्तरीय पत्र-पत्रिकाओं में छपी हैं। 26 संस्थाओं द्वारा आपको पुरस्कार/सम्मान/उपाधियाँ/ अभिनन्दन पत्र आदि प्रदान कर सम्मानित किया गया है।

1942 के आन्दोलन में आप क्रान्तिकारी बनकर उभरे। विदेशी वस्त्रों की होली जलाना, तार काटना आदि आपके प्रमुख कार्य थे। 'सहारनपुर संदर्भ' भाग-1 (पृ-193) लिखता है-"1942 के आन्दोलन में छात्र भी किसी से पीछे नहीं रहे। छात्रों को साधारणतया पुलिस गिरफ्तार नहीं करती थी। परन्तु एक बालक शान्तिस्वरूप को 13-8-1942 को टेलीफोन के तार काटते हुए डी0आई0आर0 में बन्दी बना लिया गया। उन्हें 14 अगस्त से 21 नवम्बर 42 तक विचाराधीन कैदी के रूप में रखा गया और बाद में 18 बेतों की सजा देकर छोड़ दिया गया।" इसी तरह जैन संदेश, राष्ट्रीय अंक में वरिष्ठ साहित्यकार श्री कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर ने लिखा है-"जैन समाज के यशस्वी तरुण कवि श्री शान्तिस्वरूप जैन 'कुसुम' 1942 में हमारे जिले के उन थोड़े तरुणों में थे, जिन्होंने आन्दोलन के स्थान में क्रान्ति का रास्ता पकड़ा। कुछ ही दिनों में वे पुलिस की आंखों में चढ़ गये और पकड़े गये, पर पुलिस प्रमाण न पा सकी और वह छोड़ दिये गये।"

22 नवम्बर 1942 से 22 मार्च 1943 तक कुसुम जी ने भूमिगत जीवन व्यतीत किया। जे0वी0जैन कालेज सहारनपुर से आपका नाम काट दिया गया और फिर पढ़ने का क्रम ही टूट गया।

आपने जेल में अनेक राष्ट्रीय गीत भी लिखे। कुछ अंश प्रस्तुत हैं-

लो फिर जंजीरें बोल उठीं,
लोहा लेने इन्सान चले,
भारत के वीर जवान चले
सन् सत्तावन की याद लिये,
फिर से तकदीरें बोल उठीं।
लो फिर............

★ ★ ★ ★

सत्य अहिंसा मन्त्र बताते,
सत्याग्रह की सीख सिखाते,
युद्ध बाँकुरे झलक रहे हैं,
क्या मरना सौ बार
तुम्हारे हाथों में पतवार।

आ0- (1) जै0 स0 रा0 अ0 (2) स0 स0, भाग-1, पृ-193 (3) अनेक रचनाएें (4) स्व0 प0

सिंघई शिखरचंद जैन

सिंघई शिखरचंद जैन, पुत्र-श्री कुन्दनलाल का जन्म 3 जून 1912 को ललितपुर (उ0 प्र0) में हुआ।



1942 में जब राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने अपनी गिरफ्तारी के समय करो या मरो का नारा देशवासियों को दिया, तब शिखरचन्द जी का चुप बैठना कैसे संभव था। अतः सिंघई जी इस जन आंदोलन की धधकती आग में कूद पड़े। 28 अगस्त 1942 को धारा 144 का उल्लंघन कर जुलूस निकालने के खिलाफ उन्हें गिरफ्तार किया गया। जिसमें एक वर्ष का सश्रम कारावास एवं एक सौ रुपया अर्थदण्ड-वसूल न होने पर दो माह की सजा और दी गयी। आपको 5-4-43 को बी क्लास के बन्दी के रूप में जिला कारागार फैजाबाद में स्थानांतरित कर दिया गया था।

जेल से मुक्त होने के बाद आपने जिला स्तर पर सेनानियों को संगठित किया और जिला स्वतंत्रता संग्राम सेनानी समिति, ललितपुर नामक संस्था की स्थापना की। सम्प्रति आप भोपाल प्रवासी हैं।

आ0-(1) प0 जै0 इ0, पृ0-474 (2) स्व0 प0 एवं प्रमाण पत्र

श्री शिखरचंद जैन

कटनी, जिला-जबलपुर (म0प्र0) के श्री शिखरचंद जैन, पुत्र-श्री जवाहरलाल का जन्म 1909 में हुआ। जंगल सत्याग्रह में 15 अगस्त 1930 से 13 दिसम्बर 1930 तक आपने सैन्ट्रल जेल तथा रिफारमेटरी में कारावास भोगा।

आ0- (1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-1, पृष्ठ-111 (2) जै0 स0 रा0 अ0

श्री शिखरचंद जैन

कटनी, जिला-जबलपुर (म0प्र0) के श्री शिखरचंद जैन, पुत्र-श्री बाबूलाल का जन्म 1917 में हुआ। श्री जैन ने 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में 2 माह का कारावास भोगा।

आ0- (1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-1, पृष्ठ-111 (2) जै0 स0 रा0 अ0

सिंघई शिखरचंद जैन

पिण्डरई, जिला-मण्डला (म0प्र0) के सिंघई शिखरचंद जैन, पुत्र-श्री भुवनचन्द का जन्म 1915

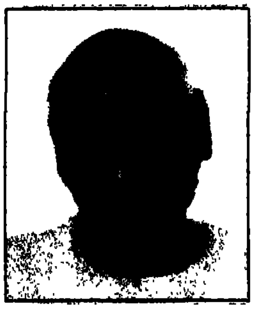


में हुआ। 1936 में राष्ट्रीय आन्दोलन की ओर आपका झुकाव हुआ। 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में आपने सक्रियता से भाग लिया, फलत: गिरफ्तार हुए और मण्डला तथा जबलपुर की जेलों में 6 माह का कारावास काटा। आपके परिवार के श्री नेमीचंद, सुगमचंद आदि अनेक व्यक्ति जेल गये थे।

आ0- (1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-1, पृष्ठ-215 (2) जै0 स0 रा0 अ0

श्री शिखरचंद जैन

गाडरवारा, जिला-नरसिंहपुर (म0प्र0) के शिखरचंद जैन, पुत्र-श्री हजारी लाल का जन्म 1921



में हुआ। स्वतंत्रता संग्राम में 1940 से ही आप भाग लेने लगे थे। 1942 में गिरफ्तार होकर 9 माह का कारावास आपने भोगा। आप नगरपालिका के सदस्य भी रहे।

आ0- (1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-1, पृष्ठ-155 (2) जै0 स0 रा0 अ0 (3) प्रमाण पत्र

श्री शिखरचंद जैन मिठया

'पराधीन भारत की स्वतंत्रता के लिए जिसे जेल जाने का सौभाग्य मिलना है, वह हर आपदा से



बच जाता है' इस उक्ति को चरितार्थ करने वाले श्री शिखरचंद जैन, पुत्र-श्री खेतसिंह जैन (मिठया) का जन्म 4 नवम्बर 1922 को तालबेहट, जिला-झाँसी (उ0प्र0) में हुआ। 1942 में आप तालबेहट के तालाब के उस पार किसानों की एक सभा में शामिल होने डोंड़ा (छोटी सी नाव) से जा रहे थे। डांड़ा पानी में डूब गया पर आप किसी तरह बाहर निकलकर सभा में पहुंचे।

1939 में आप आल इण्डिया स्टूडेन्ट फेडरेशन के जिला मंत्री रहे तथा बेगारी प्रथा के विरुद्ध संघर्ष करते हुए तीन माह भूमिगत रहे। 1944 में 26 जनवरी को प्रभात फेरी में गिरफ्तार कर जेल भेज दिये गये। आयु 22 वर्ष की होने से आप उस जेल में कम उम्र के कैदी थे। डी0आई0आर0 के अन्तर्गत मुकदमा चला और कारावास की सजा मिली, जिसे

झांसी तथा फैजाबाद जेल में आपने काटी। बाद में सजा 4 माह और बढ़ा दी गई, नवम्बर 1944 में आप फैजाबाद से रिहा हुए। बाद में आप झाँसी में रहने लगे थे

आ०- (1) जै० स० रा० अ० (2) स्व० प०

श्री शिखरचंद बर्डिया

गोटेगांव, जिला-नरसिंहपुर (म०प्र०) के श्री शिखरचंद बर्डिया का जन्म 1911 में श्री नन्दराम के घर हुआ। 1930 के आन्दोलन में आपने सक्रिय भूमिका निभाई। प्रयत्न करने के बाद भी पुलिस आपको गिरफ्तार नहीं कर सकी किन्तु 1941 के व्यक्तिगत सत्याग्रह में आप गिरफ्तार कर लिये गये, फलस्वरूप ढाई माह का कारावास आपको भोगना पड़ा।

आ-(1) म० प्र० स्व० सै०, भाग-1, पृष्ठ-155

श्री शिवप्रसाद जैन

स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय भाग लेने वालों में श्री शिवप्रसाद जैन कर्मठ कार्यकर्ता थे। आपके पिता का नाम श्री उदयजीत था। आपका जन्म जाखलौन, जिला- ललितपुर (उ०प्र०) में हुआ था। आप एक सक्रिय कांग्रेस कार्यकर्ता थे। 1934 में आप कांग्रेस में आये, 1937 में जाखलोन के जमींदार ने बेगार नहीं देने की वजह से किसानों को हर तरह से तङ्ग किया। यहाँ तक कि जंगल से जलाने के लिये लकड़ी लाना भी बन्द कर दिया, उस वक्त आपने 200 किसानों को साथ लेकर आबादी-जंगल कटवा दिया। जंगल में जागीरदार अपने सिपाहियों के साथ मय बन्दूकों के गये, बाद में जागीरदार की तरफ से कलेक्टर झांसी को तार दिया गया, 4 दिन तक बराबर तहकीकात हुई। आखिर में उस समय कांग्रेस की जीत हुई। कुम्हारों से भी जागीरदार ने बेगार में बर्तन मांगे। अत: उन्होंने मिट्टी खोदना शुरू कर दिया। जागीरदार सिपाहियों सहित मिट्टी की खदान पर गये। उधर आप भी कुम्हारों को साथ लेकर अकेले ही मिट्टी की खदानों पर गये व कुम्हारों से मिट्टी खुदवाई। इस पर सिपाहियों ने कुम्हारों से टोकनी छीन ली।

1942 के आन्दोलन में आपको ग्यारह माह जेल में रहना पड़ा। यह अवधि आपने झाँसी व आगरा की जेलों में काटी। अनेक वर्षों तक आप सरपंच रहे थे।

आ०- (1) जै० स० रा० अ० (2) र० नी०, पृष्ठ-86

श्री शिवप्रसाद सिंघई

दमोह के प्रसिद्ध सिंघई परिवार का राष्ट्रीय आन्दोलन में अग्रगण्य स्थान है। इस परिवार के श्री सिंघई गोकुलचंद वकील, सिं० गुलाबचंद, सिं०



शिवप्रसाद, सिं० रतनचंद जी जेल गये। सिं० गुलाबचंद के पुत्र सिंघई शिवप्रसाद का जन्म 29-5-1921 को हुआ। आप माध्यमिक शाला में अध्ययनरत थे कि दमोह में महात्मा गांधी का आगमन हुआ, छात्र शिवप्रसाद भाषण सुनने चला गया। फिर क्या था। हेडमास्टर ने बेतों से पीटा और स्कूल से बाहर निकाल दिया और यहीं समापन हो गया सिंघई जी की शिक्षा का।

आप नमक सत्याग्रह के अवसर पर वानर सेना में शामिल रहे। कांग्रेस कार्यालय में सचिव पद पर भी आपने कार्य किया। 1942 में आपके छोटे भाई सिंघई रतनचंद को पकड़ा गया तो आप भूमिगत हो गये, घर की तलाशी ली गई, जब ये न मिले तो इनके पिता सिं० गुलाबचंद जी को पुलिस पकड़कर ले गई। दिनांक 1-10-1942 को शिवप्रसाद जी पकड़ लिये गये। बदले में पिता गुलाबचन्द जी को छोड़ दिया गया। शिवप्रसाद जी को 5 माह 5 दिन की सजा दी गई और सागर जेल में रखा गया। सजा पूरी होने पर दि० 16-3-1943 को छोड़ दिया गया।

आ०- (1) म० प्र० स्व० सै०, भाग-2, पृष्ठ-90 (2) श्री संतोष सिंघई, दमोह द्वारा प्रेषित परिचय (3) स्व० प०

श्री शीतलप्रसाद जैन

क्रान्तिकारियों का गढ़ रहे श्री स्याद्वाद महाविद्यालय, वाराणसी के स्नातक श्री शीतलप्रसाद



का जन्म ग्राम-बड़ागांव, जिला-मेरठ (उ0प्र0) में 5 अगस्त 1918 को हुआ। आरम्भिक शिक्षा के बाद आप उच्च शिक्षार्थ वाराणसी के स्याद्वाद महाविद्यालय में 1934 में प्रविष्ट हुए। आपने एम0ए0(हिन्दी, संस्कृत, अंग्रेजी) एल0एल0बी0 आदि परीक्षायें पास कीं। सम्प्रति आप मुजफ्फरनगर में रह रहे हैं।

20-9-95 को जब हम आपके घर पहुंचे तो संस्था-भाई होने मैं (कपूरचंद जैन) भी स्याद्वाद महाविद्यालय का स्नातक रहा हूँ) के नाते वात्सल्य भाव से आपने जो आत्मीय स्नेह दिया वह शब्दातीत है। पुरानी स्मृतियों में खोते हुए आपने बताया- 'बनारस जाते ही मैं स्वाधीनता आन्दोलन में सक्रिय हो गया था, विद्यालय की परम्परा भी यही थी। हमने छात्रावास में ही वीर सैनिक संघ (V.S.S.) की स्थापना की थी, जिसमें छात्रों को सैनिक वर्दी में सैनिक शिक्षण की व्यवस्था थी। विभिन्न सार्वजनिक समारोहों में भी हम सेवा कार्य करते थे। 1942 के आन्दोलन में संघ के सदस्यों ने खुलकर भूमिगत रहते हुए कार्य किया। छात्रावास में लीथो प्रेस तैयार करके, उसमें हजारों की संख्या में क्रान्तिकारी पैम्पलेट छापे गये, जिनमें विदेशी शासन को उखाड़ फेंकने के लिए अपना सर्वस्व बलिदान करने का आह्वान किया गया था। आठ-दस छात्रों की टोलियाँ प्रात: निकल पड़तीं और देर रात लौटतीं। डाकखानों, रेलवे स्टेशनों, विद्युत कार्यालयों आदि को ठप्प करने के साहसिक कार्य हमने किये। अनेक अवसरों पर मरने से बाल-बाल बचे। 24 अगस्त 1942 को सारनाथ मेले में जाते हुए सी0आई0डी0 के अधिकारियों ने गिरफ्तार कर मैदागिन टाउन हाल में जज के सामने प्रस्तुत किया। मेरे पास जो पैम्पलेट थे, उनके आधार पर दो साल का कठोर कारावास तथा 50/- रु0 जुर्माना की सजा दी गई।

जिला जेल में अस्वच्छ वस्त्र और गन्दे भोजन के विरोध में दो बार चार-चार दिन की भूख हड़ताल की। मांगें तो मान ली गईं, पर अन्यों के साथ मुझे भी सजा के वतौर केन्द्रीय कारागार में स्थानांतरित कर दिया गया, जहाँ कातिल, डकैत जैसे अपराधी रखे जाते थे। वहाँ बैठने की अव्यवस्था का विरोध करने पर मेरी असह्य पिटाई हुई और हथकड़ी के साथ पैरों में बेड़ी पहनाकर काल कोठरी में डाल दिया गया। मुलाकातों पर भी प्रतिबन्ध लगा दिया। जुलाई 1943 में सरकार व कांग्रेस में समझौता होने के कारण भोगी गई सजा को पर्याप्त मानकर मुक्त कर दिया गया पर बनारस मण्डल से निष्कासित कर दिया। एम0ए0 अन्तिम वर्ष की परीक्षा देने की अनुमति तक शासन से नहीं मिली। यह निष्कासन प्रतिबन्ध आजादी के बाद ही समाप्त हुआ।"

आ0- (1) जै0 स0 रा0 अ0 (2) सा0 20-9-1995

श्री पं० शीलचंद जैन शास्त्री

'वज्रादपि कठोराणि मृदूनि कुसुमादपि' व्यक्तित्व के धनी, प्रखरवक्ता, संघर्षशील परिवेश में



जीने वाले पं0 शीलचंद जैन शास्त्री जैन समाज की उन विभूतियों में से एक थे, जिन पर हम सबको गर्व है। उनके हृदय में राष्ट्रोन्नायक व्यक्तित्व और जीवन की प्रगति में अखण्ड विश्वास रखने वाले सजहगुणों का रत्नाकर विद्यमान था। समाज हित और समाज सुधार की दृष्टि से वे नई पीढ़ी के आदर्श थे।

पंडित जी का जन्म उत्तर प्रदेश में बड़ौत के निकट ग्राम विजबाडा के धार्मिक प्रवृत्ति के व्यवसायी श्री कुन्दनलाल जैन के घर दिनांक 15 अक्टूबर 1915 को हुआ था। युवावस्था से ही होनहार, कुशाग्र बुद्धिपरक होने के कारण तथा आसपास विद्या का कोई क्षेत्र न होने से परिवार ने प्रारम्भिक शिक्षा के उपरांत आपको स्याद्वाद महाविद्यालय, वाराणसी में प्रवेश दिलाया जहां से आपने न्यायतीर्थ और सिद्धांत शास्त्री की उपाधियां प्राप्त कीं।

1936 में आप श्री कुंदकुंद जैन विद्यालय, खतौली में अध्यापक के पद पर कार्यरत हुये। 1937 में हस्तिनापुर मेले में 'दस्सों को श्रीपूजा का अधिकार है' विषय पर भाषण देने के कारण आपको खतौली विद्यालय की नौकरी से भी हाथ धोना पड़ा। 1939 में अ0भा0दि0 जैन परिषद् के मुख्य पत्र वीर के सहसंपादन का कार्य सम्भाला और राष्ट्रीय आन्दोलनों में भाग लेना प्रारम्भ कर दिया। कांग्रेस का साथ देते हुये नमक सत्याग्रह और भारत छोड़ो आन्दोलन में आपने भाग लिया और जेल यात्रा की।

1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में पुलिस बराबर आपके पीछे लगी रही मगर अपने बुद्धि चातुर्य से आप उसके पंजे में नहीं आये। प्रांतीय धारा सभाओं के चुनाव में आपने अपना सब कुछ कांग्रेस के प्रचार में लगा दिया। आप मवाना तहसील कांग्रेस कमेटी के प्रमुख कार्यकर्ता रहे थे।

पत्रकारिता के क्षेत्र में 'वीर' का सम्पादन, 'विश्व-मित्र' का सहसंपादन तथा 'कुन्दनशील' के संस्थापक-संरक्षक आप रहे। 1946 में आप मवाना नगरपालिका के अध्यक्ष निर्वाचित हुये। यह पद संभालने पर आपने यहां विद्यमान सभी हिंसक बूचडखानों को बन्द करवा दिया और अहिंसा की अखंड ज्योति जलाई। 1950 में हुए आ0भा0दि0जैन परिषद् के अधिवेशन में हरिजन मंदिर प्रवेश के प्रस्ताव के कारण आपने लोगों के आक्रोश को सहा तथा आपको अपमानित भी होना पड़ा। फिर भी आप परिषद् के महामंत्री चुने गये।

तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री जवाहरलाल नेहरू का मवाना में नागरिक अभिनंदन व स्वागत आपके सान्निध्य में हुआ था। स्वतंत्रता सेनानी के नाते ही मवाना में ऑनरेरी मजिस्ट्रेट का पद सरकार द्वारा आपको दिया गया जो 4 वर्ष तक रहा। देश की अनेक शिक्षा संस्थाओं से संबद्ध रहते हुये आप लगभग 16 वर्ष तक ए0एस0 इंटर कालिज के अध्यक्ष रहे तथा वहां डिग्री कॉलेज की स्थापना कराई। आप उसके संस्थापकों में से हैं। 1986 में रामजानकी रथ के भ्रमण पर जिले में प्रतिबंध होते हुये भी आपने जबरदस्ती मवाना में भ्रमण कराया तथा जेल यात्रा की। 1990 में जिला कारसेवक अध्यक्ष के रूप में जेलयात्रा की। हस्तिनापुर तीर्थक्षेत्र कमेटी के वरिष्ठ सदस्य तथा मेला कमेटी के संरक्षक आप रहे।

रहन-सहन में भारी सादगी और निर्भीक विचारों से संपन्न पं0 जी समाज के उन बहुमुखी व्यक्तियों में से थे, जो जैन-जगत और मानव कल्याण के कार्य में लगे रहे। वे आत्मप्रशंसा से मुक्त, निष्कलुष व्यक्तित्व से संपन्न महापुरुष थे। आपने समाज में महिलाओं को सम्मानपूर्ण स्थान एवं समान अधिकार दिलाने के लिये सदैव पहल की। गंभीर चिंतक, ओजस्वी और स्पष्टवक्ता, जिनवाणी विशेषज्ञ, शास्त्रों के मर्मज्ञ, कट्टर हिन्दुत्व की भावना से ओतप्रोत, अहिंसा-पुजारी, निडर एवं साहसिक व्यक्तित्व के धनी पं0जी का 77 वर्ष की आयु में 8 अगस्त 1992 को निधन हो गया। आपके परिवार ने आपके नाम पर एक ट्रस्ट बनाया है, जो साहित्य सेवा में संलग्न है। मवाना में उनके नाम पर एक बाजार व सड़क हैं। प्रस्ताव है कि मवाना में किसी चौराहे पर आपकी मूर्ति लगायी जाये। यह जानकारी आपके ज्येष्ठ पुत्र श्री सुरेशचंद (जो इस ट्रस्ट के अध्यक्ष हैं) ने मेरठ में एक मुलाकात में दी।

आ0- (1) जै0 स0 रा0 अ0 (2) वि0 अ0, पृष्ठ-520 (3) दि0 जैन महासमिति पत्रिका 15-9-92 (4) पुत्र श्री सुरेश जी द्वारा प्रदत्त परिचय

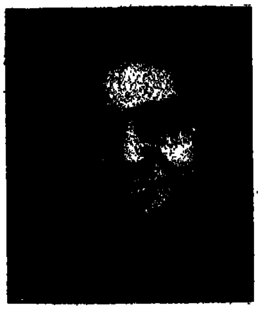
श्रीमती शीलवती मित्तल

श्रीमती शीलवती मित्तल प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी बाबू नेमीशरण मित्तल की धर्मपत्नी थीं। अपने पति के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर आपने दो बार जेलयात्रा की। आप कांग्रेस की प्रत्येक सभा में भाग लेती थीं। आपके पुत्र भी आपकी तरह राजनैतिक कार्यों में लगे रहे।

आ0-(1) जै0 स0 रा0 अ0

श्री शुभचंद जैन

मध्यप्रदेश की संस्कारधानी जबलपुर के श्री शुभचंद जैन भारतीय स्वाधीनता महासमर के ऐसे



अग्रणी नौजवान थे, जिन्होंने आजादी के हर आंदोलन में न केवल बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया बल्कि 1930-32 और 1942 के आंदोलनों में लंबी अवधि तक जेलों के सीखचों में रहे। यही नहीं उनके ओजस्वी विचारों और क्रियाकलापों ने अनेक नौजवानों में नई जान फूंकी, जिसके परिणामस्वरूप जबलपुर की जैन समाज की तरूणाई रणक्षेत्र में उतर पड़ी और उनकी अनुगामी होकर बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया, यातनाओं को झेला, जेल यात्राएं कीं और समाज का मस्तक ऊँचा किया।

शुभचंद जी के पिता का नाम श्री गुलाबचंद था। श्री शुभचंद का प्रभावी व्यक्तित्व, रोबीला चेहरा, मांसल बदन एवं बुलंद आवाज में सहज आकर्षण था। इनका पूर्व नाम अबीरचंद था। मुरैना विद्यालय में गुरुणां गुरु गोपालदास बरैया ने अबीरचंद से इन्हें शुभचंद बना दिया था। बाद में वे देश के लिये सचमुच ही शुभ साबित हुए। आजादी के आंदोलनों के दौरान उन दिनों जब कांग्रेस के जुलूस निकलते थे तो शुभचंद जी को सैनिक लिबास में घोड़े पर बैठाकर झंडा लेकर आगे चलाया जाता था। वे 'आजादी के सिपहसालार' के नाम से जाने जाते थे।

लगभग छह दशक पूर्व जबलपुर के उत्साही नौजवानों ने 'नेशनल बॉय स्काऊट्स' नाम से एक संस्था बनाई थी। पं0 भावनी प्रसाद तिवारी, सवाईमल जैन, बद्रीनाथ गुप्ता जैसे प्रतिभावान व्यक्ति उसके सदस्य थे। यह एक राष्ट्रीय विचारवादी अनुशासित जनसेवी संगठन था। श्री शुभचंद जैन इसके अध्यक्ष मनोनीत किये गये। (एक मत के अनुसार शुभचंद जी इसके संस्थापक थे। वे त्रिपुरी कांग्रेस अधिवेशन में गांधी जी के अंगरक्षक रहे (स्वतंत्रता संग्राम और जबलपुर नगर, पृष्ठ-172, "गजरथ महोत्सव स्मारिका पृष्ठ-39)) 1930-32 के आंदोलनों के कार्यक्रमों खादी-प्रचार, विदेशी वस्त्र बहिष्कार, जंगल सत्याग्रह और शराबबंदी में श्री जैन ने भाग लिया था। शुभचंद जी ने सरकारी शराब गोदाम 'वेयर हाऊस' पर धरना देने का कार्यक्रम बनाया, इनके साथ और भी सत्याग्रही हो गये। पुलिस ने घसीट-घसीट कर सबको अलग किया लेकिन सब फिर वहीं पहुंच गये। इसके बाद घुड़सवार बुलाये गये। शुभचंद जी घोड़ों की टाप से जख्मी हो गये, लेकिन इस घटना के बाद आंदोलन उग्र हो उठा।

उन दिनों आंदोलन में सत्याग्रही गिरफ्तार कर जेल भेज दिये जाते और पेशी पर फौजदारी अदालत में लाया जाता और उन्हें सजा सुनाई जाती थी। उस समय हथकड़ी डालकर जेल से कचहरी लाया जाता था। श्री शुभचंद ने हथकड़ी पहिनकर जाने का विरोध किया तो अन्यों ने भी विरोध में साथ दिया। परिणामस्वरूप इन लोगों को बैरक से कंकरीली सड़क पर घसीटते हुए फाटक तक लाकर मोटर में चोरों की तरह लादा गया फिर कचहरी में भी उतरने को तैयार

नहीं होने पर मोटर से नीचे उतार कर अदालत के कमरे तक घसीटकर ले जाया गया। सभी के शरीर लहूलुहान हो गये थे। पेशी पर जनता की भीड़ हो गई, इनके शरीर खून से लथपथ देख जनता में रोष फैल गया, नारे लगने लगे, स्थिति की गंभीरता को देखते हुए हथकड़ियां खुलवा दी गईं और आगे हथकड़ी न डालने के भी आदेश हो गये।

सत्याग्रही राजनैतिक बंदियों को सामान्य कैदियों के समान काम करना पड़ता था। इन्हें प्राय: चक्की पीसने दी जाती थी। चक्की दो व्यक्ति मिलकर पीसते, पर भारी भरकम चक्की कमजोर और दुबले व्यक्ति न पीस पाते तो सजा पाते थे। श्री शुभचंद एक तगड़े व्यक्ति थे, वे अपने कमजोर साथियों का भी आटा पीस देते थे।

1942 का आंदोलन अद्वितीय था। गांधी जी के दो नारों अंग्रेजो भारत छोड़ो और करो या मरो के साथ आंदोलन की ज्वाला भड़क उठी। अनेक नेता और कार्यकर्ता भूमिगत हो गये। आन्दोलन की धारा बदल गई, चारों ओर देश में तोड़फोड़ होने लगी। शुभचंद कब चुप बैठने वाले थे, ये भी भूमिगत हो अनेक प्रकार के विध्वंसक कार्यों में संलग्न हो गये। एक बार रेल की पटरी उखाड़ते समय रात्रि में इन्हें देख लिया गया और बंदूक का निशाना बनाया गया पर बाल-बाल बच गये। एक छर्रा इनके पैर में घुस गया, जिसे एक ग्रामीण नाई से नाखून काटने की नहन्नी से निकलवा कर पुन: सक्रिय हो गये, पकड़े जाने पर सेन्ट्रल जेल जबलपुर में रहे। आपको नेताओं की बी क्लास दी गई पर आपने सामान्य सत्याग्रही साथियों के साथ रहना पसंद किया और स्वेच्छा से सी क्लास में दो वर्ष जेल में रहे।

जब देश आजाद हुआ तो इनके साथी शासन में अपनी स्थिति बनाने के लिए दौड़धूप करने लगे। विधानसभा, राज्यसभा, लोकसभा में स्थान पाने की दौड़ शुरू हो गई परन्तु शुभचंद जी एक ऐसे व्यक्ति थे, जिन्होंने राजकीय सत्ता के किसी भी पद पर जाने का कभी मन नहीं बनाया। यही नहीं स्वराज्य प्राप्ति के बाद शासन ने स्वतंत्रता सेनानियों को आर्थिक एवं अन्य सुविधाएं प्रदान कीं, पर शुभचंद जी ने किसी भी सुविधा को लेने से इंकार कर दिया यहाँ तक कि इनकी त्यागमयी भावना की गहरी छाप इनके कुटुम्ब पर पड़े वगैर नहीं रही। शुभचंद जी के स्वर्गीय हो जाने के बाद उनकी धर्मपत्नी ने राज्य एवं केन्द्रीय दोनों में से कोई भी पेंशन स्वीकार नहीं की, न पुत्रों ने कोई सहायता ली।

आ0- (1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-1, पृष्ठ-112 (2) प0 जै0 इ0, पृष्ठ-413 (3) स्व0 स0 ज0, पृष्ठ-172 (4) गजरथ स्मारिका, जबलपुर (5) दैनिक भास्कर, जबलपुर 17-8-1995

श्री शेखरचंद जैन

जबलपुर (म0प्र0) के श्री शेखरचंद जैन, पुत्र-श्री भोलेनाथ का जन्म 1916 में हुआ। आपने 1932 के आन्दोलन में 6 माह के कारावास की सजा पाई।

आ0- (1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-1, पृष्ठ-112

श्री शोभालाल जैन

कटनी, जिला-जबलपुर (म0प्र0) के श्री शोभालाल जैन, पुत्र-श्री कालूराम का जन्म 1925 में हुआ। मिडिल तक शिक्षा प्राप्त श्री जैन ने 1941 के व्यक्तिगत सत्याग्रह में भाग लिया। 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में भी आपने भाग लिया और लगभग नौ माह के कारावास की सजा भोगी।

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-1, पृष्ठ-113

श्री श्याम बिहारी लाल जैन

ब्यावरा, जिला-राजगढ़ (म0प्र0) के श्री श्याम बिहारी लाल जैन, पुत्र-श्री मुकुट बिहारी लाल जैन का जन्म 15 अक्टूबर 1922 को हुआ। बी0आई0एम0एस0 तक शिक्षा प्राप्त श्री जैन ने 1942 में श्री रामलाल वैद्य, अलीगढ़ की प्रेरणा से स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लिया तथा कठोर शारीरिक यातनायें सहीं।

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-1, पृष्ठ-124

श्री श्यामलाल जैन

रायभा, जिला-आगरा (उ0प्र0) निवासी श्री श्यामलाल जैन तत्कालीन क्रान्तिकारियों में अग्रगण्य थे। स्वतंत्रता सेनानी श्री पीतमचंद जैन के साथ टेलीफोन के तार काटते समय 1942 में आपको गिरफ्तार कर एक वर्ष के लिए जेल भेज दिया गया। फिर भी सरकार अभियोग नहीं चला पाई। जेल में ही आपको लकवा मार गया था।

आ0-(1) प0 इ0, पृष्ठ-139 (2) जै0 स0, रा0 अ0 (3) उ0 प्र0 जै0 ध0, पृष्ठ-92 (4) श्री महावीर प्रसाद जी अलवर द्वारा प्रेषित परिचय (5) गो0 अ0 प्र0, पृष्ठ-226-227

श्री श्यामलाल जैन

जिला कांग्रेस कमेटी के मंत्री रहे, मण्डला (म0प्र0) के श्री श्यामलाल जैन 1930 से ही राष्ट्रीय आन्दोलन में सक्रिय हो गये थे। अनेक बार जेल यात्रा करने वाले श्यामलाल जी ने कविताओं के माध्यम से नवयुवकों में नवस्फूर्ति का संचार कर आन्दोलन में कूदने को प्रेरित किया था। आपके अनुज श्री अमीरचंद भी जेलयात्री रहे हैं।

आ0-(1) जै0 स0 रा0 अ0

श्री श्यामलाल जैन

किसी फिल्मी अन्दाज की तरह जीवन बिताने वाले श्री श्यामलाल जैन, पुत्र-श्री फदाली लाल का जन्म 1914 में नरसिंहपुर (म0प्र0) में हुआ। अपना



जीवन परिचय देने का निवेदन करने पर आपने लिखा है कि-

'मैं इस भारत के उजड़े हुए खंडहर का जर्रा हूँ। यही मेरा पता होगा, यही नामों निशां मेरा।।'

"मेरे पिता की आर्थिक स्थिति अत्यंत शोचनीय थी, उस पर हम चार भाई और तीन बहिनों का बोझ। अपने जन्म स्थान नरसिंहपुर (म0प्र0) से मुसीबत के मारे, रोजी- रोटी के लिए हम सब भाईबहनों को लेकर वे 1930 में मण्डला (म0प्र0) आ गये। वहाँ मुझे सेठ मथुरा प्रसाद बैजनाथ अग्रवाल की किराना की दुकान पर 10 रुपया माहवार नौकरी पर लगा दिया। वहाँ सुबह 8 बजे से रात 9 बजे तक तखरी (तराजू) तौलना पड़ती थी। शिक्षा केवल 6 वीं पास हिंदी थी। शरीर दुबला पतला था किन्तु भाग्य अच्छा था।

इस नौकरी के दरम्यान कुछ गलत तत्त्वों की संगत में पड़ गया। जुआ खेलने की आदत पड़ गयी। 10 रुपया माहवार तो पिताजी ले लेते थे, अब जुआ खेलने को पैसा कहां से आये? तो दुकान की चोरी करने लगा; किन्तु यह भय हमेशा बना रहता था कि यदि पकड़ा गया तो नौकरी भी नहीं मिलेगी और चोर कहलाऊँगा। इस गलत आदत से कैसे मुक्ति पाऊँ। यही सोचता रहता था।

मेरे एक मित्र श्री चम्मनलाल हलवाई ने दिनांक 14 फरवरी 1932 को रात में करीब 10 बजे (जब कि मैं घूमने निकला था) बुलाकर कहा कि क्यों श्याम! जेल चलोगे। मैंने तत्काल स्वीकृति दे दी एवं यह तय हुआ कि दिनांक 15 फरवरी 1932 को प्रथम श्री शंकरलाल शिवहरे आन्दोलन का श्रीगणेश करेंगे, उनके पकड़े जाने के बाद श्री चम्मनलाल जी और मेरा नम्बर तीसरा रहेगा। इस विषय में हम दोनों के बीच अग्नि प्रतिज्ञा भी हुई, कारणवशात् मुझे न0 2 पर ही रखा गया। दि0 15 फरवरी 1932 की रात को ही श्री शंकरलाल शिवहरे गिरफ्तार कर लिये गये। दि0 16 फरवरी को मैंने सुबह ही, शाम 5 बजे सभा का ऐलान कर दिया। मेरे पू0 पिताजी बोले कि -'मैंने तुमसे अभी तक कुछ नहीं कहा, यदि तुम जेल जाना चाहते हो तो शौक से जाओ, पर एक बात याद रखना कि कदम वापिस न रखना। वरना मेरे घर में तुम्हारे लिए कोई स्थान नहीं रहेगा।' शाम 5 बजे गांधी चौक मण्डला

में मैंने भाषण दिया अत: रात्रि साढ़े ग्यारह बजे गिरफ्तार कर लिया गया। रात ही में जेल में बंद कर दिया गया। दूसरे दिन श्री कामताप्रसाद जज (मजिस्ट्रेट) की अदालत में पेश किया गया, जहाँ 4 माह की सुजा सुना दी गई।

1940 में मंडला में मेरे जीवन में एक अप्रत्याशित घटना दशहरे के अवसर पर घटित हुई। दशहरे का जुलूस जब 'जय काली' का जय घोष करते हुए जा रहा था तब एक मजिस्द से कुछ पत्थर फेंके गये। हिंदू-मुस्लिम दंगे की स्थिति बन गई। मैं उग्र भीड़ को समझाने का प्रयास कर रहा था। दंगा तो नहीं हो पाया किंतु मेरे व भाई शंकरलाल शिवहरे (जो उस दिन मण्डला से 10 किमी0 दूर रामनगर में थे) के विरुद्ध दंगा भड़काने का आरोप लगाया गया और हम दोंनो को इस आधारहीन तथा झूठे अपराध के लिए 4-4 माह का कठोर कारावास भोगना पड़ा।

1942 में भारत छोड़ो आन्दोलन में 12 अगस्त 1942 को ही मेरी गिरफ्तारी हो गई। मेरा अनुज अमीरचंद जैन फरार हो गया, क्योंकि उसकी गिरफ्तारी का भी वारण्ट था। हमारे यहाँ आजीविका का एक मात्र साधन छोटा सा प्रिंटिंग प्रेस था, ब्रिटिश सरकार द्वारा उस पर ताला लगा दिया गया। इस तरह परिवार की रोजी-रोटी का एकमात्र साधन भी जाता रहा। उस समय परिवार में माता-पिता, छोटा भाई सुगम चंद उससे छोटी तीन बहिनें, मेरी पत्नी एवं ढेड़ साल का बच्चा था। तत्पश्चात् मैं 10 जनवरी 1944 को जबलपुर सेण्ट्रल जेल से रिहा किया गया।

जेल से रिहा होने के पश्चात् कठिन संघर्ष करते हुए मैंने प्रेस के कारोबार को सुदृढ़ किया। मैं 1939 से 1948 तक जिला कांग्रेस कमेटी का प्रधानमंत्री रहा। व्यक्तिगत सत्याग्रह के समय करीब 8 माह तक जिला कांग्रेस ऑफीसर इंचार्ज भी रहा। 1951 में कांग्रेस से अलग होकर पं0 द्वारका प्रसाद मिश्रा का सहयोगी रहा।

अब धर्ममार्ग अपनाया है। 1979 में दर्शन प्रतिमा ग्रहण की। 1983 में आचार्य प्रवर श्री 108 विद्यासागर जी महाराज से व्रत प्रतिमा ग्रहण कर ली। उसी का यथाशक्ति पालन कर रहा हूँ"

श्री जैन के पिताजी आयुर्वेद के अच्छे ज्ञाता थे। सम्प्रति आप भी आयुर्वेद चिकित्सा करते हैं। फीस नहीं लेते। मात्र दवा के पैसे लेते हैं।

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-1, पृष्ठ-192 (2) प0 जै0 इ0, पृष्ठ-233 (3) स्व0 प0 (4) दैनिक भास्कर, जबलपुर, 22 अगस्त 1997

श्री श्यामलाल जैन 'सत्यार्थी'

'सत्यार्थी' उपनाम से प्रसिद्ध श्री श्यामलाल जैन, पुत्र-श्री जौहरीलाल ग्राम-लड़ावना, जिला-आगरा (उ0प्र0) के मूल निवासी थे। बाद में आप पथवारी (आगरा) आकर रहने लगे। अध्यापन जैसे पवित्र व्यवसाय से जुड़े सत्यार्थी जी की रुचि बचपन से ही देश की आजादी की ओर थी। 1930-32 के आन्दोलनों में आपने भाग लिया और छह माह का कारावास भोगा। दुर्भाग्य देखिये कि इसी बीच आपकी पत्नी और युवा पुत्र का देहावसान हो गया, फिर भी आप विचलित नहीं हुए। 1942 के आन्दोलन में भी आपने जेल की यात्रा की थी।

आ0-(1) जै0 स0 रा0 अ0 (2) प0 इ0, पृ0-142 (3) उ0 प्र0 जै0 ध0, पृष्ठ-93 (4) गो0 अ0 ग्र0, पृष्ठ-227

श्री श्यामलाल पाण्डवीय

मध्यभारत के प्रथम मंत्रिमंडल में संसदीय सचिव



रहे यशस्वी लेखक, प्रसिद्ध और प्रख्यात समाजसेवी, श्री श्यामलाल पाण्डवीय का जन्म 14 दिसम्बर 1896 को मुरार (ग्वालियर) म0प्र0 में हुआ। आपके पिता श्री शंकरलाल ग्वालियर

रियासत में दीवान थे। दीवान शंकरलाल पाण्डवीय दरबारे खास, पंचायत बोर्ड तथा इम्प्रूवमेंट ट्रस्ट के सदस्य रहे तथा चेम्बर आफ कॉमर्स एण्ड इण्डस्ट्री के मानसेवी संयुक्त सचिव एवं श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र सोनागिर कमेटी के 1922 से 1924 तक मंत्री रहे थे। श्यामलाल जी की माता का नाम गोबल देवी एवं छोटे भाई का नाम रघुवर दयाल था, जो तहसीलदार थे।

आपकी शिक्षा मुरार हाईस्कूल में हुई। ग्वालियर रियासत के प्रथम बैच में आपने इण्टर पास किया तथा ग्वालियर राज्य की वकालत की परीक्षा भी आपने पास की थी। पाण्डवीय जी शैशव से ही मेधावी, प्रगतिशील एवं राष्ट्रीय विचारों के व्यक्ति थे, 17 वर्ष की उम्र में ही आप जैसवाल जैन सभा के विभागीय मंत्री तथा बाद में 'मुनि' के सम्पादक बनकर समग्र जैन समाज की सेवा में लग गये थे।

1913 में मात्र 17 वर्ष की अल्पायु में आपने ग्वालियर राज्य की प्रथम लोकपत्रिका 'गल्प पत्रिका' का प्रकाशन किया। 'गल्प पत्रिका' के कांग्रेस अंक को जब्त कर आपको जेल भेज दिया गया था।

पाण्डवीय जी ने 1922 में साप्ताहिक 'समय' निकाला और वीरांगना लक्ष्मीबाई की जयन्ती मनाई। वे खादी प्रचार के माध्यम से भी समाज में लोकप्रिय हुए, मध्य प्रदेश और उसके बाहर भी उनकी कार्य सेवा अजस्र भाव से चलती रही। सार्वजनिक सभाओं में उनकी अध्यक्षता चर्चित होती थी। एक दिसम्बर 1939 को उग्र भावनाओं के कारण बिना वारण्ट के गिरफ्तार कर आपको जेल भेज दिया गया। 1941 में आप जेल से मुक्त हुए। 1940 में आप जब जेल में थे, तब आपको ग्वालियर स्टेट कांग्रेस का अध्यक्ष चुना गया। आपकी अनुपस्थिति में आपके चित्र को रखकर उस अधिवेशन में जुलूस निकाला गया तथा कार्यवाही की गई।

इससे पूर्व 1917-18 के दिल्ली कांग्रेस अधिवेशन में आप किसान प्रतिनिधि के रूप में सम्मिलित हुए। महामना मालवीय जी से प्रभावित, राजशाही के प्रखर विरोधी पाण्डवीय जी ने 1940-42 के आन्दोलनों में सक्रिय भाग लिया। अगस्त 1940 से अगस्त 1941 तथा अगस्त 1942 से फरवरी 1943 तक करीब 1 वर्ष 8 माह की कैद आपने ग्वालियर और शिवपुरी की जेलों में भोगी। आप ग्वालियर राज्य कांग्रेस एवं सार्वजनिक सभा के संस्थापक सदस्य थे तथा ग्वालियर राज्य सार्वजनिक सभा के अध्यक्ष चुने गये थे।

1923 में जब अ0भा0दि0 जैन परिषद् की स्थापना का निश्चय हुआ तब आप उस सम्मेलन में मौजूद थे, परिषद् के गठन प्रस्ताव के हस्ताक्षर कर्ताओं में से आप एक थे। इस प्रकार आप उक्त परिषद् के संस्थापक सदस्य थे।

पाण्डवीय जी स्वाधीनता के पश्चात् मध्यभारत के गठन से विलय तक (1948-56) राजस्व, उद्योग, व्यापार, खाद्य, कृषि, लोक-निर्माण तथा स्वास्थ्य विभाग के मंत्री रहे। अनेक बार राजनीतिक उथल-पुथल में नियंत्रण करके स्थिति को आपने संभाला था।

रियासत के जमाने में रियासत के एक जागीरदार ने दशहरा जुलूस में निकालने हेतु जैन मंदिर का रथ मांगा, न दिये जाने पर उसने मन्दिर में तोड़-फोड़ व मल-मूत्र फेंकने की शर्मनाक घटना करवाई, इस पर जैन समाज क्षुब्ध हो गया। पाण्डवीय जी ने उस आन्दोलन का नेतृत्व किया। 1924 से 26 तक आप सोनागिर सिद्धक्षेत्र कमेटी के मंत्री तथा 1957 से 1976 तक उपाध्यक्ष रहे। अ0भा0 दिगम्बर जैन परिषद् के हस्तिनापुर अधिवेशन में आप राष्ट्रीय अध्यक्ष निर्वाचित हुए थे। श्री वीर शिक्षा समिति, लश्कर के भी आप अध्यक्ष रहे थे।

11 फरवरी 1980 को आपका निधन हुआ। अन्तिम दिनों में आपने 'श्यामलाल पाण्डवीय सुकृत सेवा न्यास' की स्थापना की और अपनी सम्पत्ति का बहुतांश समाजसेवा हेतु इस न्यास को समर्पित कर दिया।

अगस्त 1981 में राज्य शासन ने 'शासकीय महाविद्यालय' मुरार को आपकी स्मृति में समर्पित कर 'श्यामलाल पाण्डवीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय' नाम रख दिया है।

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-4, पृष्ठ-253 (2) जै0 इ0, पृष्ठ-83 (3) जै0 स0 रा0 अ0 (4) वीर, भोपाल अधिवेशन विशेषाङ्क-1992 (5) प्रसिद्ध पत्रकार श्री रवीन्द्र मालव द्वारा प्रेषित परिचय (6) जै0 जै0 यु0, पृष्ठ 227-228

श्री श्रीचंद जैन

श्री श्रीचंद जैन, पुत्र-श्री गेंदालाल जैन का जन्म 1924 में जबलपुर (म0प्र0) में हुआ। 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में आप गिरफ्तार हुये और लगभग 8 माह का कारावास भोगा।

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-1, पृष्ठ-127 (2) स्व0 स0 ज0, पृष्ठ-176

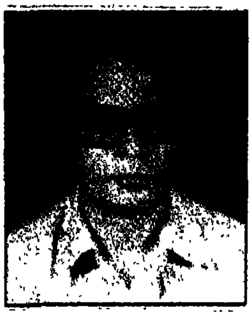
श्री संपतलाल लूंकड

फलौदी (राज0) के एक ओसवाल जैन परिवार में वि0सं0 1957 (1900 ई0) की आश्विन कृष्ण 7 को जन्मे श्री संपतलाल लूंकड़ बचपन से ही अन्याय का विरोध करने लगे थे। 1939 में फलौदी में लोकपरिषद् की स्थापना होने पर वे उसमें शामिल हो गये और अनेक वर्षों तक उसके अध्यक्ष रहे। उस समय अकाल में भी उन्होंने काफी काम किया, जागीरदारों से निरन्तर संघर्ष किया तथा मारवाड़ लोकपरिषद् के जिम्मेवार हुकूमत आन्दोलन में 26 अगस्त 1942 को गिरफ्तार कर लिये गये और 16 माह जोधपुर सेन्ट्रल जेल, बिजोलाई पैलेस आदि स्थानों पर नजरबन्द रखे गये। शराबबन्दी आन्दोलन में भी आपने सक्रिय भूमिका निभाई।

आ0-(1) रा0 स्व0 से0, पृष्ठ-728

चौधरी सगुनचंद जैन

साहू जैन कॉलेज, नजीबाबाद (बिजनौर) उ0प्र0 के राजनीतिशास्त्र विभागाध्यक्ष पद से सेवानिवृत्त हुए,



चौधरी सगुनचंद जैन, पुत्र-श्री चौ0 दमरूलाल जैन वैद्य का जन्म 15 अगस्त 1925 को मुंगावली, जिला-गुना (म0प्र0) में हुआ। आरम्भ से ही आप निडर और स्वाभिमानी रहे। एक बार जब आप 7-8 वर्ष के थे तब अपने बड़े भाई डॉ0 ताराचंद जी के साथ ठठेरे (मक्का के सूखे पौधे के सूखे डन्ठल) की बन्दूक बनाकर जंगल में शेर मारने गये थे, खैर शेर तो नहीं मिला, दिन भर भूखे रहे, घर आकर पिटाई हुई सो अलग। यह घटना बाल्यकाल से ही आपकी जोखिम भरे साहसिक कार्य करने की प्रवृत्ति को अभिव्यक्त करती है। अपने राजनैतिक जीवन के सन्दर्भ में आपने जो लिखा है, वह तत्कालीन राजनैतिक परिदृश्य को भी व्यक्त करता है।

आपने लिखा है– "कटनी में जब मैं पढ़ता था तब 1937 में देश की राजनीति में काफी परिवर्तन हुआ। आम चुनाव हुये और कांग्रेस ने आठ प्रान्तों में मंत्रिमंडल बनाया। इस समय पं0 रविशंकर शुक्ला, जो मध्यप्रांत के मुख्यमंत्री थे, कटनी आये। इसी समय नवयुवक सम्राट् श्री सुभाष चंद बोस भी आये, जिन्होंने उग्र राष्ट्रभक्ति का मंत्र फूंका। लेकिन वर्ष 1939 का सितम्बर माह अधिक रहस्यपूर्ण था जब विश्व की महान् शक्तियों में द्वितीय महायुद्ध प्रारम्भ हुआ। इस समय कांग्रेस ने सरकार के विरोध - स्वरूप त्यागपत्र दे दिया था, क्योंकि बिना कांग्रेसी मन्त्रिमंडल से पूछे अंग्रेजों ने भारत को दूसरे महायुद्ध में झोंक दिया था।

दूसरे महायुद्ध के चलते सन् 1942 तक देश राजनीतिक दृष्टि से काफी जागृत हो चुका था। ब्रिटिश सरकार चारों तरफ हार रही थी और जापान दक्षिण

एशिया को रौंदता हुआ भारत के दरवाजे खटखटाने लगा था। महात्मा गांधी और कांग्रेस के नेताओं को लगा कि अब समय आ गया है कि देश में कोई निर्णायक आंदोलन प्रारम्भ किया जाय, ताकि भारत को जापान के सम्भावित आधिपत्य से बचाया जा सके। अतः महात्मा गांधी ने 8 अगस्त सन् 1942 को बम्बई में कांग्रेस का खुला अधिवेशन किया और अंग्रेजों से कहा कि– 'आप भारत छोड़कर चले जायें और हमें आजादी दें। हम लोग अपनी रक्षा स्वयं कर लेंगे।' इस प्रकार देश में भारत छोड़ो आन्दोलन का सूत्रपात पूज्य बाबू जी ने किया और हर देशवासी को 'करो या मरो' का नारा दिया। लेकिन कांग्रेस के इस खुले अधिवेशन में किसी भी कार्यक्रम पर प्रकाश नहीं डाला जा सका, क्योंकि विशेषकर बम्बई में और सम्पूर्ण भारत में कांग्रेसी नेताओं को ब्रिटिश हुकूमत ने रातों-रात गिरफ्तार कर लिया था। गिरफ्तारी के कारणों पर बोलते हुए इंग्लैण्ड के प्रधानमंत्री श्री चर्चिल ने कहा कि 'भारत से ब्रिटिश साम्राज्य को समाप्त करने के लिए कांग्रेस ने तोड़-फोड़ की कार्यवाही बनाई है।' अतः जनता नेता विहीन होकर हिंसक कार्यवाही में जुट गई। रेल, डाक, तार, टेलीफोन आदि व्यवस्था को भंग करना और ब्रिटिश साम्राज्य को उखाड़ फेंकने के लिए हर सम्भव कार्य करना उसका एक नियमित कार्य बन गया।

इन दिनों श्री स्याद्वाद महाविद्यालय (इस संस्था के दशाधिक क्रांतिकारियों का परिचय इस ग्रन्थ में दिया गया है, तथा एक आलेख भी।) वाराणसी क्रन्तिकारी कार्यवाही का केन्द्र बन गया था। हम लोगों ने पढ़ना-लिखना बंद कर दिया और रेलवे लाइनों को उखाड़ना, पोस्ट ऑफिसों को फूंकना तथा तार व टेलीफोन लाइनों को छिन्न-भिन्न करना और पुलिस तथा सेना के जवानों में ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध अभक्ति की भावना पैदा करना तथा विद्रोह करने को तैयार करना आदि कार्य प्रारम्भ कर दिये थे, जिससे कि भारत माँ शीघ्र आजाद हो सके। इसलिए जब मैं पुलिस व सेना के जवानों में विद्रोह को उत्पन्न करने की दृष्टि से पैम्पलेट बांट रहा था, तब 14 अगस्त 1942 को गिरफ्तार कर लिया गया और जेल भेज दिया गया।

अदालत की कार्यवाही जेल के बंद कमरे में चली, मजिस्ट्रेट ने मुझसे बयान देने को कहा, लेकिन मैंने कहा कि- 'ब्रिटिश हुकूमत के गुलाम मजिस्ट्रेट कभी न्याय नहीं कर सकते।' अतः मैंने किसी प्रकार के बयान देने से इंकार कर दिया और किसी भी तरह की माफी मांगने से भी इंकार कर दिया। फलतः मजिस्ट्रेट ने भारत रक्षा कानून की धारा 38 (5) और 39 (6) के अनुसार 16-9-1942 को दो वर्ष के कठोर कारावास की सजा सुनाई, लेकिन बाद में 14-7-1943 को जेल से मुक्त कर दिया गया, किन्तु साथ ही साथ बनारस जिले से भी निष्कासित कर दिया गया।

जेल में मैं नाबालिग बार्ड में रखा गया। इस समय बनारस जेल में डॉ0 सम्पूर्णानंद, श्री श्रीप्रकाश और प्रो0 खुशाल चंद जी गोरावाला आदि नेता थे।

जेल अधिकारियों को परेशान करने की दृष्टि से रात्रि में तसला बजाना, कम्बल व चटाइयों में आग लगाकर तापना और जेल में दिये जाने वाले कामों को खराब करना आदि प्रमुख कार्य हम लोग करने लगे। इसलिए जेल अधिकारियों ने तन्हाई में रखने की तथा बेड़ियां पहनाने की सजा दी। तन्हाई में हम लोग खूब राष्ट्रीय गीत गाते रहते थे और बेड़ियां पहने हुये पेड़ पर चढ़ जाया करते थे। पता नहीं जेल का सारा समय कब और कैसे व्यतीत हो गया।

जेल से छूटने के बाद बनारस जिले से निष्काषित होने के कारण संस्कृत के अध्ययन का मार्ग अवरुद्ध हो गया। अतः हाईस्कूल, इण्टरमीडिएट, बी0ए0 तथा एम0ए0 परीक्षायें उत्तीर्ण कीं और शिक्षण कार्य प्रारम्भ कर दिया।"

प्रारम्भ में आप श्री महात्मा गांधी इण्टर कॉलेज में नागरिकशास्त्र के प्रवक्ता के पद पर नियुक्त हुये। इसके बाद श्री तारणतरण जैन इण्टर कॉलेज, गंजबासौदा-(विदिशा) म0प्र0 में प्राचार्य के पद पर फिर एस0एस0एल0 कॉलेज, विदिशा, सेठ आर0एन0 रुइया कॉलेज, रामगढ़ (शेखावटी) राजस्थान, बी0एस0एम0 कॉलेज रूड़की और अन्त में साहू जैन कॉलेज नजीबाबाद (बिजनौर) उ0प्र0 में राजनीतिशास्त्र के विभागाध्यक्ष के पद पर नियुक्त हुए। नजीबाबाद से ही आप सेवानिवृत हुए।

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-4, पृष्ठ-307 (2) स्व0 प0

श्रीमती सज्जन देवी महनोत

उज्जैन (म0प्र0) के प्रसिद्ध स्वाधीनता सेनानी श्री सरदार सिंह महनोत की धर्मपत्नी श्रीमती सज्जन देवी महनोत का जन्म 1904 के आस-पास ग्वालियर राज्य के राजप्रतिष्ठित श्री सुगनचंद भंडारी के यहाँ हुआ। तत्कालीन पर्दा-प्रथा, दिखाऊ कुलीनता की आपने चिन्ता नहीं की और मिडिल तक शिक्षा ग्रहण की। 1930 के आन्दोलन में सरकारी आदेश की अवहेलना कर आप चार माह जेल में बन्द रहीं। 1932 के व्यक्तिगत सत्याग्रह में भी आपने जेल यात्रा की। 1942 में आप अनेक बार गिरफ्तार हुईं और छोड़ दी गईं। 1943 में जब आप नजरबंद हुईं तो 1946 में छूटीं। आपके पुत्र श्री राजेन्द्र कुमार महनोत और भतीजे श्री ताज बहादुर महनोत ने भी जेल की दारुण यातनायें सहीं।

आ0-(1) जै0 स0 रा0 अ0, पृष्ठ-90 (2) इ0 अ0 ओ0, भाग-2, पृष्ठ-399

लाला सन्तकुमार जैन

स्थानीय कांग्रेस कमेटी के प्रधान रहे, अवागढ़, जिला-एटा (उ0प्र0) के ला0 सन्तकुमार जैन को 1942 के आन्दोलन में 9 माह की जेल हुई थी। आप नगर के प्रमुख राष्ट्रीय कार्यकर्ता रहे हैं।

आ0-(1) जै0 स0 रा0 अ0 (2) उ0 प्र0 जै0 ध0, पृष्ठ-92

श्री सन्तलाल जैन

फिरोजाबाद (उ0प्र0) के श्री सन्तलाल जैन ने 1942 के आन्दोलन में डाक बंगला जलाने के पश्चात् श्री धनवंत सिंह के यहाँ बैठकर साथियों के साथ डाकखाना जलाने का कार्यक्रम बनाया। वहाँ तत्कालीन सी0आई0डी0 इन्सपेक्टर रामप्रसाद भी कार्यकर्ता के वेश में जानकारी प्राप्त कर गया और डाकखाना जलाने से पूर्व ही श्री धनवंत सिंह, श्री रामबाबू जैन एवं आपको गिरफ्तार कर सेन्ट्रल जेल आगरा में रखा गया। मई 1943 में आपको इस शर्त पर छोड़ा गया कि आप थाने में हाजिरी दिया करें, परंतु आपने सरकार की इस आज्ञा को नहीं माना अत: पुन: नजरबंद कर दिया गया और अक्टूबर 1946 में छोड़ा गया।

आ0-(1) जै0 स0 रा0 अ0 (2) उ0 प्र0 जै0 ध0, पृष्ठ-91 (3) अमृत, पृष्ठ-24 (4) जै0 सै0 ना0 अ0, पृष्ठ-4

श्रीमती सरदार कुंवर बाई लूणिया

अजमेर (राजस्थान) के प्रसिद्ध देशभक्त श्री जीतमल लूणिया की धर्मपत्नी श्रीमती सरदार कुंवर बाई लूणिया पर्दाप्रथा का बहिष्कार कर राष्ट्रीय आन्दोलन में भाग लेने वाली ओसवाल जैन समाज की महिलारत्न थीं। 1933 में राष्ट्रीय आन्दोलन में आपने भाग लिया। जब लूणिया जी जेल चले गये तो कुछ समय बाद आपने विदेशी कपड़ों की दुकानों पर पिकेटिंग की, फलस्वरूप गिरफ्तार हुईं और छह महीने की सजा पाई। आप पांच-छह महिलाओं का जत्था लेकर गई थीं, सभी गिरफ्तार कर ली गईं। मजिस्ट्रेट ने आपको 'ए' क्लास तथा अन्य महिलाओं को 'सी' क्लास में रखा। आपने इसका विरोध किया और अपने तीन वर्षीय पुत्र के साथ 'सी' क्लास में ही रहीं।

आ०-(1) इ० अ० ओ०, भाग-2, पृष्ठ 373 (2) जै० स० रा० अ०

श्री सरदार सिंह महनोत

स्वाधीनता संग्राम में जहाँ देश में 'एक घर एक व्यक्ति' भी देश को अर्पण न कर सका, वहीं कुछ ऐसे भी जैन कुटुम्ब रहे हैं जो पूरे के पूरे देश के चरणों पर चढ़ गये। उज्जैन का जैन महनोत परिवार भी उनमें से एक था। इस परिवार के श्री सरदार सिंह महनोत, उनकी पत्नी श्रीमती सज्जन देवी महनोत, पुत्र श्री राजेन्द्र कुमार महनोत एवं भतीजे श्री ताजबहादुर महनोत ने अनेक वर्षों तक जेल की दारुण यातनाएं सहीं।

उज्जैन के सेठ सौभाग्यचन्द्र महनोत अपने समय के उन लोगों में से थे जो ग्वालियर नरेश माधवराव शिन्दे के प्रियजनों में से थे। आपने अपनी धार्मिकता से जैन समाज, उदारता और सम्पत्ति से राज्य तथा संगीत-कला प्रेम से संगीतज्ञों में ऊँचा स्थान पाया था। 1900 के आस-पास आपको पुत्र-रत्न प्राप्त हुआ जिसका नाम उस समय ज्योतिषी ने 'सरदार' रख दिया था। उसे स्वप्न में भी यह ख्याल न आया होगा कि राजप्रतिष्ठित घराने का युवक शिन्दे के दरबार की सरदारी छोड़कर शोषण और दास्तां के प्रतीक स्वतंत्रता प्रेमियो का भी सरदार बनेगा।

आपकी शिक्षा उस समय की प्रथानुसार केवल मैट्रिक तक ही हुई। इसके बाद गुरुजनों ने घर का धंधा देखने की सलाह दी। पर आश्चर्य कि महनोत जी ने कॉटन- इण्डस्ट्रीज के किले उज्जैन में भी खद्दर भण्डार खोला।

आपके जीवन का प्रारम्भ शिवपुरी (ग्वालियर) विद्यालय की सुपरिण्टैण्डेण्टी से हुआ इसके बाद आप केशवराम कॉटन मिल, कलकत्ता के सेल्स विभाग में रहे, बसन्त कॉटन मिल की जनरल मैंनेजरी की, सुगर सिण्डीकेट के ब्राञ्चों की व्यवस्था की और बनारस कॉटन तथा सिल्क मिल के जनरल मैंनेजर के पदों पर रहे, पर इस सबका उपयोग आपने देशसेवा के लिए ही किया।

1930 के राष्ट्रीय आन्दोलन के समय आप मजदूर आन्दोलन को लेकर गिरफ्तार हुए और पुलिस की मार खायी। इसके बाद आप अन्य आन्दोलनों के समय अन्य प्रकार से सहायता देते रहे। 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में भाग लेने के कारण आपको 4 वर्षों तक नजरबंद रखा गया। ओसवाल महासम्मेलन के मुखपत्र 'ओसवाल' का आपने अनेक वर्षों तक सफलता पूर्वक सम्पादन किया।

आ०-(1) जै० स० रा० अ०, पृष्ठ-90 (2) इ० अ० ओ, भाग-2, पृष्ठ-398-399

समाधिस्थ आर्यिका सर्वती बाई या सरस्वती देवी

आर्यिका सर्वतीबाई का जन्म 1906 के आसपास हुआ। आपके पिता का नाम श्री सांवलदास था। शादी के कुछ दिनों बाद ही वैधव्य का दारुण दु:ख आप पर आ पड़ा, अत: आप अपने पिता के घर रहने लगीं। राष्ट्रीयता की भावना आप में जन्मजात थी ही, पति के निधन के बाद आपने देशसेवा का निश्चय किया और विभिन्न आन्दोलनों में सक्रिय भाग लिया, जिसके कारण आपको दो बार जेल यात्रा करनी पड़ी। आपने अन्य महिलाओं को भी इन आन्दोलनों में भाग लेने के लिए प्रेरित किया था। देशप्रेम के साथ-साथ हृदय में विद्यमान धार्मिक संस्कार आपको सभी धार्मिक कार्यों में भाग लेने के लिए प्रेरित करते रहते थे। एक बार एक मुनि-संघ आगरा आया, आपने मुनिश्री के प्रवचनों को ध्यानपूर्वक सुना और वैराग्य धारण कर लिया। कहते हैं कि आप दीक्षा लेने से पूर्व अपने पिता के घर तक तो गईं, परन्तु बाहर से ही आवाज देकर कह दिया कि- 'मैं दीक्षा ग्रहण कर रही हूँ' दीक्षोपरान्त आपने अनेक स्थानों पर

भ्रमण कर आत्मकल्याण के साथ जैन धर्म के प्रचार-प्रसार की महती भूमिका निभाई।

आ0-(1) प0 इ0, पृष्ठ-125 तथा 142 (2) जै0 स0 रा0 अ0 (3) उ0 प्र0 जै0 ध0, पृष्ठ-93 (4) श्री महावीर प्रसाद, अलवर द्वारा प्रेषित परिचय (5) गो0 अ0 ग्र0, पृष्ठ-226

श्री सवाईमल जैन

मध्यप्रदेश विधान सभा के उपाध्यक्ष, जबलपुर नगर निगम के महापौर और स्थायी समिति के अध्यक्ष, म0 प्र0 स्वतंत्रता संग्राम सैनिक संघ के उपाध्यक्ष आदि पदों पर रहे श्री सवाईमल जैन का जन्म 30 नवम्बर 1911 को जबलपुर (म0प्र0) में हुआ। आपके पिता श्री पूसमल सांड, मेडता (राजस्थान) से जबलपुर आये थे। श्वेताम्बर जैन परिवार में जन्मे पूसमल जी यहाँ राजा गोकुलदास के यहाँ मुनीम थे। सवाईमल जी के भाईयों ने विदेशी खिलौनों और मनिहारी का व्यवसाय प्रारम्भ किया था किन्तु 1930 के स्वदेशी आन्दोलन से प्रभावित होकर उन्होंने वह व्यापार बन्द कर हिन्दी, संस्कृत और धार्मिक पुस्तकों का व्यापार प्रारम्भ किया था।

सावईमल जी की शिक्षा जबलपुर, बनारस और कानपुर में हुई। छात्र जीवन से ही वे आजादी के लिए छटपटाने लगे थे। 1930 के आन्दोलन में वे पढ़ाई छोड़कर आन्दोलन में कूद पड़े। एक वर्ष जेल की यातनाऐं उन्होंने सहीं। 1932 में पुन: गिरफ्तार हुए और 6 माह के कठोर कारावास तथा 20 रुपया अर्थदण्ड की सजा पाई। अर्थदण्ड चुकता नहीं किया अत: अतिरिक्त डेढ़ माह की सजा और भुगतनी पड़ी।

कानपुर में उच्च शिक्षा पूर्णकर आप जबलपुर आये और राष्ट्रीय कार्यक्रमों को मूर्तरूप देने के लिए नेशनल ब्याय स्काउट्स एसोसिएशन नाम से संस्था का गठन किया, जिसके माध्यम से कांग्रेस को गैर कानूनी घोषित कर दिये जाने के बाद भी सत्याग्रह सम्बन्धी अनेक महत्त्वपूर्ण कार्य किये गये, अन्ततोगत्वा इस संगठन को भी ब्रिटिश सरकार ने गैर कानूनी घोषित कर दिया।

1933 तथा 1935 में इसी संस्था के माध्यम से आपने स्वदेशी प्रदर्शनियों का आयोजन किया था, जिसके उद्घाटन के लिए डॉ0 राजेन्द्रप्रसाद तथा माता स्वरूपरानी नेहरू का जबलपुर आगमन हुआ था। इससे स्वदेशी प्रचार तथा राष्ट्रीय जागरण में अभूतपूर्व सफलता मिली। 1939 के त्रिपुरी कांग्रेस में आपने किसानों तथा नवयुवकों का प्रतिनिधित्व किया था।

1941 के व्यक्तिगत सत्याग्रह में आप पुन: पकड़े गये और 6 माह के लिए नागपुर जेल भेज दिये गये। 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में भी कुछ समय तक भूमिगत रहने के बाद आप गिरफ्तार कर लिए गये और एक वर्ष दस माह 24 दिन जबलपुर जेल में नजरबन्द रहे। बाद में आपने समाजवादी दल का गठन किया और नगर निगम के चुनावों में बहुमत पाया। अनेक वर्षों तक स्थायी समिति के अध्यक्ष और दो बार महापौर भी आप रहे।

आप जबलपुर नगर के मध्यक्षेत्र से दो बार विधायक चुने गये तथा विधान सभा के उपाध्यक्ष पद पर कार्य किया। अपने आदर्शों पर सदैव अडिग रहने वाले श्री जैन म0प्र0स्व0सं0 सैनिक संघ के अध्यक्ष, नगर स्व0सं0सै0 संघ के कर्णधार, नगर कांग्रेस कमेटी के मंत्री, उप सभापति, अ0भा0 कांग्रेस कमेटी के सदस्य, जबलपुर विश्वविद्यालय की कुलसंसद और कार्यकारिणी के सदस्य, महाकौशल शिक्षा प्रसार समिति के अध्यक्ष आदि अनेक पदों पर रहे। नेताजी सुभाष चन्द बोस से आप का निकट सम्पर्क रहा, श्री जय प्रकाश नारायण, आचार्य नरेन्द्र देव, राममनोहर लोहिया, अशोक मेहता, हरिविष्णु कामत आदि के आप विश्वासपात्र थे।

श्री जैन की जीवन शैली त्याग, बलिदान, समर्पण, सादगी जैसे मानवमूल्यों के उच्च आदर्शों पर गढी हुई

थी। अपने स्वभाव की प्रखरता और दो टूक बात कहने के कारण श्री जैन जीवनपर्यन्त अपनी अलग पहचान बनाये रहे। वे साधारण होते हुए भी असाधारण थे।

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-1, पृष्ठ-115 (2) स्व0 स0 ज0, पृष्ठ-177-178 (3) 'शीतल सौरभ' स्मारिका, जबलपुर, फरवरी 1994, पृष्ठ-66 एवं 87

श्री सागरचंद जैन

बुढ़ार, जिला-शहडोल (म0 प्र0) के श्री सागरचंद जैन, पुत्र-श्री पल्टू उर्फ गुलाबचंद जैन का जन्म 1918 में हुआ। आपके पिता एक अच्छे व्यवसायी थे। माध्यमिक तक शिक्षा प्राप्त श्री सागरचंद ने 1942 के आन्दोलन में भाग लिया। आपने ब्रिटिश शासन के युद्ध-चन्दा (बार फण्ड) का विरोध किया। स्वामी माधवानन्द सरस्वती के साथ आप शहडोल गये, जहाँ बार फण्ड हेतु सभा चल रही थी।

स्वामी माधवानन्द ने अचानक खड़े होकर जब बार फण्ड के विरोध में भाषण देना प्रारम्भ किया, तब श्री जैन ने अन्य साथियों के साथ एक लकड़ी पर तिरंगा लहराकर नारे लगाना प्रारम्भ कर दिया। सभा में व्यवधान आ पड़ा, अफरा-तफरी मच गई, फलत: आपको गिरफ्तार कर लिया गया और पाँच माह रीवां जेल में रखा गया।

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-5, पृष्ठ-317 (2) स्व0 आ0 श0, पृष्ठ-154

श्री सागरचंद जैन

जबलपुर (म0प्र0) के श्री सागरचंद जैन, पुत्र-श्री फूलचंद 1942 के आन्दोलन में तोड़फोड़ के कार्यों में भाग लेने के कारण गिरफ्तार हुए और 13 सितम्बर 1942 से 17 जनवरी 1943 तक नजरबन्द रहे।

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-1, पृष्ठ-115 (2) स्व0 स0 ज0, पृष्ठ-176

श्री सागरमल जैन

भोपाल (म0प्र0) के श्री सागरमल जैन, पुत्र-श्री धन्नालाल का जन्म 1920 में हुआ। 1949 के भोपाल राज्य विलीनीकरण आन्दोलन में आपने भाग लिया तथा 16 दिन का कारावास भोगा।

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-5, पृष्ठ-30

श्री साधूलाल जैन

टीकमगढ़ (म0प्र0) के श्री साधूलाल जैन, पुत्र-श्री गुन्नालाल का जन्म 1912 में हुआ। बुंदेलखण्ड की चरखारी रियासत में उत्तरदायी शासन हेतु चलाये गये आन्दोलनों में भाग लेने के कारण आपको कारावास की सजा भोगनी पड़ी।

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-2, पृष्ठ-137 (2) वि0 स्व0 स0 इ0, पृष्ठ-306 एवं 356

श्री साबूलाल कामरेड

हँसमुख स्वभावी श्री साबूलाल जैन कामरेड का जन्म पथरिया, जिला-दमोह (म0प्र0) में दिनांक 14-9-1922 को श्री अनन्तराम जी के यहाँ हुआ। 1939 में आप दमोह जिला कांग्रेस कार्यालय में कार्य करने लगे, जिसमें डुंडी पीटने से लेकर दफ्तर का पूरा कार्य आपने संभाला। 1939 में त्रिपुरी अधिवेशन में तीन हफ्ते स्वयंसेवक बनकर रहे। साथ ही जैन सेवादल से जुड़ गये तथा सामाजिक कार्यों में भी भाग लेने लगे।

दि0 11 अगस्त 1942 को आप जुलूस का नेतृत्व करते हुए पकड़े गये, मुकदमा चला तथा 50/- जुर्माना की सजा हुई। पुत्र को छुड़ाने के लिए अनन्तराम जी ने बंजी (घोड़ा आदि पर सामान बांध कर गांव-गांव बेचने का काम) करने का घोड़ा बेच डाला, परन्तु गांधी चौक की आम सभा का डिक्टेटर बनकर भाषण देते हुए आप फिर पकड़ लिये गये तथा सागर जेल में 7 माह नजरबन्द रहे, बाद में मुकदमा चला तथा तीन माह की सजा दी गई।

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-2, पृष्ठ-90 (2) श्री संतोष सिंघई द्वारा प्रेषित परिचय

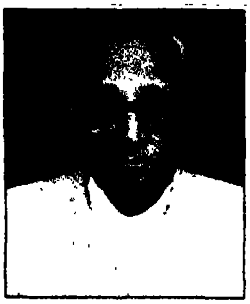
श्री साबूलाल जैन

स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लेने के कारण शिक्षक पद से निलम्बित किये गये, दमोह (म0प्र0) के श्री साबूलाल जैन, पुत्र-श्री सुखलाल जैन का जन्म 1906 में हुआ। अल्पवय में ही आप 1921 से स्वतंत्रता संग्राम में जबलपुर में सक्रिय हो गये। विदेशी वस्त्र बहिष्कार तथा 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में आपने भाग लिया। आपने अध्यापन और प्रशिक्षण प्राप्त किया और शिक्षक बन गये, शिक्षण कार्य करते हुए भी जेल में क्रांतिकारियों को सामग्री पहुँचाते रहे और प्रचार साहित्य का वितरण किया। राजनीतिक गतिविधियों में भाग लेने के कारण शिक्षक पद से आपको निलम्बित कर दिया गया था।

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-2, पृष्ठ-91

श्री सिद्धराज ढड्ढा

भारत सरकार द्वारा 2002 में घोषित पद्मभूषण सम्मान को सरकार की नीतियों से असहमत होने के



कारण अस्वीकार करने वाले प्रसिद्ध गांधीवादी तथा सर्वोदय नेता श्री सिद्धराज ढड्ढा का जन्म 12 फरवरी 1909 को जयपुर (राजस्थान) में हुआ। महाराजा हाईस्कूल तथा महाराजा कालेज, जयपुर में प्राथमिक व माध्यमिक शिक्षा ग्रहण कर 1928 में आपने लखनऊ विश्वविद्यालय से बी0 ए0 व 1930 व 1931 में इलाहाबाद विश्वविद्यालय से क्रमश: एम0 ए0 व एल0 एल0 बी0 परीक्षायें उत्तीर्ण कीं। ढड्ढा जी अपने छात्र जीवन में इलाहाबाद यूथलीग व इलाहाबाद वि0 वि0 छात्रसंघ के उपाध्यक्ष रहे। 1931-33 में आपने मैसूर, बंगलोर और जयपुर में वकालत की।

1934-1942 में आप इण्डियन चेम्बर आफ कॉमर्स एण्ड इंडस्ट्री कलकत्ता के मंत्री रहे। कलकत्ता प्रवास में आप हरिजन उत्थान समिति के मंत्री तथा बंगाल हरिजन बोर्ड के सदस्य थे। उन्हीं दिनों आपने 'समाज-सेवक', 'ओसवाल' और 'तरुण जैन' जैसे पत्रों का सम्पादन किया। उन दिनों आप हिन्दुस्तान टाइम्स, अमृतबाजार पत्रिका, विशाल भारत आदि राष्ट्रीय समाचार पत्रों में लेख लिखा करते थे।

1942 के आन्दोलन के समय आपने इण्डियन चेम्बर कलकत्ता से त्यागपत्र दे दिया और आन्दोलन में कूद पड़े। वाराणसी जेल में दो वर्ष का कारावास आपको भुगतना पड़ा तभी आपने अपना शेष जीवन सार्वजनिक सेवा में लगाने का निश्चय किया। अपने जमे जमाये मंत्री पद को लात मारकर आन्दोलन में कूदने वाले कितने हैं? आपके इस कार्य की प्रशंसा करते हुए जैन सन्देश (राष्ट्रीय अंक), 23 जनवरी 1947 लिखता है-

'(राजस्थान के सिद्धराज ढड्ढा) कलकत्ता के चेम्बर आफ कॉमर्स में सेक्रेटरी का भार संभाले हुए थे, किन्तु स्वतंत्रता का दीवाना सेठों के चांदी और सोने के सट्टे का हिसाब रखने में ही अपनी प्रतिभा का व्यय कैसे करता रह सकता था, फलत: आप वहाँ से जयपुर चले आये ओर यहाँ आकर जन-सेवा और जन-जागृति का कठिन व्रत स्वेच्छा से अंगीकार किया और दैनिक 'लोकवाणी' का संस्थापन, संचालन और सम्पादन करना आरम्भ कर दिया है। यहाँ आकर थोड़े ही दिनों में आपका विशिष्ट स्थान बन गया है। ऐसे राष्ट्रवादी युवकों को जेल तो प्रसाद में मिला ही करती है। इसलिए आपको भी सन् 42 में जेल मिली तो कोई आश्चर्य की बात नहीं है। सामाजिक विचारों में आप बहुत क्रान्तिकारी सुधारक हैं। अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए आप 'तरुण जैन' मासिक भी निकाल रहे हैं।'

1943-45 में आप जेल में रहे तथा 1945 से 1951 के मध्य राजपूताना देशी राज्य लोक परिषद् के मंत्री, अ0 भा0 देशी राज्य लोक परिषद् के

कार्यकारिणी सदस्य, अ0 भा0 कांग्रेस कमेटी के सदस्य, अ0 भा0 कांग्रेस अधिवेशन स्वागत समिति जयपुर (1948) के संयुक्त मंत्री आदि अनेक पदों पर रहे। इसी समय आप राजस्थान मंत्रिमण्डल में उद्योग तथा व्यापार मंत्री रहे। राजस्थान ग्रामोद्योग बोर्ड के अध्यक्ष पद को भी आपने सुशोभित किया था।

1951 में ढढ्ढा जी ने कांग्रेस से त्यागपत्र देकर सर्वोदय आन्दोलन में प्रवेश किया और तभी से इससे जुड़े हुए हैं। आपने श्री जयप्रकाश नारायण के साथ इंग्लैण्ड, यूरोप, अफ्रीका, जापान, दक्षिण कोरिया आदि की यात्रायें की थीं। आप सर्व सेवा संघ, राजस्थान सेवक संघ, राजस्थान खादी संघ आदि के अध्यक्ष रहे हैं। ढढ्ढा सा0 ने जयपुर में ग्रामीण अर्थशास्त्र का शोध तथा अध्ययन करने के लिए 'कुमारप्पा ग्राम स्वराज्य संस्थान' की स्थापना की। सम्प्रति आप इसके अध्यक्ष हैं। आप 'सत्याग्रह मीमांसा' मासिक पत्रिका का सम्पादन भी कर रहे हैं।

आ0-(1) रा0 स्व0 से0, पृष्ठ-592 (2) जै0 स0 रा0 अ0, पृष्ठ-70 (3) राजस्थान में रचनात्मक कार्य (परिचय ग्रन्थ) पृष्ठ-64 (4) स्व0 प0

श्री सुखलाल इमलिया

श्री सुखलाल इमलिया का जन्म 1919 में ललितपुर (उ0प्र0) में हुआ। आपके पिता का नाम



श्री परमानंद था। अपने अग्रज श्री वृन्दावनलाल इमलिया (इनका परिचय इसी ग्रन्थ में अन्यत्र देखें) की प्रेरणा से आप परिवार के भरण-पोषण की परवाह न करते हुए भारत-माता को स्वतंत्र कराने हेतु स्वयं भी सेनानियों की कतार में खड़े हो गए। जिससे परिवार गहन अर्थाभाव से पीड़ित रहा, लेकिन देश-प्रेम ने परिवार को प्रमुखता नहीं दी। आजादी की लड़ाई लड़ने वाले योद्धाओं में बहुत कम ऐसे परिवार हैं, जिन्होंने परिवार को गौण और देश को प्रमुखता प्रदान की। आजादी के प्रणेताओं ने जो भी कार्य सौंपा उसे आपने निर्भीकता पूर्वक पूरा किया। करो या मरो आंदोलन में 1942 में आपको एक वर्ष की कठोर सजा एवं 100/- जुर्माना हुआ। जुर्माना अदा न करने पर दो माह की और सजा झांसी जेल में काटी।

आ0-(1) जै0 स0 रा0 अ0 (2) र0 नी0, पृष्ठ-34 (3) डॉ0 बाहुबलि कुमार द्वारा प्रेषित विवरण

श्री सुखलाल जैन

सागर (म0प्र0) के श्री सुखलाल जैन, पुत्र-श्री हीरालाल का जन्म 1901 में हुआ। 1921 में स्वतंत्रता संग्राम में आपने भाग लिया तथा 6 माह का कारावास भोगा।

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-2, पृष्ठ-68 (2) आ0 दी0, पृष्ठ-84

सिंघई सुगमचंद जैन

पिण्डरई, जिला-मण्डला (म0प्र0) के जमींदार सिंघई सुगमचंद जैन, पुत्र-श्री सिंघई मोहनलाल जैन का जन्म 1916 में हुआ। 14 वर्ष की अल्पायु में आप स्वाधीनता आन्दोलन में कूद पड़े। अपना राजनैतिक परिचय देते हुए आपने लिखा है कि- '1930 की बात है, मेरे बड़े दादा, जिनके पास मैं रहता था, कट्टर कांग्रेसी थे, उन्होंने 1930 में विदेशी वस्त्रों की होली जलाई थी, यह दृश्य देख पूरी जानकारी के लिए मेरी जिज्ञासा बढ़ी और मेरा मन विदेशी शासन के प्रति विद्रोह से भर गया।

विदेशी वस्त्रों की होली जलाने के कारण हमारे पूर्वजों की दो बन्दूकें, जो जमींदार होने के कारण सुरक्षार्थ हमें मिली थीं, को शासन ने जब्त कर लिया। 1940 में मण्डला से श्री श्यामलाल जैन व श्री



अमीरचंद जैन माननीय गिरिजाशंकर अग्निहोत्री के निर्देश से पिण्डरई में प्राचार्य के रूप में भेजे गये। ये सभी मेरे यहाँ ही रहते थे, अत: मैं भी प्रचार के लिए जाने लगा। चूंकि मेरी इन गांवों में जमींदारी थी अत: सभी मेरी बात ध्यान से सुनते थे। हमारे भाषण के मुख्य विषय सूत कातना और जमा तकावी नहीं देना आदि थे।

1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन का पिण्डरई में बड़ा असर हुआ, अनेक क्रान्तिकारी सेनानी जेल गये, जिन आठ कार्यकर्ताओं के नाम वारण्ट जारी हुए उनमें मेरा नाम भी था। जानकारी प्राप्त होते ही मैं भूमिगत हो गया, उस अवस्था में भी रेलवे के तार काटना, फिश प्लेट हटाना, ग्राम पंचायत भवन के रिकार्ड जलाना आदि गतिविधियों में संलग्न रहा। मेरे भूमिगत रहने के कारण, इलाज की समुचित व्यवस्था न होने से मेरी पत्नी ने प्रसव के चार घण्टे बाद ही दम तोड़ दिया। मेरा एक मात्र भतीजा भी इस अवधि में स्वर्ग सिधार गया।' आपके परिवार के अनेक लोग जेलयात्री रहे हैं जिनमें अग्रज सिंघई नेमीचंद का नाम प्रमुख है।

आ0-(1) जै0 स0 रा0 अ0 (2) स्व0 प0

श्री सुजानमल जैन

रतलाम (म0प्र0) के श्री सुजानमल जैन, पुत्र-श्री केशरीमल जैन ने स्वतंत्रता आन्दोलन में सक्रिय भागीदारी निभायी, फलत: 1941 एवं 42 में 1 वर्ष 4माह आपको इन्दौर जेल में कारावास की सजा भुगतनी पड़ी।

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-4, पृष्ठ-196

श्री सुन्दरलाल चौधरी

श्री सुन्दरलाल चौधरी, पुत्र-श्री सवईलाल का जन्म 1920 में हुआ। चौधरी जी बीना (म0प्र0) के एक उत्साही कार्यकर्ता थे। कांग्रेस कार्यों में आप पूर्ण तत्परता के साथ भाग लेते थे। 1942 के अगस्त आंदोलन में सरकार ने आपको गिरफ्तार कर लिया, फलत: जेल में आपने 6 महीने की सख्त सजा भोगी।

आ0-(1) जैन0 स0 रा0 अ0 (2) आ0 दी0, पृष्ठ-84 (3) पं0 वंशीधर जी शास्त्री द्वारा प्रेषित परिचय

श्री सुन्दरलाल छजलानी

महिदपुर, जिला- उज्जैन (म0प्र0) के श्री सुन्दरलाल छजलानी, पुत्र-श्री लक्ष्मीचंद का जन्म 8 जनवरी 1927 को हुआ। अल्पवय में ही आप 1939 से राष्ट्रीय आन्दोलन में सक्रिय हो गये थे। 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में आप गिरफ्तार हुए व महिदपुर जेल में कारावास की सजा भोगी।

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-4, पृष्ठ-176

श्री सुन्दरलाल जैन

जिनके विषय में कहा जा सकता है कि 'जन्म के समय उनके मुँह में सोने की चम्मच थी।' ऐसे



श्री सुन्दरलाल जैन, पुत्र-श्री लाला सरूपचंद जैन का जन्म 26 जुलाई 1914 को मेरठ (उ0प्र0) में हुआ। किशोरावस्था में ही आपने नमक कानून तोड़कर गांधी जी के सिपाही के रूप में आजादी का बिगुल बजाया था।

सुन्दरलाल जी मात्र 15 वर्ष के थे तब अपने समवयस्क 11 किशोरों का जत्था लेकर गाजियाबाद में हिण्डन नदी के तट पर नमक बनाने गए थे। जत्थे में शामिल सबसे अधिक आयु का किशोर 18 वर्ष का था। सभी किशोर मेरठ के प्रतिष्ठित परिवारों में से थे। मेरठ सदर में जत्थे को अभूतपूर्व विदाई दी गई। मेरठ से पदयात्रा करते हुए और मार्ग में पड़ने

वाले गांवों में गांधी जी का संदेश पहुँचाते हुए हिण्डन तट पर पहुँचे । वहाँ जब यह नमक बना रहे थे तब सैकड़ों कुतूहलभरी आँखें इनके जत्थे के साहस और लगन को निहार रही थीं। पुलिस ने इन्हें किशोर समझकर गिरफ्तार नहीं किया। लौटते हुए यह पिलखुआ, हापुड़ होते हुए गढ़मुक्तेश्वर गए और वहाँ से वापिस लौटे।

श्री सुन्दरलाल जैन अधिक समय शांत नहीं बैठ सके। जुलाई 1930 में वे उस समय के सुविख्यात 'रैड पोस्टर केस' में पकड़े गए। मेरठ की कोतवाली के बाहर श्री जैन ने एक पोस्टर चिपकाया था, जिसमें घोषणा की गई थी कि 'हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन आर्मी की स्थापना मेरठ में भी हो गई है। यदि गांधी जी के निहत्थे सैनिकों पर हमले होंगे तब हम बदला लिए बिना नहीं रहेंगे।'

'रैड पोस्टर केस' में इनकी गिरफ्तारी पर एक विरोधसभा जाने-माने लेखक और स्वतंत्रता सेनानी श्री रामशरण शर्मा ने आयोजित की। उसी में श्री शर्मा पकड़े गए और दण्डित हुए। लाल पोस्टरों के मामले में श्री जैन को दो वर्ष के कठोर कारावास का दण्ड प्रथम श्रेणी के मजिस्ट्रेट श्री बशीर अहमद ने दिया था। इनकी अल्पायु को ध्यान में रखकर पन्द्रह-पन्द्रह हजार रुपये की दो जमानतें और मुचलका देने पर प्रोबेशन पर छोड़े जाने का विकल्प रखा गया था, पर श्री जैन ने जमानत पर बाहर आना स्वीकार नहीं किया। उस समय इन्हें मेरठ तथा गाजीपुर की जेलों में रखा गया। गाजीपुर में प्रसिद्ध कवि और साहित्यकार पं0 बालकृष्ण शर्मा 'नवीन', सुप्रसिद्ध क्रांतिकारी महिला श्रीमती प्रकाशवती के पति श्री यशपाल, मैनपुरी के कुंवर गुलाब सिंह इनके जेल साथी थे। श्री जैन मुकदमे के सम्बन्ध में जेल ही में थे जब इनका हाई स्कूल का परीक्षा परिणाम आया था।

गांधी इरविन पैक्ट के अंतर्गत श्री जैन के साथ के सभी राजनैतिक बंदी छोड़ दिए गए। श्री जैन को जेल में छोड़कर आते समय सभी फफक-फफक कर रोए। बाद में पं0 बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' के प्रयासों से श्री जैन एक माह बाद छूट सके।

जेल से रिहाई के बाद श्री जैन ने मेरठ कालेज में 11वीं कक्षा में प्रवेश ले लिया। 1932 में मेरठ कॉलेज के 9 लड़कों को क्रिमिनल ला एमेंडमेंट एक्ट के अंतर्गत गिरफ्तार किया गया, उनमें श्री जैन एवं श्री राजेन्द्र पाल वारियर भी थे। इन छात्रों से नेताओं के नाम और ठिकाने उगलवाने के लिए यातनाएं देने हेतु सबको जिले के अलग-अलग थानों में ले जाया गया। श्री जैन को गढ़मुक्तेश्र थाने में ले गए।

इसी बीच मेरठ कालेज के तत्कालीन प्रिंसिपल कर्नल टी0 एफ0 ओ0 डोनल ने जेल के अधिकारियों को पत्र लिखा कि मेरठ कालेज के इन छात्रों के वह संरक्षक हैं और उन्हें किसी प्रकार की यातना न दी जाए। कर्नल डोनल उस समय वाइसराय के मानद ए0डी0सी0 भी थे। 15 दिन बाद सभी छात्रों को छोड़ दिया गया।

इसके बाद श्री जैन के विरुद्ध धारा 110 एफ, जाप्ता फौजदारी के अंतर्गत नौ अन्य व्यक्तियों के साथ-साथ मुकदमा चलाया गया। आरोप थे कि यह खतरनाक, दु:साहसी हैं, अपराधियों को संरक्षण देते हैं और सामाजिक जीवन के लिए संकटमय हैं। इन 10 छात्रों में श्री दरयाव सिंह, लावड़ के श्री बंसल, मुजफ्फरनगर के श्री ओमप्रकाश, श्री मक्खन लाल, श्री मुन्नी लाल, श्री बनवारी लाल, श्री काशी राम खरे (बाद में एडवोकेट बने) भी थे। इन्हें तीन-तीन वर्ष की सजा जमानत देने से इन्कार करने पर हुई।

श्री सुन्दरलाल जैन, श्री मुन्नी लाल तथा श्री मक्खन लाल को छोड़कर बाकी लोग उच्च न्यायालय द्वारा बरी कर दिए गए। श्री मक्खन लाल और श्री मुन्नी लाल ने जमानत दे दी। इस प्रकार अकेले श्री जैन तीन वर्ष का कारावास भुगतने के लिए जेल में रह गए। तब शायद वह 17-18 वर्ष की आयु के थे। इस बार उनको मेरठ के अलावा फैजाबाद और बरेली की जेलों में रखा गया। 6 माह तक उनके पैरों में बेड़ियाँ भी डली रहीं। उच्च न्यायालय के आदेश से इनकी बेडियाँ काटी गईं। इस जेल यात्रा के दौरान मौलाना आजाद, काजी नजमुद्दीन, पं0 प्यारे लाल शर्मा, हापुड़ के श्री लक्ष्मीनारायण तथा श्री सरजू प्रसाद का इनको सान्निध्य और मार्गदर्शन मिला। श्री जैन अपनी राजनैतिक गतिविधियों के कारण इण्टर भी नहीं कर पाए।

1950-1951 में श्री जैन को ऑनरेरी मजिस्ट्रेट बनाया गया। कुछ समय बैंच में रहे, फिर 1951 में ही द्वितीय श्रेणी के और लगभग 6 माह बाद ही प्रथम श्रेणी के स्पेशल मजिस्ट्रेट बना दिए गए।

श्री जैन के अधिकांश निर्णयों के विरुद्ध अपीलें खारिज होती थीं तथा इनके निर्णयों को सवेतन मजिस्ट्रेटों से भी कुछ मामलों में उत्कृष्ट समझा गया। जब श्री चरण सिंह ने कांग्रेस छोड़कर संयुक्त विधायक दल के नेता के रूप में उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री का पद सम्भाला तभी श्री जैन ने अपने इस पद से त्यागपत्र दे दिया। उस समय वह उत्तर भारत के प्रसिद्ध मेला नौचंदी के मेला मजिस्ट्रेट के रूप में कार्य कर रहे थे। मेरठ में नागरिक सुरक्षा संगठन के वह सर्व प्रथम गैर-सरकारी चीफ वार्डन रहे।

श्री जैन संयुक्त व्यापार संघ, मेरठ के संस्थापक-अध्यक्ष थे, इस पद पर वह 1982 तक रहे। बाद में उन्होंने त्यागपत्र दे दिया। मेरठ में 1948 में हुए हिन्दी साहित्य सम्मेलन अधिवेशन की स्वागत समिति के आप कोषाध्यक्ष थे। हिंदी भवन समिति के अध्यक्ष रहे। पं0 प्यारे लाल शर्मा स्मारक ट्रस्ट और गंगा मोटर कमेटी के भी अध्यक्ष रहे। मेरठ की सुप्रसिद्ध शिक्षा संस्था कनोहरलाल महिला महाविद्यालय की प्रबंध समिति के भी आप सदस्य रहे।

श्री जैन उन थोड़े से स्वतंत्रता सेनानियों में थे जिन्होंने सरकार से मिलने वाली पेंशन नहीं ली। श्री जैन कहा करते थे, '1930-1932 की स्वतंत्रता सेनानियों की पीढ़ी कुछ तो समाप्त हो गई, कुछ बहुत वृद्ध हो गए, पर आज भी स्वतंत्रता सेनानी समाज को साम्प्रदायिकता के विष से बचाए रखने और सामाजिक कुरीतियों को मिटाने में योगदान कर सकते हैं।' आपका निधन 30 अगस्त 1989 को मेरठ में हुआ।

आ0-(1) स्वाधीनता आन्दोलन और मेरठ, पृष्ठ-300 (2) जै0 स0 रा0 अ0 (3) जनसत्ता, 3-9-1989 (4) पुत्र श्री दिनेश जैन द्वारा प्रेषित परिचय।

श्री सुन्दरलाल जैन

विधि स्नातक श्री सुन्दरलाल जैन कानपुर (उ0प्र0) के देशभक्त वैद्य कन्हैयालाल के बड़े पुत्र थे। आपके पिता, माता व अनुज महेशचंद जेलयात्री रहे हैं। आप ऑनरेरी मजिस्ट्रेट थे किन्तु कांग्रेस में भर्ती होने पर उसकी आज्ञानुसार आपने उस पद से त्याग-पत्र दे दिया था। 1940 के आन्दोलन में आपको एक वर्ष की जेल-यात्रा करनी पड़ी थी।

आ0-(1) जै0 स0 रा0 अ0 (2) पं0 बच्चूलाल जी द्वारा प्रदत्त परिचय। (3) कानपुर जैन डायरेक्टरी (1998)

श्री सुमतचंद सौंधिया

विधि स्नातक तक शिक्षा ग्रहण करने वाले सागर (म0प्र0) के श्री सुमतचंद सौंधिया, पुत्र-श्री खूबचन्द ने 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में भाग लिया और 6 माह के कारावास की सजा भोगी।

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-2, पृष्ठ-69 (2) आ0 दी0, पृष्ठ-84

श्री सुमतिचंद जैन

बुढ़ार, जिला-शहडोल (म0 प्र0) के श्री सुमतिचंद जैन, पुत्र-श्री परमोले लाल जैन का जन्म



1916 में हुआ। 1932 में बुढ़ार में जब स्वाधीनता आन्दोलन उभार पर आया तो आप उसमें कूद पड़े। आपने कटनी (जबलपुर) में विदेशी वस्त्रों की दुकान पर धरना दिया, तब आपको गिरफ्तार कर सात दिन कटनी जेल में रखा गया।

1942 के आन्दोलन में आप 17-8-1942 को बुढ़ार मजिस्ट्रेटी की इमारत पर तिरंगा झण्डा फहराने का प्रयास कर रहे थे, तब दो-तीन पुलिस वाले वहाँ आ गये। आप कसरती पहलवान थे अत: पुलिस वालों को एक तरफ झटककर आपने झण्डा फहरा दिया। इस बीच कुछ पुलिस वाले और आ गये, फलत: आपको गिरफ्तार कर लिया गया और सेन्ट्रल जेल रीवां भेज दिया गया, जहाँ आप 5-3-1943 तक अन्डरट्रायल रहे। आपको 100/- रुपये जुर्माना और छह माह के कठोर कारावास की सजा दी गई, जो आपने रीवां जेल में काटी। आजादी के बाद भी आप सामाजिक कल्याण के कार्यों में सहयोग देते रहे। 2 अगस्त 1971 को आपका देहावसान हो गया।

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-5, पृष्ठ-316 (2) स्वा0 आ0 श0, पृष्ठ-155-156 (3) जै०स०रा०अ०, पृष्ठ-65

श्री सुमेरचंद जैन

सनावद (म0प्र0) के श्री सुमेरचंद जैन को 1942 के आन्दोलन में सात वर्ष की सजा हुई थी। इस सन्दर्भ में नवभारत, इन्दौर, दिनांक 4-सितम्बर 1997 लिखता है-'सत्याग्रह करते हुए एक के बाद एक प्रजामंडल के नेता गिरफ्तार होते रहे। पहले जत्थे में मयाचंद जटाले, मन्नालाल पंचोलिया और नारायण दास जायसवाल पकड़े गये, फिर तीसरे दिन बारी आई अध्यक्ष कमलचंद जैन, मांगीलाल पाटनी, सुमेरचंद जैन और छात्र नेता जगदीश विद्यार्थी की..

★ ★ ★ ★

पाँच जेलयात्री सर्वश्री मयाचंद जटाले, मन्नालाल पंचोलिया, नारायणदास जायसवाल, कमलचंद जैन और सुमेरचंद को जेल में हो रही ज्यादतियों के खिलाफ बगावत करके 2 अक्टूबर को मंडलेश्वर जेल तोड़ने, नगर में जाकर गांधी जयन्ती की सभा में भाग लेने के आरोप में सात-सात वर्ष की सजायें हुईं और उन्हें इन्दौर के 51 सत्याग्रहियों के साथ सेन्ट्रल जेल भिजवा दिया गया।'

नगर में होने वाली सभाओं का ऐलान आप हाथ में ध्वनि प्रसारक यन्त्र लेकर सिपाही के सदृश बिगुल बजाते हुए करते थे। आप सनावद प्रजामण्डल के सक्रिय कार्यकर्ता रहे हैं।

आ0-(1) जै0 स0 रा0 अ0, पृष्ठ-75 (2) नवभारत, इन्दौर, 4 सितम्बर 1997

श्री सुरेन्द्रकुमार जैन

जिला स्वतंत्रता सैनिक संघ के मंत्री, प्रसिद्ध कवि, लेखक, पत्रकार एवं प्राकृतिक चिकित्सा विशेषज्ञ



श्री सुरेन्द्रकुमार जैन, पुत्र-श्री बृजलाल जैन का जन्म 7 फरवरी 1926 को छतरपुर (म0प्र0) में हुआ। पंचायत राज, सहकारी समाज, विन्ध्यवाणी, उत्सर्ग, जैसी पत्र/पत्रिकाओं/स्मारिकाओं के सम्पादक श्री जैन लम्बे समय तक श्री दि0 जैन अतिशय क्षेत्र खजुराहो के उपाध्यक्ष एवं मंत्री रहे थे।

श्री जैन ने अपने राजनैतिक जीवन के सन्दर्भ में आकाशवाणी, छतरपुर को दिये एक साक्षात्कार में कहा था कि 'सन् 1936-1937 में मैं कक्षा 5

का विद्यार्थी था। मेरे पिता जी राष्ट्रीय भावनाओं में पगे थे। मेरे घर पर राष्ट्रीय नेताओं, जैसे महात्मा गांधी, सरोजनी नायडू, अली बन्धु आदि नेताओं के अनेक चित्र बने थे। एक चित्र था जिसमें सरोजनी नायडू एक जुलूस का नेतृत्व कर रही थीं। दूसरा चित्र था जिसमें नीचे लिखा था, "अली बन्धु जेल में रेंटिया काते छे", जिसे मैं बाल-सुलभ दृष्टि से संशोधन कर पढ़ा करता था, कि "अलीबन्धु जेल में रोटियां काते छे।" मन ही मन कहता था कि यह प्रैस वालों ने गलत छाप दिया है। रेटियाँ के स्थान पर रोटियाँ छपना चाहिये था।

विद्यार्थी जीवन में ही मुंशी प्रेमचन्द, जयशंकर प्रसाद, सोहनलाल द्विवेदी, माखनलाल चतुर्वेदी, शरद्चन्द्र चटर्जी, महादेवी वर्मा, वृन्दावनलाल वर्मा आदि अनेक साहित्यकारों के साहित्य से भली भाँति परिचित हो गया था। उन्हीं दिनों मैक्सिम गोर्की के उपन्यास "माँ" ने मुझे अत्यन्त प्रभावित किया और उस उपन्यास ने मुझमें देशप्रेम की भावना कूट-कूट कर भर दी।

सन् 1941 में महाराजा इन्टर कालेज से 9वीं कक्षा उत्तीर्ण कर एंग्लो-बंगाली इंटर कालेज, इलाहाबाद में कक्षा 10 में प्रवेश लिया। सन् 1942 में जब मैं उक्त कालेज का विद्यार्थी था, तभी महात्मा गांधी ने भारत छोड़ो आन्दोलन का आह्वान किया जिसमें "करो या मरो" का नारा बुलन्द किया था।

11 •अगस्त को विश्वविद्यालय परिसर में विद्यार्थियों ने एक बड़ी सभा का आयोजन किया जिसमें सभी शिक्षण संस्थाओं में हड़ताल किये जाने का निर्णय लिया गया। 12 अगस्त को विश्वविद्यालय एवं सभी शिक्षण संस्थाओं के छात्रों का एक जुलूस यूनीवर्सिटी पर एकत्रित हुआ। जुलूस को दो हिस्सों में जाना था। एक हिस्सा चौक में घण्टाघर की ओर और दूसरा कचहरी की ओर। उस जुलूस में विजयलक्ष्मी पंडित की बेटी, जस्टिस आनन्द नारायण मुल्ला की बेटी, एक पुलिस अफसर की बेटी, इलाहाबाद की त्रिवेणी में राष्ट्रीयता की यह त्रिवेणी। तीनों की साड़ी केसरिया और तीनों के हाथ में तिरंगे झन्डे। लगता था छात्रों के जुलूस का नेतृत्व करती भारतमाता की तीन पुत्रियाँ हों। जोश से उफनता वातावरण।

हमारी टुकड़ी को कचहरी पर धावा बोलना था, लेकिन वहाँ पहुँच कर एक अजीब दृश्य उपस्थित हो गया। एक ओर मजिस्ट्रेट डिक्सन, पुलिस सुपरिन्टैन्डैन्ट आगा और लाल पगड़ीधारी पुलिस हिंसक दृष्टि से देखती खड़ी थी। हम लोगों ने आगे बढ़ना चाहा। पुलिस अफसर ने जुलूस को वापिस जाने की आज्ञा दी, लेकिन उस पर किसी ने ध्यान नहीं दिया। उसने फिर से कहा "दो मिनट का वक्त है सब लोग वापिस चले जाओ, वरना गोलीबारी की जाएगी।" इसका भी हम लोगों पर कोई प्रभाव न पड़ा। डिक्सन क्रोध से लाल हो गया। उसने लाठी चार्ज की आज्ञा दी और घोड़े दौड़ाये। पर जुलूस पीछे न हटा। इस पर मजिस्ट्रेट डिक्सन ने कड़ककर कहा "फायर" साथ धड़धड़ाया बन्दूकों ने आसमान। लड़कियां घायल पर अकम्प, अडिग साहस। फिर गोलियां और लड़कियां घायल होकर जमीन पर। वातावरण सन्नाटे में। जुलूसशान्ति। चारों ओर से लेटो-लेटो की आवाजें आने लगीं। दोनों हाथों से कपड़ा हटा, छाती नंगी और यह ललकार- "लड़कियों पर गोलियाँ दागते तुम्हें शर्म नहीं आती ? वे अकेली नहीं, हम भी उनके साथ हैं। मुझे गोली मारो।" डिक्सन ने कहा-"मार दो, अकेला है।" वह बोले- "वह अकेला नहीं है।" इतना कहकर उन्होंने अपने हाथ में झन्डा ले लिया और उसी समय कलक्टर चिल्लाया- "शूट हिम, मारो उसे" और उसी समय आगा ने उनके सीने पर गोली दाग दी। गोली सीने के आर-पार हो गई। पद्मधर सिंह गिर पड़े।

शिक्षण संस्थायें बंद कर दी गईं। हम लोग आन्दोलन को जगह-जगह ले जाने लगे। इलाहाबाद से चलकर मैं अपने अग्रज महेन्द्र कुमार मानव के साथ अमरपाटन आया, जहाँ हम लोगों ने जुलूस निकाला और कटरा में बने मन्दिर पर एकत्रित जनसभा में जोशीले भाषण दिये। जिसके परिणामस्वरूप हम दोनों भाइयों के नाम रीवां राज्य का वारन्ट जारी कर दिया गया। मानव जी को होशंगाबाद में गिरफ्तार किया जाकर 2 माह विचाराधीन कैदी के रूप में रखा गया। बाद में सैन्ट्रल जेल में करीब 8 माह बन्दी रहे, जब कि मैंने अनेक स्थानों में भूमिगत रहकर कार्य किया।'

आपके शब्दों में -'उस आजादी की जंग में जो लोग शहीद हो गये, वे भाग्यशाली थे और उनके लिये स्वर्ग के द्वार हमेशा-हमेशा के लिये खुल गये। लेकिन जो लोग उस आजादी की जंग में कुछ कदम भी साथ रहे, वे भी कम भाग्यशाली नहीं, क्योंकि उनकी कुर्बानियों का ही फल आज की पीढ़ी "स्वाधीन भारत" के रूप में भोग रही है।' 19 दिसम्बर 1994 को आपका निधन हो गया।

आ0-(1) आकाशवाणी छतरपुर से प्रकाशित वार्ता, (2) प0 जै0 इ0, पृष्ठ-388 (3) अनेक प्रमाण पत्र आदि (4) पुत्र श्री शैलेन्द्र द्वारा प्रेषित परिचय।

श्री सुरेशचंद सिंघई

देवरी, जिला-सागर (म0प्र0)निवासी और कलकत्ता प्रवासी श्री सुरेशचंद सिंघई, पुत्र श्री-दुलीचंद सिंघई ने 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में भाग लिया, गिरफ्तार हुए और 25 सितम्बर 1942 से 11 अप्रैल 1943 तक का कारावास सागर जेल में काटा। बाद में आप कलकत्ता चले गये जहाँ जिनवाणी प्रचारक कार्यालय तथा जवाहर प्रिंटिग प्रेस चलाया। आप प्रसिद्ध स्वाधीनता सेनानी श्री परमानन्द सिंघई के भतीजे थे।

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-2, पृष्ठ-69 (2) धर्मपत्नी द्वारा प्रेषित परिचय।

श्री सुहागमल जैन

भोपाल (म0प्र0) के श्री सुहागमल जैन, पुत्र-श्री बालमुकुन्द का जन्म 1928 में हुआ। 1949 के भोपाल राज्य विलीनीकरण आन्दोलन में आपने भाग लिया तथा 16 दिन के कारावास की सजा पाई।

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-5, पृष्ठ-3।

श्री सूरजचंद जैन

जिस समय 'करो या मरो' का आह्वान किया गया था तथा पाटन, जिला-जबलपुर (म0प्र0) में



राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का संगठन भी राष्ट्रीय युवकों में लोकप्रिय हो रहा था, तब युवक सूरजचंद शहपुरा शाखा के मुख्य शिक्षक थे। संघ के देशभक्ति पूर्ण गीतों ने आपको 1942 की जनक्रांति में कूद पड़ने की अदम्य प्रेरणा दी। स्वतंत्रता का मूल्य प्राण है, देखें कौन चुकाता है- देखें कौन सुमन शैय्या तज कण्टक पथ पर आता है।

श्री सूरजचंद का जन्म 1 मई 1923 को शहपुरा, जिला- जबलपुर (म0प्र0) में श्री रूपचंद जैन के यहां हुआ था। 18 वर्ष की आयु में आप क्रांति के उन्मेष से पूर्ण, निर्भीक रूप से ब्रिटिश सत्ता को चूर-चूर करने की कामना से गांधी जी के आन्दोलन में कूद पड़े।

आप तोड़-फोड़ करने की तैयारी में लगे थे, किन्तु भाई गुलाबचंद एवं श्री हुल्लीराम के आकस्मिक रूप से गिरफ्तार कर लिये जाने से उक्त योजना असफल रही। फलत: आप अपने साथी श्री हुकुमचंद नामदेव के साथ पुलिस थाने पर स्वतंत्रता का झण्डा फहराने चल पड़े। जोश से भरे हुए अनेक नौजवानों की भीड़ पीछे-पीछे चल रही थी। अंग्रेजों का नाश

हो, भारत माता की जय के नारे शहपुरा की वायु में गूँज रहे थे।

थाने पर युवकों की भीड़ ने हिंसा पर आमादा पुलिस को उत्तेजित किया। पुलिस ने हवाई फायर किये। अपने पीछे आने वाले अपने साथियों को आपने वापिस चले जाने का आग्रह किया और श्री हुकुमचंद नामदेव के साथ आगे बढ़े। पुलिस ने आप दोनों को गिरफ्तार किया। मिटोनी स्टेशन से आप बंदी बनाकर जबलपुर ले जाये जा रहे थे, उसी समय नवयुवक दल ने क्रुद्ध हो स्टेशन पर पत्थर वर्षा कर, अंग्रेजी साम्राज्य के विरुद्ध अपना क्षोभ निकाला। सशस्त्र सैनिकों के पहरे में आप ट्रेन पर चढ़ाये गये। 2 सितम्बर 1942 को आप लोग जबलपुर कोतवाली में रखे गये, जहाँ आपने उग्र सत्याग्रही के रूप में हलचल मचा दी। दूसरे दिन 3 सितम्बर को धारा 129 व 26 के अन्तर्गत बंदी बनाकर केन्द्रीय कारागार में भेज दिये गये, जहाँ 16 जून 1943 तक कारावास का दण्ड भोगा।

आपने एक ओर कारावास काल में आर्थिक क्षति उठायी, वहीं दूसरी ओर विद्वान् राजनैतिक बंदियों के सान्निध्य में ज्ञानार्जन भी किया। प्राथमिक स्तर तक अध्ययन करने पर भी आप राजनैतिक, सांस्कृतिक एवं साहित्यिक विषयों पर भाषण देने में दक्ष हो गये। जेल से मुक्त होने पर आप तहसील के ग्रामों में कांग्रेस संगठन में जुट गये। कांग्रेस सेवादल के संयोजक, जनपद प्राथमिक शिक्षक संघ के अध्यक्ष, हरिजन सेवक संघ के तहसील प्रचारक आदि अनेक महत्त्वपूर्ण पदों पर आप रहे। स्थानीय संस्थाओं यथा ग्राम, न्याय पंचायत तथा जनपद सभा के सभासद भी आप रहे। बाद में आप सक्रिय राजनीति से तटस्थ होकर साहित्यिक कार्यकलापों में संलग्न हो गये।

आ0-(1) म0 प्र0 स्वा0 सै0, भाग-1, पृष्ठ-119 (2) स्वा0 स0 पा0, पृष्ठ-93 (3) श्री राकेश जैन शहपुरा द्वारा प्रेषित परिचय।

श्री सूरजमल गंगवाल

लाडनूं (राजस्थान) के श्री सूरजमल गंगवाल ने 'मारवाड़ लोक परिषद्' के तृतीय लाडनूं अधिवेशन में सक्रिय सहयोग दिया। 1942 के आन्दोलन में जोधपुर में सत्याग्रह करने के अपराध में आप गिरफ्तार कर लिये गये तथा 1 वर्ष की सख्त कैद की सजा आपने भोगी।

आ0-(1) जै0 स0 रा0 अ0, पृष्ठ-68

श्री सूरजमल जैन

भोपाल (म0प्र0) श्री सूरजमल जैन, पुत्र-श्री सरदारमल जैन का जन्म 1928 में हुआ। बी0कॉम, एल0एल0बी0तक शिक्षा प्राप्त श्री जैन ने 1949 के भोपाल राज्य विलीनीकरण आन्दोलन में भाग लिया तथा 32 दिन का कारावास भोगा।

आ0-(1) म0 प्र0 स्वा0 सै0, भाग-5, पृष्ठ-31

श्री सूरजमल लुक्कड़

ग्राम-अजड़, जिला-खरगौन (म0प्र0) के श्री सूरजमल लुक्कड, पुत्र-श्री फूलचंद लुक्कड़ का जन्म 31 अगस्त 1924 को हुआ। आप प्रजामण्डल के सक्रिय सदस्य रहे। 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में भाग लेने के कारण आपको 4 माह 12 दिन का कारावास भोगना पड़ा।

आ0-(1) म0 प्र0 स्वा0 सै0, भाग-4, पृष्ठ-94

श्री सेजमल जैन

परतन्त्र भारत में विवाह न करने की प्रतिज्ञा करने वाले श्री सेजमल जैन का जन्म 1913 में निम्बोद, जिला-मन्दसौर (म0प्र0) में हुआ। 17 वर्ष की उम्र में आपका मन सामन्तवाद के प्रति विद्रोह कर बैठा, फलत: आपने निम्बोद के जागीरदार का विरोध करना प्रारम्भ कर दिया। जागीरदार के अत्याचार आपके साथ आपके परिवार पर भी होने लगे। अन्तत: विवश होकर आपको निम्बोद छोड़ना पड़ा। आप इन्दौर आकर मालवा

मिल में काम करने लगे। इन्दौर आकर आप 18 वर्ष की उम्र में ही कांग्रेस से जुड़ गये और संगठन में अपना प्रमुख स्थान बना लिया। श्री मनोहर लाल मेहता, लक्ष्मण सिंह चौहान, बाबूलाल पाटोदी, कन्हैया लाल खादीवाला आदि के साथ रहकर काम करने का सौभाग्य सेजमल जी को मिला।

इन्दौर में आपको पूज्य बापू के दर्शन का सौभाग्य मिला। बापू के समक्ष आपने प्रतिज्ञा की कि 'मैं असत्य नहीं बोलूंगा और धूम्रपान नहीं करुंगा साथ ही जब तक देश आजाद नहीं होगा तब तक विवाह नहीं करुंगा।' जीवनपर्यन्त आपने ये प्रतिज्ञायें निभाईं।

1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में श्री जैन 20 अगस्त 1942 से 11 अक्टूबर 1942 तक हिरासत में रहे। अपराध सिद्ध होने पर 29 नवम्बर 1943 तक आपको सेन्ट्रल जेल इन्दौर में रखा गया। जेल में कंकड मिली रोटियाँ खाने से इन्हें पेट की बीमारी हो गई, फलत: सजा पूरी होने से पहले ही आपको मुक्त कर दिया गया। आपके भाई श्री जोधराम वैसी ही स्थिति में आपको निम्बोद लाये जहाँ 1944 के प्रारम्भ में आपका देहावसान हो गया।

आ0-(1) स्व0 स0 म0, पृष्ठ-45-46

श्री सोहनलाल जैन

नादगांव, जिला-रायपुर (म0प्र0) के श्री सोहनलाल जैन, पुत्र-श्री धवेरचन्द जैन का जन्म 10 मई 1926 को हुआ। माध्यमिक तक शिक्षा प्राप्त श्री जैन ने 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में भाग लिया तथा 6 माह का कारावास भोगा।

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-3, पृष्ठ-93

श्री सोहनलाल जैन

मेघनगर, जिला-झाबुआ (म0प्र0) के श्री सोहनलाल जैन, पुत्र-श्री वीरचन्द जैन ने 1942 के आन्दोलन में भाग लिया। म0प्र0 शासन ने आपको सम्मानित किया है।

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-4, पृष्ठ-148

श्री सौभाग्यमल जैन

स्नातक तक शिक्षा प्राप्त ग्राम-दबोह (लहार), जिला-भिण्ड (म0प्र0) के श्री सौभाग्यमल जैन, पुत्र-श्री अनूपचन्द जैन का जन्म 17 दिसम्बर 1917 को हुआ। 1946 में जागीर उन्मूलन आन्दोलन में आपने भाग लिया, फलत: गिरफ्तार होकर 15 दिन का कारावास भोगा।

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-4, पृष्ठ-283

श्री सौभाग्यमल जैन

शाजापुर (म0प्र0) के श्री सौभाग्यमल जैन, पुत्र-श्री चुन्नीलाल जैन का जन्म 6 जनवरी 1904 को हुआ। ग्राम- थांदला (झाबुआ) म0प्र0 में 20 वर्ष की आयु से ही गांधी जी द्वारा संचालित रचनात्मक कार्यक्रमों में आपने सक्रिय भाग लेना प्रारम्भ कर दिया था। झाबुआ राज्य में उत्तरदायी शासन हेतु आंदोलन को आपने बल दिया, 1936 में सभा बंदी कानून तोड़ा तथा गिरफ्तार हुए और झाबुआ जेल में 45 दिन बन्द रहे।

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-4, पृष्ठ-227

श्री सौभाग्यमल जैन

मध्यभारत राज्य में वित्तमंत्री, राजस्वमंत्री तथा स्वायत्त-शासनमंत्री रहे श्री सौभाग्यमल जैन, पुत्र-श्री बापूलाल जैन का जन्म 24 फरवरी 1910 को शुजालपुर, जिला-शाजापुर (म0प्र0) में हुआ। एक प्रतिभावान छात्र, योग्य वकील तथा स्वाधीनता आन्दोलन में तेजस्वी नेतृत्व के धनी श्री जैन प्रसिद्ध गांधीवादी तथा म0 प्र0 के पूर्व मुख्यमंत्री श्री पं0 लीलाधर जोशी के बालसखा थे।

जैनधर्म एवं दर्शन के प्रतिष्ठित विद्वान् तथा निरन्तर स्वाध्यायी सौभाग्यमल जी बचपन से ही राष्ट्रीय आन्दोलन में भाग लेने लगे थे। वे पं0

लीलाधार जोशी के अनुयायी थे। इस सन्दर्भ में नवभारत, इन्दौर, दि0 7 सितम्बर 1997 लिखता है-'पं0 लीलाधर जोशी अपने सहयोगियों बालकृष्ण शर्मा, नवीन चौधरी, सौभाग्यमल जैन के साथ कई बार जेल गये।' शुजालपुर में सौभाग्यमल जी के मार्गदर्शन में ही प्रवासी प्रजामण्डल का कार्यालय स्थापित किया गया था। गांधीवाद के कट्टर अनुयायी श्री जैन का 31 अक्टूबर 1994 को निधन हो गया।

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-4, पृष्ठ-227 (2) स्वतंत्रता संग्राम और राष्ट्रीय जन जागरण में शाजापुर जिले का योगदान (टंकित शोधप्रबन्ध) (3) नई दुनिया, इन्दौर, 3 सितम्बर 1997 (4) नवभारत, इन्दौर, 7 सितम्बर 1997

श्री सौभागमल पोरवाल जैन

श्री सौभागमल पोरवाल जैन, पुत्र-श्री रखबचंद का जन्म 1889 में रतलाम (म0प्र0) में हुआ। आपके पूर्वज रुई की दलाली का कार्य करते थे। सर्वप्रथम श्री पोरवाल गुजरात के प्रसिद्ध कार्यकर्ता प्राणशंकर दवे, जो रतलाम में रहकर प्रैक्टिस करते थे, द्वारा खादी प्रचार और विदेशी वस्त्र बहिष्कार आन्दोलन में प्रजा परिषद् के सदस्य बने। यह घटना 1933 की है।

प्रजामंडल में आपने श्री चांदमल मेहता (इनका परिचय इसी ग्रन्थ में अन्यत्र देखें) के साथी के रूप में कार्य किया। प्रजामंडल के किसान आन्दोलन के समय जुलूस निकालने पर राज्य द्वारा निषेधाज्ञा का नोटिस प्रजामंडल कार्यालय पर लगाया गया। पोरवाल जी ने उसे उखाड़कर फाड़ डाला, फलत: गिरफ्तार हुए और 6 माह (या 3 माह) का कठोर कारावास भोगा।

पोरवाल जी के सन्दर्भ में नवभारत, इन्दौर, दिनांक 4 दिस0 1997 लिखता है-'सन् 1933 में सूखा पड़ने से आदिवासी भूखे मरने लगे, तब प्रजामंडल के सदस्य श्री टीकमचंद जैन, श्री सौभागमल पोरवाल आदि ने दानदाताओं के नाम अपील निकालकर सहायता मांगी, जिससे नगदी, अनाज, कपड़ा आदि प्राप्त हुआ। वह आदिवासियों में मुफ्त वितरण करके लोगों को अकाल मृत्यु से बचाया।... अनाज वितरण की बात राजा साहब के चापलूसों द्वारा राजा तक पहुँचाने से वे बौखला गये।... राजा साहब ने अपने चापलूसों से सलाह करके 420 का मुकदमा बनाकर प्रजामंडल के श्री सौभागमल जी तथा अन्य लोगों को गिरफ्तार करके जेल में बन्द कर दिया।'

उक्त समाचार पत्र के अनुसार पोलिटिकल एजेण्ट फिटज साहब के आने पर भी आप गिरफ्तार हुए थे। बाद में आप बड़नगर चले गये, जहाँ 1965 के आसपास आपका देहावसान हुआ।

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-4, पृष्ठ-197 (2) रतलाम के वरिष्ठ स्वतंत्रता सेनानी श्री दलीचंद जैन द्वारा प्रेषित परिचय। (3) नवभारत, इन्दौर, दिनांक 4 दिसम्बर 1997

श्री सौभाग्य सिंह चोरड़िया

श्री सौभाग्य सिंह चोरड़िया का जन्म 1912 ई0 में नीमच (म0प्र0) में हुआ। आपके पिता का नाम श्री नथमल चोरड़िया (इनका परिचय इसी ग्रन्थ में अन्यत्र देखें।) था। चोरड़िया जी को राष्ट्रीय विचारधारा की भावना पारिवारिक परिवेश से ही मिली। इनके परिवार में लगभग सभी लोग देश भक्ति की भावनाओं से सिक्त थे तथा अपने-अपने स्तर पर आंदोलन के कार्यों में तन-मन-धन से सहयोग करते थे।

चोरड़िया जी भारत छोड़ो आन्दोलन में इन्दौर गये थे। वहाँ प्रदर्शन के दौरान आपको गिरफ्तार किया गया व 7 माह 23 दिन सेन्ट्रल जेल इन्दौर में कैद रखा गया। जब तक आप जीवित रहे अपनी पारिवारिक परम्परा का निर्वाह करते हुए देशसेवा करते रहे।

आ0-(1) स्व0 स0 म0, पृष्ठ-87 (2) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-4, पृष्ठ-219

श्री स्वरूपचंद जैन

श्री स्वरूपचंद जैन, पुत्र-श्री लोकमन का जन्म 1921 में जबलपुर (म0प्र0) में हुआ। 1942 के आन्दोलन में आप नवयुवक कार्यकर्ताओं से प्रभावित

होकर सक्रिय हुए तथा गिरफ्तार होकर जबलपुर जेल में रहे।

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-1, पृष्ठ-114 (2) स्व0 स0 ज0, पृष्ठ -186

श्री स्वरूपचंद सिंघई

सागर (म0प्र0) के श्री स्वरूपचंद सिंघई, पुत्र-श्री झुन्नीलाल का जन्म 1921 में हुआ। छात्र जीवन से ही आप राष्ट्रीय गतिविधियों में सक्रिय हो गये थे। 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में आपने 9 माह के कारावास की सजा भोगी।

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-2, पृष्ठ-69 (2) आ0 दी0, पृष्ठ-82

भाई हंसकुमार जैन

'भारत नौजवान सभा' के सक्रिय कार्यकर्ता रहे श्री हंसकुमार जैन, पुत्र-श्री झूम्मन लाल का जन्म सहारनपुर (उ0प्र0) में 1912 के आसपास हुआ। आपके पिता स्वतंत्रता संग्राम में अनेक बार जेल गये। आपका पूरा परिवार ही आन्दोलन में सक्रिय रहा। नृत्यकला विशारद हंसकुमार जी ने अपनी कला का उपयोग भी जेल के कैदियों को प्रसन्न करने और उनमें राष्ट्रीय भावना भरने में किया।

प्रसिद्ध साहित्यकार एवं स्वाधीनता सेनानी श्री कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' ने हंसकुमार जी के संदर्भ में लिखा है– "17-18 साल की उम्र और पिद्दी सा शरीर। 1930 में रुड़की छावनी में फौजों को भड़काने के अपराध में उन्हें 4 साल की सख्त कैद की सजा सुनाई गई तो जिले भर में सन्नाटा छा गया, पर वे हंसते हुए अपनी बैरक में लौटे और उस रात में इतना बढ़िया नाचे कि कैदी साथियों को वह आज भी याद है। 1932 और 1942 में भी वे जेल गये और सदैव वहाँ का कठोर वातावरण उनकी वंशी की ध्वनि और घुंघरुओं की झंकार से थिरकता रहा। 'अरे भाई, रोते हो, तो जेल आते ही क्यों हो।' यह उनकी खास उक्ति है।"

आन्दोलन में सक्रिय होकर आपने अपने परिवार की चिन्ता नहीं की। इस सन्दर्भ में 'सहारनपुर सन्दर्भ' में लिखा है- 'श्री हंसकुमार जैन इस जनपद के पहले व्यक्ति थे, जो अपनी पारिवारिक परिस्थितियों का ध्यान न करते हुए, जुलूस निकालकर उसका नेतृत्व करते हुए 11-8-1942 को गिरफ्तार हुए उस समय उनकी कन्या कठिन रोग से आक्रान्त थी जो कुछ दिन पश्चात् ही स्वर्ग सिधार गई।'

आ0-(1) जै0 स0 रा0 अ0 (2) स0 स0, भाग-1, पृष्ठ-150, 163, 193 एवं 544 (3) उ0 प्र0 जै0 ध0, पृष्ठ-85

श्री हंसराज कोठारी

ब्यावरा, जिला-राजगढ़ (म0 प्र0) के श्री हंसराज कोठारी, पुत्र-श्री छोगमल का जन्म 1910 में हुआ। कोठारी जी ने प्रजामंडल द्वारा चलाये गये आन्दोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया था।

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-5, पृष्ठ-120

श्री हजारीलाल जैन

कटनी, जिला-जबलपुर (म0प्र0) के श्री हजारी लाल जैन, पुत्र-श्री मूलचंद जैन का जन्म 1910 में हुआ। आपने प्राथमिक तक शिक्षा ग्रहण की और 1930 से स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने लगे, जंगल सत्याग्रह में गिरफ्तार हुये और एक सप्ताह का कारावास भोगा।

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-1, पृष्ठ-122

श्री हजारीलाल जैन 'मस्ते'

'मस्तेजी' उपनाम से विख्यात होशंगाबाद (म0 प्र0) के श्री हजारीलाल जैन का जन्म 4 दिसम्बर 1917 को हुआ। आजादी के आन्दोलन के दौरान आप एक सभा में भाषण कर रहे थे। तभी लाठीचार्ज हुआ, आप गिरफ्तार कर लिये गये और 9 माह के कारावास की सजा आपको दी गई।

आ0-(1) स्व0 स0 हो, पृष्ठ-118

मास्टर हरदयाल जैन

मदनगंज (किशनगढ़) राजस्थान के मास्टर हरदयाल जैन 1931-1932 में अलीगढ़ जिला कांग्रेस कमेटी के सदस्य रहे। इग्लास, कांग्रेस के सचिव की हैसियत से बेसबाँ, जिला-अलीगढ़ (उ0प्र0) में ग्राम प्रचार करते हुए 1932 में गिरफ्तार हुये और लखनऊ कैम्प तथा फैजाबाद जेलों में रहे।

आ0-(1) जै0 स0 रा0 अ0, पृष्ठ-69

श्री हरिश्चन्द्र जैन

सागर (म0प्र0) के श्री हरिश्चन्द्र 1921 के आसपास स्थानीय कांग्रेस के सफल कार्यकर्ता थे। आपको इस कारण जेलयातनायें भी भोगनी पड़ी थीं। कुछ दिनों बाद ही आपका स्वर्गवास हो गया।

आ0-(1) जै0 स0 रा0 अ0, पृष्ठ-53

श्री हरिश्चन्द्र मालू (जैन)

सिवनी (म0प्र0) के श्री हरिश्चन्द्र मालू, पुत्र-श्री केसरीचंद मालू का जन्म 21-12-1913 को हुआ।



1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में आप भोपा (धुरेश) से अपने साथियों सहित पदयात्रा हेतु निकलकर गांव-गांव में स्वतंत्रता का अलख जगाते हुए जा रहे वे कि बरमान, जिला-नर्रासंहपुर (म0प्र0) में गिरफ्तार कर लिये गये और छिन्दबाड़ा जेल भेज दिये गये, जहाँ आप 30 दिन तक हिरासत में रहे। आपका निधन 4-6-1981 को हो गया।

मालू जी के मूल निवास स्थान, लोपा ग्राम में उनके घर को देखने का सौभाग्य लेखक दम्पति को 18 मार्च 2000 को प्राप्त हुआ।

आ0-(1) श्री नरेश दिवाकर, सिवनी द्वारा प्रेषित परिचय एवं प्रमाणपत्र

डॉ० हरीन्द्रभूषण जैन

साहित्य की सर्वोच्च उपाधि 'महामहोपाध्याय' से अलंकृत, विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन के संस्कृत विभागाध्यक्ष पद से सेवानिवृत, सरल हृदय, सुयोग्य शिक्षक, कर्मठ समाज सुधारक, आजादी के दीवाने डॉ0 हरीन्द्रभूषण जैन का जन्म 16 अगस्त 1921 को नरयावली, जिला-सागर (म0प्र0) में हुआ। आपके पिताजी का नाम श्री छोटेलाल था, वे नाम से जरूर छोटे थे, पर आपके जन्म के समय मालगुजार थे। नरयावली, रामछापरी एवं कन्हैरा गांव उनकी मालगुजारी में थे।

जब आप 14-15 वर्ष के ही थे, तब आपके पिता जी को पूज्य गणेश प्रसाद जी वर्णी की सत्संगति से संसार के प्रति विरक्ति हो गई और वे घर-बार छोड़कर ब्रह्मचारी बन गये। माता जी का निधन पहले ही हो गया था। आपने सागर में प्रारम्भिक शिक्षा पाई बाद में आप स्याद्वाद महाविद्यालय, वाराणसी में प्रविष्ट हुए। यह विद्यालय उन दिनों जैन क्रान्तिकारियों का गढ़ था। विद्यालय के लगभग सभी छात्र क्रान्तिकारी गतिविधियों में संलग्न थे। आपने सिद्धान्त शास्त्री, व्याकरण शास्त्री आदि परीक्षायें अच्छे अंकों से उत्तीर्ण कीं साथ ही काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से बी0ए0 भी किया। 1939 से ही आप राष्ट्रीय आन्दोलन में सक्रिय हो गये थे और विद्यालय के छात्रों के नेता भी। बम बनाना आदि भी आपने सीख लिया था। 1942 के आन्दोलन में आपने सक्रिय भूमिका निभाई। प्रशासन ने आपको गिरफ्तार कर लिया, मुकदमा चला और 8-10-1942 से 7-1-1943 तक आप बनारस जेल में रहे।

जेल से निकलने के बाद आप एक 'बम षडयन्त्र' में सम्मिलित हो गये। इस षडयंत्र का पता चल गया और इस कारण आपको बनारस छोड़कर भाग आना पड़ा। आप तीन वर्ष भूमिगत रहे, पुलिस ढूंढती रही पर गिरफ्तार नहीं कर सकी। 1947 में

देश की आजादी के बाद आप पुनः बनारस गये और काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में अध्ययन करने लगे।

शिक्षा प्राप्त करने के बाद आपने सागर विश्वविद्यालय सागर, वर्णी जैन इन्टर कॉलेज ललितपुर, एम0एल0 डिग्री कालेज बलरामपुर में अध्यापन किया। विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन के संस्कृत विभागाध्यक्ष पद से आप सेवानिवृत हुए।

आपने पीएच0डी0 की उपाधि 'जैन अंगशास्त्र' पर सागर वि0वि0 से प्राप्त की। अनेक पुस्तकों के रचयिता डॉ0 जैन के लगभग 60 शोध निबन्ध स्तरीय पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए हैं। चित्रकला भी आपका रुचिपूर्ण विषय था। आपके निर्देशन में दशाधिक शोध छात्र पीएच0डी0 की उपाधियां प्राप्त कर चुके हैं, इनमें अधिकांश शोध जैन विषयों पर हुए हैं। सेवानिवृति के पश्चात् कुछ वर्षों तक आप अनेकान्त शोधपीठ, बाहुबली (कोल्हापुर) के निदेशक भी रहे। आप अनेक वर्षों तक अ0भा0दि0 जैन विद्वत्परिषद् के मंत्री रहे थे।

1977 में मैथिली विश्वविद्यापीठ, दरभंगा ने आपको महामहोपाध्याय की मानद उपाधि से सम्मानित किया था। अनेक शैक्षिक, धार्मिक और सामाजिक संस्थाओं के संस्थापक, पदाधिकारी डॉ0 जैन प्रथम मिलन में ही सबको अपना बना लेते थे। 17 अक्टूबर 1989 को आपका निधन हो गया।

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-4, पृष्ठ-178 (2) वि0 अ0, पृष्ठ-539 (3) प0 जै0 इ0, पृष्ठ-262

श्री हरीभाऊ कोठारी

श्री हरीभाऊ कोठारी, पुत्र-श्री टोकर सिंह जिला-बैतूल (म0प्र0) के निवासी थे। स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय रूप से भाग लेने वाले कोठारी जी जीवनपर्यन्त कर्मठ रहे। आजादी के इस दीवाने को अंग्रेज सरकार ने 11-9-42 से 8-5-44 तक कठोर कारावास दिया था। आप राष्ट्रभक्त और बैतूल के अच्छे जन आंदोलनकारी रहे थे।

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-5, पृष्ठ-182

श्री हीरालाल कोठारी

कुशल अर्थशास्त्री श्री हीरालाल कोठारी का जन्म 18 अक्टूबर 1917 को उदयपुर (राज0) के सम्पन्न ओसवाल जैन परिवार में हुआ, बचपन में ही पिता का साया उठ गया। बम्बई में मेवाड़ प्रजामण्डल की स्थापना होने पर वे उसके उत्साही कार्यकर्ता बन गये। 1942 में भारत छोड़ो आन्दोलन के समय कोठारी जी श्री माणिक्य लाल वर्मा के निमंत्रण पर श्री रंगलाल मारवाड़ी के साथ उदयपुर गये और 2 अक्टूबर 1942 को गांधी जयन्ती समारोह मनाने के अपराध में 6 महीने नजरबंद कर दिये गये। बैंकिंग सेवा से सम्बद्ध कोठारी जी ने यूरोप, इंग्लैण्ड, अमेरिका आदि अनेक देशों की अनेक बार यात्रायें कीं।

आ0-(1) रा0 स्व0 से0, पृष्ठ-589

श्री हीरालाल जैन

जबलपुर (म0प्र0) निवासी और भिलाई प्रवासी श्री हीरालाल जैन, पुत्र-श्री अबीरचंद जैन का



जन्म 19 सितम्बर 1915 को हुआ। छात्र जीवन में ही स्वतंत्रता आन्दोलन में भाग लेने के कारण आप अपनी पढ़ाई जारी नहीं रख सके। आपके काका प्रसिद्ध स्वाधीनता सेनानी श्री प्रेमचंद उस्ताद आपके प्रेरणास्रोत रहे। 1930 के झण्डा सत्याग्रह में हीरालाल जी ने भाग लिया और गिरफ्तार हुए, परन्तु अल्पवय होने के कारण कोर्ट उठने तक की सजा आपको दी गई।

नमक आन्दोलन के दौरान आपके बड़े भाई कन्हैयालाल जैन को छह माह के कारावास की सजा दी गई थी। आप भी उस समय कुछ समय के लिए जेल भेज दिये गये थे, तभी जीवन भर खादी पहनने का व्रत लिया था। विदेशी वस्त्र बहिष्कार आन्दोलन

में आपके पिता ने अपनी दुकान का लगभग 50 हजार का कपड़ा जला दिया था। त्रिपुरी कांग्रेस के अधिवेशन में हीरालाल जी ने स्वयंसेवक का कार्य किया था।

1941 के लगभग घरेलू वातावरण से क्षुब्ध होकर श्री जैन वर्धा चले गये और वहीं गांधी आश्रम में रहने लगे। 1942 के अगस्त आन्दोलन में हीरालाल जी 20 युवकों के साथ बम्बई गये थे। किसी तरह भेष बदलकर वे अहमदाबाद, जयपुर, आगरा होते हुए जबलपुर आये और क्रान्तिकारी गतिविधियों में संलग्न हो गये। 'एम्पलायर थियेटर', जहाँ अक्सर अंग्रेज लोग सिनेमा देखने आते थे, में आपने बम फेंका था। टेलीफोन के तार काटना आपका मुख्य कार्य था। 2 फरवरी 1943 को जब आप बाहर से आयी पिस्तोलों की पेटी दमोह रेलवे स्टेशन पर लेने गये थे तब पुन: गिरफ्तार कर लिये गये और जबलपुर जेल में रखे गये।

हीरालाल जी की क्रान्तिकारी गतिविधियों का अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि जबलपुर के प्रसिद्ध क्रान्तिकारी तथा स्वतंत्रता सेनानी, म0 प्र0 स्वतंत्रता सेनानी संघ के संस्थापक मंत्री श्री रतनचंद जैन ने हीरालाल जी के सम्बन्ध में (नवभारत, जबलपुर, दिनांक 13 अगस्त 1995) लिखा है-'इसी प्रसंग में मोतीलाल एवं हीरालाल जैन को भी भुलाया नहीं जा सकता जो अपनी जानपर खेलकर विस्फोटक सामग्री प्रदेश में और दूसरे प्रदेशों में स्वयं जाकर पहुँचाते थे। एक बार तो इन्होंने पुलिस को छकाने के लिए कोतवाली के पास बम विस्फोट भी किया था।... श्री सत्येन्द्र मिश्र के सुझाव पर वे भूमिगत से बाहर आ गये अत: पकड़े गये। पुलिस के अनेक प्रयत्न करने और त्रास देने पर भी इन्होंने कुछ नहीं बताया।..... उपरोक्त घटनाओं को बीते 50 वर्ष से अधिक हो गये हैं। इनमें श्री दालचंद जैन अभी जबलपुर में है और श्री हीरालाल जैन भिलाई में हैं। ये दोनों साथी यद्यपि आयु में मुझसे छोटे हैं, परन्तु मैं इनके प्रति श्रद्धाभाव रखता आया हूँ।.... मैं अपने इन साथियों को मात्र इसलिए क्रान्तिकारी नहीं मानता कि ये अपनी जान पर खेलकर विस्फोटक सामग्री का आदान-प्रदान करते थे, वरन् इसलिए मानता हूँ कि क्रांतिकारियों के उसूल पर ये सवा सोलह आने खरे उतरे कि 'चाहे कितनी ही यातनायें दी जायें और प्राणों का भी उत्सर्ग करना पड़े तो भी राज-राज रहे, खुलने न पावे।''

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-1, पृष्ठ-124 (2) स्व0 स0 ज0, पृ0-188 (3) नवभारत, रायपुर, दिनांक 26 जनवरी 1989 (4) नवभारत, जबलपुर 13 अगस्त 1995

श्री हीरालाल जैन

प्रसिद्ध लेखक, पत्रकार और समाजवादी नेता श्री हीरालाल जैन का जन्म 25 अगस्त 1916 को कोटा



(राज0) में हुआ। आपने कलकत्ता से बी0 ए0 ऑनर्स पास किया और 1935 से 1937 तक शान्तिनिकेतन में भी अध्ययन किया। 1938 में कोटा रियासत के पुलिस अधीक्षक कार्यालय में अंग्रेजी-लिपिक का कार्य किया, परन्तु 1938 के दिसम्बर में ही राजकीय सेवा से त्यागपत्र दे दिया और प्रजामंडल की सदस्यता ग्रहण कर ली।

1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में श्री जैन ने सक्रियता से भाग लिया। उन्होंने विद्यार्थियों को संगठित किया, फलस्वरूप 16 सितम्बर को उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया और 'भारत सुरक्षा अधिनियम' के अन्तर्गत नजरबन्द कर दिया गया। 5 नवम्बर 1942 को आप रिहा हुए। जेल से बाहर आकर आपने छात्रों के साथ मजदूर और किसानों को भी संगठित किया।

1942 में कोटा में चार दिन तक जनता का राज रहा था। आजादी के मतवालों ने आजादी मिलने से पांच वर्ष पूर्व ही पुलिस कोतवाली पर तिरंगा फहरा दिया था और चार दिन तक जनता का राज कायम

रखा था। इस सन्दर्भ में 'वार्ता' समाचार एजेन्सी को दिये एक साक्षात्कार में हीरालाल जी ने कहा था-'कोटा रियासत की सरकार ने 13 अगस्त 1942 को दोपहर तक हड़ताल एवं जुलूस के कार्यक्रम में कोई बाधा खडी नहीं की थी, लेकिन 14 अगस्त को किसी राजनीतिक एजेंट के यहाँ पहुँचने की खबर से वह घबराई तथा अधिकारियों ने प्रजामंडल के नेता शम्भूदयाल सक्सेना एवं एडवोकेट बेनीमाधव को 13 अगस्त की शाम बुलाया और 14 को प्रदर्शन का कार्यक्रम स्थिगित रखने का अनुरोध किया लेकिन अधिकारियों की इस बात से सहमत नहीं होने पर दोनों को गिरफ्तार कर लिया गया।' (उक्त घटना के विस्तृत विवरण तथा श्री जैन के पूरे साक्षात्कार के लिए देखें-नवभारत टाइम्स, दिनांक 30 जुलाई 1997)

ध्यातव्य है कि हीरालाल जी उस समय छात्र थे और छात्रों में क्रान्ति का शंखनाद फूंकना तथा समन्वय का कार्य उनके जिम्मे था। श्री जैन के बड़े भाई जोरावर सिंह को भी 1942 के उक्त आन्दोलन में गिरफ्तार कर लिया गया था।

1946 में आपने राजस्थान में सोशलिस्ट पार्टी की स्थापना कराई। आजाद हिन्द फौज के बंदियों की रिहाई के लिए कोटा में आन्दोलन का संचालन भी आपने किया था। कोटा रियासत में 'उत्तरदायी शासन' की स्थापना हेतु 1947 में गठित विधान निर्मातृ समिति में प्रजामंडल की ओर से मजदूर प्रतिनिधि के रूप में आप मनोनीत हुए थे।

6 अप्रैल 1947 को 'जयहिन्द' नाम से एक साप्ताहिक पत्र का प्रकाशन आपने शुरू किया था 1955 में इस पत्र की जमानत जब्त हो गई थी। लेखन में आपकी गहरी रुचि रही। अनेक प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में आपकी रचनायें छपी हैं।

1955 के 'गोवा मुक्ति संग्राम' में भी आपने भाग लिया था और 39 सत्याग्रहियों के जत्थे का नेतृत्व किया था। अमर उजाला, मेरठ (दिनांक 10 जुलाई 1997) को दिये एक साक्षात्कार में आपने इस सन्दर्भ में बताया था कि-'हम लोग 11 अगस्त 1955 को कोटा से देहरादून एक्सप्रेस रेलगाड़ी से रवाना हुए थे। इस मुक्तिदल को यह निर्देश मिला था कि उन्हें 15 अगस्त को तिरंगा झंडा फहराना है। हमने पुर्तगालियों की आखों में धूल झोंकते हुए एक सरकारी भवन पर तिरंगा फहराया। इस दौरान हुई गोलाबारी में एक साथी पन्नालाल यादव शहीद हो गया। झंडा फहराने के बाद पुर्तगाली पुलिस और सेना ने हमें गिरफ्तार कर लिया। एक बदबूदार कोठरी में बन्दकर यातनायें दीं, लेकिन हमें इसका कोई अफसोस नहीं है। देश की खातिर सब सहन कर लिया।'

श्री जैन गांधी जी के 'हिन्दुस्तान मजदूर सेवक संघ', 'हिन्दी मजदूर सभा', 'हिन्द मजदूर पंचायत', 'हिन्द मजदूर किसान पंचायत' आदि मजदूर संगठनों से जुड़े रहे हैं। आजादी के बाद भी आपने अनेक बार जेल यात्रायें की हैं।

आ0-(1) रा0 स्व0 से0, पृष्ठ-543 (2) नवभारत टाइम्स, 30 जुलाई 1997 (3) अमर उजाला, 10 जुलाई 1997 (4) श्री बागमल बांठिया, कोटा द्वारा प्रेषित परिचय

श्री हीरालाल जैन

श्री हीरालाल जैन, पुत्र-श्री फूलचंद जैन का जन्म पनागर, जिला- जबलपुर (म0 प्र0) में 1906 में हुआ। पिता के कपड़े के व्यवसाय के कारण आपको उनके साथ कटनी, जबलपुर, छतरपुर आदि स्थानों पर जाना पड़ता था। इसी भ्रमण के कारण आप नेताओं के सम्पर्क में आये, फलत: देश को आजाद कराने की धुन आप पर सवार हो गई।

1930 के जंगल सत्याग्रह में हीरालाल जी ने भाग लिया तथा 15-8-1930 से 3-1-1931 तक की सजा आपको जबलपुर जेल में काटनी पड़ी।

31-1-1986 को कोतमा (शहडोल) में आपका देहावसान हो गया।

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-1, पृष्ठ-124 (2) स्व0 आ0 श0, पृष्ठ-163

श्री हीरालाल जैन

पचौर, जिला-राजगढ़ (म0प्र0) के श्री हीरालाल जैन, पुत्र-श्री कालूराम जैन का जन्म 1905 में हुआ। 1942 के आन्दोलन में आपने भाग लिया, जिसमें एक माह का कारावास आपको भोगना पड़ा।

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग- 5, पृष्ठ-128

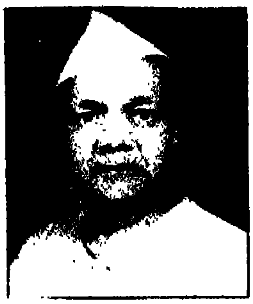
श्री हीरालाल जैन

होशंगाबाद (म0 प्र0) के श्री हीरालाल जैन, पुत्र-श्री चुन्नीलाल का जन्म 1924 में हुआ। 1942 के आंदोलन में आपने सक्रिय भाग लिया फलस्वरूप 6 माह का दंड आपको भोगना पड़ा।

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-5, पृष्ठ-343

श्री हीरालाल जैन

श्री हीरालाल जैन का जन्म 4 मई, 1922 को हरदा (म0प्र0) में हुआ था। आपके पिता का



नाम श्री हजारीमल जैन था, जो 'हजारी दादा' के नाम से पहचाने जाते थे। आपके एक बड़े भाई एवं दो बहनें थीं। आपने मैट्रिक तक शिक्षा प्राप्त की। 1930 की मन्दी के समय आपके परिवार को रुई में काफी घाटा (नुकसान) लगा, जिससे आपकी परिस्थिति खराब हो गई। आपका विवाह 1940 में हरदा में ही लक्ष्मीबाई जैन से हुआ।

श्री जैन ने 1942 के आंदोलन में सक्रिय भाग लिया, हरदा में 144 धारा लगी थी, उसको तोड़ा व 'वन्दे मातरम्' का नारा देते हुए गिरफ्तार हुए। आपको 4 माह की सजा हुई जो होशंगाबाद की जेल में काटी। आपने जेल में ही कविता लिखनी शुरू की। जेल में दादा भाई नाईक, चम्पालाल सोंकल, महेशदत्त मिश्र, रामेश्वर अग्निभोज, मगनलाल जी कोठारी आपके साथ थे। आपकी कविताओं का संग्रह 'प्रणयकुमार' के नाम से छपा था। देश आजाद होने के बाद कुछ समय तक आपने कांग्रेस का काम किया बाद में 1954 से राजनीति छोड़ दी।

1972 में मध्य प्रदेश शासन ने स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों का सम्मान किया, जिसमें सभी को पेन्शन व जमीन दी गई, परन्तु आपने कोई पेन्शन व जमीन नहीं ली व कहते रहे कि-'क्या हमने इसके लिये लड़ाई लड़ी थी, हमने तो मातृभूमि की रक्षा के लिए, आजादी के लिए लड़ी थी।'

सामाजिक व धार्मिक कार्यों में आप सदैव अग्रणी रहे। आप दिगम्बर जैन संस्था के न्यासी भी रहे बाद में कोषाध्यक्ष व मंत्री पद भी संभाला। समाज में आपकी काफी प्रतिष्ठा थी आपके सामने किसी को बोलने की हिम्मत नहीं होती थी। प्रतिदिन मंदिर जाना आपका नियम था।

आपका निधन दिनांक 24 मार्च 1988 को हार्ट अटैक हो जाने से हो गया।

आपकी मृत्यु के पश्चात् शासन द्वारा स्वतंत्रता संग्राम सैनानी पेंशन मिलने लगी जो आपकी पत्नी श्रीमती लक्ष्मीबाई जैन को मिल रही है। श्रीमती लक्ष्मीबाई जैन भी धार्मिक रुचि सम्पन्न महिला हैं। श्रीमती जैन पेंशन में प्राप्त समस्त राशि विद्यार्थियों को दे देतीं हैं।

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-5, पृष्ठ-346 (2) स्व0 स0 हो, पृष्ठ-133 (3) हरदा और स्वतंत्रता संग्राम, पृष्ठ-85 (4) पुत्र श्री महेन्द्रकुमार द्वारा प्रेषित परिचय

श्री हुकुमचंद जैन

जबलपुर (म0प्र0) निवासी तथा नागपुर प्रवासी श्री हुकुमचंद जैन, पुत्र-श्री गोरेलाल का जन्म 1919

में जबलपुर में हुआ। 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में आप कटनी एवं आसपास के क्षेत्रों में सक्रिय रहे, फलत: आपको गिरफ्तार कर लिया गया और जबलपुर में 6 माह के कारावास की सजा दी गई।

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-1, पृष्ठ-126

श्री हुकुमचंद जैन

श्री हुकुमचंद जैन, पुत्र-श्री देवीचंद का जन्म 1917 में जबलपुर (म0प्र0) में हुआ। 1932 के आन्दोलन में आपने खुल कर भाग लिया, फलत: गिरफ्तार हुए और 6 माह के कारावास की सजा पाई।

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-1, पृष्ठ-126 (2) स्व0 स0 ज0, पृष्ठ-188

श्री हुकुमचंद जैन

कटनी, जिला-जबलपुर (म0प्र0) के श्री हुकुमचंद जैन, पुत्र-श्री नत्थूलाल का जन्म 1903 में हुआ। आप में राष्ट्रीय भावना बचपन से ही थी। जंगल सत्याग्रह में जुलाई 1930 तक का कारावास तथा 50 रुपये का अर्थदण्ड आपने भोगा।

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-1, पृष्ठ-126

श्री हुकुमचंद जैन

श्री हुकुमचंद जैन, पुत्र-श्री बट्टी लाल का जन्म 1914 में जबलपुर (म0प्र0) में हुआ। राष्ट्रीय कार्यों को गतिमान बनाये रखने के लिए 'नेशनल ब्याय स्काउट्स एसोसिएशन' नाम से गठित नवयुवकों की संस्था के सदस्य बनकर आप 1932 के आन्दोलन में सक्रियता के कारण गिरफ्तार किये गये और छ: माह का कारावास भोगा। आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होने के कारण आपने जरूरतमंद साथियों की यथासम्भव सहायता की तथा राष्ट्रीय कार्यों में भी आर्थिक सहयोग दिया।

1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में भूमिगत कार्यकर्ताओं को सहायता पहुँचाकर गिरफ्तार होने पर डेढ़ वर्ष तक नजरबंद रहे। रिहा होने पर छ: माह तक जबलपुर नगर से बाहर जाने पर रोक लगा दी गई। नगर कांग्रेस कमेटी के अनेक वर्षों तक कोषाध्यक्ष रहे श्री जैन विपरीत आर्थिक परिस्थितियाँ हो जाने पर भी अपने उद्देश्य तथा कार्यों के प्रति ईमानदार रहे।

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-1, पृष्ठ-125 (2) स्व0 स0 ज0, पृष्ठ-189-90

श्री हुकुमचंद बड़घरिया



ललितपुर (उ0 प्र0) के श्री हुकुमचंद बड़घरिया, पुत्र-श्री परमानन्द का जन्म 1921 में हुआ। 1942 के आन्दोलन में आपको एक वर्ष की सजा और 100 रुपये जुर्माना भुगतना पड़ा। जुर्माना न देने पर दो माह और कारावास में रहना पड़ा।

आ0-(1) जै0 स0 रा0 अ0 (2) र0 नी0, पृष्ठ-27

श्री हुकुमचंद बुखारिया 'तन्मय'

'तन्मय' उपनाम से प्रसिद्ध और 'जैन राष्ट्रकवि' पद के अधिकारी श्री हुकुमचंद बुखारिया का जन्म



24 जनवरी 1921 को ललितपुर (उ0प्र0) में हुआ। आपके पिता का नाम श्री फूलचंद जैन था। कविवर 'तन्मय' बुखारिया जी ने लगभग 19-20 वर्ष की अवस्था से ही राष्ट्रीय संग्राम में भाग लेना प्रारम्भ कर दिया था। द्वितीय महायुद्ध के आस-पास राष्ट्रव्यापी आन्दोलन में अपनी सम्पूर्ण आन्तरिकता के साथ आप प्रयत्नशील हुये, फलत: राष्ट्रीय भावनाओं के उन्मेष ने आपको कवि बना दिया।

1940 में व्यक्तिगत सत्याग्रह के अन्तर्गत छ: माह की सख्त सजा 'तन्मय' जी ने भोगी थी। 1942

के भारत छोड़ो आन्दोलन में एक वर्ष की कठोर जेल और 100/- रु० जुर्माने की सजा काटी। जेल के अन्दर आपकी संवेदना विद्रोह कर बैठी। जिजीविषा के अभिनव आयाम प्रस्फुटित हुये, फलत: 'आहुति', 'पाकिस्तान' और 'मेरे बापू' जैसी कृतियों में आपके ही नहीं राष्ट्र के हृदय की वेदना सम्प्रेषित हुई है। 'मरण मुक्ति का द्वार' आपकी अध्यात्मिक रचनाओं का संकलन है।

शृंगार वीर एवं शांत रस में छन्दबद्ध एवं अतुकान्त दोनों ही शैलियों में आपने समान अधिकार से कवितायें लिखीं। देश की लगभग सभी प्रतिष्ठित पत्रपत्रिकाओं में आपकी रचनायें प्रकाशित हुई हैं। ललितपुर में आपके नागरिक अभिनंदन के अवसर पर 'सरस्वती भूषण' की उपाधि से आपको अलंकृत किया गया था। स्पष्टवादिता बुखारिया जी की विशेषता थी। वे स्वयं अपने शब्द-परिचय में लिखते हैं-

गला नहीं है, मात्र कला है, इनकी अपनी शैली।
आधी चादर बहुत साफ है, आधी चादर मैली।।

निस्संदेह बुखारिया जी हिन्दी काव्य-जगत् में जैन समाज के सर्वाधिक प्रशंसित एवं ख्याति प्राप्त कवि रहे हैं। एक समय था जब उनकी उपस्थिति कवि-सम्मेलनों की सफलता की पर्याय समझी जाती थी। राष्ट्रीय, मानवीय, प्रणय और अध्यात्म की अनुभूतियों के गायक इस कवि की रचनाओं में कालजयी तत्त्व सहज मुखर हैं। सैकड़ों अभिनन्दन पत्रों और सम्मान पत्रों से भिन्न-भिन्न संस्थाओं द्वारा आपको सम्मानित किया गया।

बुखारिया जी की कविता के सन्दर्भ में प्रसिद्ध साहित्यकार डॉ0 जयकुमार 'जलज' ने लिखा है-'कवि सम्मेलनों में वाहवाही लूटने वाली उनकी कवितायें सीधे-सीधे तात्कालिकता से जुड़ी हुई थीं। वे आजादी की लड़ाई के पक्ष में माहौल बनातीं और जन-जागरण करती थीं।

........आजादी की लड़ाई में वे जेल गये। इन्दौर से व्यक्तिगत सत्याग्रह करते हुए ललितपुर आये श्री मिश्रीलाल गंगवाल की अगवानी किशोर 'तन्मय' बुखारिया ने ही की थी और उन्हें अपने घर ठहराया था। गंगवाल जी जीवन भर इस घटना को नहीं भूल सके। लेकिन बाद में देश में बुखारिया जी के सपनों के विपरीत जो कुछ होता रहा उससे उन्हें अपनी जेल यात्रा भी अधिक सार्थक नहीं लगी हो तो कोई आश्चर्य नहीं।..........आंदोलनों और जेल यात्राओं के कारण उनकी पढ़ाई पूरी नहीं हो पायी।'

'जलज' जी ने बुखारिया जी के व्यक्तित्व के सन्दर्भ में आगे लिखा है- 'वे जिस ताकत से महात्मा गांधी को सिद्ध करते थे, उसी ताकत से वे आगे चलकर रजनीश को भी सिद्ध करते मिले। उनके द्वारा लिखी गई रजनीश के ग्रन्थ 'महावीर वाणी, भाग-1' (विशेष संस्करण 1988) की प्रस्तावना रजनीश के प्रति उनके एकान्त समर्पण, उनके पक्ष में इस्तेमाल में आयी उनकी असाधारण तर्कशक्ति और उनके ताकतवर गद्य का अप्रितम नमूना है।... .. ललितपुर में जैन मन्दिरों को सबके लिए खुलवाने, मृत्युभोज को बंद करवाने और जैन मात्र को प्रक्षाल का अधिकार दिलवाने में उन्होंने सक्रिय भूमिका भी निभाई।' (तीर्थङ्कर, जनवरी 1998)

उत्कट जिजीविषा के धनी बुखारिया जी ने होटल, बर्फखाने की फैक्ट्री, आटा चक्की लगाने जैसे अनेक कार्य किये। वे अध्यापक और प्राचार्य भी रहे और वकालत भी की। हस्तरेखाओं को पढ़ने तथा भविष्य बताने का भी उन्हें शौक था। प्लेटेंच यन्त्र पर मृत आत्माओं को भी वे बुलाते थे। 26 नवम्बर 1997 को बुखारिया जी का देहावसान हो गया।

बुखारिया जी के जीवन काल में जब हमने अपने प्रस्तुत ग्रन्थ की चर्चा करते हुए अपनी जेल यात्रा का एक संस्मरण भेजने का निवेदन किया था,

तो उन्होंने अपनी सुन्दर हस्तलिपि में आज के परिवेश पर कटाक्ष करती हुई सम्भवतः सद्यः- प्रसूत निम्न कविता भेजी थी, जिसे हम साभार यहाँ दे रहे हैं।

संगठित सारे अँधेरे हो गए हैं,
एक मेरा दीप कब तक टिमटिमाए !
तम हटाए !

पतझरों ने संधि कर ली आँधियों से,
अल्पमत में हो गई हैं अब बहारें,
बाग के दुश्मन बने खुद बागबाँ अब,
प्रश्न यह है बुलबुलें किसको पुकारें !
पद-प्रतिष्ठा बाँट ली है उल्लुओं ने
इस चमन को कौन मरने से बचाए !
संगठित सारे..............................!

रात ने चेहरा पहिन रक्खा सुबह का,
जुगनुओं ने नाम सूरज रख लिया है,
चाँदनी को कह रहीं 'वेश्या' तमिस्त्रा,
रख लिया तम ने रहन हरइक दिया है,
आँखवाली बन गई चमगादड़ें सब
जन्म के अन्धे मशालों के पहरुए,
और दृष्टा मौन नजरों को झुकाए।
संगठित सारे ....!

कंठ तक डूबे हुए जो गन्दगी में,
स्वच्छता के वे निरीक्षक बन गए हैं,
योजनाओं को निगल बैठे स्वयम् जो,
वे विफलता के समीक्षक बन गए हैं !
आग लगने को विकल है आज या कल,
हर तरफ चिनगारियाँ गुस्सा पिए हैं,
कौन इनको बाँध कर सूरज बनाए !
संगठित सारे ....।

शब्द के जादूगरो, तुम सोच लो तो,
स्याहियों का रंग बदले, ढंग बदले,
पंगुओं को गति मिले, वाणी मुखर हो,
पथ बदले, यात्रियों का संग बदले,
स्वर्ण-मृग-सी दूर, प्रतिपल दूर है जो,
वही मंजिल कल्पना की जो चहेती,
पाँव की पायल बने, घुँघरू बजाए !
संगठित सारे अँधेरे हो गए है,
एक मेरा दीप कब तक टिमटिमाए !
तम हटाए !

आ0-(1) जै0 स0 रा0 अ0 (2) वि0 अ0, पृष्ठ-542 (3) र0 नी0, पृष्ठ-20, (4) आधुनिक जैन कवि, पृष्ठ-66 (5) मेरे बापू (6) स्वप्रेषित कविता (7) तीर्थंकर, जनवरी 1998

श्री हुक्मचंद नारद

अपनी निर्भीक पत्रकारिता, मनस्विता, कर्मठता और अपराजेय संकल्प शक्ति से देश के स्वाधीनता



संग्राम के पथ को प्रशस्त करने वाले श्री हुक्मचंद नारद का जन्म 14 जनवरी 1903 को सतना (म0प्र0) में श्री मूलचंद नारद के यहाँ हुआ। अल्पायु में ही श्री हुक्मचंद नारद पितृछाया से वंचित हो गये, लेकिन बजाय परिवार की चिन्ता करने के, वे स्वाधीनता संग्राम में कूद गये। जीवन के पूर्वार्ध में जहाँ एक ओर आपको सामन्तवादी तत्त्वों से संघर्ष करना पड़ा वहीं कालान्तर में आप ब्रितानी सत्ता के आक्रोश का भी शिकार बने।

मैहर का तत्कालीन शासक बेहद अहम्मन्य और क्रूर था। राजाज्ञा थी कि रियासत के भीतर कोई भी व्यक्ति 'गाँधी टोपी' पहनकर नहीं निकल सकता। स्वाधीनचेता नागरिकों और देशी राज्य प्रजापरिषद् के सदस्यों पर दमनचक्र पूरे जोर से चल रहा था। तब भी नारद जी गाँधी टोपी लगाकर मैहर की सड़कों से गुजरे और गाँधी टोपी लगाकर ही उन्होंने मैहर के

शासक से बातचीत की। इस दुस्साहस का फल उन्हें भोगना पड़ा। मैहर रियासत के भीतर उनका प्रवेश वर्जित कर दिया गया।

1930 के सत्याग्रह-संग्राम के ऐतिहासिक दिनों में नारद जी जब सतना से जबलपुर आये, तब उनके पास केवल आठ आने की पूँजी थी और कपड़े की फेरी लगाकर उन्होंने काफी समय तक गुजारा किया। पर बाद में महात्मा गांधी के स्वदेशी आन्दोलन से प्रभावित होकर और उनके द्वारा विदेशी वस्त्रों की होली जलाई जाने के आह्वान किये जाने से नारद जी ने वस्त्र व्यवसाय को सदैव के लिए तिलांजलि दे दी। यह घटना नारद जी के जीवन में एक महत्त्वपूर्ण मोड़ साबित हुई और यहीं से उनके अन्दर के 'पत्रकार' का उदय हुआ।

'लोकमत' का प्रकाशन तब जबलपुर से प्रारम्भ हुआ ही था। उसके सम्पादक पंडित द्वारका प्रसाद मिश्र थे। वह परिवेश जहाँ एक ओर ब्रितानी साम्राज्यवाद के आतंक से बोझिल था, वहीं दूसरी ओर उसमें राष्ट्रीय भावनाओं से ओतप्रोत होकर जूझ मरने का संकल्प भी भरा था। नारद जी को 'लोकमत' के माध्यम से अपनी चेतना को अभिव्यक्त करने का अवसर मिला। वे 'लोकमत' के सहायक सम्पादक नियुक्त हुए, लेकिन साथ ही तत्कालीन प्रखर दैनिकों 'वर्तमान', 'विश्वामित्र', 'जन्मभूमि', 'लीडर' और 'अमृत बाजार पत्रिका' के जबलपुर स्थित संवाददाता भी बन गये।

नारद जी के भेजे गये समाचार स्वाधीनता के लिए बेचैन भारतीयता की अभिव्यञ्जना होते थे, जिसका सम्यक् पुरस्कार गौराङ्गशाही ने उन्हें दिया। 1942 में बम्बई में कांग्रेस की बैठक की कार्यवाही के समाचार संकलन करते हुए नारद जी गिरफ्तार कर लिये गये और 15 दिन हिरासत में रखने के बाद रिहा किये गये। जबलपुर वापिस आने पर आन्दोलन से सम्बन्धित समाचारों के प्रकाशन के कारण पुनः गिरफ्तार हुए और लगभग 7 माह नजर बन्द रहे।

पत्रकारिता के लिए निरन्तर जेल यात्रायें करने वाले नारद जी मध्यप्रदेश के अकेले पत्रकार थे। आपकी निर्भीक पत्रकारिता बेडगांव की एक घटना से सिद्ध होती है, जिसमें नारद जी ने कतिपय अंग्रेज सैनिकों द्वारा ग्रामीण महिलाओं को बेइज्जत करने का समाचार अपने अखबारों में भेजा था। बौखलाये अंग्रेजों ने उक्त घटना का प्रमाण देने अथवा परिणाम भुगतने की चेतावनी जब नारद जी को दी, तो नारद जी ने विस्तारपूर्वक पूरी घटना को हुकूमत के सामने पेश कर दिया। अन्ततः ब्रिटिश सत्ता को मिलिटरी ट्रिब्यूनल नियुक्त करना पड़ा और दोषी सैनिकों को दण्ड मिला।

नारद जी का व्यक्तिगत सम्पर्क राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी, पंडित जवाहरलाल नेहरू और डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद से था। आज से साठ वर्ष पूर्व केवल कलम के आधार पर जीविका अर्जित करने वाले वे मध्यप्रदेश के अकेले पत्रकार थे। कर्मठता, सजगता, दूरदर्शिता राष्ट्रीयता, लगन-शीलता, कर्त्तव्यपरायणता, मौलिकता और कलम की ईमानदारी उनके व्यक्तित्व के पर्याय बन गये थे।

नारद जी को अपने कार्यों के लिए प्रशंसा और पुरस्कार की अपेक्षा नहीं थी, वे उन सबसे बहुत दूर थे। उन्होंने कुर्बानियाँ दीं, क्योंकि यही देश में चल रही आजादी की लड़ाई का आह्वान था। 1939 में जबलपुर की त्रिपुरी कांग्रेस में प्रचार समिति के वे संयोजक थे और कांग्रेसाध्यक्ष के 52 हाथियों के जुलूस की व्यवस्था उन्होंने की थी। त्रिपुरी कांग्रेस के अध्यक्ष नेताजी सुभाषचन्द्र बोस नारद जी के अनन्य प्रशंसको में थे, जिन्होंने कहा था कि 'नारद जी की पत्रकारिता आजादी का शंखनाद है।'

नारद जी ने आजादी की लड़ाई में सबकुछ गवां दिया। उन्होंने स्वाधीनता संग्राम की खातिर

अपने कुटुम्ब की भी चिन्ता नहीं की, जो उनके आश्रित था। 26 नवम्बर 1953 में जब उनकी मृत्यु हुई, तब उनकी आयु केवल पचास वर्ष की थी। बड़े परिवार को वे निस्सहाय छोड़ गये थे।

पत्रकारिता के क्षेत्र में नारद जी के अवदान को इस तथ्य से आंका जा सकता है कि राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने उनके विषय में कहा था-'संवाद गढ़ने का करिश्मा देखना हो तो हुक्मचंद नारद की कलम में देखो।' इसी प्रकार नेताजी सुभाषचन्द्र बोस ने कहा था-'नारद जी की पत्रकारिता आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रकाश स्तम्भ होगी।'

पट्टाभिसीतारमैया ने अपने महाग्रन्थ 'कांग्रेस का इतिहास' में मध्यप्रदेश के जिन पुण्य-पुरुषों का उल्लेख किया है, उनमें नारद जी एक हैं।

नारद जी पद की आकांक्षा से सदैव दूर रहे। मध्यप्रदेश के प्रथम मुख्यमंत्री पं0 रविशंकर शुक्ल ने बहुत चेष्टा की थी कि नारद जी विधायक बन जायें, लेकिन नारद जी को लिखकर ही जीविकोपार्जन करना अच्छा लगता था। इसी प्रकार विन्ध्यप्रदेश के गवर्नर द्वारा प्रस्तावित मंत्रीपद को भी उन्होंने नम्रता पूर्वक अस्वीकार कर दिया था।

श्री बनारसीदास चतुर्वेदी ने लिखा है कि-'पं0 जवाहरलाल नेहरू नारद जी के व्यक्तिगत प्रशंसक थे। उनकी बड़ी इच्छा थी कि नारद जी राज्यसभा में आ जायें। लेकिन पं0 जी के इस प्रस्ताव को नारद जी के इंकार करने के बाद मुझे राज्यसभा में मनोनीत किया गया। यह उल्लेख सिर्फ इसलिए कि लोग जानें वे पद या पैसे के आकांक्षी नहीं थे। वे मंत्री बन सकते थे, कलम का सौदा कर करोड़ों कमा सकते थे, लेकिन यह तो उनका स्वभाव ही नहीं था।'

हर्ष का विषय है कि कृतज्ञ राष्ट्र ने नारद जी की स्मृति को चिरस्थायी बनाने के लिए ठोस कार्य किये हैं। शासकीय विक्टोरिया अस्पताल जबलपुर में एक विश्रामकक्ष उनकी स्मृति में बनवाया गया है। इसी प्रकार जबलपुर नगर निगम द्वारा एक मार्ग का नामकरण उनके नाम पर 'हुक्मचंद नारद मार्ग' किया गया है। नारद जी की स्मृति में 'स्मृतियों के रक्त पलास' नाम से एक स्मारिका प्रकाशित की गई है, जिसमें नारद जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के आकलन के साथ ही नारद जी के सम्बन्ध में अनेक नेताओं/साहित्यकारों के विचार दिये गये हैं।

सबसे बड़ी प्रसन्नता की बात तो यह है कि मध्यप्रदेश शासन ने नारद जी की स्मृति में उनकी मानवाकार कांस्य प्रतिमा का निर्माण कराया है। किसी श्रमजीवी पत्रकार की स्मृति में शासन द्वारा निर्मित सम्भवत: यह पहली प्रतिमा है। जबलपुर के हृदय स्थल सिविक सेन्टर में स्थापित उक्त प्रतिमा का अनावरण मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री श्री दिग्विजय सिंह ने 3 मई 1999 को किया था। मुख्यमंत्री जी ने इस अवसर पर कहा था कि-'नारद जी का व्यक्तित्व पत्रकारों और युवाओं के लिए सदैव प्रेरणास्रोत रहेगा। आजादी के संघर्ष में नारद जी का अविस्मरणीय योगदान रहा था।' मुख्यमंत्री जी ने इस अवसर पर घोषणा की थी कि-'सन् 2002 में स्वर्गीय श्री हुक्मचंद नारद की जन्मशती मनाने का निर्णय राज्य शासन ने लिया है और उनकी स्मृति में पत्रकारिता फाउन्डेशन की स्थापना की योजना भी राज्य शासन के विचाराधीन है।'

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-1, पृष्ठ-125 (2) स्व0 स0 ज0, पृष्ठ-189 (3) स्मृतियों के रक्तपलाश (स्मारिका) (4) नई दुनिया, इन्दौर 2 मई 1999 एवं 4 मई 1999 (5) सन्मतिवाणी, जून 1999 (6) अहिंसा सन्देश, जून 1999 (7)डॉ0 कैलाश नारद द्वारा प्रेषित परिचय

श्री हुक्मीचंद पोरवाल

रानापुर, जिला-झाबुआ (म0प्र0) निवासी और इन्दौर प्रवासी श्री हुक्मीचंद पोरवाल, पुत्र-श्री भागीरथ पोरवाल का जन्म 28 फरवरी 1923 को हुआ।

1947 में देशी राज्य लोक परिषद् द्वारा चलाये गये आन्दोलन में आपने भाग लिया था। शासन ने प्रशस्ति पत्र प्रदान कर आपको सम्मानित किया था।

आ0-(1) म0 प्र0 स्व0 सै0, भाग-4, पृष्ठ-149

श्री लाला हुलाशचंद जैन

आजादी के काम को ही अपना काम मानने वाले श्री हुलाश चंद जैन रामपुरमनिहारन, जिला-सहारनपुर (उ0प्र0) के निवासी थे। 1917 में वे राजनीति में आये और गोखले के 'भारत सेवक समाज' (सर्वेन्ट्स ऑफ इण्डिया सोसायटी) के सदस्य बन गये। 1922 में गया कांग्रेस अधिवेशन में वे जिले के प्रतिनिधि के रूप में गये थे। असहयोग आन्दोलन के समय आपने बेगार के विरुद्ध आन्दोलन किया था। 3-2-1975 को दिये एक साक्षात्कार में आपने कहा था कि- 'बेगार न करने पर मुझ पर मुकदमा चलाया गया था। मैं, ओमी अख्तार, रोड़ामल अख्तार और गंगाविष्णु चारों पर मुकदमा चला था इस मुकदमे की पैरवी करने के लिए बाबू मेलाराम व काशीराम कर्नीवाल वकील थे। बाबू मेलाराम के एक घण्टा वहस करने के बाद मुकदमे की सुनवाई से एक घण्टा पहले ही हमें बरी कर दिया गया था।'

1930 में नकुड़ तहसील में सरकार की ओर से एक अमन सभा बनाई गई थी। जिसमें लाला कुलबन्तराय, लाला नारहसिंह, अब्दुल वहीद खाँ व आप अग्रगण्य थे। 1930 में ही नमक आन्दोलन के समय 2 से 4 सितम्बर को देबवन्द में एक कांग्रेस का आयोजन किया गया था जिसकी समाप्ति के बाद श्री कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर, बाबू आनन्द प्रकाश, श्री मामचंद जैन आदि के साथ आपको गिरफ्तार कर लिया गया था। बाद में गांधी इरविन समझौता होने के बाद आप मुक्त हुए थे।

जैन संदेश के अनुसार 1942 में भी काफी दिन आपको जेल में बिताना पड़े थे।

आ0-(1) जै0 स0 रा0 अ0 (2) स0 स0, भाग-1, पृष्ठ-142, 177, 179 एवं 550 (3) उ0 प्र0 जै0 ध0, पृष्ठ-86

□□□

परिशिष्ट-एक

संविधान सभा और जैन

किसी भी देश का राष्ट्रीय ध्वज, राष्ट्रीय गान और राष्ट्रीय संविधान उस देश की आत्मा होते हैं। पूर्ण प्रभुतासम्पन्न लोकतन्त्रात्मक देशों में जहाँ भी लिखित संविधान हैं, वहाँ उनका निर्माण जनता ने प्राय: संविधान सभाओं के माध्यम से ही किया है। भारतीय संविधान निर्माण की कहानी बहुत पुरानी नहीं है। आजादी के आन्दोलन के समय, भारतीयों द्वारा ही भारत का संविधान बनाने की मांग समय-समय पर की जाती रही है। स्वराज्य और स्वशासन की मांग के पीछे यह विचार भी किसी न किसी रूप में रहा था कि भारतीय ही अपनी वैधानिक व्यवस्था का निर्माण करें।

भारतीयों द्वारा भारत का संविधान बनाये जाने की स्पष्ट मांग सर्वप्रथम महात्मा गांधी ने 5 जनवरी 1922 को की थी। 1924 में पं0 मोतीलाल नेहरू ने "राष्ट्रीय मांग" नाम से प्रख्यात प्रस्ताव प्रस्तुत किया था, जिसमें गवर्नर जनरल से भारत में पूर्ण उत्तरदायी शासन की स्थापना करने के उद्देश्य से भारत के लिए एक संविधान की योजना संस्तुत करने की मांग की गई थी। ब्रिटिश सरकार ने 1927 में सर जॉन साइमन की अध्यक्षता में एक "भारतीय संविधि आयोग" की स्थापना की थी, जिसे "साइमन कमीशन" के नाम से जाना जाता है। इस कमीशन में एक भी भारतीय नहीं था, अत: इसका व्यापक विरोध हुआ, परिणाम- स्वरूप 1927 में ही कांग्रेस के बम्बई और मद्रास अधिवेशनों में एक प्रस्ताव पास हुआ, जिसके अनुसार-'कॉंग्रेस कार्यकारिणी को केन्द्रीय तथा प्रान्तीय विधान मण्डलों के निर्वाचित सदस्यों तथा विभिन्न दलों के नेताओं से मिलकर एक "स्वराज्य संविधान" बनाने का अधिकार सौंपा गया था।' 1928 में पं0 मोतीलाल नेहरू की अध्यक्षता में बनी समिति ने भी संविधान निर्माण की चेष्टा की थी। 1934 में स्वराज्य पार्टी ने आत्मनिर्णय के अधिकार हेतु एकमात्र उपाय के रूप में भारतीय प्रतिनिधियों की एक संविधान सभा बुलाने का सुझाव दिया था। कांग्रेस ने भी इसका पूरा समर्थन किया था।

द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान कांग्रेस ने 14 सितम्बर 1939 के अपने एक प्रस्ताव में पुन: संविधान सभा की मांग दोहरायी। 1942 में सर स्टेफर्ड क्रिप्स ने विश्वयुद्ध की समाप्ति के बाद संविधान सभा की स्थापना का विचार स्पष्टरूपेण स्वीकार किया था। 1942 के 'भारत छोड़ो प्रस्ताव' में भी कांग्रेस ने घोषणा की थी कि-'स्वाधीनता के बाद कार्यकारी सरकार एक संविधान सभा बनाकर देश के लिए संविधान बनायेगी।' 19 सितम्बर 1945 को वाइसराय वेवेल ने घोषणा की थी कि-'सरकार शीघ्र ही संविधान सभा का आयोजन करना चाहती है, किन्तु इससे पूर्व केन्द्रीय और प्रान्तीय विधान मण्डलों के चुनाव जरूरी हैं।'

1945 के अन्त में केन्द्रीय सभा और 1946 के प्रारम्भ में प्रान्तीय विधान मण्डलों के चुनाव हुए। 16 मई 1946 को प्रकाशित अपनी योजना में "मंत्री मिशन" ने स्पष्ट कर दिया था कि उसका उद्देश्य-"एक ऐसी व्यवस्था को आरम्भ कर देना है जिसके द्वारा भारतीय भारतीयों के लिए संविधान बना सकें।" इस योजना के अनुसार ब्रिटिश भारत के लिए 296 और देशी राज्यों के लिए 93 स्थान रखे जाने थे। तदनुसार ब्रिटिश भारत के सदस्यों के 1946 में संविधान सभा के लिए चुनाव हुए।

संविधान सभा में सभी राजनैतिक दलों के प्रमुख नेता, सभी जातियों और धर्मों के लोग, वकील, डॉक्टर, शिक्षाविद्, उद्योगपति, व्यापारी, श्रमिक प्रतिनिधि, लेखक, पत्रकार आदि थे। देश की गणमान्य महिलायें भी यहाँ विराजमान थीं।

9 दिसम्बर 1946 को संविधान सभा का विधिवत् उद्घाटन हुआ। डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद सभा के अध्यक्ष चुने गये। देशी राज्यों के प्रतिनिधि भी क्रमशः आते गये। इस प्रकार 15 अगस्त 1947 तक सभा पूर्ण रूप से प्रभुतासम्पन्न संस्था बन गयी। डॉ0 अम्बेडकर प्रारूप समिति के अध्यक्ष चुने गये।

संविधान सभा लगभग 3 वर्ष (2 वर्ष 11 महीने 17 दिन) कार्यरत रही। उसके कुल 11 सत्र हुए और 165 बैठकें हुईं। प्रारूप समिति की 141 बैठकें हुईं। स्पष्ट है कि हमारी संविधान सभा ने बहुत ही कम दिनों में अपना संविधान बना लिया था।

संविधान सभा के अन्तिम दिन 24 जनवरी 1950 को सभी सदस्यों के हस्ताक्षर हुए। संविधान की तीन प्रतियों, एक हस्तलिखित अंग्रेजी की, एक छपी अंग्रेजी की व एक हस्तलिखित हिन्दी की प्रति पर सभी सदस्यों ने हस्ताक्षर किये। अंग्रेजी की प्रति देखने का सौभाग्य हमें भी मिला है, पूरी प्रति चित्रों से सुसज्जित की गई है। चित्रों के माध्यम से क्रमशः पूरा इतिहास दर्शाया गया है। प्रथम पृष्ठ पर मोहनजोदड़ो से प्राप्त उस सील को दर्शाया गया है, जिस पर एक बैल अंकित है। पृष्ठ 63 पर भगवान् महावीर का चित्र अंकित है। पृष्ठ 151 पर महात्मा गांधी को तिलक करती एक महिला चित्रित है, जो सम्भवतः गांधी जी की दाण्डी यात्रा के समय का है। ध्यातव्य है कि गांधी जी की दांडी यात्रा के समय महिलाओं का नेतृत्व सरला देवी साराभाई (जैन) ने किया था।

संविधान-सभा में विभिन्न प्रान्तों से चुने हुए प्रतिनिधियों में कुछ जैन धर्मावलम्बी भी थे। पिछले पृष्ठों में संविधान सभा के सदस्य श्री अजित प्रसाद जैन, श्री कुसुमकान्त जैन, श्री बलवन्त सिंह मेहता और श्री रतनलाल मालवीय का परिचय दिया जा चुका है। संविधान सभा के एक और जैन सदस्य श्री भवानी अर्जुन खीमजी का परिचय यहाँ प्रस्तुत है।

कच्छ प्रान्त की ओर से संविधान सभा के सदस्य रहे श्री भवानी या भवन जी अर्जुन खीमजी संविधान सभा में भारतीय व्यापारी वर्ग का भी प्रतिनिधित्व करते थे। कांग्रेस के निर्माण में आपका भारी योगदान था। आपका जन्म 'खाम गाँव' में हुआ था। यूरोप की यात्रा से आपको संसार की विविध प्रवृत्तियों और समस्याओं का ज्ञान हुआ था।

1930 के आन्दोलन ने मानों आपका जीवन ही बदल डाला था। तभी से आप व्यापार के साथ-साथ राजनीति एवं सार्वजनिक कार्यों में संलग्न हो गये। आपका रुई का व्यापार था। 1930 में बहिष्कार आन्दोलन में जब आपको गिरफ्तार किया गया तो रुई बाजार में गतिरोध पैदा हो गया, फलतः आपको अविलम्ब रिहा कर दिया गया।

श्री खीमजी तत्कालीन बम्बई कॉटन मर्चेण्ट व मुकद्दम ऐसोसिएशन लि0 के अध्यक्ष, ईस्ट इण्डिया कॉटन एसोसिएशन के निदेशक तथा अनेक दातव्य शिक्षा संस्थाओं के ट्रस्टी भी रहे थे।

1940 के व्यक्तिगत सत्याग्रह में आप एक वर्ष जेल में रहे थे। 1942 के आन्दोलन में भी आपको 2 वर्ष तक नजरबन्द रहना पड़ा था। गांधी जी और सरदार बल्लभ भाई पटेल से आपके घनिष्ठ सम्बन्ध थे।

'जैन सन्देश' राष्ट्रीय अंक (23 जनवरी, 1947) आपके विषय में लिखता है-"गांधी जी आपके विचारों में दृढ़ निष्ठा, एस0 के0 पाटिल आप में विश्वस्त साथी के योग्य गुण और सरदार बल्लभ भाई पटेल आपमें अपने विचारों को कार्यान्वित करने के योग्य परखी हुई प्रतिभा पाते हैं। अनेक सार्वजनिक दायित्वों का भार वहन करते हुए भी आप जैन समाज की अनेक धार्मिक, दातव्य और शिक्षा संस्थाओं के पदाधिकारी ट्रस्टी हैं।" (पृष्ठ 92)

□□□

चादर तीन हजार की

आजाद हिन्द फौज के जांबाज सैनिकों को बंदी बनाया जा चुका था। उन पर लाल किले में राजद्रोह का मुकदमा चल रहा था। देश भर में असाधारण उत्तेजना, गुस्से और जोश की एक लहर दौड़ गई थी, परिणामस्वरूप अनेक स्थानों पर विद्रोह हुए। मुकदमें के लिए काफी धन की आवश्यकता थी, अत: जगह-जगह धन एकत्रित करने के लिए सभायें हो रही थीं।

मध्य प्रदेश (तत्कालीन विन्ध्य प्रदेश) की संस्कारधानी जबलपुर में प्रसिद्ध साहित्यकार एवं राजनीतिज्ञ पं0 द्वारका प्रसाद मिश्र की अध्यक्षता में "आजाद हिन्द फौज" की सहायतार्थ एक सभा का आयोजन किया गया। इसी सभा में दो चादर धारी एक साधक भी बैठा था। सभी अपना क्रम आने पर बोलते जा रहे थे और कुछ राशि देते जा रहे थे। अंत में इस साधक की भी बारी आई। मात्र दो चादर परिग्रह रखने वाला देता भी तो क्या? पर देश की आजादी की उत्कट लालसा उसे लगी थी, साधक ने अपना भाषण पूर्ण किया और कहा-"मेरे पास देने को कुछ द्रव्य तो है नहीं, केवल दो चादरें हैं, इनमें से एक चादर मुकदमें की पैरवी के लिए देता हूँ और मन से परमात्मा का स्मरण करते हुए विश्वास करता हूँ कि सैनिक अवश्य ही कारागार से मुक्त होंगे।"

अन्त में उस चादर की नीलामी की गई जो उस सस्ते जमाने में भी तीन हजार में बिकी। साधक की भावना का फल यह हुआ कि शीघ्र ही आजाद हिन्द फौज के सैनिक मुक्त कर दिये गये। ये साधक थे क्षु0 गणेश प्रसाद वर्णी, जो बाद में "जैन जगत के गांधी" नाम से विख्यात हुए और जिन्होंने लगभग ढाई सौ स्कूलों की स्थापना की तथा अनेक ग्रंथ लिखे।

"वर्णी जी" का जन्म 1874 ई0 में हसेरा (वर्तमान-ललितपुर जिला) उ0प्र0 में एक वैष्णव परिवार में हुआ। घर के पास स्थित जैन मन्दिर के चबूतरे पर पढ़ी जाने वाली जैन रामायण (पद्म पुराण) को सुनकर वे वैष्णव से जैन बने और गहन अध्ययन की लालसा में बनारस, जयपुर, कलकत्ता, सागर आदि दशाधिक स्थानों पर अध्ययन किया। बनारस में मात्र एक रुपये के दान से उन्होंने 1905 में स्याद्वाद महाविद्यालय की स्थापना की जिसके वे संस्थापक और प्रथम विद्यार्थी थे।

परिशिष्ट-दो

आजाद हिन्द फौज और जैन

भारतीय स्वातन्त्र्य समर की गाथा तब तक अपूर्ण ही कही जायेगी जब तक उसमें नेताजी सुभाषचन्द्र बोस और उनकी आजाद हिन्द फौज का जिक्र न हो। 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन से ब्रिटिश हुकूमत डर गई थी और उसे लगने लगा था कि हमें भारत छोड़ना पड़ेगा, किन्तु फिर भी किसी तरह वह लड़खड़ाते पैर जमाने की कोशिश कर रही थी। इधर आजाद हिन्द फौज की क्रान्तिकारी गतिविधियों से भी वह पूरी तरह घबरा गई। इन सबकी परिणति 1947 में देश की आजादी के रूप में हुई।

1942 के आन्दोलन के समय भारत में क्रान्तिकारियों को जिस तरह की क्रूर सजायें दी जा रही थीं उन्हें देखते हुए कई क्रान्तिकारी जापान, चीन, मलाया, बर्मा आदि देशों की ओर चले गये थे और वहीं से अपनी क्रान्तिकारी गतिविधियों का संचालन कर रहे थे। प्रसिद्ध क्रान्तिकारी रास बिहारी बोस ने जापान में शरण ली थी। द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान जब जापान ने मित्र राष्ट्रों के विरुद्ध युद्ध की घोषणा की तब टोकियो में एक सम्मेलन में रास बिहारी बोस की अध्यक्षता में एक कमेटी बनाई गई और निर्णय लिया गया कि बर्मा, मलाया, थाईलैण्ड आदि देशों में भी भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन चलाया जाये।

जापानी फौजें जब मलाया की ओर बढ़ीं और सिंगापुर में अंग्रेज हार गये तब विजेता जापानी मेजर फूजीवारा ने भारतीय फौजों को सम्बोधित करते हुए कहा था कि-'जापान भारत के विरुद्ध नहीं है अत: भारतीय सैनिक हमारे युद्ध बन्दी नहीं।' तब कैप्टन मोहन सिंह और ज्ञानी प्रीतम सिंह भारतीय फौजों के कमाण्डर बना दिये गये और उन्होंने जापान की सहायता से भारत को आजाद कराने का प्रयत्न प्रारम्भ कर दिया। तभी मलाया में रहने वाले भारतीयों ने भी "इण्डिया इंडिपेंडेंस लीग" नामक संस्था की स्थापना की। इसी लीग के नियन्त्रण में "आजाद हिन्द सेना" संगठित करने का निर्णय लिया गया। कैप्टन मोहन सिंह इसके कमाण्डर बनाये गये और बीस हजार सैनिक इसमें शामिल हो गये। इसी समय सुभाषचन्द्र बोस गुप्त रीति से भारत से टोकियो पहुँचे। रास बिहारी बोस ने सिंगापुर में घोषणा कर दी कि-'अब आगे भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम का नेतृत्व सुभाषचन्द्र बोस करेंगे।'

26 जून 1943 को सुभाषचन्द्र बोस ने टोकियो रेडियो से प्रवासी भारतीयों के नाम अपना पहला भाषण प्रसारित किया। बीस हजार भारतीय सैनिकों की शानदार परेड में उन्हें सलामी दी गई। इस समारोह में जापानी प्रधानमंत्री भी उपस्थित हुए थे। सुभाषचन्द्र बोस ने "आजाद हिन्द फौज" के नाम की प्रसिद्ध अपील प्रकाशित की, जिसके अन्त में उन्होंने कहा था-"तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूँगा।" इसी के बाद सभी ने सुभाषचन्द्र बोस को "नेताजी" उपनाम से पुकारना प्रारम्भ कर दिया था। जो लोग सेना में नहीं थे उन्होंने धन से व अन्य प्रकार से फौज की सहायता करना प्रारम्भ कर दिया। आजाद हिन्द फौज में जैनियों ने भी बढ़-चढ़कर सहयोग दिया था। धन-धान्य की अपरिमित सहायता इस समाज ने की थी। नेताजी सुभाषचन्द्र बोस के निजी चिकित्सक रहे कर्नल डॉ0 राजमल कासलीवाल अपनी अंग्रेज सेना की कर्नली छोड़कर आजाद हिन्द फौज में सम्मिलित हो गये थे। (इनका परिचय पीछे दिया जा चुका है)

जैसा कि हम ऊपर लिख चुके हैं कि जो प्रवासी भारतीय फौज में शामिल नहीं हो सके उन्होंने धनादि देकर आजाद हिन्द फौज की सहायता की थी। ऐसे व्यक्तियों में बर्मा में व्यापार के लिए गये एक प्रख्यात जैन उद्योगपति श्री चतुर्भुज सुन्दर जी दोशी के युवा छोटे भाई श्री मणिलाल दोशी का नाम अग्रगण्य है। मणिलाल जी नेताजी के चरणों में अपना सर्वस्व समर्पण कर आजाद हिन्द फौज में शामिल हो गये। वे फौज में एक दायित्वपूर्ण विभाग के मन्त्री रहे। जब बर्मा जापान के अधिकार से निकलकर पुनः अंग्रेजों के अधिकार में आया तो बर्मा सरकार ने आपको गिरफ्तार करके रंगून जेल में डाल दिया। आजाद हिन्द फौज के तमाम कैदी रिहा हो जाने के बाद भी बर्मा की अडियल सरकार ने दोशी जी को रिहा नहीं किया, फलतः श्री शरच्चन्द्र बोस के नेतृत्व में एक जोरदार आन्दोलन हुआ और भारत से उनकी पैरवी करने के लिए प्रसिद्ध वकील श्री के० एम० मुन्शी और मि० के० एफ० नरीमन गये। अन्त में बर्मा सरकार ने दोशी जी को रिहा किया।

नौ जुलाई 1943 को नेता जी ने एक विशाल जनसभा में महिलाओं को भी आजादी की लड़ाई में भाग लेने के लिए आमन्त्रित किया, फलतः "रानी झाँसी रेजीमेन्ट" की स्थापना हुई। अक्टूबर, 1943 में सिंगापुर में महिला कैम्प लगा, फिर मलाया व बर्मा के अन्य भागों में भी कैम्प लगे। इनमें महिलाओं को चिकित्सा, नर्सिंग, ड्रिल, नक्शे देखना, युद्ध-तकनीक, शस्त्र-संचालन आदि सेना के सभी क्षेत्रों का प्रशिक्षण दिया जाता था। आजाद हिन्द फौज की अस्थाई सरकार के नौ विभागों में नारी कल्याण भी एक विभाग रखा गया था। वह विभाग लेफ्टिनेन्ट कर्नल व रानी झाँसी रेजीमेन्ट की कमान्डेन्ट लक्ष्मी स्वामीनाथन् (सम्प्रति श्रीमती लक्ष्मी सहगल) को दिया गया था। तत्कालीन लोकप्रिय और प्रसिद्ध चिकित्सक डॉ० प्राणजीवन मेहता की पुत्री रमा बहन और पुत्रवधु श्रीमती लीलावती बहन आजाद हिन्द फौज की "रानी झाँसी रेजीमेन्ट" में सम्मिलित हो गयी थीं। 'जैन सन्देश', राष्ट्रीय अंक (23 जनवरी 1947) ने श्रीमती लीलावती बहन और रमा बहन की कहानी उन्हीं के शब्दों में प्रकाशित की थी, जिसे हम यथावत साभार यहां दे रहे हैं-

श्रीमती लीलावती बहनः-जब ब्रिटिशों ने रंगून छोड़ दिया और जापानियों ने रंगून पर अधिकार जमा लिया तब कुछ समय के लिए अन्धाधुन्धी मच गयी थी। कई मास तक भारतीय स्त्रियाँ घर से बाहर नहीं निकल सकीं थीं। हमने अपने मकान पर एक बोर्ड लगा दिया था जिस पर लिखा था कि-"इस घर में महात्मा गांधी, पं० जवाहर लाल नेहरू तथा अन्य भारतीय नेता आकर उतरे थे। इस घर में नेशनलिस्ट भारतीय रहते हैं।" इसे पढकर जापानी सोल्जर हमें कभी किसी भी तरह से हैरान नहीं करते थे।

श्री सुभाष बाबू ने मलाया और बर्मा में "आजाद हिन्द फौज" और "झाँसी की रानी रेजीमैन्ट" स्थापित करने के लिए भाषण दिये तब हमारा सारा परिवार उनके भारतीय स्वातन्त्र्य संघ में सम्मिलित हो गया। 21 अक्टूबर 1943 को बर्मा और मलाया में "झाँसी की रानी रेजीमेन्ट" स्थापित करने का कार्य पूरा हुआ। रंगून में 10 बालकों को लेकर मेरे हाथ से कैम्प का उद्घाटन हुआ था। जब रात-दिन बम वर्षा होती थी तब भी आवश्यकता होने पर हम खुले मैदान में हथियारों के साथ सुसज्जित होकर खड़ी रहती थीं। हम घायलों की सेवा सुश्रुषा करने और अस्पताल ले जाने का काम करती थीं। मेरा मुख्य काम सबेरे 11 बजे से शाम 5 बजे तक घर-घर जाकर स्त्रियों, लड़कियों और पुरुषों को आजाद हिन्द फौज में सम्मिलित होने के लिए समझाना था।

रमा बहन:-हमारा कैम्प मिलिट्री कैम्प था, उसमें हमें प्रत्येक प्रकार का शस्त्र-संचालन और अनुशासन-पालन सिखाया जाता था। झाँसी की रानी रेजीमेन्ट में दो विभाग थे। एक युद्ध विभाग और दूसरा नर्सिंग विभाग। युद्ध विभाग में हमें मिलिट्री ड्रिल, रायफल के प्रेक्टिस, पिस्तौल चलाना, टोमीगन चलाना तथा मशीनगन चलाना सिखाया जाता था। मोर्चे पर आक्रमण करना और आत्मरक्षा करना भी सिखाया जाता था। नर्सिंग विभाग में उक्त शिक्षा प्राप्त बालकों को रखा जाता था।

हमें घायलों की दवा-दारू और सेवा-सुश्रुषा करना सिखाया जाता था। हमें घंटों खड़े रहकर घायलों की सेवा करनी होती थी। प्राय: सभी बहिनें कैम्प में रहकर काम करने की अपेक्षा युद्ध क्षेत्र में जाकर लड़ने को अधिक आतुर रहती थीं। वे सब प्रसन्न थीं, इस आशा को लेकर कि उनके द्वारा भारत स्वतन्त्र होगा।

❑❑❑

आशाशाह

मेवाड़ के इतिहास में आशाशाह और उसकी वीर माता का नाम अमर है। महाराणा रत्नसिंह की मृत्यु के बाद उसका छोटा भाई विक्रमाजीत गद्दी पर बैठा किन्तु वह अयोग्य था और उसका छोटा भाई उदयसिंह नन्हा बालक। अत: सरदारों ने विक्रमाजीत को गद्दी से उतारकर दासीपुत्र बनवीर को राणा बना दिया। बनवीर ने विक्रमाजीत की हत्या कर जब उदयसिंह की हत्या करनी चाही तो पन्ना धाय अपने पुत्र का बलिदान देकर उदयसिंह को बाहर ले आई। पन्ना धाय आश्रय की खोज में अनेक सामन्त-सरदारों के पास भटकी, पर अत्याचारी बनवीर के भय से आश्रय देने के लिए कोई तैयार नहीं हुआ। अन्तत: वह कुम्भलमेर पहुँची, जहाँ का दुर्गपाल आशाशाह (जैन) था। आशाशाह भी जब अपनी असमर्थता जाहिर करने लगा तो उसकी वीर माता कुपित होकर सिंहनी की भाँति आशाशाह पर झपटी और कहा-"तूं कैसा पुत्र है! जो विपत्ति के समय भी किसी के काम नहीं आता, एक माता पुत्र का बलिदान देकर उदयसिंह को बचा लाई और तू उसकी रक्षा भी नहीं कर सकता। तुझे जीने का कोई अधिकार नहीं।" आशाशाह गद्गद होकर वीर जननी के चरणों में गिर पड़ा। आशाशाह ने कुमार को अपना भतीजा या भानजा कहकर प्रसिद्ध किया। कुछ काल के बाद उदयसिंह ने अन्य सामन्तों की सहायता से चित्तौड़ का सिंहासन प्राप्त कर लिया।

परिशिष्ट-तीन

स्वतन्त्रता संग्राम और जैन पत्रकारिता

आधुनिक युग में पत्रकारिता का महत्त्व स्पष्ट है। पत्र-पत्रिकायें व्यक्ति और व्यक्ति तथा शासक और शास्य के बीच में जन-सम्पर्क का सबसे बड़ा माध्यम हैं। महात्मा गांधी ने पत्र-पत्रिकाओं के तीन उद्देश्य बताये थे। प्रथम जनता की इच्छाओं-विचारों को समझना और उन्हें व्यक्त करना, द्वितीय वांछनीय भावनाओं को जागृत करना और तृतीय सार्वजनिक दोषों को निर्भयता पूर्वक प्रकट करना। सामाजिक/सांस्कृतिक/धार्मिक/ आर्थिक दृष्टि से पत्र-पत्रिकाओं का जितना महत्त्व है उससे भी अधिक राजनैतिक दृष्टि से है। आजादी से पूर्व की पत्रकारिता राष्ट्रीय आन्दोलन के प्रति पूरी तरह समर्पित थी। तत्कालीन पत्रकारिता एक प्रकार से राष्ट्रीय आन्दोलन के ही विकास की कहानी है। पत्र-पत्रिकाओं के इसी महत्त्व को स्पष्ट करते हुए गांधी जी ने कहा था-"मेरा ख्याल है कि ऐसी कोई भी लड़ाई, जिसका आधार आत्मबल हो अखबार की सहायता के बिना नहीं चलाई जा सकती। अगर मैंने अखबार निकालकर दक्षिण अफ्रीका में बसी हुई भारतीय जमात को उसकी स्थिति न समझाई होती और सारी दुनियां में फैले हुए भारतीयों को दक्षिण अफ्रीका में क्या कुछ हो रहा है, इससे 'इण्डियन ओपिनियन' के सहारे अवगत न रखा होता तो मैं अपने उद्देश्य में सफल नहीं हो सकता था। इस तरह मुझे भरोसा हो गया है कि अहिंसक उपायों से सत्य की विजय के लिए अखबार एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण और अनिवार्य साधन है।" (सांस्कृतिक चेतना और जैन पत्रकारिता, पृष्ठ-222)

जैन पत्र-पत्रिकायें राष्ट्रीय आन्दोलन में स्वातन्त्र्य की भावना जागृत करने में भी पीछे नहीं रही थीं। यह कहना कठिन है कि पहला जैन पत्र कौन है? अब तक प्राप्त अंकों और उल्लेखों के आधार पर सर्व प्रथम जैन पत्र गुजराती मासिक "जैन दिवाकर" था, जो अहमदाबाद से छगन लाल उमेश चन्द द्वारा 1875 ई0 में प्रकाशित हुआ था और लगभग 10 वर्ष बाद बन्द हो गया था। हिन्दी भाषा में निकलने वाला प्रथम जैन पत्र चौधरी पं0 जीयालाल जैन ज्योतिषी द्वारा फर्रूखनगर से 1884 ई0 के आरम्भ में "जैन" (साप्ताहिक) नाम से प्रकाशित हुआ था। कुछ समय बाद उन्होंने उर्दू में "जीयालाल प्रकाश" निकालना शुरू किया था। 1884 में ही सितम्बर मास में शोलापुर से सेठ रावजी हीराचन्द नेमचन्द दोशी ने मराठी-गुजराती-हिन्दी मासिक "जैन बोधक" प्रकाशित किया। डॉ0 ज्योति प्रसाद जैन ने लिखा है-"जैन बोधक" मराठी का तो सर्वप्रथम जैन पत्र-पुरखा है ही वर्तमान जैन पत्र-पत्रिकाओं में सर्वाधिक प्राचीन है और इने गिने सर्वाधिकजीवी भारतीय पत्रों में से भी एक है। (द्र0 तीर्थंकर, अगस्त-सित0 1977, पृष्ठ 10)

विश्व में आत्म स्वातन्त्र्य/व्यक्ति स्वातन्त्र्य की घोषणा करने वाला धर्म 'जैन धर्म' है। यहाँ प्रत्येक जीव अपने कर्म का कर्ता और भोक्ता स्वयं है और कर्म करने और कर्मफल भोगने में स्वतन्त्र। व्यापक अर्थ में देखें तो यहाँ मुक्ति का अर्थ ही स्वतन्त्रता है। कोई भी संस्कृति/धर्म/दर्शन राजनैतिक पराधीनता की अवस्था में फल-फूल नहीं सकता, इसीलिए जैन समाज ने कंधे से कंधा मिलाकर स्वतन्त्रता आन्दोलन में भाग लिया

और देश की आजादी का मार्ग प्रशस्त किया। जैन पत्र-पत्रिकायें भी इस दिशा में पीछे नहीं रहीं। परतन्त्रता के जमाने में भी जैन पत्र-पत्रिकायें स्वतन्त्रता के साथ निर्भय होकर स्वतंत्रता का समर्थन करती रहीं। विश्वशान्ति, स्वतंत्रता और राष्ट्रीय भावना के जागरण में जैन पत्रिकायें सदैव अपना दायित्व निभाती रहीं। स्वदेशी की भावना को प्रचारित करने के लिए तो उसने विज्ञापन तक प्रकाशित किये।

जैन पत्र-पत्रिकायें पूर्व से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण, सर्वत्र प्रकाशित होती रहीं और लगभग ८-१० भाषाओं में इनका प्रकाशन होता आ रहा है। मणिपुर में हिन्दी पत्रकारिता का श्रीगणेश द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान युद्ध की खबरों के लिए एक जैन पुजारी ने किया था (द्र० कादम्बिनी, फरवरी 1996, पृष्ठ 42 पर डॉ० देवराज का लेख "मणिपुर की हिन्दी पत्रकारिता")। हिन्दी के प्रथम वैयाकरण और जीवट पत्रकार आचार्य किशोरी दास वाजपेयी का स्वातन्त्र्य समर में भाग लेने के कारण जो गोपनीय सम्मान हुआ था वह एक जैन, श्री उग्रसेन जैन, के घर पर हुआ था, (द्र0 कादम्बिनी, सितम्बर 1995, पृष्ठ-5)

1900 ई0 से अनवरत प्रकाशित होने वाला "जैनमित्र" यद्यपि धार्मिक पत्र है किन्तु उसमें राष्ट्रीय महत्त्व के समाचार न सिर्फ सुर्खियों में प्रकाशित हुए हैं, अपितु उन पर निर्भीक टिप्पणियाँ भी लिखी गयी हैं। इसके सम्पादक रहे पं0 परमेष्ठीदास राष्ट्रीय आन्दोलन में अनेक बार जेल यात्रा कर चुके थे। पत्र के 10 जनवरी 1927 के अंक में प्रकाशित राष्ट्रीय भावना से ओत-प्रोत पंक्तियाँ द्रष्टव्य हैं-

"मेरी जान रहे सर न रहे, सामान रहे या साज रहे।
फकत हिन्द मेरा आजाद रहे, माता के सर पर ताज रहे॥
ये किसान मेरे खुशहाल रहें, पूरी होबे फसल सुख काज रहे।
मेरे भाई वतन पे निमार रहे, मेरी माँ बहनों की लाज रहे॥
मेरी गाय रहे मेरे बैल रहें, घर-घर में भरा सब नाज रहे।
गारे (खद्दर) का कफन हो मुझपे पड़ा, बन्दे मातरम् आबाद रहे॥"

इसी पत्र के 6 जनवरी 1907 के अंक में विविध समाचार के अन्तर्गत सूरत में कांग्रेस के अधिवेशन का वर्णन विस्तार से छपा था। स्वदेशी की भावना के प्रचार में तो पत्र ने अपनी विशिष्ट भूमिका निभाई थी। अधिकांश अंकों में एतद्विषयक सामग्री प्रकाशित होती थी। 15 नवम्बर 1923 के अंक में प्रकाशित स्वदेशी का विज्ञापन द्रष्टव्य है-

"अगर आप सच्चे अहिंसा व्रत के पालक हैं
अगर आप सच्चे स्वदेश भक्त हैं तो
विनोद मिल्स उज्जैन का
शुद्ध-जिसमें जानवरों की चरबी नहीं लगायी जाती
स्वदेशी-जो देशी कारीगर, रुई व देश के धन से बना है,
कपड़ा पहनिये और धन व धर्म बचाईये।

पता-विनोद मिल्स, उज्जैन''

एक अन्य विज्ञापन भी देखें-

''भारतीय कारीगरी की मदद करो-''

''जहाँ में गर वतन की लाज रखनी हो तो लाजिम है।

स्वदेशी वस्त्र पर हर एक बशर सौजां से शैदा हो।।''

जैन मित्र के नियमित प्रकाशन के सन्दर्भ में तीर्थंकर (अगस्त-सितम्बर 1977, पृष्ठ-160) लिखता है ''लड़ाई के जमाने में अनेक पत्रों ने प्रेस की अव्यवस्था से अपना प्रकाशन बन्द किया, कितनों ही ने कागज के अभाव में गहरी नींद ले ली, पर ''मित्र'' बराबर प्रकट होता रहा। कापड़िया जी सूर्योदय की तरह नियमित पत्रकारिता में विश्वास रखते हैं।''

भा० दि० जैन महासभा का मुख पत्र ''जैन गजट'' 1895 में प्रारम्भ हुआ था, पत्र ने अपने सम्पादकीयों में स्वदेशी का खूब प्रचार किया। 16 मार्च 1905 के अंक में लिखा गया है कि- 'हमें अपने देश में इतने कारखाने लगाने चाहिए जिससे विदेशों से माल मँगाने की आवश्यकता ही न पड़े।' इस पत्र ने 1947 के त्रिविध अंकों में पाकिस्तान के जैन मन्दिरों के विनाश की जानकारी पाठकों को दी थी।

देवबन्द (उ० प्र०) से प्रकाशित होने वाले ''जैन प्रदीप'' (उर्दू) का उदय तो मानों विदेशी शासन से मुक्ति दिलाने के लिए ही हुआ था। इसके सम्पादक श्री ज्योति प्रसाद जैन राष्ट्रीय भावनाओं से ओत-प्रोत थे, उन्होंने पत्र के अप्रैल 1930 तथा मई-जून 1930 के अंकों में ''भगवान महावीर और महात्मा गांधी'' शीर्षक लेख उर्दू में लिखा। लेख का सारांश था कि- ''जैसे महावीर ने यज्ञों से मुक्ति दिलाई वैसे ही गांधी जी विदेशी शासकों से मुक्ति दिलायें।'' इस पर पत्र की जमानत जब्त होने की नौबत आई। कलक्टर ने बहुतेरा समझाया कि- ''आप मेरे पिता के मित्र हैं, आप इतना लिखकर दे दो कि मेरे लिखने का भाव वह नहीं जो सरकार ने समझा है, बाकी मैं देख लूँगा'' पर ज्योति प्रसाद जी ने कहा- ''मैं झूठ कैसे लिख दूँ, मेरा भाव वही है जो सरकार ने समझा है।'' अन्त में लेख और जमानत जब्त हो गई और पत्र का प्रकाशन भी बन्द हो गया। श्री कुलभूषण जी ने पुनः उसका प्रकाशन प्रारम्भ किया है।

कुछ जैन पत्रों ने तो अंक ही नहीं अपने विशेषांक भी स्वाधीनता पर निकाले, इनमें ''जैन प्रकाश'' का नाम अग्रगण्य है। पत्र ने 25 नवम्बर 1930 को अपना राष्ट्रीय अंक निकाला। भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम का वह ऐतिहासिक काल था। महात्मा गांधी के नेतृत्व में उस समय असहयोग आन्दोलन चल रहा था, ऐसे में राष्ट्रीय अंक निकलना कितने साहस का काम था। इसके सौ पृष्ठों की सामग्री में गुजराती और हिन्दी में स्वतन्त्रता पर ही पूरे लेख/कवितायें लिखी गईं हैं।

इसी तरह भा० दि० जैन संघ, मथुरा (उ० प्र०) के मुख पत्र ''जैन सन्देश'' ने भी 23 जनवरी 1947 को अपना राष्ट्रीय अंक निकाला। अनेक महत्त्वपूर्ण लेखों के साथ ही अनेक जैन शहीदों / जेल यात्रियों का परिचय इसमें है, कवितायें नव-जागृति लाने वालीं हैं। प्रथम पृष्ठ पर ''स्वाधीनता की प्रतिज्ञा'' नाम से स्वतन्त्रता के जन्म सिद्ध अधिकार का समर्थन किया गया है। राष्ट्रगीत की तर्ज पर एक सुन्दर गीत भी इसमें

दिया गया है। पत्र ने अपने 16 मई 1946 के अंक में राष्ट्रीयता के विषय में लिखा था-"जैन समाज ने दूसरे समाजों की तरह अलग-अलग अपने राजनीतिक दावे नहीं रखे, विशेषाधिकार मांगकर कभी देश की प्रगति में बाधा नहीं पहुँचाई और धर्म संस्कृति आदि की स्वतन्त्रता होते हुए भी कभी अपने लिए किसी स्थान या स्वतन्त्र राष्ट्र की कल्पना नहीं की।"

जोधपुर से प्रकाशित होने वाले "ओसवाल" (मई 1921) के अंक में प्रकाशित राष्ट्रीय गौरव से युक्त एक पद्य द्रष्टव्य है-

"बढ़ो-बढ़ो पीछे मत हटना, भारत का कल्याण करो।
जननी जन्म भूमि चरणों में जीवन का बलिदान करो।।"

इसी तरह "तरुण ओसवाल" (जनवरी 1940) में प्रकाशित निम्न पंक्तियाँ भी कितनी उत्प्रेरक हैं-

"तरुण नींद को छोड़ पहन लो सत्याग्रह का सैनिक वेष।
मोहपाश को तोड़ देश-हित, सह लो सब संकट अरु क्लेश।।
सुभाष जवाहर सम भारत के, युवक वीर बनते जाओ।
योद्धा हम स्वतन्त्रता के, ध्येय मंत्र जपते जाओ।।"

"अनेकान्त" (सम्प्रति दिल्ली से प्रकाशित) ने अपने अनेक अंकों में राष्ट्रीयता का समर्थन किया था। गांधी जी के जेल जाने पर पत्र के वर्ष 1 किरण 6-7 में लिखा गया है-

"महामना निष्पाप, राष्ट्रहित जग के प्यारे, हिंसा से अतिदूर, सौम्य बहुपूज्य हमारे।
गांधी से नररत्न जेल में ठेल दिये हैं, क्या आशा वे धरे नहीं जो जेल गये हैं।।"

"वीर" (सम्प्रति नई दिल्ली से प्रकाशित) जैन समाज में सुधारवादी पत्र के नाम से प्रसिद्ध था। उसे जैन समाज के राजा राममोहन राय कहे जाने वाले ब्र0 शीतल प्रसाद जी जैसे समाज-सुधारकों का सहयोग मिला। कुरीतियों के उन्मूलन में पत्र अपनी उपमा आप था। इसके साथ यह राष्ट्रीय अखबार भी था। डॉ0 जयकुमार 'जलज' ने ठीक ही लिखा है-" वीर पाठशालावादी और परीक्षाफलछापू अखबार नहीं था। वह जैन होते हुए भी एक व्यापक और उदार राष्ट्रीय अखबार था। उसके सम्पादक खुद स्वतन्त्रता आन्दोलन में सपत्नीक जेल जा चुके थे। वे गांधीवादी थे। ...उनका पत्र उनके राष्ट्रीय विचारों का वाहक बन गया था। आजादी, देशभक्ति, गांधी, नेहरू, सुभाष पर तथा ढिल्लन, सहगल, शाहनवाज की गिरफ्तारी के विरोध जैसे विषयों पर रचनायें छपती थीं। राष्ट्रीय समाचारों, निर्णयों और घटनाओं को प्रमुखता से प्रकाशित किया जाता था" (द्र0 तीर्थंकर, अगस्त-सितम्बर, 1977, पृष्ठ 169)

"दिगम्बर जैन" (मासिक) भी राष्ट्रीय समाचारों को विस्तार से छापता था। पत्र के श्रावण, वि0 सं0 1978 (1921 ई0) में समाचार छपा कि पिठोरिया (सागर) में हरिश्चन्द्र जैन को स्वराज्य कार्य में योग देने के लिए छह माह की सजा हुई है। इसी तरह पौष, वि0 सं0 1988 (1931 ई0) के अंक में "जेल जा चुके हैं" शीर्षक से समाचार छपा है कि-'सरकारी वर्तमान आर्डीनंस के कारण अनेक जैन भाई भी जेल जा चुके हैं, उसमें से कुछ नाम यह हैं-छोटालाल घेला भाई गांधी, अंकलेश्वर, शान्तिलाल हरजीवनदास सोलीसिटर

आमोद...।" पत्र के वीर सं0 2444 (1917 ई0) के अंक 1-2,6,8-9 तथा 2445 (1918 ई0) अंक 1, 3, 13 तथा 2446 (1919 ई0) अंक 1 में अर्जुन लाल सेठी की निरपराध गिरफ्तारी और उन्हें छोड़े जाने की मांग के समाचार विस्तार से छपे हैं। 1918 ई0 के अंक 1 में महात्मा भगवानदीन की गिरफ्तारी का समाचार छपा है। वीर सं0 2450 (1923 ई0) के अंक 1-2 में श्री हजारी लाल जैन, सागर की प्रथम पृष्ठ पर प्रकाशित लम्बी कविता का अन्तिम छन्द पठनीय है।

"त्यागो स्वदेश सुख हेतु सभी विदेशी।
धारो निजात्म बल हेतु अभी स्वदेशी।।
देगी स्वराज्य हमको नियमेन खादी।
सम्पूर्ण मात्र जग के..........आदी।।9।।"

इसी अंक के पृष्ठ 56 पर प्रकाशित छैकोडी लाल जैन, गोटीटोरिया की "विदेशी वस्त्रों की विदा" कविता भी देशप्रेम से ओत-प्रोत है। कविता की प्रथम दो पंक्तियाँ हैं-

"टलो यहाँ से विदेशी वस्त्रो, न अब तुम्हारी है चाह हमको।
तुम्हीं से भारत हुआ है गारत, किया है तुमने तबाह हमको।।"

जैन समाज की विशिष्ट महिला पत्रिका "जैन महिलादर्श" (सम्प्रति लखनऊ से प्रकाशित) 1924 से निरन्तर प्रकाशित होती आ रही है। अगस्त 1946 के अंक का विषय था "स्त्रियाँ राजनैतिक क्रान्ति में भाग लें या नहीं?" इस विषय पर अनेक महिलाओं के लेख इस पत्रिका में छपे थे (विशेष विवरण के लिए डॉ0 ज्योति जैन की "स्वराज्य और जैन महिलायें" पुस्तक देखें, प्राप्ति स्थान 'जैन बुक डिपो, सी-9 कनाट प्लेस, नई दिल्ली-1)

जैन महिलादर्श के 15 मई 1946 के अंक में "नहीं बनेगा पाकिस्तान" विषयक समस्यापूर्ति रखी गई थी, आगे के अंकों में इस विषय पर अनेक कवितायें प्रकाशित हुई हैं। इसी प्रकार "खड़ी द्वार पर आजादी" विषय पर महिलाओं ने अनेक कवितायें लिखी थीं। जनवरी 1942 के अंक में प्रकाशित "आज फिर संसार में सर्वत्र ही सुख शान्ति छाये" की एक समस्यापूर्ति द्रष्टव्य है-

"प्रलय युद्ध प्रचण्ड विचलित कर रहा भूलोक को है।
चण्डिका फैला रही, चहुँ ओर शोक-विशोक को है।।
गगनबेधी बम कहीं विध्वंश करते लोक को हैं।
जीव अगणित जा रहे इस लोक से परलोक को हैं।।
विश्व गांधी के अहिंसावाद को यदि पथ बनाये।
आज फिर संसार में सर्वत्र ही सुख शान्ति छाये।।
युद्ध यह पाश्चात्य का अब विश्वव्यापी बन गया है।
और जब जापान अमरीका इसी में सन गया है।।

देश निज चहुँ ओर से आतंकशाला बन गया है।
ज्ञान सारा नष्ट होकर दानवी रण ठन गया है।।
ईश! मानव प्रेम की सुन्दर "कली" मुरझा न जाये।
आज फिर संसार में सर्वत्र ही सुख-शान्ति छाये।।"
-राम कली देवी "कली", धामपुर

इसी प्रकार ब्यावर से प्रकाशित "जैन शिक्षण सन्देश" के अक्टूबर 1937 के अंक में प्रकाशित "जीवन की" विषयक समस्यापूर्ति भी द्रष्टव्य है-

"मा तुमको स्वाधीन बनाने दादा ने अपनी बलि दी।
लोकमान्य ने कुर्बा हो स्वाधीनताग्नि उत्तेजित की।।
तेरे हित पंजाब केसरी, "लाला" ने बहुकष्ट सहे।
भारत भक्त "भगतसिंह" "बी-के" जेलों में नित सड़ते रहे।।
तो फिर हमको आज्ञा दे तूँ बलिदानामृत जीवन की।
जिसको पीकर भारत हित हम, बलि दें अपने "जीवन की"।।"

इनके अतिरिक्त भी अनेक पत्र-पत्रिकायें हैं, जिनमें आजादी विषयक लेख/समाचार छपे हैं।

❑❑❑

'भाई मरने से डरे नहीं और जीवन की भी कोई साध नहीं है, भगवान् जब, जहाँ, जैसी अवस्था में रखेंगे, वैसी ही अवस्थान में सन्तुष्ट रहेंगे।'

- मृत्युदण्ड प्राप्त श्री मोतीचंद जैन का जेल से अपने विप्लवकारी साथियों को भेजे गये पत्र का एक अंश

जीवितात्तु पराधीनाज्जीवानां मरणं वरम्।
मृगेन्द्रस्य मृगेन्द्रत्वं वितीर्णं केन कानने।।

राष्ट्रीयता क्या है

जैन जगत के तलस्पर्शी विद्वान् प0 चैनसुखदास जी न्यायतीर्थ ने यह लेख 'जैन संदेश, राष्ट्रीय अंक' (23-1-1947) में लिखा था। उसे अविकल हम यहाँ दे रहे हैं।

जब हमें हमारी भाषा में Nationalism शब्द के अनुवाद करने की आवश्यकता हुई तब हमारे सामने यह शब्द आया। जिस भाषा का यह शब्द है उस भाषा के व्याकरण के अनुसार इसका शुद्ध रूप क्या है और प्राचीन काल में वह किस अर्थ में प्रयुक्त होता था इस पर बहस करने का यह समय नहीं है क्योंकि अब तो यह हिन्दी भापा के शब्द कोष में एक आदरणीय स्थान प्राप्त कर चुका है। शब्दों के सर्जक तो भाव हैं। हमें भावों को लेकर ही आगे बढ़ना है।

राष्ट्रीयता एक सम्मान की वस्तु है। उसमें एक संस्कृति, एक कल्पना और एक परम्परा का अर्थ निहित है। संप्रदाय, जाति और वर्ग की अनेक भिन्नताओं को रखते हुए भी जो अभिन्न है, वह राष्ट्र है। वह एक विशाल जाति है जिसे अंगरेजी में Nation कहते हैं। राष्ट्र सर्वोपरि है, संप्रदाय, वर्ग और जाति की भूमिका, इससे बहुत नीची है। राष्ट्र वह है जिसके लिये इन सबका बलिदान किया जा सकता है किन्तु राष्ट्र का बलिदान इनमें से किसी के लिये भी नहीं किया जा सकता।

राष्ट्र ब्रह्म की तरह व्यापक है। वह समष्टि है, व्यष्टि नहीं, पर व्यष्टि समष्टि से भिन्न कहाँ है ? राष्ट्रीयता में समष्टि और व्यष्टि के व्यापक स्वार्थ भिन्न-भिन्न नहीं होते। कोटि-कोटि अथवा लक्ष-लक्ष नर-नारियों की एक भावना, एक विचार और एक उद्देश्य राष्ट्रीयता ही उत्पन्न कर सकती है। राष्ट्रीयता में समष्टि की स्वाधीनता का महान उद्देश्य सदा चमकता रहता है और उसमें "जीवतात्तुपराधीनाज्जीवानां मरणं वरम्, मृगेन्द्रस्य मृगेन्द्रत्वं वितीर्णं केन कानने" (महाकवि बादीभसिंह) जैसी सूक्तियाँ सदा ही जीवन रस प्रदान करती रहती हैं।

सच्ची राष्ट्रीयता में किसी का शोषण नहीं होता। यहाँ विचार स्वातंत्र्य और व्यक्ति स्वातंत्र्य को दलित करने की चेष्टा नहीं की जाती। यह विमुक्त हस्त होकर सबको सब कुछ देने वाली है। इसमें श्रेणीराज्य, पूँजीवाद और साम्राज्यवाद जैसी जघन्यताओं को कोई स्थान नहीं है। क्योंकि ये सभी चीजें व्यापक राष्ट्रहित की विघातक हैं। प्रजातन्त्र और साम्यवाद जैसी सुहावनी चीजों में भी यदि सच्ची राष्ट्रीयता नहीं है तो वह अमृत नहीं, हलाहल हैं और वह कभी न कभी राष्ट्र का प्राण जरूर लेंगी !

यह राष्ट्रीयता न पर का कुछ छीनना चाहती है और न अपना कुछ देना चाहती है। यह 'ओफेंस' नहीं किन्तु 'डिफेंस' करती है। कोई अपना कुछ छीनना चाहे तो वह अपने व्यापक ब्रह्म को लेकर उस पर टूट पड़ेगी और तब तक दम न लेगी जब तक आक्रमणकारी को पूरा परास्त न कर दे। रूस की राष्ट्रीयता ने विगत महायुद्ध में वही किया। जर्मनी में भी सच्ची राष्ट्रीयता नहीं थी, नहीं तो वह कभी न हारता। उसमें लुटेरापन था। उसने अन्य छोटे-बड़े राष्ट्रों पर बुरी तरह का आक्रमण किया। उसको तात्कालिक सफलता मिली। इसलिये इटली का मन भी ललचाया और वह भी उसका भागीदार बना ; सोचा कि संसार की लूट में उसे भी कुछ

मिलेगा। तब जापान से भी न रहा गया । वह भी इन दो आततायियों का साथी बना और तीनों मिलकर संसार की लूट पर उतर गये। पर तीनों बुरी तरह विफल हुए क्योंकि इनमें सच्ची राष्ट्रीयता नहीं थी। ये सारे संसार को लूटकर अपने भरे हुए पेट को और भी भरना चाहते थे। किन्तु इनकी बड़ी दुर्दशा हुई। ये औरों का तो कुछ भी न छीन सके पर अपने आपका सदा के लिये अन्त कर दिया।

आज जर्मन, इटालियेन और जापानीज राष्ट्र कहाँ हैं ? जो जापान संसार के उदाहरण की वस्तु बना हुआ था, आज विदेशियों के द्वारा बुरी तरह पददलित किया जा रहा है। इसका कारण यही है कि कई वर्षों से उसकी सच्ची राष्ट्रीयता नष्ट हो रही थी। रूस विजय के पहले उसमें सच्ची राष्ट्रीयता थी तभी उसने रूस पर विजय पायी थी। इसके बाद तो उसमें अहंकार आया और वह पतन की ओर जाने लगा। चीन, कोरिया आदि की राष्ट्रीयता पर जो उसने अत्याचार किये, उसका फल उसको अब मिल रहा है।

जर्मनी की सच्ची राष्ट्रीयता बहुत लम्बे समय से नष्ट हो चुकी थी। इसलिये वह 14-18 के महायुद्ध में हारा। इस 39-45 के संसार युद्ध में भी उसकी पराजय का कारण यही है कि वह अन्य सब राष्ट्रों की जन्मसिद्ध स्वाधीनता छीनकर उन पर अपना शासन करना चाहता था। ऐसी कलुषित मनोवृत्तियाँ अपने ही राष्ट्रहित के लिये विघातक हैं। ऐसे राष्ट्र अन्त में स्वयं ही पराधीन बनकर अपने पापों के दुष्परिणामों को बुरी तरह भोगते हैं।

सिकन्दर, मुहम्मद गजनवी, अलाउद्दीन, चंगेजखाँ, तैमूरलंग, नादिरशाह, कैसर, हिटलर, मुसोलिनी और टोजों आदि किसी में भी सच्ची राष्ट्रीयता नहीं थी। हाँ, ये लुटेरे अथवा नर-संहारक जरूर थे। सच्ची राष्ट्रीयता के उदाहरण हैं मुस्तफा कमालपाशा, अब्राहमलिंकन, जनरल वाशिंगटन, पीटर दी ग्रेट, गैरी वाल्डी, मेजिनी, काऊर, प्रिंस विस्मार्क, लेनिन और छत्रपति शिवाजी आदि। अपने स्वार्थ के लिये दूसरे देशों को अपने आधीन रखने वाला ब्रिटेन भी आज सच्ची राष्ट्रीयता से वंचित है। जो दूसरों की राष्ट्रीयता का अपहरण किये हुए है वह स्वयं अपने आपको कैसे राष्ट्रीय कह सकता है।

हमारा देश इस समय स्वतन्त्रता के द्वार पर है। इसका अब तब निर्माण हो रहा है। इस नवनिर्माण में इस बात का समावेश रहेगा कि सब स्वतन्त्र हों, कोई किसी के आधीन न रहे। प्रत्येक देश का स्वाधीन रहने का जन्मसिद्ध अधिकार है। उस अधिकार को जो छीनना चाहे, उसका सम्पूर्ण शक्ति लगाकर सामना करना राष्ट्रीयता है। दूसरों की स्वाधीनता को छीनकर जो अपनी वृद्धि करना चाहते हैं वे कभी राष्ट्रीय नहीं है। संसार में शांति स्थापित तभी हो सकती है, जब कोई भी पराधीन नहीं रहे। दूसरे की स्वाधीनता का अपहरण करना अराष्ट्रीयता है। हमारे देश के नेता महात्मा गांधी आदि सदा से इसका विरोध करते रहे हैं।

□□□

परिशिष्ट-पाँच : विशिष्ट लेख

अगस्त आन्दोलन और स्याद्वाद विद्यालय काशी

श्री स्याद्वाद महाविद्यालय जैन समाज का ऐसा महाविद्यालय है जिसने वर्तमान पीढ़ी के अधिकांश विद्वान् दिये हैं। 1942 के आन्दोलन में यह विद्यालय जैन क्रान्तिकारियों का गढ़ था। 23 जनवरी 1947 को प्रकाशित 'जैन सन्देश' के राष्ट्रीय अंक में श्री देवेन्द्र जी का उक्त लेख छपा था, जिससे हम अविकल यहाँ दे रहे हैं।

9 अगस्त 1942 हमारे स्वातंत्र्य संग्राम के इतिहास की अमर घटना है। भारतीय इतिहास के पिछले समस्त गौरवशाली अध्याय इस दिन के घटना प्रवाह की भूमिका भर हैं। 'अगस्त आन्दोलन' किसने प्रारम्भ किया यह एक विवादग्रस्त बात है। पर यह सबने स्वीकार किया है कि उसके संचालक थे विद्यार्थी और उनके द्वारा प्रेरित ग्रामीण जनता। हमें अच्छी तरह स्मरण है कि 42 के 9 अगस्त के प्रभात में आकाश काली घटाओं से आच्छन्न था। वर्षा की रिमझिम बूँदों में किसी ने कल्पना न की थी कि ब्रिटिश बंदूकों की गोलियाँ उन पर सहसा बरस पड़ेंगी। वर्षा की बूँदों का स्वागत गृहस्थों ने अपने घरों में किया और ब्रिटिश संगीनों का सामना छात्रों ने खुली सड़कों पर किया। उस दिन समूचा देश क्रांति की ज्वाला में जल उठा था। आज अन्त:कालीन सरकार यदि सचमुच में भारतीय स्वतंत्रता का द्वार प्रशस्त करती है तो हमें यह भी स्वीकार करना पड़ेगा कि उक्त द्वार यदि किसी ने खोला, तो 9 अगस्त ने!

पहिले दो दिन प्राय: हड़ताल और जुलूसों में बीते। इसमें विद्यालय के छात्र न केवल जुलूस में थे अपितु उन्होंने उनमें प्रमुख भाग लिया। उन्होंने सस्कृत की छोटी से छोटी पाठशाला से लेकर, क्वींस कालिज तक, हड़ताल के लिये धावा बोला। पर्चे छापे और बांटे। अभी तक हमारे सामने यही कार्यक्रम था। लेकिन पश्चात् सबका ध्यान गुप्तकार्यों की ओर गया। छात्रसंघ की बैठक हुई। सबने **भाई बालचन्द जी** को कप्तान चुना। चंदा हुआ, कुछ समितियाँ बनीं। यह भी निश्चय हुआ कि इसका सम्पर्क बड़े संगठनों से स्थापित कर लिया जाय।

अब छात्रों ने अपना कार्य क्षेत्र गांवों को बनाया। इसमें छोटे से लेकर बड़े सभी लड़कों ने भाग लिया। जैन इतिहास की यह पहली ही क्रान्तिकारी घटना होगी, जब उसके छात्रों ने धर्म क्षेत्र की तरह अपनी वीरता और निर्भीकता का परिचय राजनीति के क्षेत्र में भी दिया। इसमें सबसे अधिक कठिनाई उन छात्रों को आती थी जो दूसरे प्रान्त के थे। बनारस के आसपास की स्थिति का ज्ञान न होने से कभी-कभी वे भटक भी जाते थे। एक बार तो ऐसा हुआ कि लोग रातभर चलते रहे और जब लक्ष्य पर पहुँचे तो पता चला कि वहाँ कार्य समाप्त हो चुका है। कभी ये क्रांतिकारी वीर चढ़ी हुई गंगा की लहरों पर नौका खेते होते और कभी खेतों की अनजान पगडंडियों में अंधेरी और बदली भरी रातों में नंगे चलते होते! खाने को सावन की कच्ची भुटियाँ और चने। कभी गुड़ मिल गया, तो समझिये भाग्य खुल गये।

इस प्रकार काम करके लौटते और दूसरे दिन समाचार पत्र में पढ़ते कि अमुक---अमुक दुर्घटना? तब मन ही मन प्रसन्न होते। यह क्रम भी तीन चार दिन ही चला।

इधर पुलिस द्वारा धरपकड़ जोरों से हो रही थी। चुन-चुन कर प्रमुख लोग पकड़ लिये गये। हमारा विद्यालय भी अब खुफिया पुलिस के कड़े पहरे में था। जरा से संदेह में, जेल के द्वार स्वागत को प्रस्तुत थे। मुझे जहाँ तक याद है, सबसे पहिले आपत्तिजनक परचे बितरित करने के अभियोग में **भाई शीतल प्रसाद पकड़े गये**। आप एम. ए. और दर्शनाचार्य के छात्र थे। आपको **दो साल की** सजा हुई। जेल जीवन में अपने स्वाभिमान के कारण आपको सबसे अधिक कड़ी यातनायें सहनी पड़ीं। इसी कारण आपको जिला जेल से सेन्ट्रल भेज दिया गया। वहाँ इन्हें कई बार 'तनहाई' में रखा गया। इन्होंने 'सी' क्लास में ही रहना पसन्द किया। पर जब आपको दांतों का रोग अधिक उभर आया तो 'बी' क्लास में चले गये। जेल के सींकचों से जब आप बाहर आये तो टूटा हुआ स्वास्थ्य लेकर। तब से फिर आपका पढ़ना भी नहीं हो सका।

उनके बाद सर्वश्री भाई घनश्यामदास, रतन चंद पहाड़ी, धन्यकुमार, हरीन्द्रभूषण, नाभिनंदन, दयाचंद, सुगमचंद आदि की गिरफ्तारियाँ हुईं। इनमें रतनचंद और सुगमचंद जी जिला जेल में सबसे छोटी उम्र के थे। "ठोस कार्य" की दृष्टि से भाई धन्यकुमार जी का नाम भी अधिक प्रशंसनीय रहा। दयाचंद जी टीकमगढ़ वाले बी क्लास में रहे, उन्हें अमर शहीद होने का भी सौभाग्य अपनी जीवितावस्था में ही मिल गया। एक दिन आप जब नहीं आये, तो यह खबर उड़ गई कि आप गोली के शिकार हो गये हैं। हिन्दू विश्व-विद्यालय में शोक प्रस्ताव भी हो गया। पर दूसरे दिन आप सकुशल हम लोगों के बीच आ गये।

गिरफ्तारियों और सरकार के दमन कार्यों से, यद्यपि बाहर प्रदर्शन बंद हो गये, पर गुप्त आन्दोलन चलते रहे। 7 फरवरी 1943 को अचानक काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में विस्फोट हुआ। उसी सिलसिले में कप्तान बालचंद जी ऐरैस्ट कर लिये गये। इस आंदोलन में भाई बालचंदजी ने सबसे अधिक काम किया और उन्हें यातनाएँ भी खूब सहनी पड़ीं। उन्हें अमानुषिक उपायों से इस षडयंत्र में भाग लेने वालों के नाम बताने के लिये मजबूर किया गया। इस प्रसंग में पुलिस को हरीन्द्र जी के नाम का पता चला। आप कुछ ही दिन पहिले जेल से छूटे थे। निदान उन्हें अपनी पढ़ाई छोड़कर रातों-रात फरार होना पड़ा।

भाई बालचंदजी ने कष्टों के बावजूद अधिक वीरता दिखाई। जेल जीवन की बीमारियां भी आपको प्रसाद में मिलीं। कहा जाता है, उनका संबंध देश के बड़े क्रांतिकारियों से रहा। यूनीवर्सिटी बम्बकाण्ड के मामले में आपको एक वर्ष बाद फिर ऐरैस्ट किया गया। पुलिस का यह भी अभियोग था कि उनके पास दर्जनों पिस्तोलें हैं। पूरे दो वर्ष की जेल-यातना भोग चुकने पर कांग्रेस मिनिस्ट्री होते ही, आप मुक्त कर दिये गये।

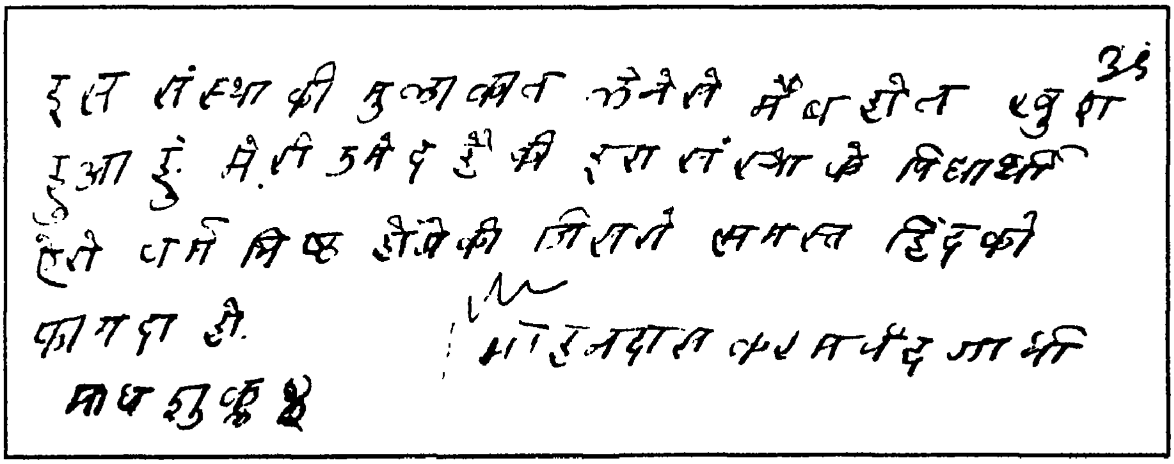
सबसे संगीन घटना वह है, जब काशी के सी.आई.डी. स्टाफ ने एक दिन "खतरनाक हथियार" छिपाने के संदेह में विद्यालय की तलाशी ली। पर उसे कोई चीज नहीं मिली। उसे यह भी पता चला कि हथियार गंगा में फेंक दिये गये हैं। फलत: मल्लाह बुलाये गये और चढ़ी हुई "गंगा" में भी खोज हुई। पर निष्फल ! पर छेदीलालजी के मंदिर की तलाशी होने पर एक भरी हुई पिस्तौल और कुछ तोड़फोड़ का सामान मिल गया। सामान जब्त कर, तीन छात्रों को गिरफ्तार कर लिया गया। ये थे- **गुलाबचंद जी एम० ए०, अमृतलाल जी दर्शनाचार्य और घनश्यामदास जी**। 18 दिन की हवालात के बाद, सब लोग जमानत पर छोड़

दिये गये। तबसे उसकी दृष्टि विद्यालय पर कड़ी हो गई। इस घटना से शहर में प्रत्येक की जबान पर विद्यालय का नाम हो गया।

विद्यालय के अधिकारियों में सभी ने इसमें आन्तरिक सहानुभूति दिखाई। पर सबसे अधिक कठिनाई का सामना करना पड़ा अधिष्टाता **बाबू हर्षचन्द जी** को। एक ओर वे राष्ट्रीय कामों को नहीं रोक सकते थे और दूसरी ओर सरकार का दबाव था, विद्यालय बन्द होने की भी आशंका हो चली थी। पिस्तौलवाली घटना से तो समाज तक में तहलका मच गया। समाज के नेताओं के कड़े तार और पत्र उनके पास आये कि क्रांति में भाग लेने वाले छात्रों को फौरन निकाल दिया जाय। यह ध्यान रहे कि ये वे ही लोग थे, जो अब "राष्ट्रीय सरकार" में "जैन प्रतिनिधित्व" की मांग कर रहे हैं। लेकिन सब काम ठीक चलता रहा।

सच तो यह है कि– अगस्त क्रांति के वे दिन वे ही दिन रहेंगे। उन दिनों में एक आग थी, एक उमंग थी !

□□□



श्री स्याद्वाद महाविद्यालय के सन्दर्भ में डॉ० सम्पूर्णानन्द के विचार

श्री स्याद्वाद विद्यालय संस्कृत भाषा और जैन धर्म की जो सेवा कई वर्षों से लगातार करता आ रहा है उससे न केवल काशी वरन् काशी के बाहर भी विद्याप्रेमी लोग परिचित हैं। इसके अधिकारी इस बात का भी सतत प्रयत्न करते हैं कि छात्रों में विद्याभ्यास कराने के साथ-साथ उनमें स्वदेशानुराग भी उत्पन्न किया जाय और वह उस प्रवाह के साथ चल सकें जो इस समय राष्ट्र को आन्दोलित कर रहा है। मुझे यहाँ का काम देखकर संतोष हुआ और आशा करता हूँ कि यह उत्तरोत्तर उन्नति करता जायेगा।

19.12.39

-सम्पूर्णानन्द

परिशिष्ट-छह: विशिष्ट लेख

स्त्रियाँ राजनैतिक क्रान्ति में भाग लें या नहीं ?

जैन समाज की प्रसिद्ध महिला पत्रिका 'जैन महिलादर्श' ने 'आज की एक विकट समस्या' स्तम्भ प्रारम्भ किया था। अगस्त, 1946 के अंक का विषय था–'स्त्रियाँ राजनैतिक क्रान्ति में भाग लें या नहीं ?' इस पर आये हुए अनेक निबन्धों में विजया देवी जैन, जगाधरी का निबन्ध सर्वोत्कृष्ट पाया गया था और उन्हें 25 रुपये का पुरस्कार दिया गया था। उक्त निबन्ध हम अविकल यहाँ प्रस्तुत कर रहे हैं–

भारत न सहेगा हरगिज गुलाम-खाना,
आजाद होगा, होगा, आता है वह जमाना।
यह जेल औ' दमन की परवाह है अब किसको,
हँसते-हँसते होगा फाँसी पर झूल जाना।।

आह ! कवि ने क्या ही मार्मिक शैली से भारत की वर्तमान राजनैतिक जागृति का वर्णन किया है। आज भारत पराधीन है, निरक्षर है, भूखा है, नंगा है। परन्तु इस हालत में भी उसकी आजादी की भूख नहीं दबी। जमाने बदल गये। उनके साथ वातावरण में भी परिवर्तन हुए। मनुष्यों की विचारधाराएँ भी बदलीं। बहुत सी पुरानी वस्तुओं की जगह नवीन बातों ने अपना आधिपत्य जमाया। लेकिन यह सब होने पर भी जमाना हमारी आजादी की भावना को न बदल सका। आज अनेक कष्टों एवं दमनों को सहकर भारत आजादी के मार्ग पर बढ़ता ही जा रहा है। उसके कानों में बालगंगाधर तिलक का यह वाक्य 'स्वतन्त्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है' गूँज रहा है। हमारी अन्तिम मँजिल आजादी है। उस पर पहुँचकर ही हम दम लेंगे। यह समय हमारे देशका एक बहुत की नाजुक समय है। यह बात देश के प्रत्येक नेता कह रहे हैं। आजादी की मँजिल तय होनेवाली है। सिर्फ एक ही गम्भीर खाई बनी है। धैर्य एवं साहस से इसे पार करना है। आज भारत में जो राजनैतिक जागृति है वह सराहनीय है। बाल-वृद्ध सब ही आजादी के मतवाले हैं। यह युग राजनैतिक क्रान्ति का है। भारत के इतिहास के यह पृष्ठ भावी सन्तान बड़े गौरव एवं चाव से पढ़ेगी। पर बहिनों, क्या हम नारियाँ इस इतिहास में, क्रान्ति में कुछ भी भाग न लेंगी ? क्या संसार एवं भारतीय पुरुषों से हम यही कहलावेंगी कि भारतीय नारी बिल्कुल अबला एवं कूपमण्डूक है। उन्हें अपने देश के उत्थान या पतन से कोई मतलब नहीं है ? नहीं! कभी नहीं ! हम संसार को दिखा देंगी कि हम वही वीर दुर्गा एवं लक्ष्मी की सन्तान हैं। हमारी धमनियों में वही माँ सुभद्रा का रक्त है जिसने अपने सोलह वर्षीय पुत्र को अपने हाथों से सजाकर रणक्षेत्र में भेज दिया था। हम आज भी भारत की इस राजनैतिक क्रान्ति में भाग लेंगी।

जिस तरह गृहस्थी रूपी रथ के दो पहिये नर एवं नारी हैं। दोनों के सहयोग एवं ज्ञान से ही पारिवारिक जीवन सफल है, उसी तरह राजनैतिक क्षेत्र में भी जब तक नारी कदम न बढ़ावेंगी तब तक यह राजनैतिक युद्ध अधूरा है। यह कमी हमारे प्रत्येक नेता महसूस करते हैं। इसी कारण राजनैतिक क्षेत्र में वे नारी को अधिक

प्रोत्साहित करते हैं। नारियाँ भी अपने इस मान की आन जिस शान से निभा रहीं हैं वह भी सराहनीय एवं अनुकरणीय है। हमारे सामने श्री कमला नेहरू, कस्तूरबा व सत्यवती देवी के ज्वलन्त उदाहरण मौजूद हैं, जिनकी अन्तिम साँस में भी यही पुकार थी, 'भारत हो स्वतन्त्र हमारा।' श्रीमती विजयलक्ष्मी, अरुणा देवी आदि देवियाँ जिस दक्षता से इस राजनैतिक क्रान्ति का नेतृत्व कर रहीं हैं उससे यह स्पष्ट ज्ञात है कि भारतीय नारी की वह अतीत की योग्यता नष्ट नहीं हुई। पुरुषों की यह भावना, कि नारी में राजनैतिक एवं सामाजिक कार्य करने की योग्यता नष्ट हो गयी है, नितान्त गलत सिद्ध हुई।

नारी पुरुषों से अधिक त्याग एवं बलिदान कर सकती है। उसका अन्त:स्थल अत्यन्त कोमल होता है। एक विलासिनी नारी भी क्षणमात्र में पक्की क्रान्तिकारिणी बन सकती है। जिस वक्त भारत के नेता श्री सुभाष बाबू ने सन् 1944 में रंगून में भारतीयों की एक विराट सभा में यह माँग पेश की कि, 'जो भारत के स्वाधीनता संग्राम में हाथ बँटाना चाहते हैं वे आगे बढ़ें एवं इस प्रतिज्ञा-पत्र पर अपने खून से हस्ताक्षर करें', सारी सभा में सन्नाटा छा गया। इसी समय जो सबसे आगे आयीं एवं इस युद्ध की सामग्री बनीं वे थीं इस शस्यश्यामला भारत की सत्रह वीरांगनायें जिन्होंने अपने रक्त से उस प्रतिज्ञा-पत्र पर हस्ताक्षर किये। बस! फिर क्या था। नारियों का साहस देखकर पुरुषों में भी जोश छा गया एवं थोड़ी सी ही देर में समस्त जनसमूह ने अपने रक्त से उस मातृभूमि के स्वतन्त्रता प्रतिज्ञा-पत्र पर मोहर लगायी। देखा आपने ! नारी के आगे कदम बढ़ाने से पुरुषों में कैसा जोश फैला। इसी कारण तो देश के कोने-कोने से यह आवाज आ रही है कि नारी को राजनैतिक क्रान्ति में अवश्य भाग लेना चाहिए।

अतीत में भारतीय नारी प्रत्येक राजनैतिक कार्य में भाग लेती थी। इस बात का साक्षी हमारा इतिहास है। राजा हर्षवर्धन की बहिन राजश्री भाई के साथ सभाभवन में आती थीं एवं राज्य की प्रत्येक समस्या सुलझाने में भाग लेतीं थीं। रानी दुर्गावती व लक्ष्मीबाई ने तो देश के स्वातन्त्र्य युद्ध में तोप एवं गोलेबारी के बीच इस शौर्य एवं दक्षता से तलवार चलायी कि उनके शत्रु भी उनकी योग्यता की सराहना करने लगे। प्राचीन भारत में महाराष्ट्र की अहिल्याबाई, झाँसी की लक्ष्मीबाई व दिल्ली की रजिया बेगम के ज्वलन्त उदाहरण पाये जाते हैं जो कि भारत में अंग्रेजी राज्य से पूर्व इस ऐतिहासिक काल में कुशल शासन करतीं थीं। हम अपने इस भूतकाल की भाँति भविष्य में भी भारतीय नारी के आदर्श उदाहरण प्रस्तुत करेंगी।

नारी में योग्यता एवं साहस का अभाव नहीं है। उसे तो पुरुषों की उपेक्षा ने ही अबला बना दिया है। :दि उसे उचित शिक्षा दी जाये एवं उसके छोटे-छोटे महत्त्वपूर्ण कार्यों की हँसी व उपेक्षा न की जावे और उसे उत्साहित किया जावे तो आज भी भारतीय नारी अतीत के नारी इतिहास की पुनरावृत्ति कर सकती है। यह बात भारत के इस राजनैतिक संघर्ष ने स्पष्ट बता दी है। असहयोग आन्दोलन में, नमक कानून तोड़ने में, विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार में, पिकेटिंग व सत्याग्रह में, अंग्रेजी नौकरशाही की गोलियों के सामने सीना खोलकर खड़ी होने में, जेल तक जाने में भी भारतीय नारी नहीं हिचकी। जब श्री सुभाष बोस ने "आजाद हिन्द सेना" की स्थापना की तब उन्होंने "झाँसी की रानी सैनिकाओं की एक रेजीमेन्ट" बनायी एवं 'डा0 लक्ष्मीनाथन" उस रेजीमेन्ट की सेनानी थीं। इन्हें भी पुरुषों की भाँति युद्ध-शिक्षा दी गयी एवं जब स्वाधीनता संग्राम आरम्भ हुआ तब इनको फील्ड अस्पतालों में घायल सैनिकों की सेवा के लिए नियुक्त किया,

पर इन वीरांगनाओं को केवल सेवा से सन्तोष कैसे होता। उन्होंने नेताजी के पास प्रार्थना पत्र भेजा कि, "हम सैनिक शिक्षा प्राप्त कर चुकीं हैं। हमारी शिक्षा सन्तोषजनक रही है। हमें मोर्चे पर जाने की आज्ञा दी जावे।"

नेताजी ने इन्हें बहुत समझाया। युद्ध क्षेत्र की कठिनाइयाँ बतायीं, पर इन वीरांगनाओं का यही उत्तर था, "हम झाँसी की रानी रेजीमेन्ट की सैनिकाएँ हैं। हमारी सेनानी भी 'लक्ष्मी' है। हम अवश्य युद्ध करेंगी।" अन्त में नेताजी ने उन्हें आज्ञा दे दी। इन वीर रमणियों ने 16 घण्टे तक ब्रिटिश फौजों से युद्ध किया, ऐसा विकट कि अन्त में ब्रिटिश फौज को पीछे हटना पड़ा।

मेरी समझ में नहीं आता कि जब भारतीय नारी में इतना साहस, आत्मत्याग एवं ज्ञान है तो वह राजनैतिक क्रान्ति में भाग क्यों न ले ? यदि हममें कुछ अभाव है, कमजोरी है तो इसका यह अर्थ नहीं कि हम योग्य नहीं बन सकतीं। शिक्षा एवं अभ्यास से जो जानवर भी सीख जाते हैं तो क्या हम पशुओं से भी गयी-बीती हैं ? जबकि हमारी कई बहिनें इस स्वातन्त्र्य युद्ध में भाग ले रहीं हैं तो क्या हम उनसे भी शिक्षा नहीं ले सकते ? प्रत्येक बहिन इन देवियों को अपने मार्ग का प्रकाश स्तम्भ बनावें एवं आगे बढ़ें, देश की राजनैतिक क्रान्ति में अवश्य भाग लें ताकि हमारी आगामी पीढ़ी गर्व से माथा ऊँचा कर कह सकें कि हमारे भारत में नारियाँ पुरुषों की सच्ची अर्धांगिनी रहीं हैं। पारिवारिक समस्याओं के साथ ही साथ राजनैतिक समस्याओं के सुलझाने में भी उन्होंने अतीत की नारियों की भाँति पुरुषों की सदा सहायता की। बहनों उठो! एवं कवि के इन शब्दों को याद करके आगे बढ़ो। देश की राजनैतिक क्रान्ति में भाग लो।

जिसे न निज गौरव तथा देश का अभिमान है।
वह नर नहीं नरपशु निरा, जीवित मृतक समान है।।

❑❑❑

संविधान, यदि अपरिवर्तनशील और गतिहीन है तो चाहे वह कितना भी अच्छा और पूर्ण क्यों न हो, उपयोगी नहीं रह सकता। वह पुराना पड़ जाता है और धीरे-धीरे अनुपयोगी हो जाता है। जीवंत संविधान को तो अनिवार्यतः विकासशील होना चाहिए, उसमें अनुकूलशीलता, लचीलापन और परिवर्तनशीलता के गुण होने चाहिए।

-पं० जवाहर लाल नेहरू
(संविधान सभा, 8 नवम्बर, 1948)

परिशिष्ट-सात : एक जब्तशुदा लेख

भगवान महावीर और महात्मा गांधी

प्रस्तुत लेख उर्दू 'जैन प्रदीप' के अप्रैल एवं मई-जून 1930 के अंकों में उर्दू भाषा में ही छपा था। 'जैन प्रदीप' की स्थापना 1912 में बाबू ज्योतिप्रसाद जैन ने की थी। बाबू ज्योतिप्रसाद जैन अपने क्रान्तिकारी विचारों के कारण जैन समाज में 'समाज सुधारक' के नाम से विख्यात हुए हैं।



नाटा कद, भरा-उभरा शरीर, भरी-झूंगी मूंछे, चौड़ा ललाट, भीतर तक झांकती-सी आंखें, धीमा बोल, सधी चाल, सदैव शान्त मुख-मुद्रा, मामूली कपड़े के जूते, कमीज और कभी-कभी बन्द गले का कोट, सिर पर गांधी-टोपी और कभी-कभी तिरछा साफा, चौड़ा पाजामा, नियमित जीवन, मिलनसार और अपनों को सबकुछ करने को तैयार यह व्यक्तित्व था बाबू ज्योतिप्रसाद का।

बाबू जी का जन्म आश्विन कृष्ण 10, वि0सं0 1939 (सन् 1882 ई0) को देवबन्द, जिला-सहारनपुर (उ0प्र0) में एक साधारण परिवार में हुआ था। बाल्यकाल में ही उन्हें जैन जागरण के दादा भाई बाबू सूरजभान वकील का संसर्ग मिला। वकील सा0 ने इस बालक में भविष्य को देखा और अपने पास रख लिया। जैन समाज में समाज-सुधार, पत्रकारिता, देशसेवा का बीजारोपण बाबू जी में यहीं से पड़ा। अपनी जबानी में बाबू जी लाला हरनाम सिंह के यहाँ मुनीम हो गये, जहाँ पहुँचकर वे बड़े अफसरों और जिले के बड़े आदमियों के संसर्ग में आये। वे देवबन्द में 'जोती मुनीम' के नाम से पहचाने जाने लगे। 1912 में 'जैन प्रदीप' की स्थापना और उसके सम्पादक होने के नाते वे 'जोती मुनीम' से 'जोती एडीटर' बन गये और अपने जीवन के अन्तिम समय तक वे इसी नाम से विख्यात रहे। इससे पूर्व बाबू जी 'जैन प्रचारक', 'जैन नारी हितकारी', 'पारस' जैसे पत्रों का सम्पादन कर चुके थे। जैन प्रदीप के सन्दर्भ में प्रसिद्ध साहित्यकार डॉ0 कन्हैया लाल मिश्र 'प्रभाकर' ने लिखा है- ''जैन प्रचारक' के बाद उन्होंने अपना 'जैन प्रदीप' मासिक निकाला, जिसके वे चपरासी भी थे और चेयरमैन भी। वे स्वयं डाक लाते, स्वयं उसका जवाब देते, आई-गई डाक रजिस्टर में चढ़ाते, लेख लिखते, कांट-छांट करते, पते लिखते, चिपकाते..... 'जैन प्रदीप' में उन्हें कभी आर्थिक लाभ नहीं हुआ, पर वह उनका क्षेत्र सारे जैन समाज को बनाये रहा, जिससे वे और 'जैन प्रदीप' दोनों निभते रहे। 1930 में 'गांधी जी और महावीर' नामक लेख के कारण सरकार ने जैन प्रदीप पर जो पाबन्दी लगाई उसी से वह बन्द हो गया, नहीं तो वह सदैव ठीक तारीख पर ही निकला।''

बाबू जी 1920 में समाज से राजनीति में आये, उन दिनों वे सभी जलसों में शरीक होते और कांग्रेस संगठन को मजबूत बनाने में हिस्सा लेते। तिलक स्वराज फण्ड का चन्दा और भाषण उस युग की राजनीति के मुख्य अंश थे, जो बाबू जी करते थे। 1920 में वे जेल जाना चाहते थे पर सरकार ने गिरफ्तार नहीं किया। 1930 में वे पारिवारिक परिस्थितियों के कारण जेल नहीं जा सके पर आन्दोलन में पूरी निष्ठा से सक्रिय रहे।

1930 में जैन प्रदीप में उर्दू भाषा में (उन दिनों जैन प्रदीप उर्दू में ही निकलता था) 'भगवान् महावीर और महात्मा गांधी' लेख लिखा। इसके कई अंशों पर सरकार को कड़ी आपत्ति थी, फलतः सरकार

ने इस पर पाबन्दी लगा दी और आगे के लिए एक हजार की जमानत मांगी, जिसे देने से बाबू जी ने इन्कार कर दिया। इस सन्दर्भ में प्रभाकर जी ने अपने संस्मरण में लिखा है-

''डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट' ने उनसे कहा 'ऐडीटर साहब ! हमारे फादर ने, जब वह यहाँ कलेक्टर थे, आपके अखबार का डिक्लेरेशन मंजूर किया था। हम नहीं चाहते कि हमारे समय में वह बंद हो, इसलिए आप हमको एक खत लिखो कि उस लेख का वह मतलब नहीं है जो समझा गया है। बस हम अपना आर्डर वापस ले लेंगे।'

बाबू जी ने उत्तर दिया- 'कलेक्टर साहब आप मुझसे सलाह करके पाबन्दी लगाते, तो उसे हटाने के लिए भी मेरे खत की जरूरत पड़ती। अब तो वह हटेगी तो वैसे ही हटेगी, जैसे लगी है।' और उठकर चले आये।

नगर के एक बड़े रईस ने, जिसने कलेक्टर महोदय को नरम किया था, उसी दिन मुझसे कहा- 'आज ऐडीटर साहब ने हमारे किये-धरे पर चौका फेर दिया।' मैं तुरन्त उनके (बाबू जी के) घर गया, तो बहुत खुश थे। बोले- 'भाई, हम जेल नहीं जा सकते, तो इज्जत के साथ अपने घर तो रह सकते हैं।''

इस प्रकार जैन प्रदीप 1930 में बन्द हो गया। उनके वंशजों ने अब उसे पुन: 5-6 वर्ष पूर्व हिन्दी में निकालना प्रारम्भ किया है, सम्प्रति सम्पादक श्री कुलभूषण कुमार जैन हैं। हमें भी पूज्य बाबू जी के कक्ष को देखने का सौभाग्य, सामग्री संचयन हेतु देवबन्द जाने पर, मिला। यह हमारा अहोभाग्य है। बाबू जी के योगदान के सन्दर्भ मे 'सहारनपुर सन्दर्भ' (पृष्ठ 535) लिखता है-

''देवबन्द में उत्पन्न बाबू ज्योति प्रसाद जैन सहारनपुर के वन्दनीय पुरुषों में हैं। उनकी प्रारम्भिक शिक्षा देवबन्द में हुई। वहीं बाबू सूरजभान वकील की संगति से आप समाज सेवा में प्रवृत्त हुए। कवि के रूप में उनकी ख्याति दूर-दूर तक फैली। 'जैन प्रचारक,' 'जैन प्रदीप', 'जैन नारी हितकारी' और 'पारस' के सम्पादक के रूप में उन्होंने अपनी लेखनी का परिचय दिया। उन्होंने असहयोग आन्दोलन में भी सक्रिय भाग लिया और स्वतन्त्रता संग्राम के सेनानी बने। उनकी पुस्तकों की संख्या तीस से ऊपर है। 28 मई 1937 को उनका देहान्त हुआ।''

उनकी सभी रचनाओं को एक ग्रन्थावली के रूप में प्रकाशित किया जाना आवश्यक है। आगे के पृष्ठों में हम मूल उर्दू लेख के हिंदी रूपान्तरण के सम्पादित अंश दे रहे हैं। हिन्दी रूपान्तरण में मौ0 उमर, जिल्दसाज, खतौली से हमें सहयोग मिला है, हम उनके आभारी है।

आधार-(1) जै0 जा0 अ0, पृष्ठ-421-428, (2) जै0 स0 रा0 अ0, (3) स0 स0 अनेक पृष्ठ, (4) जैन प्रदीप, 1930 के अंक, जैन प्रदीप, हिन्दी संस्करण के अनेक अंक, (5) श्री कुलभूषण जैन के नाम लिखा, श्री कन्हैया लाल मिश्र प्रभाकर का व्यक्तिगत पत्र, दिनांक 10-10-1994

भगवान् महावीर और महात्मा गांधी

जैनप्रदीप (देवबन्द) के अप्रैल एवं मई-जून 1930 के अंकों में प्रकाशित उर्दू लेख के हिन्दी रूपान्तरण के सम्पादित अंश।

2500 साल पहले की तारीख से पता चलता है कि भारतवर्ष में अंधेरगर्दी थी। जुल्म व सितम का बाजार गर्म था। यह वह जमाना था कि देवी देवताओं के नाम पर खून की नदियां बहाई जाती थीं। देव मन्दिर तक तलघरों का काम देते थे। इनकी दीवारें बेजुवान जानवरों के खून से रंगी हुई दिखलाई देती थीं। घोर हिंसा फैली हुई थी और ऐसे पाप, अत्याचार धर्म के नाम पर, देवी-देवताओं के नाम पर किये जाते थे। तमाम जीव दुखी थे कोई रक्षक नजर नहीं आता था।

इस नाजुक जमाने में श्री महावीर भगवान् का जन्म हुआ। भगवान् ने कहा कि घबराओ नहीं तुम्हारा उद्धार मैं करूँगा। तुम सब बराबर हो, ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य और शूद्र सब इन्सान हैं, सबकी आत्माएं पवित्र हो सकती हैं। सब इन्सान एक बराबर हैं, सब का उद्धार शुद्ध आचरण से ही हो सकता है। क्या बादशाह! क्या रियाया! क्या अमीर! क्या गरीब! क्या विद्वान! क्या मूर्ख! सब ही इन्सान हैं और इन्सानी हैसियत से सब का दर्जा एक है। धर्म ही सच्चाई है। झूठ फरेब हिंसा चोरी जिनाकारी वगैरह पापों का तर्क करके धर्म का पालन करो।.......

भगवान् महावीर के बारे में साधू टी0 एल0 वास्वानी लिखते हैं- "इन महावीर का, जैनियों के इस महापुरुष का चरित्र कितना सुन्दर है वह बादशाही घराने में जन्म लेते हैं और घर को त्याग देते हैं। वह अपना धन गरीबों को दान में दे देते हैं और सन्यासी होकर जंगल में आत्मध्यान और तपस्या के लिए चले जाते हैं। कुछ लोग उन्हें वहां मारते हैं, तकलीफें देते हैं, लेकिन वह शान्त और मौन हैं।"

भगवान् ने कहा कि इंसान मुकम्मिल नहीं है। इसमें बहुत सी कमियां हैं, इसलिये अगर मुझे इस जुल्मोसितम को दुनिया के तख्ते से उठा देना है तो पहिले मुझे आदर्श बनना चाहिए, मुकम्मिल बनना चाहिये, तभी काम होगा। इसलिये बारह साल सख्त रियाजत की और बहुत सी तकलीफों का सामना भी किया और आखिर मुकम्मिल होकर ही छोड़ा। आपने साबित कर दिया कि तशद्दुद को अदम तशद्दुद ही जीत सकता है।

आपने सन्यास लेते वक्त पांच महव्रत लिये थे। 1-अहिंसा, 2- सच बोलना, 3- चोरी नहीं करना, 4- ब्रह्मचर्य का पालन, 5- अपरिग्रही रहना, यानि दुनियां की चीजों में मोह न रखना या यूं कहो कि अपने पास जरूरत से ज्यादा सामान न रखना।

भगवान् महावीर ने केवलज्ञान हासिल करके उपदेश दिये और कहा कि हर एक प्राणी धर्म का पालन कर सकता है, क्या ब्राह्मण! क्या शूद्र! क्या वैश्य! क्या गरीब! क्या राजा! क्या मर्द! क्या औरत! सिर्फ इन्सान ही क्यों बल्कि पशु-पक्षी भी धर्म का पालन कर सकते हैं। धर्म बेजुबान जानवरों और इन्सानों को कत्ल करके यज्ञ करने में नहीं है, बल्कि धर्म तो अहिंसा परम धर्म है। धर्म का स्वरुप "आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्" है। यानि जो अपनी आत्मा अपने जमीर के खिलाफ हो वह दूसरे के लिए हरगिज न करो। जैसे अगर तुम्हें कोई मारता है तो तुम कितना दुःख महसूस करते हो, इस तरह हमारा धर्म है कि हम बेजुबान

जानवरों को कत्ल करने में धर्म न मानें, अगर कोई हमारे सामने झूठ बोलता है तो हम झुंझला उठते हैं, तो हमारा फर्ज है कि हम कभी झूठ न बोलें। वगैरह-वगैरह। अगर कोई हमारी चोरी करता है, तो हमें बहुत रंज होता है, तो हमारा फर्ज है कि हम खुद चोरी न करें। दुश्मनी कभी पापी इन्सान से न करो लेकिन उसके पाप से करो। उस पर दया भाव रखकर उसको समझाओ और अच्छे रास्ते पर लाकर उसके पाप को धो डालो। दूसरे की माता-बहन को अपनी माता-बहन समझो जरूरत से ज्यादा सामान अपने पास मत इकट्ठा करो, गरीब की इमदाद करो, वगैरह–वगैरह।

भगवान् महावीर का उपदेश कितना आला और सुन्दर था। उसका जिक्र करते हुए प्रसिद्ध कवि फरवे कौम रवीन्द्र नाथ टैगोर कहते हैं कि–

Mahavir proclaimed in India the message of salvation; that religion is a reality and not a mere social convention, that salvation comes from taking refuge in that true religion and not observing that external ceremonies of the community; that religion can not regard any barrier between man and man as an external verity, wonderous to relate, this leading rapidly overtopped the barrier of the races abiding instinct, conquered the influence of kshtriya period, now the infleunce of kshtriya teachers completely suppressed the Brahmin power.

भगवान् महावीर ने भारतवर्ष को बा-आवाज बुलन्द मोक्ष का संदेश सुनाया। उन्होंने कहा कि धर्म सिर्फ सामाजिक कराजात में नहीं है बल्कि दर हकीकत सच्चाई है। मोक्ष सिर्फ सामाजिक बाहरी क्रिया कांड से नहीं मिल सकता, लेकिन सच्चे धर्म के स्वरूप का सहारा लेने से मिलता है। धर्म के आगे इन्सान और इन्सान के दरमियान रहने वाले भेदभाव भी खड़े नहीं रह सकते। कहते हुए हैरानी होती है कि महावीर की इस तालीम ने समाज के दिलों पर काबू पा लिया और पहले के खराब संस्कारों से बने हुए भावताब को बहुत जल्द नेस्तनाबूद कर दिया और सारे मुल्क को अपने मती कर लिया।

भगवान् महावीर ने जहां हिंसा को बन्द किया वहां मजहबी इखतलाफात को भी दूर कर स्याद्वाद का उपदेश दिया और कहा कि सत्य अनन्त हैं इसलिए हर एक सिद्धान्त में कुछ न कुछ सच्चाई है, उसको स्याद्वाद की कसौटी पर परखो। साधू टी0एल0 वासवानी कहते हैं–

"अनेकान्त-स्याद्वाद में महावीर ने सिखाया है कि दुनिया का कोई भी एक सिद्धान्त सच्चाई को पूरा-पूरा बयान नहीं कर सकता; क्योंकि सत्य अनन्त हैं हमने अभी कुछ मिसालों में धर्म के नाम से बहस मुवाहिसे और नफरत की वजह से आज तक तकलीफें उठाई हैं। महावीर की वाणी नौजवान लोग सुनें और उनकी हमदर्दी और बराबरी का संदेश गांव-गांव और शहर-शहर ले जायें, अलहदा-अलहदा धर्मों के भेदों और झगड़ों का तसफिया करके वह आध्यात्मिक जीवन के बारे में नई देशभक्ति, नये राष्ट्रीय जीवन को पैदा करें, क्योंकि सत्य इन्तहा (अनन्त) है और धर्म का उद्देश्य फूट और झगड़ा करने का नहीं बल्कि उदारता और प्रेम का पाठ पढ़ाना है।।"

भगवान् महावीर के बारे में महर्षि शिवव्रत लाल जी बर्मन एम0ए0 'साधूनाम' के माहवारी रिसाला, माह जनवरी 1911 में (प्रकाशित) हुए 'महावीर स्वामी के पवित्र जीवन' में फरमाते हैं कि "यह जबरदस्त रिफारमर और जबरदस्त उपकारी बड़े ऊँचे दर्जे के उपदेशक और प्रचारक थे। यह हमारी कौमी तारीख के

रत्न हैं। तुम कहां और किन धर्मात्मा प्राणियों की खोज करते हो, इन्हीं को देखो। उनसे बेहतर साहबे कमाल तुमको और कहां मिलेगें ? इनमें त्याग था, वैराग्य था, धर्म का कमाल था। इन्सानी कमजोरियों से बहुत ही ऊँचे थे। इनका खिताब 'जिन' था। उन्होंने मोह-माया, मन और काया को जीत लिया था। यह तीर्थंकर थे। इनमें बनावट नहीं थी, दिखावट नहीं थी, जो बात थी साफ-साफ थी। यह वह लाशानी शख्सियत हो गुजरी है जिनको इन्सानी कमजोरियों और ऐबों को छिपाने के लिए किसी जाहिरा पोशाक की जरूरत महसूस नहीं हुई क्योंकि उन्होंने तप करके, जप करके, योग का साधन करके, अपने आपको मुकम्मिल और पूर्ण बना लिया था।'' वगैरह........

भगवान् महावीर सब इन्सानों का एक जैसा ख्याल करते थे। क्या ब्राह्मण! क्या शूद्र! क्या क्षत्री! क्या वैश्य! भगवान् महावीर के पैरोकार और चेले सब तबके के लोग थे। इन्द्रभूति वगैरह उनके ग्यारह गणधर ब्राह्मण कुल में से थे, उद्दापन मेघ कुमार वगैरह क्षत्री महावीर के चेले थे, शालिभद्र वगैरह वैश्य और हरीकेशी वगैरह शूद्र ने भी भगवान् की दी हुई पवित्र दीक्षा को हासिल कर ऊँचे पद को हासिल किया था। गृहस्थों में वैशालीपति राजा चेटक, मगध नरेश श्रेणिक और उनका लड़का कोतक वगैरह कई क्षत्री राजा थे। इसीलिए भगवान् उस जमाने की आमफहम भाषा में ही उपदेश दिया करते थे ताकि हर खास-आम धर्म हासिल कर सके। जैन ग्रन्थ भी प्राकृत में लिखे गये थे ताकि सब लोग समझ सकें।

आजकल का जमाना आप सब लोगों के समाने मौजूद है। आज भारतवर्ष में लाखों बेजुबान जानवर मांस खाने के लिए रोज काटे जाते हैं। दूध देने वाली गायों के गलों पर छुरी चलाई जाती है। भारतवर्ष के आदमी भूखों मर रहे हैं, बेकारी की चक्की में दरड़े जा रहे हैं, मौजूदा हुकूमत ने हिन्दुस्तान के तमाम उद्योग हिरफत पर पानी फेर दिया, किसानों पर लगान और सौदागरों पर टैक्स इतना ज्यादा लगा दिया कि लोग टैक्स के बोझ से दबे जा रहे हैं। माल पर टैक्स, गल्ले पर टैक्स, घी-खांड पर टैक्स, दूध-दही पर टैक्स, बर्तन-भाँडे पर टैक्स, कपड़े पर टैक्स, खाने के सामान पर टैक्स, पीने के सामान पर टैक्स, रोटी-पानी पर टैक्स।

यहाँ तक की नमक जैसी कारआमद चीज पर भी टैक्स। इन टैक्सों की ज्यादती से हिन्दुस्तान इस कदर दब गया है कि छह करोड़ हिन्दुस्तानी एक वक्त भी पेट भरकर नहीं खा सकते। कहन (अकाल) जुदा पड़ रहे हैं। बवाई (छूत की बीमारी) इमराज ने जुदा दम पी रक्खे हैं। आमदनी का यह हाल है कि हिन्दुस्तान की मजमुई आमदनी फीकस छह-सात पैसे दैनिक होती है, जिससे एक आदमी एक वक्त पेट भरकर रोटी नहीं खा सकता, फिर हिन्दुस्तानियों के सर पर साठ लाख मुफ्तखोर फकीरों का भार, जिनकी वजह से पन्द्रह लाख रुपया रोज इन गरीबों की पाकिट से निकलता है। यह सब होते हुए भी हिन्दुस्तान की हिफाजत के नाम पर फौज का करोड़ों रुपयों का खर्च। एक अंग्रेज की तनख्वाह हिन्दुस्तानी से कई गुनी ज्यादा।

गरीब किसान गर्मी-सर्दी की सदा तकलीफ उठाकर कड़कती धूप में बदन को जलाकर रात दिन जाग-जाग कर भूखा प्यासा रहकर जो कुछ जिन्स पैदा करता है उसका ज्यादातर हिस्सा तो लगान की नजर कर देता है। बाकी बचे-खुचे में कर्ज की अदायगी और दीगर लोगों की नजर नियाज का भुगतान। इस बेचारे पर क्या बचता है, यह मालूम करना हो तो गांव में जाकर मालूम करो। जहाँ देखोगे कि गरीब किसान के चूल्हे पर बर्तन नहीं, छान पर फूँस नहीं, तन को कपड़ा नहीं और पेट को पेटभर रोटी नहीं। लेकिन यह सब कुछ होते हुए भी हुकूमत के कानों पर जूं तक नहीं रेंगती। अगर कोई अपनी मुसीबत का रोना हुकूमत के आगे

रोता है, भूख-प्यास का सवाल पेश करता है, तो बिना पूँछ-प्रतीत किये जेल में ठूंस दिया जाता है। अगर ज्यादा शोर मचाता है तो ठोकरें मारकर गिरा दिया जाता है, सच है–

न तड़पने की इजाजत है न फरियाद की है।
घुट के मर जाऊँ यह मर्जी मेरे सैय्याद की है।।

बेकारी का रोना कहां तक रोया जाय, न कोई तिजारत है, न धंधा, जिसको देखो वह ही बेकारी का शाकी है, मुफलिसी का शिकार, फिर ऐसी हालत में क्या किया जाये, कहां जाया जाये, ऐसे वक्त में कौन संभाल करेगा ? हमको तो गरीबी की वजह से अपना प्यारा धर्म भी छोड़ना पड़ रहा है। लाखों भारतवर्ष के लाल ईसाइयों की गोद में चले जा रहे हैं। हा भगवान! न हम दीन के रहे और न दुनियां के।

एक सदी में सारी दुनियां की लड़ाई में जितने इन्सान मर सकते हैं। इससे बहुत ज्यादा सिर्फ हमारे देश के अन्दर दस साल में भूख की वजह से मर जाते हैं। यह कितना बड़ा गजब है जो आला खानदान की औरतें हैं वह घर की चाहर दीवार के अन्दर भूख के मारे तड़फ कर प्राण पहले ही दे देती हैं, लेकिन किसी के आगे हाथ नहीं पसार सकतीं।

अब ऐसी हालत में हमारा उद्धार कौन करेगा, हमारी मुसीबतों का खात्मा किस आत्मा के जरिये होगा और हमको आजादी कौन दिलायेगा ? बस यह एक सवाल हिन्दुस्तानियों के रूबरू आता है कि फौरीं ही एक महान् आत्मा यानि महात्मा गांधी जी का जहूर होता है, बैरिस्टरी पास कर लेने के बाद आपको एक महान् जैन विद्वान् कवि रायचन्द्र जी शतावधानी की सोहबत मिलती है और आप आत्मबल प्राप्त करके कहते हैं कि हिन्दुस्तान की मुसीबतों का खात्मा मैं करूँगा और मैं ही मुल्क को आजादी दिलाऊँगा, इस काम में मैं अपने को हर तरह से कुर्बान करूँगा। चूंकि सब इन्सान एक बराबर हैं, वह गोरे हों या काले, ब्राह्मण हों या शूद्र, छूत हों या अछूत, गरीब हों या अमीर, गर्ज सब कोई हक बराबर है, इन्सानी दर्जा एक है, एक को क्या हक है कि जब छह करोड़ हिन्दुस्तानी भर पेट खाना भी नहीं खा सकते, तो वह लाखों रुपया सालाना ऐसे गरीब देश से तनखाह के नाम से वसूल करे। यह अजीब तमाशा है कि घर वाले घर से बाहर मारे-मारे फिरें और दूसरे लोग बड़े-बड़े महलों में ऐशो आराम की जिन्दगी गुजारें।

महात्मा जी अपनी डायरी में तहरीर फरमाते हैं कि "सबसे ज्यादा सन्तोष तो मुझे कवि रायचन्द्र भाई के लेक्चरों से ही मिला है। उनके मजामीन मेरे ख्याल से सबके लिये मुफीद हैं। उनका चाल चलन टालस्टाय की तरह आला दर्जे का था।"

महात्मा गांधी फिर कहते हैं कि "मुझ पर तीन महापुरुषों ने गहरी छाप डाली है। टालस्टाय, रस्किन और रायचन्द्र भाई। टालस्टाय ने अपनी एक किताब व कुछ खतों किताबत से, रस्किन ने 'अन्टु दि लास्ट' किताब, जिसका नाम मैनें गुजराती में 'सर्वोदय' रखा है, से और रायचन्द्र भाई से तो मेरा बहुत संबंध हो गया था। जब 1897 ई० में मैं जनूबी अफरीका में था तब मुझको चन्द ईसाई लोगों के साथ अपने कामकाज की वजह से मिलना होता था। वह लोग बहुत साफ रहते थे और धर्मात्मा थे। दूसरे धर्म वालों को ईसाई बनाना ही इनका काम था। मुझे भी ईसाई बन जाने के लिये कहा गया, लेकिन मैंने अपने दिल में पक्का इरादा कर लिया कि जब तक हिन्दू धर्म को न समझ लूँ, तब तक बाप-दादा के धर्म को नहीं छोडूंगा। हिन्दू धर्म पर

मुझको बहुत शकूक पैदा हो चुके थे। मैंने रायचन्द्र भाई से खतो-किताबत शुरू की। उन्होंने मेरे तमाम शकूक रफै कर दिये। जिससे मुझको शान्ति हासिल हुई और हिन्दू धर्म की फिलासफी पर मेरा और दृढ़ श्रद्धान हो गया और मैंने समझा कि सिर्फ हिन्दू धर्म ही एक ऐसा धर्म है जो शान्ति देने वाला है। इस वाकफियत के जरिये रायचन्द्र भाई थे। इसलिए रायचन्द्र भाई में और भी विश्वास बढ़ गया।''

भारतवर्ष की दुर्गति देखकर महात्मा गांधी ने अपने जीवन का लक्ष्य पांच व्रत बनाये जो कि भगवान् महावीर ने धारण किये थे। उन पर अमल करना शुरू किया यानि अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह। आज महात्मा जी अहिंसा, अदमतशदुद सत्याग्रह से अपने देश को हुकूमत की ज्यादतियों के नीचे से निकालने को तैयार हुए हैं, जिस तरह भगवान् महावीर ने उस जमाने के जानदारों को छुड़ाया था। महात्मा जी हमेशा सच बोलते हैं, इसका सबूत उनकी खुद की डायरी से मिल रहा है। महात्मा जी चोरी नहीं करते और शीलवान भी आप अरसे दराज से हैं; अपरिग्रही तो आप इस कदर हैं कि सिर्फ एक लंगोट के सिवाय और कुछ भी कपड़ा नहीं पहनते।

कई लोगों का कहना है कि अहिंसा कायरों और बुजदिलों का धर्म है। अहिंसा इन्सान को बुजदिल व डरपोक बना देती है, जिनमें से लाला लाजपतराय जी मरहूम एक शख्स थे, लेकिन आज महात्मा जी ने भगवान् महावीर की अहिंसा का सिंहनाद दुनियां के हर एक कोने में बजा दिया है और साबित करके दिखला दिया है कि अहिंसा धर्म बहादुरों व बेखोफ लोगों और धर्म पर कुर्बान हो जाने वाले परवानों का धर्म है। अहिंसा धर्म के जरिये से जबरदस्त से जबरदस्त मजालिम भी दूर हो जाते हैं।

आज महात्मा जी ने पन्द्रह साल साबरमती आश्रम में तपस्या करने के बाद अहिंसा धर्म का सुदर्शन चक्र लेकर हुकूमत के साथ टक्कर खाने की ठानी है। अहिंसा धर्म बुजदिली सिखाता है या बेखोफी और बहादुरी, यह आज कोई महात्मा गांधी से दरयाफ्त कर सकता है। आज महात्मा जी का त्याग और तप महावीर भगवान् के राजपाट के त्याग का नजारा फिर आंखों के सामने लाकर खड़ा कर देता है। जिस तरह भगवान् महावीर नंगे पांव, नंगे सर और नंगे जिस्म पैदल विहार करते थे आज इसी तरह महात्मा जी भी कूच कर रहे हैं। आज महात्मा जी की इस जबरदस्त हुकूमत के साथ टक्कर लेना भगवान् महावीर के उस जमाने की याद दिलाये बगैर नहीं रह सकती जबकि हिंसा के खिलाफ भगवान् महावीर ने बड़ी जबरदस्त टक्कर ली थी।

आज कई लोग फरमाते हैं कि महात्मा जी की हुकूमत पर चढ़ाई ऐसी है, जैसे कि रामचन्द्र जी की रावण पर, और कृष्ण जी की कौरवों पर, लेकिन नहीं! यह बिल्कुल गलत है। उन दोनों की जंग में खून की नदियाँ बह गईं थीं, लेकिन महात्मा गांधी प्रेम, अहिंसा, अदमतशदुद और सत्याग्रह के हथियार से लड़ाई लड़ रहे हैं,–'इस सादगी पै कौन न मर जाये ऐ खुदा। लड़ते हैं मगर हाथ में तलवार भी नहीं।' इसी तरह से आज से तकरीबन अढ़ाई हजार साल पहले भगवान् महावीर भी अहिंसा, प्रेम वगैरह के हथियार लेकर सामने डटे थे।

महात्मा जी ने जो एल्टीमेटम वायसराय हिन्द को दिया है, वह एक अंग्रेज के हाथ भेजा गया था। वह इसलिए कि मेरी दुश्मनी किसी अंग्रेज से नहीं है, बल्कि उन मुजालिमों से है जो हिन्दुस्तानियों को तहबोवाला (छोटी बड़ी) कर रहे हैं। मेरे नजदीक तो अंग्रेज भी मेरे ऐसे भाई हैं कि जैसे हिन्दुस्तानी।

जिस तरह भगवान् महावीर नशीली चीजों के खिलाफ थे इसी तरह से आज महात्मा जी भी शराब, भंग, सिगरेट वगैरह के खिलाफ हैं और इनके बायकाट पर पूरा जोर लगा रहे हैं। महात्मा गांधी अछूत अद्धार के उतने ही जबरदस्त और कट्टर हामी हैं कि जैसे भगवान् महावीर थे। भगवान् महावीर जिस तरह हर तबके के इन्सान को एक जैसा ख्याल करते थे वैसे ही महात्मा गांधी भी करते हैं, जिसका जिन्दा सबूत यह है कि महात्मा जी ने एक शूद्र लड़की लक्ष्मीबाई को अपनी लड़की बनाया है। महात्मा जी सबसे पहले आत्मशुद्धि करके मैदान में निकले हैं।

महात्मा गांधी सब इन्सानों को एक जैसा ख्याल करते हैं। क्या ब्राह्मण! क्या शूद्र! क्या क्षत्री! क्या वैश्य! क्या हिन्दू! क्या मुसलमान! क्या हिन्दुस्तानी! और क्या अंग्रेज, महात्मा गांधी के सावरमती आश्रम में ब्राह्मण-क्षत्री-वैश्य-शूद्र, मुसलमान, फारसी, ईसाई, अंग्रेज, गरज हर एक तबका के लोग रहते हैं। किसी से कोई नफरत नहीं की जाती। एक अमरीकन लेडी जिसका नाम महात्मा गांधी ने 'मीरा बहिन' रक्खा है, आश्रम में महात्मा जी के साथ रहती है और भी कई अंग्रेज लोग रहते हैं, जो कि महात्मा गांधी के बड़े भगत हैं।

जैसे भगवान् महावीर ने हर तरह के कष्ट सहन किये थे, लेकिन क्या मजाल जो उफ की हो, इसी तरह महात्मा जी भी अदमतशदुद से काम ले रहे हैं। चाहे हुकूमत कैद करे, पांव तले कुचले, लेकिन हम अपना हाथ बदला लेने के लिए नहीं उठायेंगे।

दरअसल देखा जाये तो महात्मा गांधी के अन्दर भगवान् महावीर के जीवन की सच्ची झलक दिखाई दे रही है। महात्मा जी को मेरे ख्याल से अगर भगवान् महावीर का पक्का भगत कहा जाये तो बिल्कुल बजा और दुरुस्त है। अगर जैन धर्म का मर्म समझा है, तो महात्मा गांधी ने समझा है। भगवान् महावीर की सन्तान कहलाने वालो! अहिंसा धर्म की डींग मारने वालो! महावीर के पुजारी बनने वालो! मन, वचन, काय धर्म को पालने का ठेका लेने वालो! और भगवान् महावीर की जै-जैकार बोलने वालो! क्या तुम अपने ठण्डे दिल से अपने सीने पर हाथ रखकर बतला सकते हो कि क्या तुम भगवान् महावीर के सच्चे भक्त कहलाने के मुस्तहक हो ? मैं तो कहूँगा कि हरगिज भी नहीं । तुम्हारा फर्ज था कि सबसे पहले इन मजालियों को दूर कराने में, मुल्क को निजात दिलाने में और छह करोड़ भाईयों को भूख से मरते हुये बचाने में, आप खुद को खतरों में डालकर मैदाने अमल में आन उतरते। लेकिन अफसोस, कि तुम्हारे कान पर जूं भी नहीं रेंगी।

भगवान् महावीर का नाम ले लेना बहुत आसान है, मन्दिर में जाकर पूजा कर लेना भी बहुत सरल है। लेकिन कभी आपने इस पूजा के राज को भी समझा है ? अगर आप पहले कुछ नहीं कर सके, तो अब महात्मा गांधी जी का साथ दें और दुनियां को दिखला दें कि अहिंसा धर्म के मायने बुजदिली नहीं है, बल्कि सच्ची बहादुरी और वीरता का नाम अहिंसा है। अगर अब भी आपने दुनियां के साथ चलना न सीखा और अगर अब भी आपने अपनी पुरानी और दकियानूसी रफ्तार को न बदला तो मैं पुरजोर अलफाज से कहे देता हूँ कि आप इन सफाहहस्ती से मिट जायेंगे और आपका ढूंढे से भी पता न चलेगा। लिहाजा जागो! समझो! और काम करना सीखो।

❑❑❑

सन्दर्भ ग्रन्थ-सूची

प्रस्तुत सूची में प्रविष्टियों का क्रम इस प्रकार है। पुस्तक/पत्र-पत्रिका का नाम, लेखक/ सम्पादक, प्रकाशक, प्रकाशन स्थान, संस्करण, संस्करण वर्ष। संकेत निम्न प्रकार हैं। अनु0-अनुवादक, ले0-लेखक, सम्पा0-सम्पादक, प्रका0-प्रकाशक, सं0-संस्करण।

1. अचल चरित्र, सम्पा0-सूरजभान जैन 'प्रेम', प्रका0-सेठ जीवन परिचय, प्रकाशन समिति, आगरा, प्रथम 1958
2. अचल सिंह अभिनन्दन ग्रन्थ, सम्पा0-प्रतापचन्द जैसवाल (पत्रकार), प्रका0-सेठ अचल सिंह अभिनन्दन ग्रन्थ समिति, आगरा, 1974
3. अमर चंद बाँठिया, प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम के अमर शहीद, ले0-सूरजराज धाडीवाल, बाँठिया फाउन्डेशन, कानपुर, 1986
4. अमर जैन शहीद, डॉ0 कपूरचंद जैन एवम् डॉ0 (श्रीमती) ज्योति जैन, श्री कैलाशचंद जैन स्मृति न्यास, खतौली-251201 (उ0 प्र0), प्रथम, 1998
5. अमृत पुत्र, ले0-रतनलाल जोशी, प्रका0-रतनमणि ट्रस्ट, उद्बोधक ग्रन्थमाला, ए 303, पराडकर भवन, गांव देवी रोड, भायन्दर (पं0) (थाणे, महाराष्ट्र) पिन-401101
6. अर्जुन लाल सेठी, डॉ0 विष्णु पंकज, राजस्थान प्रकाशन, त्रिपोलिया बाजार, जयपुर, प्रथम, 1989
7. आजादी के दीवाने (सागर जिले के स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी) प्रकाशक-जिला सहकारी संघ मर्यादित, सागर (म0प्र0), 1988
8. आधुनिक जैन कवि : चेतना के स्वर, सम्पा0-जुगल किशोर 'युगल', प्रका0- अखिल भारतीय जैन युवा फेडरेशन, शाखा - कोटा (राज0), 1986
9. इतिहास की अमर बेल ओसवाल (प्रथम खण्ड), ले0-मांगीलाल भूतोडिया, प्रियदर्शी प्रकाशन, कलकत्ता, 1988
10. इतिहास की अमर बेल ओसवाल (द्वितीय खण्ड), ले0-मांगीलाल भूतोडिया, प्रियदर्शी प्रकाशन, कलकत्ता, 1992
11. उत्तर प्रदेश और जैन धर्म, सम्पा0-डॉ0 ज्योति प्रसाद जैन, लखनऊ, 1976
12. कर्तव्य पथ प्रदर्शन, आचार्य ज्ञानसागर जी महाराज, प्रका0-शैली श्री पार्श्वनाथ दि0 जैन मंदिर, सब्जी मण्डी, देहली-110007, द्वितीय संस्करण, 1993
13. क्रान्ति कथायें, ले0-श्रीकृष्ण सरल, प्रका0-बलिदान भारती, 18, दशहरा मैदान, उज्जैन (म0प्र0), 1985
14. क्रान्तिकारी आन्दोलन का वैचारिक इतिहास, मन्मथनाथ गुप्त, निधि प्रकाशन, दिल्ली, 1980
15. क्रान्तिवीर हुतात्मा मोतीचन्द, ले0-ब्र0 माणिकचन्द जयकुमार चंवरे, प्रका0-मा0 ज0 भीसीकर, सन्मति प्रकाशन, बाहुबली (कोल्हापुर), 1994

16. श्री कुसुमकान्त जैन : व्यक्तित्व एवम् जीवन संघर्ष, श्री कुसुमकान्त जैन अभिनन्दन समिति, 13 (एल0एफ0) कालेज रोड, नयी दिल्ली, 1989
17. खण्डेलवाल जैन समाज का वृहद् इतिहास, सम्पा0- डॉ0 कस्तूरचन्द कासलीवाल, जैन इतिहास प्रकाशन संस्थान, जयपुर, 1989
18. खारवेल प्रशस्ति : पुनर्मूल्यांकन, चन्द्रकांतबाली शास्त्री, प्रतिभा प्रकाशन, दिल्ली-7, 1988
19. गणेश प्रसाद वर्णी स्मृति ग्रन्थ, प्रका0-भारतवर्षीय दि0 जैन विद्वत् परिषद्, 1974
20. श्री गोर्धनदास जैन अभिनन्दन ग्रंथ, सम्पा0-डॉ0 विश्वम्भर शरण आदि, प्रका0-श्री गोर्धनदास जैन स्वतंत्रता संग्राम सेनानी अभिनन्दन समारोह समिति, आगरा, 1996
21. गोलापूर्व जैन समाज : इतिहास एवं सर्वेक्षण, सम्पा0-सुरेन्द्र कुमार जैन, प्रका0-पारस शोध संस्थान, वर्णी वाचनालय भवन, कटरा बाजार, सागर (म0प्र0), प्रथम-1996
22. गोलालारे जैन जाति का इतिहास, रामजीत जैन एडवोकेट, प्रका0-वीरसैन जैन सर्राफ, सदर बाजार, भिण्ड (म0प्र0), प्रथम, 1995
23. चिंतन सुधा, सम्पा0-लालचन्द चोरडिया, मालव लोक संस्कृति अनुष्ठान, मनासा (म0प्र0), 1992
24. जयपुर दर्शन, प्रका0-जयपुर अढाई शती समारोह समिति, नगर विकास-न्यास परिसर, जवाहर लाल नेहरू मार्ग, जयपुर, प्रथम संस्करण, 1978
25. जिन खोजा तिन पाइयाँ, अयोध्या प्रसाद गोयलीय, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नयी दिल्ली, चतुर्थ संस्करण, 1966
26. जैन कला एवं स्थापत्य, खण्ड-1, सम्पा0-अमलानंद घोष, भारतीय ज्ञानपीठ, नयी दिल्ली, 1975
27. जैन जागरण के अग्रदूत, अयोध्या प्रसाद गोयलीय, भारतीय ज्ञानपीठ, काशी, 1952
28. जैन ज्योति ऐतिहासिक व्यक्तिकोश, प्रथम खण्ड (अ-अं), सम्पा0-डॉ0 ज्योति प्रसाद जैन, ज्ञानदीप प्रकाशन, लखनऊ, 1988
29 जैनधर्म, पं0 कैलाशचन्द्र शास्त्री, भारतवर्षीय दि0 जैन संघ, मथुरा (उ0प्र0), षष्ठम, 1985
30. जैनधर्म और दर्शन, मुनि श्री प्रमाणसागर, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली, प्रथम 1996
31. जैन संस्कृति और राजस्थान, सम्पा0-डॉ0 नरेन्द्र भानावत, प्रका0-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, बापू बाजार, जयपुर-302003, 1975-76
32. जैन समाज का वृहद् इतिहास (प्रथम खण्ड), ले0-डॉ0 कस्तूरचन्द कासलीवाल, जैन इतिहास प्रकाशन संस्थान, जयपुर, 1992
33. जैन समाज वर्धा के सौ वर्ष (1895-1995), लेखक सम्पादक-श्री जमनालाल जैन, प्रकाशक-अध्यक्ष श्री दिगम्बर जैन बोर्डिंग हाऊस, वर्धा (महाराष्ट्र), 1995
34. जैन साहित्य और इतिहास : पूर्व पीठिका, पं0 कैलाशचन्द्र शास्त्री, श्री गणेश वर्णी जैन ग्रन्थमाला, वाराणसी (उ0प्र0), प्रथम, वीर निर्वाण संवत् 2489

35. जैसवाल जैन इतिहास, ले0-रामजीत जैन 'एडवोकेट', जैसवाल जैन समाज, ग्वालियर, 1988
36. जैसवाल जैन, एक युग : एक प्रतीक, सम्पा0- श्री अशोक कुमार आदि, अलंकार प्रकाशन, 3611 सुभाष मार्ग, दरियागंज, नयी दिल्ली-2, 1993
37. श्री तख्तमल जैन स्मृति ग्रन्थ, प्रकाशक-स्व0 बाबू तख्तमल जैन अभ्यर्थना समारोह समिति, सम्राट् अशोक आभियांत्रिकीय महाविद्यालय, विदिशा (म0प्र0), 1992
38. श्री दिगम्बर जैन खरौआ समाज का इतिहास, लेखक-रामजीत जैन एडवोकेट, गयेलिया जैन धर्मार्थ ट्रस्ट, ग्वालियर, 1990
39. श्री दि0 जैन वरैया समाज, ले0-रामजीत जैन, मै0 लालमणि प्रसाद जैन एण्ड सन्स, ग्वालियर, 1987
40. दिवंगत हिन्दी-सेवी (प्रथम खण्ड), ले0-क्षेमचन्द्र 'सुमन', शकुन प्रकाशन, नयी दिल्ली, 1981
41. दिवंगत हिन्दी सेवी (द्वितीय खण्ड), ले0-क्षेमचन्द्र 'सुमन', शकुन प्रकाशन, नयी दिल्ली, 1983
42. दिल्ली के स्वतन्त्रता सेनानी, भाग-2, सम्पा0-डॉ0 श्रीमती मालती शर्मा (हिन्दी संस्करण) गजेटियर यूनिट, दिल्ली प्रशासन, दिल्ली
43. धरती गाती है, ले0-महाकवि शान्ति स्वरूप 'कुसुम', प्रका0-तरुण प्रकाशन, शान्ति निकेतन, एच-218, शास्त्री नगर, मेरठ-250004, 1992,
44. धर्म का आदि प्रवर्तक, स्वामी कर्मानन्द, प्रका0-भा0 दि0 जैन संघ, अम्बाला छावनी, 1940
45. धर्मचन्द सरावगी, सम्पा0-दीपचंद नाहटा, प्रका0-श्री धर्मचन्द सरावगी अभिनन्दन समिति, श्री जैन सभा, 7 शम्भू मल्लिक लेन, कलकत्ता-7, 1986
46. नरेन्द्र कुमार जैन अभिनन्दन ग्रन्थ, प्रका0-भगवान् महावीर बाल संस्कार केन्द्र, टीकमगढ़ (म0प्र0), 472001, 1983
47. नैतिक जीवन दर्पण, सेठ अचल सिंह, प्रका0-नैतिक नागरिक संघ, आगरा
48. पंडित जगन्मोहन लाल शास्त्री साधुवाद ग्रन्थ, प्रका0-पं0 जगन्मोहन लाल शास्त्री साधुवाद समिति, जैन केन्द्र, रीवां (म0प्र0), 1989
49. पंडित फूलचन्द्र शास्त्री अभिनन्दन ग्रंथ, प्रका0-सिद्धान्ताचार्य पं0 फूलचन्द्र शास्त्री अभिनन्दन ग्रंथ प्रकाशन समिति, वाराणसी
50. पन्ना धाय, ले0-क्षमा शर्मा, प्रकाशन विभाग, सूचना एवं प्रसारण मन्त्रालय, भारत सरकार, नयी दिल्ली, 1993
51. परवार जैन समाज का इतिहास, सम्पा0-सिद्धान्ताचार्य पं0 फूलचन्द्र शास्त्री, श्री भारतवर्षीय दि0 जैन परवार सभा, 1992
52. प्रमुख ऐतिहासिक जैन पुरुष और महिलायें, ले0-डॉ0 ज्योतिप्रसाद जैन, भारतीय ज्ञानपीठ, नयी दिल्ली, 1975
53. प्रेमी अभिनन्दन ग्रंथ, प्रका0-श्री यशपाल जैन, मंत्री-प्रेमी अभिनन्दन ग्रंथ समिति, टीकमगढ़ (म0प्र0), 1946

54. पल्लीवाल जैन जाति का इतिहास, लेखक-डॉ0 अनिल कुमार जैन, श्री पल्लीवाल इतिहास समिति, अलवर (राज0), 1988

55. पीयूष कलश (काव्य संकलन), ले0-सुन्दर देवी जैन, प्रका0-लोक चेतना प्रकाशन, जबलपुर (म0प्र0), 1978

56. पुरुदेवचम्पू का आलोचनात्मक परिशीलन, डॉ0 कपूरचंद जैन, परिमल पब्लिकेशन्स, दिल्ली, प्रथम 1985

57. बन्दीनामा, भाग एक से तीन, श्री फूलचंद जैन, कन्सेप्ट पब्लिशिंग कम्पनी, नई दिल्ली, प्रथम, 1998

58. श्री बाबूलाल पाटोदी : अंतरंग ग्रन्थ (पचहत्तर बरस पूर्ति प्रसंग), 1995, प्रका0- श्री बाबूलाल पाटोदी : अमृत महोत्सव समिति, पाटोदी परिवार, 70/3, मल्हारगंज, इन्दौर (म0प्र0), 1995

59. बुन्देलखंड में स्थित देवरी (सागर) के साहित्यकारों का साहित्यानुशीलन, डॉ0 मनीषा जैन, डॉ0 हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर की पी एच0डी0 उपाधि हेतु स्वीकृत अप्रकाशित शोध प्रबंध, 1992

60. ब्यावर (भारत जैन महामण्डल के इकतालीसवें अधिवेशन पर प्रकाशित संक्षिप्त परिचय पुस्तिका), प्रका0-जैन प्रकाशन, ब्यावर (राजस्थान), 1971

61. भगवान् महावीर स्मृति ग्रन्थ, सम्पा0-डॉ0 ज्योति प्रसाद जैन, श्री महावीर निर्वाण समिति, उत्तर प्रदेश, लखनऊ, 1975

62. भगवान् महावीर स्वामी की विश्व को देन, सम्पा0-आचार्य देशभूषण जी महाराज, प्रका0-शान्ति रोडवेज, 5, नवाब लेन, कलकत्ता

63. श्रीमद्भागवतपुराण, गीता प्रेस, गोरखपुर (उ0प्र0)

64. भारत का राष्ट्रीय आन्दोलन एवं संवैधानिक विकास, डॉ0 के0 सी0 जैन, श्री पब्लिशिंग हाउस, नयी दिल्ली, 1990

65. भारत का संवैधानिक विकास और स्वाधीनता संघर्ष, डॉ0 सुभाष कश्यप, रिसर्च, दिल्ली, 1972

66. भारत का स्वाधीनता आन्दोलन (भाग 2) ले0-आचार्य दीपंकर, प्रका0-जनमत प्रकाशन, मेरठ

67. भारत छोड़ो आन्दोलन, शंकर दयाल सिंह, प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मन्त्रालय, भारत सरकार, नयी दिल्ली, तृतीय 1992

68. भारत में अंग्रेजी राज, प्रथम खण्ड, लेखक-पं0 सुन्दर लाल, प्रका0-प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मन्त्रालय, भारत सरकार, नयी दिल्ली, 1967

69. भारत में अंग्रेजी राज, द्वितीय खण्ड, लेखक-पं0 सुन्दर लाल, प्रका0-प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मन्त्रालय, भारत सरकार, नयी दिल्ली, 1970

70. भारत में न्यायिक पुनरावलोकन, डॉ0 (श्रीमती) ज्योति जैन, राधा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, प्रथम, 1888

71. भारत में स्वतन्त्रता आन्दोलन का इतिहास, डॉ0 पुखराज जैन, साहित्य भवन, आगरा, 1995

72. भारतना स्वातन्त्र्य संग्रामो अने तेना लडवैयाओ (गुजराती), ले0-डॉ0 मंगुभाई रा0 पटेल, यूनिवर्सिटी ग्रन्थ निर्माण बोर्ड, गुजरात राज्य, अहमदाबाद, तृतीय संस्करण, 1994

73. भारतीय इतिहास : एक दृष्टि, डॉ0 ज्योति प्रसाद जैन, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नयी दिल्ली, 1966
74. भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन का इतिहास, भाग-2, ले0-ताराचन्द, अनु0-मन्मथनाथ गुप्त, प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मन्त्रालय, भारत सरकार, नयी दिल्ली, 1969, पुनर्मुद्रण, 1982
75. भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन का इतिहास, भाग-4, ले0-डॉ0 ताराचंद, प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मन्त्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली, संस्करण-1984
76. भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन का इतिहास (1857-1947), डॉ0 ब्रजभूषण, पूनम प्रकाशन, दिल्ली, 1992
77. भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन का इतिहास, डॉ0 शंकर बसन्त मुद्गल, चन्द्रलोक प्रकाशन, कानपुर, 1989
78. मध्यप्रदेश के स्वतन्त्रता संग्राम सैनिक, खण्ड I (जबलपुर संभाग), सूचना तथा प्रकाशन संचालनालय मध्यप्रदेश, भोपाल, 1978
79. मध्यप्रदेश के स्वतन्त्रता संग्राम सैनिक, खण्ड-II, (सागर संभाग), भाषा संचालनालय मध्यप्रदेश, भोपाल, 1983
80. मध्यप्रदेश के स्वतन्त्रता संग्राम सैनिक, खण्ड III (रायपुर, बिलासपुर, बस्तर संभाग) भाषा संचालनालय, संस्कृति विभाग, मध्यप्रदेश, भोपाल, 1984
81. मध्यप्रदेश के स्वतन्त्रता संग्राम सैनिक, खण्ड-चतुर्थ, (इन्दौर, उज्जैन, ग्वालियर संभाग), भाषा संचालनालय, संस्कृति विभाग, मध्यप्रदेश, भोपाल, 1984
82. मध्यप्रदेश के स्वतन्त्रता संग्राम सैनिक, खण्ड-पंचम (रीवां भोपाल, होशंगाबाद संभाग), भाषा संचालनालय, संस्कृति विभाग, मध्यप्रदेश, भोपाल, 1984
83. मध्यप्रदेश स्वतन्त्रता संग्राम सैनिक संघ के चौंतीस साल, ले0-रतनचन्द जैन, श्रीपाल प्रिन्टर्स, जबलपुर (म0प्र0), 1990
84. भारतीय स्वातंत्र्यालढ्यातील जैनांचे योगदान (मराठी), प्रकाशिका-सौ0 शरयू दफ्तरी, सम्पादिका-जैन बोधक, मुम्बई, 1999
85. मन्दसौर जिले में स्वतन्त्रता संग्राम, डॉ0 पूरन सहगल, प्रका0-मानव लोक संस्कृति अनुष्ठान, मनासा, जिला-मन्दसौर (म0प्र0), 1987
86. महिलायें और स्वराज्य, आशा रानी व्होरा, सूचना और प्रसारण मन्त्रालय, भारत सरकार, नयी दिल्ली, 1988
87. भैया मिश्रीलाल गंगवाल स्मृति ग्रन्थ, प्रका0-भगवान् महावीर बाल संस्कार केन्द्र, टीकमगढ़ (म0प्र0), प्रथम, 1998
88. मेरे बापू, श्री तन्मय बुखारिया, भारतीय ज्ञानपीठ, काशी, 1951
89. मेरे साथी, महात्मा भगवानदीन, भारत जैन महामण्डल, वर्धा, 1952
90. मौर्य साम्राज्य के जैन वीर, श्री अयोध्याप्रसाद, गोयलीय 'दास', प्रका0-जैन मित्र मण्डल, धर्मपुरा, देहली, 1932

91. ये अनमोल बोल, भेंट स्वरूप प्रकाशन, पद्मश्री वीरेन्द्र प्रभाकर, सी-11/32, बापानगर, नयी दिल्ली-3, 1991

92. रजत-नीराजना, सम्पा0- डॉ0 परशुराम शुक्ल विरही, प्रका0-हरिनारायण चौबे, अध्यक्ष, नगर पालिका, ललितपुर (उ0प्र0), स्वाधीनता रजत जयंती वर्ष (1972)

93. रतन लाल मालवीय स्मृति ग्रंथ, सम्पा0-श्रीमती सुधा पटोरिया, श्री राजेन्द्र पटोरिया, प्रका0-मालवीय ग्रन्थ प्रकाशन समिति, ओ-1, आर0 एच0-4, 9, सी बी डी, बेलापुर, न्यू बाम्बे-400614, प्रथम, 1991

94 श्रीमद् राजचन्द्र (मूल गुजराती से हिन्दी अनुवाद), श्री हंसराज जैन, श्रीमद् राजचन्द्र आश्रम, अगास (गुजरात), तृतीय, 1991

95. राजपूताने के जैन वीर, श्री अयोध्या प्रसाद गोयलीय 'दास', प्रका0-हिन्दी विद्या मन्दिर, पहाड़ी धीरज, देहली, 1933

95. राजस्थान में स्वतन्त्रता संग्राम, ले0-बी0 एल0 पानगडिया, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर (राजस्थान), 1988

96. राजस्थान में स्वतन्त्रता संग्राम के सेनानी, सुमनेश जोशी, टीपू सुल्तान, प्रका0-ग्रन्थागार, नारनोली भवन, सांगानेरी गेट, जयपुर-3, 1973

97. राजस्थान में स्वतन्त्रता संघर्ष, सम्पादक-जहूर खाँ मेहर, प्रका0-जगदीश सिंह गहलोत शोध संस्थान, जगदीश सिंह गहलोत मार्ग, मेड़ती दरवाजा, जोधपुर, प्रथम, 1991

98. राजस्थानी आजादी के दीवाने, ले0-हरिप्रसाद अग्रवाल, प्रताप प्रकाशन, श्यामजी कृष्ण वर्मा पुस्तकालय, महादेव जी की छत्री, व्यावर (राजस्थान), प्रथम, 1951

99. श्री रायचंद नागड़ा पुण्य स्मरण (स्मारिका), सम्पा0 डॉ0 श्रीराम परिहार, प्रका0-स्व0 रायचंद नागड़ा श्रद्धा समिति, 19 म0 गा0 मार्ग, खण्डवा (म0प्र0), 1993

100. लबेंचू समाज, 1993 (अ0 भा0 दि0 जैन लबेंचू समाज का पारिवारिक दर्पण), सम्पा0-लबेंचू जनगणना 1993 समिति, 32, सदर बाजार, भिण्ड (म0प्र0)

101. लाला लाजपत राय, (जीवनी तथा कार्य), ले0-फिरोज चन्द, प्रका0-प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मन्त्रालय, भारत सरकार, नयी दिल्ली, 1987

102. लाला लाजपत राय, ले0-डॉ0 भवान सिंह राणा, भारतीय ग्रन्थ निकेतन, 2713, कूचा चेलान, दरियागंज, नयी दिल्ली-110002, 1988

103. लाला लाजपत राय, ले0-मुकुट बिहारी वर्मा, सस्ता साहित्य मण्डल, नयी दिल्ली, 1965

104. लाला लाजपत राय, ले0-विनोद, राजपाल एण्ड सन्स, कश्मीरी गेट, दिल्ली, 1969

105. वरांग-चरित, अनुवाद-प्रो खुशाल चंद गोरावाला, प्रका0-मंत्री साहित्य विभाग, भा0 दिगम्बर जैन संघ, चौरासी, मथुरा (उ0प्र0) संस्करण-प्रथम, 1953

106. विजयवर्गीय इतिहास : एक दृष्टि, लेखक-रामजीत जैन एडवोकेट, विजयवर्गीय (वैश्य) सभा, ग्वालियर, 1992

107. विजयसिंह पथिक, डॉ0 पद्मसिंह वर्मा, प्रका0- प्रकाशन विभाग, सूचना एवं प्रसारण मन्त्रालय, भारत सरकार, नयी दिल्ली, 1992

108. विद्वत् अभिनन्दन ग्रंथ, सम्पा0-डॉ0 लाल बहादुर शास्त्री, अखिल भारतवर्षीय दि0 जैन शास्त्रि परिषद्, बड़ौत (उ0प्र0), 1976,

109. विन्ध्यप्रदेश के राज्यों का स्वतन्त्रता संग्राम का इतिहास, ले0-श्याम लाल साहू, राजेन्द्र प्रिंटिंग प्रेस, निबाडी (म0प्र0), 1975

110. विमल प्रसाद जैन : क्रान्तिकारी जीवन की कुछ झाँकियां, ले0-रूपवती जैन, प्रका0-शकुन प्रकाशन, 3625, सुभाष मार्ग, नयी दिल्ली-110002, प्रथम, 1994

111. वीर शासन के प्रभावक आचार्य, डॉ0 विद्याधर जोहरापुरकर, डॉ0 कस्तूर चंद कासलीवाल, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नयी दिल्ली, 1975

112. वीर हृदय (गीत संकलन), श्री निर्मल कुमार जैन, श्री गजरथ महोत्सव, बरेली (रायसेन), म0प्र0 के अवसर पर प्रकाशित

113. शशिकाव्य 'अन्तर्नाद', श्री कल्याण कुमार 'शशि', रामपुर, 1988-89

114. शहीद गाथा, सम्पा0-श्री नर्मदा प्रसाद खरे, प्रका0-स0 सिं0 सुरेश चंद जैन, मंत्री मध्यप्रदेशीय जैन युवक सभा, जबलपुर (म0प्र0), 1951

115. शहीदों के खत, विनोद मिश्र, प्रका0-प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मन्त्रालय, भारत सरकार, नयी दिल्ली, 1990

116. संक्षिप्त जैन इतिहास, बाबू कामता प्रसाद जैन, प्रका0- मूलचंद किसनदास कापडिया, दिगम्बर जैन पुस्तकालय, सूरत, वी0 नि0 सं0 2452

117. संक्षिप्त जैन इतिहास 2/2, बाबू कामता प्रसाद जैन, प्रका0-मूलचंद किसनदास कापडिया, दिगम्बर जैन पुस्तकालय, सूरत, वी0नि0सं0, 2460

118. संक्षिप्त जैन इतिहास 3/5, बाबू कामता प्रसाद जैन, प्रका0-मूलचंद किसनदास कापडिया, दिगम्बर जैन पुस्तकालय, सूरत, वी0नि0सं0, 2476

119. संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास, डॉ0 कपिलदेव द्विवेदी, संस्कृत साहित्य संस्थान, 37 कचहरी रोड, इलाहाबाद-2

120. सत्य के प्रयोग अथवा आत्मकथा, ले0-मोहनदास, कर्मचंद गांधी, अनु0-काशीनाथ त्रिवेदी, प्रका0- नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद-14, प्रथम संस्करण 1957, पुनर्मुद्रण 1993

121. सन् सत्तावन के भूले बिसरे शहीद, भाग-2, डॉ0 विश्वमित्र उपाध्याय, सूचना और प्रसारण मन्त्रालय, भारत सरकार, नयी दिल्ली, 1990

122. सन् सत्तावन के भूले बिसरे शहीद, भाग-3, ले0-बनारसी दास, सूचना और प्रसारण मन्त्रालय, भारत सरकार, नयी दिल्ली, 1995

123. सहारनपुर सन्दर्भ, सम्पा0-डॉ0 के0के0 शर्मा, प्रका0-सन्दर्भ प्रकाशन, गिल कालोनी (नारायणपुरी) निकट नारायण मन्दिर, सहारनपुर (उ0प्र0), 1986,

124. सहारनपुर सन्दर्भ (भाग-2), (सहारनपुर की महान् विभूतियाँ (1858-1988)) डॉ0 के0 के0 शर्मा, डॉ0 सिप्रा बैनर्जी, संदर्भ प्रकाशन, 2/2510, गिल कालोनी, सहारनपुर (उ0प्र0), प्रथम, 1996

125. सांस्कृतिक चेतना और जैन पत्रकारिता, सम्पा0-डॉ0 संजीव भानावत, सिद्ध श्री प्रकाशन, जयपुर, 1990

126. सेठ मोतीशाह, प्रका0-जिनत्तसूरि मण्डल, दादावाडी, अजमेर, 1966

127. सौराष्ट्रना स्वातन्त्र्य सैनिको (गुजराती), सम्पा0-जयावेन बजुभाई शाह, प्रका0-सौराष्ट्र रचनात्मक समिति सेवा ट्रस्ट राजकोट, 1988

128. स्वतन्त्रता संग्राम, ले0-बिपन चंद्र आदि, अनु0-रामसेवक श्रीवास्तव, नेशनल बुक ट्रस्ट इंडिया, नयी दिल्ली, 1972

129. स्वतन्त्रता संग्राम और जबलपुर नगर, ले0- रामेश्वर प्रसाद गुरु, प्रका0-स्वतन्त्रता संग्राम सैनिक संघ, जबलपुर (म0प्र0), 1985

130. स्वतंत्रता संग्राम और राष्ट्रीय जन-जागरण में शाजापुर जिले का योगदान (टंकित शोध-प्रबन्ध), ले0-डॉ0 ऋचा उपाध्याय, 1996

131. स्वराज्य और जैन महिलायें, ले0-डॉ0 (श्रीमती) ज्योति जैन, प्रका0-श्री कैलाश चंद जैन स्मृति न्यास, C/o डॉ0 के0 सी0 जैन, के0के0 जैन डिग्री कालेज, खतौली-251201 (उ0प्र0), प्रथम, 1997

132. स्वातंत्र्य संग्रामना लडवैया (गुजराती) परिचय ग्रन्थ-2, प्रका0-माहिती घातुं, गुजरात सरकार सचिवालय गांधीनगर, 1976

133. स्वातंत्र्य सैनिक चारित्र कोष (मराठी) (खण्ड 1 से 5), प्रका0-कार्यकारी सम्पादक व सचिव (स्वातन्त्र्य सैनिक चारित्र कोष) दार्शनिका विभाग, महाराष्ट्र शासन, 27 बरजोर भरुचा मार्ग, महात्मा गांधी रोड़, फोर्ट, मुम्बई-400001

134. स्वाधीनता आन्दोलन और मेरठ, ले0-आचार्य दीपंकर, जनमत प्रकाशन, 54/4, जागृति विहार, मेरठ, प्रथम, 1993

135. स्वाधीनता आन्दोलन में छिन्दबाडा जिले का योगदान (1920 से 1947 तक), ले0-डॉ0 प्रितपाल सिंह भाटिया, डॉ0 हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर की पी एच0 डी0 उपाधि हेतु स्वीकृत शोध प्रबन्ध, 1995

136. स्वाधीनता आन्दोलन में शहडोल का योगदान, ले0सम्पा0-छेदी लाल सिंह, प्रका0-सुधीजन, इन्द्रकुंज, मानपुर-शहडोल (म0प्र0), प्रथम, 1988

137. स्वाधीनता संग्राम और हमारे सेनानी, सम्पा0-ठाकुर भूपति सिंह, पाटन तहसील स्वतन्त्रता संग्राम सैनिक संघ, पाटन, जिला-जबलपुर (म0प्र0), 1968

138. हरदा और स्वतंत्रता संग्राम, सम्पा0-श्री महेशदत्त मिश्र आदि, प्रका0-गुलजार भवन ट्रस्ट, हरदा, 1988

139. हिन्दी साहित्य का इतिहास, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, उनतीसवां संस्करण, वि0 सं0 2051

140. होशंगावाद जिले का स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास एवं सेनानियों का परिचय, ले0-दुर्गाप्रसाद जायसवाल, प्रका0-गांधी भवन ट्रस्ट, इटारसी, (म0प्र0), प्रथम 1984

141. हिन्दी कक्षा 7, प्रका0- गुजरात राज्य शाला, पाठ्यपुस्तक मण्डल, पुराना विधान सभा गृह, सेक्टर-17, गांधीनगर (गुजरात), प्रथम, 1990

142. Aspects. of Jainology, Vol II, Pt. Bechardas Doshi, Commemoration Volume, Ed. Prof. M.A. Dhaky, Prof. Sagarmal Jain, Pub.- P.V. Research Institute, I.T.I. Road, B.H.U. Varanasi, 1st Edition, 1987.

143. History of Jaimsn, Edited by-Sh.Nihal Chand Jain, Pub-Bharatvar shiya Digamber Jain Sangh, Mathura (U.P.), 1999

144. Our National Songs, Publications Division Ministry of Information and Broadcasting Govt. of India, New Delhi, 2000

145. Progressive Jains, Satish Kumar Jain, Shraman Sahitya Sansthan, New Delhi, 1987

146. The Martyrs, Ratan lal Joshi, Pub-Udbodhak Granthmala, 4, Kh and eraowadi, Bombay 400002, First, 1994

147. Who's who of Indian Martyrs, Volume I, Chief Editor-Dr. P.N. Chopra, Pub-Ministry of Education and youth Services, Govt. of India, New Delhi, 1969

148. Who's' who of Indian Martyrs, Vol. III, Chief Editor—Dr. P. N. Chopra, Pub—Deptt. of Culture, Ministry of Education and Social Welfare, Govt. of India, New Delhi

स्मारिकायें एवं पत्र-पत्रिकायें

149. अ0 भा0 दि0 जैन शास्त्रि परिषद् बुलेटिन, सम्पा0-डॉ0 कपूरचंद जैन, प्रका0-अ0 भा0 दि0 जैन शास्त्रि परिषद्

150. अजमेर वार्षिकी एवं व्यक्ति परिचय, 1976-77, प्रधान सम्पा0- श्री घीसूलाल पांड्या, प्रका0-आजाद प्रकाशन, पो0 बा0 नं0 88, पृथ्वीराज मार्ग, अजमेर (राजस्थान)

151. अनावरण एक सत्य का : श्री रतनचंद जैन, मुद्रक-चौधरी प्रिंटिंग प्रेस, 13 कोतवाली वार्ड, जबलपुर

152. अनेकान्तपथ, भोपाल (म0प्र0)

153. अमर उजाला (दैनिक), आगरा एवं मेरठ संस्करण

154. अमृत (पी0 डी0 जैन इण्टर कालेज, वार्षिक पत्रिका, 1986 में प्रकाशित लेख 'स्वतंत्रता संग्राम में फिरोजाबाद जनपद के जैन समाज का योगदान') ले0- श्री पन्नालाल जैन 'सरल', प्रका0-पी0डी0 जैन इन्टर कालेज, फिरोजाबाद (उ0प्र0)

155. अवन्तीपुत्र : अवन्तीलाल, हीरक जयन्ती अभिनन्दन समारोह स्मारिका, उज्जैन, 1983

156. अहिंसा सन्देश (पाक्षिक), रांची (बिहार)

157. इन्दौर समाचार, इन्दौर
158. उत्सर्ग (स्मारिका), सम्पा0 श्रीदशरथ जैन आदि, प्रका0-स्वागत समिति, दसवां मध्यप्रदेश स्वतंत्रता संग्राम सैनिक संघ अधिवेशन, चरणपादुका (छतरपुर, म0प्र0), 1978
159. कादम्बिनी, हिन्दुस्तान टाइम्स प्रकाशन, नई दिल्ली
160. कानपुर जैन डायरेक्टरी (1998), संयोजक-पं0 बच्चूलाल शास्त्री, प्रका0-अशोक कुमार जैन एवं अरविन्द कुमार जैन, प्रथम, 1998
161. खनन भारती, अक्टू0-1994 (कोल इण्डिया लिमिटेड की प्रतिनिधि हिन्दी पत्रिका), सम्पा0-राजेन्द्र पटोरिया, प्रका0-वेटर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड, कोल इस्टेट, सिविल लाइन्स, नागपुर-440001
162. खनन भारती, अगस्त 1991 (अंडमान-निकोबार, विशेषांक) प्रका0-वेस्टर्न कोलफील्ड्स लि0, नागपुर
163. चौथा संसार, इन्दौर (म0प्र0)
164. जनसत्ता, नई दिल्ली, इण्डियन एक्सप्रेस ग्रुप का प्रमुख हिन्दी दैनिक
165. जिनवाणी (मासिक) जयपुर, (राज0)
166. जैन गजट (साप्ताहिक), प्रका0-अ0 भा0 दि0 जैन महासभा, वेंकटेश्वर फ्लोर मिल्स, ऐश बाग, लखनऊ (उ0प्र0)
167. जैन दर्पण (मासिक), अ0 भा0 जैन वेलफेयर सोसायटी द्वारा प्रेमचंद बड़जात्या, जयपुर (राजस्थान)
168 जैन प्रचारक, अ0 भा0 अनाथरक्षक सोसायटी, दरिया-गंज, नई दिल्ली का मासिक
169. जैन प्रतीक (मासिक), सम्पा0-नरेन्द्र रांका, 19/6 तुकोगंज, इन्दौर (म0प्र0)
170. जैन प्रदीप (मासिक), आद्य सम्पादक-स्व0 ज्योति प्रसाद जैन, सम्पा0-श्री कुलभूषण कुमार जैन, प्रका0-ज्योति चेतना संस्थान, चाहपारस, देवबन्द, सहारनपुर (उ0प्र0)
171. जैन महिलादर्श (मासिक), प्रका0-अ0 भा0 दि0 जैन महासभा, श्री वेंकटेश्वर फ्लोर मिल्स, ऐशबाग, लखनऊ (उ0प्र0)
172. जैन मित्र (साप्ताहिक), सूरत (गुजरात)
173. जैन समाज निर्देशिका, प्रका0-जैन मित्र मण्डल, छिन्दबाड़ा (म0प्र0), 1990
174. जैन सन्देश, राष्ट्रीय अंक, 23 जनवरी 1947 ई0 एवं अन्य अनेक अंक, प्रका0-भारतवर्षीय दिगम्बर जैन संघ, मथुरा (उ0प्र0)
175. जैन स्वतन्त्रता संग्राम सेनानियों का नागरिक अभिनन्दन (बुकलेट), प्रका0-चन्द्रवाड़ दि0 जैन अतिशय क्षेत्र कमेटी, फिरोजाबाद-283203
176. ज्ञानोदय (मासिक), प्रका0-भारतीय ज्ञानपीठ, काशी, मई 1952 (अमर शहीद भैयालाल चौधरी लेख)।
177. Times of India (Daily), New Delhi
178. तीर्थंकर, जैन पत्र-पत्रिका विशेषांक (अगस्त-सित0-1977) एवं अन्य अनेक अंक, हीरा भैया प्रकाशन, इन्दौर (म0प्र0)

179. दिगम्बर जैन (मासिक), सूरत (गुजरात)
180. दिगम्बर जैन महासमिति पत्रिका (पाक्षिक), नई दिल्ली
181. देशबन्धु (साप्ताहिक), इन्दौर (म0 प्र0)
182. दैनिक जागरण (दैनिक), भोपाल (म0प्र0)
183. दैनिक भास्कर (दैनिक), जबलपुर, इन्दौर एवं भोपाल संस्करण
184. नई दुनियां (दैनिक), इन्दौर (म0प्र0)
185. नया खून, नागपुर (महाराष्ट्र) (पन्नालाल देवडिया श्रद्धान्जली परिशिष्ट), 27 मई 1960
186. नवभारत दैनिक, रायपुर एवं इन्दौर संस्करण
187. नवभारत टाइम्स (दैनिक), टाइम्स आफ इण्डिया, नई दिल्ली
188. नवीन दुनियां (दैनिक), जबलपुर (म0प्र0)
189. पंडित सुन्दरलाल अभिनन्दन एवं मुजफ्फरनगर सन्दर्भ (स्मारिका), मेरठ विश्वविद्यालय हिन्दी परिषद् द्वारा डॉ0 विश्वनाथ मिश्र, मुजफ्फरनगर (उ0प्र0), 1978
190. पद्माकर (स्मारिका), संयोजक-डॉ0 प्रकाशचन्द जैन (नेहरू जन्म शताब्दी एवं सागर जिले में स्वतंत्रता संघर्ष विशेषांक), प्रकाशक-शासकीय बालक महाविद्यालय, सागर (म0प्र0), 1989-90
191. पुण्य स्मरण (स्मारिका), सम्पा0-डॉ0 रामस्वरूप आर्य, प्रका0-प्रदीप कुमार जैन, मंत्री, बाबू रतन लाल जैन स्मृति समारोह समिति, बिजनौर (उ0प्र0), 1977
192. मध्यप्रदेश सन्देश (स्वाधीनता आन्दोलन विशेषांक), 15 अगस्त 1987, जन सम्पर्क संचालनालय, भोपाल (म0प्र0) 462003
193. राजस्थान पत्रिका (दैनिक), उदयपुर संस्करण
194. राष्ट्रदूत (दैनिक), उदयपुर (राजस्थान)
195. रीजनल एक्सप्रेस (साप्ताहिक), देहरादून (उ0प्र0)
196. रुहेलखंड-कुमायूं जैन डायरेक्टरी, सम्पा0-डॉ0 ज्योति प्रसाद जैन, रुहेलखंड-कुमायूं जैन परिषद्, काशीपुर (उ0प्र0), 1970
197. लखनऊ जैन निर्देशिका, सम्पा0-कैलाश चन्द जैन "पंचरत्न", पंचरत्न प्रिंटिग प्रेस, कैलाश कुटीर, लखनऊ (उ0प्र0), 1991-92
198. विन्ध्यवाणी, शहीदअंक 1948, भोपाल (म0प्र0)
199. वीर (अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन परिषद् का मुखपत्र), 204, दरीबां कलां, दिल्ली-6
200. वीर, ऋषभ विशेषांक, अ0 भा0 दि0 जैन परिषद्, 10, दरिया गंज, नयी दिल्ली, 7 फरवरी 1996
201. वीर निकलंक (मासिक), सम्पा0-श्री रमेश कासलीवाल, 24/5, पारसी मौहल्ला, छावनी, इन्दौर-1, (म0प्र0)

202. शताब्दी सन्देश, इन्दौर (म0प्र0)

203. शशि स्मारिका, सम्पा0-पं0 रतनचंद जैन शास्त्री, प्रका0-अन्तरंग प्रकाशन, 12 इन्दिरा कालोनी, रामपुर-244901 (उ0प्र0), 1988

204. श्रद्धा सुमन (स्मारिका), सम्पा0-सुधीर जैन 'विद्यार्थी', युवक क्रान्ति संगठन, दमोह (म0प्र0), 1988

205. शीतल सौरभ (स्मारिका), प्रका0-पुनर्निर्मित श्री शीतलनाथ जैन श्वेताम्बर जिनालय, सराफा, जबलपुर के प्रतिष्ठा महोत्सव पर प्रकाशित, 24 फरवरी, 1994

206. शोधादर्श (अनेक अंक), तीर्थंकर महावीर स्मृति केन्द्र समिति, उत्तर प्रदेश, लखनऊ

207. सन्मति (मराठी), पो0-बाहुबली, जि0-कोल्हापुर, महाराष्ट्र-416110, दिसम्बर 1952 ई0 एवं अन्य अनेक अंक

208. सन्मतिवाणी (इन्दौर), मिश्रीलाल गंगवाल विशेषांक, जनवरी 1982 एवं अन्य अनेक अंक

209. सन्मति संदेश (मासिक), सम्पा0- श्री पं0 प्रकाश हितैषी शास्त्री, 535, गांधी नगर, दिल्ली

210. साप्ताहिक हिन्दुस्तान, हिन्दुस्तान टाइम्स प्रकाशन, नयी दिल्ली

211. सेनानी सूची, प्रका0-जिला रेवाडी स्वतंत्रता सेनानी परिषद्, गांधी अध्ययन केन्द्र, गोकुल बाजार, रेवाडी-123401

212. स्मृतियों के रक्त पलाश (श्री हुक्मचंद नारद प्रतिमा अनावरण, दिनांक 2 मई 1999 के अवसर पर प्रकाशित स्मारिका) सम्पा0-अरुण कान्त अग्रवाल, प्रका0-डॉ0 कैलाश नारद, हुक्मचंद नारद मार्ग, जबलपुर (म0प्र0)

213. स्वदेश (दैनिक), इन्दौर (म0प्र0)

214. स्वतन्त्रता संग्राम में इलाहाबाद (स्मारिका), सम्पादन-डा. राजेन्द्र कुमारी वाजपेयी, प्रका0-अ0 भा0 स्वतंत्रता संग्राम सेनानी सम्मेलन, इन्दिरा महानगर, प्रयाग, 18-19 नवम्बर 1985

215. स्वर्ण जयन्ती स्मारिका, श्री स्याद्वाद महाविद्यालय, वाराणसी (उ0प्र0), 1955

216. हिन्दुस्तान (दैनिक), हिन्दुस्तान टाईम्स प्रकाशन, नयी दिल्ली, 17.12.1986

217. श्री हुक्मचंद नारद स्मृति प्रसंग, सम्पा0-शारदा पाठक आदि, प्रका0-डॉ0 कैलाश नारद, हुक्मचंद नारद मार्ग, जबलपुर (म0 प्र0), नवम्बर 1999

□□□